मध्यप्रदेश के जनपदीय

ऋतु गीत

मध्यप्रदेश के जनपदीय

ऋतु गीत

सम्पादक
कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक	–	आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल–462003 मध्यप्रदेश, भारत फोन – 0755–2551878, 2760668 ई–मेल–mplokkala@rediffmail.com
प्रकाशन वर्ष	–	वर्ष 2009 प्रथम संस्करण
स्वत्वाधिकार	–	आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
शब्दांकन	–	आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
आवरण	–	निमाड़ी लोकचित्र, श्रीमती सुषमा सिटोके
मुद्रण	–	शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल
मूल्य	–	300/– रूपये तीन सौ केवल

■ पुस्तक से सम्बन्धित विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की हैं, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

Madhya Pradesh ke Janpadiya Ritu Geet

EDITOR : DR. KAPIL TIWARI

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी ने चार वर्ष पूर्व मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, मालवा और निमाड़ जनपदों के पारम्परिक संस्कार गीतों का दो खण्डों में प्रकाशन किया था। इस संग्रह में लगभग एक-डेढ़ हजार गीत संकलित थे। इस प्रकाशन के साथ ही, अकादमी ने यह निश्चय किया था कि आने वाले वर्षों में इसी प्रकार का एक वृहद् संग्रह, लोक परम्परा के ऋतु और पर्व-त्योहारों के गीतों का भी किया जायेगा। प्रस्तुत संग्रह इसी निश्चय का चरितार्थ है।

लोक परम्परा में ऋतु गीतों को, केवल विभिन्न ऋतुओं के प्रकृतिपरक गीतों के अर्थ में नहीं लिया जा सकता। निश्चय ही उसका एक भाग लोक परम्परा के बारहमासा गीतों का भी है, लेकिन उसका अधिकांश भाग ऋतुओं के साथ जुड़े पर्व-त्योहारों अर्थात् लोक जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी एक सांस्कृतिक परम्परा से भी है।

'ऋतु' शब्द 'ऋत' से बना है। यह भारतीय ज्ञान परम्परा का एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्द है- इसका आत्यंतिक अर्थ है- 'अस्तित्त्व या चराचर सत्ता को संचालित करने वाले परम नियम।' ऐसे नियम जिन्हें कोई बनाता नहीं है, वे अस्तित्त्व की सत्ता में ही समाहित हैं। इस विराट 'सृष्टि का ऋत' अपने ही नियमों अर्थात् अपने संचालन की स्व मर्यादा से अनुशासित और चालित है। इसी से सारी सृष्टि का एक चमत्कारिक सन्तुलन और स्थिति बनी हुई है। सूर्य, अन्यान्य ग्रह, नक्षत्र, तारे, आकाशगंगाएँ और अनन्त अन्तरिक्ष में विस्तारित अकल्पनीय सृष्टि।

संसार की 'अपरा प्रकृति' भी अपने 'ऋत' में है- वह पंचतत्त्वों, तीन गुणों काल की गति

और क्षेत्र के विस्तार में अपनी मर्यादा से संचालित है- 'ऋतु' उसका कालचक्र और परितर्वन है। यह स्थूल तत्त्वपूर्ण और गुणपूर्ण प्रकृति है, जिसमें ग्रीष्म, वर्षा और शीत ऋतुओं का क्रम से आवर्तन चलता रहता है। भारत में षट् ऋतुएँ मानी गयीं हैं, और काल की इसी गति और ऋतु के परिवर्तन के साथ जीवन की सांस्कृतिक परम्परा का ताना-बाना बुना गया है। काव्य की परम्परा में भी 'षट्ऋतु वर्णन' की प्रभूत प्रकृति काव्य रचना हुई है- लोक परम्परा में वह 'बारहमासा' है।

हम सहज ही समझ सकते हैं कि लोक परम्परा के ऋतु गीतों में हमें काल की चेतना और गति, प्रकृति का परिवर्तन और जीवन में इसके साथ सम्बद्ध सांस्कृतिक अवसर और कला निर्मितियों को एक साथ देखना होगा। वह अकेला 'प्रकृति की सुन्दरता' का वाचिक काव्य नहीं है।

परिवर्तन की मूल शक्ति के रूप में, भारतीय ज्ञान और विमर्श की परम्परा ने 'काल को आवर्त्तन' के रूप में जाना और कहा है। उसकी गति को हमारे देश में पश्चिमी चिन्तन के अनुसार 'रैखिक' नहीं समझा गया। काल गति का अपना 'ऋत' मनुष्य को इस जीवन में, ऋतुओं के आवर्त्तन में दिखा। यही कारण है कि काल की पहली अवधारणा मूलत: 'प्राकृतिक काल' की है। इसे हम भौतिक समय कह सकते हैं। इसमें दिन-रात और ऋतुओं के परिवर्तन के रूप में मनुष्य का 'चेतन मन' काल की चेतना या बोध में समायोजित रहता है। अरण्यों में वास करने वाली जनजातियों का कालबोध, 'प्राकृतिक समय' का ही है, क्योंकि उनमें से अधिकांश जनजातीय समुदाय अभी भी प्रकृति के साथ एक 'पवित्र अद्वैत' में हैं, वे स्वयं को प्रकृति से भिन्न एक अलग सत्ता नहीं मानते।

लोक समाजों में प्रकृति मनुष्य से भिन्न है- तब भी उसका प्रकृति के साथ संबंध एक 'पूज्य पवित्रता' का है- दोहन करने वाले अथवा 'प्रकृति पर विजय' की अभीप्सा से भरे अमानुष का नहीं। लोक का कालबोध 'पौराणिक समय' का है। इस समय की अवधारणा- स्थूल, तत्त्व और गुणपूर्ण प्रकृति के साथ एक 'दिव्य सूक्ष्म पराप्रकृति' का संज्ञान होने से आती है। इस सत्य को खोजती-स्थापित करती ज्ञान की शास्त्र परम्परा है, धीरे-धीरे यह भावबोध लोक संज्ञान तक आता है। जगत में ऐसी कोई 'स्थूल सत्ता' हो ही नहीं सकती, जिसके पीछे 'कारण भूत रूप' में कोई 'सूक्ष्म सत्ता' न हो, जो उसे प्रकट करती है, उसे सहारा दिये रहती है। स्थूल और सूक्ष्म अर्थात् परा और अपरा प्रकृति की पूर्णता के इस ज्ञान से काल 'प्राकृतिक समय' से इतर 'पौराणिक समय की चेतना' में स्वयं को पूर्ण करता है।

इस सूक्ष्म प्रकृति में वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी तत्त्व आकाश की अनन्त शून्यता में तथा रजस और तमस् गुण सत्व में लय रहते हैं- काल की सत्ता होती है, लेकिन वह स्वयं 'गति' में नहीं होता और 'दिक्' अनन्त विस्तार में स्वयं को प्रकट नहीं करता। काल की गति और दिक् का अनन्त सापेक्षिक सत्ता है। परा प्रकृति में इसीलिए मूल 'देव सत्ता' 'त्रित्व' में विभाजित नहीं

रहती। इसी परा प्रकृति की अभिव्यक्ति जगत में 'तत्त्व और गुणपूर्ण अपरा स्थूल प्रकृति' में होती है। काल की शक्ति से जिसमें ऋतुओं का आवर्त्तन और जगत जीवन संभव होता है।

इस बिन्दु पर मनुष्य और मनुष्य के जीवन को संभव करती सहचरी प्रकृति, पवित्र परा प्रकृति शक्ति और दिव्य लोक के देवता अस्तित्त्व में आते हैं। यह 'पौराणिक समय' है, जिसमें सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिकाल के विशाल समयों की रचना हो जाती है- मनुष्य के दिन-रात का एक दिन और ब्रह्मा के एक दिन में सहस्त्राब्दियों का अन्तर आ जाता है- काल इतना विस्तारित हो जाता है, जिसे हमारी स्मृति स्मरण नहीं रख सकती और चेतना उसे अपने संज्ञान में धारण नहीं कर पाती। इस समय चेतना के इस केन्द्र में काल की एक समष्टि है- यह समष्टि का 'समग्र समय' है, इसे चराचर सत्ता एक एक और 'ऋत' चलाता है।

पिछली डेढ़-दो सदियों से औपनिवेशिक सत्ता और शिक्षा आदि के माध्यम से भारतीय चेतना 'पश्चिम के ऐतिहासिक काल' में समायोजित हो गयी है। यह 'इतिहास का समय' है, जिसे मनुष्य ने अपनी 'स्मृति' में नहीं- इतिहास में दर्ज किया है। इसी इतिहास शक्ति को जीवन की एक चालक और नियामक शक्ति के रूप में पश्चिमी दर्शन स्थापित करता है। एक अर्थ में अब यही एक 'वैश्विक समय' है, क्योंकि पूरी पृथ्वी की अपनी-अपनी स्थानिक और इसीलिए विशिष्ट 'काल चेतनाएँ' इसमें लय कर दी गईं है। विज्ञान और तकनीक, विकास के माडल और इसी के लिए रची गयी शिक्षा ने इसे वैश्विक बनाया है। मनुष्य और स्थूल प्रकृति के अद्वय की काल चेतना प्राकृतिक समय की है। इसका परिप्रेक्ष्य स्वयं 'प्रकृति' है। पौराणिक काल चेतना मनुष्य और दिव्य शक्ति तथा अपरा और परा प्रकृति की सम्पूर्णता से निर्मित होती है, जिसका परिप्रेक्ष्य स्वयं 'समय की समग्रता 'है और ऐतिहासिक काल चेतना का परिप्रेक्ष्य और केन्द्र स्वयं 'मनुष्य और उसकी सीमित स्मृति' है।

लोक समाजों का परा प्रकृति से संबंध 'तत्त्वदर्शन' का नहीं, प्रत्युत गहन और अटूट 'आस्था' का है। इसकी व्याख्या 'दार्शनिक अनुभव वाद' और प्रकारान्तर से उसके प्रत्यय में शास्त्र की परम्परा में हुई है, जिसे हम प्रचलित अर्थों में 'दर्शन' की परम्परा और उसकी व्याख्या कह सकते हैं।

अपरा प्रकृति के जगत में कुछ भी 'स्थिर' नहीं है। सब कुछ 'काल की गति' से 'गतिवान' और 'परिवर्तनशील' है। इसका 'नश्वर' भी कुछ ऐसा है, जो पूरी तरह नष्ट नहीं होता, यद्यपि वह प्रत्येक 'क्षण' 'बदल' और 'नष्ट' हो रहा होता है। जीवन-मृत्यु की ओर, और ऋतुएँ अगली ऋतुओं की ओर दौड़ रही होती हैं, लेकिन वे थोड़े-थोड़े अन्तराल से आती ही रहती हैं। इस जीवन की 'समग्र मृत्यु' और इस 'नश्वरता का समग्र नाश' नहीं होता। यही इसकी 'माया' है और यही सुन्दरता। कोई 'मृत्यु' जीवन में मनुष्य के विश्वास को पूरी तरह नष्ट नहीं कर पाती, न कोई 'नश्वरता अनन्त जीवन' के हमारे विश्वास को हिला पाती है। वर्षा की पहली बूंदों के साथ धरती पर जीवन का एक 'आश्वासन' और जीवन की एक 'आशा' फिर फूट पड़ती है,

इसी से जीवन के सब गान बने हैं। 'जीवन की धन्यता' का 'अनन्त गान' लोक ने प्रत्येक समय और प्रत्येक जीवन में गाया है। हम जीवन के 'जाते हुए वसन्त का विदागीत' पूरा गा भी नहीं पाते और एक नये वसन्त की आहट हवा में घुलने लगती है, सचमुच यह 'नश्वरता' भी एक अनन्त है।

रंगों, छवियों और विविध वर्णों में खिलती और जीवन का उत्सव मनाती 'प्रकृति' मनुष्य को एक जीवन उत्सव और इसीलिए एक संस्कृति में ले जाती है।

समय और जीवन में 'संस्कृति' मनुष्य रचना है। प्रकृति के चक्र में ॠतुएँ आती हैं- लोक ने ॠतुओं के साथ जुड़े पर्व-त्योहार रचे हैं- पर्व-त्योहारों के देवता और पूजा-अनुष्ठान, पर्वों के साथ के नृत्य और गीत, चित्र और शिल्प, विश्वास और लोकाचार स्थापित किये हैं।

यह मंगल और सौंदर्य की 'जीवन आराधना' है। यह युगों और पीढ़ियों से होती हम तक आती है- हमारे आज तक, हमारे रक्त में बहती सनातनता, हमारी स्मृति की संस्कार भूमि, जीवन की सच्ची प्रार्थना और उल्लास जिससे हमारा 'जीवन राग' बनता और युगों तक गाया जाता है।

लोक के ॠतु गीत प्रकृति की सुन्दरता, पर्व-त्योहारों का 'मंगल अवसर' और 'संस्कृति का रचना उत्सव' एक साथ है। उन्हें इसी पूर्णता में देखने और समझने की जरूरत है।

-कपिल तिवारी

अनुक्रम

मालवी ऋतु गीत / डॉ. प्रहलाद चन्द जोशी / 15
मालवी ऋतु गीत / डॉ. पूरन सहगल / 201
निमाड़ी ऋतु गीत / वसन्त निरगुणे, रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी' / 245
बुन्देली ऋतु गीत / डॉ. ओमप्रकाश चौबे / 363
बुन्देली ऋतु गीत / एन.आर. अहिरवार / 453

ॠतु गीत

मनुष्य की प्रकृति के बाहर जो कुछ स्थूल हमें दिखाई पड़ता है, वह प्रकृति का भौतिक रूप है। मनुष्य प्रकृति अतिसूक्ष्म है और गुह्य है, जिसे 'मनुष्य स्वभाव' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। मनुष्य की यह प्रकृति या स्वभाव कविता सहित विभिन्न कला रूपों में प्रकृति के भौतिक रूपाकारों के साथ प्रकट होती है, लेकिन बाह्य नैसर्गिक प्रकृति भी कम काव्यमयी और सौन्दर्यमयी नहीं है। प्रकृति के नित नये बदलते रूपों ने मनुष्य की प्रकृति को बहुत गहरे तक प्रभावित ही नहीं किया है, बल्कि उसकी प्रकृति की संरचना में मूल कारक भी रही है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रकृति की रहस्यमयी उपस्थिति अपने वैविध्यपूर्ण सुदीर्घ अनुभवों को ग्रीष्म, वर्षा और शीत ॠतु के रूप में प्रकट करती आई है। एक जगह डॉ. कपिल तिवारी ने ॠतुओं के बारे में लिखा है– 'भारतीय जीवन की तरह भारतीय कलाएँ ॠतुओं के साथ लयबद्ध हैं। ॠतु उनका छन्द है, वे ॠतु की ताल में निबद्ध हैं। ताल काल का एक माप या परिमाण है और काल का ही एक दूसरा नाम ॠतु है। ॠतुओं का ताल्लुक हमारे बाहर स्थित विराट स्थूल प्रकृति से उसके आवर्तनों, बदलावों, नवोन्मेष, बहुलता आदि को समेटती उसकी अचरता या स्थिरता (ॠतु) से ही नहीं, उसका ताल्लुक इन्हीं तमाम स्पन्दनों से भरी उस सूक्ष्म प्रकृति से भी है, जिसकी अभिव्यक्ति को हम मनुष्य स्वभाव या मानवीय प्रकृति के रूप में जानते हैं।'

प्रकृति की ये ग्रीष्म, वर्षा और शीत ॠतुएँ अपना एक चक्र रचती हैं। यह ॠतु चक्र अपने सूक्ष्म अन्तर्वलयों को निर्मित कर ॠतुओं के और भी अन्यतम लालित्य को रच देता है। यदि ग्रीष्म है तो एक सी गर्मी उसमें नहीं पड़ती। चैत्र, वैशाख की गर्मी कुछ अलग है, ज्येष्ठ की गर्मी का क्या कहना? फागुन की फगनुहाट का बिल्कुल अलग रंग है। यदि वर्षा है तो आषाढ़ की वर्षा, सावन की झड़ियाँ, भादों की घनघोर वर्षा और कुँवार की धूप में नहाती वर्षा के कई रंग-ढंग हमारे सामने खुलते हैं। ॠतु का सबसे सुन्दर रूप वर्षा ॠतु में ही खिलता है, जब प्रकृति हरियाली की चादर ओढ़ लेती है– 'सम्भवतया सबसे ज्यादा गझिन, उत्कट और लालित्यपूर्ण रूप वर्षा ॠतु के सन्दर्भ में प्रकट होता है। कविता समेट सारी कलाएँ वर्षा से अभिभूत आविष्ट, विमोहित प्रतीत होती है। इसकी वजह शायद यह है कि यह ॠतु प्रकृति को उसके सर्वाधिक वैभवशाली, वाचाल और अर्थगर्भी रूप में अग्रभूमि पर लाती है, सूक्ष्म (मानवीय) प्रकृति को सबसे ज्यादा उद्दीप्त करने वाली शक्ल में।' जब धरती और आसमान अपने पूर्ण रूप में सक्रिय होते हैं, तब धरती दुल्हन होती है और आसमान दूल्हा।

शीत ऋतु का आनन्द बिल्कुल अलग क़िस्म का आस्वाद बिखेरता है। शीत ने अपने आपको तीन और ऋतुओं में हेमन्त, शिशिर और वसन्त में विभाजित कर लिया है। कार्तिक, अगहन, मागसिर (मार्गशीर्ष) माघ और पूस (पौष) इन चार महीनों में प्रकृति के इतने सुन्दर आवर्तन होते हैं कि मनुष्य का मन उनसे कभी अछूता नहीं रह सकता। चाहे कार्तिक की हल्की गुलाबी ठण्ड हो या अगहन का रजाई ओढ़ने वाला जाड़ा हो, माघ महीने की दाँत किटकिटाने वाली पाला मारती ठण्ड हो या पूस की कँपकँपाती रातें हो। इनका मजा ही कुछ और है। इन्हीं में हेमन्त, शिशिर और वसन्त के रंग अलग ही खिलते हैं। जब रंग-बिरंगे फूलों से धरती सज जाती है। मुझे लगता है शीत ऋतु के आनन्द को द्विगुणित करने के लिए प्रकृति ने हेमन्त, वसन्त और शिशिर ऋतु की रचना किसी कमी को पूरा करने के लिए बड़े मनोयोग से कर दी या इसे इस तरह भी ले सकते हैं कि मनुष्य के मन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति का आईना शीत की ये तीन ऋतुएँ हैं। मनुष्य क्या, प्राणी-मात्र के अन्तरंग को ये ऋतुएँ इतने गहरे तक प्रभावित करती हैं कि मनुष्य का मन कविता करने लगता है, गीत रचने लगता है, गाने लगता है और नाचने भी लगता है। महाकवि कालिदास ने इन ऋतुओं से प्रभावित होकर 'ऋतु संहार' की रचना ही कर डाली, जो विश्व की महानतम कृतियों में से एक है। कालिदास ही नहीं विश्व के सारे कवि ऋतुओं के प्रभाव, लालित्य और सौन्दर्य से अछूते नहीं रहे हैं।

सबसे अधिक ऋतुओं का नाता हमारे अनाम लोक-स्वप्रकारों से रहा है। सदियों-सदियों से ऋतुओं की लोक-छवियों को संस्कारों, पर्व-त्योहारों, अवसर-अनुष्ठानों, कथा, गाथा, आख्यानों, गीत, नाट्य, कहावतों, पहेलियों और सुभाषितों, चित्रों आदि में उतारते चले आए हैं। इसका सम्बन्ध मनुष्य के सूक्ष्म स्वभाव से है, जहाँ से इन विधाओं का अवतरण सम्भव होता है। इस आधार पर मनुष्य स्वभाव का भी एक ऋतु-चक्र होता है, भले ही वह कितना ही परोक्ष और सूक्ष्म क्यों न हो। कलाएँ इन दोनों स्थूल और सूक्ष्म ऋतु चक्रों के बीच दुभाषिये का काम करती हैं, कभी एक दूसरे का रूपक बनाती हुई, कभी आलम्बन और उद्दीपन, कभी एक दूसरे की मानो शब्द अर्थ के रिश्ते लाती हुई, कभी एक से दूसरे को अलंकृत करती हुई, कभी एक को दूसरे के विमर्श में बदलती हुई, कभी एक को दूसरे से छिपाती हुई, कभी एक रोशनी में दूसरे को उजागर करती हुई हमारी कलाएँ, वे चाहे मार्गी हो या देशी, शास्त्रीय हो या लोक, दुभाषिये की इस बात को किसी न किसी रूप में जारी रखती है।'

यदि देखा जाए तो लोक में जो कुछ भी प्रसरित है, चाहे भीतर हो अथवा बाहर, ऋतुओं का कोई न कोई अंश उसमें अवश्य सम्मिलित होता है। जो फलक धरती से आसमान तक, नदियों से पहाड़ों तक, बीज से पेड़ों तक, जड़ से फूल-पत्ती और फलों तक, समुद्र से बादलों तक, जल-थलचर से नभचर तक, प्राण वायु से आँधी तूफान तक, अतीत वर्तमान से भविष्य तक, एक कोने से अन्तरिक्ष तक, यहाँ तक कि आरम्भ से अन्त तक, जीवन से मृत्यु तक, राग से रंग तक, विराग से राग तक और सूक्ष्म से अनन्त तक - जो ऋतु (काल) का विराट वैभव पसरा है, वह प्रकृति (दोनों) से एक पल के लिए भी कभी विलग नहीं होता। यही कारण है कि

आदिकाल से मनुष्य प्रकृति की उन अनन्त सौन्दर्य छवियों के साथ रहता आया है। इसलिए मनुष्य ऋतुओं का आदी हो गया। इसके बिना उसे जीवन जरा भी नहीं सुहाता। ऐसा प्रतीत होता है कि ऋतुओं के बिना जीवन 'ऋत' है या जीना निरर्थक है। लोक ने हर समय में इसे अन्यतम रूप में महसूस किया है और जीवन की हर गतिविधियों में ऋतुओं के सूक्ष्म से सूक्ष्म उच्छवासों, परिवर्तनों, परिवर्द्धनों और परिणामों को समाहित और समारोहित किया है। फिर चाहे कविता हो या कला हो, ऋतुओं को सबसे अधिक जगह मिली है। ऋतुचक्र को पर्व-त्योहारों से कुछ इस तरह अनुस्यूत किया गया है कि उनके आने की प्रतीक्षा लोगों के हृदय में हमेशा बनी रहती है। कब वह तिथि-त्योहार आये और कब गीत, कविता, नृत्य, संगीत, चित्र, कथा, गाथा, पूजा, अनुष्ठान का आनन्द जगे। पर्व-त्योहार जैसे प्रकृति के शृँगार हैं। प्रकृति ऋतुओं के माध्यम से अपने आपको अभिव्यक्त करती है और मनुष्य ललित कलाओं के माध्यम से अपने आपको अभिव्यक्त करने में सुविधा महसूस करता आया है। यही कारण है कि कविता और कला की वाचिक परम्परा में लोक विधाओं की विविधता और समृद्धि देखी जा सकती है।

ऋतुओं के वर्णन में लोकगीतों का कोई सानी नहीं है। चाहे संस्कार गीत हो, अथवा पर्व-त्योहार के गीत हों। चाहे गीत कथा, गाथा अथवा लम्बे आख्यान हों, अथवा लोकवार्त्ता (लोककथा, कहावत, पहेली आदि) हो। सबसे अधिक वर्षा ऋतु के वर्णन में विधाओं का वैविध्य मिलता है। चौमासा गीत और बारहमासा गीत, कथा हर अंचल की बोली में भरे पड़े हैं। निमाड़ अंचल में निमाड़ी बोली की वाचिक परम्परा में हजारों ऋतुगीत गाए गाते हैं, जिनका संकलन-अनुवाद अभी तक नहीं हुआ है। इन गीतों के संकलन और अनुवाद में जिन लोगों - सर्वश्री बाबूलाल सेन-महेश्वर, रामलाल-साद, श्रीमती हेमलता उपाध्याय-खण्डवा, मोतीलाल यादव एवं महेश साकल्ले-काटकूर, श्रीमती पूर्णिमा चतुर्वेदी-भोपाल, सुश्री शीतल शर्मा-बड़वाह, श्रीमती साधना उपाध्याय-खण्डवा, श्रीमती गोदावरीबाई, श्रीमती गंगाबाई आदि कई सुधिजन, साथ में 'निमाड़ का सांस्कृतिक इतिहास'-रामनारायण उपाध्याय और 'निमाड़ी और उसका साहित्य'-डॉ. कृष्णलाल हंस की पुस्तकों ने मुझे ऋतुगीत उपलब्ध कराने में अपूर्व मदद की, उसके लिए बहुत-बहुत आभार और श्रद्धा व्यक्त करता हूँ।

-वसन्त निरगुणे

भारतीय जनपदों की भाँति मालवा में भी 'स्त्री-गीतों' की वाचिक परम्परा का अगाध भण्डार है। इस संकलन में ऐसे लगभग पौने तीन सौ गीतों को संजोया गया है, जो अद्यतन संग्रहीत हो प्रकाश में नहीं आए हैं। मालवी नारियों के कलकण्ठों पर लोकगीतों की अजस्र गंगा प्रवहमान है। इनमें मालवी सभ्यता एवं संस्कृति की झलक के साथ विशिष्ट शब्दावली, लोकजीवन के विश्वास, प्रथाएँ, रूढ़ियाँ एवं सामाजिक जीवन के अभिप्राय समाहित हुए हैं।

मालवी में अद्यतन तीन संकलन ही प्रकाश में आ पाए हैं। यह चौथा संकलन है, जिसमें बारहों मास में गाये जाने वाले ऋतु, पर्व एवं उत्सव सम्बन्धी गीत सहेजे गये हैं। चैत्र मास के गीतों में गणगौर, शीतला, फूलपाती, आणा, ख्याली एवं रामभक्ति गीत गाये जाते हैं। इसी प्रकार वैशाख में नृसिंह जयंती एवं एकादशी, ज्येष्ठ में वट सावित्री एवं शनिकथा, आषाढ़ मास में भैरवदेव, तुलसी एवं तुलसीदास, श्रावण में राखी, हिंडोला, झूला, रूसना, पपइयो, ख्याली, भँवरजी, बीरा, सावनी तीज, नागपंचमी के गीत गाये जाते हैं। भाद्रपद माह में जन्माष्टमी, गोगाजी, शिवरात्रि, गणपति चौथ एवं तेजाजी के तथा कुँवार मास में अम्बा एवं संजा के गीत गाए जाते हैं। कार्तिक मास में प्राय: गूजरी, गोरधन, दीवाली एवं हीड़ सम्बन्धी गीत तथा अगहन से माघ मास के ऋतु पर्वोत्सवों में मून व्रत, सायब-गोरी, कामण, संक्रांति, ख्याली, जनेऊ, मामेरा, बीरा, हल्दी, मेहंदी, चूनड़ी, रसिया, नारी भक्ति, बना, भांग, दारूड़ी, राबड़ी एवं महाशिव रात्रि के गीत गाये जाते हैं। फाल्गुन मास तो उत्साह व उमंग से परिपूर्ण होता है। इन मास के गीतों में होली, फाग, रसिया, अंगिया, जमरा बीज जैसे विषयों का बाहुल्य मिलता है। ऐसे समस्त गीत जो अद्यतन अप्रकाशित एवं अप्रसारित हैं, उन्हीं का संयोजन इस संग्रह का अभीष्ट है।

इस संकलन की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इसमें मालवी की सम्पूर्ण लोक रामायण एवं कृष्ण कथा का एकीकृत रूप संजोया गया है। भारत के समस्त जनपदों में अपनी-अपनी क्षेत्रीय रामायण उपलब्ध है। यदि उनसे इनकी तुलना की जाये तो भारतीय कथा चक्र की रूपरेखा तैयार की जा सकती है। इसमें भारतीय लोक वाङ्मय का ऐसा सुरुचिपूर्ण आकलन जन-जन के सम्मुख आ सकेगा, जो अनेकता में एकता का संदेश देता है। कतिपय ऐसे गीतों को भी संकलित किया गया है, जो मालवी नारी के अन्तर-बाह्य सांस्कृतिक परिवेश को उद्घाटित करते हैं।

तुलसी, शिव, एकादशी एवं कृष्णभक्ति सम्बन्धी लगभग सत्तर गीतों की श्रृँखला अकेली रुक्मिणी बाई पंचोली (ग्राम-खेरिया) से प्राप्त की गई है। शेष गीतों को संकलित करने में श्रीमती अवन्ती बाई जोशी (सुसनेर), श्रीमती सरस्वती बाई दुबे (माचलपुर), श्रीमती दुर्गावती जोशी (सुसनेर), श्रीमती अलका व्यास (सुठालिया), श्रीमती कृष्णादेवी व्यास (खिलचीपुर) आदि ने योगदान दिया है। सही अर्थों में ये सब इस ग्रन्थ के मुख्य हेतु है। उन समस्त गायिकाओं का भी आभारी हूँ, जिनके गीत स्वर लिपि के लिए टेप में अंकित किये गये हैं।

इन गीतों के संयोजन में प्रेरणा देने वाले लोकतत्त्व के पारखी डॉ. कपिल तिवारी एवं भाई वसन्त निरगुणे जी का आभारी हूँ। आशा है यह संग्रह लीक से हटकर वाचिक परम्परा का सिरमौर बनेगा एवं पाठकों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

-प्रहलाद चन्द जोशी
13.10.96

मालवी ऋतु गीत

प्रहलाद चन्द जोशी

चैत्रमास के गीत

भारतीय संवत् का प्रारम्भ चैत्र मास से होता है अत: सर्वप्रथम इसी मास में गाये जाने वाले गीतों से इस संकलन का आरम्भ किया जा रहा है। चैत्र मास की शुक्ल पक्ष में चैती तीज आती है। चैती तीज बालिकाओं एवं वयस्क महिलाओं द्वारा पृथक-पृथक मनाई जाती है। बालिकाएँ जहाँ इस पर्व को फूल पाती उत्सव के रूप में मनाती हैं। वहीं उनके गीत वयस्क युवतियों की भावनाओं का संकेत करते हैं। इससे लगता है कि इसका प्रारम्भ युवतियों द्वारा ही किया गया होगा। होली जल जाने के पश्चात् वसंत ऋतु के स्वागत में तीज के त्योहार का महत्त्व बढ़ जाता है। कुमारी कन्याएँ गीत गाती हुई बाग-बगीचों या नदी किनारे के कुंजों में जाती हैं। वहाँ भी गीत गाती हैं एवं तीज के प्रतीक तीन कलशों में वे वसंत की प्रतीक आम्र मंजरियों एवं आम्रपल्लवों को जल में विसर्जित करती हैं। यह आयोजन फूल पाती के नाम से जाना जाता है।

इसका दूसरा रूप गणगौर के रूप में भी जाना जाता है। इस दिन गणगौर को सजाया जाता है। 'गणगौर' का अर्थ है पार्वती और शंकर। गीतों के भावों से स्पष्ट हो जाता है कि इस उत्सव में पार्वती के गौने का चित्र संजोया गया है। कहीं तो केवल पार्वती की ही प्रतिमा बनाई जाती है, जबकि अन्यत्र पार्वती के साथ शंकर को भी बनाया जाता है। मालवी में इसे 'ईसर-गौर' या 'गौरां-पारबती' कहा जाता है। यहाँ 'ईसर' के रूप में महादेव को माना गया है और गौरां के रूप में पार्वती मानी गई हैं। कन्याएँ अपने सौभाग्य, सिन्दूर की आकांक्षा लिए पार्वती के गौने के उत्सव को मनाती हैं, 'ईसर' शब्द ईश्वर का अपभ्रंश रूप है। मालवा के प्राचीन किन्तु अवन्तिका

के ईश्वर रूप राजा महाकाल या शंकर ही माने गये हैं, ईसर जी की मूर्ति प्रत्येक गाँव के अनुरूप होती है। युद्धप्रिय जातियों में 'ईश्वर' के सिर पर साफा, शरीर पर बड़ा सा बागा और कमर में तलवार और ढाल बाँधी जाती है। जबकि 'गौर' को सामान्य मालवी स्त्री की तरह दर्शाया जाता है।

प्राचीन काल में गणों ने इस पूजा का आरम्भ किया होगा। उस काल में वसंत पूजा या वसंतोत्सव का अन्य उत्सवों की अपेक्षा अधिक महत्त्व था। विभिन्न ऋतुओं में 'वसंत' यौवन का प्रतीक है, जो त्योहार के रूप में अभिव्यक्ति पाकर स्त्रियों द्वारा धीरे-धीरे यौवन की सुरक्षा से निमित्त सौभाग्य रूपा गौरी-शंकर की जोड़ी की पूजा के रूप में अपना लिया गया है। तीज को उगते हुए गेहूँ के जवारों से पूजने का विधान है। इसलिए प्रकृति के नवोल्लास से इस पूजा का विशेष सम्बन्ध है। इनके गीतों में सामाजिक जीवन की नव गंगा और प्रेम की यमुना का प्रवाह विद्यमान है। वैसे भी गणगौर के गीतों में शृँगार रस की व्याप्ति पायी जाती है। एक गीत में एक नव विवाहिता कन्या का जीवन गृहस्थ के योग्य नहीं हो पाता। बाल चांचल्य की प्रवृत्ति इसमें बाधक बनती है। उसके पति ने एक पत्नी के होते दूसरा विवाह किया था। पति जब उससे 'अबोला' ले लेता है, तब उस षोड़शी के मन की टीस इन शब्दों में मुखर हो उठती है-

जी सायबा, खेलण गई, गणगौर,
अबोलो म्हांसे क्यों लियोजी म्हारा राज।
जी सायबा, अबोलो लेवे तो देवर जेठ,
मारूजी रूस्यां नी सरेजी म्हारा राज।
जी सायबा, एक चणारी दोय दाल,
दोय ने राखो सारखी जी म्हारा राज।

हे प्रियतम! मैं गणगौर खेलने गई थी, मुझसे आपने बोलना क्यों बन्द कर दिया है? हे प्रियतम! देवर और जेठ यदि न भी बोले तो भी चलता है, किन्तु पति का अबोला तो पत्नी के लिए असह्य हो जाता है। हे प्रियतम! हम दोनों सौत बहिनें एक चने की दो दाल सदृश हैं। आपको दोनों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

दूसरे गीत में नायिका अपने पति के प्रेम में अनुरक्त हो स्वयं से प्रश्न करती है-

कंई रे जुवाब करूं रसिया से,
दल बादल बिच चमके तारो।
तो सांज पड़्यां पिउजी लागे प्यारो।
जो करूंवा, जुबाब करूवां,
तो रसिया नैनां में लीज रहूंवा।
रसिया जी थांके कीने हो बिलमाया।

तो ल्होठी क्यां जातां बड़ी बिलमाया।
कंई रे गुंमान करूँ रसिया से।
भम्मर को कस टीका ने लईल्यो।
तो टीका को रस सायब मेल्यो।
कंई रे जुवाब करूँ रसिया से?

मैं अपने रसिया प्रियतम से क्या पूछूँ? जब आकाश में काले सघन बादल छा जाते हैं, तो उसमें दिखाई देने वाला एक तारा प्रिय हो उठता है। इसी प्रकार मुझ जैसी विरहिणी के लिए तो मेरा पति ही सब कुछ है। संध्या के ऐसे मौसम में तो प्रियतम ही अधिक प्रिय लगता है। मैं अपने प्रियतम से क्या पूछूँ, यदि मैं जोर जबरदस्ती करती हूँ या सवाल जवाब करती हूँ तो प्रियतम की आँखों में खटकती रहूँगी। हे प्रिय! आपको किसने भ्रमित कर दिया है? हाँ, अब समझ में आया कि मेरी छोटी सौत ने ही आपको मेरे विरुद्ध भड़का दिया है। मेरे ललाट के आभूषण का आनन्द टीका नामक आभूषण ने लिया है, किन्तु उसका भी आनन्द तो मेरे प्रियतम ने उठाया है। इसलिये मैं अपने प्रियतम से क्या-क्या बातें पूछूँ?

इसी प्रकार फूलपाती के अन्य गीतों में बिंदली जैसे आभूषण के गुम जाने का उल्लेख मिलता है। नायिका अपने प्रियतम से नई बिंदी बनवाने का आग्रह करती है। गणगौर के अन्य गीतों में नारी के श्रृँगार प्रसाधनों का बहुतायत से वर्णन मिलता है। एक सखी, गौरां को सम्बोधित करती हुई उनके शरीर के अवयवों के आभूषण घड़वाने का आग्रह कर रही है, यथा-

ऊबीरों गोरां बाई ऊबी रो,
थांका माथा ने भंवर घड़ाबादो।
थांका कानां ने झालज घड़ाबादो।
कंई जाणू ईसरजी कंई घड़ावे।
जल में झूलन जाबादो।
ऊबीरो गोंरा बई ऊबीरो।
थांका हिवड़ाने हांसज घड़ाबादो।
थांका मुखड़ाने बेसर घड़ाबादो।
थांका सरणाने सालू घड़ाबादो।
ऊबीरो गोरांबई ऊबीरो।
थांकी गोरां बई ने चुड़लो पिराबादो।
कंई जाणू ईसरजी कंई घड़ावे।
थांका पांवां ने पांयल घड़ाबादो।
थांका अंगल्या ने बिछिंया घड़ाबादो।

इस गीत में एक सखी पार्वती को सम्बोधित करती कहती है कि मैं तुम्हारे लिए ईसरजी

(महादेव जी) से कहकर आभूषण घड़वा देती हूँ। सिर के लिए भँवर, कानों के लिये झालज, वक्ष के लिये हंसली, नाक के लिये बेसर, शरीर के लिये साड़ी, बांहों के लिये चुड़लाज, तथा पैरों की अंगुलियों के लिये बिछिंया घड़वा देती हूँ।

हे बाई! मिट्टी की मूरत होकर कुँए पर क्यों खड़ी हो? सखी उसे झिड़कती हुई कहती है– हे मूर्ख! तुम यहाँ से चली जाओ। तुम्हें मेरी चिन्ता क्यों हो रही है? तब सखी फिर से कहती है–

गारा को गणगौर कुंवा पर क्यों खड़ीजी?
चल्यो जारे मूरख गंवार तुझे मेरी क्या पड़ीजी?
माथा ने भंवर घड़ावो तो रखड़ी जड़ाव काजी।
कानां झालजे घड़ाबोतो बेसर जड़ाव काजी।
हिवड़ा ने हांसज घड़ावो तो अंगिया जड़ाव काजी।
सरनां में सालू रंगावो तो केसरयां जड़ाव काजी।
गारा की गणगौर कुंवा पर क्यों खड़ी जी?
बईसा चुड़लों पिरावो तो गजरा जड़ाव काजी।
पगल्यां ने बिछिया घड़ावो तो अणवट जड़ाव काजी।
गारा की गणगोर कुंवा पर क्यों खड़ी जी?

प्रस्तुत गीत में रूठी नायिका को मनाने के लिए उसकी सखी कह रही है कि तुम्हें रूठने की आवश्यकता नहीं है। मैं तुम्हारे प्रियतम से कहकर तुम्हारे लिए आभूषण घड़वा देती हूँ। सिर के लिए भँवर और रखड़ी, कानों के लिए झालज, नाक के लिए मीनाकारी की गई नथ, वक्षस्थल के लिए हंसुली एवं सोना–चाँदी से जड़ी हुई कंचुकी, शरीर के लिए रंगीन केशरिया साड़ी, कलाइयों में चुड़ला और जड़ा हुआ गजरा, पाँवों के लिए तथा अणवट, अंगुलियों में पहनने की बिछिया और उसमें सुन्दर बजने वाले घुंघरू। हे मिट्टी की बनी गणगौर! तुम कुँए पर क्यों खड़ी हो? रूठी हुई क्यों हो?

नायिका के पीहर में गणगौर का उत्सव मनाया जा रहा है। वह अपने प्रियतम से एक–दो घड़ी के लिए उत्सव में जाने की आज्ञा चाहती है –

म्हारा दाऊजी के मांडी गणगौरां ओ रसिया,
म्हारा काकाजी के मांड़ी गणगौर ओ रसिया,
सुणोओ रसिया, घड़ी आतां लगे घड़ी जातां लगे,
म्हारी संग की सहेल्यां झोला खाय ओ रसिया।
म्हारा बीराजी के मांडी गणगौरां ओ रसिया।
म्हारा जीजाजी के मांडी गणगौरां ओ रसिया।
घड़ी दोय पूजण जाबा दो।

म्हारा मामाजी क्यां मांडी गणगौरां ओ रसिया।
म्हारा मासाजी क्यां मांडी गणगौरां ओ रसिया।
म्हारा फूफाजी क्यां मांडी गणगौरां ओ रसिया।
म्हारा पड़ोसी क्यां मांडी गणगौरां ओ रसिया।
घडी दोय पूजण जाबा दो।

नायिका अपने पीहर (मातृपक्ष) में गणगौर का उत्सव अपनी सखियों के साथ मनाना चाहती है। वह कहती है कि- हे प्रियतम! एक-दो घड़ी के लिए मुझे अपने भाई, काकाजी, जीजाजी, मामाजी, मासाजी, फूफाजी एवं पड़ोसी के यहाँ गणगौर मनाने की स्वीकृति प्रदान करें। मेरे साथ मेरी सखियाँ भी जाने का इन्तजार कर रही हैं। वहाँ आने-जाने में मुझे कुछ समय अवश्य लगेगा, किन्तु मैं अपना यह त्योहार वहीं मनाना चाहती हूँ।

दूसरे एक और गीत में यही भाव प्रदर्शित किया है-

खेलण दो गणगौर,
भंवर म्हने पूजन दो गणगौर।
हो म्हारी सहल्यां जोवे वाट।
बिलाला म्हने पूजन दो गणगौर।
मती पूजो गणगोर सुन्दरी,
भल खेलो गणगोर।
होजी म्हांने देवे लाड़न पूत।
अतर खाली भल पूजो गणगोर।

ऐसा ही एक गीत है, जिसे मालवी में तंबोल या आणा के नाम से अभिव्यक्त किया जाता है। महादेव अपनी प्रियतमा पार्वती का आणा लिवाने के लिए हिमाचल राज्य ससुराल में जाते हैं। वे कहते हैं- श्रावण मास लग गया है और मैं अपनी गवरजां को ले जाने के लिए आया हूँ। उनकी सास कहती है- अभी तो मेरी गोरलबाई (पार्वती) बहुत छोटी है। इसलिये आणा नहीं भेजना चाहती है। उसके सिर में अक्सर दर्द भी रहता है। तब महादेव जी कहने लगे- सासुजी उनके सिर दर्द को दूर करने के लिए मैं सतवा सूंठ मंगवाऊँगा। सास फिर कहती है- मेरी गोरल बाई को सोने की बहुत आदत है, इसलिये अभी आणा भेजना नहीं चाहती। इस पर महादेव जी उत्तर देते हैं - हे सासू जी! मैं आपकी लड़की के लिये पग-पग पर पलंग डलवा दूँगा। ताकि जब भी जहाँ भी कहीं नींद आये सो जायेगी। किन्तु आणा तो मैं लेकर ही जाऊँगा।

इससे दो बातें ध्वनित होती हैं। एक तो उमा की वय उस समय कम होगी। अल्पवय होने से बार-बार नींद आना स्वाभाविक है। दूसरे अल्प वयस्क विवाह होना भी जातिगत जीवन का तत्त्व प्रकट करता है। ये गीत जिस वर्ग विशेष से प्राप्त हैं, उनकी संस्कृति का दिग्दर्शन इसमें होता है, यथा-

ईस्वजी तम किनारो, नखेतर में आया हो राज।
म्हारा सासूजी आया हो सावण मास, अबे आणो लई जावां जी।
ईस्वर जी म्हारी गोरलबाई- नानी सी घणी।
अबी आणो नी मोकलां जी।
ईसरजी म्हारी गोरलबई को, माथो घणो दुखे हो,
अबी आणो नी मोकलां जी।
म्हारी सासू बई, लावांगां अदवा - सदवा सूंठ,
अबे आणो लई जावांजी।
ईस्वर जी म्हारी गोरल बई-तो घणां हो निंदालू।
अबी आणो नी मोकलां जी।
म्हारी सासूबई - पांव-पांव,ढोल्या ढळवावां हो राज।
अबे तो आणो लई जावां जी।

चैत्र मास में स्त्रियाँ प्राय: ख्याली गीत गाया करती हैं। इसकी लोकधुन बड़ी मनमोहक होती है। कभी-कभी ख्याली गीतों को नाच की धुन पर भी गाया जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं। प्रथम तो चैत्र में गाये जाने वाले। दूसरे विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले सुहाग कामण गीत होते हैं। ऐसे दो गीत यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। एक नायिका अपनी किस्मत को कोसती हुई कहती है कि क्या करूँ अब तो मेरे प्रियतम अपने हाथों में मिठाई का दोना लिये गणिका के घर जाने लगे हैं। मैंने उन दोनों को एक साथ स्नान करते-करवाते देखा है। यदि उनसे कहती हूँ तो तो वे कसम खाकर कहते हैं कि ऐसा कहना सच नहीं है। मैंने तो उन दोनों को एक साथ भोजन करते देखा है। उन्हें अपने हाथों में शर्बत लिये, पान के बीड़े लिये, गणिका के घर जाते देखा है। यही नहीं चौपड़ एवं बिस्तर तक ले जाते हुए देखा है। नायिका का यह आरोप नहीं, सच्चाई है जो उसके मन को कचोट रही है। वे समस्त शृँगारिक उपकरण जो उन्हें गणिका के यहाँ मिलते हैं, वे घर में होने के बावजूद, उनका उस पर इस प्रकार आसक्त होना, मेरे लिए दुर्भाग्य का सूचक ही कहा जा सकता है, यथा-

कंई करूँ किस्मत बुरी हें, दिन बुरे आने लगे हें।
हात में साबन लिये, रंडी के घर जाने लगे हें।
न्हाते निहलाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगे हें।
जीमते-जीमाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगे हें।
हात में बीड़े लिए, रंडी के घर जाने लगे हें।
पीते-पिलाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगे हें।
चाबते-चबाते हमने देखे फिर कसम खाने लगे हें।
हात में चोपड़ लिए रंडी के घर जाने लगे हें।

दूसरा गीत नाच और ख्याल का समन्वित रूप प्रस्तुत करता है। इसमें नायिका उपालंभ

देती कहती है कि मेरे सायब का व्यवहार मेरे प्रति रात्रि को और कुछ होता है, जबकि दिन में कुछ और होता है। रात्रि में जहाँ वे मेरे लिये आभूषण घड़वाने का वायदा करते हैं, दिन निकलते ही इन्कार कर देते हैं, यथा–

रात कहे गोरी, भंवर घड़ावांगा,
रात कहे गोरी, झालर घड़ावांगा।
दन उगे नटी जाय जी ननदिया।
ऐसो दगा बाज थारो भाईरी ननदिया।
रात कहे गोरी रखड़ी मंगवाउंगा,
रात कहे थारे हरवा ने हांसज मंगावांगा।
दन उगे नटीजाय जी ननदिया।
ऐसो दगा बाज तेरो भाईरी ननदिया।

चैत्र की पूर्णिमा को आशा को देवी मानकर उसका लौकिक नाम 'आसा माता' रखा गया है। इस पर्व विशेष पर इनके नाम की कुंडी रखी जाती है। मिट्टी के दो पात्रों में पूड़ी–भजिये अथवा आटा भर दिया जाता है। इस आटे की रोटी नहीं बनाई जाती। चौकोर आकृति में स्थान विशेष को लीपकर उस पर ज्वार के अक्षत रखके पट स्थापित किये जाते हैं। अन्न कणों को नाश नहीं होता, इसलिए इन्हें 'आखा' या 'अक्षत' कहा जाता है। 'आशा नाम मनोरथ नदी' के अनुसार यह एक मनोरथ रूपी नदी के समान है। मन की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली यह देवी मानी गई है। कलश के ऊपर स्वस्तिक की आकृति उकेरकर उसके मुँह पर लाल धागा बाँधा जाता है। पारिवारिक सुख समृद्धि एवं कल्याण की भावना के प्रतीक ये उपक्रम हैं। मालवा के कृषक समाज में अन्न को अन्नपूर्णा देवी या लक्ष्मी के रूप में मान्यता प्राप्त है। घर में यदि ऐसी लक्ष्मी नहीं तो सुख समृद्धि भी नहीं, यथा–

पूनम थी बेसाग की बऊ सोच करे मनमांय।
म्हारा प्रीतम अनखावे ने जावे जंगल मांय।
पण उणके भोजन नी मिलियो झूंटो ही खाग्या।
सबने खाया पूड़ी भज्या पति ने कोरा खाया।
गोरी के असरूपत देखी ने गणी बांधी फेंटा मांय।
जई पोंचा जंगल में वीतो एक मर्‌यो जां राजो।
दूजा की खोज करीरया था वी वोयो लड़को आग्यो।
राज पूत हूं या केतांई अणीयें राजो बणादयो।
घर में ओंकी दसा बगड़गी खाणो मलनो कठण।
परवार छोड़ी ने छोटो छोरो आयो राज मगन।
अनमानेती छाच दूद ने ले जावेगी उणको।

पूनम आवी तो लड़काने सोचो अन मानेती नवाड़े।
वा आवी ने पीठ मालती ने देख्यो गणी बंधी थी।
उणकी आंखां से टपकीग्या आंसू सा मोती।
दोई जणा मिल्या वसा बिगड़ी सुधरे सबकी।

इस कथा में आशा के पूर्ण होने की भावना विद्यमान है। पारम्परिक रूप से यह कथा आशा माता के दिन ही कही जाती है।

चैत्र मास में अखिल भारत वर्षीय त्योहार राम नवमी मालवा में भी बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। भगवान राम के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व सम्बन्धी लोक गीतों की अजस्त्र गंगा प्रवाहित की जाती है। पूरा मालवा ही इस त्योहार पर 'रामगंगा' में डुबकी लगाता प्रतीत होता है। इसी प्रकार गाँव-गाँव में भगवान राम की लीलाओं का प्रचार-प्रसार राम लीलाओं के माध्यम से किया जाता है। ऐसे ही दीपावली पर रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है।

राम कथा तो सबने गायी है, किन्तु मालवी लोकगीतों के जरिये रामकथा अनूठी बन गई है। इनमें भगवान राम के जीवन की झाँकियों के मर्यादित रूप उपलब्ध नहीं होते। किन्तु लोक जीवन के आनन्दकारी चित्र अधिक मुखर रूप में पाये जाते हैं। राम का शास्त्रीय और मर्यादित रूप इनमें गौण हो गया है। मालवी लोक संस्कृति की मान्यताओं में लिपटे 'राम' नयनाभिराम रूप में हमारे सम्मुख प्रकट हो जाते हैं। कहीं वे हरिमन तोता पालते हैं तो कहीं हनुमान के द्वारा सीता के पास चिट्ठी भिजवाते हैं। कहीं सीता को धमकी देते हैं तो कहीं माता कौशल्या को पाई भर कोदरा देकर अलग हो जाने की बात कहते हैं। कहीं बागों में खिले लाल फूलों में जानकी की शोभा देख विलाप करते हैं, तो कहीं लक्ष्मण झीणा मोर पालते हैं। कहीं सीता चाँदी-सोने के घड़े-बेहड़े लेकर पनघट पर पानी भरने जाती है, तो कहीं कुल देवता सूर्य का पूजन कर अपने परिवार की मंगल कामना चाहती है। ऐसे कई चित्र मालवी लोक साहित्य में भरे पड़े हैं, जिनमें न केवल ईश्वर भक्ति सम्बन्धी धारणाएँ मिलती हैं, वरन् आदिम मानस के लोक विश्वासों, अंध विश्वासों, लोक प्रथाओं, रीति-रिवाजों एवं रूढ़ियों का सांस्कृतिक आकलन मिल जाता है।

लोक रामायण की पृष्ठभूमि व कथा के विकास में गणपति वंदना का लोकरूप प्रस्तुत है-

सिरी गणपत का ध्यान लगाकर, गुरु को सीस नमाता हूँ।
नारद सारद सेस महेश में, सबको विनय सुनाता हूँ।
निरमल दीजे ग्यान हो, मईमा करूँ बखान हो।
जे हो तेरी गोविन्दा, भगतों के भगवान हो।
हात जोड़कर गिरजा पूछे, विस्वनाथ केलासी हो।
किसका धरते ध्यान आप या, बतलई दो अवन्यासी हो।
राम चंदर अवतारी हे, या कोई लीला धारी हे।

भगवान रामचन्द्र जी भक्तों के दुख दूर करने के लिये अवतार रूप में माता कौशल्या के गर्भ से प्रकट हुए। एक गीत में इसका सुरुचिपूर्ण चित्र इस प्रकार उपलब्ध है–

जनम लियो मेरे रघुराई, अवधपुरी में बहार आई।
कौशल्या की किस्मत जागी, मात सुमितरा बड़ भागी।
कलियों ने घूँघट खोले, बादल ने रिमझिम लाई।
अवधपुरी में बहार लाई।

अवधपुरी में भगवान राम का जन्म होता है। लोक कल्याण के लिए ज्योंही वे अवतरित हुए, अयोध्या इन्द्रपुरी बन गई। विश्वामित्र एवं कौशल्या के भाग्य प्रबल हुए। माता सुमित्रा का भविष्य उज्ज्वल हो गया। बागों में फूल खिलने लगे। मंद–मंद वृष्टि होने लगी।

इसी बीच एक घटना घटित हो गई। दशरथ के हाथों श्रवण कुमार का वध हो गया। उनके माता–पिता ने शाप दे दिया कि जिस प्रकार पुत्र वियोग में हम प्राणों का त्याग कर रहे हैं, वैसे ही तुम भी त्यागोगे। यथा–

जा पहुंचे सरजू तीर, भरन कूं नीर,
बिपद का मारा, जल भरने चला बिचारा।
वो मात पिता के प्यारे थे, जब प्राणों से भी प्यारे थे।
कावड़ को छोड़कर सरजू तीर सिधारा,जल भरने चला बिचारा।
जब जल में तुम्बा डुबोया था, बुल बुल ने सबद सुनाया था।
दसरथ ने तीर चलाया था,
तब हा–हाकार मचाया था।
हे दुष्ट कसूर बिना क्यों तू ने मारा, जल भरने चला बिचारा।
दसरथ तुम्बा भर लाये थे, बेनोई ने नई पेचाना था।
दुनिया से चला गया सरवन पुत्र तुम्हारा, जल भरने चला बिचारा।
तू सुन ले दसरथ शाप मेरा, बन जाएगा पुत्तर कभी तेरा।
पुत्तर के वियोग में प्रान जायगा तेरा, जल भरने चला बिचारा।

श्रवण कुमार अपने माता–पिता के लिए तुम्बा लेकर सरजू नदी में पानी भरने चले। ज्योंही तुम्बे को नदी में डुबोया, उससे बुड़–बुड़ की आवाज निकली। उसी समय दशरथ जी शिकार हेतु नदी के किनारे खड़े थे। अंधकार में कुछ देख न सके। किन्तु जिधर से आवाज आई, उधर ही शब्द बेधी बाण छोड़ दिया। फलस्वरूप श्रवण कुमार का वध हो गया। श्रवण के माता–पिता के पास जब वे जल लेकर पहुँचे उन्होंने आवाज बदली समझ, दशरथ से मरण समाचार सुनकर शाप दे दिया कि हम जिस प्रकार अपने पुत्र के वियोग में अपने प्राणों का त्याग कर रहे हैं, वैसे ही तू भी त्यागेगा।

दशरथ शाप सुनकर सन्न रह गये। अस्तु विधि के विधान को लखकर मौन रहे। दशरथ के घर शिशु बड़े होने लगे। कौशल्या अपने राम को पलने में झुला रही हैं। सखियाँ उन्हें झूले दे रही हैं। राम की आँखें आ जाने से वे रोने लगते हैं। कौशल्या उन्हें किसी की नजर लगी समझ, उस पर राई नमक की वारना करती हैं। लोक तत्त्वों से भरपूर गीत की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

मचले राम कोसल्या की कड़ियाँ,
म्हांके राम के घने पालना, झूले राम झुलावे सारी सखियाँ,
म्हांका राम की आई अखियाँ, रोवे राम नी बेठे कड़ियाँ।
कोई गुजरिया की नजर लगी हे, मचले राम नी बेठे कड़ियाँ।
राई लूण उतारो कोसल्या, सुखी होय रामनी रोवे मचियाँ।
खुल गई अखियाँ लाल करे बतियाँ, मचले राम कोसल्या की बईयाँ।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारों भाई कुछ बड़े हुए। वे भोजन करने लगे। राम कलेवा के माध्यम से लोकगीत में राम के बचपन के सुन्दर चित्र मिलते हैं। कौशल्या माता राम का नाम ले–लेकर जोर–जोर से पुकार रही हैं। ओ अवध बिहारी! आओ भोजन करो। अरे भरत! आओ भोजन करो। लक्ष्मण आओ। चारों भाई भोजन करने बैठे। माँ पूछती हैं – तुम्हें क्या परोसूँ? गर्म–गर्म मालपुवा, गर्म जलेबी या सीरा, मोती चूर या मगद के लड्डू या गर्म–गर्म बरफी।

कौशल्या जी ने उसी समय राम की रुचि अनुसार गाय का कच्चा दूध (मिश्री मिला हुआ) पीने को दिया। जनक दुलारी सीता जी सोने की झारी में गंगा जल भर लाई? भोजनोपरान्त ताम्बूल भक्षण किया। चारों भाई फिर चौपड़ खेलने लगे। सोने की सार, जड़ाव के पाँसे मंगवाये गये। माता कौशल्या चारों भाईयों की बाल क्रीड़ा देख आनन्दित हो अपना जन्म सफल कर रही हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से राम कलेवा का चित्र उकेरा गया है–

ऊँची–ऊँची टेरे पुकारे कोसल्या, हो आवो अवध बिहारी जी।
राम जी, रामे ओ लछमन–भरत–सतरुघन, अई बेठ्या चांरू भाई जी।
रामजी, ताता ताता मालपुवा, तुरत जलेबी, तो सीरो सरस मिठाई जी।
रामजी, मोतीचूर मगद का लाडू, बरफी गरम मिठाई जी।
राम जी काचो दूद धेन गोरी को, हो जी मांय मिसरी मिलाई जी।
राम जी सोना की झारी गंगा जल पाणी, तो भरलाई जनक दुलारी जी।
रामजी पाकेरी पान कलई का चूना, जी मांय लोंग सुपारी जी।
राम जी सोना की सार जड़ाव का पांसा, तो खेले अवध बिहारी जी।
राम जी जां जां चरण धरया ठाकुर ने, हो सफल भई या धरती जी।
राम जी धन्न म्हारो भाग राम घर आया, केत कोसल्या माई जी।
रामजी जां–जां चरण धर्‌या रघुबर ने, तो घर–घर अणंद बधाई दी।

लोकगीतों में लोकजीवन के लोकतत्त्वों का प्रकटीकरण हुआ है। भोजन सामग्री के नाम परिगणन की यह परम्परा लोक जीवन से ही शिष्ट साहित्य में पहुँची है। जायसी, सूर, तुलसी तथा परवर्ती कवियों ने भी इसी परम्परा को अपनाया है। गीत में सोने की सार,सोने की गोटे, जड़ाव के पाँसे, सोने की झारी, सोने की बाजोट, पक्का पान, कलाई का चूना जैसी वस्तुओं से यहाँ राजसी वातावरण की सृष्टि हुई है, वहीं ये पारम्परिक रूढ़ियाँ भी मानी जाती हैं। हीड़ में एक पंक्ति आई है, जिसमें देवनारायण को सोने के बाजोट पर बिठलाकर स्नान करवाया जाता है। यथा– 'सोना का बाजोट नारण हांपड़ें–हीड़।'

राम कुछ और बड़े हुए, विश्वामित्र मुनि के आग्रह पर गुरु वसिष्ठजी के आदेश से मुनि के साथ उनके यज्ञ की रक्षा के लिये राम को भेज दिया गया। राक्षसों का वध करने के उपरान्त मुनि के साथ मिथिला की ओर प्रस्थित हुए। रास्ते में उन्हें एक विचित्र सी शिला दिखाई दी। राम ने विश्वामित्र जी से इसका भेद पूछा। इसी प्रसंग को मालवी महिला समाज ने अपने लोक गीतों की कड़ियों में आबद्ध किया है।

गीत के भाव हैं – गौतम ऋषि एक बार गंगा स्नान करने को गये। अक्सर प्रतिदिन उनका यही क्रम था। जैसे ही उन्होंने गंगा जल का स्पर्श किया। स्त्री वेशधारी गंगा, ऋषि को सम्बोधित करके कहने लगी– हे ब्रह्मचारी! तुम्हारे घर में तुम्हारी स्त्री महा छिणगारी (कुल्टा) है। तुम्हारे घर में चोर लगा हुआ है। वह तुम्हारी स्त्री के साथ कपट करके उसका सतीत्व नष्ट कर रहा है। गौतम ऋषि के कान खड़े हो गये। कुछ तो नहाये, कुछ नहीं। गीली धोती कन्धे पर डाले अपने घर को लौटे। आँगन में आकर देखा – सतीत्व लुटाये पत्नी अहिल्या खड़ी थी। उन्होंने ध्यान लगाकर सारी घटना की जानकारी ले ली। तब क्रोधित हो सात लात इन्द्र को मारी। पत्नी को भी तब शाप दिया कि तुम अंजनी होकर कुँवारी ही पुत्रोत्पन्न करोगी।

अहिल्या ने प्रार्थना की– हे नाथ! मैं इस जन्म की आपकी दासी हूँ। एक दाग तो चन्द्रमा को भी लगा है। मुझे क्षमा करो। गौतम ने कहा– त्रेता में भगवान राम तुम्हारा उद्धार करेंगे।

प्रस्तुत गीत में दो भाग हैं। पहिले में अहिल्या के साथ इन्द्र का सन्सर्ग और गौतम शाप का वर्णन है। दूसरे में, त्रेता में राम द्वारा अहिल्योद्धार का प्रसंग है। गीत में कुछ लोक जीवन के प्रसंग भी मिलते हैं। अर्द्धरात्रि में मुर्गे का बांग देना, गंगाजी का मानवीकरण होकर मुँह से बोलना, पानी से पृथक उनका अस्तित्व प्रदर्शित करना। गौतम ऋषि को इस बात की सूचना देना कि गंगा नहाने आये हैं, किन्तु उनकी पत्नी का सतीत्व लुट चुका है। कथानक रूढ़ियों के अंतर्गत आता है। गीत की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

रूषि ने शिला कर डाली रे गोतमजी की नारी।
आदि रात के मुरगो बोल्यो गोतम करी तयारी।
जाय गंगाजी के हात लग्यो –

गंगा तो सूती रामा जल से हो न्यारी।
गोतमजी की नारी।
गंगा माता यूं उठ बोली- सुणरे ब्रह्मचारी,
तेरा घर में कपट हुवा हे, तेरा घर में चोर लग्या हे,
तेरी तो नारी रामाऽऽ महा छिनगारी
गोतम जी की नारी।
कुछ न्हाया, कुछ न्हावण नी पाया।
कांधे डाली धोती।
आय आंगण में देखन लाग्या,
आंगण तो ऊबी रामा अकल गंवारी,
गोतमजी की नारी।
साते लात इन्दर के मारी चन्दा पवड़ी मारी।
जावो अंजनो तुम वन को सिधारो
पुत्तर खेलाओं रानी अकल कुंवारी।
गोतमजी की नारी।
इस जुग की में नारी आपकी गति तो करी हमारी
एक दाग चंदा के लगायो,
जुग से तो करदी रामा मोंहे न्यारी।
गोतमजी की नारी।
तिरता जुग में रामचन्दर-लछमन,
वी होगा ओतारी।
तुलसीदास आस रघुवर की
करलो जनकपुर का ब्याव की तयारी
गोतमजी की नारी।
पूछत राम कोन तू नारी
यां रस्ता में काय कूं सूती
कोन पाप कियो भारी?
सिला रूपी केसी बुद होई
कोन तो माता तेरी, कोन पितारी।
बिस्वामित्र हँसी के बोल्यो,
गोतमजी की नारी।
ब्रह्म देव ने जनम दियो हे,
इंदर ने छल कियो भारी
तुलसीदास आस रघुवर की,

हरिचरनन बलिहारी।
तुलसीदास भजो भगवाना,
करलो जनकपुर चलन तयारी।
गोतमजी की नारी।

विशेष : प्रस्तुत गीत में लोकतत्त्वों का प्रकटीकरण हुआ है। प्रकृति का मानवीकरण, वेश परिवर्तन, लिंग परिवर्तन, परकाया प्रवेश, अमूर्त का मूर्त होना, कथाभिप्राय विकसित करने वाले तत्त्व हैं। इसी प्रकार गीली धोती कंधे पर डालना, ब्रह्मचारी, होना धार्मिक रूढ़ि है। एक दाग चंदा के लगायो – पंक्ति में अर्थ व्यंजकता है। दाग होने पर भी चन्द्रमा शोभा देता है। लोक परम्परा का आदर्श उपस्थित करता है। (सरसिज मनु विद्ध शैवलेना पिरम्यं – मलिन मपि हिमांशोलक्ष्म – लक्ष्मी तनोति– अभिज्ञान शाकुंतलम्) लोक परम्परा का आदर्श है कि लौकिकता में नारी द्वारा अनजाने होने वाला अपराध भी क्षम्य हो सकता है। 'सात लात इन्दर के मारी' पंक्ति में लोक जीवन का आक्रोश व्यक्त हुआ है। साथ ही पारम्परिक कथानक का लोप हुआ है। इन्द्र को हजार भग हो जाने का शाप यहाँ उतना महत्त्वपूर्ण नहीं हैं – जितना दुष्टों को तुरन्त दंडित कर, क्रोध भाव की व्यंजना की है। 'सात लात' संख्या ज्ञान का सूचक है। 'सात सइयर जल भरवा जाय – रढ़ियाली रात।' 'अत्तीस बत्तीस बेनड़ी ने छप्पन करोड़ जमाई लख्या – रढ़ियाली रात।' आदिम जातियों में हाथ पैर के अंगूठों को लेकर संख्या का निर्धारण किया जाता है। (इ.बी.टेलर, एन्थ्रोपोलॉजी, पृ.–62) पाँच मोहर को कसूमल मंगायो पाँच रुपया का बतासा मंगाया, दीजो नगरी में बंटाय म्हारा मारूजी (डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय के अप्रकाशित गीत संग्रह से) (प्रियतम के पत्र पढ़ने के लिये दीप संजोने में सवामन तेल की आवश्यकता होती है, यथा – उठो दासी दीवड़ियो अंजवासो, अधमण इनीकरी छवाय जेरे, सवामण तेल व रगड़्यो रे लाल) (रढ़ियाली रात) दीपक भी मिट्टी के नहीं, सोने–चाँदी के होते हैं (चूनड़ी, भाग 9, पृ.–58)।

राम–लक्ष्मण गुरु विश्वामित्र जी के साथ जनकपुर पहुँचे। प्रथमतः राजा जनक जी के पुष्पोद्यान की शोभा देखने पर पहुँचे। उधर जनकपुर में विवाह की तैयारी हो रही है। अयोध्या से भी बारात सजा–धजाकर दशरथ जी आ रहे हैं। इधर दुलहिन बनी सीता जी गौरी पूजन हेतु पुष्पोद्यान में पहुँचती हैं। हे सरदारों! आप बारात में घोड़ा, कटार और बसन्ती वर्ण की जोड़ी लेकर आइये। सीताजी कहती हैं– हे प्यारे! मैं तुम्हें मना करती हूँ। तुम उदयापुर में न जाना, क्योंकि पूर्वाचल की कामनियाँ कामण करके मनुष्य को अपने वशीभूत कर लेती हैं। वहाँ की कामनियाँ तुम्हें मुग्ध करके वहीं बिलमा देंगी, यथा–

राजा जनक को फूलां लदियो हरियालो बाग।
बनाऐं लुभाय रह्यो जी।
जनकपुर को मांडो अने अजुध्याजी की बारात।
परण ने चाली सीताजी ने दूलो सिरी भगवान।

हाथी लाजो, घोड़ो लाजो, ओर लाजो कमर कटार।
जोड़ी बसन्ती लाजोजी आप सरीका सिरदार।
में तो बरजूं सायबा ने उदयापुर मती जाजो।
उदयापुर की कामणी जी लेगी वां बिलमाय।

पुष्पोद्यान के अवलोकन व सीता जी के पुर्वानुराग के पश्चात् रामचंद्रजी अपने लघु भ्राता लक्ष्मण के साथ गुरु की आज्ञा पाकर नगर भ्रमण को निकले। जनकपुर की नारियों ने उनका रूप देखा तो विमोहित हो गई। प्रस्तुत गीत में उनका सौंदर्य वर्णन अवलोकनीय है। गीत का लालित्य सूर के पदों से कहीं आगे बढ़ा हुआ है। राजसी वेश का सुन्दर चित्रात्मक वर्णन देखिये–

सखी री दो कुंवर सुन्दर, मनोहर आज आये हें।
गुरु की शिक्षा हे अम्मर, उन्हें महाराज लाये हें।
अयोध्या धाम हे जिनका, मेरे दिल में सुहाये हें।
बड़े कूं राम कहते हें, लखन हे नाम छोटे का।
पिता का नाम हे दशरथ, जो घर घर में समाए हें।
सखी री दो कुंवर सुन्दर, मनोहर आज आये हें।

दूसरे एक गीत में बनड़ा के रूप में राम की शोभा का वर्णन किया गया है।

लूमी रया माराज बनड़ा, मचल रया माराज जी।
राजा जनक जी री पोळ, बनड़ा लूमीरया माराज जी।
राजा जनकजी यूं उठ बोल्या, कन्या नें दो परणाय जी।
कंई तुमारा गाम बनड़ा, कंई तुमारा नाम जी।
पुरी अजोध्या गाम म्हांका, रामचन्दर म्हारो नाम जी।
आगे आगे ढोल बाजे, पाछे सहेल्यां रो साथ जी।
जीं के पाछे चले जानकी, मंडप लियो उठाय जी।
राजा जनक जी री पोर बनड़ा, लूमीरया माराज जी।

एक और बनड़ा गीत में रामचन्द्रजी की सुन्दरता का वर्णन मिलता है। इस गीत में ग्राम प्रथा के रूप में उन्हें अल्प वयस्क बताया जाता है। बनाजी से सिर पर पगड़ी सुशोभित है, उनका अंगा बहुत सुन्दर बना है। उसमें खीसा (जेब) भी लगाया गया है, यथा–

बनाजी की सोभा बरनी न जाय,
माराज बालक बनड़ो,
बनाजी तम देवी कोसल्या घरे जनमिया,
कोसल्या ने रमाया गोद।

माराज बालक बनड़ो।
बनाजी थारी पगड़ी अजब बनी,
थारो जामो सीण्यो अजब बहोत,
माराज बालक बनड़ो।
बनाजी तम अंगो पेरो भारी,
जीमें खीसो बोत अजब।
माराज बालक बनड़ो।
बनाजी हम जनकपुरी की नारी,
हम लागां तुमारी सारी।
माराज बालक बनड़ो।

मालवा और राजस्थानी लोक संस्कृति में विशेषकर मारवाड़ी समाज में दूल्हा-दुल्हिन के लिए 'बन्ना-बन्नी' शब्द व्यवहृत किया जाता है। दोनों प्रदेशों की संस्कृति में बना-बनी को लेकर कई एक लोक गीत गाये जाते हैं। मालवी में भी ऐसे अनेक गीतों का प्रयोग प्रचलित है। चूँकि प्रतिपाद्य विषय यहाँ राम से सम्बन्धित है। अत: बना या बनड़ा गीतों को ही प्रस्तुत किया जा रहा है। इतिहास के ज्ञान का अभाव और बाल विवाह प्रथा का अस्तित्व दोनों विशेषताएँ कतिपय गीतों में मिलती हैं। राम को यहाँ बाल रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। मेरा दूल्हा बालक है, उसका जन्म कौशल्या के घर हुआ है। कौशल्या ने उसे गोद में खिलाया है। हे प्यारे वर! तुम एक बड़ा अंगा पहिने हुए हो, जिसमें विचित्र जेब है। हे प्यारे बना! हम जनकपुर की स्त्रियाँ हैं और सम्बन्ध में तुम्हारी साली लगती हैं।

मालवा में गाली गाने की प्रथा है। यह लोक संस्कृति का एक अंग है। गाली गीत हँसी-ठिठोली का एक रूप प्रस्तुत करते हैं। राम की बारात के द्वारचार होने पर स्त्रियों द्वारा उनकी शोभा का वर्णन गाली नामक लोक गीत के माध्यम से किया जाता है। कहती हैं- हे प्रियवर! हम हँस-हँसकर व्यंग्य में तुम्हारी विशेषताओं का वर्णन करती हैं। हे वर राज! तुम राजा दशरथ के अत्यन्त प्रिय हो और कौशल्याजी ने तुम्हारा पालन-पोषण लाड़-प्यार से किया है। हे वर! तुम जनकजी को भी अत्यन्त प्रिय हो और दुलहिन भी अनुरक्त है। हे प्यारे! तुम बुआजी को बहुत प्रिय हो और फूफाजी ने तुम्हें बड़े चाव से खिलाया है। तुम काकाजी को अत्यन्त प्रिय हो और काकीजी भी तुमसे अत्यन्त स्नेह रखती हैं, यथा -

तोकूं हँस हँस गारी गावां हो राज,
बालक बनड़ो।
बनाजी तम राजा दसरथ का प्यारा,
कोसल्या लाड़ लड़ायो महाराज
बनाजी तम राजा जनक जी का प्यारा

बनड़ी ने लाड़ लड़ायो माराज,
बनाजी तम भुवाजी का प्यारा,
फूफाजी तम काकाजी का प्यारा
बनाजी तम काकीजी का प्यारा,
काकी ने लाड़ लड़ायो माराज।

एक गीत के माध्यम से मालवी लोक प्रथानुसार गाली का वर्णन किया जाता है। मालवा में जमाई या बिहाई के आगमन पर घरों में गाली गीत गाये जाते हैं। गाली के माध्यम से उनका गुणगान, प्रशंसा, स्तुति, निंदा और सौन्दर्य का वर्णन किया जाता है। ऐसे प्रसंग बड़े रोचक होते हैं। पास–पड़ोस की स्त्रियाँ इस लोकोत्सव में भाग लेती हैं, उन्हें लोकाचार के अनुसार जंवाई या बिहाई पक्ष की ओर से बताशे–गुड़ या प्रसाद बँटवाया जाता है। गीत प्रस्तुत है–

ऐ ऐ ऐ रामचन्दर जी लाड़ेला
कोसल्या रा जाया रे,
सियावर लागो प्यारा
रघुवर स्याम हमारा।
भरतजी म्हारा, लाड़ला, केकई का जाया रे,
सियावर स्याम हमारा – हां रघुवर नाम प्यारा
सतरुघन जी लाड़ला रे, दसरथ का जाया रे,
सियावर स्याम हमारा, हां रघुवर लागे प्यारा।

एक ओर बनड़ी के गीत में मालवी लोक संस्कृति के अनुरूप रामचन्द्रजी दूल्हा बने हैं। उनके आभूषण भी मालवी संस्कृति के अनुरूप ही हैं। गीत के भाव हैं – मेरा वर जो अयोध्या निवासी है, आज मेरे आँगन में खड़ा है। उसके गले में कंठा (हार) और पाँव में साँकल सुशोभित है। वह कानों में कुंडल और बालियाँ पहने है। वह बेड़ी, तोड़ा, चूड़ा तथा छल्ला आदि आभूषण पहिनकर आँगन में खड़ा है, यथा–

म्हारो बनो अजोध्या वारो, वो खड़ो हें मेरे अंगना।
मेरे बने के कंठो सोवे ओर सोवे सांकलो।
म्हारा बना के कुंडल सोवे ओर सोवे मुरकी।
म्हारा बना के बेड़ी सोवे ओर सोवे तोड़ा।
म्हारा बना के चूड़ो सोवे ओर सोवे छल्ला।
म्हारो बनो अजोध्या वारो ठाड़ो हे मोरे अंगना।

मालवी लोक संस्कृति में दूल्हे के द्वार पर पहुँचने पर 'द्वारचार' नामक लोकाचार सम्पन्न किया जाता है। यहाँ भी राजा जनक के द्वार पर दूल्हे के वेश में रामचन्द्र जी बहुत काल से

उपस्थित हैं और वे वहाँ मचल रहे हैं। इस दशा को समझकर सीताजी सखियों को सम्बोधित कर कहती हैं कि योग्य विचार करके तुम जनकजी की प्यारी पुत्री का विवाह रामचन्द्र जी से क्यों नहीं कर देती हो? इस विवाह में दोनों वर-वधुओं की स्वीकृति है। इसमें ध्वनित होता है कि महान योद्धाओं को साथ लिये अनेक राजा, द्वार के तोरण पर आये हैं। सब लोग राजा जनक जी से विचार कर सीताजी का विवाह रामचन्द्र जी से करने के लिये निवेदन करते हैं। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों के मस्तक पर विवाह के मोड़ सुशोभित हैं। इस गीत में 'बरोठे' प्रथा का वर्णन किया गया है।

इस समय कन्या के माता-पिता और सम्बन्धियों के मन में जो संकल्प-विकल्प होते हैं, उसी का वर्णन गीत में किया गया है-

राजा जनक की पोळ बनड़ो, बिलय रयो माराज जी।
राजा जनकजी री पोळ सियावर मचल रयो हे जी।
सखियन सों सीता यूं कहेजी कंई अब तम करोनी विचार,
राजा जनकजी की लाड़ली जी कंई तोरण आये भूप।
राजा जनकजी से यों कह्यो के अब तम करोनी बिचार,
राजा जनक री लाड़ली जी कंई रामचन्द्र के दो परणाय।
बड़ा बड़ा जोधा संग लिये जी कंई तोरण आये भूप।
राम, लक्ष्मण, भरत, सत्रुघन चारी के सिर मोड़।
बनड़ो बिलम रयो जी।

एक और बनड़ा गीत देखिये-

राजा जनकजी री पोळ बनड़ो,
बिलम रयो माराज जी।
स्याम सलोणा सांवलाजी, कांई घूंघर वाला केस।
कांसे पूछूं ऐ सखी री, बसे कणीरा देस?
उतरारे खंड अजुध्या नगरी, बेटा दसरथ का।
राम, लक्षमण, भरत, सतरुघन
चारी उणांका सिर मोर,
सब सखियन से सीता कहेजी,
म्हारो बर हे सांवरो, होय दूज की तीज,
बनड़ो बिलम रयो हे जी
राजा जनकजी री पोळ बनड़ो -
जरकस का जाया बण्यांजी
कांई जरकस की वणी हे पाग।

गले बीच मोतियन की माल
बनड़ो बिलमरयो जी।

उपर्युक्त पंक्तियों में यह प्रसंग रामचन्द्रजी के विवाह के उपलक्ष्य में प्रस्तुत किया गया। मालवी लोकाचार रीति-रिवाज, परम्पराओं तथा रूढ़ियों के अनेक चित्र इन गीतों के माध्यम से दृष्टिगत होते हैं। जनकपुरी में राम का विवाह होने जा रहा है। दशरथ जी बारात सजाकर आ गये हैं। रामचन्द्रजी धनुष तोड़ चुके हैं, राम के अलौकिक वेश को देखकर सीजा जी ऐसी ठगी रह गई कि जयमाला उनके हाथों में ही रह गई। अस्तु विवाहोपरांत बारात अयोध्या लौट आई। घर-घर मंगलाचार होने लगे। कौशल्या माता ने राम से पूछा- कहो, ससुराल कैसी लगी? राम अपने ससुर की समता प्रयागराज से, सास की त्रिवेणी से, साली की गंगा-जमुना से करते हैं। जब माता हास्य-व्यंग्य में कहती है- अच्छा है, हमेशा ससुराल में आना-जाना बना रहेगा। तब रामचन्द्रजी रोकर कहने लगे- मैं अपनी ससुराल कभी नहीं जाऊँगा। माँ ने राम का रोना सुना तो हँसकर गले लगा लिया, यथा -

राजा दसरथजी ल्याये बरात अई गया ब्याहन को।
अवधपुरी से चली बराती, जनकपुरी में पोंची म्हारा लाल
चारूँ भइया रथ पर बेठ्या, जनकपुरी में पोंचा म्हारा लाल।
देस देस का राजा बेठ्या, करी करी ने सणगार म्हार लाल।
रामचन्दर जी ने धनस उठायो, टुकड़ा करी ने फेंक्यो म्हारा लाल,
सीताजी ऊबी वरमाला लई के, गला में ल्हाकी नी जाय म्हारा लाल।
पिरेम बिबस माला जदी डाली, रूप निहार रई म्हारा लाल।
गई बरात अवधपुरी के माय, घर घर बजी बधई म्हारा लाल।
सुसराजी म्हांका असा जणे के, तीरथ राज परयाग माराज।
सासूजी म्हांकी असी अनोखी, जसी तिरबेणी होय माराज।
साली म्हांकी असी कइये, जसी गंग-जमन माराज।
माता कोसल्या जी बोलण लागी,भला गिया ससुराल म्हारा लाल।
रामचन्दर जी रोई बोल्या, कदी नी जावां ससुराल म्हारा राज।
जदी हँसीने माता कोसल्या ने, गले लियो लपटाय म्हारा लाल।

एक और गीत में राम के विवाह का चित्रण मिलता है। इसमें लोक प्रथाओं, लौकिक रीति-रिवाजों का अच्छा चित्रण बन पड़ा है। मालवा में प्रथा है कि दूल्हा या वर को ससुराल में कुल देवी (बरोठी या देराड़ी) का पूजन करना पड़ता है। साली-सलहज आदि ऐसे अवसर पर जूते छिपाती देती हैं। यहाँ भी राम के जूते छिपा दिये गये। उनके साथ हँसी-ठिठोली की जाने लगी। आसन के स्थान पर लहंगा बिछा दिया गया। उस पर राम को बिठला कर देवी पूजन करने को कहा गया। यह देखकर राम मुस्कराकर बोले- हम ऐसी देवी को ठोकर मारते हैं।

हमारे कुल की यही रीति है। इतना कहकर उन्होंने लहंगे को ठोकर मारी तो उसके नीचे छिपाये हुए जूते निकल पड़े। सारी सखियाँ खिल-खिलाकर हँस पड़ी। फिर राम को वहाँ आम के दोना और बड़ की पत्तल, जो सोने के सीकों से बने थे - भोजन करवाया गया। और जनकराज ने उन्हें 'नेग' दिया। लौकिक जीवन की घरेलू अनुभूतियों, लोक संस्कृति तथा रीति-रिवाजों का इस गीत में सुरुचिपूर्ण चित्रण हुआ है। यहाँ राम भगवान न रहकर एक लोक मानव की भावभूमि पर उतर आ गये हैं। गीत की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं -

ब्याहन आये रामललाजी, लक्ष्मण संग सिधार्‌याजी।
विश्वामिन्तर गरु उनां साते, पोंचा जनक पुरी में जी।
पूजवा गया हे राम देराड़ी, वां कई चाल चली हे जी?
लेंगो लईके दियो बिछाई, वण पर बेठ्‌वा की कयो हे जी।
अण पर बेठो देवी के पूजो, तोई हम नेग देवांगा जी।
अतरी तो सुणतां राम ललाजी, मुसकई ने वी बोल्याजी।
ठोकर से हम अणके पूजां, म्हांका कुल यई रीत जी।
या कई ने वणके ठोकर मारी जूत्यां छिपी निकल गई जी।
आम का दूना बड़ की पातर, सोना की सींक संवारी जी।
जनक राज ने 'नेग' दियो हे, उंके किसां बखाणां जी।
माताजी लई के आरती आई, घर-घर बजत बधाई जी।

राम ब्याह करके अयोध्या लौट आये हैं। घर-घर आनन्द छा रहा है। विवाहोपरान्त मालवा में कामण गीत गाने की लौकिक परम्परा है। 'कंकण' को ही 'कामण' कहा जाता है। 'कामिनी' तथा 'काम' शब्द से इसकी व्युत्पत्ति मानी जाती है। विवाह के पूर्ण टोटका (Totem) के रूप में वर-वधू के हाथ में कंकण बाँधा जाता है, जिसमें लाख की अंगूठी, लोहे का छल्ला और मांजूफल को लाल धागे में पिरोकर बाँध दिया जाता है। ऐसे 'कांकण-दोवड़ा' बँधे वर-वधुओं की शिशुओं जैसी साज-सम्भाल की जाती है। विवाहोपरान्त एक बड़े थाल में चाँदी का रूपया तथा कौड़ियाँ डालकर उसमें पानी भर दिया जाता है। वर या वधू दोनों में से जो पहिले ढूँढ निकालता है, वह जीता मान लिया जाता है। इसी प्रकार कंकण की गाँठ को दोनों में जो भी एक ही हाथ से खोल सकने में समर्थ होता है, वही जीता माना जाता है। यह एक प्रकार का मनोरंजन तो है ही, साथ ही इस जल क्रीड़ा से वर या वधू की प्रत्युत्पन्नमतित्व तथा साहस की परीक्षा भी हो जाती है। भावी पति-पत्नी एक दूसरे के आकर्षण पाश में बँध जाते हैं। स्त्रियाँ इस अवसर पर कामण गीत गाती हैं। एक ऐसे ही गीत में कौशल्या जी सीता से कहती हैं- हे बहू! मेरे राम पर जादू का कंकण किसने किया? सीता कहती हैं- मुझे क्या पता? मेरे पिता से पूछो। मेरी माता से पूछो। मेरे भाई से पूछो। मेरी आँखों के अंजन से पूछो। इन बड़ी-बड़ी आँखों से पूछो, हाथ व पैर की मेहंदी से पूछो। मैं क्या जानूँ? आपके पुत्र पर इनमें से किसने जादू कर दिया। गीत के बोल हैं -

सीता ओ लाड़ी,
कामण कोनी ने किया?
में नांई जाणू म्हारा दाऊजी से बूझो?
तो माता ने मोय लिया था।
सीता ओ लाड़ी कामण कोनी ने किया?

अब राम गृहस्थ हो गये हैं। लोक जीवन में शादी विवाह के अवसर पर बधाई देने की रीति है। राम को तांबे के हंडे में गर्म किये जल से स्नान करवाया जाता है। गर्म जलेबी और खोये के लड्डुओं का नाश्ता करवाया जाता है। सोने की झारी में गंगाजल भरा हुआ है। उन्हें वही जल पीने को दिया जाता है। पके हुए ताम्बूल में कलाई का चूना लगाकर प्राय: खाने को दिया जाता है। राम, सोने की सार व जड़े हुए पाँसों से चौपड़ खेलते हैं। लाल पलंग जिसे घुमाने के लिए नीचे चकरियाँ लगी हैं– उस पर राम को शयन करवाया जाता है। आज ऐसा मंगल दिन आ उपस्थित हुआ है कि जन-जन उन्हें बधाई देने आ रहे हैं, यथा–

ऐसा दिन आज बधाई भगवान की।
तांबे के हंडे में ताता सा पानी।
सांजे न्हावे राम सवेरां सिया जानकी।
तत्ती जलबी दूधन के लड्डू,
सांजे जीमें राम सवेरां सिया जानकी।
सुन्ने की झारी में गंगा जल पानी,
सांजे पीवे राम सवेरां सिया जानकी।
पक्केरी पान कलाई का चूना
सांजे चाबे राम सवेरां सिया जानकी।
राय सयर फूलन का पंखा
सांजे झले राम-सवेरां सिया जानकी।
सोने की सार, जड़ाव का पांसा,
सांजे खेले राम सवेरां सिया जानकी।
लाल पलंग चकरी का पाया,
सांजे पोढ़े राम सवेरां सिया जानकी।
ऐसो दिन आज बधाई भगवान की।

राम के गृहस्थ जीवन में लोक जीवन के सामान्य परिवारों जैसी दिनचर्या दिखाई देती है। वही हाल राजा दशरथ के घर का भी है। सीताजी अपने गृहस्थ जीवन में समरस हो चुकी हैं। एक बार उनकी सास कौशल्याजी, सीता के मनोभावों को जानने के लिए उनसे प्रश्न कर बैठती हैं। हे सीता! बताओ, तुम्हारे शरीर पर सुशोभित इन आभूषणों का उद्देश्य क्या है?

इस पर सीताजी ने जो उत्तर दिया – वह उदात्तमना नारी के विराट श्रृँगार का प्रतीक बन गया है। इसमें सीता ने सम्पूर्ण परिवार को ही आभूषणों के रूप में शरीर पर जड़ दिया है। इस लोक गीत का हर एक शब्द अर्थ व्यंजकता का प्रतीक बन गया है। वे कहती हैं– हे सासूजी! मेरे शरीर पर जो आभूषण सुशोभित हो रहे हैं, वे तो भौतिक सम्पदा के प्रतीक मात्र हैं। परन्तु मेरी आध्यात्मिक सम्पदा तो मेरा अपना सम्मिलित परिवार ही है और उसके परिजन उससे जुड़े नगीने हैं। वे अपने जेठ की तुलना बाजूबंद से करती हैं। बड़े सदैव छोटों के संरक्षक होते ही हैं। वह जेठानी की तुलना जेठ रूपी बाजूबंद के लूम (गुच्छे) से करती हैं। क्योंकि बाजूबंद के साथ जैसे उसकी लूम की शोभा बढ़ जाती है, उसी प्रकार उसके ज्येष्ठ के साथ उसकी जेठानी भी सुशोभित हैं। वह अपने देवर की तुलना अपने चूड़े से करती है। चूड़ा मणि की सुरक्षा नारी का आन्तरिक धर्म है। देवरानी की तुलना चूड़े की कील से करती है, जो उस चूड़े को सुदृढ़ बनाती है। अपनी ननद की तुलना कसूमल–कांचली (कंचुकी) से करती है, और उसे चोली के (कंचुकी) के बंद उसके ननदोई हैं। वह अपनी पुत्री की तुलना हाथ की अँगूठी से करती है और दामाद की तुलना अँगूठी के नग से करती हैं। क्योंकि बिना नग के अँगूठी की शोभा भला कब बढ़ी है? अपने पुत्र की तुलना दीपक से और अपनी कुलवधू की तुलना दीपक की ज्योति से करती है, क्योंकि वही उसमें तेल (स्नेह) पूरती है, जिसमें समग्र परिवार आलोकित होता है। वह स्वयं भी तो उसी स्थिति में है। अपनी सास के समक्ष अपने स्वामी राम की तुलना ललाट के उस अरूणिम कुम–कुम या बिन्दु से करती हैं, जिसके आलोक से संसार की एषणाएँ भस्मसात हो जाती हैं। यही तो नारी का तृतीय नेत्र हैं– शंकर की तरह। श्वसुर गृह को एक गढ़ के रूप में निरूपित करती हुई सीता अपने श्वसुर को गढ़पति (राजा) निरूपित करती है। उसकी सास माँ कौशल्या को साक्षात् गढ़ की देवी अन्नपूर्णा लक्ष्मी ही मानती है। इस गीत में सीता अपने पीहर पक्ष को भी विस्मृत नहीं करती है। वे कहती हैं कि अपने पीहर की बाट में धवल चावलों का खेत देखकर वह पीहर के परिवार, भाई, बहन आदि के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

उत्तर सुनकर कौशल्या जैसी सास, अपनी इस सुमंगल बहू पर न्यौछावर हो जाती है। कहती हैं– हे बहू! मैं तेरी वाणी पर वारी जाती हूँ। सीता उत्तर देती हुई कहती हैं– हे सासुजी! मैं तो आपकी कोख पर भी न्योछावर हूँ, जिसने राम जैसे वीर पुत्र को (उसके पति) को जन्म दिया है। आभूषणों को रूपक अलंकारों में गूँथकर मालवी भाषा को जहाँ उत्कर्षता प्रदान की है, वहीं मालवा के पारिवारिक जीवन का ऐसा मंगल एवं विराट चित्र लोकजीवन की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो शिष्ट साहित्य में भी दुर्लभ है। यही तो मालवा की बेटी–बहू, माता एवं सास की अपनी सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। जो उसके शाश्वत सौन्दर्य को युग–युगान्तर तक अक्षुण्ण रख सकेगा। गीत देखिये–

म्हारी सासूजी कोसल्याजी बूझे ऐ बऊ, थारा गेणा रो म्हने अरथ बताव।
सासू गेणा गेणा कांई करो जी, म्हारो गेणा जेसोई परवार।
म्हारा जेठजी तो बाजूबंद का बेरखा जी, जेठाणीजी बाजूबंद री लूम।

म्हारा देवरजी दांती का चूड़ेला, जी, म्हारा देवराणी, चुड़ला की मेरवे।
म्हारी नणदल कसूमल कांचली जी, कांई नणदोई जी कसनां री लूम।
म्हारी बेटी हाथरी मूंदड़ी जी कांई, जंवाई म्हारा मूंदड़ी रा कांच।
म्हारा कुंवर जी कुलरा दीवलाजी, कुल बऊ जी दिवलारी जोत।
सासूजी म्हारा अतराओ गेणां के ऊपर, केसरियाजी म्हारा तिलक ललाट।
म्हारा सुसराजी गढ़रा रावजी, म्हारी सासूजी अलख भंडारे।
म्हारी पियरयारी वाट ऊबी, म्हूं बाऊंजी चांवलियारो खेत।
तो जदी धोऊं जदी ऊजरा ऊजरा, हे जी! म्हारा जामण जाया वीर।
हूं तो वारी जाऊ ए बऊ थारी जीब ने, जींने बखाण्यो जी म्हारो सोई परवार।
हूँ तो वारी जाऊँ सासूजी थांकी कूँखने, जनी ने जायाजी राम सा पूत।

उदात्तमना सीता बड़े सुख चैन से अपने सास-ससुर और पति की सेवा के अतिरिक्त देवर-देवरानियों से भरपूर संयुक्त कुटुम्ब की सेवा में तल्लीन है। किन्तु लोक मानस ने उनको देवी या लोक माता के रूप में नहीं माना है। वे सामान्य नारी के रूप में ही चित्रित की गई हैं। यही लोक मानस की भाव भूमि है। जब सब अपने कर्मों में लिप्त हों, अपने-अपने जीवन का सुखोपत्भोग करते हैं। भावुक लोकगायक अपनी सीता माता को सोने की गागर, चाँदी की मटकी देकर पनघट पर पानी लेने भेजते हैं। वे परिश्रमशील सीता चाहते हैं। तुलसी की सीता - 'पुरते निकसी रघुवीर वधु, धरि धीर दये मग में डग द्वै, झलकी भरि भालकनी जलकी, पुट सूखि गये मधुराधर द्वै।' जैसी सुकोमलांगी सीता नहीं चाहते हैं। वे तो अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा चित्रित राधा की लोक सेवा के समतुल्य सीता की परिकल्पना चाहते हैं। इसीलिए तो इन लोक गीतों में लोक मानस को लोक की भावभूमि पर उतारा गया है।

इस गीत में सीता जी पानी लेने पनघट पर जाती हैं। और जब पानी का बेहड़ा सिर पर रखे घर की देहरी पर आती हैं, तो अटक जाती हैं। अब उनका घड़ल्या (घड़ा-बेहड़ा) सिर पर से कौन उतारे? संयोगवश राम उधर से आ निकलते हैं। तुरन्त बेहड़ा उतार देते हैं। इसी बीच कौशल्याजी भी आ जाती हैं। फिर क्या कहना? सीता को उन्होंने इस बेशर्मी के लिए डाँटा, पीटा। लोक जीवन में स्त्रियों के कामों में पुरुषों का हाथ बँटाना लज्जाजनक माना जाता है। यह एक लोक रूढ़ि है।

सीता जी अटवा-खटवा लेकर अँधेरी-ओवरी (कोप भवन) में चली गईं। राम उन्हें खोजने को निकले। बड़े परिश्रम के बाद उन्हें खोज निकाला गया। सीता बोली- ऐसी आपकी माता हैं, जो मुझे झाड़ू ही झाड़ू से मारा। राम भी अपनी माता पर बिगड़ पड़े। कहने लगे- हे माता! तुम पाई भर कोदरों लेकर (तत्कालीन अनाज, कोदो-सवां) अलग हो जाओ। माता कौशल्या कहने लगी- वाह रे मेरे राजदुलारे! क्या इसी दिन के लिए मैंने कष्ट सहे थे, बचपन में जब तुम पेशाब कर देते थे तो उस गीले स्थान पर मैं सोती थी। सूखे पर तुम्हें सुलाती थी। अब

यौवन आ गया, तो तुम अपनी पत्नी को लेकर अलग हो जाने की बात करने लगे। वह दिन तुम भूल गये। सच है, यौवन में सभी पत्नी के हो जाते हैं। इस अर्थ व्यंजक गीत के द्वारा आधुनिक नवयुवकों को भी लताड़ दी गई है।

माता अपने पुत्र के लिये अनेक कष्ट उठाती है। तपस्या करती है। उपवास करती है, किन्तु वह यौवन की देहरी पर कदम रखते ही ऐन्द्रिय लोलुप बन जाता है। घर की मर्यादा को तोड़ने लगता है - 'आलो-गीलो बगले हटायो, सूखो में थोंए सुवाण्यो हो राम' पंक्ति में लोक जीवन की मार्मिक अनुभूति भरी पड़ी है। इसमें लोक जीवन का आदर्श एवं मर्यादित रूप उपस्थित हुआ है। साथ ही सास द्वारा बहू पर किया जाने वाला अत्याचार, सास का रूढ़िवादी व्यवहार, पति-पत्नी का प्रेम और सहयोगी प्रवृत्ति, यौवन में भटकाव, माता-पुत्र का आदर्श, गृहस्थ जीवन की मर्यादा भंग करने एवं परम्पराओं को तोड़ने में माता-पुत्र का, सास-बहू का, वैमनस्य आदि तथ्य प्रकट किये गये हैं, यथा-

सोना की गगरिया रूपां की मथनियां, सीता जी पानी चाल्या हो राम।
रमझम करतां झारी भर लाया, रघुबरे झारी उतारी हो राम।
गगरी उतारी प्रभु मथनी उतारी, सासू ने राड़ मचाई हो राम।
अतरी सी सुनतां जानकी जी रूठ्या, जाय मेलां में सूता हो राम।
हाथे लकड़िया, पांव पवड़िया, रघुबर ढूंढवा चाल्या हो राम।
ढूंढतां-ढूंढतां नगरी ढूंडी, जाय मेलां में ढूंढया ओ राम।
असी थांकी माता कोसल्या राणी, ब्वारा से झुड़ झुड़ मारी ओ राम।
पई भर्या कोदरा लो म्हारी माता, हमसे न्यारी हुई जावो वो राम।
वारे म्हारा, राज दुलारा, असो कंई सीता को होयो राम।
आलो गीलो बगले हटायो, सूका में थोए सुवाण्यो हो राम।

विशेष : प्रस्तुत गीत में कतिपय लोकतत्त्वों का उद्घाटन हुआ है। सीताजी का बेहड़ा राम जी द्वारा उतारने की परिकल्पना अनेक गीत, कथाओं में व्यक्त हुई है। यही प्रसंग चतुर राजकुमारी नामक कथा में भी आया है। यथा - 'धोळो घोड़ो खमखम्यों ने केसरियो असवार। राजा को घर बूझे हे जी घड़ल्यो लीजो उतार जी।' (कथा चतुर राजकुमारी : बाल भारती, डॉ. प्र.च.जोशी : सूचना प्रसारण मंत्रालय-दिल्ली, 1962) अटवा-खटवा (फटे पुराने वस्त्र व टूटी खाट) लेकर स्त्रियों-पुरुषों का अँधेरी ओवरी में सो जाना लोककथाओं का एक अभिप्राय है। कथानक विस्तार में यह सहायक है या भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का सूचक है। 'कोदो-सवां' लेकर अलग हो जाना। यह घर से पृथक्करण का सूचक है। संयुक्त परिवार के विघटन के कारणों में से एक है। संयुक्त परिवार तभी चल सकता है, जबकि गृहपति सबकी भावनाओं का आदर करे एवं परिवर्तनशील पृष्ठभूमि में सामंजस्य बिठलाने का प्रयास करे।

दूसरे एक गीत में लौकिक एवं धार्मिक मान्यताओं का स्वरूप दृष्टिगत होता है। मानस या

दूसरे ग्रन्थों में सीता के द्वारा गौरी पूजन करवाया गया है। वहीं लोक मानस ने सीता द्वारा सूर्य देव का पूजन करवाया है। लोक श्रुत दोहे में कहा गया है। – 'दीतवार जात को छत्री – पूजा सूर्या की करे।' लोक मानस में आज भी क्षत्रियों को सूर्यवंशी ही माना जाता है। अत: गीत में क्षत्रिय स्वभावोचित सीता द्वारा सूर्यदेव का पूजन करवाया जाता है। सूर्य कुल की परम्परा के प्रतीक रूप में कई राजवंशों के महलों के मुख्य द्वार के ऊपर सूर्य मुखी जैसा स्वर्ण निर्मित प्रतिबिम्ब उकेरा जाता है। कई राजवंशों के पत्रों पर सूर्य मुख के दोनों ओर सर्प के फनों की छाया के चित्र अंकित मिलते हैं। सूर्य कुल की परम्परा के यह अनुकूल है।

गीत पारम्परिक धार्मिकता की पुष्टि करता है। जानकी अपने श्वसुर और गुरुजनों की समानता पिता (भोलेनाथ) से माता की पार्वती से करती है। इस गीत में आणा प्रथा (दूसरी बार बहू को पीहर से लाने की प्रथा) का उल्लेख हुआ है। मालवा की आदिम वृत्ति वाली जातियों में उसने लोक प्रथा का स्वरूप धारण कर रखा है। शादी के उपरान्त वधू जब दूसरी बार ससुराल जाती है, तब आणा का मोरत (मुहूर्त) साधते हैं। कन्या पक्ष वाले इस अवसर पर यथा-साध्य पहुँनाई भी करते हैं। लड़की को जेवर व कपड़े बनाकर भेंट में देते हैं। गीत के बोल हैं-

मूँ तो बरत करूँ दीतवार, सूरज जल चोड़न चली,
पेलो वचन सुण मानो ए जानकी,
मोये सुसरा मिल्याजी जसरथ, सासूजी कोसल्या मली।
मूँ तो बरत करूँ दीतवार, सूरज जल चोड़न चली।
दूजो वचन सुण मानो ए जानकी,
मोये जैठजी मिल्या रे भोलानाथ,
जेठानी गोरां पारबती।
तीजो वचन सुण मानो ऐ जानकी,
मोये देवर मिल्याजी लछमण वीर,
देराणी आणो आय रई।
म्हूँ बरत करूँ दीतवार, सूरज जल चोड़न चली।
चारमों वचन सुण मानो ए जानकी,
मोये पति मिल्या सिरी राम, राज तो अजोध्या नगरी।
पांचमो वचन सुण मानो ए जानकी,
मोये न्हानों मिल्योजी सूरज तीर, पति तो मोंये रघुबर मिल्या।

राम, लोकरंग में रंगे हुए गृहस्थ जीवन में सुख का अनुभव कर ही रहे थे कि राज्याभिषेक की तैयारी होने लगी। किन्तु मंथरा दासी ने माता कैकई के कान फूँक कर रंग में भंग कर दिया। राम को चौदह वर्ष का वनवास तथा भरत को राजगद्दी दिये जाने का वर राजा दशरथ जी से माँग लिया। राम का वनगमन सुनते ही सारी अयोध्या शोकमग्न हो गई। दशरथ ने पुत्र वियोग में प्राण

त्याग दिये। अयोध्यावासियों की करुण दशा तथा माता कौशल्या का कथन कि 'कब लोगे बेटा आकर सुधि हमारी, रो रही अजोध्या सारी' में विरह वेदना की असीम अनुभूति छिपी हुई है। जहाँ राम नहीं, वहाँ दशरथ भी नहीं। जब उनकी सुधि लेने वाला जीवन सर्वस्व ही नहीं रहा, तो प्राणों की स्थिति कैसे सम्भव होगी?

कौशल्या जी विलाप करती हुई कहने लगी– हे बेटा राम! तुम हमारे प्राणों के प्यारे हो, नैनों के तारे हो। पिता के प्रिय पुत्र होकर जब तुम ही हमें छोड़कर जा रहे हो, तो हमारा क्या होगा? 'हमारी' शब्द में विरह वेदना की असीम व्यंजना छिपी हुई है। माता का प्रेम, वात्सल्य को छू गया है। सारी अयोध्या की राम के बिना कोई गति नहीं। वही तो उनके जीवनाधार थे। गीत की मार्मिक पंक्तियाँ अवलोकनीय है–

अब तुम ही चले वनवास, छोड़कर आस।
सब नर नारी, रो रई अजोध्या सारी।
जब राम अवध को छोड़ चले,
राजा दसरथ के पिराण चले।
कब आकर लोगे बेटा सुद हमारी,
रो रई अजोध्या सारी।
तुम इन नैनन के तारे थे, दसरथ के लाल दुलारे थे,
चोथापन में आय विधि ने बिगाड़ी,
कब लोगे सुद हमारी।
वनवास में राम पे बिपद पड़ी,
रावण ने जई के सीता हरी,
संभल के रेना लछमन योधा भाई,
वन चले राम रघुराई।
जब मात कोसल्या रोने लगी,
रो-रो के राम से केने लगी।
कब आकर दोगे बेटा दरसण इस नारी,
रो-रई अजोध्या सारी।

दूसरे एक और गीत में विरह की अभिव्यंजना मिलती है। हे राम! जब तुम ही वनवास को चल दिये, तो इस दुनिया में अब हमारा कौन रहा? अब कैकेयी के मन में पश्चाताप होगा। उसे भी अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा। उस कुल की कलंकनी ने तो सारे अवध को उजाड़ दिया है। अब इस दुनिया में हमारा कोई रक्षक नहीं रहा। हमारी आँखों से निकलने वाले आँसू रो-रोकर यह कह रहे हैं कि दशरथ ने जो वचन दिया था – कैकेयी ने उसे ही लिया, किन्तु वचन देकर वह अपना जीवन हार गये। उन्हें विश्वास ही नहीं था कि कैकेयी ऐसा वचन भी माँग

सकती है। उनको तो धोखे से लूटा गया। उनकी समग्र आशाओं पर तुषारापात कैकेयी के द्वारा किया गया है, यथा–

दुनियां में कोन हमारा, अब तुमीं चले बनवास।
हमें दे तरास राम दुलारे, दुनियां में कोन हमारे,
अब केकई मन पछतावेगी, करनी का फल वो पावेगी।
हो कुल कलंकनी तू ने अवध उजाड़ा, दुनियां में कोन हमारा?
आंख्यां से पानी बेवे हे, वो रो रो के यूं केवे हे,
दे दिया बचन, ले लिया बचन, दे हारा, दुनियां मे कोन हमारा?
धोके से मोंये लूट लिया, आसा पे पानी फेर दिया।
दे दिया बचन, ले लिया वचन– दे हारा, दुनियां में कोन हमारा?

इस गीत में मरण पूर्ण दशरथ विलाप का चित्र उकेरा गया है। वे कैकेयी से कहते हैं– तुमने धोखा करके मुझे लूटा है। मेरी आशाओं पर तुषारापात किया है। मुझे तो वचन का निर्वाह करना ही था, मैंने तो रघुकुल की रीति का पालन किया, किन्तु तुमने वचन लेकर मुझे जीवन से ही हरा दिया। अब दुनिया में मेरा कोई सहारा नहीं रहा। राम नहीं तो दशरथ भी नहीं। एक दिन ऐसा भी आएगा कि तुझे भी अपने किये पर पछताना पड़ेगा। तू अपनी करनी का फल भोगेगी। अरी कुल–कलंकिनी! तूने अवध को उजाड़ कर रख दिया।

एक फाग गीत में राम वनवास का सुन्दर वर्णन उपलब्ध है। 'इन्हें कोई बरजो री माई – बनकूं चले रघुराई'। गीत में केसर का रंग, चंदन की पिचकारी एवम् चम्पई साड़ी का पारम्परिक वर्णन उपलब्ध है। राम के बिना मेरी अयोध्या सूनी है तथा लक्ष्मण के बिना मेरी ठकुराई अधूरी है। सीता के बिना तो मेरी रसोई भी सूनी–सूनी लगती है। अरे! कोई है जो मेरे प्यारे पुत्रों को वनगमन से रोक सके, यथा–

इनें कोई बरजोरी माई ई ई, बन कूं चले दोनूं भाई ई ई।
आगे जो आगे राम चलत हे, पीछे लछमन भाई ई ई।
जिनके पीछे चलत जानकी, सोभा बरनी नी जाई ई ई।
इनें कोई बरजोरी माई ई ई, बनकूं चले रघुराई ई ई।
राम बिना मेरी सूनी अजोध्या, लछमन बिन ठकराई ई ई।
सीता बिना मेरी सूनी रसोई, कूण करे चतरा ई ई ई?
कायन को तेने रंग बनायो, कायन की पिचकारी?
केसर को तो रंग बनायो, चंदन की पिचकारी ई ई।
भर पिचकारी सीताजी पे डारी, तो भीज गई चम्पा सारी।
इने कोई बरजोरी माई ई ई, बनकूं चले दोनूं भाई ई ई।

राम के राज्याभिषेक की सूचना भरतजी के ननिहाल को भेज दी गई थी। वे उन दिनों अपने मामा के घर थे। वे लौटकर आये, किन्तु नगर प्रवेश के पूर्व ही उनका उत्साह जाता रहा। नगर सूना-सूना सा दिखाई दिया। कचहरी बंद मिली। पहरेदार भी पहरा नहीं दे रहे थे। ऐसे अनिष्ट कारक, अपशकुनों में भरतजी ने अवध नगर में प्रवेश किया। गीत के बोल हैं-

भरत नांदेरा से आये, अवध में मंगल नहीं पाये।
बंद कचेरी क्यों पड़ी जी, क्यों नंई पेरादार?
घंटी की धुन बाज रई जी, नंई बाजी घड़ियाल,
भरतजी मन में घबराये, अवध में मंगल नहीं पाये।

घर लौटने पर भरतजी की धारणा सच निकली, उन्होंने कैकेई माता को बहुत भला-बुरा कहा, किन्तु रामचरित मानस जैसा कटु व्यवहार नहीं किया। बड़ी ही क्लिष्ट भाषा में व्यंग्य किया। कहने लगे- हे माता! तुमने बहुत बुरा किया, जो वन में राम-लक्ष्मण और माता जानकी को भेजा। राम के बिना मेरे लिए अयोध्या सूनी-सूनी सी है। लक्ष्मण के बिना मैं अवध का ठाकुर (स्वामी) नहीं कहला सकता। अयोध्या में अब कोई ठकुराई (राज्य) करने वाला नहीं रहा- व्यंजना में - राम राजा थे - सो चले गये। राज्य का अंगरक्षक वीरव्रती लक्ष्मण 'ठाकुर' था,वह भी चला गया, यथा-

माता तेने जुलम कर डाला, बनको भेजे लछमन राम।
केकई तेने जुलम कर डाला, बनको भेजे लछमन राम।
सीता बिना म्हारी सूनी रसोई, कोन करे चतराई?
आगे-आगे राम चलत हें, पाछे लछमन भाई।
जीं के पाछे चले जानकी, साथे हे रघुराई।
सावण बरसे, भादो बरसे, पवन चले पुरवाई।
कोन झाड़ के नीचे खड़्या होगा, सीता लछमन ने राम भाई।
माता तेने जुलम कर डाला, बनकूं भेजे लछमन राम।
रावन मार राम घर आया, घर-घर बटे बधाई।
मात कोसल्या करे आरती, सोभा बरनी नी जाई।
माता तेने जुलम कर डाला।

राम वन को चले गये। पंचवटी में अपनी पर्णकुटी बनवाई। राक्षसों का नाश किया। मुनियों को अभयदान दिया। मालवी में बारहमासे एवं हिंडोले के गीत बहुत प्रचलित हैं। किसी घटना अथवा परिस्थिति विशेष को लेकर, वर्ष के बारहों महीनों में विविध विषयों का रूपांकन किया जाता है। राम के वनगमन के पश्चात् अयोध्या वीरान सी हो गई है। सारे नगर निवासी एवं राजमहल के कुटुम्बी जनों के लिये राम का विरह ही एक मात्र सम्बल रह गया है। विरह में ही वे मिलन की अनुभूति करते हैं, एक बारहमासा देखिये- जिसमें कौशल्या के मातृ हृदय की

विरह वेदना साकार हो उठी है। विप्रलंभ का ऐसा उद्रेक शिष्ट साहित्य में कहाँ? इसके द्वारा भक्त के हृदय का अनन्य विश्वास भी इस विस्तृत पृथ्वी के कोने-कोने में हिन्दू जाति के एक मात्र आराध्य भगवान राम और कृष्ण के पावन चरित्र को घर-घर पहुँचाने वाला है। भारत में हिन्दू संस्कृति को जीवित रखने का बहुत कुछ श्रेय इन लोक गीतों को ही है। इस बारहमासे में, वन में गये अपने बच्चों के लिये माता कौशल्या के हृदय की विकलता का कितना उद्विग्न रूप मिलता है, यह दृष्टव्य है?

दीपावली पर जब घर-घर में दीपमालिकाएँ सजाई जाती हैं। उस समय माँ के हृदय की टीस 'मेरी अजोध्या पड़ी अंधियार,' पंक्ति में मूर्त हो उठी है। इसे पढ़ने पर कौन ऐसा होगा, जिसकी आँखों में अविरल अश्रुधारा प्रवाहित न होती हो। फागुन के राग रंग में रंगों का छिटकाव वे किस पर करें? कौन है जिस पर रंग छिड़के? रघुवीर के बिना उनके लिए सब कुछ फीका है। इन पंक्तियों में विरह वियोग जनित कातरता की व्यंजना अवलोकनीय है-

चेत अजोध्या जनमें री राम, चंदन सों लिपवाये री धाम।
गज मोतियन के चोक पुराय, सोने के कलश दिये भरवाय।
घरे घट मन्दर, भेजे तुमने नार बेरिन, बन बालक दोई मेरे।
बेसाख मास रितु गिरीसम लाग, चलत पवन मनों बरसे आग।
जूं पानी बिन तडफें मीन - वईगत म्हारी केकई कीन।
दियो दु:ख दारुण।
जेठ मईन्यो लू लगे अंग - राम लखन ओर सीता संग।
रामचन्दर पद कमल समान, परचत धरती अर असमान।
चले मग कसां, भेजे तुमने नार बेरिन बन बालक दोई मेरे।
असाड़ मइन्यो घन गरजे घोर, रटत पपइयो कुहके मोर।
खड़ी कोसल्या अवधपुर धाम, भींजता व्हेंगां सिया लखन राम।
खड़्या होगा तरवर तले, भेजे तुमने नार बेरिन, बन बालक दोऊ मेरे।
सावण में सरसाने री नीर, कसां धरे कोसल्या धीर।
नानी नानी बूंदा बरसे नीर, भीजता व्हेगा सिरी रघुवीर।
झमक झड़ी लागी, भेज्या तमने नार बेरिन बन बालक दोई म्हारा।
भादों बरसें नीर अपार, घरे आपणो सगलो संसार।
गूंजत गुंजित फिरत भुजंग, राम लखन सीता के संग।
रात अंध्यारी।
भेज्या तमने नार बेरिन बन में बालक दोनूं म्हारा।
लाग्यो सखी मास कुंवार घरम धारत सगलो संसार।
जो घर व्हेगा सिया लखन राम, बामण के जिमाती देती दान।
थाल भर के मोत्यो का।

भेज्या तमने नार बेरिन, बन में दोई बालक म्हारा।
लाग्यो सखी कातरक मास, उठे कलेजा में दुख की फांस।
घर-घर संजोवे नार, म्हारी अजोध्या पड़ी अंधियारी।
करी केकई ने असी भरी, तमने नार बेरिन बन में दोई बालक भेज्या म्हारा।
अग्गण में कंवर का करती सणगार।
कपड़ो सिवाड़ती सोना का तार, पट पीताम्बर कुल समान।
सिर को चीर जरतारी पाग, गले बेजन्ती माळ।
भेज्या तमने नार बेरिन, बन में बालक दोई म्हारा।
लाग्योरी सखी पूस मास, ठाड़ वई जसां खांडा की धार।
कुसासन कसां ई पोढ़ेगा राम, कसां करंगा बन में बिसराम?
माह मईन्यो रितु फूले बसंत, कसां जिऊंरी बना भगवंत।
म्हारी अजोध्या का सिर मोड़, खट्यो भरत ढोरत मोर,
बसंत करूरो।
भेज्या तमने नार बेरिन बन बालक दोई म्हारा।
फांगण रंग रच्यो सब कोय, चउवा चंदण अतर सुगंद।
खड़्या भरतजी ढोरे अबीर, कणी पे छणके बना रघुवीर।
में कसां करूरी।
भेज्या तमने नार बेरिन, बन में बालक दोनूं म्हारा।
जो गावे यो बारा मासो, सो पावे बैकुण्ठां बासो।
कहे भवानी अवधपुरी धाम, बनसे अई गया सिया लखन राम।
मिल्या केकई सूं जई ने।

उधर समग्र अयोध्या राम के विरह में दुख से संतप्त है और इधर राम ने अपने अवतार के उद्देश्य को सफल बनाना आरम्भ कर दिया है। पंचवटी में लक्ष्मण पहरा देते हैं तथा सियाराम अंदर शयन करते हैं। राम के आगमन से जहाँ मुनियों को अभयदान मिल गया है, वहीं कोल-किरात-भील तथा आदिम जनों को गले लगाया है। राम-लक्ष्मण और सीता तीनों पंचवटी की प्रकृति का आनन्द उठा रहे हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को भी पंचवटी के प्रकृति चित्रण में लोक साहित्य से प्रेरणा मिली होगी। लोक गायक ने ऐसा ही चित्र यहाँ भी प्रस्तुत किया है, जिसमें राम-सीता और लक्ष्मण का पशु-पक्षी के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया गया है। अपनी क्रीड़ाओं से लोक मन को मोहने वाले राम यदि ऐसा लोकादर्श प्रस्तुत न करते तो जनजीवन में कैसे ओत-प्रोत हो सकते थे? राम ने हरिमन तोता पाला। लक्ष्मण ने झीणा (सुन्दर) मोर पाला। सीता ने अपने स्वभाव के अनुकूल काली कोयलिया पाली। राम उन्हें हरे पोंखड़े (ज्वार के हरे भुट्टे) खाने को देते हैं। मोर स्वभाव से ही सर्प का भक्षण करता है। कोयलिया भी मीठे-मीठे आम खाना पसंद करती है। इस लोक गीत में लोक जीवन में सर्व सुलभ आहार व निवास की चर्चा की बानगी देखिये -

अरे! रामजी ने पाल्या हरिमन तोता, लक्ष्मण ने पाल्या झीणा मोर,
सीता ने पाली कोयलियां, अरे! कंई तो खावे रे भाया हरिमन तोता?
कंई तो खावे रे झीणा मोर? कंई तो खावे कोयलियां?
तोता ने खाया लीला लीला पोंखड़ा, मोर ने खाया काळा साँप,
कोयल ने खाई मीठी केर्‌यां, कायां तो भाया रेवे हरिमन तोता?
कायां तो रेवे झीणा मोर, कायां तो रेवे कोयलियां?
पिंजरा में रेवे भाया हरिमन तोता,
वागा में रेवे झीणा मोर, आंबा पे रेवे कोयलियां।

पंचवटी में ही भरत मिलाप का भी प्रसंग मालवी लोक गीत में मिलता है, जो फाग गीत के रूप में दृष्टव्य है–

हां रे उठि मिलिलो रे राम, भरत आया, उठि मिलि लो।
हां रे उठि मिलिलो रे राम, भरत आया उठि मिलिलो।
संग में उनके अजोध्या की जनता, ओर सबन कुटुम्बी आया।
उठि मिलि लो।

पंचवटी में अपना सुखपूर्वक जीवन चल ही रहा था कि आसुरी माया ने उन्हें घेर लिया। माया मृग के पीछे राम को दौड़ने के लिए विवश होना पड़ा। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत चरितार्थ हो गई। सीता का हरण हो ही गया। प्रस्तुत गीत में सीता का साहसी रूप ग्राम्य बाला की भाँति चित्रित है। सीता रावण से कहती है– यदि मेरे पति व देवर होते तो तुझे एक ही बाण से मार गिराते। वे व्यंग्य में कहती हैं कि यदि मैं ही तुम्हारे मन में बसती थी, यदि मैं तुझे इतनी ही प्रिय थी, तो जनकपुर में आकर मुझसे विवाह कर लिया होता। इन पंक्तियों में मार्मिक व्यंजना है। इसका अभिप्राय यही है कि– हे रावण! तूने चोर की भाँति आचरण किया है। कायर होकर मुझ अबला का हरण किया है। यदि तू वास्तव में वीर होता, इतना ही मुझे चाहता होता – तो धनुष तोड़कर मुझसे विवाह कर लिया होता। चोरी भी करता है और इस पर भी वीरता समझता है, तो तुझसे अधिक और कोई निकृष्ट नहीं हो सकता है, यथा–

हर लीनी रे अकेली सीतां जानके, चोरी करी ने पति के पीछे आनके।
रामजी की प्यारी हूँ, जनक दुलारी हूँ, नई डरूँ रे तेरी तो तलवार से।
राम मेरे पति हें लक्ष्मण मेरे देवर, मार डाले रे तुझे तो एकी बान से।
जो त्हारा मन में ही बसे थी, ब्याव लेतो रे जनकपुर आनके।
हर लीनी रे अकेली सीता जानके।

एक और गीत में लोक जीवन का बड़ा ही मार्मिक प्रसंग मिलता है। कुटी पर प्रहरी के रूप में सजग लक्ष्मण जब भौजाई सीता के वाग् बाण से बिद्ध हो, राम को ढूँढने निकल पड़ते हैं, तब सीता को अकेली पाकर दुष्ट रावण चुरा ले जाता है। लक्ष्मण को अपने पास आया जानकर

राम क्रोध में भर जाते हैं। वे लक्ष्मण को बाण से मारने की धमकी देते हैं। यहाँ लोक मानस का आक्रोश अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। वह अपनी आदिम संस्कृति का चित्रण करता है। राम से कहलवाता है– 'मारूं तेरे बाण सीता छोड़ केसे आयों?' तब लक्ष्मण भी उत्तर देते हुए कहते हैं– मैं स्वेच्छया नहीं आया? भावज के कहने पर ही आया हूँ? भैया! तुमने कुल पर दाग लगवा दिया। तुम न आते तो सीता का हरण न होता। श्लेष में – सीता पंचवटी में नहीं हैं। लक्ष्मण भी व्यंग्य करने से नहीं चूकते, कहते हैं– तुम स्वयं तो तिरिया (स्त्री, सीता) के कहने में आकर उस माया मृग के पीछे दौड़ आए। दोष मुझे ही देते हो। अब अपने किये का फल भोगो। लोकजीवन की कौटुम्बिक कटु–तिक्त झाँकी के दर्शन इस लोक गीत में होते हैं। जब हम स्वयं अपना दोष न ढूँढकर दूसरों को ही दोषी करार देते हैं, तब क्रोध भाव की व्यंजना सहज ही आ जाती है। यहाँ एक लोक मानव जनित मनोभाव का उद्‌घाटन किया गया है। साथ ही लक्ष्मण के मुँह से एक उपदेश भी प्रस्तुत करवाया गया है। गीत की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

मारूं तेरे बाण सीता छोड़ केसे आयो?
मूँ नई आयो अपणा मन से, भावज नेर पठायो।
अपणा तो कुल के भइया, दाग तो लगायो।
मारूं तेरे बाण, सीतां केसे छोड़ आयो?
जो चाले तिरिया की बुद में, ऊ कंई मर्द केवायो?
सूरा रे पन तो भइया, यूंई रे गंवायो?
मारूं तेरे बान.....?

सीता का हरण हो ही गया। राम–लक्ष्मण, सीता को वन–वन ढूँढते फिर रहे हैं। एक गीत में राम के वियोग का मार्मिक प्रसंग उपलब्ध होता है। वे हा सीते! हा सीते! पुकारते हुए वन–वन भटक रहे हैं। स्वर्ण मृग ने उनसे छल किया। रास्ते में घायल जटायू मिला। उसने नयनों से ही सारी कथा–व्यथा सुना दी। यथा – 'लक्ष्मण की बानी सुनके नैन नीर भर आयाजी'। दूसरे एक और गीत की बानगी देखिये–

बन–बन डोले, लछमन बोले, म्हारा भइया करो बिचार रे,
ये कोन चुराई मात सिया, सीतां सीतां राम पुकारे जी,
कां गई जनक दुलारी जी?
दसी दसाएँ तम बतलावो, देखी हे राज दुलारी जी,
भला कंई देखी हे राज दुलारी जी, पंचवटी में अइके सिया के,
खोय चल्या रघुराई जी।
सुन्ना का उणी मिरग ने म्हांसे, चाल चली चतराई जी।
पंचवटी से आगे चली ने, पड़्यो जटायू पायो जी।
लछमण बूजे सुणो जटायू, तेरे कूं क्या हे मालम जी?

लछमण जी की वाणी सुनके, नेन नीर भर आया जी।
कंई नेन नीर भर आया जी।
थो दसकंधर, रथ के अन्दर, लेग्यो सिया चुराई जी।
तम सुणीलो ध्यान लगाई जी।

सीताजी को ढूँढते हुए वे पम्पापुर सरोवर के निकट जा पहुँचे। वहाँ इनको हनुमान के समान पायक मिला। सुग्रीव से मित्रता हुई। बाली का वध हुआ। सीता की खोज प्रारम्भ हुई। राम ने पत्र लिखकर हनुमान के द्वारा सीताजी के पास भिजवाया, यथा–

लिखिया सो कागद भेजिया, हनुमान बेगा आवो रे।
पवन रूशि से बीर चाल्या, चाल्यानी लंका माय रे।
बागां का बनफल तोड़िया, बागां में करद्या ढंग रे।
कागद जो मेली माता पांव लाग्या, छूट्या नेनां से नीर रे।
धीरज धरो माता धीरज धरो, चड़िया सो लछमन राम रे।
अणी रे लंका को कंई तोड़णो, तोड़ांगा छन – पलवार में।
सात संमदर नो सें खाल्या, बीरा जल भर्‌या बिकराल रे,
कहो तो माता चूंसलूं, जल कातो करदूँ थल्य रे।

इधर हनुमान सीता की खोज में लंका के बाग में पहुँच गये हैं। उधर रावण अशोक वाटिका में सीता को अपनी पत्नी बनाने के लिये कई प्रकार के भय दिखला रहा है। सीता विरह व्यथित हो रही है। कहती है– हे रघुवीर! आप शीघ्र ही आकर मुझे धैर्य बंधवाइये। ये निशाचरों की स्त्रियाँ मुझे बहुत सताती हैं। वे भी मेरे प्राणों का हरण नहीं करते। हे नाथ! दर्शन दीजिये। जेठ मास की ऊष्णता के साथ विरह अनल भी मुझे तड़पा रहा है। आषाढ़ मास में रावण बुरे वचन बोलता है। हे कमल नयन! आप इसे शीघ्र दण्ड दीजिये। श्रावण मास में मेरा ध्यान तो आपके चरण कमलों में ही लगा रहता है। फिर भी वियोग मेरा पीछा नहीं छोड़ता। मैं तो निपट अभागिनी हूँ। इसलिये पति से वियोग हुआ है। लक्ष्मण को देखे बहुत समय हो गया है। यदि कुँवार मास में मैं आपके संग होती, तो दिन रात सेवा में होती। आपके चरण दबाकर श्रम का परिहार करती। कार्तिक माह में– हे स्वामी! आपके दर्शन न होने से दु:ख के कारण अचेत हो जाती हूँ। ऐसा विरह करते–करते सीताजी मूर्छित हो जाती हैं। मुख कमल मुरझा जाता है। जब पौष मास में हनुमान जी लंका में सीता को खोजते वाटिका में पहुँचते हैं, तो उन्हें आश्चर्य होता है। वे सीता को मूर्छित अवस्था में पाते हैं। जब उन्हें होश आता है, तब वे प्रसन्न चित्त हो रामदूत को देखती हैं। उनसे राम की कुशलता पूछती हैं। फागुन मास में महावीर सीता का संदेश लेकर वापस लौट आते हैं। प्रभु श्रीराम अपनी सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर देते हैं। फाग गीत के रूप में इस बारहमासा की छटा अवलोकनीय है–

अरे तम कठे गया रघुबीर, आप मोंहि धीर बंधावो।
चेत लग्यो म्हारो दु:ख अपार, तरास दिखावे निसचर नार।
कठण दु:ख स्वामी दासन्न देत, बाम विश्वं नई प्रीत लेत।
पिया वेगा आवो रे।
बेसाग लग्यो करी दरसण आस, नाथ करो झट दुश्ट को नास।
जो हो म्हारा हृदय पर गास-दरस दिखावो करोनी निरास।
दुखां से जल्दी छुड़ावो।
जेठ में हूं करम हीण, जो विधना दासण दुख दीन।
वियोग तुमारो सह्यो नी जाय, विरह अगन मोंये तड़फाय।
हे नाथ मोंये बचावो।
असाढ़ दसानन बोले कुबेन दो दंड आके उणे कमलनेन।
हरो दुख म्हारो, करी के खोज। रघुवंश सर के सुंदर सरोज।
नी देर लगावो।
सावन स्वामी लगो तुमसे ध्यान। म्हारा वियोग को दुख महान
सहो नाथ जसो हे कोमल सरीर। योई समझी ने मन को अधीर।
सो चिंता न सालो।
भादों मास की लखन लखात जो पिरभू पद सेवे दन रात।
में निपट अभागण गई पति सूं छूट।
म्हारी गई तगदीर फूट, बड़ो दु:ख होयो।
क्वांर जो होती मूं हे स्वामी, सेवा में रेती हूं तमारे नाथ।
चरण दबाती देती सगलो श्रम हार-अंचल सूं करती सीतल बयार,
सो विधि नी भायो।
कारतक मास करूं हे कंत, बिन दरसण म्हारो होयनी अंत।
निठूर होय स्वामी सुधनी लेत, दु:ख की अधिकता मूं अचेत।
सो मुख कुमलाणो।
आगण सीता को अति बिलमाय, हे प्रान संजीवन कबे मिलाय।
की प्राण वश में ई निकल्या जाय।
मुरछित हुई सिर सुंदर गात, सो मुख कुमलाणो।
पोस हनुमान लंका जाय, ठंड में सिया को दिल घबराय।
मेल मंजु मंदर खोजा दसकंध बाटिका में पोंचा।
सो अचरज लख्या।
माह मास महावीर देखी सिया मांय। मही मुरछा से दीनी जगाय।
ऊं दन सीता लख्यो राम दूत, परभू कुशल पूछहीं पवन दूत।
जिसे हरसायो।

फागण लोट गया माबीर सीता को संदसो कह्यो रघुवीर।
कटक लेके चढ़या तब सिरी राम,
की नी देर मार्‌या निसाचर तमाम।
सिया सुख पाचो।
लोटी सिया स्वामी के संग। हर्‌या आंखां आसूं जल छाय।
परभु पद पखार्‌या धाई लपटाय।
मिली हो जूं मीन जूं जल से अधाय।
सकल दुख भुलाय।

इधर मंदोदरी रावण से प्रार्थना करती हुई कहती है कि उसे राम से विरोध नहीं करना चाहिये। वह कहती है कि- हे पतिदेव! मैं आपसे बार-बार प्रार्थना करती हूँ कि आप राम से विरोध न कीजिये। आपने विरोध करने का संकल्प लेकर मुझे चिंता में डाल दिया है। आप राम से छल-कपट करने के लिये योगी का वेश धारण न कीजिये। आपने जो मोतियों का हार गले में पहिना है, इससे ऐश्वर्य सम्पन्न होने के कारण आपकी बुद्धि और शक्ति नष्ट हो गई है। मुझे ऐसा स्वप्न दिखाई दिया है कि कोट और कंगूरों पर वानर लूम रहे हैं। वे कोलाहल कर रहे हैं और दुनिया का पालन-पोषण करने वाले भगवान राम तुम्हारे लंका गढ़ को जीत रहे हैं। मंदोदरी ने नेत्रों में आँसू भरकर ये वचन अपने पति रावण से कहे। गीत अवलोकनीय है-

बालम म्हूं थाने बरजू हे कन्ता, थांजे उलटी गई म्हारे चंता।
जोगी को भेस धरो मती रावण, मत फिरि गई गले कंठा।
तीन लोक का नाथ बिसम्बर, छीन लेवेगा गढ़ लंका।
रानी मंदोदरी सुपनो आयो, कोट कंगारा बांदरा लू में।
कदी दिया सोर अनंता, बालम थांने बरजूं हे म्हारा कंता।

दूसरे एक और गीत में भी यही भाव दर्शित है-

ऊ गोंदराय गणपत कांत पर, हीरा जड़या री माणक मोती।
केत मंदोदरी सुनो पिया रावण, या कंई कुमति ठानी हे।
जणी की तम सीतां हरी लाया, वी परभु अंतर जामी हे।
मेघनाथ सा पुत्तर हमारा, कुंभ करण सा भाई हे।
गढ़ लंका सा कोट हमारा, सात समंद नो खाई हे।
हनूंमान सा पाचक उणका, लछमण जी सा भाई हे।
जलती अगन में कूद पड़ेगा, कोट गिणे नी खाई हे।
तिरिया जात बुद्दू की ओछी, करत बड़ाई हे उणकी।
भू मंडल से पकड़ मंगाऊँ, उण तपसी दोनूं भाई हे।

रावण तो मद में चूर है। मंदोदरी की समझाइश पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता। वह पुनः अशोक वाटिका में जाता है और सीता को अपनी पत्नी बनाने के लिए धमकाता है, कहता है– 'तू कहना मेरा मान जानकी! मुझको पति बना ले।' सीता उसकी कोई बात ध्यान में नहीं रखती है। इधर रावण को फिर से मंदोदरी समझा रही है। मंदोदरी समझाती है– हे प्रियतम! तुमने यह कैसी कुमति ठानी है। तुमने जिस सीता का हरण किया है, वे अंतर्यामी प्रभु भगवान श्रीराम की भार्या हैं। तुम्हें किस बात की कमी है? मेघनाद सा पुत्र है। कुंभकर्ण सा भाई है। लंका जैसा अजेय दुर्ग है, जिसके चारों ओर समुद्र तथा खाइयाँ हैं, किन्तु राम की सेना में भी बड़े-बड़े योद्धा हैं। वे जलती हुई अग्नि में कूद सकते हैं, उन्हें न तो आपके कोट की परवाह है न ही खाइयों की। रावण अपनी पत्नी को आश्वासन देता हुआ कहता है– तिरिया जात बुद्धि की बड़ी भोली होती है। अरी! क्यों चिंता करती हो? इन तपस्वियों का क्या? पृथ्वी के किसी भी छोर में चले जायेंगे तो भी उन्हें पकड़कर मँगवा लूँगा। यहाँ मानस तथा गीता का भाव साम्य परिलक्षित होता है।

लक्ष्मण-मेघनादे युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति लग जाती है। श्रीराम विलाप करते हैं – हे प्यारे भैया! अब जाग भी जाओ। मुझे तो पिता ने वनवास दिया था। जानकी और तुमने तो अपना सेवा भाव प्रदर्शित करने के लिए ही साथ दिया है, किन्तु मैं तो बड़ा अभागा हूँ। मेरे ऊपर तो दुख का पहाड़ सा टूट गया है। उधर सीता चुरा ली गई, इधर तुम भी मेरा साथ छोड़ रहे हो। अब मैं क्या करूँ? तुम चैतन्य हो जाओ। मुझे किसी भी प्रकार धीरज बँधाओ। अरे! वह मेघनाद हत्यारा है, जिसने तुम्हें शक्तिबाण से वेध दिया है। तुम अपने शरीर की सुध-बुध भूल पड़े हो। हे भाई! जागो, मैं तुम्हारे बिना अब कैसे घर जाऊँगा। वहाँ जाकर कैसे अपना मुख दिखा पाऊँगा। हे भाई! होश में आओ। प्रस्तुत पंक्तियों में लक्ष्मण शक्ति लगने के उपरांत राम विलाप का उत्कृष्ट वर्णन किया गया है, यथा–

सिरी राम करे बिलपाई जी, अब जाग पियारे भाई।
ओ मेघनाथ हत्यारा, जिने शक्ति बाण कस मारा जी,
सब तन की सुद बिसराई जी, अब जाग पियारे भाई जी।
बनवास पिता ने दीना, मेंने वचन सीस धर लीना जी।
संग जनक सुता सुखलाई, अब जाग पियारे भाई।
राम सीता गई चुराई, अब पड़े धरणी तुम भाई जी।
मोंय किस विध धीरज आई, अब जाग पियारे भाई?
तुम बिन केसे घर जाऊँ?
कंई बतला के मुख दिखलाऊं जी, बरमानंद उठो सुखदाई जी।
अब जाग पियारे भाई जी।

सुखेन वैद्य द्वारा संजीवनी बूटी बता देने पर वीर हनुमान इसे लेने के लिये गये। अनेक आपदाओं को पार करके वे प्रात:काल होने से पूर्व ही औषधि ले आये। लक्ष्मण जी मूर्छा से

जाग उठे। दूसरे दिन वे पुनः मेघनाथ से युद्ध करने पहुँचे। मेघनाद को वरदान था कि जो 12 वर्षों तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेगा, वही उसका वध कर सकेगा। लक्ष्मण और मेघनाथ में घनघोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में मेघनाद वीरगति को प्राप्त हुआ।

भारतीय लोक संस्कृति में विधवा का जीवन कितना कष्टप्रद होता है? इसका वर्णन एक मालवी लोक गीत में उपलब्ध होता है। मेघनाद की पत्नी सुलोचना सती थी। अपने पति की मृत्यु के पश्चात् वह विलाप करती हुई भगवान राम से कहती है कि प्रभो! अभी तो मेरी अल्पायु है। मैं शेष जीवन किस प्रकार व्यतीत करूँगी? प्रथम तो पितृ गृह में मेरा कोई सहायक नहीं है। दूसरे आपने लंका में युद्ध आरम्भ कर दिया है, जिससे ससुर गृह भी अशांत है। तीसरे लक्ष्मणजी ने तो मेरे पति का वध करके मुझे वैधव्य जीवन जीने के लिये विवश कर दिया है। यह देखकर मेरा हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा है। अभी तो मेरी उम्र ही क्या है। अब न तो मेरा लंका में ही कोई रहा, न पीहर में गुजारा होना सम्भव है? वे भी मुझसे पूर्व से ही असंतुष्ट हैं। अभी तो मेरी गोद भी नहीं भर पाई है। हे नाथ! इस बाली उमर में मुझे विधवा बनाकर मेरा सर्वस्व हरण कर लिया है। गीत इस प्रकार है–

उमर मोरी कैसे कटे बाली, *ना गिरे दूद के दंत।*
पेले तो पीयर की मारी, दूजे राम ने बिपदा डारी।
तीजे पति कूं लछमन ने मारा, विधवाकर डाली जी नाथ।
मेरी फटन लागी छाती, ना गिरे दूद के दंत।
लंका में नई कोई हमारा, पीयर नाही होत गुजारा।
म्हारी फटन लागी छाती जी, ना गिरे दूद के दंत।
नाथ मोरी गोदी रई खाली, ना गिरे दूद के दंत।
नाथ मोई विधवाकर डाली जी, ना गिरे दूद के दंत।

मेघनाद वध के उपरान्त भगवान राम के हाथों उस युग के महान योद्धा एवं छः माह तक नींद निकालने वाले एवं छः माह तक आहार करने वाले कुम्भकर्ण का नाश हुआ। अन्त में रावण को मार गिराया गया। विभीषण को लंका का राजा बनाकर सीताजी की अग्नि परीक्षा ली गई। राम सपरिवार अयोध्या आ गये। भरत के जीवन में प्राणों का संचार हुआ। माताएँ बड़े प्रेम से गले मिलीं। अयोध्या के घर–घर में बधाइयाँ बजने लगीं। मंगलगान होने लगे।

मालवी में बधाई या बधावा नामक लोकाचार बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसमें बधाई के माध्यम से राम का गुणगान किया गया है, देखिए–

ऐसो दिन आयो बधाई भगवान की, तांबे के हण्डे में ताता सा पानी।
सांजे नहावे राम सवेरे सिया जानकी, ताती जलेबी दूदन के लड्डू।
सांजे जीमें राम सवेरे सिया जानकी।

इस प्रकार राम और जानकी दोनों को यहाँ आराध्य देव मानकर अन्त में कीर्तन नामक

भक्ति को प्रस्थापित किया है, जो नवधा भक्ति में से एक मानी गई है। उनके प्रति अनुराग व्यक्त किया गया है। उन्हें ताँबे के हण्डे में पानी गर्म करके स्नान करवाया जाता है। गर्म जलेबी और दूध के बने लड्डुओं का भोग लगाया जाता है। यह मनुहार राम के राजसी भोग के अन्तर्गत मानी जाती है। राम का यह भक्त वत्सल रूप ही नहीं, राजसी रूप भी है, क्योंकि वे अब अयोध्या नगरी के भूपति हैं। सोने की झारी में गंगाजल पीने को दिया जाता है। ताम्बूल भक्षण करवाया जाता है। शहर अयोध्या से फूलों का पंखा मँगवाकर झला जाता है। सोने की चौपड़ और हीरे जड़े पाँसों (सारों) से राम और सीता चौपड़ खेल रहे हैं। लाल पलंग जिसके पायदान में घुमावदार चकरियाँ लगी हैं – उस पर राम को शयन करवाया जाता है। सीता को राम के साथ ये सुख वैभव प्राप्त है। राम का राजसी श्रृँगार इस लोक गीत में पल्लवित-पुष्पित हुआ है।

राम को राज्य सुख मिला ही था कि एक और दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। सीता को लेकर अयोध्या में यह लोकापवाद फैला कि राम ने रावण के यहाँ रही हुई सीता को अंगीकार कर लिया है। यद्यपि सीता सब प्रकार से शुद्ध थी, तथापि लोकमत के आगे राजा राम को झुकना पड़ा। सीता वन में निर्वासित कर दी गई। सीता उस समय गर्भवती थी। वाल्मीकि ने अकेली सीता को उस निर्जन वन में बहोश पड़ा पाया, तब उपचार करके परिचय पूछा-

रिसी पूछे हे जानकी से बात, बन-बन क्यों भटके?
कोन घर की तू बेटी कइये? कोन पुरुष की तू नार?
बन-बन क्यों भटके?
राजा जनक जी की बेटी कहिये, रामचन्दर जी घर री नार,
बन-बन क्यों भटके?

(सीता से परिचय पूछने पर बतलाया गया कि वे राजा जनक की पुत्री हैं तथा रामचन्द्र जी उनके पति हैं।)

शेष बातें तो वाल्मीकि ऋषि स्वयं समझ गये। वाल्मीकि युग दृष्टा थे। सब कुछ जान गये। सीताजी को अपने आश्रम में ले आये। वहाँ कुछ समय पश्चात् लव-कुश नामक दो बालकों को जन्म दिया। मालवा में बालक के जन्म लेने पर जच्चा गीत गाये जाते हैं। यह संस्कार गीत है। लोक प्रथाओं में जच्चा गीत के पास कुछ स्त्रियों का होना आवश्यक है। एकान्त में बच्चे को खतरा हो सकता है। कोई डायन, चुड़ैल भूत या प्रेत बाधा दे सकते हैं, जादू-टोना हो सकता है आदि लोक मान्यताएँ एवं लोक विश्वास लोक जीवन से बँधे हैं, इसलिए जच्चा के पास में टोना-टोटका के रूप में लोहे का अस्त्र रख दिया जाता है। सीता जी के दुर्भाग्य का सजीव चित्र इस गीत में देखिये-

सीता के वन में लाल हुआ, गोपाल केवइया कोई नहीं,
सासूजी उनकी अजोध्या में, हो फूंका चढ़ाने वाला कोई नहीं।

जेठानी उनकी अजोध्या में, पालना डालने वाला कोई नहीं।
देरानी उनकी अजोध्या में, हो चोक पुराने वाला कोई नहीं,
ननंद बाई उनकी अजोध्या में, लाल खिलावन वाला कोई नहीं।
सहेल्यां उनकी अजोध्या में, मंगल गाने वाला कोई नहीं हो राम।

राज महलों में यदि बच्चा होता तो अनेक दासियाँ, सखियाँ तथा माताएँ भी पास रहतीं। मंगल गीत गाए जाते। बधाई बजती, अब उन्हें वात्सल्य भाव से पुकारने वाला भी कोई नहीं। मुन्ना! मेरे लाल या लाड़ला! कहने वाला कोई भी नहीं। उनकी सासुएँ हैं – वे भी अयोध्या में हैं। अब सीता को गर्म पानी कौन पिलाए? (जच्चा को गुड़-घी का पानी उबालकर दिया जाता है) चौक पुराने वाला भी कोई नहीं है। ननद भी अयोध्या में है। सखियाँ भी अयोध्या में रह गई हैं। अब यहाँ मंगल गीत गाए तो कौन? इस प्रकार सीताजी अपने दुर्भाग्य को कोस रही हैं। गीत अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है, जिसमें लोक जीवन का चित्र सजीव हो उठा है। हे राम! शब्द से इसमें व्यंजना द्वारा तीव्र व्यंग्य उकेरा गया है। लोक मानस ने इस स्थान पर राम को बहुत धिक्कारा है।

अन्त में ब्रह्मानंद पर आधारित गाये जाने वाले दो गीत यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। प्रथम गीत में राम काव्य सम्पूर्ण रूप से मुखरित हुआ है, जबकि दूसरे गीत में सिया राम की आरती गाई गई है। यथा–

राम दशरथ के घर जन्में, घराना हो तो ऐसा हो।
करें सब पिरेम से दरसन, दुलारा हो तो ऐसा हो?
जगत का काम करने को, मुनीश्वर लई गया बनमें।
उड़ाया सीस देत्यन का, निसाणा हो तो ऐसा हो।
धनस के जाय के तोड्यो, जनक की राजधानी में।
भूप सब मन में सरमाया, नजारो हो तो ऐसो हो।
पिता की मान के अग्या, राम बन कूं चले जबही।
नी छोड़्यो संग सीतां ने, जनाना हो तो ऐसा हो।
सिया को हर गयो रावन, बनइ के भेस जोगी को।
करायो नास सब अपणो, दिवानो हो तो ऐसो हो।
पिरेम सुगरीव से राख्यो, गिरायो बाण से बाली।
दिलाई नार फिर उणकी, दिलेरी हो तो ऐसी हो।
गया हनूमान जदी लंका, खबर लेवा के सीता की।
जलइ के नगर के आया, सयानो हो तो ऐसो हो।
बांध सेतु समन्दर में, उतारी पार सब सेना।
मिटावों बस रावण को, हरानो हो तो ऐसो हो।

उतार्‌यो भार भूमि को, सिधार्‌या धाम अपणे को।
ओ बिरमानंद दनिंया से, उजागर हो तो ऐसो हो।

सीता राम की आरती

आरती करिये सियावर की, अवध पत रघुवर सुंदर की,
जगत में लीला विस्तारी, कमल दल लोचन हितकारी।
झूमती अलकें घुंघराली, मुगट छब लगती हे प्यारी।
मृदुल मन जब मुस्काते हें, छीन के मन ले जाते हें।
नवल रघुवीर हरो भव पीर, बड़ा ही धीर।
जयति जय करुणा सागर की, आरती करिये सियावर की।
गले में हीरां को हो हार, पीत पट ओढ़्यां राज कुमार
नेत्तर की चितवन में बलियार, दियो हे म्हांने तन मन वार।
चरण हें कोमल कमल बिसाल, छबीला दसरथ जी का लाल,
सलोना श्याम नेने अबराम, पूरण करो सबज ही काम।
सूरत हे सकल चराचर की, आरती करलो सिया भर की।
अहल्या गोतम जी की नार, नाथ ने छन में कियो विस्तार,
भगत केवट को कर्‌यो उद्‌दार, जटायू शबरी के दई तार।
चरण में कपि सेवग आया, विभीषण अभे दान पाया।
मान-मद, त्याग, मोह से जाग, करया हे जनता से अनुराग।
किरपा हो रघुवर जलधर की, आरती करिये सिया भर की।
अधम खल जब बड़ जावे हे, नाथ तब जग में आवे हे।
केक लीला दरसावे हे, धरम की लाज बचावे हे।
बसो म्हारा नेनां में नंदलाल, मात सिरी जनक नंदिनी लाल।
मनख ओतार लियो करतार, करयो थांने भगतां को उद्धार।
विने या लछमण अनुचर की, आरती करिये सिया वर की।

मालवी लोक साहित्य में लोक नायकों के उदात्त जीवन की झाँकियों के सुरुचिपूर्ण चित्र मिलते हैं। इन्हें सहेजने से न केवल मालवी अपितु हिन्दी साहित्य के भण्डार की अभिवृद्धि सहज ही हो सकती है। आवश्यकता है ग्रामधूलि को सिर पर धारण करने की।

चैत्र माह की पूर्णिमा को मालवा में हनुमान जयंती मनाई जाती है। मालवा के जन-जन के ये आराध्य देव हैं। इस दिन बजरंगबली के मन्दिरों में अक्सर रामायण पारायण करवाया जाता है। रात्रि को भजन मंडलियाँ हनुमानजी के चित्र को हाथों में लिये संकीर्तन एवं नृत्यादि के साथ नगर भ्रमण करती हैं। हनुमान जी से सम्बन्धित एक गीत यहाँ दिया जा रहा है-

सत ने समरूँ सारदा, गनपत के लागूं पाय रे।
लिखिया सो कागद भेजिया, हनूमान वेगा आवो रे।
पवन गति से बीर चाल्या, गया नी लंका मांय रे।
बागांरा बनफल तोड़िया, गया नी लंका के माय रे।
मुन्दरिका जो मेली बीरा पांव लाग्या।
छूट्या नेनां से नीर रे, सत्ती को मन घबरायो रे,
माता को चीर भिंजवायो रे, हनूमान बेगा आवो रे।
कूण दिसा रे बीरा आपे आया, कांई तुमारो नावं रे।
कणी का भेज्या आविया, कांई तुम्हारो गाँव रे।
उतराजो खंड से आविया माता, अजोध्या हमारो गाँव हे।
सिरी राम चंद जी ने भेजिया, हनूमान हमारो नांव रे।
धीरज धरो माता, धीरज धरो, चढिया सो लछमण राम हे।
अणी लंका को कंई जीतणो, जीतांगा पल छन बार में।
सात समंद नो से खाल भर्या, बीरा जल भर्या बिकराल रे।
कहो तो माता चूसलूं, हूं जल के कर दूं थल्ल रे।
हनुमान बेगा आवो रे, चंद्रसखी की विनती हे।
सुणलोनी ध्यान लगायके, रेदास दस दन गाविया।
हनूमान बेगा आवो रे।

प्रस्तुत गीत में सीताजी का अशोक वाटिका में विरह वर्णित है। श्रीरामचन्द्रजी पत्र लिखकर हनुमान के द्वारा सीताजी के पास भिजवाते हैं। वे त्वरित गति से लंका में पहुँचते हैं। भूख होने से बागों के फल तोड़ खाते हैं। अशोक वाटिका में पहुँचकर माता जानकी के श्रीचरणों में मुद्रिका रखते हैं। मुद्रिका देखते ही सीताजी के नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है। उनका मन घबरा जाता है। अश्रु से उनके वस्त्र गीले हो जाते हैं। फिर धैर्य धारण कर हनुमान से उनका परिचय पूछती हैं। हनुमान कहते हैं कि उत्तराखंड से आये हैं और श्रीरामचन्द्रजी ने समाचार जानने के लिए उन्हें भेजा है। वे कहते हैं– घबराने की कोई बात नहीं है, आपकी आज्ञा हो तो इस लंका को थोड़े ही समय में जीत लूँ। सीताजी कहती हैं– यह कैसे सम्भव होगा? क्योंकि गढ़ लंका के चारों ओर विकराल समुद्र तथा कई एक खाइयाँ हैं। इस पर हनुमान कहते हैं कि आपकी आज्ञा हो तो समुद्र के जल को चूसकर रिक्त कर दूँ।

चैत्रमास की सप्तमी अथवा विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर मालवा में शीतला माता की पूजार्चना की जाती है। इस अवसर पर इनके गीत भी गाये जाते हैं, यथा–

माता छाप्या लीप्या हो म्हारा ओंटला, माता नईं म्हारो खेलण हार।
जल जमना में अम्बो मोरियो, माता मांज्या धोया म्हारा बेवड़ा।

माताबई नहीं म्हारे खेलण हार, जल जमना में अम्बो मोरियो।
माता राम रसोई म्हारी सींग चढ़ी, माता नईं म्हारे जीमण हार।
जल जमना में अम्बो मोरियो, माता एक दीजो हो लूलो पांगळो,
म्हारी सम्पत को रखवार, जल जमना में आंबो मोरिया।

शीतला माता का व्रत-अनुष्ठान सौभाग्यवती स्त्रियाँ ही करती हैं। वे अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिये यह व्रत करती हैं। स्त्री की सर्वप्रथम कामना उसकी गोदी में एक लाल खिलाने की होती है। वह देवी के थानक पर जाकर सर्वप्रथम लिपाई-पुताई करती है। फिर याचना करती कहती है- हे माता! मेरे घर में क्रीड़ा करने वाला पुत्र नहीं है। यमुना के जल में आपकी आम्बा बाड़ी विसर्जित की गई है। मुझे पुत्र दे दो। हे माता! मेरा पानी का बेहड़ा साफ-स्वच्छ है। मेरी रामरसोई तैयार है, किन्तु इसको खाने वाला कोई नहीं है। हे माता! मुझे चाहे एक ही लूली अपंग संतान दे दो। जो मेरी सम्पदा का रक्षक हो। हे माता! मेरी इस इच्छा की पूर्ति करें। दूसरा गीत देखिये-

लीपण भरी रे चंगेलड़ी, बहू थें सिध चाल्या जी आज।
पांडू भरी रे चंगलेड़ी बहू थें, सिंध चाल्या जी आज।
पूजा भरी रे चंगलेड़ी बहू थें, सिध चाल्या जी आज।
आज म्हारी माता आँगण बेठा, यों मंड लीपण जोग।
आज म्हारी माता आँगण बेठा, माता म्हारी एक बालूड़ो देय।
एक बालूड़ा का कारण, म्हारा सासूजी बोले बोल।
एक बालूड़ा के कारणे, म्हारा जेठजी बोले बोल।
एक बालूड़ा के कारणे, म्हारा देव जी बोले बोल।
एक बालूड़ा का कारणे, म्हारा सायबजी लावे ल्होड़ी सोक।
माता म्हारी एक बालूड़ो देय, सीतला ने दियो माता पालणो।
क्यां हे रेसम डोर? ओवरा बांधू माता पालणो।
पटसारा बांधू रेसम डोर, हरती फरती हल रावती।
म्हारो हिवड़ो हिलोरां लेय, सासू की जाई गोरी नणदली।
जणी ने मेंलू रखवारी मांय, माता म्हारी एक बालूड़ो देय।

इस गीत में नारी जीवन की आकांक्षा एवं व्यथा-कथा का चित्रण मिलता है। स्त्रियाँ शीतला के थानक पर जाकर उनकी पूजार्चना करती हैं। लीपन से भरा पात्र लेकर - हे बहू! तुम कहाँ जा रही हो? पांडू भरा पात्र लेकर कहाँ जा रही हो? हे बहू! पूजा की थाल सजाकर तुम कहाँ जा रही हो? आज मेरी माता बाई आँगह्न में बैठाकर माता की मढ़ी लीप रही है। पुताई कर रही है। हे माता! मुझे एक बालूड़ा (बालक) देड्ड। एक बच्चा न होने से मेरा जीवन सूना हो गया है। मेरे ससुर, सास, जेठानी, देवर और देवरानी सब मुझसे रूष्ट हैं। वे मुझे बंध्या समझकर

तिरस्कृत करते हैं। बड़े कटुवचन बोलते हैं। मेरे सायब (पति) तो मेरे ऊपर सौत लाने को उत्सुक हो रहे हैं। हे माता! मेरी दशा पर द्रवित होकर मुझे एक बालक प्रदान करें। तब माता शीतला ने अत्यन्त प्रसन्न होकर मुझे पालना दिया। तब उसमें झूलने वाला एक पुत्र प्रदान किया। हे माता! इसका पालना कहाँ बाँधूं और रेशम डोर कहाँ से लाऊँ? घूमती फिरती मैं बालक रखती हूँ, तब मेरा हृदय हिलोरे लेने लगता है। हे माता! मेरी सास की प्रिय पुत्री मेरी ननद बाई को ही बालक की रखवाली करने को कहूँगी। हे माता! आप प्रसन्न हों एवं मुझे एक बालक प्रदान करें।

वैशाख मास

इस मास में आखातीज (अक्षय तृतीया) बैसाखी, गंगा सप्तमी, गंगा पूजन, मोहित एकादशी, नरसिंह जयंती, बुद्ध पूर्णिमा आदि पर्वोत्सव आते हैं। मालवा के लोक जीवन में इस मास आखातीज एवं वैवाहिक संस्कार के गीतों को गाये जाने का महत्त्व है। नरसिंह जयंती एवं मोहिनी एकादशी के कतिपय लोक गीत ही यहाँ दिये जा रहे हैं।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को नरसिंह जयंती समग्र मालवा में सोल्लास मनाई जाती है। नरसिंह का अवतार उस समय के प्रबल प्रतापी राक्षसराज हिरण्यकश्यप के सर्वनाश के लिए हुआ था। भक्त प्रहलाद हिरण्यकश्यप का पुत्र था जो कि भगवान का अनन्य भक्त था। हिरण्यकश्यप की बहिन होलिका थी। उसको वरदान था कि अग्नि में वह जल नहीं सकती। हिरण्यकश्यप ने गुरु शुक्राचार्य के सान्निध्य में प्रहलाद को पढ़ने भेजा - कहा कि मेरा पुत्र भगवान का भक्त है। अत: इसकी इस कुटैव को छुड़ाकर मुझे ही सर्व शक्तिमान भगवान के रूप में निरूपित करने की शिक्षा दीजिये। गुरुदेव शुक्राचार्य ने प्रहलाद को शिक्षा देकर जतलाने का प्रयास किया कि वे उसके पिता को ही ईश्वर का रूप माने, किन्तु प्रहलाद के मानस पर यह बात अंकित न हो सकी। इससे कुद्ध होकर हिरण्यकश्यप ने उसे मारने के विविध उपक्रम किये। इसी भाव को लोकगीतकारों ने इस रूप में प्रस्तुत किया है-

ऐ- रस में विश घुलवाया पिता तूने, वोई मुझको पिलाया।
हरि ने दीना अमरित बनाय, वो हरिनाम नंई भूलांगां।
हाते पांवे बंधवाया पिता तूने, गिरवर से फिंकवाया।
हरि ने लीना गोदी उठाय, ओ हरिनाम नई भूलांगां।
ताता तेल करवाया पिता तूने, उसमें मुझको बिठाया,
हरि ने दीनी हवा चलाय, ओ हरिनाम नई भूलांगां।
ताता खंब करवाया पिता तूने, उणसे मुझे लिपटाया।
हरि ने दीनी चींटी चलाय, ओ हरि नाम नई भूलांगां।
तुरत चिता बनवाई पिता तूने, उसमें मुझको बिठाया।
हरि ने दीनी होली जलाय, ओ हरिनाम नई भूलांगां।

हे पिता! मैं प्रभु के भक्ति रूपी रस में आकंठ डूबा हुआ था, किन्तु तुमने उस रस से

विलग करके मुझे विष रूपी रस पीने के लिए दिया। मेरे प्रभु धन्य हैं, जिसने उस विष को अमृत में बदल दिया और मेरे प्राणों की रक्षा की। मैं हरि नाम सुमिरण कैसे भूल सकता हूँ।

हे पिता! तुमने मेरी ईश्वर भक्ति से अप्रसन्न हो उससे विलग करने की दृष्टि से मेरे हाथ और पाँवों को रस्सी से जकड़वाकर ऊँचे पर्वत की चोटी से नीचे पृथ्वी पर फिंकवा दिया, किन्तु उस परमपिता परमात्मा को धन्य है, जिसने अपने भक्त की रक्षा के लिये अपनी गोदी में स्थान देकर मुझे मरने से बचा लिया। बतलाओ मैं उनका नाम कैसे न लूँ? हे पिता! तुमने मुझे मरवाने के लिये उबलते तेल की कड़ाह में फिंकवा दिया, किन्तु मेरे प्रभु ने उसी समय शीतल वायु का संचार किया कि तेल ठंडा हो गया और मैं बच गया। भला बताओ ऐसे करुण सागर का नाम लेना मैं कैसे छोड़ दूँ?

हे पिता! जब इतने पर भी तुम्हें तसल्ली नहीं हुई तो तुमने लोहे के स्तम्भ को गर्म करवाकर उसमें मुझे जबरदस्ती लिपटवाने का उपक्रम किया, किन्तु प्रभु की महिमा अपरम्पार है – उन्होंने उस स्तम्भ पर चिऊंटियाँ चलाकर मुझे अपनी लीला का चमत्कार बताकर ढाँढस बँधवाया कि चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। स्तम्भ तो ठण्डा है, चिपक जाओ और मैं उस अदृश्य शक्ति के प्रति नतमस्तक होता हुआ स्तम्भ से चिपक गया और मेरा बाल भी बाँका न हो सका। भला बताइये अब मैं ऐसे प्रभु का नाम स्मरण न करके तुम्हारे जैसे राक्षस वृत्ति वाले व्यक्ति का नाम कैसे लूँ?

हे पिता! इतना सब होने पर भी तुम्हें अपने पुत्र पर दया नहीं आई। यह भी न समझ सके कि इतने वार झेलने पर भी यह बालक क्यों बचा रहा? उस विराट शक्ति को तब भी पहिचान नहीं पाये और अन्त में एक धधकती हुई चिता में डालकर मुझे जलाने का प्रयत्न किया। अपनी बहिन होलिका की गोद में बिठाकर मुझे जलाने का उपक्रम किया। किन्तु वह परमात्मा तो असीम दयालु है। उसने होलिका को तो जलाकर भस्म कर दिया, किन्तु मुझे उस विकराल अग्नि मुख से बचा लिया। इसलिए आप चाहे कितना ही प्रयत्न करें, मैं तो उस परमपिता परमात्मा का नाम स्मरण कभी नहीं छोड़ूँगा।

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में मोहिनी एकादशी का व्रतोत्सव होता है। इस दिन महिलाएँ प्राय: मोहिनी एकादशी के गीत गाया करती हैं। गीतों के अतिरिक्त गीत कथा के रूप में भी ग्यारस माता नामक गीत काव्य कई दिनों तक गाया जाता है। वर्ष भर में 24 एकादशियाँ पड़ती हैं। जिस वर्ष अधिक मास होता है, उसमें दो पुरुषोत्तमी एकादशियाँ और बढ़ जाती हैं। यह व्रत चैत्रादि सभी महिनों के शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों में किया जाता है। पुत्रवान गृहस्थ शुक्ल एकादशी और वानप्रस्थ संन्यासी तथा विधवा दोनों का व्रत करें तो उत्तम होता है (मालादर्श), इसमें शैव और वैष्णव का भेद भी आवश्यक नहीं, क्योंकि जो जीव मात्र को समान समझे, निजाचार में रत रहे और प्रत्येक कार्य को विष्णु और शिव को अर्पण करता रहे, वही शैव और वैष्णव होता है।

एकादशी शुद्धा और विद्धा दो प्रकार की मानी जाती है। दशमी से विद्ध होतो विद्धा और अविद्ध हो तो शुद्धा होती है। एकादशी सिद्धान्त रूप में उदय व्यापिनी की जाती है। मत्स्यपुराण के अनुसार क्षय एकादशी निषिद्ध होती है। वैष्णवों में 45 तथा 55 का वैध त्याज्य होता है। एकादशी की महिमा लोक विदित है। एकादशी के दिन मालव नारियाँ प्राय: अनेक लोकगीत गाकर इस व्रतोत्सव को बड़ी श्रद्धापूर्वक करती हैं, यथा–

एकादसी बरत नियम से करना,
पेली सेवा मात पिता की।
उनका दूध से सरीर बना।
दूसरी सेवा गुरु अपणा की।
उनका ध्यान सूं ग्यान हुआ।
एकादशी बरत नियम से करना।
तीसरी सेवा सास ससुर की,
उनका पुत्तर पति होया अपणा,
एकादशी बरत नियम से करना,
चोथी सेवा पति की अपने,
उनके संग जीवन बीता।
एकादशी बरत नियम से करना।
पांचवी सेवा भाई संतन की,
उनका संग से उद्धार हुआ।
अपना उनका संग में उद्धार हुआ।
एकादसी बरत नियम से करना।

इस गीत में एकादशी में 'सेवा' को धर्म बतलाया गया है। प्रथम सेवा तो माता-पिता की करें, जिनका दुग्ध पानकर यह अपना शरीर बना। दूसरी सेवा गुरु की करना, जिन्होंने हमें ज्ञान दान दिया। तीसरी सेवा सास-ससुर की करना, जिनके पुत्र हमारे पति हुए। चौथी सेवा अपने पति की करना, जिनके साथ हमें अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करना है। पाँचवी सेवा सन्तों की करें, जिनके सम्पर्क से हमारा जीवन का उद्धार होगा, एकादशी व्रत का यही नियम है। इसी को यदि नारी समाज अपना ले तो उनके जीवन का उद्धार हो सकेगा। दूसरा गीत देखिये–

बरत दकादशी करना नणद बाई, न्हावा ने चालां।
हाथां में लोठ्यो ने कांधा पे कपडो, नणद बाई न्हावाते चालां।
अपणा हरि को सुभाव बुरो हे, अपणा परभूजी को सुभाव बुरो हे।
छाने छाने चालां नणद बाई, न्हावाने चालां।
गंगा ओ जमना अर तिरवेणी, तिरवेणी का तिरना नणदबाई,

न्हावा ने चालां।
बरत एकादशी करना नणद बाई, न्हावा ने चालां।

प्रस्तुत गीत में एकादशी के दिन त्रिवेणी स्नान का प्रतिपादन किया गया है। भौजाई अपनी ननद से कहती है कि- हे ननद बाई! एकादशी का व्रत है, इसलिये हम स्नान करने नदी पर चलें। ननद-भौजाई ने अपने हाथों में लोटे लिये, कंधे पर वस्त्र डाले और स्नान करने चलीं। उन्होंने इस कार्य के लिए अपने पति से नहीं पूछा, क्योंकि उनका स्वभाव बुरा है। वे चुपके-चुपके स्नान के लिए गंगा-जमुना के संगम पर पहुँचीं। त्रिवेणी में खूब तैरीं और घर आकर एकादशी का व्रत और पूजन सम्पन्न किया।

एक और गीत में एकादशी के दिन किये जाने वाले उत्तम कार्यों का चित्रण मिलता है। गीत है-

बरत करो रे भई एकादसी को, तुलसी क्यारे मेलूं बेड़ो।
रामजी का घर से आयो तेड़ो, तुलसी क्यारे मेलूं बेड़ो।
रामजी बना तो म्हारी मुगती कसी?
हरीजी बना तो म्हारी मुगती कसी?
तुलसी क्यारे राळूं पीळी, रामजी का घर से होई सीळी।
रामजी बना तो म्हारी मुगती कसी?
ग्यारस के दन माथो धोवे, ओछा जल की मछली होवे।
तड़फ तड़फ कर वा मर जावे, ग्यारस करो रे भई एकादसी।
ग्यारस के दन सोवे जोई खाट, रामजी चलावे उंने ऊबट बाट।
रामजी बना तो म्हारी मुगती कसी?

इस गीत में एक नारी एकादशी का महात्म्य बतलाती हुई कह रही है कि एकादशी के दिन हर नारी को तुलसी के क्यारे में जल सिंचित करना चाहिये, यदि हमें ईश्वर भक्ति प्राप्त करना है तो तुलसी की सेवा करनी चाहिये। बिना राम और कृष्ण के मुक्ति कैसी? तुलसी क्यारे में पीली मिट्टी बिछाना चाहिये, क्योंकि वह स्वभाव से ही ठंडी होती है। जो स्त्रियाँ एकादशी के दिन अपना सिर धोती हैं, वह अगले जन्म में छिछले जल की मछली बन जाती है। जैसे ही जल सूखा कि वह तड़फ-तड़फ कर मर जाती है। जो स्त्री एकादशी के दिन खाट (पलंग) पर शयन करती है, ईश्वर उसे टेड़े-मेढ़े रास्ते पर पटक देता है। उसे सन्मार्ग की प्राप्ति नहीं होती। इसलिये एकादशी का व्रत करने वालों को इन नियमों का पालन करना चाहिए, तभी हमारी इस भवसागर से मुक्ति हो सकती है।

एक गीत की बानगी देखिये। इसमें भी स्त्रियों को एकादशी की वर्जनाओं का पालन करने की शिक्षा दी गई है-

पनघट बेठो पट्टा सवारे, पराई नार पे नजारां उलारे।
जणी रे करम से सरजीव कागलो।
आकाशां में ऊ उड़तो फिरे।
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी।
सिया राम बना तो म्हारी मुगती कसी?
उभी जो उभी बालूड़ा धवाड़े, ऐड़ी छाड़ो वा कोड़नी।
जणी रे करम से सरजी ऊंटड़ी, बल्ड़ा मांये फिरती वा फिरे।
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी, सिया रामजी बना म्हारी मुगती कसी?
ओछा तो जल से माथो ओ धोवती, काजल बिन्दी वा सारती।
जणी रे करम से सरजी ऊंटड़ी, बजारां में नाचती वा फिरती।
सासू के सामूं बऊ जो बोलती, बोल जुवापा वा करती।
जणी रे करम से सरजी कुतिया, बजारां में वा भूसती फिरती।
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी।
सिया राम जी बना म्हारी मुगती कसी?
सासू के छानां ढाकणी उगाड़ती, ऐंठ बटालो वा करती।
जणी रे करम से सरजी मिनकी, घर-घर चाटती वा फिरती।
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी।
सिया राम बना म्हारी मुगती कसी?
नर के ओ पेलां नारी जो जीमती, ऐंठ बटालो वा करती।
जणी रे करम से सरजी बागल, आंधे जो मुखड़े वा झूलती।
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी।
सिया राम बना म्हारी मुगती कसी?
ग्यारस गिनता ने बारस गिनता,
नर-नारी वी पलंग पोढ़ता।
जणी रे करम से सरजा बांझा-बांझुरी
पराया पूतां की आसा करता।
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी,
सिया राम बना म्हारी मुगती कसी?

एकादशी के इस अति भावप्रवण गीत में एकादशी के नियमों का पालन न करने वाले को सख्त चेतावनी दी गई है। जो मनुष्य पनघट पर बैठकर अपने बालों को सँवारता और पराई नार को कुदृष्टि से देखता है। ऐसों को ईश्वर कौआ बना देता है। वह हमेशा गन्दगी ही खाता रहता है। इसलिये - हे प्राणी! तुम एकादशी का व्रत करो। सिया-राम तुम्हारे जीवन का उद्धार करेंगे।

जो स्त्री खड़ी-खड़ी अपने बच्चे को दूध पिलाती है। ऐड़ी रगड़ती इधर-उधर देखती

रहती है। ऐसे कर्मों से ईश्वर उसे ऊँटड़ी का जन्म दे देता है, जो जंगल-जंगल चरती फिरती है। जो स्त्री थोड़े जल में अपना सिर धो लेती है और एकादशी के दिन काजल टींकी सारती है। उसके इन निंदनीय कर्मों से ईश्वर उसे नर्तकी का जन्म देता है, जो बाजारों में नृत्य करती फिरती है। जो बहू अपनी सास के सामने बोलती है। सवाल-जवाब करती है, ईश्वर उसे कुतिया के रूप में जन्म देता है। और वह कुतिया बनी बाजारों में इधर-उधर भौंकती फिरती है। इसलिये- हे जीव! एकादशी व्रत करो। बिना राम कृपा के इस संसार-सागर से मुक्ति कैसी? जो स्त्री अपनी सास के पीछे से हंड़िया का ढक्कन खोलकर राबड़ी खा डालती है और बिना नैवेद्य लगाये उस पात्र को जूठा कर देती है। उसे दण्ड स्वरूप बिल्ली की योनि मिलती है। जो घर-घर भटकती जूठन चाटती फिरती है। इसलिये- हे प्राणी! तू एकादशी का व्रत कर। बिना राम कृपा के मुक्ति सम्भव नहीं है। जो स्त्री अपने पति को भोजन करवाये बिना स्वयं भोजन कर लेती है और उस भोजन को जूठा कर देती है, ईश्वर उसे अगले जन्म में जंगल की बागुर बना देता है। वह सदैव वृक्ष पर औंधे मुँह झूलती रहती है। इसलिये- हे जीव! एकादशी का व्रत कर। सिया राम की कृपा के बिना मुक्ति कैसी? जो स्त्री न तो ग्यारस का दिन देखती है न बारस का और अपने पति के संग पलंग पर सोती है, ऐसी स्त्री अपने कर्मों से ईश्वर के कोप का शिकार होकर अगले जन्म में बाँझ रह जाती है। जो हमेशा दूसरे के पुत्र-पुत्रियों की आशा किया करती है। इसलिये - हे प्राणी! एकादशी का व्रत करो, जिसको नियमपूर्वक करने से सभी प्राणी इस भवसागर से पार हो जाते हैं।

एक गीत में एक मालवी नारी अपने लिए विभिन्न प्रकार के आभूषणों की माँग उस परमपिता परमात्मा से करती है। और कहती है- हे भगवान! एकादशी का व्रत तो उससे सधता नहीं। गीत इस प्रकार है-

माथा ने भम्मर घड़ावजो ओ भगवन, हीवड़ा ने हांसज घड़ावजो ओ भगवन।
रखड़ी ने रतन जड़ाजो, ग्यारस म्हांसे नी सदे ओ भगवन।
दुलडी ने रतन जड़ाजो, दसमी का करो एकासण ओ राधा नार।
ग्यारस के करो निराहार, बारस पालणे झूलजो ओ राधा नार।
बायां ने चुड़ला चिरावजो ओ भगवन, गजराने लूम देवाड़जो जी।
केसरिया ने कोर देवाड़जो जी, ग्यारस हमसूं ना सदे जी।
भगवन दसमी का करो एकासणा, बारस के पालणे झुलजो हो राधा नार।
म्हारा पगल्या ने पायल घड़ावजो जी भगवन, उंगली ने बिछिया घड़ावजो जी।
घुंघरु ने रतन जड़ाजो, ग्यारस म्हांसू नी सदे जी।

मालवी नारी की आसक्ति अपने आभूषणों में अधिक प्रतीत होती है। इसीलिये वह भगवान से प्रार्थना करती हुई कहती है कि- हे भगवन! ग्यारस का व्रत तो बहुत कठिन है। वह तो मुझसे सधता नहीं, क्योंकि इस दिन निराहार रहना पड़ता है। हे भगवन! आप मुझ पर कृपा

करें और मेरे सिर के लिए भम्मर, वक्ष के लिए हंसली, ललाट के लिए रखड़ी, बाँहों के लिए चुड़ला और लूमवाला गजरा, शरीर पर केशरिया साड़ी, पाँव के लिए पायल और अंगुलियों के लिये घुँघरू वाले बिछियाँ, अणवट घड़वा देना। मैं दसमी को एकासना करूँगी, ग्यारस को निराहार रहूँगी और बारस के दिन पालने में झूलूँगी।

निर्जला एकादशी को बड़ी ग्यारस के रूप में माना जाता है। इस दिन तो स्त्री-पुरुष जल भी ग्रहण नहीं करते। मालवा में इस दिन बड़ी ग्यारस गाई जाती है। गीत इस प्रकार है-

मूँ तोंये पूछूँ सीता जानकी, कोन सो बरत बड़ो केवाय हो?
बरत में ग्यारस बोत बड़ी, अर बड़ो हे रे परदोस,
कर म्हारा जीवड़ा एकादसी, अपणी काया को उद्धार करो।
मूँ तोये पूछूँ सिया जानकी, भोजन तो बड़ो रे केवाय।
भोजन में तो चावल बड़ा, जी कंई ओर रे बड़ी जुआर।
मूँ तो पूछूँ सिया जानकी, बड़ा तो बड़ा ही केवाय।
कपड़ा में भिकारी बड़ो, ने रोधे जी को चीर,
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी, अपणी काया को करो उद्धार।
मूँ तोंये पूछूँ सिया जानकी, गेणला बड़ा रे केवाय।
गेणला में तो बेसर बड़ीजी कांई, ओर राधे जी को हार।
मूँ तोंये पूछूँ सीता जानकी, तीरथ तो बड़ो रे केवाय,
तीरथ में तो गंगा बड़ी जी कांई, सोरभ जी को घाट।
मूँ तोंये पूछूँ सिया जानकी, जी कंई धरम बड़ो रे केवाय,
धरम में धरम तो कन्या कोजी कंई, ओर गऊ को यो दान।
करो म्हारा जीवड़ा एकादसी, अपणी काया को करो उद्धार।

गीतकार सीताजी से पूछती है कि व्रतों में कौनसा व्रत बड़ा कहलाता है? सीताजी उत्तर देती हुई कहती हैं कि व्रतों में ग्यारस और प्रदोष का व्रत बड़ा होता है। एक वैष्णवी व्रत है तो दूसरा शिव भक्ति का प्रतीक है। हे मेरे जीव! एकादशी का व्रत करके अपनी काया का उद्धार कर। हे जानकी! मैं तुमसे पूँछती हूँ कि भोजन में कौन सा अन्न बड़ा कहलाता है? वे उत्तर देती हैं कि भोजन में चावल और जुवार सबसे बड़ी होती है। कपड़े में कौन सा बड़ा है? इसके उत्तर में कहा जाता है कि भिखारी का और राधेजी के पहिनने का वस्त्र बड़ा है। हे मेरे जीव! एकादशी का व्रत करके अपनी काया का उद्धार कर।

हे जानकी! मैं तुमसे पूछती हूँ कि आभूषणों में कौन सा बड़ा है? तो उत्तर मिलता है कि आभूषणों में नथ (बेसर) और राधेजी के गले का हार बड़ा है। फिर से प्रश्न किया जाता है कि तीर्थों में कौन सा तीर्थ बड़ा है, तो इसका उत्तर मिलता है कि तीर्थों में सबसे बड़ा तीर्थ गंगाजी और सौरभजी का है। हे सीता जी! आज बताईये कि धर्म में सबसे बड़ा धर्म कौन सा है? उत्तर

मिलता है कि सबसे बड़ा धर्म तो कन्या और गऊ के दान का है? हे जीव! तुम एकादशी का व्रत करो और अपनी काया का उद्धार करो।

ज्येष्ठ मास के गीत

ज्येष्ठ मास में शनिश्चरी जयंती पड़ती है, तब शनि महाराज के गीत गाये जाने की परम्परा है। इसी प्रकार गंगा सप्तमी को गंगा पूजन के गीत गाये जाते हैं। ऐसे गीतों में पथवारी माता के गीतों को भी महत्त्व प्राप्त है। पथवारी माता को लोक देवी मानकर गंगा यात्रा पर जाने के पूर्व पथ की रक्षिका देवी के रूप में इनका पूजन किया जाता है। यह पूजन प्रतीकात्मक होता है। इसी प्रकार ज्येष्ठ मास में सती एवं वट सावित्री की पूजा करके उनके सम्बन्ध में गीत गाये जाते हैं। इन्हें मालवी में 'अलूणा सोमवार' के व्रत से भी जाना जाता है। चातुर्मास के सोलहों सोमवार को व्रत रखे जाते हैं।

मिट्टी से शंकरजी का लिंग स्थापित कर उनका पूजन धूप, दीप, नैवेद्य से किया जाता है। इस दिन नई जुवार के आटे में घी-गुड़ मिलाकर चूरमा बनाया जाता है और भोग लगाया जाता है। अंत में 5 सुहागिनों को न्यौता देकर भोजन करवाया जाता है। इसे 'उजमना' (उद्यापन करना) कहते हैं। शंकर-पार्वती के नाम का एक जोड़ा भी पृथक से जिमाया जाता है। स्त्रियाँ इस पर्वोत्सव पर वट सावित्री या शंकर जी के गीत गाती हैं, जिसमें सातों सतियों का गुणगान किया जाता है,यथा-

सुणो सुवागण पति पूजा से, सतियों की फुलवारी हे।
सोम्मार का सोळा व्रत की, मईमा जग से न्यारी हे।
सती अनुसुइया के आँगन में, धर बालक का भेस,
माँ की ममता का सुख पावे, बिरमा, बिसनुं महेस,
इनी आँगण की शोभा पे, सारी दुनियां बलियारी हे,
सोम्मार का सोला व्रत की, मईमा जग से न्यारी हे।
सती सुलोचना ने लंका ती, अपणो मुखड़ो मोड्यो,
लइके पति को सीस सती ने, सत से नातो जोड्यो
अम्मर हुईगी सत मईमा से, राक्छस कुल की नारी हे,
सोम्मार का सोला व्रत की, मईमा जग से न्यारी हे।
सतवंती सीता ने सतकी, अगन परिच्छा पाई हे।
चिता वई चंदण सी सीतल, नईं लपट लेराई हे।
सतियों के ही सत से जग की, दूर वई अंध्यारी हे।
सोम्मार के सोला व्रत की, मईमा जग से न्यारी हे।
पंचाली ने भरी सभा में, पिरभु का नाम पुकारा।
मोवन चीर बढ़ावा आया, दूर कर्‌या दुख साराऽऽ।

एक सती सतका दीवा की, रच्छा की अदकारी हे।
सोम्मार का सोळा व्रत की, मईमा जग में न्यारी हे।
महासती सावितरी बोली, रूकिजा जमराज आज रूकीजा।
पिरान–पिया के छीनी ने लाई, भारत की ही नारी हे।
सोम्मार का सोला व्रत की, मईमा जन से न्यारी हे।
सती नरबदी को प्रण सुनी के, बढ़्यो नी सूरज आगे।
तीनी लोक में हुवो अंधेरो, सती रई भय त्यागे।
कोटि कोटि देवन ने जिंके, प्राण, पति के माँगे।
प्राण पति हुवो परभाव सती के, पति परमेसर जागे।
भारत की ही नारी अपणे, प्रन की पालन हारी हे।
सोम्मार का सोळा व्रत की, मईमा जग से न्यारी हे।
सती बेहुला जा पोंची थी, बिरम लोक के दुआरे।
बिसणु लोक सिव लोक सती ने, ढूंड लिये थे सारे।
प्राणनाथ के प्राण साथ ले आई, पति की प्यारी हे।
धीरज धर के सोम्मार के व्रत का, दीप जलावो।
होगो अटल सुवाग तुमारो, मन में मती घबराओ।
सोम्मार के व्रत से आवे, जीवन में उजियाली हे।
सोम्मार का सोळा व्रत की, मईमा जग से न्यारी हे।

मालवा की धर्म प्राण नारी, चातुर्मास के दिनों में अपने सौभाग्य एवं सिन्दूर की मंगलकामना, पुत्र प्राप्ति की चाह एवं धन–धान्य की अभिवृद्धि के लिये सोलह सोमवारों का व्रतोपवास करती है। भारतीय नारी जीवन में सात सतियाँ मानी जाती हैं। इनमें प्रमुख अनुसुइयाजी, सुलोचना, सीता, पांचाली, सावित्री, नर्मदा एवं बेहुला मानी गई हैं। इन्होंने अपने पति व्रत धर्म से अपने सौभाग्य की रक्षा की एवं बड़ी आपदा से अपने कुटुम्ब का रक्षण किया। इसीलिये मालवा का नारी समाज इनके महत्त्व का प्रतिपादन करने के लिये सत का आदर्श निरूपित करता है।

हे सुहागिनों! सुनो, पतिव्रत धर्म का पालन करना ही सती के लिए एक सुगंधित उद्यान के समान है। जैसे पुष्पों की सुगन्ध से सारा उद्यान सुवासित हो उठता है, वैसे ही सतियों के सत की सुगन्ध से सारा जन समाज प्रफुल्लित हो उठता है। दीर्घ जीवी हो उठता है। इसलिये सदाशिव को प्रसन्न करने के लिये सोलह सोमवार के व्रत की विचित्र महिमा का बखान किया जा रहा है। सती अनुसुइया के सत की परीक्षा लेने के लिये ब्रह्मा–विष्णु एवं महेश तीनों ही आये, किन्तु सती ने अपने सत के प्रभाव से उन्हें अपनी झोली में शिशु बनाकर सुला दिया। वे सती की गोदी में माँ की ममता का सुख प्राप्त करने लगे। सती अनुसुइया के इस ममत्व भरे आँगन की शोभा पर सारी दुनिया के लोग बलिहार जाते हैं।

सती सुलोचना ने अपने पति मेघनाथ की असामयिक मृत्यु पर लंका से नाता तोड़ दिया। सती ने अपने पति का मस्तक भगवान राम से प्राप्त करके, सत से हमेशा के लिए नाता जोड़ लिया। इस प्रकार सती सुलोचना अपने सत के बल पर अमर हो गई, जबकि वह राक्षस कुल की पुत्रवधू थी। सतवंती सीता ने भी अपने सत की स्थापना के लिये अग्नि परीक्षा दी। चिता भी उनके लिए चन्दन सी शीतल बन गई। आग की लपटें भी उनके शरीर को भस्म न कर सकी। सतियों के सत के बल पर ही इस संसार से असत्य रूपी अंधकार दूर हो सका।

पांचाली (द्रौपदी) ने भी जब अपनी इज्जत जाती हुई देखी, तब भरी सभा में अपने लज्जा निवारणहार श्रीकृष्ण का स्मरण किया। तब भगवान श्रीकृष्ण ने उनके सत का रक्षण करके सारे दु:खों का हरण किया। ऐसी सतियाँ ही अपने सत के बल पर सती के प्रतीक प्रकाश की रक्षा करने की अधिकारिणी होती हैं। महासती सावित्री इसका प्रमाण हैं। उन्होंने अपने पति के जाते हुए प्राणों की रक्षा यमराज से की।

सती नर्मदा का प्रण सुनकर सूर्यदेव का रथ भी आगे बढ़ने में समर्थ न हुआ। उन्होंने सूर्य की गति को विराम लगा दिया। जब तीनों लोकों में अंधकार व्याप्त हुआ, तब भी सती निडर एवं निर्भय खड़ी रही। समस्त देवी-देवताओं ने प्रार्थना करके उनके पति के प्राणों की सुरक्षा की। सत का ही यह प्रभाव था कि सती के पति परमेश्वर जाग्रत हुए। यह भारत की नारी के सत की ही महिमा कहिये कि जिसके कारण बड़े-बड़े देवता भी असहाय से लगने लगते हैं। सती बेहुला भी अपने पति के प्राणों को छुड़वाने के लिये ब्रह्म लोक के द्वार पर जा पहुँची। उन्होंने इसके पूर्व अपने पति को ढूँढ निकालने के लिये विष्णु एवं शिवलोक के द्वार भी खटखटा डाले थे। अन्त में ब्रह्मलोक से वे अपने पति के प्राणों को लौटा लाने में समर्थ हुईं। इसलिये भारत की महिलाओं ने धैर्यपूर्वक अपने सत के रक्षण के लिये भगवान शिव की आराधना करना प्रारम्भ किया और सोलह सोमवारों के व्रत के प्रभाव से वे घर-घर में ईश्वर नाम संकीर्तन के दीप जलाने लगीं। इस व्रत के वैभव से उनका सुहाग अटल रहा। सोमवार की व्रत कथा का यह महत्त्व है, जिसको करने से सर्वसुख सम्पदा की प्राप्ति सम्भव है।

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में प्रथम शनिवार को शनिश्चरी जयंती पड़ती है। शनिदेव के भय से सारा संसार कम्पित होता है। ये जिसे लग जाते हैं वे या तो भयंकर अनिष्ट देते हैं या जिस पर प्रसन्न हो जाते हैं, उन्हें सर्व प्रकार की सुख सम्पदा प्रदान करते हैं। अत: इनका पूजन, आराधना, पुरुष एवं नारी समाज में समभाव से की जाती है। प्राप्त गीत में शनिदेव के कृत्यों का उल्लेख मिलता है, यथा-

मेरे राम
बीत थावर ने धरती थेपाई, मोतिया रा चोक पुराया।
जमीन आसमान ने पीछे से रचिया, तो पेली पूजा तुमारी।
सनी राजा राखोनी लाजे हमारी, यां से दुनियां, यां से दुनियां।

करेजी निमणा सारी, सनी राजा सूरज के अवतारी
मेरे राम
जणनी ने जाया, उदर नूं आया, आपूं जो आप केवाया।
राणी हिरणादे की गोदी में आया, तो पुत्तर सूरज का केवाया।
सनी राजा राखोनी लाजे हमारी, यां से दुनियां, यां से दुनियां।
करेजी निमणा सारी, सनी राजा सूरज के अवतारीऽऽ।
मेरे राम।
हाथी नी चढ़िया, घोड़ा नूं चढ़िया, भेंसा की असवारीऽऽ।
भेंसा बिचारा नगरी में फिरिया, तो डरफेगी दुनियां सारी।
सनी राजा राखोनी लाज हमारी, यां से दुनियां, या से दुनियां।
करेजी निमणा सारीऽऽ, सनी राजा सूरज के अवतारीऽऽ।
मेरे राम।
राजाएं लाग्या, राणी ऐं लाग्या, तारां ने लाग्या, अंत भारी।
राजा हरिचंद ऐं ऐसा बी लाग्या, तो निज घर भरियो पाणी।
सनी राजा लाखोनी लाज हमारी, यां से दुनियां, यां से दुनियां,
करेजी निमणा सारीऽऽ, सनी राजा सूरज के अवतारी।
मेरे राम।
जमीन ऐं लाग्या, असमान ऐं लाग्या, दुनियां ऐ लाग्या अंत भारी।
चांद सूरज ऐं भी लाग्या, तो गिरण चड़्या अंत भारी।
सनी राजा सूरज के अवतारी, मेरे राम।
उज्जेणी ऐं लाग्या, सईदास ऐं लाग्या, तो राजाऐं लाग्या अंत भारी।
राजा वासक ऐं ऐसा भी लाग्या, तो तेली घर घाणी फेराई।
सनी राजा राखोनी लाज हमारी, यां से दुनियां, यां से दुनियां,
करेजी निमणा सारी, सनी राजा सूरज के अवतारी।
मेरे राम।
राम ऐं लाग्या, लछमण ऐं लाग्या, सीता ऐं लाग्या, अंत भारी।
राजा रावण ऐं ऐसा भी लाग्या, तो छन मांय लंका उजारी।
सनी राजा राखोनी लाज हमारी, यां से दुनियां यां से दुनियां,
करेजी निमणा सारीऽऽ, सनी राजा सूरज के अवतारीऽऽ।
मेरे राम।
राती जो पाग सिर पर सोवे, मोर मुगट धन धारी।
सनी राजा राखोनी लाज हमारी।
मेरे राम।

करो जो दान सनी राजा मांगे, कंचन फरे रे दुवाई।
भर भर परातां तेल की मांगे, तो याई पूजा तुमारी।
सनी राजा राखोनी लाज हमारी, यां से दुनियां, यां से दुनियां,
करेजी निमणा सारी, सनी राजा राखोनी लाज हमारी।

(स्रोत– श्रीमती अवन्ती बाई जोशी, पंडित गली, सुसनेर से साभार प्राप्त)

हे राम! आपने शनिवार द्वितीया को इस धरती की स्थापना की। धरती बन जाने पर मोतियों से चौक पुराये गये, आपने इस पृथ्वी और आसमान की संरचना तो बाद में की, किन्तु इसके भी पूर्व से ही आपकी पूजा का विधान इस पृथ्वी पर चला आ रहा है। हे शनिदेव! आप हमारी लाज रखें, आपको तो समग्र संसार के प्राणी नमन करते हैं। हे शनिराजा! आप तो सूर्य देव के अवतारी हैं।

हे राम! न तो आप किसी माँ के गर्भ से उत्पन्न हुए न ही किसी ने आपको उत्पन्न किया। आप तो स्वयंभू अवतारी हैं। रानी हिरणादे की गोदी में स्वयं अवतरित हुए हैं। इसलिये आप सूर्य पुत्र कहलाये। हे शनिदेव! आप हमारी लाज रखें। आपके सम्मुख सृष्टि के सब प्राणी नमन करते हैं। हे शनिराजा! आप तो सूर्य के अवतारी हैं।

हे राम! आपने न तो हाथी की सवारी रखी न ही घोड़े की रखी, किन्तु आपको अपनी प्रिय सवारी भैंसा ही पसन्द है। जब आपका भैंसा किसी नगरी में भ्रमण करता है, तो उससे समग्र संसार (अनिष्ट की आशा से ही) भयभीत हो उठता है। हे शनिदेव! आप हमारी लाज रखें। आपके सम्मुख तो संसार के समस्त प्राणी नमन करते हैं। आप तो सूर्य के अवतारी हैं।

हे राम! आप किसी को नहीं लगें। आप राजा को लगे (राजा और रानी होने पर भी आपके कोप से कोई न बच सकाद्ध रानी को लगें, तारामती को तो बहुत कष्ट उठाना पड़ा। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को तो आप ऐसे लगे कि उन्हें अपने हाथों दूसरों की सेवा करनी पड़ी। हे शनिराज! आप हमारी लाज रखें। आपके सम्मुख तो इस सृष्टि के समग्र प्राणी नमन करते हैं। हे शनिदेव! आप तो सूर्य के अवतारी हैं।

हे राम! आप जमीन (पृथ्वी) को लगे, आसमान का भी आपने पीछा नहीं छोड़ा। सारी सृष्टि आपके अन्तहीन भार को वहन करने में असमर्थ रही। चाँद और सूर्य भी आपकी कुदृष्टि से बच न सके और अन्त में उन्हें भी ग्रहण का दुख झेलना पड़ा। हे शनिराजा! आप हमारी लाज रखो। हमारी रक्षा करो। आपके सम्मुख तो समग्र सृष्टि नतमस्तक हो जाती है। आप तो सूर्यदव के अवतार हैं।

हे राम! उज्जयिनी जैसी पावन एवं धार्मिक नगरी को भी कष्ट उठाना पड़ा। भक्त रैदास को भी कष्ट उठाना पड़ा और राजा को तो आपकी कृदृष्टि का शिकार होना पड़ा। राजा वासुकि को तो आप ऐसे लगे कि उन्हें तेली के घर जाकर घानी चलानी पड़ी। हे शनिराजा! आप हमारी

रक्षा करें। लाज रखें। आपके सम्मुख तो सारी सृष्टि के लोग नमन करते हैं। आप तो सूर्य के अवतारी हैं।

हे मेरे राम! आप सबसे बड़े हैं। महान हैं। आप की कुदृष्टि में आने पर कोई बच नहीं सकता। यही कारण है कि आपने भगवान राम को नहीं छोड़ा। उन्हें भी वन-वन भटकना पड़ा। लक्ष्मण को ऐसे लगे कि शक्ति बाण खाकर मूर्छित होना पड़ा। सीताजी को ऐसे लगे कि अग्नि परीक्षा करनी पड़ी। राजा रावण को तो ऐसे लगे कि क्षण भर में लंका उजाड़ डाली। हे शनिराजा! आप हमारी लाज रखें। आपसे तो सारी दुनिया भयभीत है। सब आपके सम्मुख झुकते हैं। आप तो सूर्य देव के अवतारी हैं।

हे राम! आपके सिर पर लाल पगड़ी शोभा देती है। आप मुकुट धारण करने वाले हैं। हे शनिराजा! आप हमारी लाज रखें। हे राम! आप हम संसारिकों से काले दान के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते। काला लोहा, काली उड़द, काली पोशाख, काला भैंसा और समग्र वस्तुएँ काली ही आपको पसन्द हैं। कंचन रूप स्वर्ण के तो आप घोर विरोधी हैं। आपको तो प्याले भर-भर पीने के लिए मीठा तेल चाहिये। यही आपकी मन पसन्द वस्तु है, जो कोई ऐसी काली वस्तु और तिल के तेल का दान आपके नाम पर देता है, उस पर आप प्रसन्न हो जाते हैं। वास्तविकता में तो यही आपकी पूजा है। आपके सम्मुख तो समग्र संसार नमन करता है। हे शनिदेव! आप हमारी लाज रखें।

आषाढ़ मास के गीत

आषाढ़ मास में गीतों की शृँखला कुछ विस्तार पाती है। इस मास में मालवी नारियाँ जहाँ योगिनी एकादशी, कमला एकादशी पर व्रतोपवास करके गीत गाती हैं, वहीं अंगारक और संकट चतुर्थी, कालाष्टमी, दर्श अमावस्या, विनायक चतुर्थी के भी गीत गाती हैं। यदि पुरुषोत्तम मास हुआ तो भगवान विष्णु एवं उनके अवतारों के गीत गाये जाते हैं। पुरुषोत्तम मास में तुलसी के गीत बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मालवा में गाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त वर्षा ऋतु आ जाने से डेंडक माता और चौमासा के गीत मालवा में अपनी विशेषता के साथ गाये जाते हैं।

आषाढ़ सुदी एकादशी को देव सो जाते हैं। उस दिन उनको भोग लगाया जाता है। देव फिर कार्तिक सुदी एकादशी को जागते हैं। तब फिर उनकी पूजार्चना की जाती है।

आषाढ़ की पूर्णिमा को भैरू पूजे जाते हैं। इसे मालवी में 'भेरू पूजनी पूनम' भी कहा जाता है। दीवार पर सिन्दूर से भैरू की आकृति उकेरी जाती है। बाद में दाल-बाटी और लड्डुओं का भोग लगाया जाता है। भैरूजी के नाम की दस्सी (सूत्र विशेष) परिवार के सभी प्राणी धारण करते हैं। इनके गीतों को लोक देवी-देवता की श्रेणी में रखा जाता है। इसके चरित्र का सम्बन्ध भी मानव कल्याण से आँका जाना चाहिए। परिवार की सुख-समृद्धि ही इनका मुख्य ध्येय है। लोकवार्ता की दृष्टि से लौकिक मान्यताओं के कारण देवी-देवताओं के सम्बन्ध में अभिप्रायों की सृष्टि हुई है। इनमें पुराण प्रसिद्ध भैरू, शीतला, राम, कृष्ण आदि आते हैं। लोकसम्मत इन चरित्र

नायकों का दैवत्व रूप सभी प्रान्तों में बिखरा पड़ा है। पूर्व पुरुष कुटुम्ब की दृष्टि से ही दैवत्व का स्थान पा लेता है। लोक श्रद्धा उन्हें देवी-देवता के समकक्ष चित्रित देखी जाती है, क्योंकि वे भी अन्य देवताओं की भाँति स्वर्ग में निवास करते हैं।

भैरूजी की आकृति यहाँ विशेष महत्त्व रखती है। भैरूजी की कमर में बँधी घूघरमाल रुनझुन की आवाज करती है। भैरूजी के कानों में मोती शोभायमान है। सिर पर लालपाग बंधी है। हाथ में कड़े और पाँव में मोजे पहने होते हैं। मालवा की समस्त जातियों में भैरूजी के गीत गाये जाते हैं। किन्तु इनका शास्त्रों में वर्णित रौद्र रूप मालवी लोकगीतों में नहीं पाया जाता। यहाँ एक गीत अवलोकनीय है-

भेरूजी रम झम बाजे तमारा घूघरा, म्हारा आँगन बाज्या जंगी ढोल।
कलियाँ छाय रह्यो मरवो मोगरो, भेरूजी तम तो बाजोट्या का साबला।
सुतार्‌या को बेटो हाजर होय, भेरूजी तम तो कलस्या का साबला।
कुमार्‌या को बेटो हाजर होय, भेरूजी तम तो फूलड़ा का साबला।
माली को बेटो हाजर होय, भेरूजी तम को छत्तर का साबला।
सुनार्‌यां को बेटो हाजर होय, भेरूजी तम तो नारेल्या का साबला।
बाण्यां को बेटो जो हाजर होय, भेरूजी तमतो मदरा का घणा साबला।
कलाल्यांरो बेटो हाजर होय, भेरूजी तम तो पूजा का साबला।
पटेल्यां को बेटो हाजर होय।

हे भैरव देव! आपकी महिमा बड़ी प्यारी है। आपके कमर में बंधे घुँघरू रुनझुन की आवाज करते मधुर प्रतीत होते हैं। मेरे आँगन में फैले हुए मरवा और मोगरे में कलियाँ खिल जाती हैं। उससे समग्र वातावरण सुवासित हो रहा है। हे भैरूजी! आप तो बाजोट (पटिया) पर बैठने के इच्छुक हैं। आपके लिए सुतार का लड़का बाजोट लेकर उपस्थित है। हे भैरूजी! आप तो कलश (मिट्टी का पात्र) के बहुत शौकीन हैं, आपके लिये कुम्हार का लड़का कलश लेकर उपस्थित है। हे भैरूजी! आपको पुष्प बहुत प्रिय हैं। माली का बालक आपके लिए फूलों की छाबड़ी (टोकरी) लेकर उपस्थित है। हे भैरू देव! आप तो नारियल खाने के बहुत इच्छुक हैं और आपकी इच्छा की पूर्ति करने के लिए वणिक का पुत्र नारियल लेकर उपस्थित है। हे भैरव देव! आप तो मदिरा पान के बहुत इच्छुक हैं। आपकी प्रिय पेय मदिरा लेकर कलाल का पुत्र उपस्थित है। हे भैरव दैव! आप तो अपना पूजन करवाने के बहुत इच्छुक हैं और आपकी पूजन सामग्री लेकर पूजा करने के लिए ग्राम प्रमुख पटेल का बालक आपकी सेवा में उपस्थित है।

तुलसी

पवित्रता एवं मानव देह की स्वच्छता रखने में तुलसी के बिरवे का मालवा में बहुत महत्त्व है। तुलसी पुण्यप्रद, पवित्र और अनेकानेक पापों का नाश करने वाली है। यह नित्य प्रति

आने वाली आपदाओं का शमन करती है। जिस घर में तुलसी का पौधा होता है। वहाँ लक्ष्मी सदैव निवास करती है।

तुलसी के पौधे को उगाने से लेकर उसकी नित्य प्रति जल चढ़ाने, कुमकुम, अक्षत, लाल धागा चढ़ाने का उपचार भी नव-विवाहिता व कुँवारी कन्याओं द्वारा किया जाता है। लोक विश्वास प्रचलित है कि तुलसी भगवान विष्णु की अर्द्धांगिनी होने से उनकी कृपा दृष्टि रही तो घर में सुख एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। तुलसी के सम्बन्ध में मालवी में जहाँ अनेक लोक वार्त्ताएँ मिलती है, वहीं लोकगीत भी गाये जाते हैं।

एक लोकगीत में प्रदर्शित है कि इस बिरवे के बीज आषाढ़ मास में बोये जाते हैं। श्रावण में सिंचाई की जाती है। भाद्र मास में इसमें नई-नई कोपलें फूटती हैं। क्वाँर मास में इसका पौधा 'घेर घुमेर' (घना) हो जाता है। किन्तु स्त्रियों द्वारा कार्तिक मास में पूजन करने का विधान बतलाया है। अगहन मास में तुलसी का विवाह भगवान शालिग्राम के साथ करवाने का लोक रिवाज है।

यह देखकर राधा जी अपने प्रियतम कृष्ण से हँस-हँस कर पूछती हैं कि आपके हल्दी के रंग में रंगे हुए हाथ क्यों हैं। किन्तु धोबी का लड़का बड़ा चतुर है, वह श्रीकृष्ण के हल्दी रंग में रंगे वस्त्र बदल कर ले आता है। राधिकाजी फिर हँसी में कृष्णजी से इस बात का राज जानने का प्रयत्न करती हैं कि उन्होंने अपने हाथों में मेहंदी कहाँ से लगवाई है। तब कृष्ण बहाना बनाते कहते हैं कि वे बगीचे में गये थे, वहाँ भूल से केसूड़ी (पलाश) के पुष्प हाथों से लग गये और उनका गहरा रंग हाथों में लग गया है। यह देख एक पड़ोसिन राधाजी से कहती है कि- हे राधा! तुम तो बावली हो गई हो। कृष्णजी ने तो चुपके-चुपके तुलसी से विवाह कर लिया है। तब राधाजी कहती हैं कि आपने तो मुझसे बिना पूछे ही तुलसीजी से विवाह कर लिया और मेरे सामने अब बहाने बना रहे हो। तुम तो कहते थे कि मैं तो मात्र तुम्हारे सिर का ही शृँगार हूँ, किन्तु आज मालूम पड़ा कि वह बात झूठी थी। तुम तो अब तुलसी जी के हृदय के हार बन गये हो। गीत के सुन्दर बोल इस प्रकार हैं-

असाड़ मइन्ये तुलस्यांजी रो बीज बोयो।
सावण मइन्ये तुलस्यां का सींचाजी क्यारा।
भादवे मइन्ये तुलस्यां में कूंपल फूटी।
क्वांर मइन्ये तुलस्यां वई घेर घुमेर।
कातरक मइन्ये तुलस्यांजी पूजा तमारी।
अग्गण मइन्ये तुलस्यां बई को ब्याव।
राधे रानी हरिसे हँस पूछे बात।
हल्दी में कपड़ा कायां से रंग्या जी।
धोबीडारों लड़को घणो होंशियार।

हरीजी का कपड़ा बदल घरे लाया।
परभूजी का कपड़ा बदल घरे लाया।
राधे रानी बूजे हरिसे हँसके जो बात।
हाथां ने मेंदी कायां से लगाई जी।
बाग गयो थो राधा बगीचा गयो थो।
केसूड़्यां रा पान हाथां सूं लग गयो।
एक पाड़-पड़ोसण राधाजी सूं बोली।
गेला होया राधेजी तम बावला जी।
थांके छानां-छानां करलियो ब्याव।
तुलस्यां रे वणंने ब्यईलीवी जी।
राधे रानी बूजे हरिजी सूं बात।
म्हाके छानां छानां थांने तुलस्यां से,
करी लियो जी थांने ब्याव।
थें तो राधेजी म्हांका शीश को सिणगार।
तुलस्यांजी तो म्हाका हिवड़ा रो हार।

दूसरा एक और गीत अवलोकनीय है। इसमें तुलसी और भगवान शालिग्राम का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध बतलाया गया है। यथा–

कायां तो बोऊ तुलसीजी ने, कायां सूं बोलूं मूँ तो राम।
कायां सूं बोलूं सिया सालग राम।
आंगण बोऊं तुलसी ने, मुख से तो बोलूं सालग राम।
हिरदे बसाऊं सिया-सालग राम।
घड़ियक बिसरूं सिरी ठाकुरजी को नाम।
पलकन बिसरूं सिरी रामजी को नाम।
नोकर चाकर म्हारे बोत गुलाम।
घड़ी पड़े जदे एक नी आवे काम।
तुलसीदास आस रघुबर की।
सिया की खबर लेई आये हनुमान।
लंका की खबर लई आये हनुमान।
कायां बोलूं तुलसी ने कायां बोलूं राम?
कायां बसाऊं मूं तो सालगराम।

तुलसी को कहाँ बोया जाये? सीता राम को कहाँ बसाया जाये? इसका उत्तर देती हुई कहती हैं कि तुलसी को आँगन में बोना चाहिए और मुख से सिया राम का उच्चारण करना चाहिये। हृदय में शालिग्राम का ध्यान करना चाहिये। एक घड़ी के लिये भी ऐसे ठाकुरजी का

नाम विस्मरण नहीं करना चाहिये। एक पल के लिये भी राम हमसे विलग नहीं होने चाहिये। चाहे घर में कितने नौकर, चाकर और गुलाम क्यों न हों, वे समय पड़ने पर कोई काम नहीं आते।

तुलसीदास के लिये तो मात्र आशा के केन्द्र बिन्दु भगवान श्रीराम ही हैं। हनुमान जी सीताजी की खुश खबर लेकर आ गये हैं।

देव शयनी एकादशी के उपरान्त मालवी स्त्रियाँ चातुर्मास में तुलसी का व्रत रखती हैं। आषाढ़ मास के रविवार को तुलसी का व्रत रखा जाता है। तुलसी की पूजा करके वार्त्ता सुनी जाती है। गीत गाये जाते हैं। कीर्तन किये जाते हैं। पूजन में हल्दी, चने की दाल, मेहंदी, लाल धागा व अक्षत और प्रसाद का उपयोग किया जाता है। सौभाग्य की कामना के लिये ये व्रत किये जाते हैं। मिट्टी के बने 'घड़े-बेवड़े' भरे जाते हैं। हाथी की रात जगाई जाती है। इसमें रात-रात भर तुलसी के क्यारे की पूजन की जाती है। प्रात:काल बेहड़े सौभाग्यवती महिलाओं को दे दिये जाते हैं। तुलसी की महिमा में एक और गीत देखिये-

म्हारा आँगणियां में तुलसी रो, रूख प्यारो लागे जी।
आँगणियो म्हारो आँगणियो, सुसराजी ने तुलस्यां रो बड़लो बोयो।
म्हारी सासूजी ने सीचों ठंडो नीर, प्यारो लागे आँगणियो।
जेठजी ने तुलसी रो बड़लो बोयो, म्हारी भाबी जी ने सींचो ठंडो नीर।
प्यारो तो लागे आँगणियो, देवरिया ने तुलस्यां रो बड़लो बोयो,
म्हारी देवराणी ने सींचो ठंडो नीर, प्यारो तो लागे आँगणियो,
म्हारा नणदोई सा ने तुलस्यां रो बड़लो बोयो, म्हारी बाईसा ने सींचो ठंडो नीर,
प्यारो तो लागे आँगणियो, पड़ोसी ने तुलस्यां रो बड़लो बोयो।
म्हारी पड़ोसण ने सींचो ठंडो नीर, प्यारो तो लागे आँगणियो।

मालवी नारियाँ अपने आँगन के क्यारे में बोया गया तुलसी का बिरवा देख-देखकर अपने को कृतार्थ समझती हैं। वह घर ही क्या, जिसमें तुलसी का बिरवा नहीं। हर हिन्दू गृहस्थ के घर-घर में आज भी तुलसी की पूजा होती है। एक सौभाग्यवती स्त्री अपने घर में बोये तुलसी के पौधे का प्रशस्ति गान करती हुई कहती है- मेरे घर के आँगन में तुलसी का पौधा बहुत प्यारा लगता है। मेरे ससुरजी ने इसे बोया और सासुजी ने शीतल जल से उसे तृप्त किया है। मेरे जेठजी ने तुलसी का बिरवा बोया और जेठानी जी ने शीतल जल से उसे सींचा है। मेरे देवरजी ने तुलसी का बिरवा बोया है और देवरानी ने उसमें शीतल जल सींचा। मेरे ननदोईजी ने आँगन में तुलसी का बिरवा बोया और ननद ने शीतल जल सींचा। मेरे घर के क्यारे में खड़ा तुलसी का बिरवा बड़ा प्यारा लगता है।

एक और गीत अवलोकनीय है-

म्हूं थांने पूछू हो तुलस्यां राणी, थांका बीज कणी ने बोया हो राम।
सिरी किसनजी घरे राधा रूकमण नार, उणांने म्हाका बीज बोया हो राम।

म्हूं थांने पूछूं हो तुलस्यां राणी, थांने कितरा बरत करिया हो राम?
सावण में म्हने साग नी खाई, भादव में दूद-दईं छोड़या हो राम।
क्वांर में म्हने खीर नूं खाई, कातरक कातरक, न्हाई हो राम।
अग्गण में म्हने अगनी नूं तापी, पोस अलूणा करिया हो राम।
माह में महादेवजी जनम्यां, फागण पावां रमिया हो राम।
चेत में म्हने गणगौर हो पूजी, बेसाग बड़ पीपल सींचा हो राम।
जेठ में ठंडी लेरा आई, असाड़ में बरखा होई ओ राम।
इतरा बरत कर्‌या म्हारी सइयां, जदे किसन सा वर पाया हो राम।

हे तुलसी रानी! मैं तुमसे पूछती हूँ कि तुम्हारे बीज किसने बोये? श्रीकृष्ण के घर राधा रुक्मिणी जैसी स्त्रियाँ हैं, उन्होंने ही हमारे बीज बोये हैं। हे तुलसी रानी! मैं तुमसे पूछती हूँ कि तुमने कितने व्रतोपवास किये हैं? तुलसी रानी कहने लगी- मैंने श्रावण मास में सब्जी नहीं खाई, भादों में दूध-दही खाना छोड़ा, क्वाँर मास में मैंने खीर का सेवन नहीं किया। कार्तिक मास में पूरे मास स्नान किया। अगहन मास में अग्नि का ताप नहीं तापी। पौष मास में अलूना भोजन किया। माघ मास में महादेवजी ने जन्म लिया। फाल्गुन मास में वे अपने पैरों पर चलना सीखे। चैत मास में मैंने गणगौर का पूजन किया। बैसाख मास में मैंने बड़ पीपल की सिंचाई की। ज्येष्ठ मास में तब वहाँ बड़ी ठंडी बयार चली। आषाढ़ मास में जब वर्षा ऋतु आई, तब मैंने सब प्रकार की सुख सम्पदा का आनन्द लिया। इतने कठोर व्रत करने पर - हे सखी! मैंने भगवान कृष्ण सा वर अपने लिये प्राप्त किया।

एक और तुलसी से सम्बन्धित लोकगीत यहाँ दिया जा रहा है-

सखी री म्हने किसन लियो हे मोल,
छाने नई लियो म्हने चुपके नी लियो।
लियो हे घूंघट खोल। सखी री .....
लियो हे तराजू तोल।
सखी री म्हने किसन लियो हे मोल।
काय की डांडी ने काय को पलवो?
कायसे हुवो पूरो तोल?
सोना की डांडी ने रूपां को पलवो,
चाँदी भी चढ़ गई, सोनो भी चढ़ गयो।
तोइनी हुवो पूरो तोल, सखी री म्हने किसन लियो हे मोल।
एक पत्तर तुलसी को चढ़ायो।
तो हो गयो पूरो तोल।

(स्रोत-सुश्री रुक्मिणी, पंचोली, खेरिया ग्राम के सौजन्य से प्राप्त)

हे सखी री! मैंने तो कृष्ण कन्हैया को मोल ले लिया है। मैंने तो उन्हें चुपके-चुपके से लिया है, नहीं पीछे-पीछे लिया है। मैंने तो घूँघट हटाके और तराजू में तौल के लिया है। यदि कृष्ण को मोल-तोल करके खरीदा है, तो बताओ किस प्रकार? पूछती हैं - तराजू की डंडी कैसी है? पलवा कैसा है? और कृष्ण का पूरा तौल किस प्रकार हुआ?

हे सखी! मेरी तराजू की डंडी सोने की बनी है, पलवा चाँदी का बना है। श्रीकृष्ण का तौल करने के लिये मैंने अपने घर का सब सोना-चाँदी चढ़ा दिया फिर भी उनका तौल नहीं हुआ। हे सखी! जब सोना-चाँदी चढ़ाने पर भी श्रीकृष्ण का भार कम न हुआ तो मैंने भार बराबर करने के लिये ज्यों ही तुलसी का एक पत्ता तराजू में बाट के स्थान पर रखा, वैसे ही तराजू के पलड़े सम पर आ गये, और इस प्रकार तौल करके मैंने कृष्ण को मोल लिया। इस गीत में श्रीकृष्ण भगवान को तुलसी से तौलकर तुलसी की महत्ता का दिग्दर्शन कराया गया है।

भक्त एवं सन्त कवि तुलसीदास जी का जन्म चाहे श्रावण शुक्ल सप्तमी को हुआ हो, किन्तु उन्हें वैराग्य कब उत्पन्न हुआ। इसकी प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। तथापि आषाढ़ मास में आद्रा नक्षत्र लगने पर,पत्नी के पीहर होने से, वे उन्हें लाने अपनी ससुराल गये होंगे। उनके ससुराल गमन एवं वैराग्य भाव उदय का सुरुचिपूर्ण चित्रण इस लोक गीत में हमें मिलता है-

भजो मन तुलसी सीता राम कहो रे,
दन ऊगो दीवाण जो तुलसी,
सोच करे मन मांई।
गायां बछड़ा बूर खड़क में,
सोटो ले, ससुराल चल्या हे।
भजो मन तुलसी......
आगे नदिया में एक मुरदो आयो,
उणी पर बैठ तुलसी पार गया हे।
मेलां के पास खड़े हें तुलसी,
दरवाजा नाही मिले हें।
खिड़की में एक सरप लटकर्‌यो,
उनीयें पकड़ तुलसी सेज चड़्या हे।
इतनी प्रीत पिया हमसे राखी,
प्रभु से क्यो नंई राखी?
जाय उत्तर बैकुण्ठां मांही,
वई तो हरि का दरबार लग्या हे।
तू तिरिया, म्हारी धरम की माता,
तू ने ई ग्यान बतायो।

अब तो तिरिया तेरी सेज न चडूं रे।
तुलसी दास आस रघुवर की।
हरि चरणां बलियारी।
तुलसी दास भजो भगवाना,
वहीं तो हरि का दरबार लग्या हे।

तुलसीदास जी अपने मन में भगवान श्रीराम का स्मरण कर रहे हैं। प्रातःकाल होते ही वे अपने मन में बड़ा सोच करते हैं। सोच इस बात का कि उनकी पत्नी रत्नावली पीहर चली गई हैं। तब उनका मन स्थिर नहीं रह पाता। वे अपनी गायें और बछड़ों को गौशाला में बंद करके, हाथ में सोटा (लकड़ी) लेकर ससुराल को चल देते हैं। आगे देखा – नदी पूर जा रही थी। तब उन्हें चिंता हो जाती है कि नदी पार कैसे करें? और किस प्रकार अपनी ससुराल पहुँचे। क्योंकि उनकी प्रियतमा तो ससुराल में ही थी।

उसी समय क्या देखते हैं कि नदी में एक मुर्दा बहता चला आ रहा है। वे उस पर सवार हो गये और नदी पार पहुँचे। नदी पार ही उनके श्वसुर का भवन था। वे महल के पास खड़े हो द्वार खुलवाने का प्रयत्न करते हैं। किन्तु अतिवृष्टि के कारण कोई दरवाजा नहीं खोलता। तुलसीदास जी को इतना सब्र नहीं होता। वे धैर्य खो बैठते हैं। ऊपर खुली खिड़की में एक सर्प लटका होता है, जिसे वे भ्रमवश रस्सी समझ लेते हैं और उसी के सहारे खिड़की के रास्ते अपनी प्रियतमा के कक्ष में पहुँचते हैं। रत्नावली जब अपने प्रियतम का अधैर्य देखती है तो फटकारती हुई कहती है– हे प्रिय! जितना प्रेम आप मुझसे करते हैं, उतना यदि प्रभु श्रीराम से करते तो आपका उद्धार हो जाता। इतना सुनते ही वे अपने हृदय में प्रभु श्रीराम का चिन्तन करते हैं और प्रभु के ध्यान में लीन हो जाते हैं। जब लौटने लगते हैं, तब पत्नी को सम्बोधित करते हुए कहते हैं– प्रिये! तुमने सच ही कहा है। तुम आज से मेरी धर्म पत्नी नहीं, मेरी धर्म माता हो गई हो। मैंने जब तुम्हें धर्म माता का संज्ञा दे दी है, तो तुम्हारी सेज (शैय्या) पर कभी पैर न रखूँगा। ऐसा कह तुलसीदास पुनः अपने घर लौट आते हैं। और प्रभु के श्रीचरणों में लीन हो जाते हैं। उन हरिचरणों को धन्य है, जिनकी कृपा से तुलसी–तुलसी न रहकर तुलसीदास हो गये।

श्रावण मास के गीत

श्रावण मास मालवी नारियों के लिये हर्ष और उल्लास का संदेश वाहक बनकर आता है। इस मास के गीतों में हर्ष, उल्लास, मान – विरह एवं संयोग के चित्र मुखरित हुए हैं। वैसे भी श्रावण मास में संकट चतुर्थी, हरियाली अमावस, कजरी तीज, नागपंचमी, शीतला सप्तमी, दुर्गाष्टमी, पुत्रदा एकादशी जैसे त्योहार आते हैं। इनमें व्रतोत्सव भी मनाये जाते हैं। चौमासा के गीतों में, विशेष कर नारी जीवन के उल्लासमय गीतों में हिंडोला या झूले के गीत, शृँगारपरक गीत, सायब–गोरी संवाद, पपइया के गीतों का बहुत महत्त्व है। जब रक्षाबन्धन का त्योहार आता है, तो स्वाभाविक रूप से एक बहिन अपने पीहर जाने के लिए अपने भाई की प्रतीक्षा करती है, यथा–

राखी को दन आवियो, वेगा आवो रे म्हारा वीर।
कसे आऊँ म्हारी बेनुंली, आड़ी सिपरा पूर।
सिपराएँ चढ़ावो दूणो कापड़ो, उतरी आव म्हारा वीर।
लाडूं ने पेड़ा दई भेजूं, जीमता आवो म्हारा वीर।

हे भाई! रक्षाबन्धन का दिन समीप आ गया। हे भाई! तू मुझे लिवाने कब आ रहा है। भाई कहता है- हे बहिन! मैं कैसे आऊँ, राह में जो क्षिप्रा नदी पड़ती है, वह पूर जा रही है। बहिन उत्तर भेजती है- हे भाई! सिपरा माता की कंचुकी के लिये कपड़ा भेंट कर दो, वह तुम्हें निकलने के लिये मार्ग दे देंगी। तब शीघ्र नदी पार करके तुम मुझे लेने आ जाना। मैं तुम्हारे मार्ग में खाने के लिए लड्डू, पेड़ा भिजवा रही हूँ। हे मेरे भाई! तुम खाते-पीते मुझे लेने के लिए चले आओ।

हिंडोला या झूला गीत

श्रावण मास मालवी नारियों के लिये विशेष उल्लास का मास है, खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों में दूर-दूर तक हरियाली दृष्टिगत होती है, वहीं नारी जीवन की प्रसुप्त नसों में नवजीवन का संचार करती है। यह महीना मालवा में हिंडोला गीतों के लिए प्रसिद्ध है। अपनी सम वयस्क सखियों के संग झूले के आरोहण-अवरोहण में, लयबद्ध रूप में एकल या समवेत स्वरों में जब मालवें की नवोढ़ा वधुएँ, ज्ञात-अज्ञात यौवनाएँ तथा कुछ अधिक वय की प्रौढ़ाएँ अपने कोकिल कंठों से हिंडोले के गीत गाने लगती हैं, तब लगता है श्रावण की फुहारें उनके अन्तर्मन को भिगो गई हैं। ग्राम-ग्राम के बाग-बगीचों में तब हिंडोले डलना प्रारम्भ हो जाते हैं। ग्राम ललनाएँ, संभ्रान्त नारियों के ठट के ठट झूला-झूलने के लिए उमड़ पड़ते हैं। इस आनन्ददायक ऋतु में बालाओं, नवोढ़ाओं और प्रौढ़ाओं के कल कंठों से गीतों की अजस्त्रधारा फूट पड़ती है। कजरी के गीत, सावन के गीत, राखी के गीत, ख्याली गीत तथा हरियाली अमावस्या (गोदिया) के गीत समय-समय पर अविरल गति से गाये जाने लगते हैं। इन गीतों में नायिका का नायक के प्रति प्रेम, उपालम्भ, सखियों से नायक की करतूतें, प्रेमी-प्रेमिकाओं की श्रृँगारिक भावनाओं की प्रगल्भता आदि के अनेक चित्र बरबस ही हमारे हृदय में श्रृँगार (प्रेम) वात्सल्य एवं शान्त रसों की उद्‌भावना कर देते हैं।

वर्षा गीत, सावन के गीत या हिंडोला गीतों की परम्परा अनादि काल से प्रवहमान है। कृष्ण भक्ति के अष्टछापी कवियों ने कृष्ण की सेवा के निमित्त वर्षा ऋतु में हिंडोला शयन करवाने की परम्परा कायम की थी। मालवा में जहाँ राम भक्ति को महत्त्व मिला है, वहीं कृष्ण भक्ति का विकास भी हुआ है। पुष्टि मार्ग की एक पीठ बड़ौदिया और दूसरी उज्जैन के सांदीपनि आश्रम में है। श्रीममद्‌भागवत एवं तत्पश्चात् रीतिकाल में झूला-झूलने की परम्परा अबाध गति से चलती ही रही। इस विषय पर कवित्त, सवैया तथा दोहा छंदों में लिखा गया, जिसमें श्रृँगार रस की नदियाँ अपने उघाम वेग में प्रवाहित की गई। बिहारी की नायिका तो 'चढ़ी हिंडोरे सो रहे

लगी उसासन साथ' में ऊहात्मकता आ गई है। किन्तु मालवी का मार्दव देखिये-

सासरे के अवगुंठन भार में दबी एक बहिन श्रावण मास के आते ही अपने बीरा के आगमन की प्रतीक्षा में चौराहे पर 'बाट जोहती' रहती है। अपने माता-पिता, भाई-बहिन से मिलन की उत्कण्ठा से ही उसका खान-पान छूट जाता है। किन्तु 'कजरी' व्रत की समाप्ति पर पुनः अपने 'सायब' (पति) के आगमन के औत्सुक्य को भी वह दबा नहीं पाती और अपने लोकगीतों में वह हृदय की भाव व्यंजना को प्रकट कर ही देती है।

श्रावण मास में 'हीवड़े' (हृदय) को हुलसित करने वाली 'सीरी-सीरी' हवाएँ चलने लगती हैं। ऐसे मौसम में नायिका का पति सुदूर चला गया हो तो उसके अन्तर की कसक को उस तक कौन पहुँचाये? नायिका के लिये यह मास तो श्रृँगार मास का प्रतीक है। वह अपने माथे पर 'भम्मर' व 'रखड़ी' (सिर का आभूषण) जड़वाने की कामना करती है। नाक में बेसर, देह पर केशरिया फूलवाला लुगड़ा, कलाईयों में चमकता चुड़ला (चूड़ा), रत्न जड़ित गजरा, पाँवों में पायल तथा अँगुलियों में बिछिया पहनने को उत्सुक होती हैं। किन्तु उसके सायब प्रवास से अब तक नहीं लौटे। ऐसी परिस्थिति में विरह-मिलन के मिश्रित भाव उसके हृदय से मुखर हो उठते हैं। एक गीत देखिये-

पायल तो धँस गई म्हारी कीच में जी कंई?
बिछिया तो घुस गई बालू रेते ऐ ऐ।
अबे घरे आजा गोरी का सायबा जी ई ई।
माथा में भम्मर घड़ावे जो जी म्हारी ई ई।
रखडी रतने जड़ावजो जी ई ई ई।
अबे घरे आ जाओ गोरी का सायबा जी ई ई।
मुखड़ा ने बेसर घड़ावेजी जी म्हारा।
मोती से रतन जड़ावजो जी ई ई ई।
अबे घरे आ जाओ गोरी का सायबा जी ई ई।
अंग ने सालूड़ो रंगविजोजी म्हारे
केसरियां फूल जड़वाजो जी
बइयां ने चुड़लो चिरायलोजी म्हारे
गजरा रतने जड़ावो
पगल्या ने पायल घड़ावजो जी म्हारे
बिछिया में घुंघरू डलाव जो जी
अबे घर आ जाओ गोरी का सायबा जी ई ई।

सम्पूर्ण मालवा में कजरी तीज का व्रत एवं त्योहार सुहागिनों के लिये आनन्द एवं उल्लास का प्रतीक है। इस दिन बाग बगीचें में 'अमुआ' (आम) की डारी (डाली) पर झूले डाले जाते

हैं। वहीं नवोढ़ाएँ, प्रौढ़ाएँ, बालाएँ अपनी-अपनी गोठ (भोज) का आयोजन भी करती हैं। विभिन्न पकवानों की सुगन्ध से वन प्रान्तर सुवासित हो उठता है। नारियाँ सोलह श्रृँगारों से युक्त हो हिंडोला झूलना प्रारम्भ कर देती हैं। गीत (माड़ राग में) अवलोकनीय है-

आई आई सावणिया री तीज, सावणियां री तीज।
गोरी ने मांड्यो यसनो जी म्हांरा राज।
लावां लावां दखण्यां रो चीरे, दखण्यां रो चीरे।
कोटा से लावां चूनड़ी जी म्हांरा राज।
नईं तो ओढ़ा दखण्यां रो चीरे।
नई तो ओढ़ा चूनरी जी म्हांका राज।
लावां-लावां रेसम डोरे, हो रेसम डोरे।
झूलो तो बांध्यो आमला री डारे।
झूलेगी बड़ा घर की नार, जी म्हारा राज।
टूटी टूटी अमला री डारे, अमला री डारे।
गोरी की टूटी फांसली जी म्हाका राजे।
लावो-लावो अरण्ड्या रा पाने, अरण्ड़या रा पाने।
गोरी की सेको फांसली जी म्हाका राजे।
धोलो घोड़ो पातरियो असवारे, हांजी असवारे।
कोटा से लायो बेदजी म्हांका राज।
ढर्-ढर् रोवे बईजी रा बीरे, ओ बाईजी रा बीरे।
नाड़ी तो देखे बेदजी म्हांका राजे।

इस गीत में पति उपेक्षिता नारी के श्रृँगार प्रसाधनों में कमी आ जाती है, तो वह मानिनी नायिका 'अटवा-खटवा' लेकर रूस (रूठ) जाती है। उसकी सखियाँ हिंडोलों पर सवार हो अपनी रूठी सहेली को मनाने के लिये झूला झूलने को तैयार कर लेती हैं। नायिका जैसे ही झूलना प्रारम्भ करती है कि आम की डाली टूट जाती है। गोरी गिर पड़ती है और उसकी पसली टूट जाती है। रंग में भंग हो जाता है। सहेलियाँ उसे एरण्ड के पत्तों से सेंकती हैं। नायिका का भाई उसकी चिकित्सा के लिए कोटा से वैद्य बुलवाता है। अपनी रूठी गोरी की यह दुर्दशा देख भाई की आँखों में अश्रुधारा प्रवाहित हो उठती है।

सदियों से मालवा का राजस्थान एवं गुजरात से पारिवारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है। एक स्थान से दूसरे पर आवागमन, नाते-रिश्ते तथा वस्तुओं के विनिमय से तीनों प्रदेश आबद्ध रहे हैं। मालवा में जनजातियों का आवागमन भी इन दोनों प्रदेशों से होता रहा है। राजस्थान में भी तीज के अवसर पर महिलाएँ इसी प्रकार झूले झूलती एवं गीत गाती हैं। पीहर में जाने पर भाई अपनी बहिन के लिये बागों में झूले डलवाता है, यथा-

हांजी म्हारा सायबा, इण सरवरियारी पाळे।
हिंडोलो राजन धालद्यो जी म्हारा राज।
हीडलौ हांजी म्हारा सायब, डीडैगी घर की नार झोंटा दें,
झोटा दे गोरी को सायबों जी म्हारा राज।

यह गीत लम्बी ढाळ में ही गाया जाता है। इसकी प्रत्येक कड़ी में एक ही शब्द की तीन बार आवृत्ति होती है।

(डॉ. मनोहर शर्मा,लोकसाहित्य की सांस्कृतिक परम्परा : पृ-119)

पपइयो (बायला के प्रतीक रूप में)

जहाँ स्त्री पुरुषों के निश्छल प्रेम प्रसंगों के गीत मालवा में गाये जाते हैं। वहीं प्रेमी-प्रेमिका के खण्डित, नायिका के सुरुचिपूर्ण चित्र भी उपलब्ध होते हैं, एक प्रेमिका अपने प्रेमी (बायला) को विभिन्न स्थानों पर मिलने के लिए संकेत देती है। बाग में, पनघट में, नदियों के किनारे, गलियों में, यहाँ तक कि निजी शयन कक्ष में भी मिलन के लिये आंमत्रित करती है। किन्तु प्रेमी अपनी परिणिता के प्रति एकनिष्ठ प्रेम का पक्षपाती है। वह मिलन में अपनी असमर्थता व्यक्त करता है। नायिका को यह भी उपदेश देता है कि उसका वंश विवाहित से ही चल सकता है। परकीया से नहीं। गीत की भाव व्यंजना इन कड़ियों में मुखर हो उठी है-

बायला म्हारा, बांगा आजोजी, मूं बागां फिरूं अकेली ई ई।
पपइयो बोल्यो जी।
बायला म्हारा पनघट आजोजी, म्हूं पनघट फिरूं अकेली ई ई।
पपइयो बोल्यो जी।
बायला म्हारा नदियां आजोजी ई ई।
म्हूं नदियां फिरूं अकेली ई ई ई।
पपइयो बोल्यो जी।
बायला म्हारी गलियां आजोजी, म्हूं गलियां फिरूं अकेली ई ई ई।
पपइयो बोल्यो जी ई ई।
बायला म्हारा मेलां आजोजी, म्हूं मेलां फिरूं अकेली ई ई ई।
पपइयो बोल्यो जी ई ई।
बायली म्हारी किस बिद आवां जी ई ई ई, म्हारी परनी नार अकेली ई ई ई।
पपइयो बोल्यो जी ई ई।
बायला थारी परणी मरजो जी ई ई, म्हूं संजा फिरूं अकेली ई ई ई।
पपइयो बोल्यो जी ई ई।
बायली म्हारी थेंई मरजो जी, म्हारी परणी बंस बढ़ावे ऐ ऐ ऐ
पपइयो बोल्यो जी ई ई।

कई लोकगीतों में गृहस्थ जीवन के बहुरंगी चित्र उकेरे मिलते हैं, जिनमें कहीं नायिका अपने को संयुक्त परिवार से पृथक रखने की आकांक्षा करती है, तो कहीं पति-पत्नी के झगड़े के कारण पीहर भाग जाने की धमकी देने लगती है। कहीं पीहर से ससुराल आने के बाद अपने पति की कंजूसी तथा मितव्ययिता से तंग आकर उपालम्भ देने लगती है। ऐसे गीत, ख्यालों की रंगत में गाने की प्रथा है, यथा-

राजा पियरिया से लाये मीठा बोल बोल के।
राजा घर में बोले हे छोड़ा छोल छोल के।
राजा भंवर बनाते सोना तोल तोल के।
राजा हंसज बनाते सोना तोल तोल के।
राजा घर में बोले हे छोड़ा छोल छोल के।
राजा सालूड़ा मोलाते सोना तोल तोल के।
राजा चूनड़ी मंगाते सोना तोल तोल के।
राजा चुड़ला मंगाते सोना तोल तोल के।
राजा घर में बोले हे छोड़ा छोल छोल के।

कुछ एक गीतों में नायिका अपने नायक के परकीया प्रेम से कुंठित हो, किस्मत को कोसती सी प्रतीत होती है। यथा-

क्या करूं किस्मत बुरी हें, दिन बुरे आने लगे हें।
हात में साबन लिये, रंडी के घर जाने लगे हें।
न्हाते न्हीलाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगे हें।
हाथ में दोना लिए रंडी के घर जाने लगे हैं।
जीमते-जिमाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगे हें।
हाथ में शरबत लिए रंडी के घर जाने लगे हें।
पीते पिलाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगे हें।
हाथ में बीड़े लिये रंडी के घर जाने लगे हें।
चाबते चबाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगें हें।
हाथ में बिस्तर लिये रंडी के घर जाने लगे हें।
सोते सुलाते हमने देखे, फिर कसम खाने लगे हें।

इसी प्रकार का एक गीत और प्रस्तुत है, जिसमें पत्नी अपने पति के परकीया प्रेम से अत्यन्त दुखी है। अपने पति के नित-प्रति घर से बाहर रहने के कारण वह शंकित है। वह बार-बार अपने पति से बाहर रहने का कारण पूछती है, किन्तु हर बार पतिदेव अपने सास-ससुर, काकी, भाभी, साली आदि की कुशल क्षेम पूछने का बहाना बनाकर पत्नी को यह विश्वास दिलवाने का प्रयत्न करते हैं कि ये उसके ससुराल पक्ष के बड़े हमदर्द हैं। किन्तु स्त्री के शंकालु हृदय से पीड़ा के ये बोल फूट पड़ते हैं-

राजा कां गये थे, तुमरे बगले के खुल्ले किंवाड़।
रात गोरी वां गया था, तुमरी माता की तबीयत खराब।
राजा झूठ मत बोलो, तुमरे घर में पराई हे नार।
झूंठ गोरी मत बोलो, सिरहाने टंकी हे तलवार।
मारते क्यों नई हो, मरने को खड़ी हूं तयार।
रात राजा कां गये थे, तुमरे बंगले के खुल्ले किंवाड़।
रात गोरी वां गया था, तुमरी काकी की तबीयत खराब।
राजा झूठ मती बोलो, तुमरे घर में पराई हे नार।

गीत के बोल ऐसे ही नाम लगा- लगाकर बढ़ाये जाते हैं। संवादात्मक शैली में प्रस्तुत गीत में लोक जीवन की सरस झाँकी का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया गया है। जब मानिनी नायिका को उसकी सहेलियाँ कहती हैं, तब पत्नी अपने पति की करतूतें बखानती हुई सखियों से कहती है- तुम्हें मालूम नहीं 'वह' मेरे लिये तो कुछ नहीं लाते, किन्तु उसकी प्रेमिका के लिये सब कुछ चुपचाप ले जाते हैं, यथा-

छानां-छानां ओ भंवर जी ई ई, पागां ओ बांधे ऐ ऐ।
छानां-छानां ओ भंवर जी ई ई, मोती जो पेरे ऐ ऐ ऐ।
पेंचा संवारता गोरी ने देख्या, हां ओ म्हारा बचना का बांध्या।
भंवरजी ई ई ई, हुरड़ी सी आवे ऐ ऐ।
छानां जो छानां भंवरजी ई ई, बागां ओ पेरे ऐ ऐ ऐ।
छानां जो छानां भंवरजी ई ई, पेंचा ओ पेरे ऐ ऐ ऐ।
कसना संवारता गोरी ने देख्या, कंठ्या संवारता गोरी ने देख्या
हां ओ म्हारा बचना का बांध्या।
भंवर जी ई ई ई, हुरड़ी सी आवे ऐ ऐ।

ससुराल में आजीवन अपने कर्त्तव्य की बलिवेदी पर जीवनोत्सर्ग करने वाली मालवी नारी के जीवन में श्रावण मास जब आता है, तब हठात् अपने बचपन के अतीत की स्मृतियों में वह खोने लगती है। अपनी जन्मदात्री माता और स्नेहिल भाई के चिन्तन मात्र से उसके रोम-रोम में फुरहरी सी आने लगती है और तब एक बहिन अपने पीयरिया की बाट जोहने लगती है। वह दूर रास्ते पर अपनी निगाहें दौड़ाती है कि मेरा भाई मुझे लेने कब आयेगा? अपने बीरा की प्रतीक्षा में तब उसका हृदय गा उठता है।

ऐ मायं, एक चणों दूजी दाल, सावण बरसे जी सारी रात।
ऐ मायं कांकी बेन्यां दूर बसे, कांको बीरो लेवा जाय?
ऐ मांय चंदाबई बेन्यां दूर बसे, ने मोहनलाल जी बीरो लेवा जाय।
ऐं मांय कृष्णा बई बेन्यां दूर बसे, बिजेलाल जी बीरो लेवा जाय।
ऐं माय शोभा बई बेन्यां दूर बसे ने, शरद लाल जी बीरो लेवा जाय।

इस प्रकार गीत की कड़ियाँ बढ़ती जाती हैं और बहिन अपने बीरा के इन्तजार में पलक पाँवड़े बिछाये रहती हैं। कभी-कभी ससुराल में अपनी सास, ननद, देरानी, जिठानी तथा पड़ोसिनों के व्यंग्य बाणों से बिद्ध हो, जब उसका हृदय छलनी हो जाता है, तब अपनी जन्मदात्री माता का दुलार, भाई-बहिनों का प्यार, उसे अतीत की स्मृति में खो देता है। वह वर्तमान से अतीत की तुलना करती हुई गा उठती है-

केला रे केला - हरा रंग तेराऽ, सासजी हमारी पिसना पिसाती।
माती री ई ई ई, याद तेरी आती, जेठानी हमारी पानी भरवाती।
काकीजी म्हांके याद तेरी आती, देरानी हमारी रोटी बनवाती।
भाबी री म्हांके याद तेरी आती, ननंद हमारी झाडू लगवाती।
बेन्यां री हमकूं याद तेरी आती, पडोसण हमारी झूंठी लगवाती।
सहेल्यां बई हमें याद तेरी आती।

और जब इन व्यंग्य बाणों को सहन करने की सीमा अतिक्रमण करने लगती है, तब वह भारतीय परम्परा के अनुकूल संयुक्त परिवार से पृथक हो जाने की कामना करने लगती है। पति के पूछने पर कि घर में झगड़ा क्यों मचा रखा है? पत्नी उसका उत्तर निम्न गीत में देती है-

झगड़ा क्यूं डालाऽऽऽ, करूं जुदा की बतियां।
मेल नंई लूंगी में, अटारी नंई लूंगी।
लूंगी नंई बंगलाऽऽऽ, बड़े झरोके वालाऽऽ।
हंडा नंई लूंगी में, गगरा नंई लूंगी।
लूंगी वई लोटाऽऽऽ, बड़ी किनोंरो वालाऽऽ।
झगड़ा क्यूं, बन नई लूंगी में, बगीचा नंई नंई लूंगी।
लूंगी वई क्याराऽऽऽ, बड़े गुलाबों वालाऽऽ।
जेठ नई लूंगी में, देवर नंई लूंगी ई ई ई।
सास नंई लूंगी में, ननंद नंई लूंगी ई ई ई।
लूंगी वई सायबा, काली जुल्फों वालाऽऽऽ
झगड़ा क्यूं डालाऽऽऽ, करूँ जुदा की बतियां।

सावण मास में लगने वाली झड़ी की सिहरन, नायिका के मन में टीस उत्पन्न करने लगती है, क्योंकि उसका सायबा अन्यत्र गया हुआ है। यथा-

श्रावन बरसे सेवरो म्हांका राज, सायबा जी भादवों गिरे रे अंधेर।
केसरिया जी म्हांका राज, सायबा जी सावण बरसे अब घर आव।
चाँद तपे सूरज तपेजी, तपे कोठारी जी साह को राज।
मेलां में रान्यां तपेजी, तपे जी गोंद्यां राजकुमार।
कसूमल केसरियांजी म्हांका राज, सायबजी सावन बरसे म्हांका राज।

श्रावण में पानी के सेहरे बरसते हैं, जबकि भादव में अँधेर यानी मूसलाधार वृष्टि होती है। हे केसरिया राज! हे सायब! सूर्य तपता है। महलों में रानियाँ तपती हैं। राजकुमार भी तपते हैं। हे मेरे कसूमल केसरिया राज! ऐसे मौसम में मालवी नारी श्रावण मास के आगमन पर अपने पति के आगमन की खबर से आतुर हो उठती है।

सावणी तीज

आद्रा नक्षत्र के लगते ही वर्षा की झड़ी लग जाती है। ऐसे मौसम में नायिका गंगाराम तोते को सम्बोधित करती कहती है- हे तोते! तू उड़कर मेरे स्वामी का संदेशा ले आ। तेरे हरे-हरे पंख हैं और चोंच भी लाल है। तब गंगाराम तोता पूछता है- हे गौर वर्ण की नारी! किस वर्ण के तेरे पानी के पात्र हैं? और किस वर्ण की तेरी लम्बी रस्सी हैं? किस वर्ण की तेरे सिर पर चोमलिया है? और तेरा महत्त्व क्या है? गोरी उत्तर देती हुई कहती है- तांबा-पीतल के पात्र हैं। रेशम की लम्बी डोर है और रत्न जड़ित मेरे सिर की चोमलिया (चूमली) है और मेरा मूल्य तो लाख रुपया है।

उड़ जारे सुवा गंगाराम, खबर लइयो बालक की।
तेरी हरी पांख मुख लाल, गोरी धन काय बरन थारो बेबड़ो,
अरे काय बरन की लांबी नेज।
काय बरन को थारी सिर की चोमलिया?
काय बरन तेरो मोल, तांबा पीतल का बेवड़ा,
रेशम लांबी डोर, रतन जड़ित म्हारी सिर की चोमलिया,
अरे लाख रुपया को म्हारो मोल।

अगले गीत में नायिका श्रावण मास की तीज आने का प्रसंग उठाती हुई बगीचे में झूलने का प्रबन्ध करवाना चाहती है। वह अपने बायला (प्रेमी, नायक, मित्र) से पूछती है कि दोनों खम्ब और लाट किस वस्तु के बने हैं। तब चन्दन वृक्ष के खम्ब और चाँदी का पाटला ले आने की बात बायला कहता है। तब नायिका कहती है- इस झूले में तो घर की स्त्री ही झूल सकेगी और उसे झूले देने का कार्य सायबा करेंगे। झूले की रेशमी रस्सी टूट जाने से गोरी की चूनड़ी फट जाती है और वह रुष्ट होकर अपने पितृ गृह चली जाती है। तब सायबा उसे ढूँढने के लिये निकल पड़ते हैं। गीत की बानगी देखिये-

हारे म्हारा बायला आई आई सांवणिया री तीज
बागां में डालो हिंडोलो जी म्हारा राज।
हारे म्हारा बायला काय का लावां दोई खंब।
कायको लावां पाटलो जी म्हांका राज।
हारे म्हारा बायला चंदन को लावों म्हांके खंब।
रूपां की लावां पाटलो जी म्हांका राज।

हारे म्हारा सायबा झूलेगी घर की नार।
झूला तो देगा सायबा जी म्हांका राज।
हारे बायला टूटी या रेसम डोर।
गोरी की फाटी चूंदड़ी जी म्हांका राज।

विरहिणी के लिए यह सावन मास बड़ा दुखदायी होता है। ऐसे मौसम में यदि मोर कुहू-कुहू की आवाज निकालता है, तो वह विरहिणी के लिये कष्टप्रद होती है। क्योंकि उसका साजन तो बहुत दूर विदेश में जाकर बैठा हुआ है। श्रावण लहरा रहा है। भादवा चारों ओर से बरस रहा है। बाई गोरी अपने सासरिया में है। और कन्हैया 'बीर' उसे लेने चला जाता है। गीत की बानगी देखिये-

मोरा म्हें तने बरजियो, मत चढ़ बोल खजूर।
थारा जलहर टहूकड़े, म्हारो साजन हे दूर।
म्हूं मगरा रो मोरियो, चढ़-चढ़ चूण करांह।
सत आया नव बोलसी, सोहिया फूट मरांह।
सावण तो लहर्‌यो भादवो रे, बरसे चारूं मेर।
म्हारो मोर्‌यो तो सावण लेहर्‌यो रे, बाई गवरां सासरे।
कनइयो बीरो लेणिहार, म्हारो मोरलो सावण लेहर्‌यो रे।
सांवणियो सुरंग तोरे लाव, ओछे बीरो कनइ्यालाल पावणो,
लासी बाई गवरां के बेलदली जुपाय, म्हारो मोर्‌यो सावण लेहर्‌यो रे।

श्रावण मास में झूला झूलते समय स्त्रियाँ मनोरंजक एवं शृँगारपरक गीत गाती हैं। श्रावण मास में नीम वृक्ष में निम्बोरी नामक फल पकने लग जाता है। हे मेरे शरद भाई! तुम अपनी घोड़ी तैयार करो। तुम्हारी शोभाबाई बहिन अपनी ससुराल में प्रतीक्षा कर रही है। यदि वह झूलना चाहे तो तुम उसे झूलने देना। भाई उत्तर देता है। प्रतीक्षा कर रही है तो करने दो, मैं तो उसे इसी श्रावण मास में लाऊँगा, गीत है-

लीम की लिंबोरी पाकी, सावन मइन्यो आयो हो राज।
उठो हो म्हारा शरद भई बीरा, लीलड़ी पलाणो हो राज।
तुमारी तो सोभा बई बेन्या, सासरिया में झूले हो राज।
झूले तो उंके झूलवा दीजो, एलके सावन लावां हो राज।

श्रावण मास में मंद-मंद वृष्टि होती है। भाद्रपद में पानी की झड़ी लगती है। किसके भाई गुजरात गये हैं? बहिन उत्तर देती है- मेरा भाई गया है। वह अपनी बहिन के पहिनने के लिये चूनड़ी और दक्षिण की साड़ी लाये हैं, उन्हीं वस्त्रों को उनकी सुन्दर बहिन पहिनती है, यथा-

सावन बरसे सेवरो, भादव में झड़ लागे।
म्हारो मोजालो सावन आयोजी म्हारा राज।

कांको बीरो बाग लगावे, कांकी बेन्यां झूले हो राज?
कांका बीरा चाल्या चाकरी, कांका बीरा चाल्या गढ़ गुजरात।
म्हारा बीरा लाया चूनड़ी, म्हारा बीरा लाया दखण्यां रो चीर,
म्हारो मोजीलो सावन आयो म्हारा राज, कांकी बेन्या ओढ़े चूनड़ी
कांकी बेन्या ओढ़े दखणी रो चीर, सुशीला बई बेन्यो ओढ़े चूनड़ी
दुर्गा बई बेन्या ओढ़े दखणी चीर, म्हारो मोतीलो सावण आयो म्हारा राज।

हे ढोला राजकुमार! सावनियाँ तीज आ गई है। चलो बगीचे में झूले का प्रबन्ध करें। पत्नी तो झूला झूल रही है और पति झूले दे रहा है। इसी समय रेशम की डोर टूट जाने से पत्नी की चूनड़ी फट जाती है। पति क्रुद्ध हो उठता है और कोड़े से मार देता है। पत्नी रुष्ट होकर अपने पिता के घर चल देती है। तब अश्वारुढ़ पति उसे ढूँढने निकलता है। पहिले वह समझता है। पीछे कहता है- 'तुमतो ऊँचे कुल में उत्पन्न हुई हो। अपने घर चलो।' फिर डर बतलाता है 'नहीं चलना हो तो वैसा कहो। मैं तुम्हारे होते दूसरी सौत ले आता हूँ।' पत्नी प्रौढ़ावस्था प्राप्त है। वह डरने वाली नहीं है। कहती है- मैं शान्त हूँ और अभी तक तुम्हारा मान रख दिया है। अब आप अपने घर जायें। मेरा छोटा पुत्र है। उसी का पालन-पोषण करके अपने पिता के घर अपना जीवन व्यतीत कर लूँगी। पर यदि तुम सौत ले आओगे तो उसे 'ढाँडे' (छत की लकड़ी) से और तुम्हे 'बरेंडे' से बाँध दूँगी, गीत है-

ऐजी ढोला आई आई सावणियां री तीज।
झूलो तो डालो बाग में जी म्हारा राज।
टूटी टूटी रैसम डोर गोरी की फाटी चूनड़ी जी म्हारा राज।
आई आई गोरी ने रीस, रिसाई चाल्या बाप के जी म्हांका राज।
संग घोड़ो अर असवार, चाल्याजी सायबा म्हारा राज।
बड़ा घरां की नार घरां चालो आपणेजी म्हारा राज।
नीतर के देवो जवाब, थां से लावां दूसरी जी म्हाका राज।
थांको राख्यो बड़ो जी मान, घरां तो जावो आपणे म्हारा राज।
रातो झीणों-झीणों सूत, जमारो काटा बापकेजी म्हारा राज।
डांडे-डांडे बांधू ल्होड़ी सोक, बरेड़े बांधू सायबा म्हारा राज।
ढीले-ढीले बांधू ल्होड़ी सोक, जकड़ बांधू सायबा म्हारा राज।

एक और हिंडोला गीत प्रस्तुत है। इसमें बताया गया है। कि गेंदे पर बहार आ चुकी है। हे स्वामी! मुझे गेंदा दे दीजिये। अरी सखी! स्वामी के बगीचे में क्या-क्या लगा है। सखी! उनके बगीचे में तो नींबू, नारंगी और अनार लगे हैं। स्वामी के बाजार में क्या कितना है? उनके बाजार में तो तबला, सारंगी और सितार बेचे जाते हैं, यथा-

गेंदे पे आई बहार सैयाजी गेंदा ले दो,
सैया की बगिया में क्या क्या लगा हें?
नींबू, नारंगी, अनार,
अनार पिया लेदो, गेंदे पे आई बहार,
सैंयाजी के बाजार में क्या क्या बिकता है?
तबला, सारंगी सितार,
सितार पिया लेदो गेंदे पे आई बहार।

वर्षा ऋतु की रात उमड़ रही है। इस काल में रानी जी मनोरंजन के लिये बाहर निकली। तेरा हाथ तो रिक्त दिखाई देता है। तू कंकण कंठा भूल आई है। हमारे माता-पिता ने वृक्ष लगाया था। उसी को सींचने में गई थी। बाग में दो नींबू लगे हैं। तो दो से क्या प्रयोजन है? यदि दो हों तो एक चने की दाल के सदृश दोनों के साथ एक समान व्यवहार करना चाहिये। यदि एक के लिए चन्द्रहार बनाते हैं तो दूसरी के लिये भी बना दीजिये। गीत के बोल हैं-

उमगी चौमासा की रात,
रानीजी रमवा नीसर्‌या जी म्हारा राज।
एक सूनो लागे थारो हात,
कांकण कहां बिसर्‌याजी म्हारा राज।
झाड़ लगायो म्हारी मांय ने बाप,
जले सींच्यो जी म्हारा राज।
एक डाली ने नीबू दोय,
दो यांरो कंई हे काम जी म्हारा राज।
दोंया ने राखो सारखाजी म्हारा राज।
एक ने घड़ावो चंदन हार,
दूसरी ने घड़ावो तेवड़ा जी म्हारा राज।

नागपंचमी

सर्प, दैवत्व की प्राण-प्रतिष्ठा का सूचक है। लोक विश्वास उन्हें देवता मानते हैं। श्रावण शुक्ल पंचमी को नागपंचमी का त्योहार समग्र मालवा में मनाया जाता है। इस दिन नाग देवता या ताखाजी महाराज के हर थानक पर नागदेव के पंडे को पौन आता है। घंटी-घंटाल बजते हैं। पंडा घूमता है और नीम की पत्ती खाता है तथा दूध पीता है। साल सम्वत् का हाल सुनाता है। सर्प काटे व्यक्तियों की दस्सी (सूत्र) उतारे जाते हैं। भावुक नर-नारी भरणी मंत्र गाते हैं। वहीं स्त्रियाँ नागजी के गीत गाती हैं। जगह-जगह कालबेलिये अपनी पिटारी में साँप ले जाकर जनता को दर्शन करवाते हैं और इसके बदले अन्न और पैसा प्राप्त करते हैं। घर के दरवाजे की दोनों दीवारों पर नाग की आकृतियाँ उकेरी जाती हैं। उन्हें भी धूप, दीप व नैवेद्य लगाया जाता है। एक गीत में

बतलाया गया है कि नाग देवता के थानक पर बाँझ स्त्रियाँ पुत्र प्राप्ति के लिये आती हैं। वासुकि नाग बाग में भ्रमण करते हैं। बच्चे-बच्चियों की माताएँ उनसे अन्न और धन की आकांक्षा रखती हैं। बाँझ-बाँझुली पुत्र होने पर मानता स्वरूप नाग देव के थानक पर चाँदी का छत्र चढ़ाते हैं। बच्चों की माताएँ गो दान करती हैं। बाँझ व्यक्तियों को धूप में उतारा जाता है जबकि पुत्र की माँ को छाँह में उतारा जाता है। गीत के बोल हैं-

नाग के लग आवे बांझा बांझुली।
के लग बालूडी की मांय।
वासक राजा फूंला की वाड़ी में रमी रया।
नागजी नोलख आवे बांझा बांझुली।
नागजी दस लख बालूड़ा की मांय।
नागजी कंई तों मांगे बांझा बांझुली
नागजी कंई तो मांगे बालूड़ा की मांय।
नागजी पुत्तर मांगे बांझा बांझुली।
अनधन मांगे बालूड़ा की मांय।
नागजी कंई तो चढ़ावे बांझा बांझुली।
छत्तर चढ़ावे बांझा बांझुली।
वांछी बंधावे बालूड़ा की मांय।
नागजी कायन उतारां बांझा बांझुली।
कायन उतारां बालूड़ा की मांय।
नागजी तड़के उतारां बांझा बांझुली
गेरी छायां उतारा बालूड़ा की मांय।
नागजी किना रस्ते आवे बांझा बांझुली।
किना रस्ते बालूड़ा की मांय।
ऊबट आवे बांझा बांझूली,
सूधो रस्तो आवे बालूड़ा की मांय।

श्रावण का मास लगते ही गोपियों द्वारा श्रीकृष्ण को अपने देश आने का निमंत्रण दिया जाता है। वे खड़ी-खड़ी कृष्ण की राह देख रही हैं। कृष्णजी इस बार आने का वायदा कर गये। दिन गिनते-गिनते नायिका की अँगुलियों की रेखाएँ घिस गई हैं, पर कृष्ण अपने वायदे पर नहीं आते। गोपियों के पास न तो कागज है न ही स्याही। न ही कोई ऐसा पक्षी जिसके द्वारा वे पुनः कृष्ण के पास संदेश भिजवा सकें। तब स्वयं गोपी, अपने कृष्ण को ढूँढने के लिये योगी का भेष बनाती हैं। ढूँढते-ढूँढते उसके सिर के बाल सफेद हो जाते हैं तथापि कृष्ण के दर्शन नहीं हो पाते। इसी भाव की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में दृष्टव्य है-

आज्यो-आज्यो जी सांवरिया म्हारा देस,
उभी जोउं बाट डली।
गोविन्दा म्हारा देस, ऊभी जोऊं बाट डली
सावन मास आवन के गये सजनी
करीगया कोल अनेक।
सावन आवन कह गया जी।
करी गया कोल अनेक।
गिनतां-गिनतां घिसी गई जी
म्हारी अंगुलियाँ री रेख।
आज्यो-आज्यो सांवरिया म्हारे देस।
उभी जोउं बाट डली।
कागद नई स्याई नई जी,
नई किणी पंछीरो परवेस।
संदेसो किस बिद भेजूंजी।
सांवल ढूंढन में चलीजी।
कर जोगी को भेस,
ढूंढत ढूंढत जुग भयाजी।
धोला हुई गया केस।
आज्यो-आज्यो जी सांवरिया म्हारा देस,
मीरा के प्रभु गिरधर नागर।
मिल्या घर नटवर भेस।

गोपियों का आव्हान कृष्ण के प्रति सतत् चलता रहता है। कहती हैं- कृष्ण आप कब आयेंगे? मैं अपने द्वार पर खड़ी आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ। जब मेरे मन रूपी मन्दिर में ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ तो मैं अपने को एक पाप की गठरी के समान समझने लगी। अब मैं उस गठरी को बहुत दूर फेंक आई हूँ। आप आकर मुझे दर्शन कब देंगे? मैं बार-बार आपके मन्दिर में आपके दर्शन करने व आपकी मनुहार करने के लिये जाती हूँ, किन्तु मुझे निराश लौटना पड़ता है। आपके कंधे पर कम्बल शोभायान है। बाल आपके घुँघराले हैं। पैरों में आप बजने वाली पैंजनियाँ पहिने हुए हैं। ऐसे राधा-रुक्मिणी के पति भगवान श्रीकृष्ण अपनी बाँसुरी की धुन पर नृत्य कर रहे हैं। गीत के बोल हैं-

कदे आवोला, कदे आबोला सांवरिया?
हूं दुआरी खड़ी जोऊं थांकी बाट डाली।
मन मंदर में ग्यान उपज्यो, हूं न्यारी भरपूर पाप की ठाठड़ी।
बांध के फेंक्याई बड़ी दूर।

पाप की गांठड़ी, धो आंगणिया में हाथ रे।
पांव ठाड़ी जोऊं थांकी बाट डली।
कदे आवेगा हो सांवरिया?
म्हारे दुआर खडी जोऊं बाट डली।
पेली पेड़ी पांव धरियो मंदर के मांय।
दूसरी पेड़ी पांव धरियो मंदर के मांय।
तीजी पेड़ी पांव धरियो मंदर के बीच।
माखन मिसरी दूध मिलाई चारो लाई साथ।
थांकी घणी घणी करूँ ओ मनवार।
खडी हूं जोऊं थांकी बाट डली, कांधा पे कमलिया सोवे।
माथे घूंघर वाले बाल, पांवो में पैंजनियां सोवे।
निरत करे गोपाल, राधा रुकमण का भरतार।
थारी जोऊं बाट डली।

(स्रोत-सौ. रुक्मिणी देवी , ग्राम खेरिया)

भादवा मास (भादों मास)

मालवा में भाद्रपद कृष्ण पक्ष चतुर्थी को संकट चतुर्थी, कृष्ण पक्ष अष्टमी को जन्माष्टमी, कृष्ण पक्ष में ही गोगा नवमी, भाद्रपद 14 को शिवरात्रि, शुक्ल पक्ष तृतीया को हरतालिका तीज, चतुर्थी को गणेश स्थापना, ऋषि पंचमी, सूर्य षष्टी या गौरी पूजन, दशमी को तेजाजी तथा चतुर्थी को अनन्त चतुदर्शी आदि व्रत एवं त्योहार आते हैं। सर्वप्रथम यहाँ कृष्ण जन्माष्टमी पर गाये जाने वाले गीतों की सारणी प्रस्तुत की जा रही है। मालवा में कृष्णभक्ति का बहुत प्रचार-प्रसार है। कृष्णभक्ति सम्बन्धी पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय की दो पीठें मोमन बड़ौदिया एवं उज्जयिनी में स्थित है। कृष्ण ने मित्र सुदामा के साथ गुरु सांदीपनि के आश्रम में शिक्षा प्राप्त की थी। अत: नारी जीवन में कृष्ण के प्रति अनुरक्ति होना स्वाभाविक है। वैसे भी कृष्ण लीलाएँ लोक मानव के लिये लोकरंजककारी सिद्ध हुई हैं।

मालवी लोकगीतों में भगवान कृष्ण के लोकरंजनकारी रूप के साथ भागवत रूप का समावेश भी मिलता है। अनेक गीतों पर ब्रह्मानन्द, सूर, प्रेम सागर, श्रीमद्‌भागवत, चन्द्रसखी, मीरा एवं दलु भगत आदि के लिखित एवं मौखिक साहित्य का प्रभाव परिलक्षित होता है। कहीं कृष्ण की शोभा 'हाथ साँवरिया के पोंची सोवे' तथा 'घुंघरा में जड़या जड़ाव' से होती है, तो वहीं मानिनी राधा अपने बाजू में पोंची नामक आभूषण श्रीकृष्ण के हाथों पहिनने की इच्छा व्यक्त करती है। कहीं फाग गीत में होली का हास-परिहास झलकता है, तो कहीं गोपियाँ कृष्ण को घेरकर उन्हें नारी वेश में परिवर्तित करती दिखाई देती हैं। लीला का ऐसा उत्कृष्ट स्वरूप मन को व्यामोहित कर देने वाला होता है। गोपियाँ उनके सिर का मुकुट छीनकर साड़ी ओढ़ा देती हैं।

कानों के कुंडल निकालकर झुमकी पहिना देती हैं। कृष्ण की पीताम्बर और बंसी छीनकर माथे पर बिंदिया लगा देती हैं। आँखों में काजल सारती हैं। पाँवों के जूते छिपाकर बिछिया पहिना देती हैं।

मालवी लोकजीवन में लोकाचार, लोकप्रथाएँ, रूढ़ियाँ एवं टोने-टोटकों की व्याप्ति मिलती है। यशोदा द्वारा गोपाल कृष्ण को झूला-झुलना, अपना स्तन पान कराने पर बालक द्वारा मुँह से दूध गिरा देने पर राई-लूण का टोटका करना जैसे व्यवस्थित क्रम देकर समग्र कृष्ण कथा का आकलन किया जा सकता है। हर मंगल कार्य का प्रारम्भ भारतीय लोकसंस्कृति में गणपति एवं सरस्वती वंदना से किया जाता है। गीत इस प्रकार है-

गवरी का पुत्र मनाविया, गणपत के लागूं पांय।
म्हारे कंठे सरस्वती बसरिया, म्हारो मन कहे बलराम।
अरजुन गावो नी गीता सार, पंडित सांवला भगवान,
जिनका भजन का परताप, जांसे जलतिरे भवसार।
आँगन में तुलसी केवड़ो जी, घर में तो सालग राम।
जो भागवत की निंदरा करे, वणे तीन लोग अबमान।
अरजुन गावों नी गीता सार, हाथे तुलसी, कंठे तुलसी।
गरे बी तुलसां की मार, तुलसी छांय सुभावणी,
वणां साधू ने सज सिणगार, रजुन.....
वसुदेव घरे जनमियां, केवाया बाबा नंद।
इन्द्र को सब मान हरियो, गोप्यां लड़ाया लाड़।
अरजुन गावो नी......

कृष्ण के लिये बधावा

अरे म्हारा बाला वसुदेव, देवकी ने धन्य हे।
जिन जायो रे किरस्ने मुरार, म्हारा बालाजी।
अरे वो म्हारा मथरा में, जाधव जनमियो जी।
अने गोकल में होयो रे, आनन्द म्हारा बालाजी,
अरे म्हारा बालाजी, अरे वो हरनाकुस के मार्‌यो रे।
जीने प्रहलाद केलियो, छुड़ाय म्हारा बालाजी।
अरे वों म्हारा बालाजी, पेंठि पताल नागजो नाथ्यो रे।
मां जसोदा ने लीवी, बधाई म्हारा बालाजी।
अरे वो म्हारा वालाजी, ख्याली खुशाल सिंग।
गावतो तुलाराम, बजावे मिरदंग म्हारा बालाजी।

कृष्ण जन्म पर माता यशोदा को बधाई देने वालों का ताँता लगा हुआ है। वसुदेव एवं माता देवकी को धन्य है, जिन्होंने कृष्ण सा पुत्र उत्पन्न किया। यदुराय कृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया और गोकुल में आनन्द बधाई दी जाने लगी, जिस परमात्मा ने हिरण्यकश्यप को मारकर प्रहलाद भक्त को छुड़वाया। पाताल में घुसकर जिन्होंने नाग को नाथा और माता यशोदा को बधाई मिली।

दूसरे गीत में भगवान कृष्ण का जन्म होता है। जैसे ही कृष्ण उत्पन्न हुए बाँसुरी का रव सुनाई देने लगा। जेल पर लगे ताले अपने आप खुल गये। देवकी को भी स्वप्न में यह तथ्य मालूम पड़ा तो उन्होंने वसुदेव को जगाकर सब हाल कहा। वसुदेव के पैरों की बेड़ियाँ अपने आप खुल गईं। कंस का भाग्य फूट गया। सारे प्रहरी निद्रा के वशीभूत हो गये। वसुदेव कृष्ण को एक टोकरी में लिटा गोकुल के लिये रवाना हुए। यमुना नदी पूर जा रही थी, किन्तु जैसे ही कृष्ण का चरण जल को छुआ, नदी की बाढ़ उतरने लगी, यथा–

जग में जन्में सिरी भगवान, जेल दरम्यान,
मुरलिया वाले, खुल गये जेल के ताले।
देवकी ने पति को जगाया था।
सपने का हाल सुनाया था।
ले जाओ पुत्तर को, जसोदा के करो हवाले।
खुल गये जेल के ताले।
वसुदेव की बेड़ी टूटी थी,
तकदीर कंस की फूटी थी।
हो गये नींद में भोले पेरे वाले।
खुल गये जेल के ताले।
सिरी किरस्न ने चरण बढ़ाया था,
जमना ने नीर घटाया था।
छू चरण गई थी, जमना घोर पताले।
खुल गये जेल के ताले।

(स्रोत–सुश्री दुर्गावती जोशी, माचलपुर)

झूलना

कृष्ण कन्हाई झूले में झूल रहे हैं। यशोदा माता उन्हें झूले दे रही हैं। वे अपने लाल को चन्दन के पलने में सुला रही हैं। किसी की नजर न लगे, इसलिये उनके भाल पर कजरारा टीका लगा रखा है। एक बार वे यमुना नदी के किनारे गेंद खेलने गये तो वह जल में गिर पड़ी। कृष्ण यमुना में कूद पड़े और नाग को नाथकर गेंद ले आये। भरी सभा में जब द्रोपदी ने करुण पुकार की तो वहाँ जाकर उनका चीर बढ़ाया। यशोदा झूले दे रही हैं और कृष्ण झूल रहे हैं। हे यशोदा माता! आपको धन्य है कि आपने कृष्ण जैसे पुत्र को जन्म दिया। आपको धन्य है कि

त्रिलोकीनाथ को अपनी गोदी में खिलाया। नगर में बधाई दी जा रही हैं? सब सखियाँ मगल गीत गा रही हैं। गोकुल में बधाई दी जा रही है और सखियाँ मंगलगीत गा रही हैं। गीत इस प्रकार है–

झूले में झूल रहे किसन कनइया,
झूला देवे हो जसोदा मइया।
अपने लाल को चंदन पालना झुलावे।
नजरिया लगे तो कालो टीका लगावे।
एक दन गेंद खेलन गये री जमना पे,
गेंद तो गिरियो हे जल जमना में,
कूद पड़े हें नाग के नथइया,
भरी सभा में काना दरोपती पुकारे,
बिलख–बिलख असुन को ढारे।
चीर बढ़ायो हरि किसन कनइया।
झूला झूले लाल झुलावे ओंकी मइया,
धन धनरी जसोदा माता आछा लाल जाया री।
तीन लोक नाथ अपणी गोद में खिलाया री।
अजोध्या में बंटत बधाई,
सखियां मंगलगीत गाया री।
गोकुल में बटत बधाई,
सखियों ने मंगलगीत गाया री।

(स्रोत–सुश्री, रुक्मिणी पंचोली, ग्राम – खेरिया)

भगवान कृष्ण ने भूमि का भार उतारने के लिये जन्म लिया। सारी ब्रजभूमि इस पावन उत्सव में सम्मिलित हो रही है। चारों ओर घर–घर में मंगलाचार हो रहे हैं। शास्त्रोक्त कृष्णकथा से पृथक चित्र लोक में उनका मिलता है। लोक की यही लौकिकता लोकतत्त्वों के सहारे आगे बढ़ती है। गोकुल नगरी में बधाई वालों की भीड़ जुटी हुई है। नन्दराजा के घर बधावे आ रहे हैं। नन्दजी दरवाजे की ऊँची हथिनी पर बैठे हैं, उन्हें श्वेत तथा धूसर रंग की गौयें बधाई में दी जा रही हैं। नन्दरानी के लिए साड़ी व चोली लाई जा रही है। चन्द्रसखी के इस गीत के बोल देखिये–

गोकुल नगरी जावा दो, नंद के बधाई देबा दो।
नंद राजा हताई चढ़ बेठा, धोली धूसर लावा दो।
नंदरानी महल चढ़ बेठी, साड़ी चोली लावा दो।
चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि, हरि चरणन चित लावा दो।
गोकुल नगरी जावा दो।

हे यशोदा! आरती संजोओ। कृष्ण गोकुल में आये हैं। यशोदा पूछती हैं– कौन सी थाल सजाऊँ? किस वस्तु की बाती बनाऊँ? कलश कौन सा रखूँ? गज मोती कहाँ स्थापित करूँ?

सखी उत्तर देती है– सोने की थाली सजाओ। अगर–धूप की बाती रखो। ताँबे के कलश और उनके नीचे गज मुक्ता रखो। हे यशोदा! तेरे आँगन में मोती के बीत बोये हुए हैं। बेल से मंडप छाया हुआ है। उसमें झूलते हुए मोती लटक रहे हैं। नगाड़े बज रहे हैं। ध्वजा पताका फहरा रही है। राजा कंस की छाती धड़क रही है। क्योंकि नन्द के बेटे ने उनके काल के रूप में गोकुल में जन्म लिया है। गीत देखिये–

जसोदाजी आरती संजोवे, नर हरि गोकुल में आया।
कायन की तो थाल सजाऊँ? कायन केरी बाती?
कायन को तो कलस धराऊँ? कहां रखूं गज मोती?
तांबा केरा कलश धराओं, वहां धरो गज मोती।
जसोदा के आंगण में बोया, झूले बड़ लड़ मोती।
बेल चली मंडप हो छाया, हरि भई झुमका मोती।
अड़िग–दड़िग नगारा हो बाजे, निसान उड़ता आवे।
कंस राजा की छाती धड़के, हरिभाई बेरी गोकुल मांय।

नीचे के दो गीत श्रीकृष्ण को दुग्धपान करवाने के सम्बन्ध में गाये जाते हैं। मीरा कहती हैं– हे मदन गोपाल! आपके लिये दूध का कटोरा भर कर लाई हूँ। आप दुग्धपान करो। मैं आपके लिये धौरी गाय का दूध लाई हूँ। उसमें मिश्री मिली हुई है। हे रुक्मिणी के भरतार! आप रूठे हुए क्यों हैं? हमसे रूठ जायेंगे तो काम नहीं बनेगा। दूध न पियेंगे तो भूख के मारे बेहाल हो जायेंगे। आपके गाल सूख जायेंगे। ऐसी प्रार्थना करने पर चारभुजा वाले कृष्ण दुग्धपान करने लगे। गीत देखिये–

पीवों पीवों नी मदन गोपाल, कटोरो लाई दूद को भर्‌यो।
थेंतो आरोगो दीन दयाल, कटोरो लाई दूद को भर्‌यो।
दूद पिवाने बुलावन आई।
धोरी धीन को दूद गरम कर लाई।
मिसरी दाल कटोरो लाई दूद को भर्‌यो।
रूठ्या–रूठ्यां कांई फिरो जी, रुक्मण का भरतार।
म्हां से रूठ्यां नंई सरेगो।
मान, दिवसरो काम भूंखा मरसी रे।
सूख जासी तमारा गाल।
कटोरो लाई दूद को भर्‌यो।
घर–घर दूधां पीवन लाग्या, चार भुजां का नाथ।

पी गयो रे कटोरो उठाय, कटोरो लाई दूद को भर्‌यो।
मीरां के सिरजन हार, कटोरो लाई दूद को भर्‌यो।
पीवों पीवों नी म्हारा मदन गोपाल, कटोरो लाई दूद को भर्‌यो।

दूसरे इस गीत में भी केसर मिश्रित दूध श्रीकृष्ण की मनुहार में लाया जाता है। इस दूध में केसर, मिश्री, बादाम, पिस्ता और चारोली जैसे मेवे मिले हुए हैं। हे गिरधारी! आप आरोगिये। हे गिरधारी! आपकी मुख शुद्धि के लिये गंगा-यमुना से जल की झारी भरकर ले लाई हूँ। प्रथम तो आप आचमन कर लीजिये। यदि आप मेरे द्वारा लाया मीठा दूध पीयेंगे तो मेरा जन्म सफल हो जायेगा। जब मैं कपूर आरती लाऊँगी, तब तक आपके शयन का समय हो जायेगा। आप तो नन्द यशोदा के पुत्र हैं। आप हमसे स्वप्न में भी विलग नहीं हो सकते। गीत के बोल हैं-

कंचन कटोरो केसर भर लाई मीठो दूद,
केसर डाली, मिसरी डाली,
अर बदाम पिस्ता चारोली घनी,
भर लाई मीठो दूद पिवोनी गिरधारी।
थाल भरी मेवाको आरोगो गिरधारी।
गंगा-जमना से झारी भर लाई।
आचमन करो म्हारा गिरधारी।
थें चाबो पान सुपारी जी, भरलाई मीठो दूद।
थें पीवो तो तिर जासी, जद लासी कपूर आतरी।
हाको सम्यो सेन को होसी, भरलाई मीठो दूद।
थें तो नन्द जसोदा का जाया।
नयनों से हो न्यारा।
बरमानंद विमल जस गायो, भर लाई मीठा दूद।
कंचन कटोरो केसर को भर लाई।

कृष्ण जन्म की बधाई देने तथा विष्णु रूप भगवान के दर्शन की अभिलाषा लेकर गोकुल में सभी देवी-देवता आते हैं। वे भगवान कृष्ण के रूप एवं गुणों की प्रशंसा करते हैं। गीत देखिये-

चालो चालो शरण नंदलाल के, मन मोहन बंसी वाला रे।
भूमि भार उतारना रे, प्रगटो वासु देव को बाल रे।
मोर मुगट पीताम्बर धारे, कंठ में कोस्तुभ माला रे।
शंख चक्र गदा करनन में, भजन प्रीति का बाजा रे।
उग्रसेन मथुराधिप कीन्हें, द्वारका आप सम्भाला रे।
द्वारका आप सम्भाला रे।

सूर ने यशोदा द्वारा श्रीकृष्ण को पालने में झुलाने का प्रसंग दिया है। मालवी में निम्न गीत, सुन्दर लोकधुन में गाया जाता है। यशोदा माता श्रीकृष्ण को पालने में झुला रही हैं। बालकृष्ण को किसी गूजरी की नजर चढ़ जाती है। इसलिये वे हुलक-हुलक कर मुँह से वापस दूध निकाल रहे हैं। यह देख नन्दरानी 'टम्मक-दीवलो' संजोकर उनकी आरती उतारती हैं। 'राई नोन' का टोटका करती हैं। नजर लगने पर मालवा में स्त्रियाँ प्राय: 7 या 21 बार राई और नमक, बालक पर वार करके अग्नि में डालती हैं। यदि उसकी गंध न मिले तो किसी की नजर लगी है, यह मान लिया जाता है। राई नोन करने पर कृष्ण की नजर उतर जाती है। वे फिर से दुग्धपान प्रारम्भ कर देते हैं। गीत देखिये-

झूलो जदूराय, झुलावे थांकी मइया,
मचका देगी थांकी मांय जसोदा।
कायन को तो अलणो रे पलणो?
कायन लंबी डोर कनइया?
चंदण का रे म्हारे अलणा रे पलणा,
रेसम लम्बी डोर कनइया।
कूण बेरण थांके नजरां ऐं लागी?
हुलक-हुलक दूध डाले कनइया।
राई लूण उतारे जसोदा, जब लग दीवलो उतारे जसोदा।
दूध पीवेगा मेरो लाल कनइया।

बाल कृष्ण गोकुल में बाल लीलाएँ कर ही रहे थे, कि कंस द्वारा पूतना नामक राक्षसी को कृष्ण वध करने के लिये भेजा जाता है। वह अपने स्तनों पर महाविष लगाकर बड़े सुन्दर रूप में गोकुल आती है। गीता सार की अग्रिम पंक्तियों में इसका सुरुचिपूर्ण चित्रण इनमें उपलब्ध हैं-

देवकी की कूंखा जनमियां, जसोदा खेलायं गोद।
गउवा चराई बाबा नंद की, मथरा में रचिया रास।
जेर का प्याला लाई के, भेजी हे पूतना नार,
पूतना कूं चूंस के, मेली हे सरग दुआर।
अरजुन गावोनी गीता सार।
काली जो दो में कूदिया, रामा नाथ्यो जी कालो नाग।
ऊबी नागण अरज करे, म्हांने स्वाग दो भगवान।
टिंटोडी इन्डा मेलिया रामा, मेल्या जो बन के मांय।
जां सिरी कृस्ने पधारिया, वां धूप घणेरी छांय।
अरजुन गावो नी गीता सार।

भगवान कृष्ण ने देवकी के गर्भ से जन्म लिया, किन्तु उन्हें यशोदा ने अपनी गोद में

खेलना सिखाया। बाबा नन्द की गायें चराईं और मथुरा में रास रचाया। पूतना अपने स्तन पर महाविष लगाकर उन्हें दूध पिलाने का उपक्रम करने लगी। तब भगवान ने उनका ऐसा दूध पिया कि वे सीधी यम द्वार पर पहुँच गई। काली दह में कूदकर कृष्ण ने नाग को नाथने का कार्य किया। जब नागिन ने अपना सुहाग छोड़ देने की प्रार्थना की, तब कहीं नाग को अभय दान दिया। टिंटोड़ी पक्षी ने अपने अंडे जंगल में दिये। उन्हें बचाने के लिये कृष्ण ने धूप के स्थान पर छाया कर दी। हे अर्जुन! गीता का गायन करो।

श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के साथ बाल सुलभ हठ का चित्रण भी मालवी लोकगीत में उपलब्ध है। वे भी यहाँ चन्द्र खिलौना लेने का हठ कर रहे हैं। कहते हैं– मुझे चन्द्र खिलौना दोगी, तभी माता तुम्हारी गोदी में आऊँगा। गीत देखिये–

चंद्र खिलौना लेदो री माता, तब तेरी गोदी में आऊं री मइया।
चंद्र खिलौना कांसे लाऊं, जूँ खेलो जूंई खिलाऊं रे लाला।
तो बाबा नंद का पुत्तर केवाऊं, तो नई तेरी गउवा चराऊं माता।
नई मूं से बंसरी बजाऊं री मइया।

इस गीत का एक अन्य पाठान्तर भी उपलब्ध है। इसमें कृष्ण बिलखकर रोने लगते हैं। माता कहती हैं– चन्द्रमा तो आकाश में रहता है। श्रीकृष्ण अपने सिर पर पाग बाँधकर, पेंचे को सँवारकर अपना मुख दर्पण में देखने लग जाते हैं। उधर यशोदा घर के भीतर से थाली में जल भरकर ले आती है। उसमें चन्द्र बिम्ब दिखाया जाता है। गीत इस प्रकार है–

देखी चंदरमा की कोर।
चतरभुज बिलख-बिलख रोवे।
बांधत पाग संवारत पेंची।
मुखड़ो जोवे दीपन में हों।
दोड़ी मइया नीर भरलाई,
वाही में चंदा दिखायो री माता।

श्रीकृष्ण अब दोनों घुटनों के बल चलकर गोकुल में खेलने लगे। उनके पाँव तथा कमर में बँधे घुँघरू झन-झन शब्द करके बजते, सबको अच्छे लगते। शिशु कीचड़ का अंगराग लगाकर जब घर लौटते, तब उनकी सुन्दरता निरख माताएँ बलि-बलि जाती हैं। एक गायिका उनकी सुन्दर-सुन्दर क्रीड़ाओं का वर्णन माता यशोदा के सामने करती है कि– हे माता यशोदा! मैंने कृष्ण को कुंज में खेलते देखा है। कानों में कुंडल, गले में वैजयन्ती माला, मोरपंख की वेणी और घुँघराले बाल उन पर सुशोभित हो रहे हैं। वे बाबा नन्द की गायें चराने के लिए जंगल में भटकते हैं। वे अहीरों की जूठी पत्तलें भी खाते देखे गये हैं। गीत देखिये–

देख्यो हे म्हंने जसोदा तेरो लाल, खेले कुंजन में।
कानों में उंके कुंडल सोवे, गरे बेजन्ती माळ।
मोर पंख की टोपी सोवे ने, घूंघर वाले बाल।
खेले कुंजन में।
वो तो गायें चरावें बाबा नंद की।
बन बन भटके गोपाल।
खावे अहीरों की झूठी पातर, ऊ थारो गोपाला।
खेले कुंजन में।

माता यशोदा श्रीकृष्ण को कलेवा करवा रही हैं। जब भी वे कलेवा लेकर जाती हैं, श्रीकृष्ण इन्कार कर देते हैं। उनके सिर पर मोर मुकुट तथा कानों में कुंडल शोभायमान हैं। गले में वैजयन्ती माला धारण किये हैं। श्रीकृष्ण को खानेके लिये लड्डू, पेड़ और इमरती देती हैं तो गले में अटकती हैं। पूड़ियाँ तो उन्हें बिल्कुल अच्छी नहीं लगतीं। किन्तु जब उन्हें दूध भरा गिलास पीने को देती हूँ तो वे उन्हें एक ही घूँट में पी जाते हैं। श्रीकृष्ण के यहाँ राधा और रुक्मिणी जैसी नारियाँ हैं, फिर भी उनका मन कुब्जा में भटकता रहता है। एक गोपी कहती है– मैं पनघट पर पानी भरने गई थी, तभी कृष्ण नट का वेश बनाकर वहाँ आ जाते हैं। हे सखी! इस साँवरिया का ठाट तो देखो, मैं इसके लिये कलेवा लेकर जाती हूँ तो खाने से मना कर देते हैं। गीत देखिये–

देखो–देखो सांवरिया का ठाट, कलेवा लाई तोई नटें।
पिरभुजी मोर मुगट कुंडल कान, माल तो वाके गले छटके।
पिरभुजी लाडु न पेड़ा इमरती हरी जी, पुड़ियां तो वाके गले अटके।
पिरभुजी दूधां भरियो गिलास को, सांवरियो तो भरे एकी घुटको।
पिरभुजी राधा रुकमण नार, कुब्जा में वाको जियो भटके।
पिरभूजी गई थी भरन कूं नीर, सांवरिया आयो नट बनके।
देखो–देखो सांवरिया को ठाट, कलेवो लाई तोई नटे।

मनवार

चन्द्रसखी के एक गीत में वे साँवरिया की मनुहार करती दिखाई दे रही हैं। सोचती हैं उनकी मनुहार किस भाँति करूँ? हे प्रभु! श्रीकृष्ण न तो मेरा कोई घर है न कोई आँगन है। हे साँवरिया! मैं तो पराये स्थान पर रह रही हूँ। तुम्हारी क्या मनुहार करूँ। न तो मेरे यहाँ माखन है, न ही मिश्री है। हे साँवरिया! आपको किस वस्तु का भोग लगाऊँ। न तो मेरे पास चाँदी है न ही स्वर्ण। फिर बताइये आपके लिए किस वस्तु की भेंट लाऊँ? हे साँवरिया! आपकी मनुहार कैसे करूँ? हे प्रभु! मेरे पास चन्दन का मुट्ठा और तुलसी की माला ही है। आपको ये ही वस्तुएँ भेंट में अर्पित करती हूँ। गीत अवलोकनीय है–

कांई मनवार करूँ रे सांवरिया थारी,
कांई मनवार करूँ जी?
नई म्हारे घर पिरभू नई म्हारे आंगनो
पराई पोळ रेऊँ रे सांवरिया,
थारी कंई मनवार करूं?
नंई म्हारे माखन पिरभू।
नंई म्हारे मिसिरी।
तो काय को भोग लगाऊँ रे सांवरिया?
थारी कंई मनवार करूँ रे?
नंई म्हारे चाँदी पिरभू नंई म्हारे सोनो,
काय की भेंट धरूँ रे सांवरिया,
थारी कंई मनवार करूँ रे?
चंदन को मुठ्यो पिरभु तुलसी की माला,
याई तो भेंट धरूँ रे।
सांवरिया थारी कंई मनवार करूँ रे?
चंद्रसखी ब्रजबाल की सोभा
हरि चरणन गुन गाऊं रे।
सांवरिया थारी-कंई मनवार करूँ रे?

बड़े होने पर कृष्ण की क्रीड़ाएँ भी भाँति-भाँति का रूप लेने लगीं। उन्हें देख गोपियाँ ठगी सी रह जाती हैं। वे बछड़े की पूँछ पकड़ लेते। बछड़े उन्हें घसीटते हुए दौड़ लगाते हैं। दोनों भाई चंचल और खिलाड़ी थे। यशोदा और गोपियाँ इनकी माखन लीला देखकर वात्सल्य रस में डूब जाती हैं, उनकी मधुर तोतली वाणी मन को विमोहित करने लगती है। माखन लीला दो प्रकार की विषयवस्तु लिये होती है। प्रथमत: मनसूखा, श्रीदामा आदि मित्रों के साथ माखन चोरी करना तथा गोपियों द्वारा उनका नटखट रूप देखकर प्रसन्न होना। दूसरे गोपियों द्वारा यशोदा के सामने जाकर उनकी शिकायत करना या उपालम्भ देना। दोनों प्रकार के लोकरंग इन गीतों की थाती हैं। 'दधि-माखन चोरी' की यह लीला अप्राकृत और दिव्य है। एक दृश्य देखिये-

उपालम्भ

गूजरी देने लगी ताना, स्याम को घर में समझाना।
आप स्याम भीतर घुस गये, मनसूखा के लियो साथ।
फोंड दीनी मटकी मेरी, साड़ी कीनी तार-तार।
छल्ला, बींटी, छाम मेरा, तोड़ दिया तीन-तीन।
नोंसे कली हार मेरो, तोड़ दीनों बीन-बीन।

एक गूजरी शिकायत करती कहती है– हे माता यशोदा! तेरा कन्हैया तो बड़ा दगाबाज निकला। मैं जब यमुना के नीर भरने गई तो श्रीकृष्ण ने मेरी गागर तोड़ डाली। ऐसा करके वे अपने साथी ग्वालों के संग हँस–हँस ताली बजाने लगे। उन्होंने तो बीच बजार में ही मेरी कलाई पकड़ ली। मेरे संग की सहेलियाँ उनके इस कृत्य को मुड़–मुड़कर देखती रहीं, वे बड़े नटखट हैं। मुझसे आँखें भी लड़ाते हैं। उन्हें हो क्या गया है। मेरे ही आँगन में आकर मुरली बजाते हैं। और नये–नये राग अलापते हैं। उन्होंने सारे चेतन प्राणियों को भ्रमित कर रखा है। उन्हें हो क्या गया है। चित्र देखिये–

यशोदा मइया तेरा कनइया, दगाबाज कहलाया।
मैं जल जमना नीर भरन को जाती,
सुबे शाम को ग्वालों की टोली में देखा।
गागर मेरी फोड़ दीनी।
हँस–हँस ताल बजावे ग्वाल संग,
बीच बजार में म्हारी पकड़ी कलाई।
संग की सहेल्यां म्हारी मुड़–मुड़ देखे,
नटखट नेनां से नेनां लड़ाये, उनीयें कंई हो गयो रे।
आंगणा में आके वी मुरली बजावे,
आंगणा में आके वी बंसरी बजावे,
मुरली बजावे वी कानों तान सुनाय रे।
चेतन के भरमाया उंके कंई हो गयो रे?

एक और गीत में गूजरी माता यशोदा को उपालम्भ देती हुई कह रही है– हे माता यशोदा! आपने अच्छा पुत्र पैदा किया। उसने मेरी मटकी फोड़ डाली, जिससे मेरा सारा दही पृथ्वी पर बिखर गया। माता उत्तर देती कहती है– तुम चिन्ता न करो, मैं दूध–दही से भरी नई मटकी दे दूँगी। उसने जितना खाया है, उतना तौल कर दे दूँगी। किन्तु मुझे गाली देकर अपमानित न करो। कृष्ण तो मुझ जैसी गरीबनी का पुत्र है (वात्सल्य से निर्धनता की तुलना)। वात्सल्य रहित जीवन भी गरीब जैसा ही होता है। किसी–किसी के तो दो चार पुत्र होते हैं, किन्तु मेरे तो एक ही है। इसके लिये अनेक मनौती मानी थी। इसकी प्राप्ति के लिये काशी में जाकर बहुत द्रव्यदान दिया। चारों धाम की तीर्थयात्रा की। तब कहीं जाकर विधाता ने मुझे यह पुत्र दिया है। जीवन की विद्रूपताओं और वात्सल्य की कसक का कैसा हृदयग्राही वर्णन है, यह गीत देखिये–

सुनरी जसोदा माता, आछा पुत्तर जाया री।
मटकी मेरी फोड़ डाली, दईड़ो बिखेर दियो,
मटकी तेरी मोल मंगई दूं, दंई से भराई दऊं।
जेसो खायो वैसो थारो, तोल तोल देऊं री।
गाली मती दीजे, गरीबनी को जायो री।

कोई के तो दोई चार, कोई के तो पांच री।
म्हारे तो बधाता माता, एखलोई जायो री।
कासीजी में पुन्न कियो, द्रव्ये लुटाय री।
चारी धाम पूज पूज, एक पुत्तर पायो री।
गाली मती दीजे, गरीबनी को जाया री।

माखन लीला

कुछ और चित्र हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, क्योंकि ऐसे चित्र किसी पुस्तक में उपलब्ध नहीं हैं। ये तो लोकसंस्कृति की विरासत होने के साथ-साथ लोकधुनों की थाती भी हैं। गीत हृदय स्पर्शी हैं ही, इसकी धुन भी आकर्षक है। सबसे बड़ी बात तो मालवी भाषा में पाई जाने वाली ध्वन्यात्मकता-चित्रात्मकता एवं वाक्यविन्यास में है। एक गोपी शिकायत के स्वर में दूसरी को अपने स्वप्न की बात सुनाती है। कहती है- मैंने आज स्वप्न में कृष्ण को 'गटागट' दही खाते देखा है। मेरा सूना भवन देख वे उसमें छिप जाते हैं। फिर ढूँढते हुए उस स्थान पर पहुँचते हैं, जहाँ दही रखा था। मैं जैसे ही वहाँ पहुँची, मोहन मुझे देख शरमा गया। किन्तु भेद खुल जाने के भय से नीचे उतर आया। दही की मटकी तो उन्होंने जमीन पर गिरा दी थी, स्वयं उसमें 'लटपट' हो गये। दही उनके सारे शरीर पर चिपक गया। सूर्योदय के पूर्व ऊषा की लालिमा निकल रही थी। तब मेरे और उसके मध्य बहुत 'खटापटी' हुई और मेरा स्वप्न भंग हो गया। इस आकर्षक गीत के बोल हैं-

आजे सखी म्हने मोवन देख्यो, दई मेरो खा गयो गटागटी।
सूनो भवन जब मोवन ने देख्यो, तो मोवन छुप गयो झटापटी।
मोवन छिप छिप के चड़ बेठ्यो, अतरा में आ गई हूँ झटापटी।
मोंये देख मोवन सरमायो, अतरा में उतर्‌यो ऊ झटापटी।
दई मटकी भों पर पटकी, तो दई मांय हुई गयो लटापटी।
पो फाटी ने परोड़ो होयो, मोवन के म्हारे हो रही खटापटी।

बचपन की चंचलताएँ अनोखी होती हैं। गोपियाँ एकत्रित हों नन्द बाबा के घर गईं और कन्हैया की करतूतें बखान करने लगीं। अरी जसोदा माता! तेरा कान्हा तो बड़ा नटखट है। गाय दुहने का समय न होने पर भी बछड़ों को छोड़ देता है। डाँटने पर ठठाकर हँसता है। यह चोरी के बड़े-बड़े उपाय रचता है। कभी-कभी नीचे से दही के बर्तन में छेद कर देता है। वह जानता है कि किस छींके पर, किस बर्तन में क्या रखा है? यह इसके मणिमय आभूषणों के प्रकाश में सब कुछ देख लेता है। चालाक तो इतना है कि कब कौन कहाँ रहता है? इसका पता यह रखता है। ठिठाई की बातें करता है और उल्टे हमें ही चोर ठहराता है।

माता यशोदा कृष्ण की माखन चोरी से तंग आकर ऊब चुकी हैं। वे गोपियों के तानों से व्यथित भी होती हैं। माता-पिता अपने बालकों के दुर्गुणों को छिपाने के लिये कितने विचलित

हैं? इसका वर्णन इस गीत में उपलब्ध है। पड़ोस की स्त्रियाँ उपालम्भ देती हुई कहती हैं– हे यशोदा! तेरा कन्हैया तो बड़ा चोर है। बाबा नन्द जी के यहाँ 'नवलख धेनु' हैं, नित्य माखन होता है। यशोदा कहती हैं– मैं तो समझती हूँ कि गायें चराने गया है, इसलिये खिड़की खोलकर निश्चिन्त सोती हूँ, पर– हे कृष्ण! तू तो अपनी कमली भी खो आया है। जब नन्दजी इस बात को सुनेंगे तो तेरे से अप्रसन्न होंगे। ऐसा कह यशोदा, कृष्ण को लकड़ी से मारने को दौड़ती हैं। यह देख कृष्ण खिड़की खोलकर बाहर भाग जाते हैं। तब यशोदा डाँटती हुई कहती हैं– यदि तूने मेरा कहा न माना तो पकड़वाकर बंधा दूँगी। तू उच्चकुल में उत्पन्न हुआ है और तुझे चतुर समझकर ही तेरी सगाई वृषभानु की लड़की राधा जी से की है। लोग वहाँ जाकर कहेंगे कि तू तो चोर है तो तेरी सगाई टूट जायेगी और हमें बड़ा लज्जित होना पड़ेगा। गीत दृष्टव्य है–

बाबा नंद घर लख गउवा, नित को माखन होय।
हूं जाणूं कानो गयो बन में, सोऊ खिड़कियां खोल।
काहू गूजरी के साथ गया हे, आयो कमलिया खोय।
जो सुणपावे नंद बाबा तो, रीस करेंगे तोय।
लकड़ी लेके गई जसोदा, गयो खिड़कियां खोल।
के तो म्हारो कह्यो मानले, पकड़ बंधाऊं थोंय।
बरसाने तेरी हुई सगाई, लोग कहेंगे चोर।
बड़ा घरां को सुघड़ लाड़लो, चतुर वथावें थोंय।

कालिन्दी में डूबना

एक दिन जबकि यशोदा माता दही बिलो रही थी, एक गूजरी ने आकर उन्हें खबर सुनाई कि तुम्हारा साँवरिया तो यमुना में डूब गया है। यही खबर जब मथुरा में पहुँची तो मामा कंस को बड़ी प्रसन्नता हुई कि चलो दुश्मन अपने आप समाप्त हो गया। माता यशोदा को किसी ने युक्ति बताई कि सोने की थाली में मोती भरकर यमुना को भेंट करो। माता यशोदा थाल सजाकर यमुना पहुँची तो देखा कि श्रीकृष्ण पानी से बाहर निकल रहे हैं। माता ने उसी समय मिठाई मँगवाकर गोकुल के घर–घर में बँटवाई तथा मोती न्यौछावर किये। गीत के बोल देखिये–

सोना के खम्बे रामजी दइयो बिलोवे,
तो गुजरी ने आन कईयो,
साँवरियो तेरो जमना में डूब मर्‌यो।
मामा जो कंसे घरां खबरे जो होइये तो,
भलो जो फंद कट्यो।
सोना की थाली रामजी मोल्यां का आखा–
तो जमना में भेंट करो।
साँवरियो मेरो जमना से निकल गयो।

नगरी का लोगे घरां खबर जो हुई हे-
तो घरे-घरे मिठायां बँटाई।
साँवरियो तेरो जमना में डूब मर्‌यो।

एक गोपिका कालिन्दी के घाट पर कृष्ण की प्रतीक्षा कर रही है। वह कहती है- हे प्रभु! न तो मेरे पास बिछाने के लिये चटाई है, न ही कोई अन्य साधन हैं। मेरे पास तो फटी-पुरानी गादी एवं टूटी-फूटी खटिया है। हे साँवरे! आप मेरी मेहमानी में पधारें। खाने को आपके लिये बासी भात है। दई से बिलोकर बनाई गई छाछ है। हे प्रभु! मेरे पास तो झारी भी नहीं है, मैं आपको जल किस प्रकार पिला सकूँगी? किन्तु एक छोटे से लोटे में गंगाजल भरा है, वही पिलाकर सन्तुष्ट हो सकूँगी। हे प्रभो! आप कालिन्दी के घाट पर आ जाइयेगा। मेरे पास खिलाने के लिये पान का बीड़ा नहीं है। पान रूखे-सूखे हैं, उसमें इलायची लौंग ही डाले गये हैं। हे साँवरे! आपको खेलने के लिये चौपड़ नहीं है, आप उससे कैसे जीत पायेंगे। टूटे-फूटे पाँसे हैं, जो स्वर्ण खचित हैं। हे प्रभो! आप कालिन्दी के घाट पर पधारिये, गीत के बोल इस प्रकार हैं-

कालंदी का घाट घाट पे, कब की जो रई बाट?
सांवरा आ जईयो।
चटई नई हे पिरभु, कंई तो बिछाऊँ।
टूटी फाटी खाट पें, वई पुरानो टाट।
सांवरा आ जइयो रे।
भोजन नंई पिरभू कंई तो जिमाऊँ?
बासी कूसी भात ने दंई बिलाई छाच।
सांवरा आ जइयो रे।
झारी नंई पिरभु काय से पिलाऊँ?
छोटा मोटा लोटा जिमें गंगा जल रे।
बीर सांवरा आ जइयो रे।
बिड़ला नंई हे पिरभू, कंई तो चबवाऊँ?
रूखा सूखा पान में वई इलायची लोंग,
सांवरा आ जाइयो रे।
चोपड़ नंई हे पिरभु कांई से जिताऊँ?
टूटा फाटा पांसा, जिमें वई सोना का तार।
सांवरा आ जइयो रे।
कालंदी के घाट घाट पर, कबकी जो रही बाट।
सांवरा आ जइयो रे।

कृष्ण सम्बन्धी गीतों में 'नागलीला' का अति विशिष्ट स्थान है, कालिय नाग का मान

मर्दन एवं यमुना के जल से उसे खदेड़कर जल प्रदूषण से गोकुल वासियों को मुक्ति दिलवाना ही इस कथन का अभिप्राय है।

कालिय नाग अमित पराक्रमी था (महाभारत के कालिय नागवंशी है वासुकि ऐरावत आदि की तरह यह भी अत्यधिक शक्तिशाली था।) महाभारत के अनुसार कालिया नाग मूलत: वासुकि नाग की राजधानी भोगवती पुरी का रहने वाला था। यह पुरी इन्द्रपुरी सदृश धन-धान्य, अन्न-जल से सम्पन्न और सुन्दर थी। सूर सागर एवं विक्रम परिषद काशी के अनुसार कालिय नाग को कृष्ण ने यमुना से निकालकर मणि द्वीप पहुँचा दिया था। सम्भवत: कालिय साँप न होकर नागवंशी एक शक्तिशाली व्यक्ति था, जो यमुना किनारे अपने आतंक के बल पर सत्ता फैलाकर नागों का वहाँ अस्तित्व बनाये रखना चाहता था। कृष्ण ने उससे मथुरा और सम्पूर्ण जनपदीय क्षेत्र को मुक्ति दिलवाई थी।

कालिया की इच्छा यमुना किनारे नागवंश स्थापित करने की थी, किन्तु कृष्ण इस चाल को भाँप गये और उन्होंने उसके मान मर्दन की योजना बना डाली। मालवी में प्रचलित नाग लीला इस परिप्रेक्ष्य में वस्तुस्थिति का दिग्दर्शन करवाती है। इसे मालवी नारियाँ ही मधुर स्वरों एवं आरोह-अवरोह के साथ इस गीत को गाती हैं। नागपंचमी पर स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले इस गीत की लोक धुन बड़ी मनमोहक है। गीत देखिये-

खेलत गेंद गयो री जमना में, जल मांय ऊबा कृष्णे जायके।
नागे-नागण दोनूं तो सूता, कंवर उतर्या जायके।
केरे बालक पंथ भूल्यो, केरे बेरी ने बिलमाइयो।
के थारा मन में करोध उपज्यो, के घरे नारे सतावियो।
नई वो नागण पंथ भूल्यो, नई वो बेरी ने बिलमायो।
नंई म्हारा मन में करोध उपज्यो, नंई घरे नारे सतावियो।
रूप देख्यां दया जो आवे, भग जावो बालक हँसके।
जो तुमारी खबर होय तो, नाग उठ जाय जागके।
अबे भागां तो कुल लाज आवे, अबे भाग्यां से केसी बने?
होनी होय से होवे ऐ नागण, नाग तो नाथ्यांई बने।
हार लो सिणगार लोनी, लोनी सवा लख मोरियां।
इतना ले घरे जावोनी बालक, नाग की दउं चोरियां।
कंई करूँ रे तेरा हार सिणगार, कंई करूँ रे सवा लख मूंदड़ो?
माता जसोदा मइयो बिलोवे, तेरा नाग की करूँ नेतणी।
सिरी बिदरां तो बन में डालूं हिंडोला।
तेरा नाग की करूँ डोरिया, छक चोर नागण पूंछ मरोड़ी।
नागण ने नाग जगाविया, उठोरे बलवंत जोधा।

बालक जूझण आविया, जाग्या हे नगरी का राजा।
इन्दर ज्यूंई गरना विया, मुगट उपरा झपट मारी।
कृष्ण ने दाव बचाविया, अन्न हो प्रभु धन्न हो थें।
राखो हमारी सुवागणी।
सिरी बिन्दरा जो बिंद में नाग नाथ्यो
मथरा में कंस पछाड़िया।

यमुना किनारे एक बार गोप-ग्वालों के संग श्रीकृष्ण कन्दुक क्रीड़ा कर रहे थे। इतने में गेंद उछलकर यमुना में गिर पड़ी। कृष्ण उसे लेने के लिये यमुना में कूद पड़े। वहाँ नाग और नागिन को सोया हुआ देखा। नागिन ने पूछा- हे बालक! क्या तुम यहाँ राह भूल गये हो या हमारे प्रति कोई आक्रोश है या तुम अपनी पत्नी के सताये यहाँ चले आये हो। कृष्ण बोले- हे नागिन! न तो मैं मार्ग भटक कर यहाँ आया हूँ। न ही मुझे तुम्हारे किसी दुश्मन ने भ्रमित किया है। न ही मेरे मन में तुम्हारे लिये कोई क्रोध है। और न ही मुझे मेरी पत्नी ने सताया है।

नागिन बोली- तब तो तुम शीघ्र यहाँ से भाग जाओ। यदि तुम्हारे यहाँ आने की खबर नाग को लग गई, तो वह जाग पड़ेगा। कृष्ण बोले- जब यहाँ तक आ ही गया हूँ तो अब यहाँ से मुँह छिपाकर भाग नहीं सकता। यदि भागता हूँ तो कुल लज्जित होता है। हे नागिन! अब तो जो भी होना होगा - वह होकर ही रहेगी। नाग को तो में नकेल डालकर सीधा कर दूँगा। नागिन कहने लगी- हे कृष्ण! तुम मेरे गले का हार ले लो, मेरे शरीर का श्रृँगार ले लो, सवा लाख मोहरें ले लो, और अपने घर लौट जाओ। कृष्ण बोले- तुम्हारा हार, श्रृँगार और सवा लाख मोहरें लेकर मैं क्या करूँगा? मैं तो तुम्हारे नाग को ही ले जाऊँगा, ताकि माता यशोदा उसे दही बिलौने की रस्सी के काम में ले सकेंगी। मैं भी वृन्दावन में उसकी रस्सी बनाकर हिंडोला डालूँगा।

इतना सुनते ही नागिन ने क्रोध में आकर नाग को झकझोर कर जगा दिया। कहने लगी- हे बलवान योद्धा! जागो, तुमसे युद्ध करने के लिये एक बालक आया है। नाग जैसे ही नींद से उठा, उसने जोर की फुँफकार मारी। कृष्ण ने सोच समझकर उसका दाँव व्यर्थ कर दिया। तब तो नागरानी उनसे प्रार्थना कर कहने लगी- हे प्रभो! आप धन्य है। आप मेरे सुहाग की रक्षा करो। आपके लिये तो इतना यश ही पर्याप्त होगा कि आपने कालिया जैसे नाग को नकेल बाँधा और मथुरा में कंस का वध किया। इस गीत का एक पाठान्तर और उपलब्ध है, जिस पर निमाड़ी-गुजराती का प्रभाव पड़ता है, यथा-

जल जमुना की पाल खेले, नंदजी को लाल।
खेले कंस को काल, जिन मांड्यो छे ख्याल।
चंडू पाटली को पान, छोटा मोटा रे संग बाल रे गुवाल
गवलन देखी रही काना को ख्याल।

आँख मिचौली (ढूँढना)

कृष्ण की आँख मिचौनी के सम्बन्धी लीलाएँ भी सुन्दर बन पड़ी हैं। इनका शैशव की क्रीड़ाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान है। चन्द्रसखी के गीत में वह कहती है- हे सखी! आज मुझे कृष्ण से मिलवादे। मैंने उन्हें चम्पा, चमेली और मोगरा की झाड़ियों में ढूँढा, किन्तु वे कहीं नहीं मिले। मथुरा, गोकुल और वृंदावन की गली-गली में ढूँढा, फिर भी वे नहीं मिले। राधा, रुक्मिणी के भवन में भी तलाश किया, किन्तु वहाँ भी न मिल सके। फिर याद आया- वे कुब्जा के घर तो अवश्य होंगे। यह सोच कुब्जा के घर गई तो वहाँ मिल गये। मैं उनसे लिपट गई। गीत देखिये-

चम्पा ढूंढ चमेली ढूंढी, मोगरा की ढूंढ आई कली-कली।
आज सखी मोंहे श्याम मिला दे, श्याम सुन्दर हें कौन गली।
मथरा ढूंढी, गोकुल ढूंढी, ढूंढी आई वृन्दावन ही गली-गली।
राधा ढूंडी, रुकमण ढूंढी, कुब्जा के घर जाय मिली।
चंद्रसखी भज बाल कृष्ण छबि, हरिचरनन लपटाई।

ब्रज की गोपियाँ ताँबे पीतल के घड़े लेकर, सिर पर 'चूमली' रखकर यमुना में जल भरने जाया करती थीं। वहाँ जाकर भगवती कात्यायनी देवी की पूजा और व्रत करने लगीं। वे वरदान माँगती है कि- हे महायोगिनी! आप नन्द नन्दन श्रीकृष्ण को हमारा पति बना दीजिये।

एक दिन यमुना में उन्होंने स्नान करने से पूर्व सब वस्त्र उतार दिये और जल क्रीड़ा करने लगीं। योगेश्वर कृष्ण से उनकी अभिलाषा छिपी न रह सकी। वे यमुना तट गये। उन्होंने सब गोपियों के वस्त्र उठाये और कदम्ब की डाली पर लेकर बैठ गये। जब गोपियाँ स्नान करके बाहर आईं तो देखा, वस्त्र तो गायब हैं। कृष्ण बोले- तुम वस्त्र लेना चाहो तो मुझसे आकर ले लो। कृष्ण की बात सुन अपने दोनों हाथों से गुप्तांगों को ढँककर वे जल से बाहर आईं और कपड़े माँगने लगीं। कृष्ण ने कहा- नग्नावस्था में तुमने जल स्नान करके जलदेव वरुण और भगवती यमुना का अपमान किया है। अत: दोनों हाथ जोड़कर वरुण देव से क्षमा माँगो। अब मैं तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण करूँगा। आने वाली शरद ऋतु में तुम मेरे साथ विहार करोगी, गीत देखिये-

आज सखी जमना के दुआरे, सब सखि मिल के कियो मनसूबो।
तांबा, पीतल घड़िया लिया ने, चोमल सिर पर धरी रे।
चीर छोड़ धरिया जमी पे, जमना में डूबी-डूबी न्हाय रे।
दूर कृष्ण आवता जो देख्या, नजर चुराई ने आया रे।
चीर चोली कृष्ण लिया उठाई, चड़िया कदंम का झाड़ रे।
न्हाई धोई साख बायर आवी, चीर चोली देखे तो नंई रे।
उंचा कदम चड़ि कृष्णजी बेठ्या, वी हे चोर हमारा रे।
हाथ जोड़ी विनती करे, अरे चीर चोली देवो नी नाथ रे।
जलम-जलम की दासी तुमारी, राखो लाज हमारी रे।

बरसाना आने का निमंत्रण

राधिका जी, श्रीकृष्ण को बरसाना आने का निमंत्रण देती हुई कहती हैं। हे कृष्ण! आपने भाद्रपद में अष्टमी को जन्म लिया। हे कृष्ण! बरसाना चलो। वहाँ मेरा तो पीहर है, किन्तु आपकी तो ससुराल है। हे कन्हाई! बाबा नन्द के ऊँचे-ऊँचे महल हैं, किन्तु वृषभानु का महल भी ऊँचे-ऊँचे झरोखों वाला है। हे कन्हैया! यदि आप गोकुल से मथुरा आयेंगे तो मैं तुम्हारी आरती मोतियों से करूँगी। हे कन्हाई! आपकी और मेरी प्रीत तो कब की है? यमुना जी जाते समय मुझे तो तुम्हारा घूँघट लेना पड़ेगा, यथा-

लाल कानो जनमियो भादवा रात रे।
बुध आठम की अद रात रे।
लाल काना चालो तो बरसाने चालो रे।
म्हारे पीयर थारो सासरो रे काना।
लाल काना उंचा बाबा नंद का महल रे।
उंचो झरोको ब्रजभान को।
लाल काना गोकुल सूं मथुरा आवे।
मोतीड़ा सूं बरसां धारी आरती।
लाल काना थारे म्हारे कबरी प्रीत रे।
जमुना जी जातां लाग्यो छेवड़ो।

एक और गीत में निमंत्रण देते हुए श्रीकृष्ण को भोजन के लिये बुलवाया जाता है। हे साँवरे! मेरी गली में आना। मैंने चुना हुआ बढ़िया भात तुम्हारे लिये बनाया है। हे साँवरे! आप वहीं भोजन करना। मैंने सोने की झारी में गंगाजल भर रखा है। हे साँवरे! जल भी वहीं पीना। मैंने आपके लिये पका पान, जिसमें कलाई का चूना लगा है- 'खाने के लिये रख छोड़ा है। हे साँवरे! आप वहीं आकर पान चबाना। मैंने आपके शयन के लिये लाल रंग का पलंग जिस पर रेशमी तकिया लगाया हुआ है। बिछाया है, श्याम! आप वहीं शयन करना। गीत देखिये-

सांवरा रे मेरी गली आना जी।
मेरी गली आना, मोहन की गली आना।
चुन-चुन चांवल भोजन बनाया।
सांवरे मेरी गली जीमना जी।
मोहन की गली जीमना जी।
सांवरा रे मेरी गली आवना जी।
सोना की झारी गंगा जल पानी।
सांवरा रे मेरी गली पीवना जी।
पक्का जो पान कलई का चूना।

सांवरा रे मेरी गली चाबना जी।
लाल पलंग मिसरू का तकिया।
सांवरा रे मेरी गली पोढ़ना जी।

संयोग श्रृँगार

राधा और कृष्ण बचपन से ही एक दूसरे के सखा थे। मालवी में दोनों के उद्दाम श्रृँगार की नहीं, अपितु सजग प्रेम की अभिव्यक्ति मिलती है। दोनों जब तरूणाई की लुनाई में आते हैं, तब हृदय में उमड़ता प्रेम वैवाहिक बंधनों में परिवर्तित हो जाता है। इस विवाह का चित्रण शास्त्र में कहीं उपलब्ध नहीं होता। राधा-कृष्ण दो शरीर एक प्राण थे। मालवा में महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले-चन्द्रसखी के इस गीत की धुन बड़ी ही मनमोहक है।

राधा चाहती हैं कि उसके प्रियतम श्रीकृष्ण उसका अपने हाथों श्रृँगार करें, इसलिये वे अपने दोनों हाथ रंग में सने होने का बहाना करती हुई, कृष्ण के हाथों अपना श्रृँगार करवाना चाहती हैं। राधाजी कहती हैं- हे कृष्ण! आप मेरे हाथों में 'पोंची' नामक आभूषण पहिना दें, मेरी रखड़ी नामक आभूषण में 'रत्न' जड़वा दें। राधा अपने नाक में बेसर (नथ) पहिने थी, गले में हँसुली नामक आभूषण सुशोभित था। शरीर पर सुन्दर साड़ी पहिने हाथों में चुड़ला शोभायमान था। गले के गजरे में भी रत्न जड़े थे। पाँवों में पायल सुशोभित थी। अँगुलियों में बिछिया पहिने थी। घुँघरू भी रत्न जड़ित थे। अणवट की शोभा भी न्यारी थी। फिर भी कुछ आभूषण पहन नहीं पाई थी और रंग खेलने लगी थी। इसलिये प्रिय कृष्ण के हाथों वे उनको पहिनने की इच्छा कर रही थी। कृष्ण ने राधे का मान रखा। उनके संग फाग खेलने लगे। चन्द्रसखी अपने आराध्य राधा कृष्ण की शोभा का वर्णन कर उनके प्रति अनुराग व्यक्त करती हैं। मालवी की मोहक धुन में गीत अवलोकनीय है।

गोविन्दा पोंची तो पेना दो, मेरे रंग से भरे दोनूं हात।
सीस राधेजी के भम्मर सोवे, काने राधेजी के झालर सोवे।
तो रखड़ी में रतन जड़ावे, गोविन्दा पोंची तो पेना दो,
मुखड़े राधेजी के बेसर सोवे, अंगे राधेजी के साड़ी सोवे,
तो गजरा में जड़यो रे जड़ावे, गोविन्दा पोंची तो पेनादो-
हाथे राधे जीके चुड़ला सोवे, हिवड़े राधेजी के हांसल सोवे,
पांवे राधेजी के पायल सोवे, उंगलियां राधेजी के बिछियां सोवे।
तो घुंघरू में जड्यारे जड़ाव, गोविन्दा पोंची तो पेनादो।
गोविन्दा पोंची तो पेनादो, चन्द्रसखी ब्रज बाल की शोभा,
तो हरिचरणन के रूझान, म्हाराजा प्रभू हरि चरणन में रूझान।
अरी वो जा दिन देखूँ, नजर भर आली री।
में तो वा दिन रंग बनाऊँगा, गोविन्दा पोंची तो पेना दो,
म्हारा रंग से भऱ्या दोनूं हात।

ओढ़नी

राधा के महल के बाहर कृष्ण खड़े हैं। शीतकाल की रात्रि है। राधाजी कृष्ण से अपने लिये ओढ़नी की जिद करती हैं। तब कृष्ण कहते हैं– राधेजी! तुम तो पागल हो। मेरे यहाँ तो सोलह सौ स्त्रियाँ हैं, मैं तुम्हारे लिये ओढ़नी (साड़ी) कहाँ से लाऊँ? तब राधिका जी अपनी माँ पर आक्षेप करती कहती हैं– मेरी माँ ने मुझे व्यर्थ ही जन्म दिया। पैदा होते ही मुझे जहर देकर क्यों न मार डाला? मेरे बाप ने मेरा व्यर्थ ही विवाह किया, जिनको गुवाल जैसा जामाता मिला। इतना सुनते ही कृष्ण जी रिसा गये। तुरन्त हाट बाजार की ओर चल दिये। उन्होंने एक बजाज की दूकान खुलवाकर ओढ़नी का मोल करना प्रारम्भ किया। ओढ़नी का मोल पाँच सौ मोहरें बताया गया। बजाजी बोला– ओढ़नी की विशेषता यह है कि इसके चारों पल्लुओं पर हीरे जड़े हुए हैं। बीच में मोती के फूल बने हैं। कृष्ण जी पाँच सौ मोहरें देकर ओढ़नी घर ले आये। तब कहीं जाकर राधा जी का रूठना बंद हुआ।

हे माता! तुमने मुझे जीवन दान दिया। तुमने मेरे लिये राजा सा वर ढूँढा। मेरे पिता ने भी मेरे लिए कृष्ण सा वर ढूँढा। जो कोई इस ओढ़नी को गाता है, उसे गंगा स्नान का पुण्य मिलता है। विवाहिता को पुत्र की प्राप्ति होती है और उसका सौभाग्य अखण्ड रहता है। गीत दृष्टव्य है–

ठंडी राते आया कृष्ण जी, राधेजी के ओढ़नी की खात।
कृष्ण जी लई दो म्हारे ओढ़नी जी।
गेल्या हो राधेजी तम बावला, म्हारे सोले सें नार।
कां से लई दां, थांके ओढ़नी? भली हो जिवई म्हारी मांय।
जन्मी ने दियो क्योंनी झेर?
भली हो परणाई म्हारा बापने, वर भी मल्या जिके गुवाल।
इतरोई सुणी ने कृष्ण जी रिसाविया, गिया तुरती हाट बजार।
कृष्ण जी लइदो म्हारे ओढ़नी।
हेड़ो-हेड़ो वो बजाजी एक ओढ़नी।
हमके हे ओढ़नी को चाव, कृष्ण जी मोलावे ओढ़नी।
ओढ़नी का रुप्या पांच सो, मोरां लाजो पचास।
कृष्ण जी मोलावे ओढ़नी।
ओढ़नी का दांगा रूप्या पांच सो, मोरां रो अन्त ने पार।
चारी पल्ले हो कृष्ण जी हीरा जड़्या, बिच मांय मोती केरा फूल।
ओढ़नी लई ने क्रस्ने घरे आविया, ओढ़ी राधेजी नार।
भली वो जिवइ म्हारी माइली, वर मिल्या राज दरबार।
भली वो परणाई बाप ने, बर मिल्या कृष्णे भगवान।
गावे बजावे गंगा न्हावसी, पावसी परणी पुत्तर खेलाय।

बूढी जो गावें गंगा न्हावसी, एवासी रो अखण्ड स्वात।
कृष्ण जी मोलावे ओढ़नी।

राधा-कृष्ण की मात्र प्रेमिका ही नहीं हैं। मालवी लोक साहित्य ने तो उसे परिणीता बतलाया है। मालवा के मध्यवर्गीय जनजीवन से प्राप्त एक मर्म स्पर्शी धुन एवं भाव पूर्ण गीत से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि उनकी सगाई और विवाह विधिवत् हुआ था। दोनों का प्रेम, पूर्व राग पर आधारित है। राधा नित प्रति यशोदा के घर खेलने जाती है, किन्तु राधा की माता नहीं चाहती थी कि वह नन्द जी के घर खेलने जाये। क्योंकि उन्होंने यह बात सुन रखी थी कि कृष्ण कभी भी राधा को अगुवा करके ले जा सकता है। राधा के द्वारा हठ किये जाने पर वे उसे खरी खोटी सुना डालती हैं। किन्तु सखियों द्वारा राधा की माता को समझाये जाने पर वे सगाई के लिये तैयार हो जाती हैं।

राधा भी उनका प्रस्ताव प्रथमत: इसलिये नहीं मानती, क्योंकि कृष्ण लोक मर्यादा के विरुद्ध माखन चोरी करते हैं। अपने कुल की मर्यादा छोड़कर गुवालों से प्रीत करते हैं। कृष्ण को जब यह तथ्य विदित होता है तो वे भी माता यशोदा से सगाई की चर्चा न करने की बात करते हैं। वे व्यंग्य में कहते हैं- माता! यदि राधा तुम्हारे मन में इतनी ही भाती हो तो उसके पैरों में गिर कर मना लेना। किन्तु सखियों की मध्यस्थता से वे विवाह के लिये राजी हो जाते हैं। सगाई और विवाह की बात पक्की हो जाने पर राधा श्रृँगार करने लगती हैं। वेणी गूँथती हैं। अपने मृगनयनी से नेत्रों से कृष्ण पर मोहक बाण छोड़ती है। कृष्ण भी उनके अंग-प्रत्यंग की शोभा निरख विमोहित हो जाते हैं। उनके सिर पर मोर मुकुट शोभायमान है। गले में वैजयन्ती माला धारण किये हैं, तुरन्त 'आला-गीला' बाँस कटवाया जाता है। नौखण्डों में चँवरी रची जाती है। राधा जी की माता श्रीकृष्ण की 'सासु' आरती करती है। कंचन थाल से रत्नाभूषण लुटाये जाते हैं। वैवाहिक लोकाचार की समाप्ति पर बड़े-बड़े ढोल-नगाड़े बजने लगते हैं। सखियाँ मंगलगीत गाती हैं। झालर की झनकार हो रही है। राधा की माता कहती हैं- हमारे पास दहेज के नाम पर देने को कुछ नहीं है। यह मेरी पुत्री राधा जो सर्वगुण सम्पन्न है, इसे मैं आज से आपको सौंप रही हूँ। राधा कृष्ण की युगल जोड़ी मंडप के मध्य शोभायमान है। इस हृदय स्पर्शी एवं सुमधुर संगीत पूर्ण गीत की बानगी देखिये-

या राधा हे लाड़ली जी, नंद घर खेलण जाय।
चंचर देखे पिचोत्तर देखे, यशोदा के मन भाय।
या राधा म्हारा श्याम ने जी कंई,
गोविन्द पुर के हाट के जोड़ी सोवती ई ई ई।
सिरी राधे गोपाल सगाई स्याम की।
तने में बरनी थी लाड़ली, के तू दूर खेलण मत जाय।
नंद मोवन हे लाड़ला, तने जोरी से ले जाय।
के जोड़ी सोवती, सखि नई करें सगाई।

वी नंई करें बियाव, अंतरजामी सांवला जी।
दध माखन का चोर, ओ माता तेरे मन बसे।
तो पांवां पड़-पड़ लेय, सखि नख चख गेणो पेर के।
लटियां बेस बणाय, मृग्य बाण का बाग में जी कंई।
मोवन बिसरयो जाय।
सात सखि का झूम में, दरसण चली मुरार।
रोम रोम सब निरखियो, गले निरखी फुल माल।
सखि मोर मुगट माथे धर्‌या, गरे वैजन्ती मार।
आला गिला बांस कटाविया, चंवरयां दीवी चुणाय।
नव खण में चंवर्‌यां रंची, रेसम तारा लगाया।
राधा जी की माता बायर आव जो, जोड़ी ऊबी भार।
कर जोड़ी ने की आरती कंई, भर लो कंचन-धार।
के जोड़ी सोवती, सिरी राधे गोपाल सगाई स्याम की।
परणापत कर उतर्‌या जी कांई बाजा जंगी ढोल।
कंई-कंई बाजा बाजिया जी, सिरी राधे गोपाल सगाई स्याम की।
हरि लेणा देणा कुछ नहीं, यई जगत की रीत।

राधा-कृष्ण की जोड़ी रंगमहल में सुशोभित है। उनके श्रृँगार की महिमा कही नहीं जा सकती। दोनों गृहस्थ सुख अनुभव करने लगे हैं। किन्तु कृष्ण तो बहु वल्लभ हैं। वे कुब्जा के प्रेम में पड़ जाते हैं। और राधा को भूल जाते हैं। राधा उनसे रूठ जाती है। एक दिन जब वे राधा के महल में जाते हैं, तो वहाँ द्वार बंद पाते हैं। कृष्ण फाटक के बाहर खड़े होकर राधा को आवाज लगाते हैं। राधा द्वार खोलकर उन्हें भीतर ले जाती हैं। कहती हैं- यदि आप मुझ पर अप्रसन्न हैं, तो कुब्जा के घर ही रहिये। नरसी स्वामी कहते हैं- हे साँवरे! अपने चरणों का आधार बनाकर राधा को रखिये। गीत के बोल हैं-

आड़ा जड़िया दोई किवाड़, सुन्दर, मुख से बोल्या नई।
घुरकी उनी काली बादली, उन्डो गरजे हो मेघ।
झिर मिर मेवो बरसियो, बरसे अखण्ड हो धार।
कृष्ण जी ऊबा बायरा, राधा मंदर माय।
निकलो राधा बायरा, चलें रास के मांय।
झटक बिछाइयों कालो कामलो, जीं पर बेठो म्हारा नाथ।
हम पर मन मेला हुवा, जाव कुबला के दुआर।
जिन घर फुलड़ा बाइया, वा घर जावो म्हारा नाथ।
राधेजी यों कर बोलिया, उन पर आदर भाव।
हात जोड़ी गोपी बीनती, परभू राखो नी म्हारी लाज।

गृहस्थ जीवन की झाँकी के अन्तर्गत राधा यमुना के तट पर पानी भरती दिखाई देती हैं। वे तो चली यमुना का जल कैसे भरूँ? रास्ता बड़ा ऊबड़ खाबड़ है। और सिर पर दो-दो गगरियों का बोझ है, सास खराब है और ननद रूठीली है, तथापि देवर लाड़ला। हुआ भी यही, जब वे घर के द्वार पर आई तो देवर ने उनके सिर से गगरिया उतार दी। गीत के बोल देखिये-

जल कैसे भरूँ जमना जी को,
बाट भी चलना, उबट भी चलना,
सिर पर राम मेरे दो दो गगरिया,
सास बुरी ने ननद हटीली।
बोझ धर्‌यो राधा प्यारी के।
छोटो देवर म्हारो घणो लाड़लो।
चुपके से उतारी उने दो-दो गगरी।

श्रावण मास और भादों के महीने मालवी नारियों के उत्सव-पर्वों एवं शृँगार के मास होते हैं। नारियाँ सज-धज कर गणगौर आदि के उत्सव आयोजित करती हैं। बागों में झूले डाले जाते हैं। शृँगारिक गीत गाये जाते हैं। इन गीतों का सम्बन्ध भी कृष्ण से होता है, तो कृष्ण उनसे छेड़छाड़ करते हैं। वे भी शृँगारिक मर्म भरी बातें करने लगती हैं। कहती हैं- यह यौवन सम्पदा चार दिनों की है। हे मेरे स्वामी! इस सरोवर की पाल पर दो आम्र वृक्ष सुशोभित हैं। हे कन्हाई! तुम तो बावले हो। कच्ची कली को मत तोड़ना। चार दिनों में ये पक जायेंगी। डालियाँ झुकने दो। गीत को माड़ की धुन में गाया जाता है।

इणी दो सखरिया की पाळ, आंबा दोई बोइया जी म्हारा राज।
काची कला मती तोड़ो कन्हाई, थें तो बावला होगिया जी म्हारा राज।
पाकण दे दिन चार, झुकन दो डालियां जी म्हारा राज।
हिवड़ा पे हात न डाल, नीतर के, गालियां दूंगी म्हारा राज।
इणी रे सरवरिया री पाल, बणी दोय बावड़ी जी म्हारा राज।
नीर भरे पणियारी जी, नाजुकया तो कामणी जी म्हारा राज।

इधर कंस ने कृष्ण को लेने के लिये अक्रूरजी को गोकुल भेजा। यह खबर सुनकर गोप-गोपियाँ, गायें, सखियाँ, राधा तथा नन्द-यशोदा सहित समस्त ब्रजवासी व्याकुल हो गये। श्रीकृष्ण-बलराम ने उन सबको धैर्य बँधाया। तुरन्त लौट आने का वादा किया और मथुरा के लिए प्रस्थान किया। मथुरा में पहुँचने पर कुब्जा को सौन्दर्य एवं भक्ति का वरदान दिया। बाद में वे धनुष यज्ञशाला में पहुँचे। वहाँ एक अद्भुत धनुष देखा। उन्होंने उसे बलपूर्वक उठा लिया। टुकड़े-टुकड़े कर डाले। बाद में मथुरा की शोभा देखने निकले।

इधर कंस को अपशकुन होने लगे। फिर भी कंस ने मल्ल क्रीड़ा का आयोजन किया। नन्द

– गोपों को बुलवाया गया। कृष्ण ने देखा के कुवलयापीड़ नामक हाथी दरवाजे पर खड़ा है। जैसे ही यह कृष्ण को मारने के लिये आगे बढ़ा, उन्होंने उसकी सूँड पकड़ उसे सौ हाथ पीछे धकेल दिया और मार डाला। यह सुन चाणूर और मुश्टिक मल्ल भी युद्ध के लिये आ गये। कृष्ण ने उन्हें भी मार गिराया। पश्चात् मामा कंस को मार कर उनका भी उद्धार किया। कंस की मृत्यु पर उनकी मामियों द्वारा किया गया विलाप मालवी लोकगीत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। गीत देखिये–

दूजी जो गोखां बेठिया रामा, मार्‌या हे मामा कंस।
वांई से हरि चालिया रामा, गिया माता के पास।
उठोनी माता करोनी आरती, गावों नी मंगलाचार।
अरजुन गावों नी गीता सार।
काहें की करूँ वाला आरती, काहे का मंगलाचार?
मां की जो कूंखा जनमियो, थांने मार्‌यो हे मामो कंस।
वी ओढ़ाता वाला चूनड़ी, पंचां में रखता सोब।
वांई से पिरभु चालिया रामा, गिया मामी के पास।
उठोनी मामी करोनी आरती, गावोनी मंगलाचार।
थांने पेराई लम्बी कांचली, बेरी तो होया आप।
उग्रसेन होकम उठाविया, मामी सुणो हमारी बात।
सोला सो गोप्यो लोनी लार में, मामी करो बिरज को राज।
अरजुन गावों नी गीतासार।

श्रीकृष्ण मथुरा गये तो वहीं के होकर रह गये। उन्होंने अक्रूरजी के पास जाकर कहा– आप हमारे हितैषी और मित्र हैं। आप पांडवों का हित करने के लिये, कुशल जानने के लिये हस्तिनापुर जायें। वे माता कुन्ती के साथ दु:खमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अक्रूर जी हस्तिनापुर गये, कुशल पूछी। अक्रूरजी की बहिन कुन्ती उनके पास आकर बैठी। नेत्रों में आँसू भर आये। पूछा– कृष्ण कभी यहाँ आकर इन्हें सांत्वना देंगे? अक्रूरजी उन्हें आश्वस्त कर मथुरा लौट आये।

इधर जरासंध अपने दामाद की हत्या से कुपित था। उसने मथुरा पर चढ़ाई कर दी। शिशुपाल और कालयवन को भी युद्ध के लिये उकसाया। कृष्ण अपने परिजनों को लेकर द्वारिका पहुँचे। इसके पश्चात् बलराम का विवाह हुआ। इधर कृष्ण के प्रति रुक्मिणी अनुरक्त थी। किन्तु भाई रुक्मी इस विवाह के विरूद्ध था। एक ब्राह्मण कृष्ण के पास यह संदेशा लेकर पहुँचता है। रुक्मिणी ने कहा– हे ब्राह्मण देव! तुम मेरा पत्र लेकर जाओ। मैं बार–बार तुम्हें समझाती हूँ। कृष्ण को कहना– हे ईश्वर! हृदय में ज्ञान दो, जिससे आँखें प्रभु के दर्शन पा जायें। आगे लिखा – वे जिस समय पूजा करने के लिये शिव मन्दिर जा रही हों। तब उसका हरण करके अपने साथ ले जायें। गीत इस प्रकार है–

लई जावों बिरामणी पाती, म्हूं थोंय बार-बार समझाती।
ध्यान करो, शिव शंकर मन में, भगती करो राखो हिरदा में।
रुक्मिणी की विनय लई जावों, लिख पांती हम तुम कूं देवां।
बाकी अरज हम मुख से केवां, चतुर कंवर जी हे नंदजी का।
तम उनके दीजो या पाती, म्हूँ थोंय बार बार समझाती।
मन्दिर जावां पूजा करवाने, वांई पोंची ने म्हारो हरण करी ने,
अपणा संग में लई जावे।

कृष्ण द्वारा रुक्मिणी का हरण कर लिया जाता है। विवाह कुण्डनपुर में होता है। द्वारिका की शोभा वर्णनातीत है। जहाँ-तहाँ रुक्मिणी हरण की कथाएँ गाई जाने लगती हैं। मालवी लोकगीतों में भी पत्रिका प्रसंग उपलब्ध होता है, किन्तु इन लोकगीतों में कृष्ण के विधिवत् विवाह का प्रसंग उनके सास-ससुर की सहमति से होना दर्शाया गया है। इसलिये वैवाहिक लोकाचार में जिन-जिन प्रथाओं, लोकाचार, लोकरीतियों, रूढ़ियों एवं टोने आदि का समावेश होना चाहिए। वे सब लोकतत्त्व इस गीत में उभर कर आये हैं। श्रीकृष्ण दूल्हा बने हैं। मालवा में लाड़े को प्रथमत: स्नान करवाया जाता है। एक सखी दूसरी से पूछती है- आज न तो गर्जना हुई न ही मेघ वृष्टि, फिर आँगन में कीच क्यों मचा? दूसरी उत्तर देती है- हे सखी! आज नंदराय जी का बेटा कृष्ण आँगन में स्नान करने बैठा है। इसलिये आँगन में कीच मच गया है। गीत देखिये-

गाज्यो न कड़क्यों म्हारी सई, मेवलो नी बरस्यो।
आंगन कीचड़ म्हारी सई, क्यों मच्यो जी।
आज नंद राय जी कुंवर नहावाने बेठ्या,
तो आंगन कीच्यों मच्यो।

लाड़े को स्नान करवाने के बाद 'वर निकासी' की रस्म की जाती है। दूल्हा घोड़ी पर बैठ गया है। बराती सजते हैं, बारात के सभी मनुष्यों के शरीर परिधानों से सुसज्जित हैं। हे प्यारे! इस घोड़ी पर बैठिये और इसकी लगाम मरोड़िये। गीत देखिये-

केसरिया केसरिया सब सिणगारिया।
दुले कृष्ण जी की जान दउजी पधार्‌या।
लाड़ला चढ़ो अणी घोड़ी पर।
चढ़ो अणी घोड़ी ने बाग मरोड़ी।
कान्हाजी जानें साथीड़ा पधार्‌या।

घोड़ी चढ़ाई

एक लोकगीत में कृष्णजी की बारात चढ़ने का चित्र उपलब्ध होता है। सभी बाराती केशरिया वस्त्र पहिने हुए हैं। कृष्ण तो दूल्हा बने बैठे हैं, बलराम जी भी घोड़े पर बैठे हैं। हे कृष्ण! आप भी घोड़ी पर चढ़कर बैठ जायें, यथा-

केसरिया केसरिया सब सणगारिया,
दूल्हे किरस्ना जी की जान, दऊजी पधारिया।
लाडला चढ़ो अणी घोड़ी पर, कान्हाजी की जाने।
साथीड़ा पधारिया।
चढ़ो अणी घोड़ी ने बाग मरोड़ी।
लाड़ला चढ़ो अणी घोड़ी पर।
दुलेजी की जान साथेड़ा पधार्‌या।
लाड़ला चढ़ो अणी घोड़ी पर।

कृष्ण दूल्हे के वेश में घोड़ी पर बैठे हैं। मालवी लोकप्रथाओं एवं रीति रिवाजों के अनुसार 'घोड़ी चढ़ी' की रस्मों में अधिकतर स्त्रियों का स्थान होता है। इस समय अनेक टोटके किये जाते हैं। ताकि लाड़े को नजर न लग सके। इसके बाद नेग चुकाया जाता है। वर की माता लाड़े की आँखों में वात्सल्य का प्रतीक अंजन लगाती हैं। स्तनपान करवाती हैं। उसे सूचित कर दिया जाता है। इस गीत में बलराम जी की पत्नी कृष्ण की आँखों में अंजन लगाती हैं। वे भी मातृ तुल्य हैं। कहती हैं- हे देवर! तुम्हारे पलकों की शोभा को मैंने अंकित कर दिया है। तुम हमें हमारा नेग चुका दो। कृष्ण कहते हैं- हीरे, मोती, रत्नादि बहुमूल्य वस्तुएँ तथा एक सहस्त्र ग्राम मैं तुम्हें नेग में देता हूँ। भौजाई कहती है- इसकी मुझे आवश्यकता नहीं। नव वधू के द्वारा मेरे चरणों में बार-बार चरण वंदन कर लेने से ही मेरा नेग चुक जायेगा। गीत देखिये-

काजल आंजना

काजर सारन आई हो बनाजी, हलधर जी नारी जी।
सुबरन थार चमकलो दीवलो, हात कजलोटी न्यारी जी।
दे दो देवर नेग हमारो, पल की न करां उधारी जी।
एक नेने में काजर आंज्यो, दूजी रखी उजियारी जी।
नाचइये मोंई रतन पदारथ, गोकुल गाम हमारी जी।
एक बार लाड़ी पग लागे, नेग हमारो आयो जी।

बारात द्वारिका से प्रस्थित होती है, कुण्डलपुर की सीमा के निकट पुष्पोद्यान में ठहरती है। यादव पुर (द्वारिका) का वर है। दुल्हिन रुक्मिणी जी हैं। हे सरदारों! आप बारात में हाथी, घोड़े, कटार और बसन्ती वर्ण की जोड़ी लाइये। हे सायब! मैंने पहिले ही मना किया था, उदयापुर की ओर न जाओ। यदि वहाँ गये तो आपको वहाँ भी कामिनियाँ विमोहित कर लेंगी। गीत देखिये-

राजा रुक्मण को फूलां से, हरियालो बन्नो।
लुभाय रह्यो जी माराज।

कुंडनपुर को मांडो जीमें, जाधवपुर का बाराती
परणने वाली रुक्मिणी जी, दूला सिरी भगवान।
हाती लाजो, घोड़ा लाजो, लाजो कमर कटार।
जोड़ी बसंती लेता आजो, आप जेसा सिरदार
में थोंए बरजूं सायबजी, उदयापुर मती जाव।
उदयापुर की कामणी जी, थांय लेगी बिलमाय।

कुंडनपुर के द्वार पर बारात पहुँचती है। लोकप्रथा में द्वाराचार का विशेष महत्त्व होता है। इसमें दूल्हे के साथ बारातियों की अगवानी की जाती है। स्त्रियाँ दूल्हे के रूप को जी भरकर देखती हैं। एक गीत में दूल्हे को अल्पवयस्क बताया गया है। मालवा में प्रचलित रीति-रिवाज का यह लोकरूप है। गीत में कहा गया है कि मेरा प्यारा दूल्हा बालक है। यशोदा ने उसे गोदी में खिलाया है। हे प्यारे वर! तेरी पगड़ी और कला बत्तू किया हुआ पायजामा बहुत सुन्दर है। कृष्ण एक बड़ा सा अंगा अपने शरीर पर धारण किये हैं, जिसमें विचित्र जेब लगे हुए हैं, यथा-

बनाजी की शोभा बरणी नी जाय,
कृष्णजी की शोभा बरणी नी जाय।
बनाजी तम अंगो पेरो भारी।
जणमें खीस्यो बोत अजब को।
बनाजी हम कुंदनपुर की नारी।
हम तो लगां तमारी सारी।
माराज बालक बनड़ो।
बनाजी तम देवी के घर जनमिया,
जसोदा ने खिलाया गोद।
म्हाराज बालक बनड़ो।
बनाजी थारी पगड़ी देखी,
थारो जामो तिल्लो बोत अजब को।
बनाजी शोभा बरनी नी जाय।

मालवी लोक संस्कृति में विवाह के अवसर पर 'गाळ गीत' गाये जाते हैं। इनके माध्यम से भाई, जमाई, समधी-समधिन आदि की प्रशस्ति, उनके रूप-गुणों का वर्णन किया जाता है। कहीं व्यंग्य से उनके कार्यों पर मीठी चुटकी भी ली जाती है।

इस गीत में दूल्हा बने श्रीकृष्ण के प्रति 'गाल गीत' गाया जाता है। हे कृष्ण! हम आपका किस भाँति उपालम्भ करें? आप तो दो बाप से पैदा हुए हो? एक बाप तो आपका मथुरा में है, जबकि दूसरा गोकुल में। किसकी कोख से आपने जन्म लिया और किसने गोदी में खिलाया? देवकी ने आपको जन्म दिया और यशोदा ने गोद में खिलाया। गीत के बोल इस प्रकार हैं-

बनाजी केसी गाली गांवा हो राज?
दो बाबुल को जायो।
एक बाप मथुरा बसेजी,
दूजो गोकुल गाम।
कोणसी कूखे जन्म लियो जी?
कोन खिलाया गोद हो राज?
देवकी कूखां जनमियो जी,
जसोदा ने खिलाया गोद म्हारा राज।
दो बाबुल को जायो।
नंद को केवां के वासुदेव को केवां,
जण को ठीक न ढांवणी म्हारा राज।
दो बाबुल को जायो।

एक और गीत देखिये–

स्वामी कुंदनपुर की नारी जी।
मोहन कूं गावे गारी।
स्याम रुक्मण के पिराण पियारे–
म्हांके नेंनन के तारे।
जगत मन भावना रे।
स्याम तेरी भुवा बड़ी छणयारी।
जींने सुत जाये करण कुंवारी।
ताकी लगी सूरज से आंख,
वा रंग मचावनी जी।
स्याम तेरी सगी सुभद्रा बेन,
जीनें अरजुन सूं लगाये नेन।
वी तो अरजुन रूप लुभावना जी।

एक और पाठान्तर देखिये–

गारी गावे कुदनपुर की नारी, विनकुं दिया पान सूपारी।
तमतो नीका, हरीजी भी नीका, तमने तोड़्या बिरज का छींका।
थारी बेन सुभद्रा प्यारी, विनकूं अरजुन हर गयो भारी।
भ्वाजी तमारी दरोपती कहिये, पांच पुरस एक नारी।
तम तो छोटा, हरीजी भी छोटा, थारे संग नारद जी मोटा।
तुमने जनम लियो मथरा में, गोकुल केसे आया जी।

तम तो जदुकुल मां ही जनम्यां, फेर गोपसुत कसां केवाया जी।
तमतो मुरारी तीन लोक का ठाकुर, माया थारी बड़ी भुलानी।
कणयर नी जाणी जाय।

कुंदनपुर की नारियाँ श्रीकृष्ण को देख-देखकर गाल गीत गा रही हैं। कहती हैं- हे श्याम! आप रुक्मिणी के प्राण प्यारे हो। हमारे नेत्रों के तारे हो और संसार को प्रिय हो। हे कृष्ण! तुम्हारी भुवा स्वैच्छाचारिणी है। उन्होंने कुँआरी होकर भी कर्ण को जन्म दिया। वह सूर्य के प्रति अनुरक्त हुई। हे कृष्ण! तुम्हारी बहिन सुभद्रा भी अर्जुन पर मुग्ध हो गई थी, तब उस वीर ने उसे हर लिया।

एक और गाल गीत उपलब्ध है, जो समधी-समधिन को लक्ष्य कर गाया जाता है। इसमें उपमा अलंकार की सरस व्यंजना मिलती है। इसमें समधिन को कुंजड़ी (सब्जी बेचने वाली) बताकर उसके आभूषणों की तुलना सब्जी से की गई है। लोकसाहित्य में उपमा का ऐसा सुन्दर उदाहरण आज तक दृष्टिगत नहीं हो पाया। यथा- उसके शीश फूल की तुलना अदरक से, झुमके की लहसुन से, पोंची की तुलना बालोर से, लहंगे की अरबी से, साड़ी की मैंथी से, कंचुकी की रींगणे से, कंकण की करेले से, मोंगरी की तुलना किकोड़े से, लम्बी चोटी की तुलना मूले से की गई है। गिलकी की गिलगिल तथा तुरई की तुनतुन की आवाज और कद्दू की बड़े ढोल से उपमा दी गई है। सब्जियों से आभूषणों की समता बताकर लोकगीत में जिन उपमाओं को प्रदर्शित किया गया है, वह अन्य लोकसाहित्य में विरल है-

ब्याई जी वारी कुंजड़ी बुलाई, कंई-कंई सोदो लाई जी?
अदरक को भंवर, लसन का झुमका, बालोर को बाजूबंद लाई जी।
अरबी को घाघरो ने मेथी की साड़ी, कोथमीर की कांचली लाई जी।
मोग्या का बिछिया ने कांदा का अणवट, रीगण का बाजूबंद लाई जी।
करेला का कांकण, कीकोड़ा की मोगरी, मूंरा की लम्बी चोरी लाई री।
गिलक्या की गिलगिल, तुरई की तुनतुन।
कोळा का जंगी ढोल लाई जी, दई म्हारी कुंजड़ी आई जी।

कृष्ण रुक्मिणी का विवाह सानंद सम्पन्न हुआ। कुण्डलपुर सजाया गया। घर-घर मंगल वाद्य बज रहे हैं। मंगल ध्वनि हो रही है। रुक्मिणी की विदाई हो रही है। विदाई का दृश्य कारुणिक होता है। माता कहती है- हे पुत्री! तेरे खेलने के गुड्डा-गुड्डी तो कोठी पर रखे हैं। रुक्मिणी कहती हैं- हे साँवरे! तुमने विवाह करके मुझसे मेरे पिता और माता की गोद छुड़वा दी है। इनके स्नेह से वंचित कर दिया है। वर्षों से पालित कन्या से विलग होने के कारण तथा भावी जीवन की अनिश्चितता से माता-पिता का हृदय विषाद में डूब जाता है। इसका उल्लेख 'घणी मुस्किल से उछेरीयो' वाक्य में हो जाता है। इस करुण रस की अभिव्यक्ति में 'मिलती तो जावजे' वाक्य में 'तो' शब्द से ध्वनित उदासीनता तथा 'डेला-डेली' को देख, 'स्मरण' नामक

संचारी भाव का प्रगटीकरण हो जाता है। बाद में आलम्बन की मानसिक दशा का वर्णन किया गया है।

घणी मुस्किल सूं उछेरी हे वो, म्हारी बेटी।
मिलती तो जावजे हो।
थारा डेला डेली कोठी पर पड़्या,
तने कुंदनपुर छोड़ायो, रे बनड़ा।
दुआरका बसाई रे बनड़ा।
माँ बाप छुड़ाया रे बनड़ा।
मिलती तो जावजे हो।

बारात द्वारिका लौटती है। कालान्तर में प्रद्युम्न का जन्म होता है। इसके पश्चात् महाभारत की कथा आती है। कृष्ण के मथुरा गमन कर राधा की विकलता बढ़ जाती है। एक बारहमासा में इसका चित्रण इस प्रकार उपलब्ध है-

देखो री नंद लाल कनइयो प्यारो।
बंसी बजा बेरी, बिरजकुल हाय लजावे री।
असाड़ आसा करी हमारी, अनपाणी नी भावे री।
सावण आवण के-गये सजनी, सब सखि तीज मनावे री।
नख सिख गेणो पेर के सजनी, अबीर कंकू उड़ावे री।
भादव मइन्ये रेन अंदारी, गरज गरज डरफावे री।
दादर मोर पपइया बोले, बेकल सबद सुण वे री।
क्वांर मइन्यो देख अंबिका, राधा पूजण जावे री।
कातरक मइन्यो उत्तम कइये, सब कातरक में न्हावे री।
राधा से पिरभू उठ्योनी जावे, बेकल पिराण गंवावे री।
अगण मईने ऊधोजी तो, पाती लइ के आवे री।
केवे स्याम के उद्धव थारे, राधा घरे बुलावे री।
पोस माइन्यो उत्तम केवे, ठंडी रेन सतावे री।
ब्याकुल हूं दिन रेन नाथ मूँ, थारे दया नी आवे री।

न्यौछावर

मालवी लोक प्रथाओं में दूल्हा-दुलहिन के ऊपर न्यौछावर किया जाता है। एक गीत में इसकी अभिव्यक्ति इस प्रकार मिलती है-

बना पर मोती वारूँ रे, जो वारूँ सोई थोड़ा।
बना के सिर सोना रो सेवरो बिराजे।

मोहन रूप निहारूँ रे, बना पर मोती वारूँ रे।
बेन सोदरां करे रे आतरी, पल पल पिरान जुहारूँ रे।
बना पर मोती वारूँ सोई थोड़ा।
बना पर मोती वारूँ रे।

मोहन माला– भगवान कृष्ण को अति प्रिय है। जब कुंज की झाड़ियों में गोपियों के साथ लुकते–छिपते फिरते हैं, तब उनकी माला गुम जाती है। तब उन्हें भोजन करने को कहकर गोपी उस माला को ढूँढ लाने की बात करती है। इसी का चित्रण निम्न गीत में देखिये–

कदम्ब का झाड़ नीचे, गुम गई मोहन माला।
करोंदी की झाड़ी नीचे, गुम गई मोहन माला।
ताँबे के हंडे मे ताता सा पानी,
तुम न्हावो नंदलाल, में ढूंढूं मोहन माला।
ताती जलेबी दूधन का लड्डू, तम जीमों नंदलाल,
में ढूंढूं मोहन माला।
सोने की झारी गंगाजल पानी,
तम पीवो नंदलाल, में ढूंढूं मोहन माला।
पाकाजो पान कलई का चुना,
तुम चाबो नंदलाल, में ढूंढूं मोहन माला।

श्रीकृष्ण द्वारा कंदुक क्रीड़ा खेलने का चित्र अन्य गीतों में उपलब्ध है। वे यमुना किनारे कंदुक क्रीड़ा कर रहे हैं। जब गेंद पर जोर की चोट लगती है तो वह सीधी नदी में स्थित वासुकि नाग पर जा लगती है। श्रीकृष्ण गेंद लेने उसी स्थान में उतरते हैं। उसी समय माता यशोदा आ जाती हैं और गोप ग्वालों को गालियाँ देने लगती हैं। उधर नागिन पूछती है– हे लाल! तुम किसके पुत्र हो? किस दुश्मन के भय से यहाँ छिपे हो। तुम अपनी राह पकड़ो, क्योंकि मेरा स्वामी बड़ा विकराल है। कृष्ण कहते हैं– तुम मुझे इतना क्यों डराती हो। मैं अभी तुम्हारी चूड़ियाँ उतरवा लूँगा। तब नागिन ने नाग को अंगुली मरोड़कर जगाया। कृष्ण और नाग में युद्ध हुआ। नाग कृष्ण के शरीर से लिपट गया। पर कृष्ण भी खिलाड़ी थे। दाँव बचाकर नाग की नाक में रस्सी पिरो दी और उसे उस स्थान से हमेशा के लिये अन्यत्र जाने का आदेश दे दिया। नागिन ने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की – हे नाथ! मैं तो आपके स्वरूप को भूल गई थी। अब आप मेरे सुहाग की रक्षा करें। गीत इस प्रकार है–

जल जमना की पाल पे खेले, नंदजी को लाल।
खेले कंस को काल।
छोटा मोटा पाउना ने संगे ग्वाल–बाल।
वां लगी गेंद पर चोंट, लगी वां वासुकि पर ढोट।

गेंद गिरी पच ताल।
गिरी गेंद की सूध भागके, वहां गयो गिरधारी।
जल जमना में कूदी पड़्या, वणी टेम पे किसन मुरारी।
उणी टेम वां अई गई, जसोदा मांई रे।
अर वा देगी लड़का के गाळ,
म्हारो नानो सो गोपाल, कूद्यो सरवर की पाल।
नागण केवे नाना भई, तू किनको हे ने कींको वालो हे।
थारो रूप हे दयाल, पंथ भूल्यो के बेरिन भय कांटयो रे,
तू तो चल्यो जा थारी बाट, म्हारो स्वामी हे बिकराळ।
केवे किसन मुरार, नागण बई धीरज धरजे नार।
जोर कंई बतावे चूड़ी लूंवा उतार।
आंगरी मरोड़ी के नागण ने, नाग के दियो जगाय।
वांतो मची धमा चोकड़ी, मच्यो हे वां जुद्ध।
दोनूं की लडाई मची भारी, मोहन गयो हे कूद।
नाग का बदन से लपटायो हे, पण नाग नाथी ने कृष्णजी।
उण पर सवार हुई ने आयो हे, नागण जोड़े दोनूं हात।
में तो भूलीगी थी दीनानाथ, उणने मांगी लियो अहिवात।

एक गीत में कृष्ण पर नवल व्यापारी होने का आरोप कल्पित किया गया है। उनके हाथों में लकड़ी, पाँव में पावड़ी और मुख पर बंशी शोभायमान है। कृष्ण एक नया व्यापारी बनकर आया है। उनके सिर पर मोरपंख का मुकुट शोभायमान है। कुंडल की शोभा ही विचित्र है। दास धनाजी कहते हैं- हे साँवरे स्वामी! आप तो इस दीन के लिये सब कुछ हैं। गीत निम्न है-

सांवली सूरत पर वारी जाऊँ,
नवलिया बेपारी।
हाथ लकड़िया, पांव पवड़िया,
मुख बंसी बाजे प्यारी।
नवलिया बेपारी।
मोर मुगट सिर उछर बिराजे,
कुंडल की छब न्यारी।
राधा रुकमण अरू सतभामा,
हम सब जावां तम पर वारी।
दास धनाजी का स्वामी सांवरा,
बोल ये दीनर भारी।
नवलिया बेपारी।

सुदामा मिलन का एक सुन्दर दृश्य उपस्थित है। इस गीत में कहा गया है कि- हे गोपाल! तुम्हारा मित्र सुदामा है। केवल एक पोटली लेकर सुदामा चले। सीधे कृष्ण भवन गये। वहाँ देखा श्रीकृष्ण श्याम वर्ण के हैं, उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। सुदामा ने कृष्ण भवन में हाथी, घोड़ा और राज्य करने की कला का अवलोकन किया है। उन्होंने कृष्ण के राजसी वैभव को देखा। राधा-रुक्मिणी ने पूछा- ये आपके क्या लगते हैं। सुदामा और श्रीकृष्ण साथ-साथ भोजन कर रहे हैं। अन्त में कृष्ण ने उनसे चावल की पोटली छुड़ाकर चावल खा लिये। श्रीकृष्ण ने उन्हें धन-धान्य से पुरस्कृत किया। गीत देखिये-

थांको भाय लो गोपाल,
हरिजी के कांचन ओढ़नी जी।
लेय बेदरी सुदामा जी चाल्या, पोंचा मंदर मांय।
श्याम बरन ओर गोर बरण हे, सोभा बरनी नी जाय।
के थांको भायलो गोपाल।
हाथी देख्या, घोड़ा देख्या, ओर नगरी की राज।
चरण कमल की भगती देखी, जनम सुधारण राम।
साल देख्या, दुसाल देख्या, गले मोतियन की माल।
म्हाने देख्यो सालूड़ो जी कंई, रुकमणजी का भरतार।
थांको भायलो गोपाल।
राधा रुकुमण पूछण लागी, ई कूण आया मिजबान जी।
चार पदारथ पावसी जी, उपर घी की धारजी।
राम सुदामा जीमण बेठ्या, जीमों सुदामा-राम जी।
एक मुट्ठी चावल की ले ली, लई ली अपणी रसाल जी।
ऊ तो चल द्वारका जी, मिलिया सिरी भगवान।
राम सुदामा मिलवा लाग्या, लम्बी भुजा पसार।
श्याम वरण ओर गोर वरण हे, शोभा बरनी नी जाय जी।
सांचो सुदामा भाग तुमारो, मिलिया कृष्ण मुरार।

मालवा में इतिहास प्रसिद्ध देवी-देवताओं की मान्यता राजस्थान के समान पाई जाती है। ऐसे ही देवताओं में गोगाजी देव का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये चौहान वंश में पैदा हुए। इनका विवाह केलण बाई से हुआ, जो पाबूजी राठौड़ की भतीजी थी। ये नाथ पंथ में दीक्षित थे, और लोक इन्हें सर्पों के देवता के रूप में मान्यता देता है। मारवाड़ की सेन्सस रिपोर्ट के अनुसार इनकी पूजा भाद्र पक्ष कृष्ण नवमीं तिथि को होती है। मालवा के पंचांगों में भी यही तिथि मान्य है। 'गाँव-गाँव गोगा ने गाँव-गाँव खेजड़ी' वाली कहावत इस बात की प्रतीक है कि मालवा के गाँव-गाँव में गोगा के थानक (स्थान) पाये जाते हैं।

मालवी लोकगीतों में गोगाजी का स्वरूप भव्य निरूपित किया गया है। उनके सिर पर पाग, धर्म की करधनी पेंचे का सुन्दर रूप दर्शाया जाता है। उनके कानों में मोती के बाले, कंठ में कंठहार, शरीर पर अंगा, पाँवों में मोजे और मेहंदी से उनका रूप सुन्दर और भव्य बन गया है। एक गीत अवलोकनीय है–

सीस पगा गोगाजी धरम अदेवणी,
पेंचा रो अदक सरूप।
इन्दरा से सण से उतर्‌या गोगाजी।
कानां रा मोती उका अदेवण्या,
कानां रो अदक सरूप।
हिवड़ारी कंठी अदेवणी,
चोसर को अदक सरूप।
चढ़वारी घोड़ी थांकी अदेवणी,
जिकों रूप हे अदक स्वरूप।
इन्दरा के सण से उतर्‌या गोगाजी,
थांकी धरम पालकी।

शिवरात्रि/हरतालिका

मालवा में भाद्रपद कृ. 14 को शिवरात्रि का व्रतोत्सव मनाया जाता है। इस दिन भगवान शिव का उपवास रखा जाता है। स्त्रियाँ इस दिन रात भर भगवान शिव के गीत गाती हैं। इसके पश्चात् शुक्ल पक्ष की तृतीया को हरतालिका तीज का महत्त्वपूर्ण व्रतोत्सव आता है। इस कथा के पीछे लोक मान्यता यही है कि महादेवजी को प्राप्त करने के लिये भगवती पार्वती ने कठिन तपस्या की थी। अन्न, पानी, फल तो ठीक उन्होंने 'पत्र' खाना भी छोड़ दिया था। उसी दिन से उनका अपर्णा नाम प्रसिद्ध हुआ था।

मालवा की स्त्रियाँ इस व्रत को इतनी ही श्रद्धा-भक्ति के साथ करती हैं। वे भी निर्जल, निराहार रहकर अहर्निश महादेव की पूजार्चना करती हैं। 52 झाड़ की पत्तियाँ मँगवाकर रात भर महादेव को स्नान, पत्र, कुमकुम, अगरबत्ती एवं नैवेद्य से पूजा की जाती है। इस दिन विशेषकर रात भर महादेवजी के भक्तिपद लोकगीत गाये जाते हैं। यह त्योहार विशेषकर विवाहित स्त्रियाँ ही करती हैं। प्राय: घरों में मिट्टी या बालू रेती के महादेव बनाये जाते हैं। रात भर जागरण किया जाता है। यह व्रत सौभाग्य एवं सन्तान की कुशल कामना के लिये किया जाता है। इस दिन गाये जाने वाले गीतों में कुछ यहाँ अनुवाद सहित प्रस्तुत किये जा रहे हैं। कुछ विशेष भजन एवं गीत माघ की महाशिवरात्रि के प्रसंग में भी प्रस्तुत किये जायेंगे।

सदा रहो अलमस्त राम की पीलो बूंटी।
काय की कुंडी ने काय से रगड़ी या बूंटी।

सत का सौदा, दिल की कुंडी, कृष्ण नाम की रगड़ी या बूंटी।
सदा रहो अलमस्त राम की पीलो बूंटी।
कायन को रूमाल बनायो काय सूं छाणी या बूंटी।
अखियन को तो रूमाल बणायो, प्रेम ती छाणी या बूंटी।
बरमा पीग्या बिस्णु पीग्या, मादेव पीग्या या बूंटी।
हनुमान जी असा पीग्या के सोना की लंका लूटी।
सदा रहो अलमस्त....
ध्रुव जी पीग्या, प्रहलाद पीग्या, मीरां पीगी या बूंटी।
भगत सुदामा असे पीग्या के सोना की बणी गई बूंटी।
धनाजी पीग्या, सदना पीग्या, पीपा पीग्या या बूंटी।
दास कबीरा असी पीग्या के माया को गिरंथी छूटी।
सदा रहो अलमस्त राम की पीलो या बूंटी।

हे प्राणी! राम के नाम की बूटी पीकर अपने मन में सदैव मस्त रहो। इस बूटी को कौन सी कुण्डी में और कौन से घोटे से रगड़ाया गया? उत्तर भी इसी में दिया है कि इसे दिलरूपी कुंडी में सतरूपी सोटे से कृष्ण नाम की बूटी से रगड़ा है। इस बूटी को पीकर सदैव अपने में मगन रहो। किस वस्तु का रूमाल छानने के लिये बनाया? और किस प्रकार इस बूटी को छाना गया? इसका उत्तर भी दिया है कि बूटी को आँखों रूपी रूमाल में प्रेम तत्व से छाना गया है। इस राम नाम बूटी को पीकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, हनुमान, ध्रुव, प्रहलाद, मीरा, सुदामा, धनाभगत, सइना कसाई तथा पीपा जैसे भक्तों ने पीया और वे अमर हो गये। कबीरदास कहते हैं कि उन्होंने जबसे इस राम नाम रूपी बूटी को पीया, उनके हृदय में स्थित माया रूपी ग्रन्थि छूट गई है। इसलिये- हे मानवों! इस राम नाम रूपी बूटी को पीकर हमेशा उसी के प्रेम में अलमस्त रहो। शेष सांसारिक माया मोह तो सब झूठा है।

एक गीत में आव्हान किया गया है कि- हे मानव! तू व्यर्थ के कामों में अपना समय व्यतीत करता है, किन्तु उस शिव का स्मरण नहीं करता, जो मानव जीवन के लिये कल्याणकारी है। इसलिये- हे मन! तू प्रतिदिन प्रात: उठकर भगवान शिव का गुणगान कर, यथा-

रोज सवेरां उठी के शिव का, गुण गायां कर प्रेमी बणी के।
सोवा में तो रात गुजारी, दन भर करता पाप रिया,
इनी तरां बरबाद हे बन्दा, सम्यो बिताता आप रिया,
बालपणों हँस खेल गमायो, भरी जवानी में सोया।
आयो बुड़ापो अब क्यूं रोवे, भजले सीता राम हो।
दुखियो थारा दुआर खड़यो हे, तमने मोज उड़ायो क्यूं?
पाड़ पड़ोसी भूखा हे तो, तमने रोटी खाई क्यूं?

सबती पेलां हरि के, भूखा के रोटी खिलाया कर।
मनक जिंदगी पाछी आवे, बच्चा को यो खेल नई,
देखो जी जगदीस की माया, म्हांपे मेहर कीनी हे।
प्रेमी बनी के प्रेम से शिव का, तू ई तो गुण गायां कर।

हे मानव! प्रातः उठकर शिव का गुणगान तू अपनी रसना से करना सीख। तूने अज्ञान रूपी रात तो सोने में ही गुजार दी। दिन भर भी भाँति-भाँति के पाप कर्म करता रहा। इसी भाँति से तू समय व्यतीत करके बर्बाद होता रहा। बालपन हँसने और खेलने में गुजार दिया। युवावस्था में सोता रहा। और जब बुढ़ापे ने आकर डेरा डाला तो रोने लगा। जब दीन-दुखी तुम्हारे द्वार पर खड़े थे, तब तो तू उनकी ओर ध्यान न देकर अपनी मौज मस्ती में क्यों लगा रहा? पास-पड़ोसी भूखे रहे तो तुमने रोटी क्यों खा ली? हे मानव! सर्वप्रथम ईश्वर को भोग अर्पित कर। बाद में भूखों से भोजन की पूछ। यह मानव जीवन बच्चों का खेल नहीं है। यह देह देकर उस जगदीश्वर ने हम पर बड़ी कृपा की है। इसलिये प्रेमी बनकर प्रेम से भगवान शिव के गुणों का गान कर।

लेके पेलो पेलो प्यार, लेके गवरां के लार।
भोलानाथ कासी से आया हे।
कां हे जसोदा थारो किरस्ने कनइयो?
दरस करादे मईया लेवुं में बलइयां।
सुणी के नारायण ओतार,
चल्यो आयो हूँ थारा दुआर, काशी नगरी से।
इतरा में तो बोली जसोदां, जाओं तम तो दुआरका, यां डीमरू नी बजाओ।
म्हारो छोटो सो गोपाल, तम कोई जादू दोगा डार।
म्हारो छोटो सो नंद लाल, काशी नगरी से आया हे शिवशंकर
इतरा में बोली खिलखिला के, जसोदा से, डीमरू बजाऊं।
जाकर देखो अपणा बाल, आने को वोहे बेहाल।
काशी नगरी से आया हे, शिव शंकर, काशी नगरी से।

भगवान शिवशंकर अपनी प्रियतमा के संग गोकुल में माता यशोदा के घर कृष्ण दर्शन कि लिए आये हुए हैं। वे कृष्ण दर्शन के लिये उत्सुक हैं। नारायण का अवतार हुआ, सुनकर दर्शनार्थ काशी नगरी से आये हैं। इतने में यशोदा माता कहती हैं- यदि दर्शन करना हो तो द्वारका जाओ। यहाँ डमरू न बजाओ। मेरा कृष्ण कन्हाई अभी नन्हा बालक है। यदि वह डमरू की आवाज सुनेगा तो डर जायेगा। आप कोई जादू उस पर चला देंगे तो मैं क्या करूँगी? तब महादेव खिल-खिलाकर हँस पड़े और यशोदा से कहने लगे- तुम चिन्ता न करो। कृष्ण तो डमरू की आवाज सुनकर प्रसन्न ही होंगे। वे डमरू की आवाज सुनकर मेरे पास ही आने को बेहाल हो जायेंगे, शिवशंकर काशी से भगवान कृष्ण के दर्शन करने गोकुल नगरी में आये हैं।

एक गीत में सती पार्वती अपने पितृगृह में जाने को उत्सुक हो भगवान शिव से आज्ञा चाहती हैं। कहने लगी– मेरे पिता के घर यज्ञ आयोजन है। उन्होंने समस्त देवी–देवताओं को उसमें आमंत्रित किया है। इसलिये मेरा मन भी वहाँ जाने को उत्सुक हो रहा है। हे अन्तर्यामी! मुझे पिता के घर जाने दें। शंकर जी कहते हैं– मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ कि किसी के यहाँ भी बिना बुलाये नहीं जाना चाहिए। तुम्हारे पिता बड़े अभिमानी हैं। परन्तु शंकरजी की बात न मानकर सती अपने पिता के घर सोलह श्रृँगार करके गई। जब वे वहाँ पहुँची तो उनका न तो किसी ने सत्कार किया, न ही कोई बोला। जब उन्होंने अपने पति का भाग यज्ञ में नहीं देखा, तो वहाँ प्रज्वलित यज्ञ की योगाग्नि में जलकर भस्म हो गई। गीत देखिये–

शंकर से केती गवरजा मारानी,
पिता घरे जाबा दो म्हारा स्वामी।
म्हारा पिता घरे जग्य रच्यो हे।
सब देवी देवता के नोतो दियो हे।
म्हने भी पिता घरे जावा की ठानी।
पिता घरे जावा दो अंतरजामी।
शंकर केवे थोंए कस समझाऊँ?
बना बुलायां कई नी जानो।
थारा पिता बड़ा अबमानी।
बात गवरां ने नी मानी।
सोला सिण्गार करी चली मारानी।
जई ने खड़ी वई पिता का घर में।
कोईनी बोल्यो सती सूं घर में।
पति को भाग नी देख्यो जगन में।
अबमानी के मजो चखाऊ।
या कई ने जली योगानल में।

एक और गीत में एक मालव नारी, शंकर जी के स्वरूप को देख–देख अपनी आँखों ही आँखों में मगन हो रही है। हे भोला! आपको चन्दन और चावल क्यों चढ़ता है? क्यों बिल्व पत्र चढ़ाये जाते हैं? हे भोला! दूध–दही से स्नान करवाने के बाद चन्दन क्यों चढ़ाया जाता है। पुत्र प्राप्ति के लिए चावल और बिल्व पत्र क्यों चढ़ाये जाते हैं? हे भोला! आपको अगरबत्ती और घी का दीप क्यों चढ़ाया जाता है? हे प्राणी! मोक्ष की आकांक्षा के कारण लोग मेरे यहाँ घी का दीप जलाते हैं। भोला का ऐसा स्वरूप देखकर नारी अपनी आँखों ही आँखों में मगन हो रही है। यथा–

भोला को रूप देख मगन भई अंखियां,
शंकर के देखी ने मगन भई अंखियां।

कायन कारण बिल पत्तियां?
दूद दई के कारण भोला चंदन,
चावल पुत्तर कारण बिल पत्तियां।
कायन कारण भोला अगरबत्तियां?
कायन कारण घी की बत्तियां?
स्वरग के कारण भोला अगरबत्तियां,
मोच्छ के कारण घी की बत्तियां।
भोला को रूप देख मगन भई अंखिया।

एक और गीत में पार्वती, दूसरी से कहती हैं– हे सखी! मुझे हाट बाजार में जाने दो अन्यथा मेरा भोला रिसा जायेगा। हे सखी! अब घर जाने दो अन्यथा मेरा भोला रिसा जायेगा। भोला रिसा जायेगा तो मुझे गाली देगा। मैं हाट गई थी। बाजार करने गई थी और अनेक प्रकार की सौदे की वस्तु वहाँ से बँधवा लाई, किन्तु काली मिर्च तो भूल गई। अब भोला मुझे गाली देगा, क्योंकि वह भंग में डालने के लिये आवयश्क है। पहले वह गांजा पियेगा फिर भंग पियेगा, बाद में स्नान करने जायेगा। मैं उनके खाने के लिए धतूरे की चटनी और खाने के लिए आँकड़े (अर्क) की रोटी बनाती हूँ। तभी भोजन करता है। पार्वती ने तब भंग घोटने के लिये कुंडी धोई। पीसने का सिल बट्टा धोया और महादेव के लिये भंग पीस कर लाई। गीत के बोल हैं–

हाट जाने दो सहेली म्हारो, भोलो तो रिसायगा।
घरे तो जावा दो सखी, भोलो तो रिसायगा।
भोलो तो रिसायगा ने,गाली तो हमलायगा।
हाट गई बेजार गई थी, पुड़िया लाई बांध के।
काली मरियां भूल आई, गाली तो सुनायगा।
गांजो पी के भांग पी के, फेर न्हावा जायगा।
भांग बांटवा की टेम पे, गाली तो सुनायगा।
धतूरा की चटनी बांटू, आंकड़ा की रोटी।
जब वो भोजन पायगा।
कुंडी धोई सोटो धोयो, भांग लाई बांट के।
काली मरियां भूली आई, गाली तो सुनायगा।

एक गीत में पार्वती दुलहिन बनी हुई हैं। भोले शंकर बारात सजाकर लाये हैं। भूत-प्रेत बाजा बजा रहे हैं। पार्वती सोलहों श्रृँगार करके बैठी हैं। उन्हें हल्दी लगाई जायेगी। मेहंदी रचाई जायेगी। गौरी के गालों पर नथनियाँ झूलेंगी। हिमाचल राजा ने पार्वती का ब्याह रचा रखा है। शिवजी के अंगों पर नाग लिपटे हुए हैं। लिलाट पर भस्मी लगी है। जटा से गंगा बह रही है। बिच्छू एवं ततैया के गहने अपने शरीर पर सजा रखे हैं। शिवजी ऐसे बन ठन के बारात सजाकर

आ रहे हैं। वे नंदी पर सवार होके आयेंगे। संग में भूत-प्रेत एवं अन्य गणों को लायेंगे। भोले भण्डारी की बारात को देखकर हिमाचल राजा घबरा जायेंगे। गौरी तो भोला के घर चली जायेंगी। गौरा भंग घोटेगी और भोला भंग पीयेंगे। कैलाशपुरी के राजा भंग के नशे में चूर रहेंगे। गीत देखिये-

म्हारी पारबती बनेगी दुलनियां,
सज के आवेंगे शिव भोला राजाऽऽ।
भूत ने परेत सब बजावेंगे बाजा।
सोला सिणगार म्हारी गवरां करेगी।
हलदी लगेगी और मेंदी रचायगी।
गोरी के गालों पें झूलेगी नथनियां,
ब्याव रचाये हिमाचल राजा।
भूत परेत बजावेंगे बाजा।
सिवजी के अंगो पे नाग टंगेगा।
भस्मी रमेगी ओर गंगा बेवेगी।
बिच्छु-ततइया का गेणा सजेगा।
आवेगा बारात लई के सिव भोला राजा।
भूत परेत बजावेंगे बाजा।
नंदी पे सवार होके भोला जी आवेगा,
संग में भूत-परेत-गण लावेगा।
भोले की नगरी की बारात देखी ने,
घबरावेगा हिमाचल राजा।
भोले के घर चली जावेगी गोरां,
भंग घोटेगी गोरां - पिवेंगा भोला।
भंग का नसा में चूर रेवेगा।
केलास पुरी का राजा।
भूत परेत बजावेगा बाजा।

ऐसी गीत प्रायः रात भर महिला वर्ग के द्वारा 'जागरण गीत' के रूप में गाये जाते हैं। ये ढोलक की तर्ज पर गाये जाते हैं, जिसमें प्रायः नृत्य-गान भी होता है। अगले गीत में भी भोला के भांग के शौक को महत्त्व दिया गया है। काशीजी और प्रयागराज में भोला के लिये कौन सी वस्तु बोई जाय? इसके उत्तर में बतलाया गया है। काशी में केशर और प्रयाग में चन्दन बोया जाय। हर की पेड़ी हरिद्वार में भोला के लिये भंग बोई जाय। जबकि धतूरा कैलाश में बोया जाना चाहिये। गीत देखिये-

शंकर अमली हो म्हारा दाता शिवजी,
बागड़िया में भांग डली घुटाई राखोजी।
म्हारा शंकर अमली हो म्हारा दाता शिवजी,
कांई बोऊं कासीजी ने काई छे परयाग।
कांई बोऊं हर की पेडी कांई छे केलास।
केसर बोऊं कासीजी ने चंदण परयाग।
बिजया बोऊं हर की पेड़ी धतूरो केलास।
म्हारा दाता शिवजी......
हर हर छोटे नांदियो ने छाणे हो गणेस।
भर भर प्याला देवे गवरजां पीवोजी महेश।
म्हारा शंकर अमली......
आंकड़ा की रोटी पोंऊ धतूरा को साग।
विजिया की तरकारी परसे पारवतीजी थाल।
छोका मांगे नंदियो ने कांई शंकर अमली,
कांई मांगे नदियो ने कांई हे गणेस।
कांई मांगे भोला संभू जोगिया रो भेंस।
म्हारा शंकर अमली हो म्हारा दाता सिवजी।
बागड़िया में भाग डली घुटाई राखूंजी।
दुरगा मांगे नंदियो ने मोदक गणेस।
विजया मांगे भोला संभू जोगियारो भेंस।
म्हारा संकर अमली.........
निरधन मांगे अन-धन ने राजा मांगे रूप।
कोई मांगे निरमल काया - बाँझ मांगे पूत।
म्हारा भोला अमली.......
हर हर नाचे नांदियो ने नाचे हे गणेस।
म्हारा संकर अमली हो म्हारा दाता सिवजी
बागड़िया में भांग डली छुटाय राखूंजी।

पार्वती जी एक अन्य गीत में भोला शंकर से अपने लिये सोने की अट्टालिका बनवाने का आग्रह कर रही हैं- हे भोला! आप तो अस्सी वर्ष के बूढ़े हैं और मेरी तो बाली उमर है। भोलेनाथ ने विश्वकर्माजी को तत्काल आदेश देकर सोने का महल बनवा दिया, जिसमें सोने के ही फाटक थे। शिव-पार्वती उस नये महल में रहने लगे। महल ऐसा चमकता था कि उस पर नजर ही नहीं ठहर पाती। उसमें निवास के लिये रावण पंडित को बुलवाकर पूजन का मुहूर्त निकलवाया गया। रावण बोला- हे प्रभु! मैंने आपके यहाँ पूजन किया है। इसके एवज में मुझे कुछ दक्षिणा मिलनी चाहिए। तब शंकर ने उसे जोगी समझ रहने का महल दान में दे दिया। गीत देखिये-

बनवा दो भोला सोने की एक अटरिया,
तम तो भोला अस्सी रे बरस का, मेरी हे बाली उमरिया।
बनवा दो भोला........
आग्या दीनी बिसकरमा आया, सोना का एक मेल बणाया।
सोना जड़ी रे किवड़िया।
बनवा दो भोला.......
रंग मेल में शिव ओर गोरा
रहन लगे संग शिव और गोरा।
केसा सुन्दर मेल बनाया, ठेरे नंई नजरिया।
बनवा दो भोला........
रावण सा ग्यानी पंडित कूं, पूजन कूं बुलवाया।
पूजन म्हने तो किनी परभू जी, दे दो कुछ कुछ दखना।
क्या देऊं में इस जोगी कूं?
देदूं क्योनी भई याही अटरिया
बनवादो भोला सोना की एक अटरिया।

हे भोला! मेरी पुकार सुनिये। मैं आपके द्वार पर खड़ी हूँ। मेरा जीवन आपके भजन के लिये है। आपकी सेवा के लिये है। एक अंधा उधर से चला आ रहा है। हे प्रभु! उसे देखने के लिये नेत्र दे दीजिये। एक लंगड़ा उधर से चला आ रहा है। हे प्रभु! उसे पाँव दे दीजिये। एक बाँझ उधर से चली आ रही है। हे प्रभु! उसे पुत्र दे दीजिये। एक कोढ़ी उधर से चला आ रहा है। हे प्रभु! उसकी काया कंचन सी कर दीजिये। एक निर्धन आ रहा है। हे प्रभु! उसे माया दे दीजिये। मैं तुम्हारे द्वार पर खड़ी भीख माँग रही हूँ। हे भोला! मेरा जीवन तो भजन करने के लिये ही है। मेरा जीवन तो आपकी सेवा के लिये ही है। जब मेरे पैरों के घुँघरू बजते हैं, तब भोला शंकर अपना ध्यान भूल जाते हैं। मैं आपके द्वार पर बन-ठन कर आई हूँ। शिवजी पूछते हैं- तुम किसकी स्त्री हो? तुम हमारे साथ चलो। मैं तुम्हें रानी बनाकर रखूँगा। तुम्हारे घर बार नहीं है। सदा भंग पर सवार रहते हो। इस जोगिनी की नैया कैसे पार होगी? हे प्रिये! मैं तुम्हारे रहने के लिये चाँदी-सोने के महल बनवा देता हूँ। उस पर चाँद-सूरज बनवा देता हूँ। इन्द्र से पानी भरवा देता हूँ। हे प्रिये! तुम पन्नियों (पन्नों) का हार पहिनो और जंगल में बैठो। पार्वती कहती है- मैं पन्नियों का हार पहिनकर वन में उदास नहीं बैठूँगी। यह मेरा सत्य वचन है। हे पार्वती! तुमको धन्य है। तुमने अपने गुणों से त्रिपुरारी महादेव को मोह लिया है। उस कैलाश पर्वत की भी धन्य है, जो हमेशा पार्वती के साथ रहता है। नंदी गण ताली बजा-बजाकर नृत्य करते हैं और साथ में समवेत रूप में तालियाँ बजा-बजाकर भोले शंकर नृत्य करते हैं। उमठवाड़ी प्रधान मालवी में गीत के बोल हैं-

खड़ी हूं दुआर पे भोला, म्हारी पुकार सुणलो।
खड़ी हूं दुआर पे भोला।
म्हारो जीवन हे भजन के लिये,
म्हारो जीवन हे थारी सेवा के लिये।
एक आंदो उनांग ऐं चल्यो आईर्‌यो।
आँख दे दो प्रभु उमर भर के लिये।
खड़ी हूं थारे दुआरे भोला सुणलो पुकार
एक लंगड़ो उनांग से चल्यो आईर्‌यो।
दई दो पांव उनें जिंदगी भर के लिये।
एक बांझो उनांग से चल्यो आईर्‌यो।
पुत्तर दई दो उने उम्मर भर के लिये।
एक कोढ़यो उनांग से चल्यो आईर्‌यो।
काया कंचन की करदे उमर भर के लिये।
एक निरधन उनांग से चल्यो आईर्‌यो।
माया दई दो उनें जिंदगी भर के लिये।
खड़ी हूं तुमारे दुआर।
भोला सुणलो म्हारी पुकार।
जीवन हे भोला भजन के लिये।
म्हारो जीवन हे थारी सेवा के लिये।
घुंघरू पांवा में बजे शंकर ध्यान कूं तजे।
हूं तो अईजी मिलन कूं बन ठन के।
थांका रूप पे बलियार बोलो किन की हो।
नार बोलो किसकी हो?
नार चलो म्हांके लार रानी बनके।
थांके नंई घर ओ बार।
सदां भंग में रेवे हो सवार।
कसा होवेजी संसार जोगियन के।
मेल तो चाँदी को बनवई दूँ।
मेल तो सुन्ना को बनवई दूँ।
चंदा सूरज उपे लगवई दूँ।
पानी तो इन्दर से भरवई दूँ।
थां तो घरे मे चलो म्हांके लार रानी बनके।
पेनो पन्नियाँ रो हार बन में बेठोजी।
बन में बेठांजी डर लागेजी।

छोड़ां पन्नियां रो हार नई बेठाजी उदास,
नई बेठाजी उदास सच्चा ले लोजी वचन।
धन धन गिरजा राजकुमारी।
लागी फूलन की झड़ी दुलारी।
तमने मोया हे तिरपुरारी,
मिलन कूं बन ठनके।
धन धन केलास के भाग।
सदा पारबती का साथ।
नंदी गण भी नाचे दे दे तालियां,
भोले शंकर भी नाचे दे दे तालियां।

एक गीत में पार्वती की माता अपनी पुत्री को अल्पवयस्क बताती हुई कहती हैं– शंकर तो बूढ़े हैं और मेरी उमा तो छोटी सी है। मेरी लाड़ली उमा कहाँ रहेगी? न तो शंकर के घर में चूल्हा है न ही घट्टी है। मेरी उमा रोटी कैसे बनायेगी? अनाज कैसे पीसेगी? न तो भोला के घर में कुँआ है, न ही कुंईया है। मेरी उमा पानी कहाँ भरेगी? भोला के तो बाग–बगीचा भी नहीं हैं। मेरी लाड़ली उमा कहाँ पर टहलने जायेगी? भोला के न तो माँ है, न बहिन। तब मेरी उमा की चोटी कौन गूँथेगा? भोला के गले में सर्प है। हाथों में डमरू है। मेरी उमा अभी बहुत छोटी है, वे उन्हें देख–देखकर भयभीत होंगी। भोला के घर न तो गादी है न तकिया। मेरी लाड़ली उमा फिर किस प्रकार सो सकेगी? शंकर तो बहुत बूढ़े हैं, किन्तु मेरी उमा तो अभी कम उम्र की ही है। गीत देखिये, प्रथमानुसार अल्पवयस्क लड़की का विवाह दर्शाया गया है। जो जातिगत जीवन की रूढ़ि–परम्परा का दिग्दर्शन करवाता है। अनेक गीतों में लड़की की उम्र 12 वर्ष ही बताई जाती है, यथा–

शंकर बड़े बूढ़े म्हारी उमा तो छोटी सी।
उन भोला के मेल न मेड़ी।
कायां रेवेगी म्हारी उमा लाड़ली।
उन भोला के चूलो नी घट्टी।
कायां पोवगी म्हारी उमा रोटी।
उमा तो म्हारी घणी छोटी।
कायन पीसेगी उमा घट्टी?
उमा म्हारी छोटी सी?
उनी भोला के कुवो नी कुंड़ी,
कायां भरेगी उमा पाणी जी?
उमा तो म्हारी छोटी सी।
उनी भोला के बाग न बगीची,

कायां टेलेगी म्हारी उमा लाड़ली?
उन भोला के मांय नी बेन्यां,
कूण करेजी वाकी चोटी?
उमा म्हारा छोटी सी।
उनां भोला के गले सरप हे।
उनारे हांथा में डिमरू
उनसे डरफेगी उमा म्हारी छोटी सी।
उन भोला के गादी नी तकिया,
कायां सोवेगी उमा म्हारी लाड़ली।
उमा म्हारी छोटी सी।
शंकर बड़े बूढ़े उमा तो म्हारी छोटी सी।

भादव शुक्ल पक्ष में हरतालिका तीज के दूसरे दिन चतुर्थी आती है। यह गणेश चतुर्थी के नाम से विख्यात है। इस दिन गणपति की स्थापना की जाती है। मालवा के हर गली–मोहल्ले में इनकी भक्ति एवं श्रद्धा के साथ स्थापना की जाती है। झाँकियाँ सजाई जाती हैं। रात्रि भर उत्सव–जागरण चलता है। भजन–कीर्तन एवं गीत गाये जाते हैं। दस दिनों के पश्चात् अनन्त चतुर्दशी को गणेश विसर्जन बड़े धूमधाम से किया जाता है। समग्र भारत में मालवा के इन्दौर एवं उज्जैन नगर की झाँकियाँ सर्वोत्कृष्ट मानी जाती हैं। लाखों की संख्या में दर्शनार्थी इन झाँकियों एवं अखाड़ों को देखने के लए भारत के कोने–कोने से आते हैं। महिलाएँ गीत गाकर गणपति के प्रति अपने भक्ति भाव प्रदर्शित करती हैं। एक गीत में गणपति को सर्व विघ्नों के शान्तिकर्त्ता के रूप में निरूपित किया गया है। हाथी के तुल्य इनकी सूँड है। गले में मोतियों की माला धारण किये हैं। फर्शी और अंकुश इनके हाथों में सुशोभित है, कपाल पर सिन्दूर शोभा दे रहा है। पिता शंकर और माता पार्वती के वे दुलारे हैं। देवों में सर्वप्रथम इनकी ही पूजा की जाती है। ये गणों के स्वामी हैं, लम्बोदर हैं तथा मुकुट धारण करते हैं। इनका नाम लेने से काल भी भाग जाता है। चार भुजाएँ हैं। मस्तक विशाल है। मंगल की खान है। इनका वाहन मूषक है। गीत देखिये–

गणपत राय गण देवता, म्हारा बिघन सगला टाल रे।
गजेन्दर सम सुंड सोवती, थारा गले मोतियन माल रे।
फरशी अंकुश कर धरे, सिन्दुर सोहे कपाल रे।
शंभु गवरां पिता जननी, प्रथम पूजा जाण रे।
लम्बोदर, तम मुगट धारी, रटत भागा काल रे।
गणराय गणपत देवता, म्हारा बिघन सगला टाल रे।
चार कर अरसीस मोटो, सरब मंगल खान रे।
वाहन मूसक पे बिराजे, भाति तु ई संभाल रे,

भजन पेंला सुमरण करो, अंत तक कल्याण रे।
नाथ भगवत बिनवूं थारी, परनाम पूजा थाल रे।

गणपति सबसे छोटे होने पर भी गुणों में सबसे बड़े सिद्ध हुए हैं। सिर पर मयूर पंख का मुकुट शोभायमान है। सिर पर पाग, पूजन के लिए अग्रचारी, जिन्होंने लाल लंगोट धारण कर रखी है। कमर में जड़ाव का पट्टा बँधा है। चटक-मटक कर नृत्य करते हैं। सब देवों में उत्तम हैं। सम्मुख एक दाँत है। पेट बहुत बड़ा है। गुणों की इनके पास कोई कमी नहीं है। कद में सबसे छोटा है। चार भुजाएँ हैं। मूषक का वाहन है। फर्शी एवं अंकुश हाथ में धारण किये हैं। ऐसा पुत्र गणेश कहने में छोटा किन्तु गुणों में सबसे मोटा है, यथा-

गणपत सबसे छोटा, गुण में मोटा, मोर मुगट माथे पर धारे फेंटा।
पूजा वाते आगू बेठा, पेंन्यां हे लाल लंगोटा।
कमर में बांध्या जड़ाव का पट्टा, नाच नचावे चटक मटक्का।
सब देवन में लागे नीका, गण गवरां का बेटा।
एक दांत हे सम्मुख छोटा, पेट बड़ो हे सामनूं ढोटा।
कद सबती हे छोटा, चार भुजा मूसक पर बेठा।
फरसो हात अकुंस हे लपेटा, मंगल, पर केणे में छोटा।
गण गंवरा का बेटा।

पार्वती पुत्र गणपति पालने में झूल रहे हैं। हे देव! काशीपुरी में आपका जन्म हुआ है। पार्वती ने गोद में खिलाया है। पिता आपके शंकर देव हैं। नहा-धोकर आप सिंहासन पर बैठे हैं। मस्तक पर केशर का तिलक लगा है। हर बुधवार को आपका पूजन होता है। भोग में मोदक रखा जाता है। हे गणपति! आपका पालना किस वस्तु का बना है! डोरी (रस्सी) किस चीज की बनी है? रक्त चन्दन का पालना, रेशम की डोरी से बाँधा गया है। हे गणपति! आपको झूले कौन देता है? और मन में कौन मुस्कराता है? पार्वती जी आपको झूले देती हैं, और शंकर जी यह देख मन ही मन मुस्कराते रहते हैं। गीत देखिये-

पारबती के पुत्तर गजानन पालने झूले।
काशीपुरी में देवा जनम तुमारी।
गवरां ने गोद रमाया।
गजानन पालिने झूले।
माता तुम्हारी देवा पारबती कहिये।
पिता जो शंकर देवा। गजानन.......
न्हाई जो धोई स्वामी बेठा सिंगासण,
केसर तिलक लगाया। गजानन.......
हर बुधवारे देवा पूजा तुम्हारी.......

मोदक भोग लगाया गजानन.......
कायन का तेरा ईलना से पिलना?
कायन लम्बी डोर। गजानन.......
रगत चंदण का ईलना रे पिलना।
रेशम लांबी डोर। गजानन.......
कूण झुलावे ने कूण झुलते हे।
कूण तो मन मुसकावे। गजानन.......
गवरां झुलावे ने गणपत झूले.......
शंकर मन मुसकावे। गजानन.......
तानसेन स्वामी तेरा गुण गावे
भूल्या ने राम लगावो।
गजानन पालने झूले।

श्री गणपति का ध्यान लगाकर, गुरु का मस्तक नमन करके, नारद शारदा, शेषनाग और शंकर को विनय सुना रहा हूँ। हे प्रभु! मुझे निर्मल ज्ञान दीजिये। मैं महिमा का बखान करता हूँ। हे गोविन्दा! तुम्हारी जय हो। आप तो भक्तों के लिये भगवान हो। पार्वती हाथ जोड़कर शंकर से पूछती है– हे प्रभो! बतलाईये, आप किसका ध्यान करते हैं? रामचन्द्र जी ने अवतार लिया है या कोई लीला करने वाले प्रभु हैं। बतलाईये। गीत देखिये–

सिरी गणपति का ध्यान लगइके, गुरु को सीस नमाता हूँ।
नारद सारद सेस महेश, हूँ सबके विनय सुनाऊं हूँ।
निरमल दीजो ग्यान हो, मेंमा करूं बखान हो।
जे हो तेरी गोविन्दा, भक्तों के भगवान हो।
हात जोड़ी ने गिरजा बूजे, बिस्वनाथ केलासी हो।
कणी को धरो हो ध्यान, आप या बतलई दो अवन्यासी हो।
रामचंदर ओतारी हें, या कोई लीला धारी हें।
जे हो तेरी गोविन्दा, भक्तों के भयहारी हैं।

सूर्य देवता पूर्व में उदित हो गये। केवड़े की डाली के पास से दिखाई देने लगे। आप जगे तो गणपति देव भी जाग गये। हे राजन! तुम्हें नींद क्यों आने लगी? तुम्हारे घर, तुम्हारी प्रजा के यहाँ विवाह कार्य है। हे देव गणपति! अब आप जागिये और अपने हाथ मुँह धोने के लिए दातुन–झारी हाथ में ले लीजिये। आप अपने मुँह से भगवान कृष्ण का नाम लीजिये और सूर्या गाय का दान दीजिये। गीत देखिये–

सूरिज उग्यो हो केवड़ा री डाल,
बियाणू यो भल ऊगियो हो।

तम जाग्या हो गणपत देव,
राजा तमखे कभी नींद आवे?
राजा तमारे घर तमारी परजा को ब्याव,
देव जागो हो ने लेइलो दातुन झारी हात।
दातुन करजो हो तुलसी का क्यारा।
तम लीजो हो सिरी किरस्ने जी को नांव।
तम दीजो हो सूर्या गाय को दान।

एक गीत में गणपति से ज्योतिषी के यहाँ चलने का आग्रह किया है। वहाँ विवाह के लग्न लिखवाने है। कोटा की गादी पर नौबत बज रही है। नौबत बजने से इन्द्रगढ़ में गर्जना सी हो रही है। मंद रव में झालरें बज रही हैं। हे गणपति! चलो, माली के यहाँ चलें, वहाँ से गजरे मोल लायें, पान के बीड़े लायें। हे गणपति! चलो, सजना के यहाँ चलें और उनका विवाह अच्छी सी बनी से करें। हे गणपति! ज्योतिषी के यहाँ चलें। गीत देखिये-

चालो रे गजानन जोसी क्यां चालां,
तो आछा-आछा लगन लिखानां।
कोटारी गादी पे नोफत बाजे,
नोफत बाजे इन्दगढ़ गाजे।
तो झिणी, झिणी झालर बाजे।
चालो हो गजानन माली क्यां चाला।
तो आछा-आछा गजरा मोलावां।
चालो रे गजानन तंबोली क्यां चालां।
तो आछा-आछा बिड़ला मोलावां।
चालो हो गजानन सजनां क्यां चालां।
तो आछी-आछी बनड़ी परनावां।
गजानन जोसी क्यां चालां।

हे दयालु! दुखों का नाश करने वाले गणपति देव मैं आपको नमन करता हूँ। आप मेरे सब कार्यों को पूर्ण करना। गणों को मनाता हूँ और गणपति जी का शृंगार करता हूँ। मैं सर्वप्रथम गणपति को मनाता हूँ। चारों प्रहर उनकी सेवा करता हूँ। उनकी पतली सी सूँड (नाक) को सहलाता हूँ। छः-छः मन मोती चूर के लड्डू बनाकर उन्हें भोजन करवाता हूँ। गीत देखिये-

दयाला दुख भंजना सदा नमाऊं सीस।
सब करज मम सारजो।
गवरी पुत्तर गनेस।
गणो को मनाऊं गणपत के सजाऊं।

परथम सीस नमाऊं रे गणपत के मनाऊं।
चार पेर सबके समावे पिता भोला संकर देव।
गणपत के मनाऊं।
पतली सूंड सेलायरे गणपत के मनाऊं।
छो-छो मण मोती चूर का लड्डू चढ़ाऊं।
तम जीमो म्हारा गणपति देव रे।

भाद्रपद में ऋषि पंचमी का व्रतोत्सव मालवा में मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियाँ गेहूँ या चावल के ऋषि बनाकर पूजती हैं। उपवास करती हैं और वार्ता कहती हैं। इस दिन गीत नहीं गाये जाते हैं। जो महिलाएँ माहवारी धर्म में होती हैं, वे भी इस व्रत को करती हैं।

इसके पश्चात् हलछट आती है। इसमें हल का हाँका हुआ अन्न नहीं खाया जाता। हाथ की बोई सामग्री का फल ही खाते हैं। इस दिन भी वार्ता कही जाती है। गीत नहीं गाये जाते। बज बारस में स्त्रियाँ गाय की पूजन करती हैं। खांडा हुआ अनाज ही खाती हैं। इस व्रत में विशेष तौर पर गेहूँ और मूंग इसलिये नहीं खाये जाते, क्योंकि केड़ों का (बछड़ों) का नाम गेहुंआ और मोगला रखे होते हैं। इस दिन भी वार्ता कहने का ही महत्त्व है। गीत नहीं गाये जाते।

भाद्र शुक्ल दसमी तिथि को तेजाजी महाराज का व्रतोत्सव किया जाता है। तेजाजी का जन्म मारवाड़ में हुआ था। मालवा में इनकी पूजा एवं भक्ति बड़ी श्रद्धा के साथ की जाती है। इस अवसर पर तेज्याधोल्या की कथा बड़े चाव से गाई जाती है, जिसमें इनकी वीरता एवं वचन निर्वाह का सुरुचिपूर्ण चित्रण पाया जाता है। वर्षा ऋतु में यह कथा बड़े मुक्त कंठ से गाई जाती है। तेजाजी अपनी पत्नी को लेने ससुराल जा ही रहे थे कि रास्ते में मीणा डाकू द्वारा उनकी ससुराल से गायें चुरा ले जाने की खबर मिल जाती है। रास्ते में एक सर्प को जलने से बचाते हैं। जब वह कहता है कि मुझे क्यों बचाया? मेरी मुक्ति हो जाती। मैं तो तुम्हें डसूँगा। तब तेजाजी उनसे वचन का निर्वाह करते हैं। सर्प उन्हें काट डालता है। इससे उनकी मृत्यु हो जाती है।

भाद्र पक्ष 10वीं तिथि को इनकी मृत्यु होती है। इस तिथि पर उनकी स्मृति में मालवा और राजस्थान में कई स्थानों पर मेलों का आयोजन किया जाता है। स्त्रियाँ इनके गीत भी गाती हैं-

लागो-लागो जेठ असाड़ी रे।
कुंवर तेजा रे।
लागो ने लागो ने सामण भादवोजी।
कर सोळा सिणगार, सती तो होवां पिऊ की लार।
केसर अंग लगाय के न्हावां, अन, अतर अरगजा लार।
मांग भरो हिंगुल की टींकी, अंखियन काजर सार।
मेंदी से दोई हात रचावें, हूं पति बरता नार।

चुड़ला बिछिंया नाक की नथनी, ओर गला को हार।
सती होई पति संग जावां, खुल्यो वेकुंठ को दुआर।
चंदण लाय चिता चुणवाई, ने बेगी करो तयार।

हे कुँवर तेजा! जेठ–आषाढ़ का मास लग गया है। श्रावण और भादवा भी लगने वाला है, ऐसे में आपकी मृत्यु हो जाने से आपकी पत्नी सोलहों श्रृँगार करके आपके साथ सती होने का उपक्रम कर रही है। वे कहती हैं– मैं तो अपने प्रियतम के साथ ही सती होऊँगी। उन्होंने अपने शरीर पर केशर लगाकर स्नान किया। पानी में इत्र और अरगजा डाला गया है। हिंगुल से टीकी लगा ली है। अपनी माँग भर ली है। आँखों में काजल सार लिया है। दोनों हाथों में मेहंदी रचा ली है। सती नार आपके शव के साथ सती होने जा रही है। वे पतिव्रता नारी हैं। अपने पैरों में बिछिया और हाथों में चूड़ा धारण कर लिया है। नाक में नथनी पहन ली गई है। अपने पति तेजाजी के साथ सती हो रही हैं। उनके लिये बैकुण्ठ के दरवाजे खुल गये हैं। चन्दन लाकर उसी समय चिता तैयार करवाई जाती है। सती अपने पति तेजाजी का शव अपनी गोदी में रखकर उनके साथ सती हो रही हैं।

कुँवार मास (आश्विन मास)

कुँवार या आश्विन मास में श्राद्ध पक्ष आ जाता है। कृष्ण पक्ष में ही सर्वपितृ अमावस्या आती है। यहीं से नवरात्रि प्रारम्भ हो जाती हैं। दुर्गा देवी की पूजा–उपासना के ये नौ दिन बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं। मालवी में इन्हें 'नवड़ता' या 'नोड़ता' कहा जाता है। लड़कियाँ एक छोटा सा चबूतरा बना, उस पर गौरी की मूर्ति रख नौ दिनों तक पूजती हैं। अन्त में एक छिद्र वाले मिट्टी के सरावले में ज्योति रखकर गाँव में घूमती हैं। महाष्टमी का त्योहार कुँवार सुदी अष्टमी को आता है। इस दिन स्त्रियाँ दुर्गा व्रत और पूजन करती हैं। स्त्रियों के लिये यह त्योहार बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है।

शुक्ल पक्ष के प्रथम नौ दिनों में जवारे बोये जाते हैं, जिन्हें खुले कक्ष में रखा जाता है। उसे 'दिवासा' कहा जाता है। जो इन जवारों को बोता है, वही नौरात्रि भर उनकी साल–सम्भाल करता है। नौ दिनों तक वही उपवास करता है। नवें दिन स्त्रियाँ अच्छे कपड़े पहिनकर घर से बाहर निकलती हैं और देवी अम्बिका या दुर्गा के भजन गाती हुई नदी पर जाती हैं। देवी का भक्त या ओझा या रांड्यों के हाथ में देवी का जलता खप्पर दिया जाता है। जवारे नाईन या अन्य भक्त लेकर चलते हैं। तालाब पर इन्हें सिराया जाता है। इन जवारों को एक दूसरे को भेंट में दिया जाता है। लोक विश्वास प्रचलित है कि इन्हें वर्ष भर सहेजने से घर में धन–धान्य एवं समृद्धि रहती है।

लोक विश्वास है कि क्वाँर में बोये गेहूँ के जवारे से आने वाली गेहूँ आदि रबी की फसलें अच्छी होने या न होने का अंदाजा लगाया जाता है। इनके पौधे उखाड़ कर जड़ें गिनी जाती हैं। जड़ें ज्यादा हुई तो उतनी गुना फसल होने का अनुमान लगाया जाता है। यदि पौधों पर सुर्ख धूल

जैसी जम जाय तो फसल में 'गेरूआ' रोग लगने का अंदाजा लगाया जाता है। इनके अतिरिक्त संजा पूजन एवं गुड़ल्या, हीड़ एवं गरभा के गीत गाये जाते हैं। इस मास के अन्तिम दिन कोजागरी पूर्णिमा या शरद पूर्णिमा का होता है। कुँआर मास की अष्टमी को अम्बा माता के नाम से गीत गाये जाते हैं। एक गीत देखिये-

हात जोड़ पइयां लागूं, सुणो अम्बिका मइया।
माता देणा-पिता भी देणा, ओर देणा मोय बहनियां।
छोटा साक इक भइया देना, देना राखी का बंधवइया।
सासू देना, सुसरा देना, ओर देना ननदइया।
छोटो सो एक देवर दीजो सुण जगदम्बे मइया।
चांदी देना, सोना देना, ओर लड़की कूं अन-धन देना।
देना पूजा की किरिया, हात जोड़ पइयां लागूंजी,
सुणलो अम्बे मइया।

हे अम्बे माता! मैं आपके हाथ जोड़ती हूँ। पैरों पड़ती हूँ। मेरी विनती सुनिये, आप मुझे माता-पिता और बहिन देना। एक छोटा सा भाई भी प्रदान करना, जिसको मैं राखी बाँध सकूँ। मुझे सास-ससुर और ननद से भरपूर ससुराल भी देना। एक छोटा सा देवर भी देना। हे जगदम्बे माता! आप चाँदी-सोना के साथ इस लड़की को अन्न-धन भी प्रदान करना, जिससे आपका पूजन भलीभाँति हो सके। हे माता! मैं हाथ जोड़कर आपके चरणों में नतमस्तक होती हूँ।

संजा पूजन एवं गुड़ल्या के गीत मालवा में कुँआरी कन्याओं एवं अविवाहित षोड़शी बालाओं द्वारा गाये जाते हैं। नवरात्रि में देवी अम्बिका की आराधना में गरबा बिठाया जाता है। लड़कियों के ऐसे गीत डॉ. श्याम परमार के ग्रन्थ में प्रकाशित होने से यहाँ पिष्टपेषण करना उचित प्रतीत नहीं होगा।

कार्तिक मास के गीत

कार्तिक मास में नारी जीवन के अनेक त्योहार आते हैं। कृष्ण पक्ष में करवाचौथ, बारस को वत्स द्वादशी या ब्रज बारस, अमावस्या को दीपावली, प्रतिपदा को गोरधन पूजा एवं गूजरी, हीड़ एवं भाईदूज जैसे त्योहार आते हैं। इसके पश्चात् देवउठनी एकादशी का महत्त्वपूर्ण व्रतोत्सव आता है। कार्तिक मास में स्नान व भजन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्त्रियाँ प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान करती हैं। दीपावली के दूसरे दिन गोरधन पूजन किया जाता है। इस शुभ अवसर पर हीड़, गोरधन एवं चन्द्रावली के गीत गाये जाते हैं। गोरधन को गोवर्धन धारी श्रीकृष्ण का रूप मानकर कृष्ण-बलराम एवं चुगलखोर मनसूखा की आकृतियाँ गोबर से थापी जाती हैं। पाँच लड्डू बनाये जाते हैं। लोकाचार की दृष्टि से प्रतिपदा एवं पश्चात् देवउठनी एकादशी को नये बेर एवं गन्नों के टुकड़ों का भोग लगाया जाता है। स्त्रियाँ इस अवसर पर गीत गाती हैं, यथा-

गूजरन की बेटी पानी सांचरिया, आड़ा फिर गया कृष्ण मुरारी।
दो गूजरन दईड़ा को दान, थें दान का हो साबला कानाजी।
आवो म्हारा घर के हो दुआर, गाम नी जाणूं-नाम नी जाणूं।
आवो पिया घरे हो मुरार, गाम गोकल हे जी म्हारो नाम।
आंगणा में पारस पीपली जी म्हारे, सूरज सामूं हे पोल।
ऊँची अटारिया ने लाल किवाड़िया, दूर से आई थारी बेनूंली।
नंई हे काकाजी नई हे बाबाजी, कां से आई म्हारी बेनूंली।
सोना को रूप बेनां, घड़ा घडुलियो, चलोरी बेनां न्हावण चालां,
दोई बेना मिली चली जुमुना पे, चाल चले हो जसां मरदानी,
म्हारा तो घर में राम रसोई, दोई बेन्यां मली ने जीमण लागी।
केस धारिया ओ जसां मरदानी, चुनचुन कलियां सेज बिछाई,
चालोरी बेन पोढ़न चालां, दोई बेन मिलिके पोढ़न लागी।
परगट हुयो तब गिरधारी, इतरा छल म्हांसे क्यों किया मोहन?
छः मईन्यां की करो रातड़ली, तू तो बई चन्द्रावली।
म्हारा गोरधन की गति चन्दर करि आयो।
कारतिक मास बईजी दिवाली आवे।
पड़वा के दन गोरधन थापी दीजो हो।
उतरते कारतिक ग्यारस आवे।
गोरधन की गति हुई जायगी हो।

एक गूजरी पानी भरने जा रही थी, तब रास्ते में कृष्ण ने उसे घेर लिया, कहने लगे- हे गूजरी! हमें दही का दान दो। गूजरी ने कहा- यदि आप दही प्राप्ति के इतने ही इच्छुक हों, तो मेरे घर के द्वार पर आ जाना। कृष्ण कहने लगे- मैं तुम्हारा न तो नाम जानता हूँ, न गाँव की जानकारी है। गूजरी कहने लगी- मथुरा नगरी के गोकुल नामक गाँव में मेरा घर है। चन्द्रावल मेरा नाम है। मेरे घर के आँगन में पारस पीपल का वृक्ष खड़ा है और पूर्व दिशा में उसका दरवाजा है।

श्रीकृष्ण भी नारी वेश बनाकर उसके द्वार पर पहुँचते हैं। कहने लगे- मैं तो तेरी बहिन हूँ। दूर देश से आई हूँ। गूजरी ने कहा- न तो मेरे काका है, न बाबा हैं। हे बहिन! तुम कहाँ से आई हो? सोने जैसा चमकीला तुम्हारा रूप है। सिर पर पानी का घड़ा-बेहड़ा उठाया हुआ है। हे बहिन! चलो, हम दोनों यमुना पर नहाने चलें। कृष्ण नारी वेश में अवश्य थे, किन्तु उनकी चाल ढाल से मरदानगी झलक जाती थी। गूजरी ने कहा- अब चलो मेरे घर पर बढ़िया राम रसोई बनी है। दोनों बहिनें मिलकर भोजन करने लगीं। किन्तु कृष्ण के केश तो मर्दाने जैसे थे। चन्द्रावल गूजरी ने फूलों की कलियाँ चुन-चुनकर सेज (शैय्या) पर बिछा दी। फिर कृष्ण से कहने लगी- हे सखी! चलो दोनों मिलकर पलंग पर शयन करें।

जैसे ही दोनों पलंग पर सोई, कृष्ण अपने असली वेश में प्रकट हो गये। तब गूजरी चन्द्रावली कहने लगी– हे कृष्ण! तुमने इतना छल क्यों किया? अब आप इस रात्रि को छः माह की बना दीजिये। ताकि हम जी भर कर सोने का आनन्द ले सके। हे चन्द्रावल! तुम तो मेरी अपनी हो, किन्तु मेरे गोरधन रूप की गति तुमने नहीं देखी। उसको तो चन्द्रमा विकृत कर आया है। तब– हे चन्द्रावल! अपनी उस गति को सुधारने के लिये एक काम करना कि दीपावली के दूसरे दिन प्रतिपदा को उसकी गति सुधार देना। गोरधन थापना और जब कार्तिक शुक्ल पक्ष में देवउठनी एकादशी का दिन आये उस दिन उसकी गति सुधर जायेगी।

मालवा में 'गूजरी' गाने की परम्परा विद्यमान है। दीपावली की प्रतिपदा को यह स्त्रियों द्वारा गाई जाती है। जबकि हीड़ पुरुषों द्वारा गाई जाती है। गीत रूप देखिये–

अरी तुम सुनो यशोदा मात, जोड़कर हात अरज इक मेरी।
हूं कब तक बिपदा सेऊं बिरज की चेरी।
अरी देख म्हारो यो हाल, थारो नंदलाल चुंनड़िया फाड़ी।
म्हारी मटकी लीनी छीन तेरो गिरधारी।
मारग में बेठ्या पावे, ऊ नित नई धूम मचावे।
अरी सब ग्वाल बाल बेकावे, वो हमकूं नई सुवावे।
जसोदा के आगे गूजरी, रोवा लागी जार जार।
फाड़ दीनी चूंनड़ म्हारी, कर दीनी तार तार।
गुल्ली, छला, छाप म्हारा, फेंक दिया छीन छीन।
चोली उपर गोटो म्हारो, कर दियो तार तार।
आज पीछे मइया तेरे, घरे नंई आउंगी।
सबरो हवाल राजा, कंस के सुणाउंगी।
अरी मात इने घरे में समझाना, गूजरी देने लगी ताना।
अरी जद होयो सुबे को वक्त, जग्यो सबज जक्त।
धेन सब घेरी।
सब गुवाल लिया बुलाय, मुरलिया टेरी।
केवा लग्या नंदलाल, सुणो सब ग्वाल।
बात एक मेरी।
कोई छल को करो उपाय, करो नी देरी।
केवे नंदलाल सुणोरे, ग्वाल बाल हूँ सबके जिमाऊंगो।
मेरो कह्यो मानोगा तो, सबका बचाउंगो।
माता आगे जाके कीजो, गूजरी ने मार्‌यो हे।
तीन लोक का नाथ ने तो, केसो रूप धर्‌यो हे।
लाठी उपर बेठके ने, माता आगे ताड़्यो हे।

दोड़ी दोड़ी माता आई, पुत्तर कीने मार्‌यो हे?
बेठ्या बेठ्या रोवे वीतो, बात नी बताड़े हे।
केसे रेउं माता म्हारो, हियो भर भर आवे हे।
गूजरनी ने ऐसा मार्‌या के, तोड़ी दीनी नस नस।
मार्‌यारी दरद का मार्‌या, करी रया टस टस।
आज पीछे माता थारी, गउवा नी चराउंगो।
तोड़ी हे मुरलिया म्हारी, कंई तो बजाउंगो।
अरी मारके करी दिया घमासाना।
गूजरी देने लगी ताना, श्याम को घर में समझाना।
अरी जब लियो हे गोद उठाई, रई समझाई, पुत्तर क्यूं बिलखाई?
सब झाड़ी डील की धूल, लगइलियो गला से।
आई थी बिरज की नार।
करी टकरार रांड गई छल के,
गूजरी कूं दूंवा दंड, सवेरां चल के।
अरी जदी केन लगी मेथारी, सुणके मगन हुवो गिरधारी।
केवे नंदलाल, ग्वाल बाल, सबज के बचाउंगो।
म्हारो केणो मानोगा तो, सबज के जिमाउंगो।
नटी गया ग्वाल बाल, ऐसो मती करो स्याम।
आप स्याम हात नी आवो, म्हांकी होई जाय मुस्कल।
नटी गया ग्वाल बाल, मनसूका के लइल्यो सांत।
उठो ऊबी गूजरी का घरे, चालों थीं तो भगवन।
रात सारी बीती गई, तड़को चढ़्यो घड़ी चार।
आप स्याम भीतर घंसग्या, मनसूखो खड़्यो हे भार।
भार उब्यो मनसूको ने, जतन बतावे हे।
जागेनी गूजरनी इतरी, देर क्यूं लगावे हे।
पेड़ा उप्पर उखल घरके, उतार क्योंनी लावे हे?
मटकी उतार स्याम, खावे हे ऊ गट गट।
आप स्याम माखन खावे, मनसूकायें देवे ई नांई।
तो मनसूका ने गूजरी के, जई के जगाई।
अरी गूजरी घर में घुस्यो हे कनाई।
इतरी आवाज सुन्योरी गूजरी ने,
तो वा भागती दोड़ती आई।
कां हेवे रे मनसूका ऊ, देखी ने भागनी जावे।
खूण्यां में छिपके बेठ्यो, मोंय स्याम नजर नई आवे।

गूजरनी घर में ढूंढे, तो स्याम नगे नंई आवे।
आज ऊंने म्हारे दई, धणोई खायो हे।
घणारे दनां में म्हारे, आज हाते आयो हे।
पकड़ी के ऊ दोई के, बांध्यो हे रे गचड़के।
घणो मती मारे गूजरी, टूटी जाय काची नस।
आज पीछे माता तेरे, घर पे नई आउंगो।
बाबा नंद की दुवाई, तेरो माखन नी खाउंगो।
अरी छोड़ूयारी म्हने, तेरा माखन का खाना।
श्याम को घर में समझाना।
अरी जदे होयो सुबे को बखत, दोड़ी के नंद घर पे आई।
ओंका सिर पे नावण धरे, उनीये छिपई ने लाई।
अरी जदी होने लगी परभात, जसोदा मात।
के अई ने जगाई, अरी तम सुणो जसोदा मात।
लाल ने दई मेरा खाया।
सेवेरां सवेरां रांड करवा लागी कल-कल।
पल्लों उघाड़ देख्यो बेठो हे बुड्ढो सो ग्वाल।
धोरी धोरी डाड़ी ऊंकी भरी हे दई से सारी।
थारा घर वाला हेरी, इंकी मूंछा करे फर फर।
अरी तू करती दइया दइया, मेरो सुतो हे कंवर कनइया।
माता ने आवाज दई के, किरस्न कूं जगाया हे।
छम-छम झांझर बाजे, सूता उठके आया हे।
धन-धन भाग मेरो तेने माखन खायो।
म्हारो री जीवन गूजरी खुण्यां में बचायो।
हे पहलो यो तो खंड भागवत में बथायो।
अरी दियारी भगती का म्यान, कृष्ण को घर में समझाना।
गूजरी देने लगी ताना।

इस लोकगीत में कृष्ण की माखनचोरी सम्बन्धी विचित्र लीलाओं का वर्णन उपलब्ध है। लोकगीत में गूजरी की अनुवांशिकता उल्लेखनीय विषय है। गूजरों के अधिष्ठान देव को देवनारायण के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म 24 भाई बगड़ावतों में सबसे बड़े राजा भोज (भोज राज) के यहाँ हुआ था। हीड़ के नायक की दृष्टि से देव नारायण को मालवा में अवदान का रूप प्राप्त है। गूजर जाति शक्ति की उपासक एवं शीतला की पूजा करने वाली है। इस गीत में कृष्ण बलराम एवं मनसूखा आदि की माखनचोरी, शिकायत एवं हास्य का अद्भुत प्रसंग मिलता है।

मालवा में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोरधन थापा जाता है। इस अवसर पर जहाँ उनकी

आकृतियाँ उकेर कर पूजनोपचार किया जाता है, वहीं स्त्रियाँ गोरधन को ही कृष्ण रूप मानकर उनके गीत गाती हैं। एक गीत देखिये–

ऐ दई को धमड़को, कनइया ने सोवे,
ओ म्हारी छालरे माता, नत की ओळम्बो लाय।
ओ राजू लालजी थांकी, छालरो वो माता।
नत की ओळम्बो लाय।
जावतां तो भेळ्यो मालवो री माता।
बावड़्तां के भेळी गुजरात।

इस गीत में दर्शित है कि श्रीकृष्ण को दधि माखन बहुत प्रिय है। हे मेरी छालर माता! तुम तो नित्य प्रति की शिकायतें लाती हो। अरे राजू लाल जी! तुम्हारी गाय तो बड़ी उजाड़ू है। जब वह जंगल में चरने जाती है, तो जाते समय तो मालवा को उजाड़ कर देती है और लौटते समय गुजरात। मालवा के ग्रामों में गुवालों द्वारा दूसरे के खेतों में पशु धन चोरी चुपके चराया जाता है। उसी को इंगित कर छालर के प्रति उपालम्भ वर्णित किया गया है।

सोंधवाड़ी में – इन्हीं दिनों दीपावली पर हीड़ गीत भी गाया जाता है, यथा–

हूँ गोरधन की पूजा करूँ, बलद्या ने खवाडूँ चोखा,
हे रानी दीवाली, चोखा गुड़ खवाड़ी ने नचाडूँ, कुदाडूँ।
ढोलक बजाडूँ ओ रानी दिवाली।
सींगड़ा रंगइ दूँ, दिवा जोवई दूँ।
ओर फेरी रमूँ कूदं ओ रानी दिवाली।
तू आवी ने चोखा लावी दिवाली।
गुड़ चोखा ने घी लावी दिवाली।
घणा चोखा ने घणो गुड़,
हगला ने मली ने खादा ओ रानी दिवाली।
हूँ गोरधन की पूजा करूँ।

रानी दीवाली आ गई है? मैं गोवर्धन की पूजा करती हूँ। हे दिवाली रानी! मैं बैलों को चावल खिलाती हूँ। गुड़–भात खिलाकर उन्हें नचाती–कुदाती और ढोल बजाती हूँ। बैलों के सींगों को रंगती हूँ, दीपक लगाती हूँ। फिर मैं नाच कूदकर प्रसन्न होती हूँ। हे रानी दिवाली! तुम आई तो अपने साथ चावल–गुड़ और घी लेकर आई। भगवान कृष्ण ने ब्रज की रक्षा गोवर्धन पर्वत से की थी। प्रतिपदा को गोवर्धन की आकृति गोबर से उकेर कर स्त्रियाँ उनका पूजन करती हैं। इसलिये गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं के सींग रंगकर उन्हें फूलों से सजाया जाता है। उन्हें चावल और गुड़ खाने को दिया जाता है। यह गीत मंगलकारी लीलाओं का स्मरण करवाकर हिन्दुओं के हृदय में गौ भक्ति एवं प्रेम का संचार करता है।

अगहन से माघ मास तक के व्रतोत्सव

अगहन मास के कृष्ण पक्ष में काल भैरव, जन्माष्टमी पर सत्ती भैरू के गीत गाये जाते हैं। शेष मास में प्राय: नारी जीवन के गीत ही गाये जाते हैं, जिनमें उनके हर्ष-विषाद एवं श्रृंगार भावों को प्रमुखता मिलती है। पौष-माघ के महीने में समग्र रूप में संक्रान्ति के व्रत्तोपवास आते हैं, जबकि मकर राशि पर सूर्य होता है। मालवा में संक्रांति के व्रत विशेषकर प्रचलित हैं। इन सब लोक व्रतों में मून, साथ्यो, टींकी, तुलसी, दातनझारी, उगणो तथा आथणो, अति प्रसिद्ध हैं।

मून व्रत - यह व्रत संध्या समय धारण किया जाता है। कुँआरी कन्याएँ इस व्रत को करती हैं। विज्ञान व आध्यात्म की दृष्टि से भी यह व्रत बहुत उत्तम माना गया है। आकाश में जब सब तारे टिमटिमाने लगें, जब यह व्रत छोड़ा जाता है। व्रत छुड़वाने वाली दूसरी कन्या व्रती को इस प्रकार कहती है-

झालर बाज, घड़ावर बाजी, संजा फूली तारा होया।
चड़ी-चड़कला बासे बेढ़्यो, आंबो मोर्‌यो, लींबो मोर्‌यो।
छोड़ मून, सीताफर लाग्या, सीताकर दो करो फरार।
मुनीजी का मून छुट्या, मुनि बाबा राम राम।

मून व्रत की समाप्ति पर कन्याएँ चाँदी की झालर, डंका, तारा तथा चाँद बनाकर तुलसी के पौधे के पास चढ़ाती हैं जो कि अक्सर ब्राह्मण को भेंट में दे दिये जाते हैं। इसी प्रकार साथ्यो (स्वस्तिक) नामक व्रत भी कुँआरी कन्याएँ उत्तम वर की प्राप्ति की इच्छा से करती हैं। भारतीय संस्कृति में सातिया या स्वस्तिक मातृ देवता का प्रतीक (चिन्ह) माना जाता है। हर प्रकार के मांगलिक कार्यों में गणपति के रूप में पूजने के लिये इस शुभ चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। मालवी कुँआरी कन्याएँ भी कुमकुम से एक सातिया प्रतिदिन परेंडी (जलधर) के उपर बनाती रहती हैं। बाद में उसे मन्दिर में चढ़ा दिया जाता है।

टींकी का व्रत सुहागिन स्त्रियाँ करती हैं। साल के अन्त में गन्ध की शीशी दान में दी जाती है। सौभाग्यवती होने की कामना का भाव इस व्रत में निहित होता है।

तुलसी के व्रत को कुमारिकाएँ व स्त्रियाँ दोनों ही करती हैं। यह व्रत रविवार को किया जाता है। दातन झारी का व्रत अधिकतर कुँआरी लड़कियाँ करती हैं। उत्तम स्वास्थ्य की रक्षा के लिये यह अनुष्ठानिक व्रत नि:संदेह बहुत उपयोगी है।

'उगणो-आँथणो' (उदय-अस्त) का व्रत सूर्य पूजा का प्रतीक है। कहावत है- 'दीतवार जात को छत्री पूजा सूर्य की करे' किन्तु मालवा में यह व्रत-अनुष्ठान कुँआरी कन्याएँ करती हैं। उगते सूर्य के प्रतीक रूप में कन्याएँ 'थाली' का दान करती हैं, जबकि अस्त होते सूर्य की पूजा के प्रतीक के रूप में 'साड़ी' का दान करती हैं। यह व्रत हमारी आदिम संस्कृति के अन्तर्गत

प्रकृति पूजा का स्वरूप प्रकट करता है। हमारी वैदिक संस्कृति में प्रकृति पूजा को यह प्रतिष्ठा प्राप्त है।

नारी जीवन के गीत

इन माहों में मालवी महिला समाज द्वारा अनेक ऐसे लोकगीत गाये जाते हैं, जिनसे उनकी सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक जीवन की विषमता, सुख-दुख, हर्ष-विषाद, मान-अपमान की संवेदना, शीलता के दिग्दर्शन मिल जाते हैं। ऐसे अद्यतन अप्रकाशित किन्तु चुनिंदा लोकगीतों की झलकी यहाँ प्रदर्शित की जा रही है। लोकजीवन की गृहस्थमय झांकी का एक सुन्दर गीत राम भक्ति के गीतों में दिया गया है। यहाँ एक अति सुन्दर गीत, सायब, गौरी संवाद का दिया जा रहा है।

चटक चांदणी सी रात ओ गोरी, तो रमवा नीसर्‌याजी म्हारा राज।
रम्या-रम्यां सारी जो राते, परोड़े घरे आवियाजी म्हारा राज।
खोलो-खोलो बजड़ किंवाड़े, सांकल तो खोलो सार की जो म्हारा राज।
नंई खुले हो बजड़ किंवाड़, ओ जूं आया जूंई जावोनी म्हारा राज।
लागी-लागी भारूजी ने रीसे, ओ मेलां से नीचे उतर्‌याजी म्हारा राज।
लागी-लागी भारूजी से रीसे, ओ गोरी पर मार्‌या चामकाजी म्हारा राज।
खोल्या-खोल्या सोलाई सणगार, पीळ्यो तो ओड़्यो पोचमो जी म्हारा राज।
लीवी-लीवी पीयरिया री वाटे, गोरी तो चाल्या बाप क्यांजी म्हारा राज।
घोड़-घोड़े होई असवारे, जेठ जी आगे आवियाजी म्हारा राज।
घोड़े-घोड़े होई असवारे, देवरजी आगे आवियाजी म्हारा राज।
सुसराजी थेंई म्हारा बाप, थांके लारा नई चालांजी म्हारा राज।
जेठजी थेंई म्हारा बापे, थांके लारां चालांजी म्हारा राज।
देवरजी थेंई तो हो म्हारा बीर, थांके तो लारा नंई चालांजी म्हारा राज।
हाले-हाले हिवड़ा में बोल ओ, मोरां में हाले चामकाजी म्हारा राज।
मनोरा मोटा घरां री नारे, रूस्या ने मनाव स्यांजी म्हारा राज।
घोड़े-घोड़े होई असवारे, सायबजी आगे आवियाजी म्हारा राज।
सायबजी थेंई म्हारा पियाओं, थांके लारां नंई चाल स्याजी म्हारा राज।
हाले-हाले हिवड़ा में बोल ओ, मोरां में हाले चामकाजी म्हारा राज।
फाट्या ई दूद-दही ओ फाट्या, हिवड़ा, नामलेजी म्हारा राज।
पड़ी गई रेसम गांठे ओ, टूटे पण छूटे नई जी म्हारा राज।
घनोरा मोटा जो घर की नारे ओ, छोटा अरे चालसी जी म्हारा राज।
जसो थांको चुड़ला रो रंग, वसोई रंग राखस्यामी जी म्हारा राज।
देवां देवां लाडूलारी गोठ ओ, रूस्यां ने मनाव स्यांजी म्हारा राज।

सायब–गोरी (पति–पत्नी) का यह संवाद अति रोचक एवं सामान्य कौटुम्बिक ऐषणाओं से भरपूर है। खिली हुई चाँदनी रात्रि है। इसमें गोरी घूमने निकलती है। सारी रात घूमते बीती और पिछले प्रहर (परोड़े) वह घर आई। आकर उसने – वज्र के समान लोहे की साँकल खोलने के लिये अपने पति को पुकारा। पति तो रूठा हुआ था, उसने साँकल खोलने से इन्कार कर कहा– जैसी आई हो वैसी ही चली जाओ। पति (मारूजी) को रीस लगी (क्रोध आया) तो वे महल से नीचे उतर आये। उतरते ही गोरी की चाबुक से पिटाई कर दी।

पिटाई से रुष्ट हुई पत्नी ने अपना सोलह श्रृँगार खोल डाला। पीला पोचमा (साड़ी) भी उतार फेंकी और सीधे अपने पीहर की राह ली। यह देख विभिन्न घोड़ों पर आरूढ़ हो उसके ससुर, जेठ, देवर उसे मनाकर घर वापस ले जाने के लिये उसके पास आये। किन्तु गोरी ने उन्हें विनम्रता पूर्वक यह कहकर मना कर दिया कि वह उनके साथ वापस लौटकर अपने घर न जा सकेगी। वह तो अपने पिता के घर ही जायेगी। क्योंकि उसके शरीर पर पड़े चाबुक की मार से उसका सारा बदन टीस कर रहा है।

तब घोड़े पर सवार होकर उसका पति उसे मनाने के लिये आगे आया। पत्नी बोली– मानती हूँ कि आप मेरे पति है, किन्तु मैं तो अब आपके साथ भी वापस लौटने के लिए तैयार नहीं हूँ। मेरे हृदय में मार की टीस चुभ रही है तथा पीठ पर लगे चाबुक से जलन हो रही है। क्या कभी फटे दूध का भी दही बन सकता है? रेशम की रस्सी में जब गाँठ पड़ जाती है, तब वह टूट तो सकती है, पर छूट नहीं सकती। यहाँ काव्योत्कर्ष अवलोकनीय है। दिल में लगी चोट से दिल टूट तो सकता है, पर जुड़ नहीं सकता।

तब उसका सायब गोरी को मनाता हुआ कहता है– जैसे तुम्हारे चूड़े का रंग है, भविष्य में वैसा ही रखूँगा। जैसा तुम्हारी चूदड़ी का रंग है, भविष्य में मैं वैसा ही रहने दूँगा। अर्थात् मेरी ओर से किसी भी प्रकार का उत्पीड़न नहीं होगा। यही नहीं मैं अपनी ओर से लड्डू–बाफले की गोठ देकर भी अपनी प्रियतमा को मनाऊँगा।

लोक जीवन में अंधविश्वास के जो भी रूप प्रचलित हैं, उनमें कामण विधि प्रमुख है। शादी के अवसर पर ये अनिवार्य हो जाते हैं। यद्यपि भौतिक युग में सर्व स्वीकार्य नहीं है, तथापि आदिम मानस के लोक विश्वासों एवं रूढ़ियों के रूप में अब भी मान्यता पाते हैं। विभिन्न जाति, वर्ग समूहों में इन्हें आज भी मान्य किया जाता है। 'कामण' का उद्भव 'कामना' से माना जाता है। इसका लक्ष्य कामना की पूर्ति मात्र है। दूसरे शब्दों में उसका पति उसी के वश में रहे। उसी का अनुगामी होकर रहे। वधू पक्ष की ओर से वर पक्ष को प्रभावित करने के लिये ऐसे गीत अक्सर विवाह के अवसर पर गाये जाते हैं। कुछ बानगी देखिये–

जादू बरहक कोई नी जाणे, कामण करे सो कूड़।
फूल वास को कछु नंई होवे, ना समझे तो मूड़।

जन्तर कोई ताल बजावे, ना उजड़े एक बाल।
पुरुष वश में इस्तर होवे, काया मोहन डाल।
जलवा दूं -जलवेई में बोदूँ, बांदूँ निरमल नीर।
सात समंद कोट से बांदू, बांदू बावन बीर।
इन्दर जाल की चोकी करदां, बचन सारदा मांय,
जाल मोहन डाल गया में, मधु क्षप वस में होय।

जादू-टोना कोई नहीं जानता, जो कामण करता है, वह भी निकृष्ट होता है। फलों की सुगन्ध का कुछ नहीं बिगड़ता। जो इस क्रिया को समझता नहीं, वह मूर्ख है। कोई ताल ठोंककर जन्तर करने की बात करता है, उससे किसी का कोई नुकसान नहीं होता। किन्तु पुरुष तभी वशीभूत होता है, जबकि कोई उस पर मोहिनी डाल दे। जल को बाँधने और उसमें कोई भी वस्तु उत्पन्न करने की क्षमता हो, निर्मल पानी को भी मोहिनी मंत्र से बाँध सकता हो। सातों समुद्रों के किनारों को कोट के समान बाँधने में समर्थ हो, सरस्वती के वचनों पर नियन्त्रण हो, जो मोहिनी डाल सकता हो उसी के वश में सब हो जाते हैं। दूसरा एक गीत देखिये-

अजी हंस बोल हमारी, कामण रा कांकण बांदू हात में।
अजी कालो जो कपड़ो, मच्छर पकड़ो, ओर मछली की जाल।
साका, होली मरव से बोली, उलटी बेचे खाल।
अजी असाड़ बिजोरी निम्बु मंगायां, ओर सार की सुईयां।
गवी नाक में कोड़ी न्हाकां, बाबा मेरी गुइयां।
टिटोड़ी का पंख मंगई के, ओर सुवा की भाजी।
सात भांत को रेसम मंगई दूं, हुई जावो तम राजी।

इस कामण गीत में एक कामिनी (जादूगरिनी) कहती है- अरे हजारी! जरा हँस के तो बोल। ऐसा करोगे तो मैं तुम्हारे हाथ में कामण से कंकण बाँध दूँगी। काले कपड़े में मच्छर रखकर, मछली की जाल का टुकड़ा बंधा दो, तो जो नहीं बोलता होगा, वह भी अपने शरीर की खाल देने को तैयार हो जायेगा। आषाढ़ में लगने वाले बिजौरी निम्बू, सार की सुईयां (आलपिन) मँगवालो। अपनी दाईं नाक में कौड़ी पहिन लो। टिटौड़ी के पंख मँगवा लो और सुवा की भाजी बना लो। सात प्रकार का रेशम मँगवा दो, इतना जंत्र करूँगी तो जो वश में न होगा, वह भी कामिनी के वश में हो जायेगा। एक कामण गीत अवलोकनीय है-

सुवाग मांगण चाली जी, अपणी माता बई का पास।
सुवाग मांगण चाली जी, अपनी काक्यां बई का पास।
सुवाग मांगव चाली जी, अपणी भावज बई का पास।
माता दोनी सुवाग, काक्यां दोनी सुवाग, भावज दोनी सुवाग।
रे बई हूँ कंई जाणूं कामण घोर-घोर लाग्या।

काजल टींकी होई के लाग्या, लच्छा फुंदा होई के लाग्या।
नेमण जीत होई के लाग्या।
री बई हूं कंई जाणू कामण घोर-घोर लाग्या।
सुवाग मांगण चली जी, अपणी माम्यां बई का पास।
सुवाग मांगण चली जी, अपणी बेन्यां बई का पास।
सुवाग मांगण चली जी, अपणी मास्यो बई का पास।
सुवाग मांगण चली जी, अपणी बुआ बई का पास।
मास्यां दोनी सुवाग, बुआ दोनी सुवाग।
बई हूं कंई जाणूं कामण धोर-धोर लाग्या।
अरी गोरी को सुवाग, बारक बनड़ी को सुवाग।
मिरगानेणी को सुवाग।

इस कामण गीत से स्पष्ट है कि सौभाग्य की आकांक्षा से गोरी अपनी माँ, काकी, भावज (भौजाई) के पास जाती है। किन्तु वे कहती हैं कि- हे बाई जी! हम तो कुछ भी समझती नहीं। लगता है तुम्हें अनिष्टकारी कामण लगे हैं। या तो वे तुम्हारी आँखों के कारण लगे हैं या लिलाट की बिंदी के कारण लगे हैं। या तुम्हारी चोटी में लटकने वाले फुंदे के कारण लगे हैं। हे बाई जी! हम तो कुछ भी नहीं समझ पाई कि तुम्हारे सौभाग्य को कामण क्यों लगे हैं? तब फिर गोरी इसी प्रकार अपने सौभाग्य की रक्षा हेतु अपनी मामी, बहिनों और सखियों के पास जाती है। किन्तु वे भी उनके सौभाग्य को कामण से बचाने के लिये कुछ नहीं कर पाती। वे कहती हैं- हे बाई जी! हम कुछ नहीं जानतीं कि तुम्हारे पति को कामण क्यों लगे हैं? इस गोरी के, इस बालक बनड़ी के, इस मृगनयनी के सौभाग्य को कामण ने क्यों ग्रसित कर रखा है? एक और गीत देखिये-

कोरी कोरी कुलड़ी में दईयो जमायो राज।
आज म्हारा दायजी घर राइवर ने नोत्यो,
दादाजी घरे नोत्यो, म्हारी माता ने नोत जिमायो हो राज।
लीली टिलड़ी, लीलो सूत, बांदो लासू के दूत।
बांद बूंद के करी सलाम, एक सलाम लाड़ी के।
दूजी सलाम, तीजी सलाम, त्हारो बाप गुलाम।
छोड़ दो दादाजी की प्यारी, अब तो म्हांका चाकर राज।
चाकर थांतो पेलां केता, अब तो कामण किया हो राज।

कोरे मिट्टी के सकोरों में दही जमाया गया। आज मेरी दायजी (पिताजी) के घर मेरे प्रियतम को भोजन के लिये आमंत्रित किया। भाई के घर निमंत्रण दिया। मेरी माताजी ने निमंत्रण देकर भोजन करवाया।

हरी टींकी, हरा सूत लेकर सास अपने जामाता को बाँधती है, ताकि किसी की नजर न

लगे। बाँधकर उसे नमस्कार किया। हे दादाजी की प्यारी! अब तो कामण को हटा दो। अब तो हम तुम्हारे गुलाम हो गये हैं। तुम्हारे वश में हो गये हैं। यदि तुम चाकर थे तो पहिले क्यों नहीं कहा। हे भाई राज! अब तो तुम पर वशीकरण कर ही दिया है। एक गीत की बानगी देखिये–

माता बई कामण करवा लागी,
म्हारी राजकंवर ऊबी धूजे हो राम।
थें क्यो थर थर कांपो म्हारी नानीबई,
म्हारा दादाजी की घणी प्यारी हो राम।
माता जाण जुगारी म्हारा,
दादा जी ने बस कीदा हो राज।

मेरी माता कामण करने लगी, तो मेरी राजकुँवरी (कन्या) खड़ी–खड़ी काँपने लगी। माता ने कहा– हे पुत्री! तुम थर–थर क्यों कांप रही हो? तुम तो मेरे दादाजी की अति प्रिय हो। मेरी माता तो बहुत 'जाण–जुगारी' (जादूगनी) है। उन्होंने तो दादाजी तक को अपने वश में कर रखा है।

एक और गीत में कामण करने के उपकरणों का बखान किया गया है, यथा–

उड़द मूंग सब दल लो, सुवाग कामण कर लो।
लाड़ी की माता दाल दलो, उड़द्या की।
लाड़ी की काकी, दाल दलो उड़द्या की।
उड़द मूल सब दल लो, सुवाग कामण कर लो।

हे बाई! उड़द और मूंग सबको दलकर सुहाग कामण कर डालो। हे लाड़ी (दुलहिन) की माता जी! आप उड़द की दाल दलो। लाड़ी की काकीजी आप दाल दल लो। उड़द–मूंग दलकर लाड़े पर कामण कर डालो। कामण या वशीकरण में उड़द का रंग काला होने से इन्हें मंत्र से अभिमंत्रित करके सामने वाले पर जादू किया जाता है। इस कारण 'उड़द' का वशीकरण में बहुत महत्त्व दर्शाया जाता है।

एक गीत में अपनी ननद के देवर से पाला पड़ जाता है, जो उससे अपनी कुवासना शान्त करना चाहता था। वह अपनी पवित्रता की उपमा फूल से देकर उसे झिड़क देती है, यथा–

छोटी सी हुई जब करी सगाई,
म्हारा सुसरा ने खरच्या रोकड़ा, जद म्हारे ब्याई।
परणी के लई गया घरे, सास पां सोई,
वां लगा किसी का हात फूल सई रई।
धरम से हुई जरगाव चोली भीग गई।

म्हारे पिलाव ठंडो पाणी झारी भर करके।
छोटी नणदली का हीरा देवर बड़ा खूनी,
म्हारो सम सक्कण को काल, भर दीजो पाणी।
पानी जो भरवा गई देर हुई भोत भारी,
म्हारा सम सक्कण को काल भरण दीजो पाणी।
तन में मारूँ छुरा जान ले डालूं,
चल अलग खड़ो वेजा दूर, छोड़ म्हारो पल्लू।
मोंय परणी ने नी लई गया संग, जद नी सोई।
जरासो नी लाग्यो म्हारे दाग, फूल सई रई।

मैं छोटी सी थी, तब ही मेरी सगाई हो गई थी। मेरे ससुर ने नगद रुपये खर्च किये, तब मेरी शादी हुई। शादी करके मुझे लिवा गये। उसके बाद मैं अपनी सास के साथ सोई। मुझे किसी का हाथ भी न लगा। मैं सर्वदा फूल के समान बनी रही। जब प्रथम बार मैं रजस्वला हुई तो मेरी चोली भी भीग गई।

मेरे पति ने कहा कि मुझे ठण्डा पानी पिलाओ। मेरी छोटी ननद का हीरा नामक देवर बहुत खूनी प्रवृत्ति का था। जब वह मुझे पानी भर कर देने लगा, तब मैंने कहा– मेरे घर सौत का अभाव है। तू मुझे पानी भर लेने दे – छेड़ मत कर। मैं पानी भरने आई हूँ। मुझे बहुत देर हो गई है। तब वह कहने लगा– यदि यह बात है तो तेरे गदन में छुरा मारकर तेरी जान ले लूँगा। मैंने कहा– चल अलग हट। दूर खड़ा रह। मेरा लूगड़ा (साड़ी) छोड़ दे। जबसे मुझे शादी करके ले गये, तब से मैं उनके पास जरा भी नहीं सोई हूँ। मुझे हाथ मत लगा। मैं अब तक फूल के समान हूँ।

गृहस्थ जीवन में निषेध एवं अल्पवयस्क विवाह का कैसा सुरुचिपूर्ण तथा तथ्यात्मक चित्रण हुआ है, इस लोकगीत में?

मालवा में प्रचलित, एक गीत में भोजन की चर्चा हुई है, यथा–

अमरस रोटी ने गज–गज मोटी, मेथी दाणा को साग।
साजन आया पामणा जी, मिजबानी करांनी म्हारा राज।
पूरी, ने दूरी करी जी, सायबा सीरो लेसरदार।
लचलच तो लाडू भावे सायबा, दई बड़ा ओ साग।
फेणी पेड़ा नाम जलेबी, सेंव मसालेदार।
बरफी कलाकंद घेवर, कचोरी नुकती दाणेदार।

एक मेहमान के सत्कार में जो भोजन सामग्री परोसी जाती है, उसी का चित्रण इस गीत में किया जाता है। आमरस और बड़ी रोटी, दाना–मेथी की सब्जी, अपने प्रियतम के लिये तैयार की

है, जो पाहुन बनकर आये हैं। हे महाराज! मेहमाननवाजी करें। पूरी को हटाओ (मत खाओ)। हे सायबा! सीरा तो बड़ा लेसदार बना है। लड्डू भी बड़े लजीज (लचलच) बने हैं। हे सायबा! दहीबड़े और सब्जी, फीणी, पेड़ा, जलेबी और कलाकंद, घेवर और कचोरी तथा नुकती दाने भी बनवाये गये हैं। जो भी आपको रुचिकर लगे– हे साहब जी! आप भोजन आरोगिये।

संक्रान्ति पर्व पर ख्याली धुन में कतिपय गीत गाये जाते हैं, यथा–

छानां ओ छानां भंवरजी, पागां ओ पेरे।
छानां ओ छानां भंवरजी, मोती जो पेरे।
लड़ियां संवारतां गोरी ने देख्या, हां वो म्हारा बचनारां बांध्या।
भंवरजी, फुरड़ीसी आवे, फुरड़ी सी आवे भंवरजी, दाना नूं भावे।
सूनी सेजा पर खटमल काटे, हां वो म्हारा बचनारा बांध्या।
छानां जो छानां भंवरजी, घड़िया ओ बांधे।
पेंचा संवारतां गोरी ने देख्या, हांवो म्हारा बचनरा बांध्या।
छानां को छानां भंवरजी, मोजड़्यां ओ पेरे।
मोजो संवारता गोरी ने देख्या, हांवो म्हारा बचना रा बांध्या,
भंवर जी फुरड़ी सी आवे।

मेरे प्रियतम चुपके-चुपके पाग पहिनते हैं। मोती पहिनते हैं। गोरी ने उन्हें मोती की लड़ियाँ संवारते देख लिया। हे मेरे वचनों में बँधे प्रियतम (भंवरजी)! तुम्हें देखकर बड़ा पश्चाताप हो रहा है। जब मुझे पश्चाताप होता है तो अन्न भी अच्छा नहीं लगता। मैं जब सूनी शैय्या पर शयन करती हूँ तो मुझे खटमल काटते हैं। (जब पति शैय्या पर न हो तो पत्नी का विरह से व्याकुल होना स्वाभाविक है।) इस प्रकार जब पति में पौरुषत्व न हो और अपने शरीर को सजा कर अपनी पत्नी को आकर्षित करने का कार्य करे, तो पत्नी को पश्चाताप होना स्वाभाविक है। पेंचे संवारते हैं, जूतियाँ पहिनते हैं, किन्तु जब पौरुष से रहित हो वे स्त्रियों जैसे शृँगार करके मुझे रिझाने का प्रयास करते हैं, तब मुझे पश्चाताप के अतिरिक्त उनसे कुछ भी नहीं मिल पाता।

एक और ख्याली गीत जो संक्रान्ति पर गाया जाता है, जो इस प्रकार है–

केला रे हरा रंग तेरा, सासू हमारी पीसना पिसाती।
माता री याद तेरी आती, जेठाणी हमारी पाणी भराती,
भाबी री याद तेरी आती, देरानी हमारी रोटी बनवाती।
काकी री याद तेरी आती, ननंद हमारी झगड़ा कराती।
बेन्यां री याद तेरी आती।

एक नवोढ़ा बधू अपनी ससुराल में जाकर भी कष्टमय जीवन व्यतीत करने को बाध्य हो जाती है। जब उससे उसकी सास पीसने को कहती है, तब पीहर की लाड़ली लड़की को

उसकी माता की याद आने लगती है। जब उससे उसकी जिठानी पानी भरने को कहती है, तब उसे उसकी भौजाई की याद आती है। जब उसकी देवरानी उससे रोटी बनाने की कहती है तो उसे अपनी काकी की याद आती है। और जब उसकी ननद उससे झगड़ती है, तब उसे अपनी बहनों की याद ताजा हो आती है। तात्पर्य कि लाड़-प्यार में पली एक बालिका जब नवोढ़ा वधू बन जाती है और उससे जब ससुराल में काम करने को कहा जाता है, तब पीहर के सदस्यों द्वारा उसके प्रति किया गया स्नेह, उसे उनके प्यार में पुनः भिगो देता है।

उपनयन संस्कार, मानव के लिये षोड़श संस्कारों में से एक माना जाता है। मालवा में उपनयन संस्कार के अवसर पर स्त्रियाँ प्रायः यह लोकगीत गाती हैं, यथा-

दाऊजी ने यो बण बोयो, तो माता ने कात्यो सूत रे वाला।
काका जी ने यो बण बोयो तो, काकी जी ने कात्यो सूत रे वाला।
वीरा जी ने यो बण बोयो तो, भाबी ने कात्यो सूत रे वाला।
मामाजी ने यो बण बोयो तो, माम्यां ने कात्यो सूत रे बाला।
मासाजी ने यो बण बोयो, तो मासी जी ने कात्यो सूत रे वाला।
फोफाजी ने यो बण बायो तो, भुवाजी ने कात्यो सूत रे वाला।
पेरी जनेऊ नानो होयो रे बरामण, तो लगवो म्हारी माता भीक दो बाई।
तो लावो म्हारी काक्यां भीक दो बाई, भीक भीकारी ऐं सोवे रे नाना।
तो तुई म्हारा घर को रजई रे वाला, कायन की थारे गले रे जनोई?
तो कायन की थारे पोई बरोड़ी रे राजा।
नानण बण की म्हारे गले रे जनोई, तो मेंदा की म्हारे पोई रे बरोड़ी।
कायन की थारे पावड़्यां रे नाना, तो कायन की थारे चटियां रे बाला?
चंदन भी म्हारे पावंड़्या ओ बाई, हो कंचन को म्हारे चटियो ऐ बाई।

मालवी लोक संस्कारों में द्विज बनने के लिए उपनयन संस्कार का विधान है। उपनयन के अवसर पर नारी जगत द्वारा बटुक को उपनयन दिये जाने के उपलक्ष्य में गीत गाये जाते हैं। इनका प्रमुख विषय इसी प्रक्रिया से सम्बन्धित होता है। इनमें उपनयन किस वस्तु की बनाई जाती है, भीख क्यों माँगी जाती है। बटुक अपने कंधे पर चटिया (पोटली विशेष) में राह के लिये लड्डू व खाजे बाँधकर, एक विशेष आकृतियुक्त डंडे में लटकाया जाता है), का वर्णन किया जाता है। गीत में दर्शित है कि बटुक के पिता ने नानणबण (एक कपास विशेष जिसकी ऊँचाई काफी होती है) बोया तथा उसकी माता ने उसकी रुई से सूत कातने का काम किया है। इसी प्रकार काकाजी ने बण बोया तो काकी ने सूत काता, भाई ने बोया और भाभी ने काता, मामा ने बोया और मामी ने काता, मासा ने बोया और मासी ने काता, फूफाजी ने सूत बोया और भुवा ने काता। पारिवारिक बृद्धजनों के नाम जोड़कर गीत की कड़ियाँ लम्बी करने की यह विधि लोकगीतों की एक विशेषता कही जाती है। इसके बाद मुख्य विषय उपस्थित किया जाता है।

उपनयन धारण करके 'बटुक' अब ब्राह्मण बन चुका है। लोक संस्कारों में ऐसा बटुक अपना भिक्षा पात्र लेकर दो बार उपस्थित जनों के पास भीख माँगने जाता है। प्रथम बार भेंट में आई राशि वह गुरु को दे देता है, जिसने गायत्री मंत्र देकर उसे उपकृत किया और द्विज बनाया। दूसरी बार की भिक्षा वह अपनी माता को देता है, जिसने जन्म देकर उसे इस योग्य बनाया। हे बटुक! तुम्हारी जनेऊ किस वस्तु की बनी है और बरोड़ी (खाद्य सामग्री) किस वस्तु में पिरोई गई है? बटुक कहता है- उसकी जनेऊ नानणबण (कपास) की बनी है तथा मैदा की बरोड़ी बनाकर उसे दी गई है। हे बटुक! तुम्हारे पैरों की पावड़ियाँ और चटिया किस वस्तु की बनी हैं? बटुक कहता है उसकी पावड़ियाँ चंदन की तथा चटिया स्वर्ण निर्मित है। एक और गीत देखिये-

अणी नगरी में हे कोई राजा, बालाऐं समजावो जी।
कावड़ वाला मोत्यां वाला, गले जनेऊ पेरोजी।
अणी नगरी में दाऊजी राजा, बालाऐं समजाओ जी।
अणी नगरी में काकाजी राजा, बालाऐं समजाओ जी।
अणी नगरी में हो कोई राजा, बालाऐं समजाओ जी।
अणी नगरी में मामा जी राजा, बालाऐं समजाओ जी।
कावड बाला मोत्यां वाला, गले जनेऊ पेरोजी।

इस नगरी में ऐसा कोई राजा है, जो मेरे बालक को समझाये। मेरा बालक अपने गले में जनेऊ धारण कर रहा है। हे कावड़ उठाने वाले! मोतियों की माला धारण करो। इस नगरी में उसके पिताजी, उसके काकाजी, उसके भाई, उसके मामाजी सब कोई राजा के समान सम्पन्न हैं। इनमें से कोई तो उसे काशी पढ़ने के लिये समझाओ। हमारा बटुक अब अपने गले में जनेऊ धारण करने वाला है।

बेटी की विदाई

विदेह राज जनकजी ने अपनी पालित पुत्री वैदेही (सीताजी) की विदाई बेला में, हृदय की टीस को सहा है। सारा परिवार अश्रुमग्न है। जैसा कि हर आँगन-द्वार, बेटी की विदाई के समय आँसुओं से सराबोर हो उठता है। मालवी लोकगीत में यह दृश्य अवलोकनीय है-

नेनां बरसे हो मूसळधार, सियाजी चाली सासरे जी म्हारा राज,
चारों बहिनां हे जी सुकमार, उमर बारा के पास हे जी म्हारा राज।
म्हारो धीरज छुट्यो हो जाय, रेगई नेनां में प्यास म्हारा राज।
बिदा हुई ने चाली जी बारात, जनक जी का गाम से जी म्हारा राज।
कांई देवां थांने हो सीख, सुघड़ थारी सासजी म्हारा राज।

राजकुमारी सीताजी का विवाह अयोध्या के राजकुमार राम के साथ हो चुका है। चारों बहिनों का विवाह चारों भाइयों से हो चुका है। सीताजी अपनी बहिनों के संग जब पीहर से ससुराल जाने को उद्यत होती हैं, तब विदेहराज जनकजी के हृदय की टीस अपनी आँखों के

अश्रुपात के द्वारा बाहर फट पड़ती है। चारों बहिनों की उम्र उस समय बारह वर्ष के लगभग होगी। देखने वालों का धैर्य भी उस समय चूक जाता है। सभी के नेत्रों में इन्हें बारम्बार देखने की इच्छा अपूर्ण रह जाती है। लड़कियाँ विदा होकर बारात के साथ जाने लगती हैं, तब जनकजी अपने परिजनों के साथ करुण विह्वल हो उठते हैं। कहते हैं- हे पुत्रियों! मैं तुमको कौन सी शिक्षा दूँ? बस इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि तुम्हारी सास बहुत सुघड़ हैं और वे तुम्हारे दुःखों का हरण करेंगी। मुझे उनकी कार्य कुशलता पर विश्वास है।

मामेरा (वीरा)

नारी जीवन बड़ा संवेदनशील होता है। कठिन परिस्थितियों में धैर्यवान एवं पारिवारिक मामलों में बड़ा सुकोमल होता है। नारी जीवन की आकांक्षाएँ कभी उद्दाम होती है, तो कभी शैथिल्यपूर्ण भी दिखाई देती हैं। मालवी लोकगीतों में मामेरा या वीरा के गीत भरे पड़े हैं। गुजराती में लिखा गया नानी बाई का माहेरा, मालवी जनजीवन में घुला मिला है। इन गीतों का भी संस्कार गीतों में समावेश किया जा सकता है। हर मांगलिक कार्य में एक बहिन सर्वप्रथम अपने भाई के घर निमत्रंण भेजती है। लोकजीवन में उसकी प्रशस्ति को चार चाँद लगाने वाला यह संस्कार ही उसके ससुराल में प्रतिष्ठा प्रदान करवाता है। एक गीत देखिये-

बीरा सबका पेलां हो थारे नोतियो, बीरा कांसे लगई बड़ी देर?
खुलजा रे फूल गुलाब का। बेन्यांबई, थारी भावज ने मांड्यो रूसनो।
समझावत लागी घणी वार, खुलजारे फूल गुलाब का।
बीरा म्हारा माथा ने भम्मर घड़ाजो, म्हारे टीको रतन जड़ाजो जी।
बीरा म्हारा कानां ने झुमका घड़ावजो, म्हारे चोंटी रतन जड़ावजो रे बीरा।
खुलजारे फूल गुलाब का,बीरा म्हारे हाथां ने बाजू बंद घड़ावजो।
म्हारे चुड़लो रतन जड़ावजो रे बीरा।
बीरा कंठ में कंठी घड़ावजो, म्हारा हाथां में रतन जड़ावजो।
बीरा म्हारा पांवां में तोड़ा घड़ावजो।
म्हारे बिछिया रतन जड़ावजो रे बीरा।
खुल जारे फूल गुलाब का।
बीरा म्हारा अंग पे सालू लावजो, म्हारे मेंदी रतन जड़ावजो रे बीरा।
खुल जारे फूल गुलाब का।

नारी जीवन की आकांक्षाओं का कोई ओर छोर नहीं होता। वह तो अपने भाई को ही, अपने पति परिवार की शान बढ़ाने वाला समझती है। और इच्छा करती है कि वह अपने भानेज-भानजी के विवाह के अवसर पर सारे कुटुम्ब की पहुँनाई करेगा। इसलिये कुटुम्ब पत्रिका सर्व-प्रथम 'मामा' के घर भेजी जाती है। बहिन कहती है कि- हे बीर! मैंने सबसे पहिले विवाह में सम्मिलित होने का निमत्रंण भेजा। फिर तुम्हें आने में इतनी देरी क्यों हुई? तब भाई उत्तर देता

हुआ कहता है कि तुम्हारी भौजाई ने 'रूसना' (रिसाना) कर लिया था, इसलिये समझाने में विलम्ब हुआ।

इसके पश्चात् की पंक्तियों में मामेरे में उसके कुटुम्बीजनों के मध्य उसके भाई की शान रहे, अतः वह अपने शरीर के विभिन्न अंगों के आभूषण अपने भाई से मँगवाती है। यथा- अपने सिर के लिये 'भम्मर' नामक आभूषण चाहती है। इसी प्रकार लिलाट के लिये 'टीका', चोंटी के लिये रत्न जटित आभूषण, बाहुओं के लिये 'बाजूबंद' रत्न जड़ित चूडियाँ, गले के लिये कंठी, पाँव के लिये तोड़ा, अँगुलियों के लिये बिछिया, शरीर को ढँकने के लिये साड़ी, हाथों के लिये सौभाग्य की प्रतीक मेहंदी चाहती है।

दूसरे गीत में वह बीरा एवं उसके परिवार को विशेष आग्रह के साथ मामेरा में आने का न्यौता भेजती है। गीत देखिये-

बीरा रमां झमां से म्हार्‌यां आजो, बीरा थें भी आजो ने भावज बई ने लाजो।
सिरदार भतीजा लारां लाजो रे, बीरा रमां झमां से म्हार्‌यां आजो।
बीरा माथा ने भम्मर घड़ाजो, म्हारे टीको रतन जड़ाजो जी बीरा।
रमां झमां.....
म्हारा गलां में कंठी घड़ाजो, म्हारा हाथां ने भुजबंद लाजो रे।
म्हारे चुड़लो रतन जड़ाजो जी बीरा, रमां झमां से..........
बीरा पावां ने तोड़ा घड़ाजो, म्हारे बिछिया रतन जड़ाजो जी।
म्हारे अंग ने सालूड़ो लाजो, म्हारे रमां झमां से बेगा आजो।

हे भाई! मेरे यहाँ विवाह जैसे मांगलिक कार्य में अवश्य आना। आप अपना छकड़ा जोतकर और बैलों के गले में घुँघरूओं की जोड़ बाँधकर आना, ताकि वे 'रम-झम' की आवाज करते भले प्रतीत हों। आप अकेले मत आना, अपने साथ मेरी भौजाई और मेरे भतीजे सिरदार को भी साथ में लेकर आना। हे भाई! मेरे सिर के लिये 'भम्मर' व टीका गले के लिये कंठी, हाथों के लिये भुजबंद व चूड़ियाँ, पाँवों के लिये तोड़ा और बिछिया तथा शरीर ढँकने के लिये साड़ी अवश्य ही लेकर आना। आभूषणों का स्वरूप पारम्परिक है। लगभग सभी गीतों में ये नाम एक से पाये जाते हैं।

वैवाहिक लोकाचारों में हल्दी व मेहंदी को अति शुभ माना जाता है। सर्वप्रथम जिस घर में ऐसा मांगलिक कार्य होता है, तब बाजार से क्रय किये जाने वाले सामानों में हल्दी ही क्रय की जाती है, तत्पश्चात् मेहंदी क्योंकि इन्हें 'सौभाग्य' का प्रतीक माना जाता है। एक गीत देखिये-

म्हारी हलदी रो रंग सुरंग, निबजे माळवे।
मोलावे लाड़लड़ा का दादाजी, माता के मन रेळ।
उणकी माता हे चतर सुजान, हलदी केलवे।

मोलावे लाड़लड़ा का काकाजी, काकी को मनरेळ।
उणकी काकी हे चतर सुजान, हलदी केलवे।
सोलावे लाड़लड़ा का बीरा जी, भावज को मनरेळ।
उनकी भावज हे चतर सुजान, हलदी केलवे।
लाड़लड़ा थोड़ी सी अंग लगावे, यो अंग पर मेल।

मेरी हल्दी का रंग गहरा पीला है, जो मालवा में पैदा होती है। विवाह के लिये दूल्हे के पिता उसका मोल करते हैं। माता का मन बहुत प्रसन्न होता है। उनकी माता बड़ी चतुर और बुद्धिमान है। वे भी हल्दी को कूट पीसकर तैयार करती हैं। मेरे दूल्हे के काकाजी हल्दी मोल लेकर आते हैं। काकी का मन बहुत प्रसन्न है। उनकी काकी बड़ी चतुर और बुद्धिमान है। वे हल्दी को कूट पीसकर तैयार कर रही हैं। दूल्हे के भाई हल्दी का मोल कर रहे हैं, भौजाई के मन में अति प्रसन्नता है। वे भी बड़ी चतुर और बुद्धिमान हैं। वे हल्दी को कूट-पीसकर तैयार कर रही हैं। दूसरा एक गीत देखिये-

हलदी गांठ गंठीली हेजी, हलदी भोत रंगीली।
निपजे वा बालू रेत में।
लाड़ी का काकाजी ने कीजो संदेसो,
लाड़ी का दायजी ने कीजो संदेसो,
वीतो हलदी मोलवे जी।
लाड़ी की भाबी से कीजो संदेसो, वी दोय सुवागण हलदी के लेवे।

मालवा में उत्पन्न होने वाली हल्दी की गाँठें बहुत ठोस होती हैं। ऐसी हल्दी बहुत रंग देने वाली होती है। यह हल्दी बालू रेत में पैदा होती है। आप लाड़ी के काकाजी, पिताजी, भाई एवं भौजाई को यह खबर भिजवाना कि वे बाजार में जाकर हल्दी का मोल करें। दोनों सुहागिनों को भी कहना कि वे बाजार में जाकर दुलहिन के लिये अच्छी सी हल्दी क्रय करके लायें।

एक और गीत में हल्दी को हाड़ौती में उत्पन्न होना बतलाया गया है, यथा-

हलदी हड़ौती में नीबजी, म्हारी हलदौड़ी।
काला तो खेत में उलेटी, म्हारी हलदौड़ी।
वा तो गई रे बाण्यां की दुकान, म्हारी हलदौड़ी।
बाण्या की दुकान से उलेटी।
वातो गई रे पचेड़ानी कोर, म्हारी हलदौड़ी।
पछेड़ा की कोर से उलेटी।
वातो गई रे घट्टी की पाल, म्हारी हलदौड़ी।
घट्टी की पार से उलेटी।

वातो गई रे सुवासणां के हात, म्हारी हलदौड़ी।
वातो गई रे लाड़ लड़ी के अंग, म्हारी हलदौड़ी।

इस गीत में हल्दी का हाड़ौती से उत्पन्न होना दर्शित किया गया है, जबकि अन्य राजस्थानी पाठान्तरों में हल्दी को मालवा में ही पैदा होना बतलाया गया है। हल्दी काली मिट्टी वाले खेत में पैदा हुई (काली मिट्टी के अधिकांश खेत मालवा में ही मिलते हैं)। मालवी गीत में इसे बालू रेती मिश्रित मिट्टी में होना बतलाया गया है। हल्दी पैदा करने के बाद सीधे बनिये की दुकान पर बिकने को पहुँचती है। वहाँ से वह पछेड़ी (धोती) के पल्लू पर बाँधकर घर पर पहुँचाई जाती है। घर में आ जाने पर घट्टी में उसे पीसा जाता है। बिना हल्दी के घर में कोई भी मांगलिक कार्य सम्पन्न नहीं होते। एक लोकगीत में बंजारा हल्दी को अपनी बालद में भरकर विक्रय करने के लिये लाता है। तब दूल्हे-दुलहिन के माता-पिता उसका मोल करके घर लाते हैं। हल्दी पीसकर उनके अंग पर लगायी जाती है। दूल्हा स्नान करके पटिये पर बैठ गया है। हे दूल्हे! या तो चन्द्रहार माँग नहीं तो घोड़ा हींसेगा। दूल्हे ने कहा- न तो दादाजी मैं चन्द्रहार माँगूँगा, न ही घोड़ा हींसेगा। हमें तो बस लज्जा की प्रतिमूर्ति दुलहिन चाहिये। मेरे तो चित्त पर वही एक बैठी है। गीत देखिये-

आई बणजारा री मोट, उतरी बड़ तळे।
मोलवे लाड़लड़ा का दादाजी, माता को मन हरखे।
लाड़ा थोड़ी सी अंग लगाव।
लाड़ो न्हाई धोई बेठ्यो, बाजोटा के ऊपरे।
केतो लाड़ा मंगवा चंदरहार, के घोड़ीलो हींसेगा।
नी तो मांगां दादाजी चंदरहार, नी घोड़ीलो हींसेगा।
हम तो मांगा लाज-नियारी दीय, वा म्हारे चत चड़ी।

अब एक गीत मेहंदी के सम्बन्ध में देखिये। मांगलिक कार्यों एवं नारी जीवन में मेहंदी का बहुत महत्त्व है। बिना मेहंदी के कोई त्योहार खाली नहीं जाता। स्त्रियाँ जहाँ इसे सौभाग्य का प्रतीक मानती हैं, वहीं साज शृँगार की दृष्टि से भी इसकी विशेष उपयोगिता है। गर्मी में जहाँ यह शरीर को ठंडक पहुँचाती है, वहीं इसका चटक लाल रंग, हाथ पैरों को सजा देता है। मालवा की मेहंदी राजस्थान, गुजरात एवं अन्य प्रान्तों में प्रसिद्ध है। गीत देखिये-

मेंदी भरियो बाटको जी कांई, लिख-लिख मांडू हात।
पढनो लिखणो छोड बनासा, निरखे गोरी को हात।
मेंदी में माड़िया दोई हात, बनी दादाजी मोरे छेंटाय।
बना मिलवा री बातां चार, जसा हिवड़ा ने ठंडा कराय।

मेहंदी के घोल से कटोरा भरा हुआ है। इससे हाथों पर विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ उकेरी जाती हैं। दूल्हा भी अपनी पढ़ाई-लिखाई बंद करके सतत् गोरी (प्रियतमा) का हाथ

निरखता रहता है। बनी भी हास-परिहास में मेहंदी भरे हाथ चिपका देती है और बना के साथ हृदय को ठंडक देने वाली बातें करती रहती है।

ताणी ती तणी मालवे लाखा रस रे।
हरी रे भरी अजमेर लाखारस चूनड़ी रे।
सिरी-किसन रूकमणि मतो कर्‌यो लाखारस को।
पिया म्हने चुनड़ी रे लावो।
जेसे तारा छाई रात लखारस चूंदड़ी रे।
जेसे काऊलिया की भांत लखारस चूनड़ी रे।
चुनड़ी पेन धना बऊ नीसर्‌यानी।
गोकल का राजा रानी यूं कहे।
या कूण बऊजी आप?
ठाकर वसुदेव की कुल बहू जी,
राजा भीकमराय की पुतरी,
रूकमणि बेन्यां सहोदरा जी।
रसिया सिरी किसन की नार।

इस गीत में नव परिणीता को चुनड़ी ओढ़ाई जाती है। मालवा एवं राजस्थान लोक संस्कृति में लहरियादार चुनड़ी कुलवधू के लिये, विवाह के अवसर पर ले जाने का आम रिवाज है। इस गीत में व्यक्त किया गया है कि चुनड़ी बनाने के लिये मालवा के कपास से ताना-बाना बुना जाता है और उसकी हरे रंग की छपाई अजमेर में कराई जाती है। रूक्मिणी जी ने कृष्ण जी से विचार विमर्श करके कहा- हे प्रियतम! मेरे लिये लाल रंग की चुनड़ी लाओ। वह कजलिया भाँति हो तथा उसमें बिन्दियों की छपाई इस प्रकार की हो जैसे काली रात तारों जड़ी हुई लगे। कृष्णजी ने मनोवांछित चुनड़ी मँगवा दी। चुनड़ी पहिनकर धना बऊ (रूक्मिणी जी) घूमने के लिये निकली। उन्हें देख गोकुल के राजा-रानी भी पहिचान न सके। पूछा- बहूजी आप कौन? तब रूक्मिणी ने उत्तर दिया- मैं तो राजा वसुदेव की पुत्रवधू और राजा भीकमराय की पुत्री हूँ। मैं और रूक्मी दोनों सगे भाई-बहिन हैं तथा मेरे पति रसिक श्रीकृष्ण जी हैं। दूसरा एक गीत देखिये-

माया पे त्हारे भम्मर सोवे, हो टीको भोत रसाय।
सूरज सामें पनियां नी जऊं, म्हारी चूनड़ी को रंग उड़िजाय।
काना में थारे झालज सोहे, तो झुमका भोत हजाव।
सूरज सामें पनियां नी जाऊं, म्हारी चुनड़ी को रंग उड़ जाया।

नायिका के सिर पर 'भम्मर' नामक आभूषण सुशोभित हो रहा है। लिलाट पर टीका अधिक सुन्दर दिखाई दे रहा है। हे सखी! मैं सूर्य की तेज धूप में पनघट पर पानी लेने नहीं जा

सकती हूँ। क्योंकि इससे मेरी चुनड़ी का रंग फीका पड़ सकता है। नायिका के कानों में झालज सुशोभित है। उनके कानों में लटकते झुमके तो मुखाकृति को और सुन्दर बना देते हैं।

रसिया अथवा मारूजी

मालवी लोक संस्कृति में 'मारूजी' या 'रसिया' को लक्ष्य करके उपालम्भ देने, गुमान करने या रूठने के गीत गाये जाते हैं। ये बड़े ही मर्मस्पर्शी एवं भाव प्रवणता के लिये होते हैं। ऐसे ही कुछ गीत यहाँ अनुवाद सहित प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पेली पेर म्हांने न्हावत धोबत, लागी जी म्हारा मारूजी।
दूसरी सीस गुथावतां मारूजी, तीसरी पेर म्हने रसोई करतां।
चोथी पेर म्हने थाल्यां परूसतां, पांचमी देर म्हने दीवलो संजोवतां।
लागी ओ म्हारा मारूजी, छट्टी पेर म्हांने झारी भरतां,
सातमी पेर म्हांने बालूड़ा समझावतां, लागी ओ म्हारा मारूजी।
आठमी पेर म्हने सेज बिछावतां, लागी हो म्हारा मारूजी।
नवमी पेर बोल्यों कूकड़ो म्हारा मारूजी।

एक नायिका अपने प्रियतम के उपालम्भ देने पर अपने आठों प्रहर के कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती हुई, उसे सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करती है। वह कहती है- हे प्रियतम! दिन का प्रथम प्रहर तो मेरे नहाने-धोने में व्यतीत हो गया। दूसरा सिर गुँथवाने में, तीसरा पहर रसोई बनाने, चौथा पहन थालियों को परोसने में, पाँचवा पहर दीपक सँजोने में, छटा पहर झारी करने में, सातवाँ पहर बच्चे को समझाने में, आठवाँ प्रहर सेज बिछाने में व्यतीत हो गया। इस प्रकार गृहस्थ के कार्यों में मैं रात-दिन जुटी रहती हूँ। क्या करूँ, मुझे इतना भी समय नहीं मिल पाता कि आपकी सेवा-चाकरी करके आपको प्रसन्न कर सकूँ। अब जब पुन: प्रात:काल हो गया और मुर्गे ने बांग दे दी, तब भी मुझे अवकाश के क्षण नहीं मिल पा रहे हैं।

बारे-बारे बरसां में पिऊजी, घर आया म्हारा मारूजी।
सत धन र्या रे अबोल्या, म्हारा मारूजी।
डाल-डाल मिनकी फिरी मारूजी, पानां जो पानां बोल्यो।
कूकड़ो म्हारा मारूजी, के थने सोकड़ली ने सिखायौरे, दई मार्या।
नी म्हांने सोकड़ली ने सिखायो, म्हारी तो केर्यां मूंई बोइदी।
डालां टूटी सिसकी पड़ी मारूजी।
थारे चिन्त्या थारे फत्यारे मिनकड़ी।
म्हारी रखवारो सिरी भगवान।

इस गीत में एक नायिका का प्रियतम बारह वर्षो में अपने घर लौटता है। नायिका उसकी बेरुखी के कारण अनेक दिनों तक अबोला (बिन बोले) रखती है। क्या करें, उसकी किस्मत ही

बुरी है। बिल्ली अकेली डाली-डाली घूमे और पत्ते-पत्ते पर मुर्गा बांग देता फिरे, यह तो गृहस्थ जीवन का कोई न्यायपूर्ण कार्य नहीं है। यहाँ अप्रस्तुत रूप में जीवन के सूनेपन की विषमता की व्यंजना निखर आई है। वर्षों तक एक नारी अपने प्रियतम के विरह वियोग को सहन करे, यह भी सहनशीलता की हद से बाहर है। वह उपालम्भ देती कहती है- हे मारूजी! आपको मेरी किसी सौत ने सिखलाया है, तभी इतने दिनों आप घर के बाहर रह सके हैं। मारूजी उत्तर देते हैं- न तो मुझे किसी सौत ने सिखाया है, न ही मैं किसी के प्रति अनुरक्त हुआ हूँ। पत्नी कहती है- मेरे शरीर रूप आम के वृक्ष में आम लदे हुए हैं, जिसके बोझ से डालियाँ फट पड़ने को हैं। पति कहता है- तुम्हारा सोचा, तुमको ही फलदायी हो सकता है, मेरा तो वह ईश्वर ही रखवाला है।

कंई रे जवाब करूं रसिया से, दल रे बादल बिच चमके तारो।
तो सांझ पड़े पिऊ लागे प्यारो, जोर करूवां जवाब करूंवा।
तो रसिया का नेनां में रोज रहूंवां, कई रे मिजाज करां रसिया से।
रसिया थाने किने बिलमाया, भम्मर को रस टीका ने लियो,
तो टीका को रस सायबा ने लियो, कंई रे जवाब करूँ रसिया से।

एक विरह विदग्धा नारी अपने रसिया प्रियतम से कौन सा प्रश्न करे? वही तो एक मात्र ऐसा तारा है, जो गहन अंधकार पूर्ण रात्रि में प्रकाश की किरण भरता है। जो संध्या होने पर, रात्रि को बहुत प्रिय लगता है। यह उक्ति यहाँ उसकी प्रियतमा पर घटित की गई है। फिर भी कामिनी अपने अधिकार से, प्रश्न के माध्यम से अपने रसिया के दिल पर राज करने की इच्छा रखती है। वह उसके नेत्रों में सदैव के लिये स्थापित होने का प्रयत्न करती है। अपने हाव भाव से उसे प्रसन्न करने का भरपूर प्रयत्न करती है। कहती है- तेरे सिर के आभूषण 'भम्मर' का आनन्द मेरे ललाट के टीके ने लिया है, किन्तु इस ललाट के टीके का रस तो मेरे प्रियतम ने ही ग्रहण किया है। इसलिये मैं अपने रसिया से और अधिक क्या कहूँ। वे ही तो मेरी जीवन रूपी नैया के सर्वस्व हैं।

एक और गीत में रसिक श्रीकृष्ण को नारी वेश में परिवर्तित किया जा रहा है। संग की सब सखियाँ मिलकर उनका वेश परिवर्तन कर रही हैं, यथा-

रसिया ने नार बनाओ सखियां रसियायें।
छीन लेवो री उंका सिर का मुगट के,
छीन लेवो री उंका कान का कुंडल।
हारे उंका सिर पे साड़ी ओड़ावो सखियां,
हारे उंका कानां में झुमकी पेराओ सखियां।
रसियायें......
छीन लेवो री उंका हाथों की बंसरी,

हारे उंका सिर पे बिन्दी लगावो सखियां।
रसियायें.........
उंका नेंना में काजल लगावो सखियां।
छीन लेवो री उंका हाथो की पोंची।
छीन लेवो री उंका पांव की मोजड़ियां।
हारे ओंकी अंगल्यां में बिछियां-
पेरोवो सखियां रसियायें।
पेराई ओड़ाई उने ब्रज में ले चालो।

नारी जीवन के भक्तिप्रद लोकगीत

गुरुजी कुछ ऐसी किरपा करना, खेती हम बांवांगा हो।
राग-बेराग का हल लगवाया।, बीजलो भजनां का बावांगा हो-
गुरुजी ने छमा छाप पोंचाई, दया एक रखवाला बिठवाई।
जां एक अम्मर पेड़ उगी आयो, अम्मर फल हम खावांगा हो।
गुरुजी ने अम्मर कुंड खुदायो, पानी सीतलताल से आयो।
गुरुजी ने चुल्लू भर पिवायो, के पांचो ही वस्तर धोवां हो।
गुरुजी कुछ ऐसी किरपा करना, खेती हम भी बोवांगा हो।
केत कबीरा सुनो भई साधू, जेसी करनी वेसी भरनीद्ध
गुरुजी के आगे केवांगा हो।

मालवी नारी जीवन का यह आध्यात्मिक सौन्दर्य समग्र मालवा में बिखरा पड़ा है। मालवा में पुरुष वर्ग, जहाँ तानपूरे, ढोलक एवं मंजीरे के आरोह-अवरोह में निर्गुणी गीत गाते हैं, वहीं स्त्रियाँ भी 6-6 के समूह में ऐसे गीत गाया करती हैं। इस गीत में कबीर की छाप लगी है तथापि इसकी लोक शैली देखकर यह नहीं माना जा सकता कि यह कबीरदास जी का बनाया हुआ है। इस गीत में गुरु कृपा की आकांक्षाएँ व्यक्त की गई हैं। कहती है- हे गुरुजी! हम पर ऐसी कृपा करें, जिससे हमारा भक्ति रूप बीज, बोई हुई खेती सफल हो सके। हमने इसमें वैराग्य रूपी राग का हल लगवाया है और उसमें कृषि रूपी भजन को बो दिया है। हमारे गुरुदेव ने उसमें क्षमा रूपी छाप लगाकर दया रूपी रखवाले को सुरक्षा के लिए बिठा दिया है। उस खेती में एक अमर वृक्ष उग आया है। उसका अमर फल हमें खाने को मिलेगा। गुरुजी ने उसी खेती में एक अमर कूप खुदवा दिया है, जिसमें शीतलता तालाब रूपी से झरने आई है। उसमें से अंजुरी जल हमें पीने को दिया है। हम उसमें पंचतत्व रूपी शरीर के वस्त्र धोयेंगे। हे गुरुदेव! कुछ ऐसी कृपा करें, जिससे हमारी काया सुधर जाय। कबीरदास जी कहते हैं जो जैसा करेगा वैसा ही उसको फल मिलेगा।

बहना करलो गुरु वकील मुकद्मा होयगा।
तेरा घर से गला करेगा, तेरा कुलमा दूर रहेगा।
तुझे कोई ना बंधावे धीर, मुकद्मा होयेगा।
जां जमराज के सिपाई, तेरी गवान कोई देगा।
थारे कसके डलेगी जंजीर, मुकद्मा होवेगा।
तेरा अलबन जाना होयगा।
तेरी फिर लगेगी तारीख, मुकद्मा होयगा।
बहना कर लो गुरु वकील, मुकद्मा होयगा।

इस गीत में एक आध्यात्मिक मुकदमा प्रस्तुत किया गया है। एक भक्त नारी दूसरी से कहती है– हे बहनों! अपने ऊपर मुकदमा लदने वाला है। अत: किसी अच्छे गुरु को वकील बना डालो, तो तुम्हारा कुटुम्ब सुधर जायेगा। यदि ऐसा न किया तो तुम्हें धैर्य बंधाने वाला भी कोई न रहेगा। क्योंकि मुकदमा तो लदेगा। उस यमराज के सिपाही तुझे पकड़कर ले जायेंगे और तुम्हारा कोई भी गवाह, गवाही देने नहीं पहुँच सकेगा। वहाँ ले जाकर वे तेरे हाथ–पैरों में मजबूत जंजीर डाल देंगे। तुझे वहाँ जाना तो अनिवार्य है, किन्तु वहाँ जाकर फिर लौट न सकोगे। तुम्हारी फिर अन्य तारीख भी सुनवाई के लिये नहीं लग सकेगी। इसलिये– हे बहिनों! यदि तुम्हें अपना बचाव पक्ष मजबूत करना हो तो अभी से सद्गुरु जैसे वकील को कर लो।

सांज सवेरे मिलकर बरतन, मांज डारोजी के बरतन मांज डारोजी।
ई बरतन तेरा मन का मेला, काम करोध का दाग कुचेला,
रोम–रोम में पला रे बरतन, मांज डारोजी।
पांच तत्व की राख बना लो, इन्द्र धमन का कोचा बना लो।
राम नाम का लगावे रगड़ा, मांज डारोजी।
के बरतन मांज डारोजी, ई बरतन तेरा चमकन लाग्या।
बायर भीतर दमकन लाग्या, ई बरतन गुरुदेव मंजावे।
जनम–जनम का फन्द छुड़ावे, गिरे जमका फेरा रे।
बरतन मांज डारोजी, के बरतन मांज डारोजी।

गीत बहुत सुन्दर भावप्रद बन पड़ा है। एक नारी दूसरी से कहती है– हे बहिन! सायं–प्रात: ईश्वर का भजन करते हुए इस मलिन शरीर रूपी मेल के बरतनों की सफाई कर डालो। यह तुम्हारा शरीर रूप बर्तन, काम–क्रोध रूपी विकारों से दागदार हो गया है। हे प्राणी! तुमने अपने रोम–रोम में गंदगी भर रखी है। इसे मांज कर स्वच्छ कर लो। इन बरतनों को स्वच्छ कर लो। इन बरर्तनों को स्वच्छ करने के लिए पाँचों तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु) को राम भजन से राख कर डालो और अपनी इन्द्रियों के दमन रूपी कोचे से राम नाम का रगड़ा लगाकर इसे चमचमाट कर लो। जब यह शरीर रूप बर्तन उससे चमकने लगे। भीतर और बाहर

से कान्तिमान दिखाई देने लगे, तो समझ लो कि तुम्हें गुरु कृपा से ही ऐसा सुयोग मिला है। गुरु कृपा से तो जन्म-जन्मान्तर के दुःखों का नाश हो जाता है। यमराज भी उल्टे पैरों लौट जाते हैं। हे सखी! ऐसे गंदे बर्तन को मांजकर साफ स्वच्छ कर लो।

मनड़ो म्हारो लाग्यो गुरुचरणां में, अब नईं लागत ओरन में।
लख चौरासी भटकत आयो, गुरु किरपा बिन अति दुख पायो।
फिर फिर हार्‌यो चोरासिन में, परगट सरूप परन परभु आया।
जनदित कारण आप पधार्‌या, भव बंधन से आप छुड़ावन को।
धन म्हारा भाग सुमारग बथाया, जनम-जनम का फंदा छुड़ाया।
लगन लगी हरिचरनन में, गुरु मईमा को पार न पावे।
सबज वेद अर सास्तर बथावे, गुरु बिन राम मिले ना जग में।

इस गीत में निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना करने पर जोर दिया है। गायिका का मन गुरु के चरणों में तल्लीन है। यह नर देह रूप, चौरासी योनियों में भटकते हुए मिलता है। यदि गुरु की कृपा नहीं हो तो इसे बहुत कष्ट भोगना पड़ता है। उसे फिर से चौरीसी योनियों में भटकना पड़ता है। यह शरीर प्रकट रूप में प्रभु से ही विवाह करता है। वह प्रभु भी जनहित के कारण ही इस पृथ्वी पर अवतरित होता है। वही हमें इन सांसारिक बंधनों से मुक्त करवाता है। मैं अपने भाग्य को धन्यवाद देती हूँ कि गुरुजी ने मुझे सत का मार्ग बतला दिया। मेरी लगन तो उस प्रभु के चरणों में लगी है। गुरु महिमा तो अपरम्पार है। सारे वेद-शास्त्र इसी मत को व्यक्त करते हैं। गुरु के बिना इस संसार में ईश्वर की प्राप्ति असम्भव है।

सुना दो सोहम सार, करो भो पार, सत गुरु प्यारे।
हूं पूजूँ चरन तिहारे, हूँ इन दुनियां से घबराई।
सरन तुमारी आई जी, दुखिया का दुख हरो सतगुरु।
हूँ पूजूँ चरण तिहार जी, मोंय काम करोध ने घेरी।
चोरासी चक्कर की फेरी, मोंये जल्दी लेव उबार सतगुरु।
प्यारे हूँ पूजूँ चरन तिहारे, म्हारी हूँ मत करो सुधार ना करो देरी।
तन नइ्या भंवर के बीच, पार कर दो सतगुरु प्यारे जी।
हूँ पूजूँ चरन तिहारे जी।

हे सतगुरु! आप कृपा करके उस परमतत्त्व का सार बतलाकर मुझे इस संसार सागर से पार उतार दें। मैं आपकी चरण वन्दना करती हूँ। मैं इस संसार के माया मोह से तंग आ चुकी हूँ। अब तो आपकी ही शरण में हूँ। हे सद्‌गुरु! दुखियों के दुखों का नाश करो। मैं आपकी चरण वन्दना करती हूँ। हे प्रभो! मुझे काम-क्रोध ने घेर रखा है। इसलिये फिर से मुझे चौरासी योनियों में भटकने का भय व्याप्त हो गया है। हे गुरुदेव! आप मुझे इससे उबार लीजिये। मैं आपके चरणों की वन्दना करती हूँ। हे गुरुदेव! आप मेरी बुद्धि को सुधारने में विलम्ब न करें। यह शरीर रूपी

नाव भँवर के मध्य चक्कर खा रही है। हे सतगुरु! आप इससे मुझे उबार लें। मैं आपके चरणों की वन्दना करती हूँ।

गुरु गड़बड़ में सोगई हूँ जागीज नी, गुरु पांच लुटेरों ने मोंये लूटी।
होयो मोहल्ला में हल्लो हूँ जागीज नी, गुरु म्हारी हवेली पे डाको डाल्यो,
तिजोरी लूटी गई पण हूँ जागीज नी, गुरु थाना-कचेरी मोंय जाणो पड्यो,
गिरफ्तारी भी हुई गई हूँ जागीज नी, गुरु जी ने अई के मोंय जगई।
हूँ गुरु किरपा से जागीज गई।

हे गुरुदेव! मैं तो अपने आप में लीन होकर ऐसी सोई के जग ही नही पाई। हे गुरु! पाँचों तत्त्व रूपी लूटेरों ने मुझे लूट लिया। जब मुहल्ले में हल्ला हुआ। तब भी सोई रही, जागी ही नहीं। हे गुरु! मेरी भौतिक हवेली पर डाकुओं ने आक्रमण करके उसको लूट लिया। तिजोरी भी लूट ले गये, किन्तु मैं तो सोई रही, जागी ही नहीं। हे गुरुजी! बाद में थाना-कचहरी भी हुई। मैं वहाँ गई भी और गिरफ्तारी भी हुई, किन्तु मैं तो जागी ही नहीं। मैं तो तभी जाग पाई - जबकि गुरुजी ने स्वयं उपस्थित होकर ज्ञान के प्रकाश से मुझे जगाया। गुरुजी की कृपा से इस भौतिक नींद से छुटकारा प्राप्त कर सकी।

होजी म्हारा सतगुरु दियो रे रंगाई, लेहरियो लहर लहर लेहरावे।
राम नाम को धागो मंगायो, सत संगत को पोत मंगायो।
ओम सोम को फूल मंगायो, लेहरियो होयो तयार।
होजी म्हारा सतगुरु ने दियो रंगाय, लेहरियो लहर लहर लहरावे।
झूंठ बोलूं तो म्हारो लेर्‌यो फटजाय, कपट करूँ जब चुगली करूँ तो,
म्हारो लेर्‌यो उड जाय, कछु हात नी आये होजी।
जो अणी लेहरिया की खोज करत हे।
आवागमन से यो मिट जाय।

(स्रोत-सुश्री रुक्मिणी पंचोली, ग्राम-खेरिया)

निर्गुण ब्रह्म की उपासना में भीगी एक मालवी नारी अपने ओढ़ने के लहरिये के राम रूपी रंग में रंग दिये जाने पर अति आल्हादित है। उसके लहरिये पर सतगुरु ने अनमोल रंग चढ़वा दिया है और वह वायु के झोकों में उसके अंग पर लहरा रहा है। कहती है- मैंने राम नाम का धागा मँगवाकर, सत संगत रूपी पोत मँगवाकर, ओम-सोम (ॐ सोहम्) रूपी फूलों से सजाकर तैयार किया है। उसे इस रंग में सतगुरु ने रंगा है। यदि इसमें कोई बात झूठ हो तो मेरा लहरिया फट जाय। कपट और चुगली करूँ तो मेरा लहरिया उड़ जाये और बाद में मेरे हाथ कुछ न आ सकेगा। जो भी व्यक्ति इस लहरिया के बनने से लेकर रंग जाने तक की खोज कर लेगा, वह इस संसार रूपी माया जाल से छुटकारा पा सकेगा। उसका आवागमन मिट जायेगा।

कुछ सगुणी गीत भी उपलब्ध है, यथा-

रामा-रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया।
रघुनंदन कद आवोगा थें, भिलणी की नगरिया। रामा........
हूँ शबरी भिलनी की जाई, भजन भाव नी जाणूं हूँ।
नाथ थारा दरसण कारण, बन में जीवन पाळू हूँ।
चरण कमल सूँ निरमल करी दो, अणी दासी की झूंपड़िया।
रामा-रामा रटते............
रोज दनूंगा बन में जई ने, चुण चुण फुलड़ा लाऊंगी।
मीठा-मीठा बोरनियां की, छबड़ी भर-भर लाऊंगी।
श्याम सलोनी मोईनी मूरत, नेनां में बेठाऊंगी।
अपणा पिरभू सामूं रखी के, पिरेम सूँ खवाडूंगी।
नाथ तमारा दरसण प्यासी, हूँ एक अबला नारी।
दरसण बताई नेनांतर से, सुणो घणी दुखारी।
अब तो पिरभुजी दरसण दई दो, डालूं एक नगरियां।
रामा-राम रटते रटते, बीती रे उमरिया।

हे नाथ! राम नाम रटते हुए मेरा सारा जीवन गुजर गया। हे रघुनन्दन श्रीराम! आप इस भीलनी की नगरी में कब आयेंगे? मैं शबरी हूँ, भील कुल की हूँ, भजन भाव भी नहीं जानती। हे नाथ! मैं तो आपके दर्शन की आशा लगाए इस बियावान जंगल में अपना जीवन व्यतीत कर रही हूँ। हे प्रभो! आप मेरे इस घर को अपने चरणारविंदों से पवित्र करें। इस दासी की झोपड़ी को पवित्र करें। मैं तो प्रतिदिन जंगल में जाकर अच्छे-अच्छे फूल और मीठे-मीठे बेर चुनकर आपके लिये लाती हूँ और सदैव अपने श्याम सलोने भगवान की छबि अपने दिल में बिठाये रखती हूँ। आज अपने प्रभु को सम्मुख बिठलाकर ही ये मीठे बेर प्रेम से खिलाऊँगी। हे नाथ! अबला नारी हूँ और आपके दर्शन की प्यासी हूँ। आपके दर्शन न होने से ये नेत्र अभी तक तरस रहे हैं। हे प्रभो! मैं बहुत दुखी हूँ। हे प्रभो! आप मुझ पर कृपा दृष्टि कीजिये। आपका नाम स्मरण करते मेरा सारा जीवन व्यतीत हो गया है।

मिले हे सांचोसुख सबज के, भगवान तमारी सरणां में।
चाय बेरी यो संसार बणे,चाय मोत गळा रो हार बणे।
रे ध्यान तमारा सरणां में, चाये संकट ने मोंय घेरी हो।
चाये चारी मेर अंदारो हो, मन नी डगमग म्हारो डोले।
रे ध्यान तमारा चरणां में, चाये अगन में मोय जलनो हो।
चाये कांटा पे म्हारे चलणो हो, चाये देस छोड़ी ने जाणो होय।
तोई ध्यान तमारा चरणां में।

सखा सब प्रेमती बोलो, हरिसरनम्-हरिसरनम्।
श्याम सुंदर ने दियो उपदेस अरजुन के
लिख्यो थो नाम गीता पे,
हरिसरनम्-हरिसरनम्, दियो थो ग्यान द्रोपद के।
लिख्यो थे नाम साड़ी पे, हरिसरनम्-हरिसरनम्।
दियो थो श्याम सुंदर ने, यो ही उपदेस मीरां के।
लिख्यो थो नाम प्याला पे, हरिसरनम्-हरिसरनम्।
सखा सब पिरेम से बोलो, हरिसरनम्-हरिसरनम्।

इस गीत में भगवान के शरणागत होने का भाव व्यक्त किया गया है। भगवान की शरण में जाने पर प्राणियों को सच्चे सुख की प्राप्ति होती है। चाहे मौत को गले लगा रहे हों, चाहे हमारा जीवन हमारे लिये भार बन गया हो। तो भी हमारा ध्यान भगवान के चरणों में होना चाहिये। चाहे मुझे संकट ने घेरा हो। चाहे चारों ओर से अंधकार की काली घटाएँ (मुसीबतें) घिर आई हों, तो भी हमारा मन विचलित नहीं होना चाहिये। सतत् रूप से हरि चरणों में ही ध्यान रहना चाहिये। चाहे अग्नि में जलना हो, चाहे काँटों पर चलना हो, चाहे देश छोड़ विदेश में जाना हो, तो भी हमारा ध्यान श्रीहरि के चरणों में ही होना चाहिये।

हे मित्रों! सब प्रेम से बोलो-'हरिशरणम्-हरिशरणम्'। भगवान कृष्ण ने भी अर्जुन को यही उपदेश दिया था। गीता पर यही नाम लिखा था 'हरिशरणम्-हरिशरणम्'। द्रौपदी ने भी इसी लगन को पकड़ा था। उनकी साड़ी पर भी यही नाम उल्लेखित था- 'हरिशरणम्-हरिशरणम्'। भगवान कृष्ण ने यही उपदेश मीराबाई को दिया था। विष के प्याले पर भी यही नाम लिखा था - 'हरिशरणम्-हरिशरणम्'। हे मित्रों! सब प्रेमपूर्वक बोलिये- 'हरिशरणम्-हरिशरणम्'।

इन आध्यात्मिक एवं धार्मिक गीतों के अन्तर्गत कतिपय ऐसे श्रृँगार रस से परिपूर्ण गीत भी मालवा में गाये जाते हैं, जिनमें पत्नी की पति के साथ जाने की आकांक्षा, कुछ इच्छित वस्तुएँ मँगवाने की जिद, पति की मार से बचने के लिये गृहस्थ के कठिन कार्य करने को उद्यत होना, अपने प्रियतम को भंग पिलाना, मक्का की राबड़ी की प्रशंसा आदि विषयवस्तु संजोई हैं। कतिपय गीत देखिये-

अपनी नगरिया हमको, ले चलो हरियाले बन्ना।
हाथी मंगाया केसरी देस से, होदा कसाय हमको लेई चलो।
हरियाले बन्ना।
घोड़ो मंगायो काबुल देस से, जीण कसाय म्हांके ले चलो।
हरियाले बन्ना।
पतुरी मंगाई दक्खण देस से, हरियाले बन्ना।
तबला बजाय, हमके ले चलो, हरियाले बन्ना।

डोला मंगाया पूरब देस से, हरियाले बन्ना।
पड़दो तणावी म्हांके ले चलो, हरियाले बन्ना।

हे हरियाले बन्ना (रंगीले साजन, पति)! हमको अपने साथ ले चलिये। आपके बैठने के लिये कजरी देश से हाथी मँगवाया है। आप उस पर हौदा कसकर हमें भी साथ ले चलें।

आपके लिये काबुल देश से घोड़ा मँगवाया है। उस पर जीण रखवाकर हमें भी अपने साथ ले चलिये। दक्षिण देश से रंडी मँगवाई है। तबला बजाकर हमें भी अपने साथ ले चलिये। बैठने के लिये पूर्व दिशा से पालकी मँगवाई है। उसमें पर्दा लगवाकर – हे हरियाले बन्ना! हमें भी अपने साथ ले चलिये। दूसरा गीत देखिये–

मारो नी राजा हुकम करवाय लो,
मारो नी सैंया बचन हरवाय लो।
गोबर थेंपाय मों से, पाणी भरवाय लो।
कड़ब की कुटिया, मोंसे छवाय लो जी प्यारे सैंया।
रोटा करवाय लो म्हांसे, ल्हापसी रंधाय लो जी।
भेंश्या दुवई लो म्हांसे, गाय बी दुवाय लो।
ऊंटड़ी को दूद म्हांसे, भेळो करवाय लो।
बेटा जणवाय लो म्हांसे, बेट्यां जणवाय लो।
हिरनी की जात म्हांसे, ढोढ़े जणवाय लो।

हे प्रियतम! आप मुझे मत मारिये। आप कोई भी कार्य हो तो उसे करने का आदेश दीजिये। आप मुझसे वचन ले लीजिये। आप मुझसे गोबर थपवा लीजिये। पानी भरवा लीजिये। फूस का छप्पर बनवा लीजिये। रोटी बनवा लीजिये। लपसी रंधवा लीजिये, किन्तु मारिये मत। आप चाहें तो भैंसों का दूध निकाल सकती हूँ। गायों को दुह सकती हूँ। ऊँटड़ी का दूध एकत्र कर सकती हूँ। बेटा-बेटी पैदा कर सकती हूँ। मैं तो हिरनी की जाति की स्त्री हूँ, जो भी चाहो काम कर सकती हूँ, किन्तु आप मुझे मारिये मत। एक गीत देखिये–

भांग पिवो तो डोला जी, म्हारे मेलां आवोजी।
म्हारी भांगडली, भांग रंगीली, भांग छबीली।
आंजी कोई भांग भरूड़ा आवे।
ओ राज! म्हांकी भांगड़ली।
राम पियालो डोला, प्यालो लो जी कांई,
तीसरा प्याला में झुकी जाजो जी राज, म्हारी भांगडली।
म्हारा भोला अमली जी, म्हारा भोला अमली।
बांगां में भांग घुटाई राखोजी।

काय की खुरपिया बाबा, काये को बेंट।
लोहन की खुरपी बाबा, लक्कड़ की बेंट।
नींदे गोरां-पारबती जी कांई
भंगिया को पेड़ म्हारा भोला अमली,
जब वो भंगिया दो-दो पीळे,
तब म्हारा भोला जी मुसकाय देवेजी
म्हारा भोला अमली।
जब वा भंगिया लेहरी देवे।
तीन लोक भोला बकसे देवे।
म्हारा भोला अमली।
काय को घोटणो बाबा काय की कुंडी?
घोटे पाथर घोटणां पे, पीवे अमली।
म्हारा भोला अमली,
बांगा में भांग घुटाई लीजोजी।

मालवा में उज्जयिनी के महाकाल का अति महत्त्व है। महाकाल भांग के शौकीन हैं, यहाँ तक कि उनका श्रृँगार भी भांग से किया जाता है। अत: मालवा में भंग पीने का शौक होना कोई बुरी बात नहीं मानी जाती। मालवा के जनजीवन में ऐसे हजारों शिवभक्त हैं, वो शिव की बूटी समझ, इस मादक पेय का पान करते हैं। और किसी न किसी रूप में भंग का प्रशस्तिगान ही करते देखे जाते हैं। भंग पर कई गीत भी उपलब्ध होते हैं।

इस गीत में प्रियतमा अपने प्रियतम को भंग पीने के लिये अपने महल में आमंत्रित करती है। हे भोलाजी! भांग पीना हो तो मेरे महलों में आना। मेरे यहाँ की बनाई हुई भांग बड़ा रंग देने वाली और तरंग देने वाली है। मेरी भंग को पीने के पश्चात् दुबारा पीने की भावड़ (इच्छा) जाग्रत हो जायेगी। प्रथम एक दो प्याले तो राम के नाम पर पी लेने में कोई विशेषता नहीं होती, किन्तु तीसरे प्याले को पी लेने पर वह आदमी को निढ़ाल बना देती है। हे मेरे भोले अमली (भंग का सेवन करने वाले, आदत में शुमार)! आप बागों में आयें। वहाँ आपके लिये भंग घुटवा रखी है। खुरपी किस वस्तु की बनी है? और हत्ता किस वस्तु का बना है? लोहे की खुरपी है और लकड़ी का हत्ता है। बाग में इसी औजार से पार्वती जी भंग के पौधों को नींद रही हैं।

जब उस भंग को भोलेशंकर (प्रियतम) पी लेते हैं, तो मुस्कराने लगते हैं। जब भंग लहर देने लगती है तो तीनों लोक पुरस्कार में देने को उद्यत हो जाते हैं। हे भाई! भांग-घोटा और कुण्डी किस वस्तु की बनी है? पत्थर की शिला पर इसे घोटे से पीसा जाता है। इसके पश्चात् मेरे भोले अमल करने वाले पीते हैं। बागों में भंग घुटवा रखी है।

मालवा में बारहठ (ढोली) जाति के लोगों द्वारा दारूड़ी के गीत सुनाये जाते हैं। राजस्थानी

राजपूत तथा इनसे विकसित अन्य जातियों में दारू पीने का मालवा में आम रिवाज है। सुरापान के लिये वातावरण निर्माण के लिये बारहठ स्त्रियों द्वारा ढोलक की थाप पर दारूड़ी गाई जाती है। मालवा में छोटे-छोटे ठिकानों में सुरापान के दृश्य दिखाई देते हैं। वहीं वैवाहिक लोकाचार में भी दारू पीने की प्रथा है। एक गीत देखिये-

अजी तम जाओ कलालण बाग में, म्हारा दादीला घणी हे उम्मेद।
सीसो तो धक धक करे, प्यालो करे जी पुकार,
कामणी ठाड़ी अरज करेजी, पीवी लो राज कुमार।
झालो कणी ने दियो जी म्हारा राज,
म्हारी नानीबई का सिरदार।
म्हारा आंगणे पामणा, कांई करूंजी उणकी मनवार।
तन चोखा मन ल्हापसी, नेन परोसणहार।
झालो कणी ने दियो।

ए जी! तुम कलालन के बाग में जाओ। मेरे प्रियतम! आशा है बोतल पूरी भरी है। प्याला आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। कामिनी खड़ी-खड़ी आपसे प्रार्थना कर रही है कि- हे राजकुमार! आप दारू पीलो। हे मेरी नानीबाई के प्रियतम! किसने मेरे राज का संकेत किया? मेरे आँगन में अतिथि हैं। मैं उन्हें कौन सी वस्तु भेंट में दूँ। मेरा तन ही चावल, मन ही लपसी और नेत्र तो परोसने के लिये प्रस्तुत है।

एक गीत में मक्का की राबड़ी का वर्णन उपलब्ध है। मालवा का अतिप्रिय पदार्थ 'मक्का' अन्न से बनी राबड़ी है। जब इसे छाछ में पकाया जाता है, तभी राबड़ी कहलाती है। यदि इसके दलिये को शुद्ध जल में उबाल कर बनाया जाता है, तो 'बाटड़ो' शब्द से अभिहित किया जाता है। यदि पानी और दलिया बहुत कम हो तो उसें 'धेंधा' कहा जाता है। एक गीत देखिये-

मालवा को प्यारो भोजन, धन मक्का की राबड़ी।
लई ठोपली दळवा बेठी, घट्टी धूजी भापड़ी।
हत्तो टूट्यो, पाळो फूट्यो, कई बिचारी माकड़ी?
कड़ी बेंच खुगाळी बेंची, भेंस लाया भापड़ी।
सासूजी जद दोवण बेठ्या, हांडी भर दी आखड़ी।
चाटूजी जद चूंटन लाग्या, खदबद बोली राबड़ी।
सासू बऊ जद जीमण बेठ्या, थाली लीवी राबड़ी।
बरफी सरका टुकड़ा जमग्या, कंई जलेबी भापड़ी?
अस्सी बरस को डोकरो बोल्यो, आछी लागी राबड़ी।
आल्या-दिवाल्या सबी भरीद्या, मूंडो हले ने जाबड़ी।
मालवा को प्यारो भोजन, धन मक्का की राबड़ी।

राबड़ी मालवा का प्यारा भोजन है। आज के युग में इसकी महिमा का महत्त्व इसलिये बढ़ गया है, क्योंकि अब भैंस पालना टेड़ी खीर हो गई है। बिना दूध के राबड़ी की कल्पना ही व्यर्थ है। दूध होगा तो ही दही जमेगा और फिर छाछ बनेगी। छाछ होगी तो ही राबड़ी बनेगी।

सर्वप्रथम मक्का को घट्टी में दलना पड़ता है। मक्का की मजबूती से घट्टी भी थर्-थर् काँपने लगती है। घट्टी का हत्था टूट सकता है। थाप फूट सकती है। फिर माकड़ी बिचारी की क्या बिसात? गृहपति भैंस क्रय करने के लिये अपनी औरत के पाँवों की 'कड़ी' नामक आभूषण और गले की हँसुली बेचकर भैंस लाता है। घर की स्वामिनी (सास) मिट्टी की हंडिया धोकर भैंस का दूध दुहती है। भैंस के दूध से हंडिया भर जाती है। चाटू (लकड़ी के करछुल) से इसको घोंटा जाता है। जब राबड़ी चूल्हे पर रखी खदबदाने लगती है, तब सासू और बहू अपनी राजगढ़ी (ऊँचे किनारों वाली थाली) थाली में राबड़ी लेकर जीमती हैं। बरफी से टुकड़े राबड़ी के जम जाते हैं। इसके सामने जलेबी भी कोई महत्त्व नहीं रखती है। एक अस्सी वर्ष के बूढ़े मनुष्य को भी राबड़ी अतिप्रिय लगती है। इसलिये कि इसे चबाना नहीं पड़ता। आल्या-दिवाल्या (ताक) सब राबड़ी से भर गये हैं। खाते-खाते मुँह और जबड़े मस्त हो जाते हैं। इसे खाने में कोई परिश्रम भी नहीं करना पड़ता है।

स्त्रियाँ जहाँ कुलीन एवं लक्ष्मी स्वरूपिणी होती हैं, वहीं कर्कशा भी होती हैं। मालवा की गंगा-जमुनी संस्कृति में ऐसे दृश्य भी उपस्थित होते हैं, जिसमें फूहड़ स्त्रियाँ घर के लिये मुसीबत बन जाती हैं। ऐसा ही एक दृश्य इस गीत में अवलोकनीय है-

धन-धन रे पुरस थारा भाग, करकसां नार मली।
नवा कुंवा को पाणी भर लावी, आंगण दियो झुकाई।
तीन लात चूला के मारी, फेर करी चतराई।
डांडो बेच बलीण्डो बाळ्यो, अर हूंपड़ा को खूण्यो।
आदी डांडी चाटू की बाली, तोईनी सीजी हांडी।
आवता पावणा देख देख के, चूल्हो दियो बुझाई।
पांच जणी से वातां लागी, आटो कुतरो खाय।
आठ सेर का आठ पकाया, तो सेर को एक।
ऊ मंगली आठी खावीग्यो, कुलवंती को एक।
खराब रांड से फेरा फिरियो, ने बंड बंड लोग में बासो।
के गया कबीर दासजी, सुणलो भई सादो।
किण बिद होवे घर बासो, करकसा नार मिली।

हे पुरुष! तेरे भाग्य को धन्य है, जो तुझे ऐसी कर्कशा स्त्री मिली। तुम्हारी स्त्री नये कुँए का जल भरकर लाई और राबड़ी का आदण (पानी) चूल्हे पर चढ़ा दिया। जब चूल्हा न जला तो उसने तीन बार लात की मारी। फिर चतुराई पूर्ण चाल चली। उसने फूस के मकान का डांडा

(मोटी लकड़ी) और बलीण्डा (छोटी लकड़ी) खींचकर चूल्हे में जला दी। एक सूप का कोना भी जला दिया। चाटू की डंडी भी जला दी। फिर भी हांडी में रबड़ी पक नहीं पाई। जब उसने मेहमान को आता देखा तो चूल्हा बुझा दिया। पाँच स्त्रियाँ मिल गईं तो उन्हीं से बातचीत करने लगी। जबकि कुत्तों ने घर में रखा सब आटा खा लिया। बाद में जैसे-तैसे रोटी पोई भी तो आठ सेर आटे का एक ही बड़ा रोटा बना डाला, खाने वाले भी कम न थे। वे भी आठ तो खा ही गये। फिर सेर भर का बना बड़ा रोट भी खा गये।

वह पुरुष बिचारा क्या करे? खराब स्त्री से उसने भाँवर जो ले लिये। फिर गलत लोगों की सोहबत में रहने लगे। कबीरदासजी कहते हैं- बताइये, ऐसे पुरुषों के घर में वासा कैसे हो? जिनके घर में कर्कशा स्त्री हो।

एक और लोकगीत देखिये। इसमें अकर्मण्य स्त्री का चित्रण मिलता है, यथा-

पालो मत पटके भगवान, ऐसी बेढंगी तिरिया से।
हात नी धोवे, मूं नी धोवे, छो मइन्यां में न्हावे।
सूती-सूती रोटी खावे, फिर घट्टी घमकावे।
सोवे सवेंरा उठे अवेरा, घर के दफोरां झाड़े।
छोरा-छोरी रोटा मांगे, दो घूंसा की मारे।
पालो मत पटके.........
चांदी पेरे, सोनो पेरे, बिन्दी लगावे मोटी।
पर-पुरस के ऊबी नरखे, असी लुगाई घणी खोटी।
पालो मत पटके.......
लूण सीरा में, खांड दाळ में, हींग खीर में ल्हाके।
पांवणा के ऊबी देखे, खुल्लो मूंडो राखे।
छोरा-छोरी नईं पड़ावे, मेला कुचेला राखे।
लूला लंगडा थोंगराई, करनी को फल चाखे।
बारे जारे मसाणा में देवे, खोटी बाता बोले।
असी फूड़ लुगाई से तो, पालो मत पटको भगवान।
ऐसी बेढंगी तिरिया से।

इस गीत में फूहड़ स्त्री का चित्रण मिलता है, जो अपने कर्मों से घर को नर्क बना देती है। हे भगवान! ऐसी स्त्री को पल्ले न बाँध, जो न कभी हाथ धोती है न मुँह। जो सोई हुई रोटी खाती है, फिर घट्टी पीसने बैठती है। जो देर से उठती है और दोपहर में घर की सफाई करती है। बच्चे रोटी के लिये रोते हैं तो ऊपर से दो-दो घूँसे मारती है। चाँदी-सोना पहिनती है और लिलाट पर बिन्दी लगाती है। पर पुरुषों को खड़ी-खड़ी ताकती रहती है। ऐसी स्त्री बड़ी खोटी होती है। नमक लपसी में, शकर दाल में और खीर में हींग डालती है। मेहमान आने पर खड़ी-खड़ी खुला

मुँह रखकर देखती रहती है। बच्चों को तो पढ़ाती नहीं। हमेशा मैला कुचैला रखती है। ऐसी स्त्री को अपनी करनी का फल तब मिलता है, जब अपंग औलाद होती है, फिर भी वह अक्सर गालियाँ देती रहती है। हे भगवान! ऐसी फूहड़ व आलसी तथा कर्कशा स्त्री से मेरा पाला मत पटकना।

महाशिवरात्रि पर्व

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक महाकालेश्वर उज्जैन में शिप्रा के किनारे तथा दूसरा ओंकारेश्वर (बड़वाह में नर्मदा के किनारे) उपस्थित है। तीसरा डग के पास काया वर्णेश्वर महादेव का अति प्रसिद्ध तीर्थ है।

माघ मास के कृष्ण पक्ष चतुदर्शी को मालवा में भगवान शंकर की महा शिवरात्रि पड़ती है। इस दिन समग्र मालवा शिवाराधना में लीन हो जाता है। पुरुष जहाँ रात्रि भर जागरण कर शिव के निर्गुण गीतों को गाते हैं, वहीं स्त्रियाँ भी निर्गुण गीतों को गाकर रात्रि के चारों प्रहर की पूजार्चना करती हैं। कतिपय गीत प्रस्तुत है–

धन–धन भोले नाथ, बांटी दियो तीन लोक एक पल में।
असा दीन दयाल म्हारा दाता, भरो खजानो पलभर में।
पेलो वेद बरमा के दीनो, बण्या बेद का अदकारी।
बिसणूंजी के दियो सुदरसन चक्कर अर सुंदर नारी।
इन्दर के दई काम धेने अर, ऐरापत सो बलकारी।
कुबेर के करीद्यो न्याल, आपने धन संपदा को अदकारी।
अपणे पास पातर नी राखी, मगन रिया बाघाम्बर में।
असा दीन दयाल म्हारा दाता, धन धन भोलानाथ बांटद्यो।
तीनी लोक एकी पलमें।
अमरत सब देवन ने द्यो ने, आप हलाहल पान कियो।
ब्रह्म ग्यान तो दियो उणीके, जणने थांको ध्यान कियो।
भगीरथ के दई दी गंगा, सब जग ने असनान कियो।
बड़ा–बड़ा पानी को थांने, पलभर में कल्याण कियो।
आप नसा में मसत रिया, अर पियो भंग नित खप्पर में।
असा दीन दयाल म्हारा दाता, भरो खजानों पल भर में।
लंका तो रावण के दई दी, बीस भुजा दस सीस दिया।
रामचन्दर के धनस बाण अर, हनूमान के जगदीस दिया।
मन मोवन के दई मोहनी, मोर मुगट को दान दिया।
मुगती वई काशी का वासी, भगती अर विसास दियो।
आप नसा में मगन हुईर्या, ओर पियो भंग खप्पर में।

वीणा तो नारद के दई दी, हरि भजनों का राग दियो।
बामण के द्यो करम काण्ड,अर संन्यासी के त्याग दियो।
जणपे किरपा वई तमारी, उणके अन धन राज दियो।
जणने ध्याया वणने पाया, मादेव तमारा वरदान रे।

हे भोलेनाथ! आपको धन्य है। आपके समान कोई दानी नहीं है। आपने तीनों लोक बाँट दिये। ऐसे आप दानी और दीनों के स्वामी हैं। आप चाहें तो किसी को भी पल भर में धनवान बना सकते हैं। आपने वेद तो ब्रह्मा जी को दे दिया। वे वेदों के ज्ञाता कहलाने लगे। भगवान विष्णु को आपने सुदर्शन चक्र और लक्ष्मी सी सुन्दर स्त्री दे दी। इन्द्र को कामधेनु और बलवान ऐरावत हाथी दे दिया। कुबेर को आपने समग्र धन-सम्पत्ति का स्वामी बना दिया। अपने पास स्वयं के लिये तो एक पत्ता भी न रखा। केवल बाघाम्बर पहनकर ही सन्तुष्ट रहे। हे भोलेनाथ! आपको धन्य है। आपकी कृपा से सब देवताओं को अमृत पान करने को मिला, किन्तु स्वयं ने तो विषपान ही किया और इसीलिये विषपायी कहलाये। ब्रह्म का ज्ञान आपने उसी को दिया, जिसने आपकी आराधना की। भागीरथ को गंगा दी, जिसमें समग्र जग ने स्नान किया। बड़े-बड़े पापियों का आपने पल भर में कल्याण कर दिया। आप स्वयं तो भंग के नशे में रहे और संसार को धन-दौलत के नशे में चूर कर दिया। लंका का राज और बीस भुजाएँ तथा दस सिर आपने रावण को प्रदान किये। भगवान रामचन्द्रजी को धनुष बाण और हनुमान को भगवान राम दिये। कृष्ण को जहाँ मोर मुकुट दिया, वहीं काशी के निवासियों को मुक्ति, भक्ति और विश्वास दिये। हे शिव! आप स्वयं तो भंग के नशे में मस्त रहे, किन्तु बजाने के लिये वीणा नारद को दे दी। उन्हें हरि भजन नामक राग अलापने को दिया। ब्राह्मण को कर्मकाण्ड तथा संन्यासी को त्याग की भावना दी। हे भगवान! जिस पर भी आपकी कृपा हुई, उसे अन्न-धन और राजपाट दे दिया, जिसने आपका स्मरण किया, उसे अवढरदानी बन वरदान दे डाला। एक गीत देखिये-

झूलत गिरजा संग उमापत, झुलता गिरजा संग।
पारबती हिमाचल पुतरी, सोवत डामें अंग।
परबत उपरा झूलो बांद्यो, रस्सी बणी भुजंग।
उमापत............... ॥
डिम डिमरू डिम डिम बाजे, हरदा में भरे उमंग।
सीस जटा अर गंगधार, अर गळा में नाग भुजंग।
उमापत............... ॥
कारतक स्यामी गोद रमावे, पिवे दूदिया भंग।
उमापत............... ॥
हूँ तमारा पिरेम दीवाणी, सब नदियां देखी म्हांने।
गंगा नई देखी, जटा में से गंगा बेवई दी।
सबज देवता देख्या म्हांने, बरमा नई देख्या।

बरमलोक से रचइ दो संकर जी,
सबज देवता देख्या म्हांने, गनपतिजी नी देख्या।
गोद में गणपत दिखा दो म्हांके संकरजी।
सबज सखियां देखी म्हांने, गवरां नई देखी।
संग में से गवरा दिखा दो म्हांने संकरजी,
सबज देवता देख्या म्हांने, शिवजी नी देख्या।
केलास पर डिमरू बजा दो संकरजी,
बिच्छू देख्या म्हांने, सरप नई देख्या।
गळा में तो सरप दिखा दो, म्हांके संकरजी।

भगवान शंकर अपनी प्राणप्रिये गिरजा के संग झूला–झूल रहे हैं। पार्वती हिमाचल राज की पुत्री हैं, जो उनके वामांग में सुशोभित हैं। पर्वत पर झूला बाँधा गया है। भुजंग की रस्सी बनाई गई। डिम्–डिम् की आवाज करता डमरू बज रहा है। हृदय में उल्लास समाया हुआ है। शंकरजी के सिर पर जटा सुशोभित है, जिसमें से गंगा की धारा निकल रही है। गले में नाग धारण किये हैं। कार्तिकेय जी को गोद में लिया है और स्वयं दूधिया भंग का रसास्वादन कर रहे हैं। हे भगवान! मैं तो आपके प्रेम में दीवानी सी हूँ। सब नदियाँ मैंने देखीं, किन्तु गंगा नहीं देखी। कहने पर शंकर जी ने अपनी जटा से गंगा जी बहा दी। सब देवता देखे पर ब्रह्माजी नहीं देखे, कहने पर शंकर जी ने ब्रह्मा से कहकर ब्रह्मलोक से सृष्टि का संचार कर दिया। सब देव देखे पर गणपति जी को नहीं देखा। शंकर जी ने गोदी में खेलते हुए गणपति जी को दिखा दिया। सब सखियाँ देखीं, पर पार्वती नहीं देखी – कहते ही पार्वती दिखला दी। सब देव देखे, पर शिवजी नहीं देखे – कहते ही शंकर कैलाश पर्वत पर डमरू बजाते दिखाई दिये। बिच्छू देखे पर सर्प नहीं देखे – कहते ही शंकरजी ने अपने गले में सर्प धारण करके हमें दर्शन करवा दिये।

भोला संकर की सजी हे बरात, सुवाणी लागे रात।
दुलहन बनी पारबती हो।
हात भोला के कांकण बंद्यो हे, माथा पे उंके मोड़ सुवाय।
दुलहिन बनी हे पारबती जी कांई।
भोला संकर.......
अंग भोला के हळद रची हे, हाथां में मेंदी रचाय।
सुवाणी लागे रात......
कूण–कूण देव बराती बण्या हे? कूण जो बीन बजाय।
दुलहिन बनी हे पारबती।
नो करोड़ देव बराती सज्या हे,
नारद बीन बजाय, सुहाणी लागे रात।
दुलहिन बनी पारबती।

भोले शंकर की बारात सज गई है। रात्रि सुहावनी लग रही है। पार्वतीजी दुल्हिन बनी हैं। शंकरजी के हाथ में कंकण बँधा है। सिर पर मोड़ बँधा है। शरीर पर हल्दी रची हुई है। हाथों में मेहंदी रची हुई है। ऐसे में रात्रि बहुत सुहावनी लग रही है। बहुत से देवता बारात में आये हैं। वीणा कौन बजा रहा है? पार्वती दुल्हिन बनी है। नौ करोड़ देवता बराती बने हैं। नारद जी वीणा बजा रहे हैं। रात्रि सुहावनी लग रही है। दूसरे इस गीत में भी शंकर विवाह का वर्णन उपलब्ध है।

भोले की सजी हे बरात, दूला हे भोलानाथ।
नर नारी ने सोर मचायो, चढ बेलां पे ब्याहन आयो।
आंगन मंडप गड़्यो।
शिव शंकर खड़्या, हिमाचल से दान दिलवायो।
चढ़ बेलां पे ब्याहन आयो।
नावण मांगे नेग, दे ओ भोला मोये होवे देर।
इक मुट्ठी में सरप दबायो, चढी बेल पे ब्याहन आयो।
नाग मारे फुसकार, नावण धूजे धनासय।
वा वारे भोला थारी माया, चढ़ बेल पे ब्याहन आया।
बिदा हुई बारात लई के पारबती कूं साथ।
सखियां ने मंगल गाया, चढ़ बेल पे ब्याहन आया।

शंकर की बारात सजधज के हिमाचल राजा के द्वार पर आ पहुँची है। नर-नारी ने शोर मचा रखा है। शिव बैल पर सवार होकर आये हैं। आँगन में मंडप गड़ा है। शिवशंकर उसके नीचे खड़े हैं। वहाँ दान दे रहे हैं। नाऊन नेग माँग रही है। शिवशंकर सर्प मुट्ठी में दबाकर उसे देते हैं। वह जैसे फुँफकार मारता है। नाऊन डर के मारे काँपने लगती है। बारात पार्वती के साथ विदा होती है। सखियाँ मंगल गीत गाती हैं। एक गीत देखिये-

भोले शंकर को डिमरू बजतो आवे।
चंदा भी आवे ने सूरज भी आवे।
नो लख तारा भी चमकता आवे।
बरमा भी आवे ने बिसणुं भी आवे।
नारदजी की बीन भी बजती आवे।
पारबती-भोले भी नचता आवे।
राम जी आवे ने लछमण भी आवे।
सीताजी की पायल भी बजती आवे।
राधे भी आवे ने रूकमण भी आवे।
गंगा भी आवे ने जमना भी आवे।
सरजू मइया भी दरस कूं आवे।

सिवजी भी आवे ने पारबती भी आवे,
गोदी में गणपत खेलतो आवे।

भोले शंकर का डमरू बजता आ रहा है। चन्द्रमा और सूर्य भी आये हैं। नवलख तारे भी चमकते दिखाई दे रहे हैं। ब्रह्मा और बिष्णु भी आये हुए हैं। नारद जी भी वीणा बजाते हुए चले आ रहे हैं। पार्वती और शंकर भी नृत्य करते आ रहे हैं। राम-लक्ष्मण भी आ रहे हैं। साथ में सीता जी भी अपनी पायलें बजाती हुई चली आ रही हैं। राधिका और रुक्मिणी आ रही हैं। कृष्णजी भी उनके साथ मुरली बजाते चले आ रहे हैं। गंगा और यमुना भी आ रही हैं। सरयू माता भी भगवान शिव के दर्शन के लिये दौड़ी आ रही हैं। शिवजी और पार्वती के साथ गणपति जी भी गोद में खेलते चले आ रहे हैं।

म्हारा भोला नाथ म्हारा, मन की तमन्ना पूरण करे।
सिवजी के सिर पे कंई-कंई बिराजे,
भूरी जटा अर गंग की धार।
शिवजी का गला में कंई-कंई रेवे सरपों का हार।
शिवजी की झोली में कंई-कंई बिराजे।
आँकडा धतूरा अर गांजा बजावे ताल
कूण बजावे दोई-दोई हात में।
बरमा बजावे चुटकी ने बिसणुं बजावे ताल,
दनिया बजावे दोई-दोई हात।

हे भोलेनाथ! मेरी इच्छाएँ पूर्ण करो। शिवजी के सिर पर क्या-क्या है? भूरी जटा और गंगा की धारा है। शिवजी के गले में क्या-क्या है? उनके गले में मुण्डों की माला और सर्पों का हार है। शिवजी की झोली में क्या-क्या है? उनकी झोली में आँकड़ा, धतूरा और गांजे की शाखा है। चुटकी और ताली कौन बजाता है? ब्रह्मा चुटकी बजाते हैं, जबकि दुनिया भर के लोग दोनों हाथों से तालियाँ बजाते हैं।

दसरण श्याम का करवई दो, जोगी आयो।
दसरण श्याम का नी होवे, जोगी जावो घर पें।
शिवजी के गोरे-गोरे अंग, जीपे लिपट्या हे भुजंग।
उंका माथा पे जंग बिराजे, चंदन चमके।
शिवजी ने ऐसा डिमरू बजाया, मेरा रोवे किसन कन्हैया।
उंकी अखियाँ भी बह आई, ओर दूद भी उड़के हे।
शिवजी ने ऐसी बिनती सुनाई।
यशोदा लेके झट से आई, उणकी ज्योत में जोत समाई,
भोला नाचे उछले, शिव केलासी अवन्यासी,

म्हारी काटो तम जमफांसी, हूँ तो शिव चरणां की दासी।
हूँ थांका दरसण की प्यासी।

एक दिवस एक योगी ने आकर माता यशोदा से कहा कि– हे यशोदा माता! आप मुझे बाल कृष्ण के दर्शन करवा दीजिये। वे कहने लगीं– हे योगी! अपने घर को लौट जाओ। आपको कृष्ण के दर्शन नहीं हो सकते। शिवजी का गौर वर्ण था। उस पर साँप लिपटे हुए थे। सिर पर चन्द्रमा शोभायमान था। उन्होंने अपने हाथों में रखा, ऐसा डमरू बजाया कि कृष्ण रोने लगे। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। शिवजी ने यशोदा से इस प्रकार विनती की – कि यशोदा, कृष्ण को गोद में लेकर उसी समय महादेव को बतलाने ले आई। कृष्ण के दिल की ज्योति (प्रकाश) निकलकर जैसे ही शिव के दिल की ज्योति से मिली, भोलानाथ उन्हें विष्णु रूप जानकर नृत्य करने लगे। हे अविनाशी! कैलाशवासी! भगवान शिव! मेरे गले का फाँसी का फंदा दूर करो। मैं भी आपके चरणों की दासी हूँ। हे अविनाशी! दर्शन दे दो।

शंकर जी हें भोले भाले, जट्टा के बाल काले।
सिर पे बहे गंग धारा हो हो।
हन्डो लाई लोठ्यो लाई आपके वाते,
आपके न्हिलवाऊंगी हूं तो चली जाऊंगी,
यो आपको परबत छोड़ी के हो हो,
लाडू लई ने पेड़ा लई आपके वाते,
आपके पिलाऊंगी मूं तो चली जाऊंगी।
यो आपको परबत छोड़ी के हो हो हो।
काथो लई, चूनो लई, आपके वाते,
आपके तो चबवाऊंगी हूं तो चली जाऊंगी।
यो तो आपको परबत छोड़ी के हो हो।
रेसम लई, झूलो लई, आपके वाते,
आपके झुलाऊंगी, मूं तो चली जाऊंगी।
यो आपको परबत, छोड़ी के हो हो।
चोपड़ लई, पांसा आपके वाते,
आपके जिताऊंगी, मूं तो चली जाऊंगी।
यो आपको परबत छोड़ी के हो हो।
गादी लाई, तकिया लाई आपके वाते।
आपके लिटाऊंगी मूं तो चली जाऊंगी।
यो आपरो परबत छोड़ी के हो हो।

शंकरजी भोले–भाले हैं। उनका स्वरूप भी निराला है। सिर पर से गंगा की धारा प्रवाहित

हो रही है। हे प्रभो! मैं आपके लिये पानी भरा हंडा और लोटा लेकर आई हूँ, आपको स्नान करवाऊँगी और आपका यह पर्वत छोड़कर चली जाऊँगी। हे भोले! मैं आपके लिए लड्डू-पेड़े लाई हूँ, आपको खिलाऊँगी। यह आपका पर्वत छोड़कर चली जाऊँगी। मैं आपके लिये झारी और लोटे लेकर आई हूँ। इससे मैं आपको जल पिलाऊँगी। फिर आपका पर्वत छोड़कर चली जाऊँगी। मैं आपके लिये कत्था-चूना लाई हूँ। मैं आपको पान खाने को दूँगी। फिर आपका यह पर्वत छोड़कर चली जाऊँगी। मैं आपके लिये रेशम का झूला लाई हूँ। आपको उसमें झूलाऊँगी और फिर आपका यह पर्वत छोड़कर चली जाऊँगी। मैं आपके खेलने के लिये चौपड़, पाँसे लाई हूँ। आपको खिलाऊँगी और फिर पर्वत छोड़कर चली जाऊँगी। मैं आपको सुलाने के लिये गादी और रजाई लाई हूँ। आपको उस पर सुलाऊँगी और फिर आपका पर्वत छोड़कर चली जाऊँगी। अगला गीत देखिये-

हूं तो शिवजी की पूजा करूँ तन मन से।
म्हारा भोला, सुवाग की लाज रेवे।
म्हारा लिलाड़ की टीलड़ो चमकतो रेवे।
म्हारा कानां की झुमक्यां अम्मर रेवे।
करूँ शिवजी की पूजा तन मन से।
म्हारा भाग-सुवाग की लाज रेवे।
म्हारा लिलाड़ की बिंदिया चमकती रेवे
म्हारा नाक की नथनी अम्मर रेवे।
हूं तो करूँ शिवजी की पूजा तन मन से।
म्हारा भाग सुवाग की लाज रेवे।
म्हारा हिवड़ा को हरवो चमकतो रेवे।
म्हारा हाथां की चुड़ियाँ अम्मर रेवे।
म्हारा पावां की पायल चमकती रेवे।
म्हारी उंगल्या में बिछिया झनकती रेवे।
हूं तो करूँ शिवजी की पूजा तन मन से।
म्हारा स्वाग की लाज रेवे।
म्हारो खूब बड़ो परवार रेवे।
म्हारो हर्‌यो भर्‌यो संसार रेवे।
म्हारा गोदी में नंदलाल अम्मर रेवे।
म्हारा पति को राज अटल रेवे।
म्हूं तो करूँ शिव की पूजा तन मन से।
म्हारा भाग ने सुवाग की लाज रेवे।

मैं भगवान शिव की तन मन से पूजा करती हूँ। हे भोले! मेरे सुहाग की लाज रखें। मेरे

ललाट का टीका चमकता रहे। मेरे कानों की मुरकियाँ (आभूषण) अमर रहें। मैं शिव की तन-मन से पूजा करती हूँ। मेरे भाग्य-सौभाग्य की लज्जा आपके हाथ में है। मेरे ललाट की बिंदी चमकती रहे। मेरे नाक की नथनी (बेसर) अमर रहे। मैं भगवान शिव की तन-मन से पूजा करती हूँ। मेरे भाग्य-सौभाग्य की आप लज्जा रखें। मेरे हृदय का हार चमकता रहे। मेरे हाथों की चूड़ियाँ अमर रहें। मेरे पाँवों की पायल बजती रहे। मेरी अँगुलियों के बिछिये बजते रहें। मैं भगवान शिव पूजन तन-मन से करती हूँ। हे प्रभो! मेरे सौभाग्य की लज्जा रखें। मेरा बहुत बड़ा परिवार हो। मेरा संसार हरा-भरा रहे। मेरी गोदी का नंदलाल अमर रहे। मेरे पति का राज्य अटल रहे। मैं शिवजी की पूजा तन-मन से करती हूँ, मेरे भाग्य और सुहाग की - हे प्रभो! लज्जा रखें। गीत देखिये-

गवरां ढूंड रई परबत पे, शिव के पति बणावा के।
नी चइये म्हारे सीस-टींकलो,
सीस सजावा के मोंय नी चइये।
कानां की झुमकी कान सजावा के।
दइ दो म्हांके फुलड़ा की माला, शिवजी के चड़ावा के।
नी चइये मोय कंठ को हरवो, कंठ सजावा के नी चइये।
मोंय हाथां की चूडूयां, हाथ सजावा के दई दो।
मोंय फुलवा की माला दइ दो, शिवजी के चढ़ावा के।
नी चइये मोंय पांव की पायल, पांवन के सजावा के।
नी चइये मोंय उंगली की बिछिया, उंगली के सजावा के।
दई दो फुलवा की माला म्हांके, शिव शंकर के चढ़ावा के।
गवरां ढूंढ रई परवत में, शिव के पति बणावा के।

पार्वती जी, भगवान शंकर को अपने पति के रूप में प्राप्त करने के लिये हिमालय पर्वत पर ढूँढ रही हैं। वे कहती हैं- मुझे सिर का टीका, उसे सजाने मात्र के लिये नहीं चाहिये। न ही कानों की झुमकी, कान सजाने को चाहिये। मुझे तो फूलों की माला चाहिये, जिसे मैं भगवान शिव को अर्पित कर सकूँ। मुझे गले का हार नहीं चाहिये। हाथों की चूड़ियाँ हाथों की सजावट के लिये नहीं चाहिये। मुझे तो शंकर जी को चढ़ाने के लिये फूलों की माला चाहिये।

मुझे पाँवों की पायल, पाँवों की सजावट के लिये नहीं चाहिये। मुझे अँगुलियों के लिये बिछिया नहीं चाहिये। मुझे तो शिवशंकर को अर्पण करने के लिये मात्र फूलों की माला चाहिये। इस प्रकार पार्वती जी - हिमालय पर भगवान शंकर को ढूँढ रही हैं।

डिमरू के बजइया नसा में रेवे।
डिमरू बजे तिबारा गवरां पारबती के संग।
नाग लिपट्र्या भोला थारा तन पे।

जऊं बलियारी भोला थारी लेरन पे।
ओ कासी का बासी नसा में रेवे।
डिमरू बजे तिवारा, गवरां पारबती के संग।
धूनी रमाई बाबा ऊंचा परबत पे
धूनी मचाई तने जई मरघट पे।
भूत बजावे ताल-बजावे मिरदंग,
डिमरू बजे तिवारा, गंवरा पारबती के संग।
डिमरू के बजइया नसे में रेवे चंग।
डिमरू बजे तिवारा, गवरा पारबती के संग।

डमरू के बजाने वाले भोले बाबा सर्वदा नशे में रहते हैं। वे अपना डमरू पार्वती के संग बजाते रहते हैं। भोले के शरीर में नाग लिपट रहे हैं। हे भोले! मैं तुम्हारी लहर पर बलिहारी जाती हूँ। हे काशी के निवासी! आप भंग की तरंग में सर्वदा अच्छे लगते हैं। पार्वती के साथ हमेशा डमरू बजाते रहते हैं। आपने हिमालय जैसे ऊँचे पर्वत पर अपनी धूनी रमा रखी है। मरघट में जाकर आप धूम मचाते हैं। भूत ताली और मृदंग बजाते हैं। आपका डमरू पार्वती के साथ तिहरा बजता रहता है। हे भोले बाबा! डमरू के बजाने वाले आप भंग के नशे में आनन्दित रहते हैं। गीत देखिये-

भोले बाबा की बरतियां कसी सजी रे?
डिमरू वाले की बरतिया कसी सजी रे?
पांव पदम माथा पे चन्दरमा, जट्टा में बेरई गंग।
जटाधारी की कसी रे बरतियां?
भोला बाबा नी बरतिया कसी सजी रे?
एक हात में डमरू सोवे दूजा में तिरसूल,
अंग बबूती गले रूंड माला, शेष नाग लिया संग।
नाग धारी की बरतिया कसी सजी रे।
बूढ़ो नांदियो फूटो नगाड़ो, घर-घर अलख जगाय।
सबी देवता सज्जा बराती, बरमा बिसणु महेस।
थांकी अद्भुत हेरे मुरलियां, कसी सजी रे थांकी अद्भुत बरतियां?
पारबती माता से बोली, सुणलो मांय म्हारी बात।
या अद्भुत हे मुरतिया, कसी सजी रे यां कोई बवरियां?
कसी सजी रे भोला बाबा की बरतियां?

भोले बाबा की बारात कैसी शोभायमान है? डमरू वाले की बारात कितनी शोभायमान है? उनके पाँवों में पद्म बने हैं। सिर पर चन्द्रमा सुशोभित है। जटा से गंगा बह रही है। ऐसे

जटाधारी की बारात कैसी सजी है? उनके एक हाथ में डमरू सुशाोभित है, दूसरे में त्रिशूल। अंग में भभूती और गले में नागधारी भोले बाबा की बारात कैसी सजी हुई है? वे बूढ़े नांदिया (वृषभ) पर सवार हैं, नगाड़ा फूटा हुआ है। घर-घर अलख जगाने वाले ऐसे शंकर की बारात में ब्रह्मा-विष्णु और महेश जैसे सभी देवता आये हुए हैं। आपका स्वरूप अद्भुत है। आपकी बारात कैसी शोभा दे रही है? पार्वती अपनी माता से कहती है- हे माता! सुनो, यह स्वरूप अद्भुत है। महादेव की बारात भी कैसी सजी हुई है? यह बावरी तो इनके इसी रूप पर विमोहित है।

भोले बाबा ने डिमरू बजाया, परबत पे सोर मचाया।
भोला पीवे हे भंग, सिर पे सोवे हे गंग।
सरप का हार बणाया, परबत पे सोर..... ।
मिरग छाला उणने बिछाई,
ऐसा सुंदर रूप बणाया, परबत पे सोर मचाया।
भोला पीवे हे भंग, रेवे गवरां के संग।
ऐसा गांजा चरस चढ़ाया, परबत पे सोर मचाया।
बम्-बम् भोले महाराजा, राखो भांग की लाज।
असा भगता ने किरतन गाया, परबत पे सोर मचाया।

भोले शंकर ने ऐसा डमरू बजाया कि पर्वत निनादित हो उठा। भोले भंग पीते हैं। उनके सिर पर गंगा शोभायमान है। सर्पों का हार गले में पड़ा है। मृग छाला बिछा रखी है। शरीर पर भभूती लपेट रखी है। ऐसा उनका सुन्दर रूप है। भोले भंग पीते हैं। सदैव गिरजा के साथ रहते हैं। वे गांजा और चरस का सेवन भी करते हैं। तब पर्वत निनादित हो उठता है। वे बम्-बम् का उच्चारण करते हैं। हे भोले! भंग की लाज रखो। हम भक्त आपके कीर्तन गा रहीं हैं।

कसां रे करूँ भोला पूजा रे तुमारी, म्हारी भोली सी उमर।
म्हारी नानी सी उमर, मोंय डर लागे, डर लागे।
सीस भोला के जटा बिराजे, कान भोला के कुंडल बिराजे।
गंगा के देख बाबा मोती के देख, मोंहे डर बागो, डर लागे।
कंठ भोला के हरवा बिराजे, हात भोला के त्रिसूल बिराजे।
सांप के देख - बाबा डमरू के देख, मोंये डर लागे - मोंय डर लागे।
अंग भोला के गवरां बिराजे, मिरग छाला के देख बाबा डर लागे।
गनपत के देख मोंये डर लागे, मोंये डर लागे।

हे भोलेनाथ! मैं आपकी पूजा किस प्रकार से करूँ? आपकी उम्र कम है, मेरी भी उम्र कम है। मुझे डर लगता है। आपके सिर पर जटा शोभायमान है। कानों में कुंडल है। गंगा को देखकर और कानों के मोती देखकर। हे बाबा! मुझे भय लगता है। भोले के कंठ में हार सुशोभित है। हाथों में त्रिशूल धारण किये हैं। साँपों और डमरू को देख मुझे डर लगता है। भोला के अंग

पर भस्मी लगी है। संग में पार्वती विराजमान हैं। मृगछाला को देख, गणपति को देख – हे बाबा! डर लगता है।

हे प्रभुजी दीनानाथ म्हांकी, सागर में पड़ी नइया।
इस सागर में दो ही बड़े हें, पिता ने हमके जन्म दियो हे।
माता पिलावे काचो दूध, म्हांकी सागर में।
सुसराजी ने म्हारो ब्याव रचायो।
सासू जी सोंप्यो घरबार, म्हांकी सागर में पड़ी नइया मझदार।
गुरुजी ने म्हांके ग्यान बतायो, हरिजी लगावे बेड़ा पार।
सागर में पड़ी नइया मझदार, प्रभुजी दीनानाथ म्हांकी सागर में।

हे प्रभु! हे दीनानाथ! हमारी जीवन रूपी नौका इस संसार रूपी सागर की मध्य धारा में बह रही है। इस संसार में दो ही बड़े हैं। एक तो वे पिता, जिन्होंने हमें जन्म दिया है। दूसरी माँ, जिसने हमें कच्चा दूध पिलाया। ससुरजी ने हमारा विवाह करवाया। सासजी ने हमें घर–बार की स्वामिनी का पद सौंपा है। हे प्रभु! हमारी नैया मझदार में पड़ी है। गुरुजी ने हमें ज्ञान मार्ग दिखाया है। अब तो वह हरि ही है, जो हमारी जीवन रूपी नाव को इस भवसागर से पार उतार सकते हैं। गीत देखिये–

हूँ भी तमारे संग चलूंगी सांवरिया।
म्हारे वाते जरा ठेरजा रे कनइया।
तम ओढ़ा दो म्हारे गुलाबी चुनड़िया।
माथे सजा दो म्हारे बिंदिया सांवरिया।
नथ बेसर गले का हार पिनइ दो।
बलदाऊ के भइया जरा ठेरजा कनइया।
म्हारा सिर पेंहे भारी गगरिया।
चाल चलूं तो लचके कमरिया।
सूरत म्हारी भोली, बाली हे उमरिया,
जरा ठेरजा कनइया हो।
श्याम सुंदर मोहन मुरली वाले।
राधा गोरी ने स्याम रंग काले,
थारी म्हारी जोड़ मिला ले।
जल में बवरिया, जरा ठेरजा कनइया।
ऐसी पायल पिना दे म्हारा पांवां में,
रूक जाय सहेली सारा गांव की,
असी चाल चलूं अलबेली
देखें लोग लुगइया, जरा ठेरजा कनइया।

हे साँवलिया! मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। हे कृष्ण! मेरे वास्ते थोड़ी देर ठहर जाओ। तुम भी मुझे गुलाबी चुनरी ओढ़ा दो। मेरे भाल पर लाल बिंदिया सजा दो। नथ और गले का हार पहिना दो। हे बलराम जी के भाई कृष्ण! जरा देर के लिये ठहर जाओ। मेरे सिर पर पानी की वजनी मटकी रखी है। यदि तुम्हारी चाल से चलती हूँ तो मेरी कमर में बल पड़ता है, मेरी सूरत भोली है तथा उम्र भी कम है।

हे श्याम सुन्दर! राधा तो गोरी और आप काले हैं? तुम्हारी और मेरी जोड़ी मिल जाती है। मैं तुम्हारे रूप से ईर्ष्या करती हूँ। हे कन्हैया! जरा देर रूक जा! मेरे पैरों में ऐसी पायल पहिना दे कि गाँव की गोरियाँ चलती रुक जायें। मैं उसे पहिनकर ऐसी चाल चलूँगी कि सब स्त्री-पुरुष देखते रह जायेंगे। हे कृष्ण! जरा देर रुक जा। एक गीत देखिये - इसमें ईश्वर के नाम की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है-

उमरिया सारी बीत गई, माला नी फेरी।
सांज पड़ी दन आंथण लाग्यो, बिछाय खटिया सोय गई जी।
माला नी फेरी।
भोर हुवो चिड़ियां चहचाई, उठतांई धंधे लागी।
माला नी फेरी।
लई लोट्यो मंदर में चाली, घर की तो सुद आवी गई,
माला नंई फेरी।
न्हाई धोई सिगासण बेठी, पडोसण म्हारी आवी गई,
माला नंई फेरी।
उम्मर आखी बीती गई, माला नी फेरी।
भरी दफोर्‌यां किरतन जाती, थारी म्हारी वां करी आई,
माला नी फेरी।
जब जमराज लेवा आया, हूं खड़ी-खड़ी सोचतीज रई,
माला नी फेरी।

इस सुन्दर गीत में अपने मन को इधर-उधर की कुवासना में लिप्त रखने का सुन्दर चित्रण मिलता है। एक नारी दूसरी को सम्बोधित करती कह रही है कि सारी उम्र व्यतीत हो गई, पर ईश्वर के नाम की माला नहीं फेरी। ईश स्मरण नहीं किया। संध्या होते ही मैं खटिया बिछाकर सो जाती, किन्तु माला नहीं फेरी। प्रातः होने पर चिड़िया ने चहचहाना आरम्भ किया। उठते ही मैं व्यस्त हो गई, किन्तु ईश्वर नाम की माला नहीं फेर पाई। लोटा लेकर जैसे ही मन्दिर में जाने को उद्यत हुई, उसी समय घर के किसी कार्य की सुधि लौट आई, किन्तु माला नहीं फेरी। स्नान करके मैं अपने आसन पर बैठी ही थी कि पड़ोसिन वहाँ आकर बतियाने लगी, किन्तु माला फेरना भूल गई। सारी उम्र बीत गई, किन्तु ईश्वर का नाम नहीं लिया। दोपहर के समय मैं कीर्तन

करने जाती, वहाँ भी इधर-उधर की बातें करके लौट आती। ज्ञान तो लेती ही नहीं। मैंने माला तो वहाँ भी नहीं फेरी। सारे जीवन भर मैंने हरि स्मरण नहीं किया और अन्त में जब यमराज का बुलावा आया, तब खड़ी-खड़ी इस बात की चिन्ता करने लगी कि मैंने जीवन भर राम का नाम नहीं जपा। अब इतने कम समय में क्या कर लूँगी? क्योंकि मैंने जीवन भर नाम स्मरण की माला तो फेरी ही नहीं।

यह जीवन बहुमूल्य है। इस नर देह को पाकर ईशास्तन नहीं किया तो एक दिन इसे फिर जाना है। और फिर हमारे पास पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता। एक गीत देखिये-

राम जी को नाम जप्यो नंई, मन म्हारा माया में बिलम रयो रे।
एक जो रोटी रामजी गउवाने देती, वा भी पतली-पतली पोती रे।
मन म्हारा माया में बिलम रयो रे, बाबा जो जोगी मांगण आया,
कदीयक पूरी मुट्ठी मेली रे, पाड़ पड़ोसण छा लेवा आई,
कदीयनुं मेली लोटयो छाच रे, मन माया में बिलरयो रे।
देराणी जिठाणी बातां हो लागो, कदीयनु की मन की बातां रे।
मन माया में बिलम रयो रे, म्हारा पीयर से लेवाने आया,
घर भरियो केसे छोडूं रे, मन माया में बिलम रयो रे।
जमका दूत लेवण कूं आया, भरियो घर छोड़ी चाली रे।
मन माया में बिलमर्‌यो रे, आगे जो जातां रामजी कांटा लगत हे,
आगे जो जातां रामजी ठंड लगत हे, कोई यें पिराया होवे तो पेरो रे।
मन माया में बिलम रयो रे, आगे जो जातां राम जी भूख लगत हे।
आगे जो जातां राम जी प्यास लगत हे, कोई ये खिलाया होय तो खालो रे।
एक जो दन की रामजी छुट्टी हो दे दो, सगलो ही धरम करी आऊं रे।
मन माया में बिलम रयो रे, यांका आया बाई फेर नंई जावे,
यांका आया बाई पाछा नी जावे, जसी करनी वसीज पावो रे।
मन माया में रामजी बिलम रयो रे।

(स्रोत-सुश्री रुक्मिणी पंचोली, खेरिया)

एक महिला अपने मन को कोसती हुई कहती है कि यह संसार चक्र एक माया जाल सा है। इसमें रहकर इससे लिप्त नहीं होना चाहिये। मानव जीवन पाकर भी हमने राम नाम का जप नहीं किया और मेरा मन हमेशा माया मोह में अटका रहा। मैं गाय को बड़ी मुश्किल से एक रोटी खाने को देती और वह भी बहुत पतली देती। मेरा मन माया से भ्रमित हो रहा था, जो भी बाबा या योगी माँगने आते, उन्हें कभी मुट्ठी भर अनाज नहीं दिया। पास पड़ोसिन जब भी मेरे घर छाछ माँगने आती, मैंने कभी उन्हें एक लोटा भरकर छाछ नहीं रखी। क्योंकि मेरा मन हमेशा माया मोह से ग्रसित रहा। देवरानी-जिठानी जब भी बातें करतीं, मैंने कभी भी उनसे मन की बात नहीं

कही। मेरे पीहर से जब भी कोई आता तो यह कहकर उन्हें टाल देती कि मैं मेरा भरा-पूरा घर किसके जिम्मे करके चलूँ? क्योंकि मैं तो माया मोह में ग्रस्त थी। जब यमदूत मेरे जीव को लेने के लिये आये, तब यह माया मोह से ग्रसित घरबार का ठाट यहाँ का यहीं पड़ा रह गया और विवश हो मुझे चलना पड़ा।

आगे चलते जब कभी मुझे काँटा और ठंड लगती। जब हमने किसी को जूते पहिनाये होते तो हमें भी उस वक्त पहिनने को मिलते। हे राम! यमदूत के साथ आगे चलते मुझे भूख प्यास लगी, पर हमने अपने पिछले जन्म में ऐसा कोई सत्कर्म किया होता तो हमें वह इस समय फलदायी होता। कई बार तो मेरे मन में ऐसा आया कि मैं भगवान से प्रार्थना करूँ कि मुझे एक दिन के लिये इस यमलोक से वापस लौटा दें, ताकि मृत्युलोक में जाकर समस्त प्रकार के सत्कर्म करके वापस लौट आऊँ। क्योंकि मैं तो जीवन भर माया मोह में फँसी रही और कुछ कर न पाई। तब प्रेरणादेश हुआ कि- हे बाई! यमलोक में आकर कोई वापस लौट नहीं सकता। यहाँ तो जो जैसी करनी करके आया है, उसे वैसा ही फल मिल जायेगा। अत: हे मन! माया मोह से ग्रसित न हो।

फागुन मास के गीत

फाल्गुन मास राग रंग के लिये आता है। होली की गेर, रंग पंचमी का रंग-गुलाल, जमराबीज में स्त्रियों द्वारा पुरुषों की पिटाई एवं शीतला सप्तमी के व्रत जैसी बहुरंगी आकृतियाँ उकेरता फागुन मास आता है। इस मास के राग रंग में बालक-बालिकाएँ ही नहीं, युवा, प्रौढ़ा एवं वृद्ध तक सम्मिलित होते हैं। वसंतागमन हो ही चुका है।

मालवी के ॠतु गीतों में प्रमुख होली, सावन और बारहमासी के गीत लिये जा सकते हैं। पूर्व में भिन्न-भिन्न त्योहारों, अनुष्ठानों और परम्पराओं से सम्बधित गीत जो माहवारी में आये, उनका विषयानुसार अुनवाद एवं विश्लेषण किया जा चुका है। मालवा में होली के गीतों का बाहुल्य है। होली स्त्रियों एवं पुरुषों द्वारा पृथक-पृथक गाई जाती है। इनके स्वर फाल्गुन आरम्भ होते ही छिड़ जाते हैं। वासंती वायु मन में एक अनोखा उल्लास उत्पन्न कर देती है। हास-परिहास के साथ शृँगार रस का चोली दामन का साथ है। मालवा में होली बड़े उल्लास के साथ मनाई जाती है। इसमें लालित्य, रसज्ञता और उल्लास के भाव व्यक्त हुए हैं। पुरुषों के गीत कहीं मर्यादा भंग करने वाले होते हैं। वहीं स्त्रियों के गीतों में शृँगार का स्पर्श मिलता है। तथापि वर्ग विशेष की स्त्रियों के गीतों में कहीं अश्लीलता भी मुखरित हो जाती है, यथा-

ऐं राम लालजी वारी, दारी नाचण रांड,
थरो जीरो बखरी गयो, होरी लेवो।

मालवी में होरी के गीतों की विषयवस्तु में राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती प्रणय सम्बन्धी, चन्द्रसखी की होली तथा अन्य गीत उपलब्ध होते हैं। राधा कृष्ण की प्रणय लीलाएँ, ग्रन्थों में

लोकवार्त्ता का प्रमुख अंग रही हैं। लोक गायक अपने मनोभावों को, इनकी लीलाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान कर, सहज तृप्ति का अनुभव करते हैं। होली, उल्लास एवं आनन्द का पर्व है। गुलाल उड़ाकर या रंग छिटककर उल्लास को प्रकट किया जाता है। प्रिया अपने प्रिय को कृष्ण रूप में देखती हुई ननद के मना कर देने पर भी होली खेलने को उतावली होती है। कृष्ण पिचकारी भरकर छोड़ते हैं, जिससे नायिका की चुनरी-चोली और सम्पूर्ण अंग भीग जाते हैं। कई मन केशर घोली गई है। उससे रेल-पेल मच जाती है। अंग कीचड़ में सन जाते हैं। एक तरफ से राधा तो दूसरी ओर से कृष्ण हाथों में पिचकारी लिये निकलते हैं और भेंट होती है। दोनों रंग में सरोबर हो जाते हैं।

शिव-पार्वती का उल्लेख श्रद्धा सहित किया जाता है। मादक वस्तुओं का सेवन करने के कारण शिव की महत्ता इन गीतों में व्यक्त हुई है। पाँच प्रकार के रंग बनाकर, शिवजी-पार्वती के साथ कैलाश पर होली खेलते हैं। प्रणय गीतों की भी कोई कमी नहीं है। ऐसे गीतों के माध्यम से नायिका का सौन्दर्य निखारा जाता है। इनमें होली, सायब-गोरी, रसिया, चूंदड़ी एवं शृँगारिक गीतों का समावेश मिलता है। मालवी स्त्रियों में होली के कुछ गीत, चन्द्रसखी की छाप वाले भी गाये जाते हैं। इनमें गूजरी के उल्लेख से शृँगारिक चेष्टाओं का वर्णन उपलब्ध है। अन्य गीतों में हास-परिहास, चुटकियाँ शृँगारिक दोहे व गैर के गीत सम्मिलित हैं। पुरुषों के गीतों में नायिकाओं के मोहक चित्रों के साथ, छेड़ भरी उक्तियाँ बिखरी पड़ी हैं। इसमें उद्दाम उल्लास और गाली है, यथा-

ऐ परण्यां की तो आंख्यां दूखे, जाने म्हारो जुत्तो रे।
छेल भंवर की आंख्यां दूखे, सुत्यो सारू रे।
काजळियो सारी ने छोरी, पाणी भरवा चाली रे।
आगे मिली गया छेल भंवरजी, दांतन भोले रे।
के मूँ तो लाजां मरी गई रे।

स्त्रियों के गीतों में यौन संकेत दबे हुए मिलते हैं। स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले गीत पुरुषों की अपेक्षा अधिक भाव प्रवण एवं उपयोगी बन पड़े हैं। उनका मूल स्वर ननद को बरजना, केसर का रंग घोलना, कंचन की पिचकारी, गुलसारी का भींगना, नर्मदा का रंग से भरपूर होना और कृष्ण कन्हैया के होली खेलने से सम्बन्धित है, यथा-

बरस दिना का बारा मइन्या, तो बड़ो तेवार रंग होली।
चांदणी की चादर बेल चमेली, अपणाज हाथां उड़ाई।

होली के गीतों की बानगी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

आली री जा दिन सांवरिया देखूँ,
नजरभर वा दिन रंग बनाऊंगी।

आलीरी मूं तो वा दिन रंग बनाऊंगी।
कायन को प्रभु रंग बनायो?
तो कायन की पिचकारीऽऽ?
माराजा परभु कायन की पिचकारी?
केसर को तो रंग बनायो,
तो कंचन की पिचकारी।
सखी री जा दिन सांवरिया के,
देखूं नजर भर, वा दिन रंग बनाऊंगी।
भर पिचकारीऽऽ, बदन पे डारीऽऽ,
तो भीग गई राधा रंग साड़ीऽऽ,
चंद्रसखी ब्रज बाल की सोभा,
तो हरिचरणन मेरो ध्यान।

चन्द्रसखी कहती हैं– हे सखी! जिस दिन अपने नेत्रों से साँवरिया श्रीकृष्ण को देख लूँगी, उसी दिन फाग का रंग खेलूँगी। हे सखी! मैं तो उसी दिन राग रंग मनाऊँगी। प्रभु ने किस वस्तु का रंग बनाया है? और किस वस्तु की उनके पास पिचकारी है? कृष्णजी ने केसर का रंग बनाया है तथा कंचन की पिचकारी बनी है। उन्होंने पिचकारी भरकर मेरे शरीर को रंगों से सराबोर किया तो मेरी साड़ी रंग में भीग गई है। चन्द्रसखी कहती हैं– कृष्ण तो ब्रज के बालकों की शोभा हैं। मेरा तो ध्यान सर्वदा उन्हीं के चरणों में लगा रहता है।

आली वो सांवला का कुंडल, मुख से अड़्यो तो, बेसर उलझ गई थी।
बेसर उलझी ने मोती बिखर्‌या, तो सांवलो सोरे री।
माराजा परभु........ ।
केसर लाल गुलाल उड़त हें, तो छेमण केसर घोली।
माराजा परभु........ ।
केमण केसर घोली, नोमण लाल गुलाल उड़त हे, तो दस मण केसर घोली।
माराज परभु दस मण केसर घोली,
आली वो तो बेसर मुखसे अड़्याती, तो बेसर उलझ गई जी।
भर पिचकारी बदन पर डारी तो, भीग गई राधा प्यारी।
माराज परभु........ ।
हरी वो सांवला का कुंडल मुख से अड़्या, तो बेसर उलझ गई जी।
गोरी गोरी बइया हरी पीली चुड़िया, तो अलबेली नार राधा प्यारी,
आली वो सांवला का कुंडल, चंद्रसखी ब्रजबाल की शोभा
तो हरिचरणन मेरो ध्यान।

हे सखी! जब मैं होली खेलने गई तब साँवले कृष्ण के कुंडल मेरे मुँह से टकरा गये और मेरे नाक की नथ उनसे उलझ गई। फलस्वरूप मोती टूटकर बिखर गये। तब कृष्ण ने उनको इकट्ठा किया।

होली खेलने में केसर और लाल गुलाल उपयोग में ली जा रही है। कितने मन तो केसर घोली गई? नौमण तो लाल गुलाल उड़ाई गई, जबकि दस मन केसर घोली गई। श्रीकृष्ण ने पिचकारी भर-भरकर मेरे बदन पर डाली तो राधाजी की साड़ी भीग गई। कृष्ण के कुंडल राधा के मुख से टकराये तो उनके नाक की नथ उसमें उलझ गई। राधिका के गोरे-गोरे हाथों में पीली-नीली चूड़ियाँ सुशोभित हैं। राधिका होली की फाग में अलबेली बनी हुई हैं।

इनें कोई बरजोरी माईऽऽ, बन कूं चले दोनूं भाईऽऽ,
आगे जो आगे राम चलत हें, तो पाछे लछमण भाई,
जिंके पाछे चले जानकी, सोभी बरनी नी जाई।
इनें कोई बरजो री माईऽऽ, बन कूं चले दोनूं भाईऽऽ।
राम बिना मेरी सूनी अजोध्या, लछमण बिन ठकुराई।
सीतां बिनां मेरी सूनी रसोई, कूण करे चतराई।
कायन कोतो रंग बनायो, कायन की पिचकारी?
इनें कोई बरजोरी माईऽऽ, केसर को तो रंग बनायो,
चंदन की पिचकारी।
भर पिचकारी सीताजी पे डारी, तो भींग गई चम्पा सारी।
इसे कोई बरजोरी माईऽऽ, बन कूं चले रघुराई।

इस गीत में राम-लक्ष्मण एवं सीता जी के वनगमन के साथ ही होली खेलने का चित्रण भी किया गया है। माता कहती हैं- हे माता! राम-लक्ष्मण वन को जा रहे हैं, इन्हें कोई तो जाने से रोक दो। आगे राम हैं, पीछे लक्ष्मण हैं और उसके पीछे जानकी जी चली जा रही हैं। राम के बिना मेरी अयोध्या सूनी है, लक्ष्मण के बिना अयोध्या की ठकुराई व्यर्थ है। सीता के बिना मेरा रसोई घर सूना हो गया है। अब इतनी चतुराई से भोजन कौन बनाये?

रंग किस वस्तु का बना है? पिचकारी किस वस्तु की बनी है? केशर का रंग घोला गया है। चन्दन की पिचकारी बनाई गई है। जब पिचकारी भरकर सीताजी पर डाली जाती है, तो उनकी चम्पक वर्णी साड़ी भीग जाती है। हे माता! कोई तो राम-लक्ष्मण को वन में जाने से रोको। ये तो वन में चले जा रहे हैं।

दशरथ को लाल खेले होरी, दशरथ को।
कणी के हात कनक पिचकारी?
कणी के हात गुलाल झोरी?

राम के हात कंचन पिचकारी।
लछमण हाथे अबीर झोरी।
कणी के हाते डफनी सोवे?
तो कण के हात मंजीरा?
भरत के हात गुमंड डफ बाजे हारे--
समधन हाते मंजीरा जोड़ी रे,
दशरथ को------

इस फाग में राम-लक्ष्मण द्वारा होली खेलने का चित्र उकेरा गया है। दशरथ नन्दन राम होली खेल रहे हैं। किसके हाथ में कनक की पिचकारी शोभायमान है? और किसके हाथ में गुलाल की झोली? राम के हाथ में कंचन की पिचकारी है तथा लक्ष्मण अपने हाथ में अबीर की झोली उठाये हुए हैं। किसके हाथ में डफ और मंजीरे सुशोभित हैं। भरत जी के हाथ में डम-डम की आवाज करती डफ बज रही है तो समधिन के हाथों में मंजीरे की जोड़ बज रही है।

उठि मली लो रे राम, भरत आया, उठि मली लो।
घरऊ दसा से भरत जी पधार्‌या, हारे उंका सिर पे चंवर ढुलत आया।
उठि मली लो, राम भरत दोई मलवा ने लाग्या।
हारे उसका नेनां में नीर, बरस आया उठि मली तो।
राम भरत दोई आया, हां रे वांतो---
पूरी रे अजोध्या अणंद छाया, उठि मली लो।

चित्रकूट में भरत एवं प्रजाजनों का मिलन हो रहा है। हे राम! उठिये, भरत जी आपसे मिलने के लिये आये हैं। उत्तर दिशा से भरत जी आये हैं। उनके सिर पर चँवर डुलाये जा रहे हैं। हे राम! उठकर मिल लें। राम-भरत दोनों का मिलन होने लगा है। उनके नेत्रों से अश्रुधार प्रवाहित हो रही है। राम-भरत दोनों के मिलाप के साथ सम्पूर्ण अयोध्या वासियों में आनन्द की लहर दौड़ गई है।

अवध मांय होली खेले रघुवीर, अरे भींजे सखी को चीर।
रामजी के हाथे ढोलक भल सोहे, लछमण हाथे मंजीरा,
अरे हां हां लछमण हाथें मंजीरा, भरत सतरुघन भरे पिचकारी।
सीता रंग अबीरा, अवध मां होली खेले रघुबीरा।

रामचन्द्रजी अयोध्या में होली खेल रहे हैं। वे सखियों के वस्त्रों को रंग में सराबोर कर रहे हैं। रामचन्द्रजी के हाथों में ढोलक शोभायमान है। लक्ष्मणजी मंजीरे बजा रहे हैं। भरत और शत्रुघ्न पिचकारी भरकर छोड़ रहे हैं। और सीताजी अबीर उड़ा रही हैं। ऐसी होली अवध में खेली जा रही है।

गोविन्दा डाले गयो रीऽ, म्हारा नेनां के बीच अबीरऽऽ।
कायन को तो रंग बनायोऽ, कायन की पिचकारीऽऽ।
माराजा प्रभु कायन की पिचकारी?
कनइयो डाल गयो री म्हारा, नेंना के बीच अबीरऽऽ।
केसर को प्रभु रंग बन यो, तो कंचन की पिचकारी।
माराजा प्रभु कंचन की पिचकारी, कनइयो डाल गयो री।
म्हारा नेनां के बीच अबीर, भर पिचकारी बदन पे डारी।
तो भींज गई राधा प्यारी, गोविन्दा डाल गयो री-----

हे सखी! फाग खेल में कृष्ण मेरे नेत्रों में अबीर डाल गये। रंग किस वस्तु का बनाया गया? और पिचकारी किस वस्तु की बनी है? केशर का रंग घोला गया और कंचन की पिचकारी बनाई गई है। कृष्ण रंग में पिचकारी डुबो-डुबोकर राधाजी पर डाल रहे हैं। इससे राधाजी की साड़ी भीग जाती है। हे सखी! कन्हैया मेरे नेत्रों में अबीर उँड़ेल गया है।

ननंद बाई बरजो मती, बंसीवारा से खेलूवां फाग।
नोमन कान्हा ने रंग बणायो, तो दस मण केसर घोलीऽऽ।
भर पिचकारी मेल पे डारी, तो भीज गई मेल - अटारी।
दूजी पिचकारी चूनर पे डारी, तो भीज गई चूनर सारी।
गेरी लगी पिचकारी, तीजी पिचकारी मुख पे डारी।
तो चोली की रम फारी, चोथी पिचकारी घूंघट पे मारी
तो घूंघट की रम तोड़ी, ननंद बाई बरजो मती।
बंसीवारा से खेलूवां फाग।

हे ननद बाई! आप मना मत कीजिये। आज मैं तो बंसी वाले श्रीकृष्ण कन्हाई से फाग खेलूँगी। कृष्ण ने फाग खेलने के लिये नौ मन केशर घोली है। पिचकारी भर-भर जब वे महल पर डालते हैं, तो महल और अटारी सब रंग में सराबोर हो जाते हैं। दूसरी पिचकारी जब वे चूनड़ी पर डालते हैं तो सारी चूनड़ी भीग जाती है। तीसरी पिचकारी जब मुख पर डालते हैं तो चोली के बंद टूट जाते हैं। चौथी पिचकारी जब घूँघट पर डालते हैं तो घूँघट का पल्लू फट जाता है। हे ननद बाई! आप आज मुझे फाग खेलने से मना न करें। मैं तो आज बंसीवाले से फाग अवश्य खेलूँगी।

सिव सिव सदा सिव बाग लगावे, पारबती सिव होली खेले।
जटा-मुगट पे गंगा बेवे, पांच भांत को रंग बनायो।
कंचन की पिचकारी, गढ परबत पे खड़्या मादेव।
भर पिचकारी पारबती पे डाली, हाल से बेहाल कर डाली।
अस्सी कली को घाघरों भींज्यो, भींज गई जी गुल साड़ी।

हात जोड़ी के खड़ी पारबती, छमा करो सिव तिरपुरारी।
डिम् डिम् डिम् डिम् डमरूवाजे, भूत पलीत सबी आया जुड़के,
पारबती सिव फाग खेलतां, जटा मुगट गंगा बेवे।

भगवान शंकर बाग लगाते हैं और पार्वती के संग उसमें होली खेलते हैं। उनके जटारूपी मुकुट पर गंगा प्रवहमान है। पाँच प्रकार का रंग बनाया गया है तथा कंचन की पिचकारी है। हिमालय पर्वत पर महादेव खड़े हैं। रंगों की बौछार से पार्वती बेहाल हुई जा रही हैं। उनका अस्सी कली का घाघरा और गुलबांसी रंग की साड़ी सब भीग गये हैं। तब हाथ जोड़कर पार्वती प्रार्थना करती हैं कि- हे शिव त्रिपुरारी! क्षमा करो। जब महादेव का डमरू डम्-डम् की आवाज करता है, तब भूत-प्रेत सब इकट्ठे हो जाते हैं। पार्वती-शिव फाग खेल रहे हैं तथा शिव की जटा से गंगा प्रवाहित हो रही हैं।

नेनां में तो बादळियो बरसे रे, ए परण्यां की तो आंखां दुखे।
जाणे म्हारो जुत्तो रे, छेल भंवर की आंखां दुखे,
सुरमो सारूं रे, पतला पतला फुलका पोया,
तोर्‌या की तरकारी, जीमता हो तो जीमो मादेव,
हाजर खड़ी हे घरवारी।

एक नायिका की आँखों से बादल रूप में अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। उसके पति की आँखों में फिर भी वह खटक रही है। तब पत्नी उसकी परवाह न कर कहती है कि आँखें दुखें तो मेरी जुती जाने। मुझे कोई परवाह नहीं है। यदि प्रियतम की आँखें दुखेंगी तो मैं सुरमा लगा दूँगी। मैंने उनके भोजन के लिये पतले-पतले फुलके पोये और तरोई की सब्जी बनाई है। हे महादेव! यदि आप भोजन करते हों तो करिये, आपकी पत्नी आपकी सेवा में कांसा (भोजन थाल) लेकर खड़ी हैं। इसमें पति-पत्नी के हास-परिहास एवं ईर्ष्या-द्वेष का सुरुचिपूर्ण व्यंग्य मिलता है।

सांवरे को चरित सुणो री, एक समे ब्रज की सब सखियां।
करत फिरत होरी होरी, न्हावण हेत धंसी जमना में।
कोई सांवरी ने कोई गोरी, करत फिरत जल में झक झोरी।
वणी टेम सांवरा वहीं पे, आय वहीं पहुंचो री।
लेके चोर कदम पे चढ़ग्या, नंद किसोर मन मुदित भया री।
दे दोनी चीर मुरारी, अजी कान्हा हम जल मांय उघाड़ी।
हां रे कान्हा लेकर चीर कदम पे चढ़ीगे, हम जल मांय उघाड़ी।
हांरे कान्हा तम तो बालनंद-नंदन के, हम बृषभान दुलारी।
हां रे कान्हा गोकुल ढूंढी, वृन्दावन ढूंढी।
हांरे ढूंढ फिरत जग सारी, हूँ जल मांय उधारी।

इस गीत में श्रीकृष्ण चरित्र का बखान किया गया है। एक समय ब्रज की सब सखियों के साथ वृषभान पुत्री राधा भी होली-होली करती फिर रही हैं। होली के बाद वे सब जमुना में स्नान करने हेतु उतरीं। वे जल क्रीड़ा करती रहीं। उसी समय कृष्ण वहाँ आ गये। उनके वस्त्र चुराकर कदम्ब पर चढ़ गये। स्नान के पश्चात् जब वे बाहर निकलीं तो देखा उनके वस्त्र नहीं हैं। उन्होंने कृष्ण को पुकार कर कहा- हमारे वस्त्र दे दीजिये। हम जल में नग्न खड़ी हैं। अरे! कृष्ण तुम तो नन्द जी के बालक हो और हम वृषभानु की पुत्री हैं। हे कृष्ण! तुम्हें हमने गोकुल में ढूँढा, वृन्दावन में ढूँढा और ढूँढते-ढूँढते सारे संसार में भ्रमण कर आईं, किन्तु आप नहीं मिले। और मिले तो ऐसे समय जबकि हम क्रीड़ा में मगन थी, हे कृष्ण! हमें हमारे वस्त्र दे दो। हम जल में नग्न खड़ी हैं।

होरी खेलत हे नंदलाल, कृष्ण जी महाराज।
मुख पे सोवत मुरलियां बाजे, होरी रे होरी खेलत हे नंदलाल।
होरी हो गाँव गोकुल में, जंगल के जानवर फिरते,
अपने रंग में, खेलत हे नंदलाल
भगदड़ से गोकुल में धूम मची।
मधुर मुरलिया बाजे।

नन्दलाल श्रीकृष्ण होली खेल रहे हैं। उनके मुख पर मुरली शोभायमान है। वे मुरली वादन कर रहे हैं। कृष्ण होली खेल रहे हैं। होली गोकुल में हो रही है। जंगली पशु भी उनके साथ रंग में रंगे हैं। पशु-पक्षी भी होली का आनन्द ले रहे हैं। ऐसे मद-मस्त कर देने वाले होली के वातावरण में गोकुल की गली-गली, होली के रंग में भीगी हुई है। कृष्ण अपने अधरों पर बाँसुरी रख उसकी मोहक धुन से चराचर को विमोहित किये हुए हैं।

माथा पें म्हारे भँमर सोवे, तो रखड़ी की छब न्यारी।
गोरी का बदन पे किने डारी पिचकारी?
जिनें डारी जिने म्हारे बताड़ो, नीतर के दउवां थोंय गारी।
सासूरा जाया बाईजी रा बीरा, राजन डारी पिचकारी।

मेरे सिर पर भँवर और रखड़ी सुशोभित है। गोरी के बदन पर रंग की पिचकारी कौन डाल रहा है? जिसने भी डाली हो उसे मुझे बतला दो। नहीं तो मैं तुमको गाली देऊँगी। हे गोरी! तुम्हारी सासुजी से पैदा हुए (पति) बाई जी के बीर (पति) ने तुम्हारे शरीर पर रंग की पिचकारी डाली है।

गोरी तेरा भाग बड़ा, शिव शंकर खेले होरी।
बरस दिनां के बारा मइन्या, मस्त मइन्यो होरी को।
देखो री मस्त मईनो होरी को, असन बरन को रंग बनायो।

कंचन की पिचकारी, भर पिचकारी।
भर पिचकारी बदन पे डारी, तो भीज गई जी गोरी प्यारी।

हे पार्वती! तुम भाग्यवान हो कि महादेव सदृश इन्द्रीय निग्रही भी होली खेलने आये हैं। वर्ष भर में बारह महीने होते हैं। परन्तु यह माह तो होली का ही होता है। आज लाल रंग घोला गया है और कंचन की पिचकारी भर-भरकर महादेव, पार्वती के मुख पर छिड़क रहे हैं, जिससे वे गीली हो गई हैं।

वसन्त और होलिकोत्सव का भारतीय जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनोरंजन की इसमें सामग्री प्राप्त होती है। वैवाहिक जीवन का माधुर्य इसमें उभकर आता है। शिव-पार्वती के जीवन द्वारा मानवों के माधुर्यमय जीवन की झलक इस गीत में पाई जाती है।

हारे काना ठाड़ो रे मुगट पर, खेलां होरी खाना ठाड़ो रे।
खेलांगा होरी रे खेलांगा होरी, खाना ठाड़ो रे।
कितरा बरस को रे कुंवर कनइयो, कितरा बरस की रे राधा प्यारी?
खाना ठाड़ो रे, बारा रे बरस को कुंवर कनइयो।
तेरा रे बरस की राधा प्यारी, खाना ठाड़ो रे।
हाथां में लाल गुलाल अबीर को, भर भर मुठियां रंग डालूं।
रंग डारूं रे थार पे रंग डारूं, काना ठाड़ो रे।

कृष्ण फाग खेलने को उद्यत हैं। मुकुट धारण किये हैं। हम उनके साथ होली खेलेंगे। कुँवर कन्हैया कितने वर्ष के हैं? और उनकी प्रिय राधा कितने वर्ष की हैं? बारह वर्ष के कृष्ण हैं, जबकि तेरह वर्ष की राधिका जी हैं। वे हाथों में गुलाल-अबीर का थाल लेकर मुट्ठियाँ भर-भरकर रंग डालती हैं। हे कृष्ण! होली खेलने के लिये तैयार हो जाओ।

सूरज सामूं पनियांनी जऊं, म्हारी चुनड़ी को रंग उड़्यो जायऽऽ।
सीस सांवरिया के मुगट सोवे, कान सांवरिया के कुंडल सोवे।
अंग सांवरिया के धागो सोवे, तो मोती में जड़यारी जड़ावऽऽ।
माराजा परभु कसना में जड़यारी जड़ावऽऽ, सूरज सामूं पनियां नी जऊं।
म्हारी चुनड़ी को रंग---
हाथे सांवरिया के पोंची सोवे, पांव सांवरिया के पैंजनी सोवे।
तो चरखी में जड़या री जड़ाव, घुघरा में जड़यारी री जड़ाव।
परसोत्तम पिरभु की छबि निरखे, तो जुग जुग जीवो हजार।
ननद बाई बरजो मती, बंसी वाला से खेलोगा फाग।
बाईजी म्हारा बरजो मती, बंसीवाला-----
केमण लाल गुलाल उड़त हे, केमण केसर घोली?

म्हाराजा परभु केमण केसर घोली?
नोमण लाल गुलाल उड़त हे, दसमण केसर घोली।
भर पिचकारी बदन पे डारी, तो भींज गई राधा प्यारी
माराजा पिरभु भींज गई, गुल क्यारी, बाईजी म्हारा।
बरजो मती बंसीवारा से खेलांगा फाग।

गोपियाँ कहती हैं कि सम्मुख सूर्य की तपन से मैं पानी भरने नहीं जाऊँगी, क्योंकि धूप से मेरी चुनड़ी का रंग उड़ सकता है। कृष्णजी के सिर पर मुकुट शोभायमान है। कानों में कुंडल और शरीर पर बागा सुशोभित है। कानों में मोती जड़े कुंडल हैं। हे प्रभो! उनकी कसनी में भी हीरे-मोती का जड़ाव जड़ा है।

साँवरिया के हाथों में पोंची नामक आभूषण सुशोभित है, घुँघरू में भी जड़ाव जड़ा है। ऐसे पुरुषोत्तम की छवि देखकर हजारों वर्ष की उम्र बढ़ सकती है। हे ननद बाई! मुझे मना मत करो। मैं तो बंसीवाले श्रीकृष्ण से फाग खेलूँगी। कितने मन गुलाल उड़ रहा है? और कितने मन केसर घोली गई है? नौ मण तो गुलाल उड़ रही है तथा दस मण केशर घोली गई है। जब वे पिचकारी भर-भरकर बदन पर डालते हैं, तो राधा प्यारी का बदन भीग जाता है। उनकी गुलबांसी साड़ी भीग जाती है। हे ननद बाई! आप आज मुझे बंसीवाले से फाग खेलने से मना न करें।

शिव मठ पे उड़रई लाल धजा,
शिव मठ पे......
के मन लाल गुलाल उड़त हे, के मन केसर घोली?
शिव मठ पे......
नोमण लाल गुलाल उड़त हे, हारे वातो दसमण केसर घोली।
शिव मठ पे......
भर पिचकारी गवरजा ने डारी, हां रे वातो भींज गई गुल साड़ी।
शिव मठ पे......

शिव के मठ (मन्दिर) में होली उत्सव मनाया जा रहा है। उस पर लाल ध्वजा उड़ रही है। कितने मन गुलाल उड़ाई जा रही है और कितने मन केसर घोली गई है? नौ मण लाल गुलाल उड़ रही है और दस मण केशर घोली गई है। शिवजी पर गौरी पिचकारी भर-भर रंग उड़ा रही हैं। इससे उनकी गुलबांसी रंग की साड़ी भीग गई है।

रंगरेज वालो असल गंवार, रे म्हारी रंग से भिंजई दी।
छेला चूनड़ी, ई तो चारी पल्ले हो चारी आरती,
अने बीच बीच दादर मोर, रे म्हारी रंग से भिंजई दी-

बेगी चालूं तो झोला खावे आरती, अने धीरां चालूं तो होवे भोर,
रे म्हारी रंग से------
तू तो चूनर पेर करे क्यो लटको, म्हारो हिवड़ो तो खावे हिलोर,
रे म्हारी रंग से भिंजई दी, छेला चूनड़ी।

हे रंगरेज! तू तो असली गँवार ही दिखता है। हे छैला! तूने मेरी सारी चुनड़ी रंग में भिगो दी। इसके चारों पल्लुओं पर चार आरती बनी थी। और इसके बीच-बीच में दादुर (मेंढक) और मोर बने हुए थे। अरे! तने मेरी सारी चुनड़ी भिगोकर बरबाद कर दी। शीघ्रता से चलती हूँ तो आरती झोला खाती है और धीरे-धीरे चलती हूँ तो प्रातःकाल हो जाता है।

तब छैला उत्तर देता कहता है- तुम तो चुनड़ी धारण करके क्यों नखरे दिखाती हो? मेरा हृदय हिलोरे ले रहा है। नायिका कहती है- रंगरेज तो असल गँवार है। हे छैला! उसने वास्तव में मेरी चुनड़ी बिगाड़ दी है।

ऐसे पाल गंगा ने पेले पार जमना, बिच में सिये दरजी को लाल।
धन बऊ के अंगिया रो चाव, मोरा देख अंगिया रो चाव।
छादरी बिछई जनी पे सिये रे दरजी, गलीचो राळी ने सीयो म्हारा बीर।
सार की सुई जणी सियजे रे दरजी, सुन्ना की सुई से सियो म्हारा बीर।
सूत का धागा तनी सियजे रे दरजी, रेसम का धागा से सियजो म्हारा बीर।
अड़पन-खड़पन घुँघरू दे दरजी, टुकियन पर दुई दादर मोर।
अईयन वईयन सखी रे सहेली, कसन्या पर दोई जालम सोक।
उठूं तो बाजे घुँघरू रे दरजी, बेठूं तो नाचे दोय दादर मोर।
हंसन बोलन को सखी रे सहेली, तड़वा ने दोय जातख सोक।

एक नायिका को अंगिया पहिनने का बहुत चाव है। इधर गंगा तो उधर जमुना है। बीच में दरजी सी रहा है। धन बऊ को अंगिया पहिनने का बड़ा चाव है। अंगिया पीठ पर कसी हुई देखने का चाव है। हे दरजी! तू सादड़ी (चटाई) बिछाकर उस पर अंगिया मत सीना। सार की सुई इसे सीने के काम मत लेना। स्वर्ण की सुई से सीना। सूत के धागे से मत सीना। इसे रेशम के धागे से सीना। बाँह के नीचे लगने वाले टुकड़े (टुक्की) में घुँघरू, दोनों बाहों मैं टुकड़ी के स्थान पर मेंढक और मयूर बनाना। चोली के बंद पर दो-दो गाँठें लगा देना। जब में उठूँ तो घुँघरू जैसी आवाज होनी चाहिये और बैठूँ तो मेंढक और मोर के नृत्य करने का आभास होना चाहिये। हँसने-बोलने के लिये तो मेरी सखी-सहेलियाँ जो हैं।

रसिया

रसिक स्त्रियाँ अपनी टोलियाँ बनाकर हमउम्र सखियों के साथ रसिया के गीत गाती हैं। इनमें संवाद होता है। एक स्त्री को दुल्हिन बनाया जाता है। दूसरी स्त्री आकर कहती है- मुझे

गौना लेने को तुम्हारे ससुर आये हैं। दूसरी उत्तर देती कहती है कि इस बूढ़े के साथ मैं नहीं जाऊँगी। फिर जेठ को कहा जाता है, तो कहती है- इस मोटे पेट वाले के साथ नहीं जाऊँगी। फिर देवर का कहा जाता है, तो कहती है- इस लड़के के साथ कौन जाये? अन्त में पति के आने का कहा जाता है, तो जवाब देती है कि- उनके साथ जाने को तो कल से ही तैयार हूँ। गीत देखिये-

फागण में ख्याल रचाओ रसिया,
फागण में....
पेलो जो आणो थारा सुसरा लेवा आया,
बूढ़ला के साथे म्हारी जाय बलाय,
फागण में....
दूजो जो आणो थारा जेठ लेवा आया,
अणी ने थूंदला के साथे म्हारी जाय रे बलाय।
फागण में....
तीजो जो आणो थारा देवर लेवा आया,
छोरा छाबरा के साथे म्हारी जाय रे बलाय,
फागण में....
चोथो जो आणो थारा सायबा लेवा आया,
सायबजी के साथे मूं तो काल री तयार
फागण में....

दूसरा एक रसिया गीत अवलोकनीय है। इसमें रूढ़ियों के द्वारा होने वाले कौटुम्बिक क्लेश पर व्यंग्य किया गया है-

हारे लस्कर में गया म्हारा पिराण पति।
लस्कर में.....
हंसली जो पेर सासूजी आगे ऊबी।
तो देवरिया ने देख दातण करती,
लस्कर में.....
बाजूबंद पेर जिठानी आगे ऊबी तो,
गेरिया ने देख फागण गाती
लस्कर में.....

एक स्त्री अपनी सहेली से कहती है कि- मेरे पति तो लड़ाई पर गये हैं और मैं भूल से हंसली पहिन लेती हूँ, तो सास आरोप लगा देती है कि मैं देवर के सामने दातुन कर रही हूँ। देवरानी के आगे बाजूबंद पहिनती हूँ तो आरोप लगाती है कि मैं रास्ते चलतों को देख-देख

फागुन गाने लगती हूँ। इसी तरंग में वहाँ उपस्थित पुरुषों पर भी स्त्रियाँ व्यंग्य करने में कहीं चूकती नहीं हैं, यथा–

होरी को बड़ो रे तेवार, तीजां पामणी।
ठाकर थांकी तो नार, कटक कतरी?
दसदन तो रिया रे साथ, वा हे आपनो।

होली का त्योहार कितना अच्छा है। अब तीजों का त्योहार भी मेहमान बनकर आने वाला है और ठाकुर तुम्हारी स्त्री पुतली की तरह सुन्दर है। दस दिन तो वह हम फागुन गाने वालों की है, फिर तुम्हारी होगी।

होली के तीसरे दिन भी स्त्रियों का त्योहार तीज के रूप में आता है। इसे जमरा निकालना या दुर्दिन भगाना कहते हैं। इसमें रात को स्त्रियाँ इकट्ठी होकर एक विशेष गीत गाती हैं, यथा–

गाम मेंती जमरो काड़ोजी, जमरा रा काराकारा दांत।
जमरो काड़ोजी।
मोती सिंगजी नांगा पूंगा
कपड़ा लई गया हे चोर, लगदरा दई दोजी।
जमरो काड़ोजी।
दुलेसिंगजी भूका ने प्यासा।
रोटी तो लई गया चोर, टुकड़ा न्हाको जी।
के जमरो काड़ोजी।

गाँव से दुर्दिन भगा दो। दुर्दिन के काले–काले दाँत होते हैं। मोतीसिंह जी वस्त्रहीन हैं, उसे कपड़े दे दो। दुर्दिन को भगा दो। उसके कपड़े चोर ले गये हैं। उनको चिथड़े दे दो, ताकि अपना नंगापन ढँक सके। दुलेसिंह जी भूखे प्यासे हैं। उनकी रोटी कुत्ते ले गये हैं। उनको टुकड़े दे दो। दुर्दिन को भगा दो। इस प्रकार हास–परिहास में सामाजिक विपन्नता पर और अकर्मण्यता पर व्यंग्य करते हुए बुरे दिन भगा, अच्छे दिन लाने का संकल्प जमरा बीज पर किया जाता है।

होली की यह मस्ती पूरे फागुन भर चलती है। स्त्रियाँ किन्हीं पति–पत्नी को अवसर पाकर कमरे में बंद कर देती हैं और गीत गा–गाकर पेड़े–बताशे–नमकीन बँटवा देती हैं। उस समय कई गीत गाये जाते हैं। एक गीत अवलोकनीय है–

म्हानें वईरी हे देर, पतासा दई दो जी।
सासू म्हारी हीदी हादी, ननंद दुलारी, बतासा दई दो जी।
जेठ बिचारा भोला–भाला, देवर म्हारा बोल, बतासा देई दो जी।
सुसराजी म्हारा गऊ सरीका, सायब गुस्सादार, बतासा दई दो जी।

स्त्रियाँ कहती हैं कि हमें देर हो रही है - बताशे दे दो। मेरी सास तो सीधी है, ननद चुगलखोर है। बता से दे दो। जेठ बिचारा भोला है, देवर झगड़ालू है। ससुर बैल की तरह बिल्कुल सीधे हैं, लेकिन मेरा पति बहुत गुस्सेदार है। देर हो रही है, बताशे दे दो। इस प्रकार स्त्री-पुरुषों को फागुन में खुलकर हास-परिहास का अवसर मिलता है। यह ऋतु का ही प्रभाव कहा जा सकता है। इन लोकगीतों में जीवन बोलता है। किसी भी प्रदेश की सांस्कृतिक झलक इन लोकगीतों में भलीभाँति जानी जा सकती है।

होलिका दहन पर मालवा में गाया जाने वाला गीत है। गाने वाली का दल अपने मित्रों से परिहास करके उसका नाम बताता है और कहता है- धमाल शुरू करो। आने-जाने के रास्ते पर सुन्दर और कमजोर खटिया रखी है, जिस पर तुम्हारी जैसी मोटे शरीर वाली स्त्री बैठ गई है। धमाल शुरू करो, गीत देखिये-

हारे के धमचक होवा दो।
नान्यां रे भई जी होरी आई रे।
धमचक लगवा दो।
आली गीली काचली ने, पड़ी रे हाट बेजार।
आई दुलेसिंग का घरवाली, पसर गई जी।
धमचक लगवा दो।
चांद चढ़ियो अगास में ने,
पिऊजी गया परदेस में, दारी पूराजी वारी।
सिसक पड़ी जी, धमचक लगवा दो।

होली के दूसरे दिन प्रतिपदा को एवं पंचमी पर मालवा में गैर निकाली जाती है। गेरिये इस दिन भंग व दारू पीकर ढोलक व मंजीरे की धुन पर बाजारों में गेर निकालते हैं। इस अवसर पर फागें गायी जाती हैं। एक गैर गीत देखिये-

थांकी बारी में लई जउवां, लई जउवां समंदर पार।
दारी ने लई जउंवा, छोड़ा फाड़े खातीड़ो।
तनकियां उड़ावे लुवार, लई जाऊवां समदां पर।
दारी ने लई जउंवा।

तुम्हारी पत्नी को समुद्र के पार ले जाऊँगा। यहाँ तो सुतार लकड़ी के छिलके उड़ाता है और लुहार आग की चिगनारियाँ उड़ाता है। इसलिये तुम्हारी पत्नी को समुद्र के पार अवश्य ले जाऊँगा। एक फाग में बरसाने की होली का सुरुचिपूर्ण चित्रण मिलता है।

कूण गांव का कुंवर कनाई, कूण गांव की गौरी रे।
नंद गांव का कुंवर कनाई, बरसाना की गौरी रे।

कंई हात में किसन कनइया के, कंई हात में गोरी के।
ढाल हात में किसन कनइया के, लट्ठ हात में गोरी के।
कंई करीर्‌या ग्वाल बाल सब, कंई करे सब गोरी रे?
ढाल रोपर्‌या ग्वाल बाल सब, लट्ठ चलई री गोरी रे।

बरसाने की स्त्रियाँ नन्दगाँव के पुरुषों पर होली के दिनों में लाठियाँ चलाती हैं। कुँवर कृष्ण कहाँ के हैं और गोरी कहाँ की है? कुँवर कृष्ण नन्दगाँव के हैं, जबकि गोरी बरसाने की है। कृष्ण के हाथ में ढाल है, जबकि गोरी के हाथों में लट्ठ है। ग्वाल बाल सब ढाल से बचाव कर रहे हैं, जबकि गोरी लट्ठ चला रही है।

एक पति अपनी पत्नी से होली खेलने की आशा लगाये बैठा है। और मनुहार से रूठी पत्नी को सहेलियाँ कह उठती हैं–

मान मनोबल में बेठी हो, रतन सिंग की नार,
उजली जाजम राळजो ओ गोरी
घर आया हो साजन, खेलो होरी जी।
खेलां होरी हो खेलावां होरी,
घर आया हो साजन द्वार, खेलां होरी।

रतनसिंह जी की पत्नी मान–मनुहार करके बैठी है – हे गौरवर्ण! उठो, उजली जाजम बिछाओ। आज प्रियतम घर आये हैं।

रसिया यें नार बनाओ सखियां,
रसिया यें.....
छीन लेवो री उंका सिर का मुगट के,
छीन लेवो री उंका कानां का कुंडल,
हारे उंका सिर पे साड़ी,
ओड़ावो सखियां,
हारे उंका कानां में झुमकी पेराओ सखियां,
रसिया ये नार बनाओ सखियां,
छीन लेवो री उंका हाथां की बंसरी,
हारे उंका सिर पे बिन्दी।
लगावो सखियां,
रसिया ये नार बनाओ सखियां,
छीन लेवो री उंका हाथों की पोंची,
छीन लेवो री उंका पांव की मोजड़िया,

हारे ओंकी अंगलिया में बिछिया,
पेराओ सखियां।
पेराई ओड़ाई उनें ब्रज में ले चलो,
हारे ओंको रूप जसोदाऐं,
बयावो सखियां,
रसिया यें.....
पेराई ओड़ाई ओंके बरसाने ले चांलां,
दे दे गारी नचावो सखियां रसिया यें।

सब मिलकर रसिया शिरोमणि कृष्ण को स्त्री वेश में बदल रही हैं। उनके सिर का मुकुट और कानों के कुंडल उतार लेती हैं। और इसके स्थान पर साड़ी पहिना देती हैं। कानों में झुमकी पहिना देती हैं। उनके हाथों की बंशी छीन लेती हैं, और उनके भाल पर बिन्दी लगा देती हैं। सखियाँ कृष्ण को स्त्री वेश में बदल रही हैं। वे उनके हाथों की पोंची छीन लेती हैं। पाँव में पहनी चमकती जूतियाँ छीन लेती हैं और इनके स्थान पर अँगुलियों में बिछिया पहिना देती हैं। पहिना ओढ़ाकर वे उन्हें ब्रज में ले जाती हैं। और यशोदा माता को उनका नया रसिया रूप दिखाती हैं। पहिना ओढ़ाकर बाद में श्रीकृष्ण को बरसाने ले जाती हैं और गाली देकर नृत्य करती हैं।

श्रीकृष्ण– गोपियों की यह रमणीय झाँकी किसका मन नहीं मोह लेगी?

मालवी ऋतु गीत

डॉ. पूरन सहगल

लोकगीत मानव मन के कोमलतम भावों के विश्वसनीय राजदूत होते हैं। मन में उपजे आल्हाद, विषाद, हर्ष, अवसाद, रोमांच, आशा, निराशा, मिलन, विछोह, मन की मिठास, कड़वाहट, ताना, उलाहना अर्थात् समस्त मनोभावों और विकारों को प्रकट करने का सबसे सशक्त माध्यम गीत ही होता है।

समस्त रसों और अलंकारों से विभूषित ये लोकगीत मानव के सच्चे संगी-संगाती माने जाते हैं। यद्यपि इनका जन्म लोककथा के पश्चात् का माना जाता है, तथापि इनका आत्मीय लगाव कथा से भी अधिक होता है।

भारत में समस्त अंचलों, समाजों में और संस्कृतियों में गीताचार के बिना सब फीका, अलूणा और रसहीन माना जाता है। जन्म से मरण तक के सोलह संस्कार एवं मरणोपरान्त के स्मृति गीतों को भी समय-समय पर गाया जाता है। वस्तुतः हमारे समस्त संस्कारों की चर्या इन गीतों में ही निहित है। हमारे अतीत और वर्तमान के साक्षी ये गीत भविष्य का मार्गदर्शन करते हैं। गीत के बिना हम अगीत हो जाते हैं। कथा भी जब गीतमय हो जाती है, तब गाथा बनकर लोकमय होने का गौरव प्राप्त कर लेती है। लोक साहित्य में सबसे अधिक संख्या लोकगीतों की ही है। इन्हें सहेजना, इन्हें सम्पादित करना और इनका सामाजिक सरोकार निर्धारित करना अभी भी प्रतीक्षित है।

लोक साहित्य में व्याप्त भिन्न प्रकार के मनोभावों एवं संस्कारों के गीतों में ऋतुपरक गीतों का अपना विशेष महत्त्व है। बारह माह और छः ऋतुओं में विभाजित वर्ष का आकलन और मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को लोक ने अत्यन्त मार्मिक गीतों में आबद्ध किया है। अनेक संतों एवं कवियों ने बारह महीनों के प्रभावों को आध्यात्मिक एवं शृँगारिक रूप से बखाना है। उसे साहित्य में 'बारहमासा' कहा गया है। कहीं-कहीं 'षट्मासा' और 'चौमासा' का उल्लेख भी किया गया है। इन बारहमासों का संकलन पृथक से किया गया है। यहाँ केवल बानगी के रूप में इनका उल्लेख किया जा सका है।

समग्र 'ऋतु' पर पृथक से बहुत कम गीताचार हुआ है। इसके अतिरिक्त 'मास' गीतों की रचना ही अधिक की गई है। यदि हम आषाढ़, सावन और भादवा की चर्चा पढ़ेंगे तो उसमें वर्षा ऋतु का आभास हमें सहज ही मिल जाता है। इसी प्रकार चैत्र मास और वर्ष के अन्त का मास फाल्गुन वसन्त ऋतु के प्रतिनिधि महीने होते हैं। इसी ऋतु को ऋतुराज भी कहा जाता है। ये एक वर्ष के अन्त और दूसरे आने वाले वर्ष का प्रारम्भ मास है। इसे विगत और आगत की सम्मानसूचक ऋतु भी माना जाता है। इस ऋतु में भी लोक साहित्य में फाल्गुन गीतों की रचना अधिक ही हुई है। यह महीना उमंग और उल्लास का महीना माना जाता है। प्रिय मिलन की कामना इस माह का स्थाई भाव है। फाल्गुन वसन्त ऋतु का प्रतिनिधि महीना माना जाता है। इस कारण फागुन या होली के गीतों को वसन्त ऋतुपरक गीत मानना उचित लगता है।

ऋतुओं के विषय में मालवा की शृँगार कवयित्री ने अपनी एक ऋतुपरक साखी में कहा भी है-

रित तो कुदरत को करम, रित जीवण री आस।
सुन्दर रितुआँ सावगी, साजन को घर वास॥

ऋतुएँ तो प्रकृति की कृपा हैं। इनमें जीवन की आशा निहित है, किन्तु वही ऋतु सुहानी होती है, जिस ऋतु में साजन घर में निवासरत हों। एक और साखी में भी यही कहा है।

मौसम और ऋतुओं का अन्तर सर्वज्ञात है। सुन्दर के अनुसार मौसम और ऋतुएँ तो तभी सरस और सुहानी होती हैं, जब प्रियतम घर में हों।

मौसम को कई माजनो, रितुआँ की कई आस।
सुन्दर घर होवे धणी, सो रितु सरस सुवास॥

तथा-

रित तो आणी जावणी, मास बरस को रंग।
सुन्दर सोई रित सोवणी, जिण रित साजन संग॥

इसलिए ऋतुओं से बड़ा महत्त्व उनके सकार्थ होने का है। जब प्रियतम संग नहीं होता, तब जीवन और यौवन व्यर्थ लगता है। विरह के ये भाव सावन और फाल्गुन के गीतों में कहे गये हैं। केवल विरह के ही नहीं, मिलन के गीतों की भी खूब झाँकियाँ इन लोकगीतों में उपलब्ध हैं।

वर्ष के अन्य महीनों का बखान भी अवसरानुकूल किया गया है। सावन, साजन-सजनी (पति-पत्नी) का मिलन त्योहार है। यह पर्व त्योहार का महीना है। बाग-बगीचों में झूले पड़ जाते हैं। युवतियाँ उमंग और उल्लास के साथ अपनी सखियों सहित बागों में झूले झूलती हैं। तीजों का त्योहार वे अपने पति के साथ मनाना चाहती हैं। जेठ मास की गर्मी समाप्त हो जाती है। आषाढ़ की घनघोर गर्जना भी कम पड़ जाती है। सावन की सुहाती-सुहाती फुहारें मन को उमंगित करने लगती हैं। ऐसे में पति से संयोग होने की ललक स्वाभाविक होती है। यही कारण है कि लोक साहित्य समग्र में सावन और फागुन के ही गीत अधिक पाये जाते हैं।

मालवी ही नहीं अन्य बोली-भाषा के लोक साहित्य में भी समग्र ऋतुपरक गीत पृथक से नहीं पाये जाते, सम्बन्धित माह के गीत ही पाये जाते हैं। वह माह समग्र ऋतु का ही प्रतिनिधि मास होता है।

ऐसा भी नहीं कि पृथक से ऋतुगीत लिखे ही नहीं गये। उदाहरण के लिए इस संकलन में शृँगार कवयित्री सुन्दर की ऋतुपरक नौ साखियाँ संकलित की गई हैं। इन्हें पढ़कर यह आभास भी सहज रूप से हो जाता है कि सावन और फाल्गुन मास अर्थात् वसन्त और वर्षा ऋतु को क्यों अधिक महत्त्व दिया गया है। कहने को तो शरद को सुहानी कहा गया है और हेमन्त को मनभावन, किन्तु ये ऋतुएँ पिव मिलन की आनन्दानुभूति की ऋतुएँ हैं। इनका अपना महत्त्व है। इनमें उमंग-उल्लास कम और समर्पण अधिक होता है। ये भोग और संयोग की ऋतुएँ हैं।

सुन्दर सरद सुहावणी, सहजी-सहजी सीत।
उर उमगे ऊमस मिटे, रुचे नेह की रीत॥

तथा-

रित हेमंत मन भावनी, पिव सेजां सरसाय।
सुन्दर सीरक ओढ़ने, बाथाँ भर सो जाय॥
(सीरक = रजाई, बाथाँ = बाँहों में)

ऐसी ऋतुओं में भी प्रियतम का संयोग नहीं मिले तो ये ऋतुएँ किस काम कीं? शिशिर में विरहन की व्यथा भी तो अनुमानिए।

थर-थर धूजूँ सिसिर में, पिव बिन हिव अकलाय।
सुन्दर पिव बाथाँ भरे, जद ऊषण्यो आय॥
(ऊषण्यो = ताप)

इसी प्रकार जेठ आदि महीनों का भी वर्णन लोकगीतों में हुआ अवश्य है, किन्तु बहुत ही कम। कार्तिक मास तुलसी पूजने का पुण्य मास है। इसी उल्लेख में कार्तिक के गीत प्राप्त होते हैं।

इस संग्रह में जितने गीत हैं वे सावन और फाल्गुन मास के ही अधिक हैं। इनमें सावन के नौ गीत फाल्गुन के दस गीत, चौमासा के दो गीत, विविध एक गीत तथा लोक कवयित्री 'सुन्दर' को ऋतुपरक पचास साखियाँ संग्रहीत की गई हैं। यदि और भी गीत संग्रह में जोड़े जाते तब भी उनका भावार्थ इन्हीं गीतों के जैसा ही होता। इसलिए अधिक गीतों की संख्या का मोह छोड़ना ही उचित जान पड़ा। संग्रह के सभी लोकगीत मालवी लोकसाहित्य की वाचिक लोक परम्परा से ही संकलित किये गए हैं। लोकगीतों के उपलब्ध प्रकाशित संग्रहों को आधार नहीं बनाया गया है। यही इस संग्रह की विशेषता भी है, श्रेष्ठता भी।

सावन और फाल्गुन के अलावा अन्य महीनों का उल्लेख भी यथा अवसर किया गया है। श्रृँगार कवयित्री 'सुन्दर' के लोकसाहित्य में उपलब्ध अक्षय भंडार में से पचास ऋतुपरक एवं मास परक साखियाँ संग्रहीत की गई हैं।

यह लोकगीत संग्रह मालवी लोक साहित्य का मास एवं ऋतुपरक गीताचार का प्रतिनिधि संग्रह है। इनमें श्रृँगार, लाड़-दुलार, आत्मसमर्पण, विरह, मिलन, लोकाचार, अध्यात्म, लोकआस्था, मान, मनुहार, उलाहना, ईर्ष्या-द्वेष आदि सभी भाव अन्तर्निहित हैं। प्रत्येक गीत का केन्द्रीय भाव भिन्न है। इस संकलन की इन इन्द्रधनुषी छवियों पर मालवी गर्व कर सकती है।

ऋतुपरक लोकगीतों की छवियों पर यदि पृथक से शोध किया जाए तो एक बड़ा काम हो सकेगा। लोकगीत ही क्यों, ऋतुपरक कहावतों और लोककथाओं को भी शामिल किया जा सकता है। बारहमासों पर तो काम होना ही चाहिए। शोध का यह स्वतन्त्र विषय हो सकता है। ऋतुपरक मास गीत वस्तुतः समग्र रूप से ऋतुगीत ही हैं। इन मास गीतों में ही ऋतु का आनन्दाभास हमें मिल जाता है। 'चौमासा' गीत का एक उदाहरण देखें।

चौमासो पेलाँ आवता जी सायब, नतदन रेता पास।
अबकी तीजाँ आवजो जी सायब, छोड़ो परदेसाँ को वास।

चौमासा से पहले आ जाते तब वापिस लौटने की सम्भावना ही नहीं रहती। नदी-नाले पानी से भर जाते। साजन घर रह जाते। यदि ऐसा हुआ होता तब 'बणे मिलण का जोग', लेकिन ऐसा योग नहीं बना। नायिका कहती है- 'लेकिन लगता है जिस प्रकार कोई साँप अपनी काँचरी (खोल) उतार फेंकता है। उसी प्रकार मेरे साजन ने भी अपना यौवन त्याग दिया है। मैं सेज पर बैठी जार-जार रो रही हूँ।'

'साँप ने छोड़ी काँचरी जी कोई, जमना ने छोड़ी कछार।
सैयां ने छोड़्यो मात्यो जोबनो जी, रोऊँ तो बैठी जारोजार।'

होली के समय कभी-कभी सामन्ती अनाचार भी होते रहे हैं। एक सन्दर्भ में पति अपनी पत्नी को समझाता है। नवाब और फिरंगी का छोकरा होली खेलने आएँगे। तू सावधान रहना। यह फागुन तो आनी-जानी ऋतु है, लेकिन लाज एक बार गई तो फिर नहीं लौटेगी। उनके प्रलोभन में मत आना। दूर से ही गुलाल फेंकना।

ऐसे कई प्रसंग इन ऋतुपरक लोकगीतों में हमें मिल जाते हैं। जब भी ये अपने मौन को मुखर करते हैं, एक रोमांच सा हो उठता है। लोकाचार की तो ये लोकगीताचार आचार संहिता ही हैं। कितना भी फागुन मदमस्त हो उठा हो। मर्यादा नहीं टूटती। इनकी भाषा अपना प्रभाव अनेक प्रकार से हम पर डालती है। यह संग्रह गीत संख्या में बहुत छोटा होकर भी प्रभाव में विशाल है। मालवी लोकाचार इनमें शब्द-शब्द अनुमाना जा सकता है।

इस संग्रह के लोकगीत केवल शब्दों की भाषा से ही मुखारित नहीं होते। नयनों की सुसम्पन्न भाषा से भी संवाद करते दिखते हैं।

नयन कही नयणा सुणी, नैणा विया निहाल।
'सुन्दर' नयणा कहि गया, हिवड़ा रो सब हाल।

नयन ही कहते हैं और नयन ही सुनते भी हैं। कह सुनकर नयन प्रफुल्लित हो उठते हैं। नयनों के माध्यम से ये हृदय का सारा हाल कह-सुन लेते हैं। बिहारी के अनुसार ये लोकगीत नयनन, बयनन और सैनन से अपने मन की बात कह सकने में प्रवीण हैं। वैसे भी प्रेम की भाषा तो केवल नयनों के ही पास होती है। अन्तत: 'हिचकीन' से कहना ही है।

इसीलिये मैं इन लोकगीतों को ऋतुपरक मालवी गीतों का अनुपम लोकसंग्रह कहने की हिमाकत कर पा रहा हूँ। इन्हें मालवी लोकसाहित्य के पारखी लोकाचार्यों का आशीर्वाद मिल चुका है। यह प्रयास और परम्परा निर्बाध होकर सदानीरा सलिला की भाँति प्रवहमान बनी रह सके। ऐसा हम सबका प्रयास होना चाहिए।

एजी धराऊं दिसा ती उमगी बादरी, जी कोई
बरसण लागी जी।
पिऊजी गया परदेस गोरड़ी, तरसण लागी जी।
चोमासो आयो चोमुखो जी, बरसे मूसलाधार।
ओरां का झूला, आम्बा, आमली जी कोई कंवरी को चम्पा डार।
ए जी धराऊ दिसा ती उमगी बादरी जी कोई, बरसण लागी जी।
चोमासा पेलाँ आवता जी सायब, नतदन रेता पास।
अबकी तीजा आवजो जी सायब, छोड़जो परदेसाँ को वास।
कामणी सूखे सेज पे जी सायब, चोमासो बरसे चौक।

सेजां सरसे गोरड़ी जी सायब, बणे मिलण का जोग।
चोमासो रित सोवणी जी सायब, झट आ पऊँचो अबलक पे असवार।
चार टका थारी चाकरी जी सायब, म्हारो अनमल जोबन कर्‌यो खुंबार।
एजी धराऊं तो उमगी वादरी जी कोई, बरसण लागी जी।
अबलक की टापाँ वाजगी, कामणी हसण लागी जी।
चोमासो वरसेगा धारांधार, साजन मेहलाँ आयो जी।

अरे! उत्तर दिशा से बादल चढ़ा है और बरसने लगा है। प्रियतम परदेस गए हैं। गोरी तरसने लगी है। चौमासा (चार माह की वर्षा ऋतु) चतुर्दिक घुमड़ गया है। मूसलाधार वर्षा होने लगी है। सबके झूले तो आम और इमली पर बँधे हैं और कँवरी का झूला चम्पा की डाल पर बँधा है। उत्तर दिशा से बादल चढ़ा और बरसने लगा है।

हे सायबजी (साजन)! चौमासा लगने से पहले घर आ जाते तो प्रतिदिन मेरे पास रहते। अब भी परदेस का वास छोड़कर घर आ जाओ। (अभी भी नदियाँ मार्ग नहीं रोक पाएँगी) बाहर चौक में वर्षा हो रही है और अन्दर सेज पर गोरी (विरह ताप से) सूख रही है। आप आ जाओ तो जीवन में रस भर जाय। सेज सरस हो जाय। चौमासे की सुहानी ऋतु आ गई है। हे सायब जी अबलक घोड़े पर सवार होकर फौरन आ पहुँचो।

हे साजन! आपकी चार टकों की चाकरी ने मेरा अनमोल यौवन खुवार (नष्ट) कर दिया है।

हे साजन! उत्तर दिशा में बादल उमड़ा और बरसने लगा है। अबलक घोड़े की टापें सुनाई देने लगी हैं। कामणी हर्षित हो उठी। यह चौमासा खूब धारोधार बरसेगा। साजन महलों में आ गए हैं।

अबके चौमासे मारूजी घरे रहो, बिरहा सहो नी जाय।
अबके चौमासे घरे रहो जी नणदल जी का वीर।
जाओ तो ओढूँ कारी चुनरी जी मारू।
रहो तो ओढूँ जी दखनी चीर।
सोला तो सिंणगार सजूँ म्हारा मारूजी।
गाठी तो बंधाड़ो मारूजी धीर।
जाओ तो ओढूँ कारी कामरी जी म्हारा मारूजी।
रेवो तो वछावूँ फूलां सेज।
मौजां माणागा, बरसे मेवलो जी म्हारा मारूजी।
सेजां तो सुवावे, उमग्यो जोबनो जी मारूजी।
अबके चौमासे मारूजी घरे रहो।

घरे रेवो जी नणदल बाई रा वीर।
साँप ने छोड़ी चम्पा कांचुरी जी कोई, जमना ने छोड़ी हे कछार।
सैंया ने छोड़्या मात्यो जोबनो जी, रोऊँ तो बैठी जारोजार।
अबके चौमासे मारूजी घरे रहो जी, घरे रहो जी नणदल बाई रा वीर।
गोरड़ी ने छोड़्यो अन्न-जल जी म्हारा मारू, लागी जी मेवला री धार।
जोबनो छुपाऊं कारी कामरी जी मारूं, छुपायाँ छुप्यो नी जाय।
परदेसां मति जाओ पेले पार।
म्हारा मारूजी, अबके बरस घरे रहो जी,
घरे रेवोजी नणदल बाई रा वीर।

हे मारूजी (स्वामी/पति)! इस बार के चौमासे में तो आप घर पर ही रहना। मुझसे आपका विरह सहन नहीं होता। हे स्वामी! आप जाओगे तो फिर मैं काली चूनर ओढ़ लूँगी। यदि रह जाओगे तो दखनी रेशमी साड़ी पहनूँगी। सोलह शृंगार से स्वयं को सजाऊँगी। हे स्वामी! मुझे पक्का विश्वास (धीरज) बँधवा दो। यदि आप जाएँगे तो काली कमली ओढूँगी और रहोगे तो फूलों की सेज बिछाऊँगी।

मेह बरसेगा। मौज मनाएँगे। जोबन उमंगित है, इसे सेज अच्छी लगती है। इसलिए हे मारूजी! अबके चौमासे घर पर ही रहो। हे मेरी ननद के वीर! इस बार घर पर ही रहो। साँप ने सुन्दर काँचरी उतार दी। जमना ने कछार छोड़ दिया और मेरे साजन ने मदमस्त जोबन छोड़ दिया। मैं जार-जार रो रही हूँ। अरे मारूजी! इस चौमासे घर पर ही रह जाओ। गोरी ने अन्न-जल त्याग दिया है। वर्षा की झड़ी लग रही है। मैं अपना जोबन काली कमली में छुपा लूँगी। किन्तु छुपाने से भी यह नहीं छुप सकेगा। हे मारूजी! अबके चौमासे घर पर ही रह जाओ। हे नणदल बाई का वीर! अबके चौमासे घर पर ही रह जाओ।

सावण बरसे सेवरो जी सावण तीजां आई हो राज।
नीम की निम्बोली पाकी, सावण मइनो आयो हे राज॥
सरस्यो सावण आयो हो राज, मोजीलो सावण आयो हो राज॥
कुणसा वीरा तो चाल्या चाकरी, कुण वीरो गढ़ गुजरात।
मोजीलो सावण आयो हो राज।
मोटा वीरा चाल्या चाकरी, जी म्हारो नानो वीरो गढ़ गुजरात॥
मोजीलो सावण आयो हो राज॥
छोटो वीरो लायो चूनड़ी, रे म्हारे मोटो वीरो दखणी चीर।
मोजीलो सावण आयो हो राज॥
मोटी बेना ओढ़े चूनरी जी म्हारी छोटी रे दखणी चीर॥
नीम की निम्बोरी पाकी, सावण मइनो आयो जी राज।

उठो-उठो म्हारा वाला राजा, लीलड़ी पलाड़ो हो राज॥
थांकी तो लाड़ली बेना, सासरिया में झूले हो राज।
झूले तो झूलवा दीजो, अबके सावण लावां जी हो राज।
लाड़ लड़ाओ, वेस पेरा आजो हो राज।
सावण बरसे सेवरो जी सावण तीजां आई हो राज।
तीजां रमें तो रमवा दीजो, अबके सावण लावां हो राज॥
सावण मइनो आयो हो राज, मोजीलो सावण आयो हो राज।

सावन की बौछारें आ रही हैं। तीजों का त्योहार आ गया है। नीम की निम्बोलियाँ (फल) पक गई हैं। सावन महीना आ गया है। हे राज (स्वामी/पति)! सरस और मौज बरसाने वाला सावन आ गया है।

कौन भाई तो चाकरी पर जाएगा और कौन भाई गढ़ गुजरात जाएगा। छोटा भाई तो चूनरी लाया और मेरा बड़ा भाई दखनी चीर (साड़ी) लाया है। बड़ी बहन तो चूनरी ओढ़ेगी और छोटी बहन दखनी साड़ी ओढ़ेगी। नीम की निम्बोरी पक गई है। सावन महीना आ गया है।

उठो-उठो मेरे प्रियराज! नीली घोड़ी तैयार कर लो। उस पर जीन कस लो। तुम्हारी लाड़ली बहन ससुराल में झूले झूल रही है। वह झूले तो उसे झूलने देना। उसका आनन्द खंडित मत करना। उसे अगले सावन में ले आएँगे। उसे खूब लाड़ लड़ाना। उसे वेस (वस्त्र) पहना आना। सावन की बौछारें आ रही हैं। सावनी तीज आ गई है। लाड़ली बहन अगर ससुराल में तीज-त्योहार करना चाहें। बागों में झूलना चाहे तो झूलने देना। उसे अगले सावन में ले आएँगे। सावन महीना आ गया है। मौज का महीना आ गया है।

जी सायबा, आइ सावणियाँ री तीज।
जी सायबा झूलो झूले जी घर की नार, झुलावे वींका सायबा।
आई सावणियाँ री तीज।
जी सायबा, टूटी हो रेसम डोर, गोरी की फाटी चूनड़ी जी
आई सावणियाँ की तीज।
जी सायबा, आइ हे सायबा ने रीस, गोरी ने मारयो ताजना, जी म्हारा......
जी हो सायबा, गोरी तो रीसाणी, होई बीजरी।
गोरी चाली रिसा पीऽर गाम।
आई सावणियाँ री तीज।
जी सायबा, होया घुड़ले सवार, लेवा ने चाल्या सासरे।
जी गोरी थें तो बड़ा घर की नार, घरे तो चालो आपणे।
जी आई सावणियाँ री तीज।
जी ओ गोरी चालो, नी तो दई दो जुवाब,

थां पे लावां जी दूसरी, तुरतां देओ जवाब।
जी सायबा थां घटायो जी म्हारो मान,
नी आवां जी थांके लार, जाओजी घरे एकला।
आई सावणियाँ री तीज।
जी सायबा रेटयो चलावाँ, कातां सूत, जमारो काढ़ाँ बाप रे।
जी सायबा, पीपरी पूजां, तुरसां सींच सा, जमारो काढ़ां बाप रे।
जी आई सावणिया री तीज।
जी सायबा, डांडे-डांडे बांधू लोढ़ी सोक ने,
जी सायबा ने बाँधूं परेंडे खेंच ने,
जी आई सावणियाँ री तीज।
जी सायबा, ढीली-ढीली बाँधू लोढ़ी सोक ने,
जी कसने बाँधू जी म्हारो सायबा।
डंट्या मार ने भगाणू लोढ़ी सोक ने,
सेजाँ पे सुवाणू म्हारे सायबो।
आई सावणियाँ री तीज।
फूलां सेज पे सुवाणी गोरी आपने जी,
बागाँ झुलावाँ रेसम झूलणा।
आई सावणियाँ री तीज॥

अजी साहब जी! सावन की तीज आ गई है। घर की नार झूला झूल रही है। उसका स्वामी (पति) उसे झूला झुला रहा है। झूला झूलते समय रेशम डोर टूट गई है। गोरी की चूनर फट गई है। इससे सायब को क्रोध आ गया। उसने गोरी को ताजना (चाबुक) से मार दिया। मार खाकर गोरी रूठ गई। वह बिजली जैसी चलक उठी और अपने पीहर गाँव चली गई। सावन की तीजें आ गई हैं। सायब! घोड़े पर सवार होकर गोरी को लेने ससुराल चल दिया। अरे गोरी! तुम तो बड़े घर की बहू हो। रीस छोड़ो और अपने घर चलो। अरे गोरी! चलती हो तो चलो नहीं तो साफ जवाब दे दो। नहीं चलोगी तो मैं दूसरी पत्नी ले लाऊँगा। तुरन्त जवाब दे दो।

अरे सायब! आपने मेरा अपमान किया है। मैं तो आपके साथ नहीं आ रही। आप अकेले ही घर लौट जाओ। अरे सायब! अपमानित होकर रहने से तो चरखा कात कर बाप के घर पर अपना जीवन काट लूँगी। पीपल और तुलसी पूजकर-सींचकर जीवन काट लूँगी।

अरे सायब! घर की छत के बाँसों से तो लोड़ी सोक (छोटी सौत) को बाँधकर लटका दूँगी और आपको पानी की परेंडी से कसकर बाँध दूँगी। सौत को तो ढीली बाँधूंगी (जिससे वह मौका पाकर भाग सके) और आपको कसकर बाँधूगी, जिससे आप कहीं नहीं जा सको, मेरे कब्जे में बने रहो। सौत को तो डंडे मारकर भगाऊँगी और आपको सेज पर सुलाऊँगी। आपको

फूलों की सेज पर सुलाऊँगी। बागों में रेशम डोर के झूले पर दोनों झूलेंगे। सावन की तीज आ गई है।

आयो तीजां को तेवार, आज म्हारो वीरो आवेगा।
सावण ठंडी उड़े फुवार, आज म्हारो वीरो आवेगा।
चारिचुमेर सावण घिर आयो, बागां में झूला पड़ि गया।
झूलण जास्यां सेलियाँ लार, आज म्हारो वीरो आवेगा।
म्हारे हिवड़े चाव घणो हे, म्हारो पीऽर में भाव घणो हे।
मन्ने तुरतां करो तियार, आज म्हारो वीरो आवेगा।
वीरा संग म्हारी भाभी आसी, भाभी आसी म्हारो भतीजो आसी।
आई रही गाड़ी की रणकार, बाज रही, बलद्या की घूंघर माल।
आयो जी म्हारो वीरो आयो रे।
आयो तीजां को तेवार, आज म्हारो वीरो आयो रे।
भाभी को तो वेस कराऊँ, वीरा के पाग पछेवड़ो।
भतीजा के लाऊँ झांझरां, भाभी ने देऊ बेवड़ो।
सासू तो म्हारी सुगमणी, म्हारा ससुरा जी गाम धणी।
नणदल तो म्हारी लाड़की जी पड़ोसण रामजणी।
आयो जी तीजां का तेवार सायब संग बागां झूलूंगा।
सायब तो म्हारा राजवी, लुट-लुट कर सनेह।
म्हारा वीरा की करो अगवानी, म्हारी भाभी की करो मनवार।
भतीजा ने लाड़ लड़ावो, आयो, सावण तीजां को तेवार।
आज म्हारो वीरो आयो, वीरो आयो रे वेस
सावणियों लायो रे। सावण की ठंडी पड़े फुवार
आज म्हारो वीरो आयो रे।

तीजों का त्योहार आ गया है। आज मेरा भाई (वीर) आएगा। सावन में ठंडी फुहारें उड़ रही हैं। आज मेरा भाई आने वाला है। चारों तरफ सावन बरस रहा है, बागों में झूले पड़ गए हैं। मैं अपनी सहेलियों के साथ झूला-झूलने जाऊँगी। आज मेरा भाई आएगा।

मेरे हृदय में भाई-भाभी से मिलने का बहुत चाव है। पीहर में मेरा खूब भाव है। मुझे तुरन्त तैयार करके सजा संवार दो। आज मेरा भाई आएगा। भैया के साथ मेरी भाभी भी आएगी। भाभी तो आएगी, मेरा भतीजा भी आएगा। बैलगाड़ी की रणकार आने लगी है। बैलों के गले में बँधी घूँघरमाला बज रही है। आया जी मेरा भाई आ गया।

भाभी के लिये तो मैं पूरा वेस करवाऊँगी। वीर के साफा (पग) पछेवड़ा। भतीजे के लिये पाँव की झाँझर लाऊँगी। भाभी को पानी भरने का बेवड़ा (बड़ा व छोटा घड़ा जोड़) दूँगी। मेरी सासूजी तो बहुत सुशील हैं। मेरे ससुरा जी गाँव के मुखिया हैं। मेरी ननद बहुत लाड़ली है।

लेकिन मेरी पड़ोसन बहुत खराब है। वह रामजणी (देवदासी) की प्रवृत्ति की है। तीजों का त्योहार आ गया है। मैं अपने साजन के साथ बाग में झूला झूलूँगी। मेरा साजन बहुत राजा स्वभाव का है। मुझसे खूब प्यार करता है। आओ सब मिलकर मेरे भाई की अगवानी करो। मेरी भाभी की मनुहारें करो। मेरे भतीजे के लाड़ लड़ाओ। सावन तीजों का त्योहार आ गया है। आज मेरा भाई आया है। सावनी भेष लाया है। सावन की ठंडी फुहारें पड़े रही हैं। आज मेरा भाई आया है।

सावण को महीना मेघो रम-झम रम-झम बरसे।
मन ने समझाऊँ कयाँ, यो वैरी जोबन तरसे।
तीजां की थी आस घणेरी, परण्यो लेवण आसी।
कै तो बरमचारी हो बैठ्यो, कै भणवा गयो कासी।
झूलण जाऊँ बाग में ए मायड़ संग सेत्तियाँ चार।
सबके तो मायड़, लेवण आया, म्हारो परण्यो होयो बीमार।
बीमारी की तो दवा म्हारे पासे, म्हने ले चालो परण्या के गाम।
हाथ फेर ने ताप उतारूँ, अला बला म्हारे नाम।
सोरा आना, बारा मासा, कर देऊँ खरो निरोग।
रोग सोग हगरा हड़का दूँ, करो मिलण का जोग।
सावण को महीनो मेघो, रम-झम बरसे
मन ने समझाऊँ कयाँ, यो वेरी जोबन तरसे।
झूला पड़्या बाग में जी, सावण सरस्यो राम।
संग सेलियाँ झूलण लागी, ले परण्या को नाम।
सब को परण्यो लेवण आयो, तीजाँ रमे तिवार।
आवते सावण लेवा आवजो जी सायब, वै घुड़ले असवार।
झूला पड़्या बाग में जी ऋतु सावण को मास।
जोबन ढब जा ओट में पीव मिलण री आस।
धीरां पाके सो मीठो लागे, काचो तूरो जाण।
झूलांगा संग पीव के रे ढब जा रे दन चार।
सहजां सहजां होवसी पिवजी ने ओलखाण।
झूलण जाऊँ बाग में ए मायड़ संग सेलियाँ चार।
दो गोरी-दो साँवरी, चारई हे मुटियार।
झूलण जाऊँ बाग में।

सावन का महीना है। रिमझिम-रिमझिम पानी बरस रहा है। मैं अपने मन को कैसे समझाऊँ, यह बैरी यौवन तरस रहा है। तीजों की बहुत आस थी कि परण्या (पति/साजन) लेने आएगा। वह तो नहीं आया। लगता है वह या तो ब्रह्मचारी हो गया है या फिर काशी पढ़ने चला गया है।

मैं झूले झूलने बाग में जाती हूँ। मेरे साथ चार संग सहेलियाँ हैं। हे माँ! सबके साजन लेने आए हैं। मेरा परण्या बीमार हो गया है। वह मुझे लेने नहीं आ सका। उसकी बीमारी की दवा तो मेरे पास है। मुझे मेरे परण्ये के पास ले चलो। मुझे उनके गाँव ले चलो। मैं उन पर हाथ फेरकर सारी अला-बला खुद ले लूँगी और उनका ताप उतार दूँगी। मैं उन्हें सोलह आना, बारामासा निरोग कर दूँगी। सब रोग-शोक हड़का (भगा) दूँगी। मेरे पीव मिलन का योग जमा दो। सावन का महीना, मेघ रिमझिम बरस रहा है। मन को कैसे समझाऊँ, मेरा यौवन तरस रहा है।

बागों में झूले पड़े हैं। हे राम! यह सावन सरस हो गया है। संग सहेलियाँ अपने-अपने परण्ये का नाम ले-लेकर झूला झूलने लगी हैं। सबके परण्ये लेने आए हैं। सब तीज का त्योहार अपने साजन के साथ मनाएँगी। हे साजन! इस बरस चूक गए सो चूक गए, किन्तु अगले बरस अवश्य घोड़े पर सवार होकर लेने आ जाना।

बाग में झूले पड़े हैं। सावन की ऋतु (वर्षा) का महीना है। हे साजन! कहीं ओट में छुप जा। प्रियतम के मिलने की आस बँध रही है। जो फल धीरे पकता है, वह मीठा लगता है। जो फल कच्चा होता है, वह तूरा (खट्टा नहीं/बेस्वाद) समझ ले। थोड़ा धैर्य रख ले। धैर्य का फल मीठा होता है। प्रियतम आ रहे हैं। उनके साथ झूला झूलेंगे। चार दिन धैर्य रख लें। प्रियतम से मिलने पर प्रियतम को धीरे-धीरे मेरी पहचान होगी।

हे माँ! बाग में अपनी सहेलियों के साथ मैं झूला झूलने जा रही हूँ। चार सहेलियाँ मेरे साथ हैं। अकेली नहीं हूँ। दो साँवली और दो गोरी हैं। चारों युवती हैं।

सावण तो आयो सैयां आंगणे जी, नाचण लागा मोर।
ज्युँ-ज्युँ बरसे मेवलो, त्युं-त्युं जोबन जोर।
सायब ने आवण कह्यो, लगतांइ सावण मास।
छुप-छुप तांकूं वाटड़ी, तके जेठणी, सास।
हरी तो जरी की म्हारी चूनरी जी चम-चम करे उजास।
तारा तो जड़्या बीचाँ मोखरा जी चाँद-सूरज को वास।
हे जी कोई भेजी तो चूनर म्हारी माय ने जी
इन्दर, सावण झड़ी लगाड़ी जी।
चारी तो चुमेर जड़्या घूघरा जी कोई, फूल तो कढ़ाया होना तार।
साठ कली को तो साथे घाघरो जी कोई, कली-कली में घेर।
टुकियाँ सुवासण चलकणी कांचरी जी सेली, बागां में जाऊँ रमझम फेर।
वेस तो आयो, आयो सावण्यो ए सेली, गेरी तो खुसबू मायड़ लाड़।
सावण तो आयो सेली आंगणे जी नाचण लागा मोर।
सायब जी बेठ्या बागां बीच में जी सेली, तो बंधायो लाम्बी डोर।
वेरां ती आजो म्हारी सेलियां जी कोई परण्यो, तो जोवे आतर वाट।

सावण तो होवे सगुनो सुवासणो ऐ सेल्यां, सायब जी होवे बागां लार।
झूलो तो झूलूँ जोबन मचकणो ए सेल्याँ, सायब झुलावे मचको लार।
सावण तो आयो सैयां बाग में जी, सायब जी जोवे बागां वाट।
आजो ए आजो सैयां छड़कती जी कोई, ठंडी तो पड़े जी फुवार।
सांवण तो सरस्यो सैयां हांचलो जी कोई, झूलो मचकावां थांके लार।

हे सखियों! सावन तो आँगन में आ पहुँचा है। बागों में मोर नाचने लगे हैं। ज्यों-ज्यों सावन का मेह बरसता है, वैसे-वैसे यौवन में उमंग-उल्लास बढ़ता जा रहा है। साजन ने लगते सावन ही आने का वचन दिया था। मैं छुप-छुप कर उनकी राह निहारती हूँ। जेठाणी और सास मेरी ताक रखती हैं। मेरी हरे रंग की चूनरी है, ऐसी चमकती है कि इसका उजास सब तरफ फैल रहा है। इसमें तारे जड़े हुए हैं। खूब सारे तारे-सितारे जड़े हैं। इसमें चाँद सूरज का निवास है।

हे सखी! यह सुन्दर-चमचम चूनर मेरी माँ ने भेजी है। इन्द्र ने सावन की झड़ी लगा दी है। इसमें चारों पल्लूओं पर घूघरियाँ जड़ी हुई हैं। सोने के तार से कसीदा निकाल रखा है। मेरा घाघरा भी साठ कलियों का है। कली-कली में घेर है, मेरी टुकियाँदार चमचमाती हुई काँचली (चोली) है। यह सुन्दर वेश पहनकर मैं बाग में जाती हूँ। यह सावन वेश मेरे पीहर से आया है। मेरे मायके में बैठी मेरी माँ का यह लाड़ है। इसमें से माँ की ममता की खुशबू आ रही है।

हे सखी! सावन आँगन में आ पहुँचा है। मोर नाचने लगे हैं। झूला बँधवाया है। वे बड़ी आतुरता से मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे सहेलियों! तुम थोड़ी देर से बाग में आना। अरे सखियों! सावन तो तभी शुभ लगता है, जब साजन साथ होता है।

मैं बाग में मचक-मचक कर झूला झूलूँगी। यौवन की उमंग के मचके लगाऊँगी। मेरे साजन मेरे मचके के साथ मचका लगाएँगे। झूले पर एक मचका मैं लगाऊँगी, दूसरा मचका मेरे साजन लगाएँगे। इस प्रकार हम मचके पर मचका लगाते हुए बाग में झूला झूलेंगे। बाग में मेरे साजन मेरी बाट जोह रहे हैं। हे सहेलियाँ! तुम सब रणक-छणक करती बाग में आना। सावन की ठंडी फुहारें पड़ रही हैं। सचमुच जोरदार मदमस्त सावन सरस हो उठा है। हम सब मिलकर झूला मचकाएँगे।

आयो सावण सगुनियो रिम-झिम झरे फुवार।
झूला तो पड़्या आम्बा डार में कोई सायब वेता लार।
सायब बिन हेली सूनो सांवण्यो, सायब बिन जोबन नहिं सार।
सायब बिन मचका नी लगे, लचक न आवे डार।
आम्बा के डारां झूलरी, संग सहेलिया बीच।
हगरा का मुख चलकणा, तू क्यों दिखे मलीच।
कमल सरीखा थारा नैण, सुनैणी, मिरगी सरखी चाल।

मचको लेवे दरपती, जोबन नी लचके डाल।
आयो सावण सगुनो रे बटोड़ा, सायब गया परदेस।
हगरा का सायब नेहड़े बटोड़ा, म्हारा तो दूरां देस।
सायब वेता नेहड़े रे बटाऊ, जोबन रेहतो जोर।
रेसम झूलो मचकती, पींघां लाम्बी डोर।
संग चलो तो लै चालूँ, मृगनैणी झूलो घला देऊँ बाग।
थें तो झूलो झूलणो, ए पदमण गास्याँ मल्हारी राग।
सावण सुवगो होवसी ऐ, राजुल जोबन होसी उछार।
रलमल मौजां माणसां, सुनैणी सावण रमसां लार।
आयो सावण सुगमणो, रिम-झिम झरे फुवार।
हामी भरो तो ले चलां, घुड़ला पे असवार।
धिकरे वाट वटोवड़ा, धिक थारी जामण रांड।
थारे सरखा तो म्हारा कहार रे खोड़्या तू भांडां को भाँड।
म्हारा सायब रे पगां की मोजड़ी, थारा मुख ती नीठ।
जा रे थारे वाटड़े, गंडक कागलो ढीट।
सायब आसी धज बणा, ज्यों आयो सावण मास।
सतवंत का सायबा, पूरी करसी आस।
आयो सावण सगुनियो, रिम-झिम झरे फुवार।
आ पऊंच्या म्हारा सायबा, घुड़ला पे असवार।

शुभ का सावन आ गया है। रिमझिम फुहारें झर रही हैं। आम की डालियों पर झूले बँध गए हैं। काश! मेरे साजन भी मेरे साथ होते। हे सखी! साजन के बिना सावन सूना लग रहा है। साजन के बिना यौवन निस्सार है। साजन के बिना यौवन बेदम हो रहा है। झूले के मचके नहीं लग पाते। डाल में लचक नहीं आ पाती।

अरे सुनयनी! तुम्हारी सभी सहेलियाँ तो अपनी सहेलियों के साथ आम की डालियों पर बँधे झूलों पर झूल रही हैं। सबके मुख पर चमक है। तू क्यों मलीन और उदास दिख रही है? अरे युवती! तेरे कमल जैसे सुन्दर नयन हैं। हे सुनयनी! तेरी हिरनी जैसी मस्त चाल है। तू डर-डरकर झूले का मचका ले रही है। मचका इतना कमजोर होता है कि आम की डाली में लचक तक नहीं आ पा रही।

अरे बटोही! सुहाना और शुभ सावन आया है। मेरा साजन परदेस गया है। सबके साजन तो उनके पास ही हैं। मेरा तो परदेस में है, बहुत दूर है। अगर मेरे भी साजन मेरे साथ होते तो यौवन में पींघ/जोर और उमंग रहती। झूले की लम्बी रस्सी वाली पींघ पर मचक कर झूला झूलती।

अरे मृगनयनी! मेरे साथ चलो तो तुम्हें साथ ले चलता हूँ। बाग में झूला डलवा दूँगा। हे पद्मिनी! तुम तो बाग में झूला झूलना और मैं मल्हार राग गाकर तुम्हारा उत्साह बढ़ाऊँगा। अरे रानी! सावन शुभ और सरस हो जाएगा। यौवन में उमंग भर जाएगी। शुभ का सावन है और भी शुभ हो जाएगा। साथ-साथ! खूब मौजें मनाएँगे। साथ-साथ सावन का आनन्द भोगेंगे। हे सुनयनी! अगर हाँ भर लो, तो साथ ले चलूँगा। मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ।

अरे राहगीर! तेरी जननी को धिक्कार है। हे रांड के! (गाली) तेरे जैसे तो मेरे यहाँ कहार हैं। अरे नीच! तू भांडों का भी भांड लगता है। अरे! तेरे मुँह से अधिक मेरे साजन के पैर की जूतियों में चमक है। अरे श्वान! अरे कौवे और ढीठ! तू यहाँ से फौरन अपनी राह चला जा। मेरा साजन पूरी शान-शौकत से आएगा, जैसे यह सावन आया है। मुझ सतवंती की आशा मेरा साजन पूरी करेगा। यह शुभ का सावन आया है। रिम-झिम फुव्वारें बरस रही हैं। उधर देख मेरा साजन घोड़े पर सवार होकर आ गया है।

झूलो झूलूँ बाग में जी कोई जियो मचोला खाय।
जियो मचोला खाय जी, जोबन झोला खाय।
सांवण बरसे झिरमरो हे हेली, ठंडी पड़े फुवार।
ठंडी पड़े फुवार सासरे नी जाऊँ तीजण त्योवार।
ससुरो आयो लेण ने नी जाऊँ डोकरा के लार।
सांवण बरसे झिरमरो ऐ हेली, ठंडी पड़े फुवार।
तीजां आई तिरमरी, झूलण जाऊँ सेलियाँ रे लार।
जेठ आयो लेण ने जी, नी जाऊँ जेठ के लार।
सांवण बरसे झिरमरो ऐ हेली ठंडी पड़े फुवार।
ठंडी पड़े फुवार, सासरे नी जाऊँ तीजण त्योहार।
देवर आयो लेण ने जी नी जाऊँ देवर के लार।
तीजां आई तिरमरी, झूलण जाऊँ सेलियाँ रे लार।
सांवण बरसे झिरमरो ऐ हेली, ठंडी पड़े फुवार।
ठंडी पड़े फुवार, सासरे नी जाऊँ तीजण त्योहार।
डील तपे मद जोबन्यो, ठंडी पड़े फुवार।
छन्न-छन्न होवे मेहड़ो, ऊनी उठे धुवार।
झूलो झूलूँ मचकती, जोबन झोला खाय।
सायब आवे लेण ने, जद मन धीरज आय।
झूलो झूलू बाग में जी कोई, जियो मचोला खाय।
सायब आया लेण ने जी, पड़ी हीवड़े ठार।
सावण होयो सावगोजी, अमरत पड़े फुवार।
काल परोड़े ऊठतां ए मावड़ जाऊँ परण्या रे लार।

झट-पट दमणी जोड़जो ऐ मावड़, बलद्या रोनकदार।
सावण आयो सरसतो, ठंडी पड़े फुवार।
तीजों का त्योहार हे, जाऊँ परण्या रे लार।
झूलो बाँधा बाग में जी कोई, झूलूँ सायब रे लार।
सांवण बरसे झिरमरो ए हेली, ठंडी पड़े फुवार।

बाग में झूले पड़े हैं। मैं झूला झूलती हूँ। मेरा जीव (मन) मचकोले खा रहा है। जीव के साथ-साथ यौवन भी झूम-झूम कर झूला झूल रहा है। सावन झिरमिर-झिरमिर बरस रहा है। मैं तीजों के त्योहार पर ससुराल नहीं जाऊँगी। मेरा ससुरा लेने आया है। मैं इस बुड्ढे के साथ नहीं जाऊँगी। सावन बरस रहा है। ठंडी-ठंडी फुहारें बरस रही हैं। मन को तिरमिर करने वाली, चंचल करने वाली तीजें आ गई हैं। मैं अपनी सहेलियों के साथ झूले झूलने जा रही हूँ। मेरा जेठ मुझे लिवाने आया है, मैं जेठ के साथ नहीं जाऊँगी। सावन की ठंडी फुहारें बरस रही हैं। मन आनन्द और उमंगित हो रहा है। मैं इन तीजों पर ससुराल नहीं जाऊँगी।

मेरा देवर मुझे लिवाने आया है, मैं देवर के साथ भी ससुराल नहीं जाऊँगी। तिरमरी तीजों पर मैं अपनी सहेलियों के साथ झूले झूलूँगी। तन यौवन के मद-ताप से तप रहा है। ऊपर से ठंडी-ठंडी सावनी फुहारें (सेरे) बरस रही हैं। ये वर्षा की ठंडी फुहारें जब यौवन मद से तपती देह पर पड़ती हैं, तब 'छन्न' की आवाजें आने लगती हैं। बदन में से गरम-गरम भाप निकलने लगती है।

मैं मचकती, इठलाती हुई झूला-झूलती हूँ। मेरा यौवन भी झूलता है। ऐसी स्थिति में मेरा साजन मुझे लिवाने आए तो मन को धीरज बँधे। इसमें आशय है, यदि परिवार के ससुर, जेठ और देवर आदि लिवाने आएँ तब एक तो लम्बे सफर को गुमसुम काटना पड़ेगा। सफर में (पैदल या घोड़े पर) जो मान मनुहारों और चुहलबाजी का आनन्द साजन के साथ होता है, वह स्मरणीय रहता है। उसकी बात ही कुछ और है। वैसा आनन्द अन्य के साथ सफर करने में कहाँ? फिर ससुराल में जाने पर साजन की भी उपस्थिति (संसर्ग) का पूरा पक्का भरोसा। मैं बाग में झूला झूलती हूँ। मेरा हृदय भी झूल रहा है। हृदय में एक विशेष प्रकार की रोमांचक प्रक्रिया होने लगती है। साजन मुझे लिवाने आ पहुँचे हैं। वे बाग में ही मुझसे मिलने आ पहुँचे हैं। जीव में ठंडक पड़ गई है। सावन सुहाना हो उठा है। अमृत जैसी- ठंडी फुहारें पड़ रही हैं। हे माँ! मैं कल परोड़े उठते ही (प्रभात में ही) प्रियतम के साथ जाऊँगी।

हे माँ! झट-पट दमणी (बैलों से खींची जाने वाली छोटी बैल गाड़ी, एक प्रकार का देशी रथ) तैयार करवा दे। कल प्रभात में अपने परण्या (पति) दमणी में तू बहुत ही सजे-सँवरे बैल जुतवाना। ठंडी-ठंडी फुहारें आ रही हैं। सावन सरस हो उठा है। तीजों का त्योहार है। मैं अपने परण्ये के साथ बाग में झूले बाँधकर झूल रही हूँ। सावन झिरमिर-झिरमिर बरस रहा है।

साँवण का बंध्या झूलणा, रिमझिम पड़े फुवार।
झूला पड़्या बाबल का बाग में।
म्हारा बाबल को अनखो राज।
झूला पड़्या बाबल का बाग में।
संग सहेलियाँ म्हारे लारे झूले।
नानी, नानी पड़े रे फुवार।
झूला पड़्या बाबल का राज में।
कोई नहिं बरजण हार।
झूला बंध्या जी वीरा का राज में, रिम-झिम पड़े फुवार।
झूला झूलूँ भावज संग में, गोद भतीजो हे लार।
कोई नहिं तरजण हार॥
झूला पड़्या रे हरियल बाग में, ठंडी पड़े रे फुवार।
जोबन झूले झूलणो जी कोई, सायब वेता लार।
सायब वेता लार, सावण वेतो सावगो।
झूला पड़्या सायब का बाग में।
रिम-झिम पड़े रे फुवार।
कारा-कारा वादरा तो घिर-घिर आया, बरसण लागो मेह।
मेह भींज्यां घरे जावसाँ जी कोई, सायब करसी नेह।
झूला पड़्या जी हरियल बाग में।

सावन के झूले बँध गए हैं। रिमझिम साँवणी फुहारें बरस रही हैं। झूले बाबुल के बाग में पड़े हैं। मेरे बाबुल का राज अद्भुत और अनुपम है। (पिता के राज में तो बेटी स्वतन्त्र और अल्हड़ रहती है।) मेरी संग की सखियाँ मेरे साथ हैं। नन्हीं-नन्हीं बूँदें पड़ रही हैं। बाबुल के राज में झूले झूलने का आनन्द ही और है। किसी प्रकार की वर्जना नहीं है। मेरे भाई के राज में झूले बँधे हैं। रिमझिम फुहारें बरस रही हैं। मैं अपनी भावज के साथ झूला झूलती हूँ। मेरी गोदी में मेरा भतीजा है। कोई तरजने-डाँटने वाला नहीं हैं।

हरियल बाग में झूले पड़े हैं। इस वर्ष झूले साजन के बाग में बँधे हैं। ठंडी-ठंडी फुहारें बरस रही हैं। यौवन भी झूलों के संग झूले पर झूलने का आनन्द ले रहा है। काश! साहब (साजन) भी साथ होते, तब झूलने का आनन्द और अधिक आता। साजन के बगीचे में झूले पड़े हैं। रिमझिम फुवारें बरस रही हैं।

काले-काले बादल घिर आए हैं। मेह बरसने लगा है। मैं वर्षा में भीग कर घर जाऊँगी, तो साजन का प्यार खूब मिलेगा। (लोकोक्ति है- जापा से ऊठी अर पाणी में कूठी) अर्थात् प्रसूती के पश्चात् और वर्षा में खूब भीग जाने के पश्चात् स्त्री अधिक कामुक हो उठती है। बागों में झूले पड़े हैं। हरियल बाग में झूले झूल रही हूँ।

रेसम डोर म्हारो झूलणो जी कोई, सतरंगी झलकार।
पड़्या जी झूला हरियल बाग में।
आठ गजी म्हारी चूनरी जी कोई, गोठा कनारी झलकार।
साठ कली को म्हारो घाघरो जी को, कली-कली चमकार।
सावण आयो सोवतो जी कोई, पड़्या जी झूला हरियल बाग में।
झूलण देओ ए जामण म्हने बाग में, म्हारे लार संग सहेली मोटियार।
सावण आयो सरवरो ए जामण, बरखा झुरे फुवार।
अबके बरस जामण झूल लेऊँ जी कोई, संग सहेलियाँ चार।
आवते बरस ए जामण चरकली ज्युँ, उड़ जास्याँ ए परले पार।
पड़्या जी झूला हरियल बाग में।
तीजां आई तिरमिरी जी को ऋतु सांवण की।
झूलो झूले मटकती छोरी बामण की।
ऊँची-ऊँची पींगां लेवे, जोबण का मचकोला।
मचक-मचक ने मचका लेवे, जोबन-लुट-लुट जावे।
पड़्या जी झूला हरियल बाग में।

हरियल बाग में झूले पड़े हैं (बाँधे गए हैं)। मेरा झूला रेशम डोर का है। उसमें सातरंगी चमक है। मेरी आठ गज की चूनर है। उसमें गोटा किनारी जड़ी है। उसकी चमक सब तरफ फैल गई है। मेरा घाघरा साठ कलियों का है। कली-कली चमचमा रही है। सरस और सुहाना सावन आ गया है।

हे जामण (जननी/माँ)! मुझे बाग में झूला झूल लेने दो। मेरे साथ मेरी उम्र की युवा सहेलियाँ भी हैं। सरस सावन आ गया है। वर्षा की फुव्वारें झड़ने लगी है।

हे माँ! इस वर्ष तो मुझे अपनी चार (एकाधिक) सहेलियों के संग बाग में झूला झूल लेने दो। हे माँ! आते वर्ष तो मैं तुम्हारे घर से विदा होने वाली हूँ। जैसे अपने वृक्ष से चिड़िया उड़कर परले पार चली जाती है। उसी प्रकार मैं भी चली जाऊँगी। हे माँ! बाग में झूले पड़ चुके हैं। आनन्द देने वाली, चंचलता देने वाली तीजों की ऋतु आ गई है। तीजों की यह सावणी ऋतु पर्व अगवानी बहुत आनन्ददायी है। छोरियाँ मटक-मटक कर झूले झूलती हैं। (छोरी बामण की-यह पंक्ति केवल तुक देने के लिये है।)

सब युवतियाँ/किशोरियाँ मचक-मचक कर झूला झूल रही हैं। झूले के साथ उनका यौवन भी हिचकोले लेता है। हे माँ! बाग में झूले पड़े हैं।

फागण का दन चार म्हारी हेली फागण का दन चार।
यें तो मद्यो जोबनो यें फागण सरस्यो लूम।

फागण में सरस्यो जोबनो घणी मचावे धूम।
तन-मन में झालां उठे, ज्युँ धूणी में धूंव।
हिवड़ो तलफे ज्युं मीनड़ो, जोबन रमूं के फाग।
जो पी संग फागण रमें, लिख्यो विधाता भाग।
म्हारो साजण्यो परले पार।
हेली म्हारी फागण का दन चार।
आयो रे आयो म्हारो फागणो, म्हारा जोबन का रखवार।
धजा फेहरातो आ पुग्यो, अबलख को असवार।
नेह को चंदन मेहकण लाग्यो, जोबन लचका खाय।
मदमात्यो मन मेहकण लाग्यो, रुच-रुच खसबू आय।
पिव आया फागण हरसायो, सोवन लाग्यो सिंणगार।
हेली म्हारी फागण का दन चार।
होरी खेलां राचणी जी, माणा मोज बहार।
भर पिचकारी रंग रस खेलां, फेंका अबीर गुरार।
फागण फरको मदमतो, जोबन खिंडी बहार।
होरी खेलूं पीव संग, ज्युँ राधा क्रसन मुरार।
हेली म्हारी फागण का दन चार।
होरी खेलतां सुध-बुध खोई, मेहलां पौंच्या पीव।
चन्दो पोंच्या ठेठ सिखर पे, घण अकलावे जीव।
हिरणी तारो अम्बर पौंच्यो, खुट गयो अबीर गुरार।
सेजां पौढ़्या पीव जी, हिवड़े घणो गुबार।
कर सिंणगार जावां झट मेहलां, साजन की मनवार।
साजन की मनवार सायब खूब करे तकरार।
फागण में घण प्यारी लागे साजन की तकरार।
सेजां पे घण मीठी लागे साजन की फटकार।
होरी खेलतां तन मन मदमात्यो, साजन को उपचार।
हेली म्हारी फागण का दन चार।

हे सखी! फागुन चार दिन का ही है। इधर तो यौवन में मस्ती आई और उधर फागुन सरस उठा। फागुन में उमंगित हुआ यौवन बहुत धूम मचा रहा है। तन और मन में विरह की लपटें उठ रही हैं। ऐसा लग रहा है जैसे धूनी में से धुआँ उठ रहा हो। हृदय मछली की तरह तड़प रहा है। हे सखी! तू ही बता कि मैं यौवन का रमण करूँ कि फाग खेलूँ? दोनों ही विधाता ने मेरे भाग में नहीं लिखे। यदि प्रियतम साथ होते और ऐसा भाग विधाता ने लिखा होता, तो मैं भी फागुन का सुख भोगती, किन्तु प्रियतम तो परले पार (परदेस) हैं।

आह ! मेरा फागुन (साजन) ! मेरे यौवन का रखवाला ध्वज फहराता हुआ, अबलक घोड़े पर सवार होकर आ गया है। स्नेह का चन्दन देह में महकने लगा है। मेरा यौवन लचकने लगा है। मेरा मदमस्त मन महकने लगा है। रुचने वाली सुहानी खुशबू आने लगी है। प्रियतम के आते ही फागुन हर्षित हो उठा है। श्रृँगार सुहाने लगा है। हे सखी! फागुन के तो चार ही दिन हैं।

अपने प्रियतम के साथ रुच-रुच कर रंग-सुरंग होली खेलूँगी। खूब मौज मनाऊँगी। पिचकारी भर-भर कर खूब रंग खेलेंगे और खूब अबीर-गुलाल फेकेंगे। मदमस्त फागुन फड़क उठा है। यौवन में बहार आ गई है। अपने प्रियतम के साथ होली खेलूँगी, जैसे राधा अपने कृष्ण के साथ खेलती है।

होली खेलते-खेलते सुध-बुध खो बैठी हूँ। प्रियतम महलों में पहुँच गए हैं। मेरी बाट देख रहे हैं। चन्द्रमा शिखर पर पहुँच गया है। मेरा मन बहुत व्याकुल है। हिरणी तारा आकाश में आ पहुँचा है। अबीर-गुलाल भी खुट गया है। प्रियतम सेज पर पौढ़े हैं। उनके मन में क्रोध भरने लगा है। मेरे विलम्ब के कारण वे क्रोध में हैं। मैं जल्दी ही श्रृँगार करके महल में जाकर उन्हें मना लूँगी। वे खूब तकरार करेंगे। फागुन में तो साजन की तकरार भी बहुत प्यारी लगती है। सेज पर साजन की फटकार बहुत मीठी लगती है। होली खेलते तन-मन दोनों मदमस्त हो उठे हैं। इस मादकता का उपचार तो साजन ही कर सकते हैं। हे सखी! फागुन के तो चार दिन ही होते हैं।

नरबदा रंग ती भरी, होरी खेलो नी नंदलाल।
चामल रंग ती भरी होरी खेलो नी नंदलाल।
भर पिचकारी राधा पे डारो, गालां पे मल दो गुलाल।
चामल रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।
कठा ती पधार्‌या कुंवर कन्हैया, कठा ती पधार्‌या राधा नार।
गोकल ती पधार्‌या कुंवर कन्हैया, बरसाणा ती पधार्‌या राधा नार।
चामल रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।
कतरा बरस का कुंवर कन्हैया, कतरा बरस राधा नार।
बारा बरस का कुंवर कन्हैया, तेरा बरस राधा नार।
चामल रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।
फागण तो आयो कान्हा, सरसणो जी, फागां तो गावे राधा नार।
फागण तो आयो कान्हा रसभरो जी, फागां तो गावे क्रसन मुरार।
नरबदा रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।
भर पिचकारी कन्हैया ने मारी, रंग में तो भीजी राधा नार।
रंग सुरंगी राधा सोवणी जी हेली, रंग-रस क्रसन मुरार।
राधा से केवे चालो रंग मेहल में, लाजां लजाणी राधा नार।

सीपरा रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।
चामल रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।
सिवना रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।
गोरी तो ऊभी फागण चौक में जी कान्हा।
आवो नी म्हारा सांवरा भरतार।
फागण तो आयो सरसणो जी सायब, रलमल उड़ावा जी गुलाल।
चामल रंग ती भरी, होरी खेलो जी नंदलाल।

हे नन्दलाल! पूरी नर्मदा रंग से भरी हुई है। आप खूब होली खेलो। पूरी चम्बल नदी रंग से भरी हुई है। आप खूब होली खेलो। रंग की पिचकारी भरकर राधा पर डालो और उनके गालों पर गुलाल मल दो। कहाँ से कृष्ण आएँ और कहाँ से राधा नारी आई? गोकुल से कुँवर कृष्ण कन्हैया आए और बरसाने से राधा जी पधारीं। चम्बल रंग से भरी हुई है। हे कृष्ण! खूब होली खेलो। कृष्ण कितने वर्ष के हैं और राधा जी कितने वर्ष की हैं? बारह वर्ष के कृष्ण हैं और तेरह वर्ष की राधाजी हैं।

हे कन्हैया! फागुन बहुत सरस होकर आया है। राधा जी फाग गा रहीं हैं। फागुन बहुत सरस होकर आया है और कृष्ण फाग गा रहे हैं। नर्मदा रंग से भरी है। हे कृष्ण! खूब होली खेलो। रंग से राधा जी सुरंगी हो रही हैं और रंग और रस में कृष्ण मुरारी रसिक हो रहे हैं। कृष्ण ने रंग की पिचकारी राधा पर ऐसी डाली कि राधा रंग से सराबोर होकर रंग भींजी और रससिक्त हो गईं। रंग-सुरंगी राधा से रसिक कृष्ण मनुहार करते हैं कि आओ, रंग महल में चलें और होली का आनन्द लें। फागुन मनाएँ। कृष्ण की इस रसिक मनुहार से राधा लाज से लजा गई।

हे कृष्ण! क्षिप्रा रंग से भरी है। खूब होली खेलो। चम्बल और शिवना रंग से भरी हैं। खूब होली खेलो। गोरी फागुन चौक में अपने कन्हैया की बाट जोह रही हैं। हे मेरे साँवरे कन्हैया! हे मेरे भरतार! जल्दी आ जाओ। हे साजन! फागुन बहुत रसीला होकर आया है। आओ, दोनों हिल-मिलकर गुलाल उड़ाएँ। चम्बल रंग से भरी है। हे मेरे कन्हैया! हे नन्दलाल! खूब होली खेलो।

उड़ रई फागण में रंग गुरार, होली आई रसिया।
उड़ रई रोली रंग गुरार, होली आई रसिया।
फागण फरक्यो फरमादार, होली आई रसिया।
भर पिचकारी म्हारी सारी भिगोई, कर दी सतरंगी रसदार।
होली आई रसिया।
भर पिचकारी म्हारे मुख पे मारी, नटखट क्रसन मुरार।
होली आई रसिया।
आयो फागण्यो रसदार, होली आई रसिया।

भर पिचकारी ऐसी मारी, म्हारी बेसर आब उतारी रसिया।
म्हारी बिंदिया की आब उतारी रसिया।
होली आई रसिया।
आज बिरज रस फेल्यो रे रसिया, उड़ रई चमचम अबीर गुरार
होली आई रसिया।
भर पिचकारी म्हारी छतियाँ पे मारी,
म्हारी माला की आब उतारी रसिया।
म्हारी लाज पे मारी पिचकारी रसिया।
फरक्यो बिरज कुमार रसिया।
फरक्यो फागण मदभर्‌यो, होरी खेले क्रसन मुरार रसिया।
भर पिचकारी म्हारे मुखड़ा पे मारी म्हारे
म्हारा छेवड़ा की आब उतारी रसिया।
कान्हा ने करी रंगदारी रसिया।
होली आई रसिया।
म्हारी छाती पे मारी पिचकारी रसिया।
म्हारी तरबतर कर दी सारी रसिया।
जीवो जुग-जुग क्रसन मुरारी रसिया।
म्हारो साजन हे क्रसन मुरारी रसिया।
होली आई रसिया।

फागुन आ गया। फागुन में रंग गुलाल उड़ रहा है। अरे रसिया! होली आ गई है। रोली और गुलाल उड़ रहा है। खूब मजेदार फागुन फड़क उठा है। होली आ गई है। (कन्हैया ने) पिचकारी भरकर मेरी साड़ी भिगो दी है। मुझे खूब सतरंगी और रसयुक्त रसीली कर दिया है।

पिचकारी भरकर रसिया कृष्ण ने मेरे मुख पर मारी। फागुन महीना आ गया है। रसदार महीना आ गया है। कन्हैया ने पिचकारी भरकर मेरे मुख पर ऐसी मारी कि मेरी बेसर की आब (चमक) उड़ गई। मेरी बिंदिया की चमक भी उड़ गई। होली आ गई है। आज ब्रज में रस फैल रहा है। चमचम अबीर और गुलाल उड़ रही है। रसिया कृष्ण ने पिचकारी भरकर मेरी छाती पर मारी। मेरी माला की चमक उड़ गई। पिचकारी मेरी लाज पर मारी। ब्रजकुमार आज बहुत रसिक हो उठा है। फागुन फड़क रहा है। मदमस्त हो रहा है। कृष्णमुरारी होली खेल रहे हैं। कृष्ण ने पिचकारी भरकर मेरे मुख पर मारी। मेरे घूँघट की आब उतार दी। कन्हैया ने ऐसी रंगदारी की है। होली आ गई है। मेरी छाती पर पिचकारी मार कर रसिया ने मेरी साड़ी तरबतर कर दी। हे मेरे कृष्ण मुरारी रसिया! आप युग-युग जियो। मेरे साजन ही कृष्णमुरारी हैं। हे रसिया! होली आ गई है।

फागण खेलां रे देवरिया फेकां रलमल रंग गुरार।
दूरा चालां रे देवरिया खेलां फागण्यो रसदार।
फागण खेलां बीच आंगणे, सासूजी ररकावे।
सासूजी ररकावे, नणदल खोटा बोल सुणावे।
दूरां ले चल रे रंगदार, फागण खेलां रे देवरिया।
फागण-फागण कई करो भाभी, फेंको भर पिचकारी।
पिचकारी नी फेंकूं रे देवरिया, रीस करे म्हारा भरतार।
होली खेलां रे देवरिया, फेका रलमल रंग गुरार।
कांटो लागो जोर के रे देवर, पगां चल्यो नी जाय।
जोबन खिल रह्यो फूल चमेली, नी आऊँ संग अकेली।
फागण करवा दे बटमार, होली आंगण्ये खेलां।
फागण खेलां रे देवरिया, फेकां रलमल रंग गुरार।
कांकड़ नी जावाँ फागण्यो फरके, जोबण्यो मजदार।
कांकड़ चालां म्हारी भाभी करले देवर को एतबार।
फागण रमवा दे ए भाभी, देवर व्हे आधो भरतार।
फागण रंग चढ़्यो रे देवर, थारी नीयत डोली।
भर पिचकारी तरबत कर दी, म्हारी जुबनी चोली।
सारी तो रंगदारी कर दी, रे देवरिया बटमार।
फागण खेलां रे देवरिया, फेकां रलमल रंग गुरार।
नीयत कोइनी खोटी भाभी, मूं थारो देवरियो।
मरजादा में रंग लगाणू, के सरस वाटको भरयो।
सरस वाटका जोबन भर्‌यो, भाभी तू मतवारी।
फागण फरके एक बरस में, कर लेवां रंगदारी।
चार दनां को फागण भाभी चार दनां को जीणो।
फागण खेलां रे देवरिया, फेकां रलमल रंग गुरार।
राधा रंग रसीली रइजे, होली खेल क्रसन मुरार।
परदेसां आवण दे भरतार। होली आंगण्ये खेलां।

हे देवर! आओ, फागण खेलें। हिल-मिलकर रंग गुलाल डालें। हे देवर! दूर कहीं चलें और रसदार फागण खेलें। अगर अपने आँगन में फागुन खेलेंगे तो सासूजी डाँटेंगी। सासूजी तो डाँटेंगी ही, ननद भी ताने मारेगी। वह अपशब्द कहेगी। हे रंगीला देवर! फागुन खेलने दूर कहीं ले चल। अरे भाभी! फागुन-फागुन क्या बोल रही हो। पिचकारी भरकर रंग फेंको। अरे! रंग की पिचकारी तुझ पर नहीं फेंकूँगी। मेरा भरतार गुस्सा करेगा।

हे देवर! पाँव में जोर का काँटा लग गया है। पैदल नहीं चला जाता। अरे देवर! मेरा यौवन

चमेली के फूल की तरह खिल रहा है। अकेली तुम्हारे संग नहीं जाऊँगी। फागण की मादकता राह में लूट मचवा देगा। राहजनी करवा देगा। आओ, अपने आँगन में ही होली खेलें। हिल-मिलकर गुलाल फेंकें। हे देवर! जंगल में होली खेलने नहीं चलें। यौवन मझधार (भरपूर) है। डर लगता है। फागुन मस्ती भरा है। हे भाभी! होली खेलने जंगल में चलें, देवर का विश्वास कर ले। हे भाभी! फागुन खेलने दे। देवर तो आधा भरतार होता है। अरे देवर! तुझ पर फागुन का रंग चढ़ गया है। तेरी नीयत डोल गई है। अरे देवर! तूने मेरी यौवन भरी काँचली (चोली) को पिचकारी के रंग से तरबतर कर दिया है।

अरे बटमार देवर! तूने मेरी साड़ी भी रंग से रंग दी। हे देवर! आओ, होली खेलें और हिलमिल कर रंग फेंकें। अरे भाभी! मेरी नीयत में खोट नहीं है। मैं तेरा देवर हूँ। मैं मर्यादा में रहकर रंग लगाऊँगा। मेरे पास रसीला वाटका (कटोरा) भरा हुआ है। फागुण एक बरस में आता है। रंगदारी कर लें। होली खेल लें।

हे भाभी! चार दिनों का फागुन है और चार दिनों का जीवन है। हे देवर! फागुण खेलें। रंग-गुलाल डालें। हिल-मिल होली खेलें। हे राधा! रंग रंगीली और रसीली रहना, होली कृष्ण मुरारी खेलेंगे। परदेस से भरतार को आने दो। सब मिलकर आँगन में होली खेलेंगे।

काची नीम की निम्बोरी, फागण वेगो आयो रे।
थोड़ी पाकण दे निम्बोरी, फागण थोड़ोक ढब जा रे।
परण्यो लेवण आयो रे, फागण थोड़क तो ढब जा।
काची नीम की निम्बोरी फागण वेगो आयो रे।
काचो जोबन कचपचो, नख दीयाँ रस जाए।
परण्यो आयो लेण ने, फागण घिर-घिर आए।
सासरे नी जाऊँ ए मायड़, फागण बागाँ खेलण दे।
परण्यो म्हारो बालको ए मायड़, जुबन झकोला खाय।
संग सेल्यां संग बागां झूलूँ, फागण्यो सरसाय।
काची नीम की निम्बोरी, फागण वेगो आयो रे।
थोड़ी पाकण दे निम्बोरी, फागण थोड़ोक ढब जा रे।
दाखां पाकी बाक में जी जोबन पाक्यो डील।
चाखण वारो बारको जी कोई, ठुकी करम में खील।
सासरे नी जाऊँ ए मायण यो फागण पीऽरे खलूँ।
पाछां फेर दे परण्या ने, थोड़ो होवा दे मुटियार।
अबके फागण खूलूँ मायड़, सायब जी रे लार।
काची नीम की निम्बोरी, फागण वेगो आयो रे।
थोड़ी पाकण दे निम्बोरी, फागण थोड़ोक ढब जा रे।

फागण रमती झूलो झूलाँ, फेकाँ अबीर गुरार।
झूलो झूलां बाग में जी, सात सेलियाँ लार।
दो-दो झूलां मचकती, लचके आम्बा डार।
झूला बांध्या वीर ने जी को लांबी बाँधी डोर।
मचके-मचके चीतवां जी कोई, बलम कारजा कोर।
काची केरी कचपकी जी कोई, पाकण दे दन चार।
एक तो जारे जोबनो, दूजी फागण की फटकार।
काची नीम की निम्बोरी, फागण वेगो आयो रे।
थोड़ी पाकण दे निम्बोरी, फागण थोड़ोक ढब जा रे॥

अरे फागुन! अभी नीम की निम्बोरी कच्ची है, तू जल्दी क्यों आ गया? (प्रकृति की दृष्टि से नीम की निम्बोरी जेठ-आषाढ़ में ही पक जाती है। यहाँ नायिका नीम की निम्बोरी को यौवन के परिपक्व और अपरिपक्व के प्रतीक में कह रही है।) अरे फागुन! इन कच्ची निम्बोरियों को थोड़ा पक जाने दो। अरे फागुन! थोड़ा-सा ठहर जा। मुझे मेरा परण्या (पति) लेने आया है। थोड़ा-सा ठहर जा। अभी यौवन नीम की कच्ची निम्बोरी जैसा ही है।

कच्चा यौवन कचपचा रहा है। गदरा रहा है। जरा सा नख देने पर भी जैसे फल का रस टपक पड़ता है, वैसा मेरा यौवन है। इधर तो परण्या मुझे लेने आ पहुँचा है, उधर फागुन घिर आया। उमंगित हो उठा है। मैं ससुराल नहीं जाना चाहती। हे माँ! यह फागुन मुझे यहीं पीहर के बागों में खेल लेने दो। मेरा परण्या अभी बालक है। हे माँ! मेरा यौवन तो झकोले खा रहा है। मैं अपने बालक परण्या के साथ जाकर क्या करूँगी? हे माँ! फागुन सरस हो रहा है। मुझे सहेलियों के साथ बागों में फागुन खेलने दे।

बाग में जैसे दाखें (अंगूर) पक जाते हैं, वैसे ही मेरा यौवन गदरा रहा है। इसे चखने वाला बालक है। मेरे तो भाग्य में ही कील ठुक गई है। हे माँ! मैं ससुराल नहीं जाऊँगी। पीहर में ही फागुन खेलूँगी। तू मेरे परण्ये (पति) को वापिस लौटा दे। थोड़ा युवा हो जाने दे। हे माँ! अगले बरस मैं अपने साजन के साथ ही फागुन खेलूँगी।

फागुन खेलते-खेलते झूला झूलेंगे। खूब रंग, अबीर गुलाल फेंकेंगे। सात सहेलियों के साथ बाग में झूले झूलूँगी। दो-दो सहेलियाँ एक साथ झूले पर मचक-मचक कर झूले झूलेंगी। ये झूले मेरे वीर (भाई) ने बाँधे हैं। उनमें लम्बी डोर बाँधी है। झूला झूलते हुए हर मचके पर साजन की याद आती है। बालम तो कलेजे का टुकड़ा है। एक तो यौवन की केरी अभी कचपची है। ऊपर से फागुन की फटकार लग रही है। फागुन उत्तेजित कर रहा है। एक तरफ तो जोबन जल रहा है, ऊपर से फागुन उत्तेजित कर रहा है। हे फागुन! थोड़ा ठहर जा। निम्बोरियों को पक जाने दे।

म्हारी भरी जुवानी करदी थने खुवार।
दावो ठोकूंगी दरबार।
यें तो फरक्यो फागणो, यें जोबन मदभायो।
आधो फागण बीत गयो, तू बेरी नी आयो।
भोंक दी विरह की हिरदै तेज कटार।
दावो ठोकूंगी दरबार।
सांवण बीत्यो, भादवो जी कोई काती तुरसां पूजी।
खुली-खुली लिख भेजो साजन गोठण कर ली दूजी।
जसतर-तसतर मगसर काढ्यो, पोस माघ में धूजी।
सूनी सेजा रांता साजन नागण जेसी लागे।
फागण में आ जावो पिव जी, मरती आसा जागे।
अतरी मिनत मनवारा सुण नी आया भरतार।
छेड़ो काढ़ डेरी लांघूं, दावो ठोकूंगी दरबार।
भूल चूक बगसा दो साजन, फागण नत नी आवे।
मदमात्या लोभीड़ा भमरा, फूल जाण मँडरावे।
बागां का रखवाला साजन, बागां में रम जावो।
फूल खिंड्या हे क्यारी-क्यारी, फागण्यो सरसावो।
सांची-सांची वात मान लो, मति ठानो तकरार।
अतरे करतां बी नी आयो, सुण लेवो भरतार।
मेड़ी की छत जा चढ़सां, अर करसां चीख पुकार।
छेड़ो काढ़ डेरी लाँघूं दावो ठोकूंगी दरबार।
म्हारी भरी जुवानी करदी थने खुवार।
दावो ठोकूंगी दरबार।

तूने मेरी भरी जवानी बर्बाद कर दी। मैं तेरे विरुद्ध राजदरबार में दावा लगाऊँगी।

इधर तो फागुन मदमस्त हुआ, उधर यौवन मदमस्त हुआ। आधा फागुन बीत गया, लेकिन बैरी तू अभी भी नहीं आया। तूने मेरे हृदय में विरह की तेज कटार भोंक दी। मैं तेरे विरुद्ध राजदरबार में दावा करूँगी। सावन बीता, भादवा बीता, कार्तिक भी बीत गया। कार्तिक में तुलसी की पूजा की। हे साजन! साफ-साफ लिख भेजो कि दूसरी प्रेमिका तो नहीं कर ली।

जैसे-तैसे मगसर निकाला, पौष-माघ महीने में ठण्ड से काँपती रही। हे साजन! सूनी सेज रात को नागिन जैसी लगती है। फागुन में आ जाओ प्रिय, तो मरती आस फिर जाग जाय। इतनी बातें सुन लेने के बाद भी हे भरतार! यदि नहीं आए, तब मैं मजबूर होकर घूँघट काढ़कर घर की डेहरी लाँघूँगी और राजदरबार में जाकर दावा लगाऊँगी।

हे साजन! यदि कोई भूल-चूक हो गई तो क्षमा कर दो। यह फागुन नित नहीं आता। मदमस्त रस के लोभी भँवरे मुझे फूल जानकर मँडराते रहते हैं। हे मेरे बाग के रखवाले साजन! आ जाओ और अपने इस बाग का रमण करो। क्यारी-क्यारी (अंग-अंग) फूल खिल रहे हैं। फागुन रसीला हो रहा है। मेरी सच्ची-सच्ची बात मानकर घर चले आओ। व्यर्थ की तकरार मत ठानो। इतना कहने सुनने के बाद भी यदि नहीं आए तो, हे भरतार! अच्छी तरह सुन लो, मेड़ी पर चढ़ जाऊँगी और खूब जोर-जोर से चीख-पुकार मचाऊँगी। घूँघट निकालकर डेहरी पार करने के लिए मजबूर हो जाऊँगी और दरबार में जाकर दावा लगाऊँगी। तुमने मेरी भरी जवानी बर्बाद कर दी है। मैं आपके विरुद्ध राजदरबार में दावा लगाऊँगी।

म्हारा रंग भर्‌या हात, कान्हा पोंची तो पेहराव।
म्हारो टीको रतन जड़ाव, कान्हा टीको तो सजाओ॥
म्हारा रंग भर्‌या हाथ, कान्हा चूड़ी तो पहना दो॥
कणी फूल को रंग बणायो, कण धातु पिचकारी।
काची केसर रंग बणायो, कंचन धातु पिचकारी।
गुल तेवड़ी रंग बणायो, रतना जड़ी पिचकारी।
म्हारा रंग भर्‌या हात, कान्हा हार तो पेरावो।
हार तो पेराओ कान्हा, झुमका तो पेरावो।
म्हारा रंग भर्‌या हात, कान्हा नथड़ी तो पेरावो।
नथड़ी तो पेरावो कान्हा, हंसली तो पेरावो।
म्हारा रंग भर्‌या हात, कान्हा पाजप तो पेरावो।
होरी खेलण गई राधका, उड़यो रंग गुलाल।
रंग-बिरंगी करदी कान्हे, गालां मल्यो गुलाल।
रंग-बिरंगी करयो राधा ने, गालां मली गुलाल।
म्हारा रंग भर्‌या हात, कान्हा सारी तो पेरा दो।
सारी तो पेरा दो कान्हा, कांचरी कसना कसवा दो।
कसनियाँ ढीली पड़गी जी, कन्हैया गसना गाठी सी बँधवा दो।
म्हारा रंग भर्‌या हात, कन्हैया गजरा हार पेहरा दो।
राधा रंग रस भीजी नार, रसियो कानूड़ो नंदलाल।
म्हारा रंग भर्‌या हात, साँवरा गालाँ को गुलाल हटाई दो।
कन्हैया फागण खेल्या खूब, बंसी की टेर सुणाइ दो।

हे कन्हैया! मेरे हाथ रंग से भरे हैं। जरा आकर मेरे हाथों में पौंची तो पहना दो। चूड़ियाँ और टीका तो पहना दो। किस फूल से रंग बनाया और किस धातु की पिचकारी बनाई? कच्ची केसर से रंग बनाया, सोने से पिचकारी बनाई। गुलतेवड़ी के फूलों से रंग बनाया और रत्नों से जड़ी पिचकारी बनाई। हे कृष्ण! मेरे रंग से सने हाथ हैं। मुझे हार पहना दो। अरे कन्हैया! हार तो

पहना दो। कन्हैया! झुमका भी पहना दो। अरे कन्हैया! मेरे रंग से सने हाथ हैं। मुझे नथ तो पहना दो। अरे कन्हैया! नथ भी पहना दो और गले में हंसुली भी पहना दो।

हे कन्हैया! मेरे रंग सने हाथ हैं। मुझे पायजेब पहना दो। राधा होली खेलने गई। खूब रंग और गुलाल उड़ा। कन्हैया ने राधा को रंग-बिरंगा कर दिया। उनके गालों पर गुलाल मल दी। राधा रस-रंग में भीग गई।

अरे कन्हैया! सुनो, मेरे हाथ रंग से सने हैं। जरा मेरी साड़ी तो ठीक कर दो (पहना दो)। अरे कन्हैया! मेरी साड़ी भी ठीक कर दो और कंचुकी की तणियाँ (कसनियाँ) भी कस दो। कसनियाँ ढीली पड़ गई हैं। हे कन्हैया! इन्हें जरा कसकर बाँधने में सहयोग कर दो। कन्हैया! मेरे हाथ रंग सने हैं। मुझे गजरे और हार पहना दो। हे कन्हैया! मेरे रंग से हाथ भरे हैं। मेरे गालों का गुलाल साफ कर दो। कन्हैया! फागुन तो खूब खेल लिया, अब वंशी की टेर सुना दो।

माथा पे थारे रखड़ी सोवे, काना में झाला झणकदार।
रतन जड़ाव को टीको सोवे, गरा में मोतियन हार॥
होली खेलाँ बागाँ में।
बागाँ में खेला, बगीचा में खेलाँ, थारी नथड़ी झूलणदार।
होली खेलाँ बागाँ में।
यो फागण्यो नत नी आवे, जोबन नी आवे बार-बार।
होली खेलाँ बागाँ में।
गोरी-गोरी बहियाँ, अर लाल-लाल चूड़ियाँ,
थारी पोंची झणकादार, होली खेलाँ बागाँ में।
सुआ वर्णी सारी अर मोति जड़ी कांचरी, रस भीजी मोटियार।
जण में गोरी जोबनियों, कसायो हे तणियादार।
होली खेलाँ बागाँ में।
मदमात्यो हाथी जाँपे बेठी राधा नार।
भर पिचकारी कन्हैया ने मारी, रस में भिंजाणी राधा नार।
होली खेलाँ बागाँ में।
बागाँ में खेलाँ, बगीचा में खेलाँ,
झरोका ते उड़े रे गुरार।
होली खेलाँ बागाँ में।
झीनो-झीनो राधा के सालूड़े सोवे, सालूड़ो सोवे गोटादार।
होली खेलाँ बागाँ में।
कुँवर कन्हैयो रोर मचावे, लाजाँ तो लजावे राधा नार।
होली खेलाँ बागाँ में।

महिनों वसंतो, रित बी वसंती, मति असी ठानो, म्हारी राधा रानी रार।
होली खेलाँ बागाँ में।

हे राधा! तेरे माथे पर रखड़ी (शीश पर गुँथाया जाने वाला एक आभूषण) शोभित है। कानों में बजने वाले झुमके हैं। रतन जड़ा माथे पर टीका भी है। गले में मोतियों का हार है। चलो बागों में होली खेलें। हे राधा! तेरी नथ झूलने वाली है। चलो बाग-बगीचों में होली खेलें।

हे राधा! यह फागुन नित नहीं आता और यह यौवन भी बार-बार नहीं आता। चलो बागों में होली खेलें। हे राधा! तेरी गोरी-गोरी कलाइयाँ हैं। कलाइयों में लाल-लाल चूड़ियाँ हैं। कलाइयों में बजने वाली पोंहची है। चलो, बागों में होली खेलें। हे राधा! तुमने सुआ रंग (तोते के रंग) की साड़ी पहन रखी है। मोतियों से जड़ी कंचुकी है। तुम रसीली युवती हो। उस पर हे गोरी! तुमने अपने यौवन को कंचुकी के बंधन में कसकर बाँध रखा है। चलो गोरी बागों में होली खेलने चलें।

मदमस्त हाथी (यौवन) जिस पर राधा ने सवारी कर रखी है। (यह राधा के संयम का संकेत है।) ऐसी संयम और मर्यादा में आबद्ध राधा युवती पर कृष्ण ने रंग की पिचकारी भरकर फेंकी और राधा रस से तर-बतर हो गई। चलो राधा बागों में होली खेलने चलें। झरोखों से गुलाल उड़ रही है। चलो राधा बागों में होली खेलने चलें। राधा के बदन पर झीना-झीना, गोटे किनारी का सालू सुशोभित है। कन्हैया राधा से छेड़छाड़ करता है, राधा लजाती है। हे राधा! बागों में होली खेलने चलें। वसंती महीना है। वसंत ऋतु भी है। हे मेरी प्यारी राधा रानी! ऐसे सुहाने मास और ऋतु पर रार (झगड़ा) मत ठानो और मेरे साथ बागों में होली खेलने चलो।

ठंडो चाले वायरो ए हेली, बिरछ रह्या अंकराय।
नवा-नवा तांबीलिया ए हेली, पाना सीस डोलाय॥
चेत तो लागो चेतण्यो हे हेली, गणगोराँ सोभाय।
घर-घर हेली पूजणा जी कोई म्हारा हरि जी निजर नी आय।
हरिजी गया परदेस्याँ ए हेली, पल-पल चेते आय॥
हेली लागो मास वेसाख, उन्हालो आयो।
बीजण आया हाथ, हरि नजराँ नी आय।
दूणो होयो दूख, तन-मन अकलायो, हरि जी नजरां नी आय।
हेली जेठ मास लागो, हरि को मन हुलसायो।
मास असाढ़ो हरि नी आया जिव घबरायो।
गया द्वारकानाथ, हरि मंदर सूनो रे।
हरि चल्या गया परदेस, हरि मंदर सूनो रे।
जदुनाथ गया परदेस, कामणी, हद बिलमाया रे।
कामण करी जरूर, म्हारा हरि बिलमाया रे।

हरि मंदिर सूनो रे, हरि नजरां नी आया रे।
हेली दासी घणी चगोर, म्हारा हरि बिलमाया रे।
हेली कुबजां घणी चगोर, नाथ पे कामण वाया रे।
सखी बागो मास असाढ़ धन गरजे दरपावे।
बीजर चलके तड़क कारजो धड़ धड़कावे।
हरिजी बिगर कूण, सखि धीर बँधावे।
मेहलाँ बेठी दरप-दरप हरि ने चीताडूँ
हरिजी हे परदेस जीव कसतर हमाजोडूँ
हरि बिन मंदर सुनो रे।
हेली सावण लागो मास, बीजरी चमचम चमके रे।
झीणी पड़े फुवार, सावणो चहुँदिस गमके रे।
सालू भीजे झीनड़ो, म्हारी सारी भींजे रे।
हरि चल्या गया परदेस, हरि मंदिर सूनो रे।
हेली भादवमास क्रसन जी देवकी जाया जी।
कर जमना जी पार वसुदे, गोकर लाया जी।
नंद घर बजी बधाई, जसमति मन हरसायाजी।
गाजे घटा घनघोर जी ने दरपो लागे जी।
हरि चल्या गया परदेस हरि को मंदर सूनो रे।
हेली आसोजो सुभ मास, सगत की करां पुजाई।
दसवारो तेवार, रामजी करां अगवाई।
लागो काती मास घरो-घर लछमी आई।
दीवारी तेवार खूब हे खुसियाँ छाई।
गोधन पूजे गोरधन, बलद्या ने सिणगारे।
करे गोधनो छोड़, हीड़ चन्द्रावल गावे घर दुवारे।
हेली लागो अगहण मास सियालो जोबन छड़्यो।
हरिबिन सेजां सून, हीय में बिरहो गढ़्यो।
पोस मास नी सहूँ, हरि बिन थर-थर धूजूँ।
झट आ जावो मेहल, देवता-देवी पूजूँ।
जोबन देह की कांचरी, तन मन जारे।
पोस कंपावे देह, बिरह आंतड़ियाँ बारे।
अलि माघ मास ऋतुराज मदन को हे सनेसो।
जोबन जाग्यो जोस फागणो काई भरोसो।
तीजां आयो नहीं, भादवे कोल चुकायो।
मास सबे गरिगया हरि मेहलां नी आयो।

रित वसंत सरसाई आ जाओ हरि मेहलां।
मंदिर सूनो पड़्यो, रीस ने सुण लां केहलां।
बागाँ झूला पड़्या आवजो अब की तीजां।
खड़ी एकली हरि जी, बिरहा छीजाँ।
बागाँ झूला डाल, फुवारां रेटे भीजां।
या वसंत रित नत नी आवे,
हरि बिन, ऊभी बाग, नहीं रैन सुहावे।
फागण अलि किण काम, हरि बिन होरी फीकी।
बीर, गुलाल, फाग सब खीलाँ जीकी।
हरि आ पउँचो मेहल, मोज फागण की माणा।
सखियाँ करे कलोल, हीवड़ो होवे फाणा॥
हरि आया सखि मेहल, तन-मन हरसायो।
जण रित आया नाथ, वणी रित हरस मनायो॥

ठण्डी हवा चल रही है। ए सखी! वृक्ष में अंकुरण होने लगा है। तांबई पत्तियाँ निकल आई हैं। हवा में वृक्ष सिर हिलाने लगे हैं। चेतमान करने वाला चैत्र महीना लग गया है। गणगौर सुशोभित हो रही है। घर-घर में मेरी सखियाँ गणगौर पूज रही हैं। खेल रही हैं। मेरे हरि (प्रिय) दिखलाई नहीं दे रहे। हरिजी परदेस चले गये हैं। पल-पल उनकी याद आ रही है।

हे सखी! वैशाख महीना लग गया है। उन्हाला (ग्रीष्म ऋतु) आ गया है। हाथों में बीजणे (हाथ पंखे) आ चुके हैं। हरिजी दिखलाई नहीं दे रहे। मेरा दुःख दुगुना हो गया है। मन व्याकुल हो उठा है।

हे सखी! जेठ महीना लग गया है। हरिजी का मन हुलसित है। आषाढ़ लग गया, किन्तु हरि तो नहीं आए। मेरा मन घबरा रहा है। वे मेरे द्वारका के नाथ, मेरे कृष्ण परदेस चले गए हैं। मेरा मन व्याकुल है। मेरे यदुनाथ को किसी कामनी ने कामण (मोहनी मंत्र) करके बहका कर अपने वश में कर लिया है। हरि मन्दिर (महल) सूना है। हरि कहीं भी नहीं दीख रहे। वह दासी कुबजा (सौत) बहुत चतुर है, उसी ने उन पर मोहनी मंत्र चला दिया है।

हे सखी! आषाढ़ महीना लग गया है। बादल गरज कर डरा रहा है। बिजली चमककर तड़ककर चमक रही है। कलेजे को धड़का रही है। हरि के बिना कौन धीरज बँधाये। महलों में बैठी मैं डरती हुई हरिजी को याद कर रही हूँ। हरिजी तो परदेस हैं। मन्दिर सूना है।

हे सखी! सावन महीना लग गया है। बिजली चमक रही है। वर्षा की झड़ी लग रही है। झीनी फुहारें बरस रही हैं। सब तरफ सावन उमंगित हो रहा है। मेरा झीना सालू भींज गया है। मेरी साड़ी भीग गई है। मेरे हरि परदेस चले गये हैं। हरि मन्दिर (महल) सूना हो गया है।

हे सखी! भादव मास लग गया। इसी माह में देवकी ने कृष्ण को जन्म दिया था। वसुदेव जी उन्हें जमुना पार कर गोकुल नंदजी के घर ले गये थे। नंदजी के घर बधाइयाँ बजी थीं और जसोदा मैया का मन हर्षित हुआ था। घनघोर घटा घिर आई है। गरज कर डरा रही है। हरिजी परदेस चले गये हैं। उनके बिना मन्दिर सूना है।

हे सखी! आसोज महीना बहुत शुभ महीना है। शक्ति माता की पूजा करें। दशहरा मनायें। रामजी की अगवानी करें। कार्तिक मास आ गया। घर-घर में लक्ष्मी आ गई हैं। दीवाली का त्योहार खूब खुशियों भरा त्योहार है। गोवर्धन की पूजा करें। गायों और बैलों को पूजें। उन्हें सजाएँ-सँवारें। गौओं की छोड़ खोलें। हीड़ और चन्द्रावल (लोकगीत-गाथा) गाएँ।

अगहन मास लग गया है। सियाला (शीत) जवानी पर चढ़ गई है। हरि के बिना सेज सूनी है। हृदय में विरह गड़ा हुआ है।

पौष माह सहन नहीं हो पाता। ठण्ड से थर-थर धूज (काँप) रही हूँ। हे हरि! झटपट महलों में आ जाओ। आपके आगमन की मनौती में देवी-देवताओं की पूजा कर रही हूँ। कंचुकी में यौवन दहक रहा है। वह तन-मन को जला रहा है। पौष महीना देह को कँपा रहा है। आँतों को शीत से जला रहा है। पाला पड़ रहा है।

हे सखी! माघ महीना ऋतुराज का संदेश लेकर आया है। जोबन जाग गया है। फागण का क्या भरोसा? आप सावन की तीजों पर भी नहीं आये। भादवा में आने का वचन देकर भी नहीं आये। सभी महीने (ऋतुएँ) बीत गये, हरि मन्दिर (महल) में नहीं आये।

हे हरि! अब तो वसन्त ऋतु आ गई है। खूब सरस है। अब तो आ जाओ। मन्दिर सूना पड़ा है। यदि कोई रीस (गुस्सा/ रुसवाई) हो, तो परस्पर मिलकर कह-सुन लेंगे। वसन्त में भी आनन्द की फुहारें आ रही हैं। बागों में झूले पड़े हैं। अब की तीज पर जरूर आना। मैं तब तक भी प्रतीक्षा कर लूँगी। आनन्द के फुहारों में अकेली खड़ी विरह में छीज रही हूँ। आ जाओ, आनन्द के वसन्ती मौसम में, आनन्द के फुहारों में साथ-साथ भीगने का आनन्द लें। (इस मौसम में वर्षा नहीं होती) यह भाव कल्पना है। फागुन आ गया है। हरि बिन होली फीकी है। अबीर-गुलाल और फाग हृदय में कीलों की तरह चुभते हैं। हे हरि! फागुन में आ पहुँचो, फागुन की मौज भोगें। सखियाँ क्रीड़ा करती हैं। मेरा हृदय फटता है। हे सखी! हरि महल में आ पहुँचे हैं। तन-मन हर्षित हो उठा है। जिस ऋतु में स्वामी आ जाएँ, वही ऋतु हर्ष से मनाने योग्य है।

होली खेल, चंगड़ी बजावे, फाग सुणावे रसदार।
अलियाँ रे गलियाँ रंग उड़ावे, फेंके रे अबीर गुरार।
सुण म्रगनैणी सावचेती रइजे, होली खेलण आवसी नवाब।
नैन मति मिलावजे, होंठ मति मुलकावजे।
मति करजे कोई कोल करार।

हंसली घड़ावेगा फीरंगी को छोकरो, कठलो घड़ावेगा नवाब।
सुण म्रगनैणी सावचेती रइजे, होली खेलण आवसी नवाब।
एसी होरी खेलजे ए म्हारी लाजां राखणी,
म्हारी पागां की अकन रेवे लाज।
सुण म्हारी पदमण, सावचेती रइजे, होली खेलण आवसी नवाब।
लहंगो सिवावेगा फिरंगी को छोकरो, लूगड़ी सिवावेगा नवाब।
सुण म्हारी राजली, सावचेती रइजे, नी होवे छेवड़ाती छेड़छाड़।
मति करजे मौज मनवार।
फागण तो आवणो-जावणो ए गोरड़ी,
लाजां तो जावे एकई बार।
लाज गयां तो लाजां मरिजाजे, नीतर होवसी जनम खुवार।
जीवता तो खेलांगा आंगणा में फागणो,
थारी सेलियाँ नोताजे एक हजार।
मति करजे कोल करार।
बाजूबंद तो घड़ावे, फिरंगी को छोकरो, पाजप घड़ावेगा नवाब।
फागण रमजे सावचेतणी हे मिरगा नैणी,
होरी तो खेलजे रंगदार।
सावचेती रइजे, लाजणी सतवंती नार,
दूरां-दूरां फेंकजे गुरार।
एसी होली खेलजे म्रगनैणी म्हारी पागां की रई जावे लाज।

होली खेलते हुए- चंग बजाते हुए रसीला फागुन सुना रहे हैं। गलियों-मोहल्लों में रंग उड़ा रहे हैं और खूब अबीर-गुलाल उड़ा रहे हैं।

हे मृगनयनी! मेरी बात सुन ले। सावधान रहना। आज नवाब होली खेलने आयेगा। तू उससे न तो नयन मिलाना और न होंठों से मुस्काना और न कोई कौल-करार करना। होली खेलने के लिए फिरंगी का छोरा भी आयेगा। वह तेरे लिए हंसली घड़वायेगा और नवाब कठला (गले का आभूषण)। हे मृगनयनी! तू सावधान रहना।

हे मेरी लाज की रक्षक लाजवंती! ऐसी होली खेलना कि मेरी लाज नहीं जाने पाये। हे मेरी पद्मण! सावचेती रहना। तेरे लिए फिरंगी का छोकरा लहंगा सिलवाकर लायेगा और लूगड़ी (चूनरी) नवाब लेकर आयेगा। हे मेरी राजल! सावधान रहना। घूँघट से छेड़छाड़ नहीं हो पावे। तू किसी प्रकार की मौज या मनुहार मत करना।

हे गोरी! फागुन तो आना-जाना है। लाज तो एक बार ही आती है। और एक बार चली गई तो फिर नहीं लौटती। अगर लाज चली जाये तो लाज के साथ ही मर जाना, वरना जीवन बर्बाद

हो जायेगा। अगर जीवित रहे तो अपने आँगन में फाग खेलेंगे। तू अपनी हजार सहेलियों को निमंत्रण दे देना। उस फिरंगी और नवाब से कोई कौल-करार (वचन-वादा) मत करना। तेरे लिए फिरंगी का छोकरा बाजूबंद घड़वायेगा और नवाब पायजेप घड़वाकर लायेगा। फागुन खेलना, किन्तु मृगनयनी! सावधान रहना। होली खूब रंगदार खेलना।

हे सतवन्ती, हे लाजवन्ती! सावचेत रहना। गुलाल दूर-दूर से ही फेंकना। हे मृगनयनी! ऐसी होली खेलना कि मेरी पाग की इज्जत बची रही।

केसरिया सायब, भलो तो बिसार्‌यो म्हारो नाम।
नाम बी बिसार्‌यो सायब, गाम बी बिसार्‌यो,
भूलि गया म्हारो धाम,
केसरिया सायब, भलो तो बिसार्‌यो म्हारो नाम॥
एक सुमेलो करि गया जी, चल्या गया परदेस।
आवण केह आया नहिं, जी कोई, नी भेज्यो सनेस॥
रेह-रेह आवे सायबा, फेर मिलण की आस।
कठे सनेसो मोकलू, परदेसाँ के वास॥
सुगन सनेसो जाणजो, जी लाग्या सुभ का मास।
देही में हलचल वई, बंधी नेह की आस।
रित वसंती मेहकी घणी, भीतर उड़े सुवास।
बार-बार एसो लगे, सायब बेठ्या पास॥
थें क्युँ भूल्या सायबा, सैजो, सुगनो गाम।
केसरिया सायब, भलो तो बिसार्‌यो म्हारो नाम॥
हगरी रितुआँ बेरुती, कद आय कद जाय।
भीतर रित वसंत की खुसबू, मन हरसाए॥
रित चेती अर फागणी, रितुआँ की सिरमोर।
म्हारे भीतर खिंडरई, सायब जी रित ओर॥
एक सनेसो जाणजो, वेगा आजो राज।
आयाँ ती सगुनो बणे, आयाँ सरे सुकाज॥
केसरिया सायब, भलो तो बिसार्‌यो म्हारो नाम॥
नाम बी बिसार्‌यो सायब, गाम बी बिसार्‌यो,
भूलि गया म्हारो धाम।
केसरिया सायब लागो तो लागो दूजो मास।
मनड़ो अवर-भँवर सो डोले, जिव अबकाइयाँ आय।
मास तीसरो लागताँ जी सायब, जीवड़ो खावा ने ललचाय॥
चोथो जो लागो मास सायबा, लिम्बूड़े मन चाले।

भोरी नणदल, अमी-आमली, खोरा में आ घाले।
थें वेता तो घाट राबड़ी, दही-छाछ रंदाती।
थांके बाइने छाने-छाने घाट-राबड़ी खाती॥
मास पाँचवों लागो सायब, मीठी केरी भावे।
खाटी-मीठी आम-आमली, घणा हबड़का आवे।
दूध-खोपरो कसतर खाऊँ, मन छायो नी केती।
थें वेता तो छाने-छपके, मन भायो चख लेती।
छटो-सातवों मास सायबा, घेवर की मन आवे।
मीठो-मीठो कलाकंद अर दूध जलेबी भावे।
आन लाग्यो मास आठमो, नमो महिनो लागो।
परदेसां में सूता वो तो वेरां चेती जागो॥
आदी राताँ पीड़ उठे तो कूण दायी ने लावे।
कुण सूता सासू ने, सायब, झट-पट जा र जगावे।
रितुआँ तो नत आ जावे जी, या रितु फेर नी आवे।
म्हारी रितुआँ राजल, रायबर, झट आ पऊँचो गाम।
थें आयाँ रितुआँ खिंड जासी, आजो तुरत मुकाम॥
केसरिया सायब, भलो तो बिसार्‌यो म्हारो नाम॥

स्रोत-(1) गायत्री भाभी, मालवी सेमली।
(2) इसी आशय का एक लोकगीत डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, उज्जैन।

हे केसर्‌या स्वामी (केसरिया पाग वाले स्वामी)! आप मेरा नाम तक भूल गये। नाम के साथ-साथ मेरा धाम (घर) और गाँव तक भूल गये।

एक मिलन करके परदेस चले गये। आने का विश्वास दिला गये, किन्तु न तो आप आये और न संदेशा भेजा। हे स्वामी! आपसे बार-बार मिलने की आशा बनती है। कहाँ तो मैं संदेश भेजूँ? कहाँ मिलूँ? आप तो परदेस में हैं।

मैं आपको एक शुभ संदेश दे रही हूँ। उसे जान लो। मुझे शुभ के महीने लग गये हैं। देह के भीतर विचित्र हलचल होने लगी है। एक आत्मीय स्नेह की आशा जाग उठी है। भीतर-भीतर वसन्त ऋतु महक उठी है। उसकी सुगन्ध भीतर-भीतर महक रही है। मुझे बार-बार ऐसा लगने लगता है, मानो आप मेरे निकट बैठे हों। हे स्वामी! आप अपना ही यह सरल, सीधा और सहज स्वभाव वाला गाँव क्यों भूल गये? मेरे भीतर जो ऋतु महक रही है, उसकी बहार के सामने सभी ऋतुएँ बेऋतुएँ, बेमौसमी लगती हैं। ये तो आती-जाती रहती हैं। भीतर जो वसन्त ऋतु है, वह मन को हर्षित कर रही है। भीतर जो बहार है, वह तो सभी ऋतुओं से भिन्न है। मेरा एक संदेश जान लो। जल्दी आ जाओ। हे राज! आपके आने से सारे शगुन बनेंगे और सारे काम सकार्थ और शुभ होंगे। हे केसरिया स्वामी! मुझे दूसरा महीना लग गया है। मन विचलित हो रहा है। अबकाइयाँ

(उल्टी होने जैसी सम्भावना) आ रही हैं। तीसरा महीना लग गया है। जीव खाने का लालच करता है। चौथा महीना लगते ही हे स्वामी! निम्बू खाने का मन हो रहा है। मेरी भोली-भाली ननद अमियाँ (कच्ची केरी) और इमली मेरी गोद में डाल जाती है। आप यहाँ होते, तो मैं दही और खट्टी छाछ मिलाकर मक्का की घाट राँदती (पकाती)। आपके बहाने से छुपे-छुपे मैं भी घाट-राबड़ी खा लेती। खाने का खूब मन कर रहा है। पाँचवाँ महीना लग गया है। हे स्वामी! मीठा आम खाने को मन करता है। खट्टमिट्ठी केरी (आम) और इमली खाने के लिए मन में खूब ललचा रहा है।

दूध खोपरा खाने का मन हो रहा है, किन्तु मनचाही इच्छा किसी से नहीं कहती हूँ। आप यहाँ होते तो चुपके से मनभाया चख लेती। छठे-सातवें महीने में हे स्वामी! घेवर (एक मिठाई का नाम), कलाकन्द और दूध-जलेबी खाने की इच्छा होती है।

हे स्वामी! अब आठवाँ और नौवाँ महीना आ लगा है। हे स्वामी! आप यदि परदेस में सो रहे हों, तो जाग जाओ। समय रहते आ जाना। अगर आधी रात में मुझे पीड़ा (प्रसव वेदना) हुई, तब कौन दाई को लेने जायेगा? सो रही सासु को झटपट कौन जगायेगा? ऋतुएँ तो सदा आती-जाती रहती हैं। यह ऋतु फिर नहीं आती। मेरी इस ऋतु पर हे राजल! हे स्वामी! झटपट गाँव आ जाओ। आपके आते ही ऋतुओं में बहार आ जायेगी। आप तुरन्त अपने मुकाम पर आ जाना। हे केसरिया स्वामी! आप तो मेरा नाम तक भूल गये।

लोक कवयित्री 'सुन्दर' के ऋतुपरक दोहे

लोक कवयित्री 'सुन्दर' वर्तमान नीमच जिले (दशपुर जनपद) की नीमच तहसील के गाँव (जागीर) जीरन की रहने वाली थी। उनका समय सत्रहवीं शताब्दी ईस्वी माना जाता है। वह जीरन जागीरदार की राज कलावंत (ढोलन) थी। लोक मान्यता के अनुसार 'सुन्दर' जागीरदार की रखैल भी थी। 'सुन्दर' के रूप, यौवन और गायकी के चर्चे पूरे क्षेत्र में प्रचलित थे। दूर-दूर के जागीरदार, सामन्त और अन्य रईस उसे देखने, सुनने और पाने के लिए सदा लालायित रहते थे। सुन्दर एकनिष्ठ थी। गायकी और सृजन ही उसका धर्म था।

किसी एक अवसर पर कोई पठान सरदार उसकी चर्चा सुनकर जीरन ठिकाने आया। मुजरा हुआ। सुन्दर की गायकी और रूप-सौन्दर्य से मोहित उस पठान ने जीरन जागीरदार पर दबाव बनाकर उसे अपने हरम में डाल लिया। उसके बाद उसका नाम 'सुन्दरकली' हुआ। सुन्दर के ही अन्त:साक्ष्य के अनुसार 'सुन्दर' ने नाम तो बदल लिया, धर्म-ईमान नहीं बदला। उसने न तो पठान से निकाह किया, न धर्म परिवर्तन।

धरम करम छोड़ूँ नहीं, दगो न लाऊँ चीत।
सुंदर जिव नीछर करूँ, हिरदै राखूँ मीत॥
सिजदा करूँ कुरान ने, माथे धरूँ पुरान।
सुन्दर को निहचो अटल, सब ती बड़ो ईमान॥

'सुन्दरकली' की छाप से भी उसने काव्य रचना की। पश्चात् की रचनाओं में पूर्व वाली 'सुन्दर' की उमंग और तरंग नहीं दीख पड़ती। 'सुन्दर' छाप की म्हाड़ें (शृँगार साखियाँ) कलावंत समाज में खूब गाई जाती हैं। मालवी लोक साहित्य की वाचिक परम्परा में उपलब्ध 'सुन्दर' की शृँगार साखियाँ मालवी के लोक साहित्य की अनुपम, अद्‌भुत एवं अमूल्य निधि हैं। इनका संकलन अभी भी अपर्याप्त हुआ है। इस संग्रह में सुन्दर के ॠतुपरक एवं मासपरक दोहों को संकलित किया गया है।

वरसालो बहुत भात हे, भींजड़्यो घर आय।
सुंदर भींज्या साहिबा, भींच-भींच गर लाय॥ 1॥

वर्षा ॠतु बहुत भाती है। प्रियतम जब भीग कर घर आता है, तब वह खूब भींच-भींच कर बार-बार गले लगाता है।

झर-झर बरसे मेवलो, गगणा चमके बीज।
सुन्दर कसण कसीजिया, आओ सावणी तीज॥ 2॥

जोर से बरसात हो रही है। आकाश में बिजली चमक रही है। जोबन (यौवन) के उभार के कारण कंचुकी की कसनियाँ बार-बार तंग होती जा रही हैं। हे साजन! सावन की तीज पर आ जाओ।

सुन्दर परणी भूलया, करी चाकरी नीज।
देसारी घुड़ले छड़ो, आओ सावणी तीज॥ 3॥

हे साजन! अपनी इस ब्याहता को तो बिसार दिया और चाकरी जैसे नीच काम में लग गये। चाकरी छोड़कर देसावरी घोड़े पर सवार होकर सावणी तीज पर यहाँ आ जाओ।

सुंदर छायी वादरी, उमगण लागो जीव।
तरसण लागी गोरड़ी, कद्यां मिलोगा पीव॥ 4॥

आकाश में बादल छाने लगे हैं। मन उमंगित होने लगा है। गोरी प्रिय के बिना तरसने लगी है। हे प्रियतम! कब मिलन होगा?

अवलां तो जोबन नसो, दूजो चढ़्यो सनेह।
सुंदर तीजो सावणो, धूजण लागी देह॥ 5॥

पहले ही यौवन का नशा, दूसरे प्रेम का खुमार। तीसरे सावन का सुहाना प्रसंग इन सबको सहन करना बहुत कठिन हो रहा है। देह में कंपकंपी छूट रही है।

मेवलो बरसे डील पे, धुवों बणे उड़ि जाय।
सुंदर या ला जद ठरे, पिव आवे गल लाय॥ 6॥

देह में यौवन का ताप इतना बढ़ गया है कि जब देह पर वर्षा का पानी पड़ता है, तब वह धुआँ बनकर उड़ जाता है। (सुन्दर कहती है-) यह आग तभी शान्त (ठंडी) होगी, जब प्रियतम गले से लगा लेंगे।

सुंदर जापा ती उठी, बरसा भींजी नार।
पिव देखे जोबन चढ़े, पीव लगावे पार॥ 7॥

प्रसूती से निवृत्त (पूर्ण स्वस्थ) और बरसात में भीग कर आई जब प्रियतम के निकट पहुँचती है, तब उसका यौवन मदमत्त हो उठता है। उसके उस यौवन आवेग को प्रियतम ही पार लगा सकता है।

सुंदर सावण आवयो, पी बैठ्या परदेस।
तीजां खेलण आवजो, मति भूलजो एस॥ 8॥

सावन का महीना आ गया, प्रियतम परदेस में हैं। हे प्रियतम! इस बार सावणी तीज खेलने जरूर आना। भूल मत जाना।

सुन्दर, सावण आवियो, बाँधो पाग सुरंग।
साजन सेजां माणजो, लीलां चरे तुरंग॥ 9॥

सावन आ गया है, सुरंगी पाग बाँध लो और हे साजन! सेज का सुख भोगने के लिए तत्काल आ जाओ। आपका घोड़ा यहाँ हरी दूब चरेगा और आप सेज सुख भोगना।

काजल मल्या आँसुड़ा, पाती लिखूँ सजाय।
सुन्दर सावण सारजो, लीजो कंठ लगाय॥ 10॥

काजल में आँसू मिलाकर प्रियतम को सुन्दर पत्र लिख रही है। हे साजन! सावन मास सरस हो गया है। (घर) आ जाओ और मुझे कण्ठ से लगा लो।

सुंदर हावण उमग्यो, बरसे रम-जम नेह।
मूमल गावे कामणी, हिवड़े उमगे नेह॥ 11॥

सावन सरस हो गया है। रिमझिम मेह बरस रहा है। ऐसे सरस अवसर पर प्रियतम की याद आ रही है। कामणी 'मूमल' प्रेमकथा के विरह-गीत गा रही है। हृदय में स्नेह उमड़ रहा है।

साजन सेजा माण लो, यो जुबनो दन चार।
सुन्दर सावण लागतां, झट आ जाओ द्वारा॥ 12॥

हे साजन! सेज का सुख भोग लो। यह यौवन चार दिन का ही है। सावन लगते ही तत्काल घर के द्वार पर आ पहुँचो।

सावण में आया नहीं, तीजां लागी मेख।
सुंदर दन गण-गण थगी, घसी आंगरा रेख॥ 13॥

प्रियतम सावन में नहीं आया, तीजों के सावन-त्योहार में विघ्न पड़ गया। मैं दिन गिनते-गिनते थक गई। अँगुलियों की रेखाएँ तक घिस गयीं।

सावण में आवण कह्यो, हुइ वचना में चूक।
सुन्दर बोले मोर्‌यो, उठे कालजे हूक॥ 14॥

सावन माह में आने का वादा किया था। वचनों में चूक हो गई है। सुन्दर कहती है, जब भी मोर बोलता है, कलेजे से हूक उठती है।

बीर गुलाल उड़ावताँ, सुन्दर का बड़भाग।
गंगाजल घोड़े-चढ़ूयाँ, खेलण आजो फाग॥ 15॥

हे साजन! मेरे सुहाग-भाग आप गंगाजली अश्व पर सवार होकर फाग खेलने अवश्य आ जाना। आपके आने से मेरा सौभाग्य उदय होगा।

फागण की चट चाँदणी, सूती पलंग बिछाय।
सुंदर, साहिब आविया, लीयो कंठ लगाय॥ 16॥

फागुन मास की चटक चाँदनी में पलंग बिछाकर सो रही थी, तभी साजन आ गये और कण्ठ से लगा लिया।

फागण रंत वसंत की, नव परणी नव प्रीत।
सुंदर विरहण गोखड़े, परदेसाँ हे मीत॥ 17॥

फागुन में वसन्त की ऋतु। नई नवेली ब्याहता और नया-नया प्यार। ऐसी स्थिति में साजन परदेस चला गया। विरहन गोखड़े (खिड़की) में खड़ी-खड़ी प्रतीक्षा कर रही है।

फागण रंत वसंत हे, नव परणी नव नेह।
सुन्दर कसतर सै सके, चार अगन इक देह॥ 18॥

एक तो फागुन, दूसरी वसन्त ऋतु, तीसरी नई ब्याहता, चौथी नई-नई प्रीत। सुन्दर कहती है, बेचारी एक देह चार-चार ताप (अग्नि) कैसे सहन करे?

नव परणी नव जोबणी, पीयरइया को वास।
सुंदर फड़के फागणों, हिवड़ो घणो उदास। 19॥

एक तो नई-नई ब्याहता, फिर नया-नया यौवन, तीसरा पीहर में वास। सुन्दर कहती है, इस पर फागुन उमंगित हो रहा है। हृदय बहुत उदास है। (प्रियतम निकट नहीं होने से उदासी छा रही है।)

वें तो फड़क्यो फागणो, यें जोबन भरपूर।
सुन्दर गोरी कचपची, पिव परदेसां दूर॥ 20॥

एक तरफ तो फागुन उमंगित हो उठा। इधर भरपूर यौवन की मादकता। सुन्दर कहती है- गोरी की उम्र भी अधपक्की है, किन्तु कचपचा रही है। ऐसी मादकता होने पर प्रियतम परदेस में है।

मत जा गोरी पीअरे, ढब जा दन दो चार।
सुन्दर फागण खेल लाँ, पाछे कराँ विचार॥ 21॥

हे गोरी! तू अभी पीहर मत जा। दो-चार दिन रुक जा। फागुन खेल लें, फिर जाने का विचार करना।

वाचिक परम्परा से प्राप्त

चेते चितवन सिरसजी, बिरछ गया अंकराय।
सुन्दर हिवड़ो उमग्यो, पिवड़ो चेते आय॥ 1॥

चैत्र मास में चितवन में रस भर गया है। चंचलता आ गई है। वृक्ष में नई कोपलें आ गई हैं। हृदय में उमंग उमड़ने लगी है। ऐसे में प्रियतम की याद आने लगी है।

बुरी करी रे जेठ थें, तपयो बलती झार।
सुंदर पिव सेजां छड़े, तुरतां होय निढार॥ 2॥

अरे जेठ! तूने बहुत बुरा काम किया है। इतनी जलती झाल जैसा तपने लगा है। तेरे ताप के कारण प्रियतम सेज पर नहीं चढ़ते। उन्हें सेज नहीं सुहाती। सेज पर आते ही ताप से घबराकर निढाल हो जाते हैं।

क्युं दुख देवे जेठयो, क्युं हिवड़ो धड़काय।
सुंदर विरह अगन में, क्युं तू लाय लगाय॥ 3॥

अरे जेठ! तू मुझे क्यों दुखी कर रहा है। मेरा हृदय क्यों धड़काता है। मेरे विरह की आग को तू क्यों और भड़काता है।

मौसम को कई माजनो, रितुआँ की कई आस।
सुन्दर घर होवे धणी, सो रितु सरस सुवास॥ 4॥

मौसम का क्या अस्तित्व, ऋतुओं की क्या आशा? सुन्दर कहती है- जिस ऋतु या महीने में प्रियतम घर पर होते हैं, वही ऋतु सरस और सुहानी होती है।

रे असाढ़ घण गरज तू, सूती पिव के साथ।
सुन्दर जद धूजूं दरप, पिव जी भरले बाथ॥ 5॥

हे आषाढ़! तू खूब गरज ले। आज तो तेरा गरजना मेरे हित में है। जैसे ही मैं तेरी गर्जना से डर कर काँप उठती हूँ। प्रियतम मुझे अपनी बाँहों में भर लेते हैं।

रे असाढ़ बटमार्‌यो, क्युं धड़कावे जीव।
सुंदर, जुबनो कचपचो, परदेसाँ हे पीव॥ 6॥

अरे बटमार आषाढ़! तू क्यों मेरा हृदय धड़काता है। मेरा यौवन गदराया हुआ है और प्रियतम परदेस में हैं।

ए असाढ़ सुण ले तनक, साजन हे वण पार।
सुन्दर पिव ने चेत कर, आ जावे इण पार॥ 7॥

हे अषाढ़! तनिक मेरी बात सुन ले। मेरे साजन उस पार हैं। तू उन्हें जाकर चेतमान करके मेरी सुध दिलाकर कह दे कि, इस बार जरूर घर आ जायें।

सावण तीजां नी रम्या, बागाँ झूला डार।
सुन्दर फागण आवजो, होली के तेवार॥ 8॥

हे प्रियतम! सावन की तीज पर नहीं आये। बागों में झूला नहीं हो पाया, किन्तु फागुन में होली के त्योहार पर जरूर आ जाना।

सावण सरस्यो बाग में, जोबन सरस्यो डील।
सुन्दर पिव परदेस्याँ, पचा कोस सो मील॥ 9॥

बाग में सावन की बहार फैल रही है। देह में यौवन गदरा रहा है। प्रियतम पचास कोस (सौ मील) दूर परदेस में है।

बागाँ झूला झूलती, संग सेलियाँ लार।
सुंदर पिव बिन मुझ लगे, सांवण्यो बीमार॥ 10॥

प्रियतम संग होते तो सहेलियों के साथ बागों में झूला झूलती, मन में उल्लास भरा रहता। प्रियतम के बिना तो मुझे सावन बीमार लगता है।

धन-धन मइनो भादवो, जन्मया क्रसन मुरार।
सुन्दर वेगां आ भलो, सांवरिया भरतार॥ 11॥

भादवा महीना धन्य है, जिसमें कृष्ण मुरारी ने जन्म लिया। सुन्दर कहती है- हे मेरे साँवरिया भरतार! शीघ्र आ जाओ।

घन गरजे घण भादवे, बीजू चलक कटार।
सुंदर तलफे सेज पे, पिवजी परले पार॥ 12॥

भादवा में बादल घनघोर वर्षा करते हैं। बिजली चमचमाती हुई कटार जैसी लगती है। सुन्दर, सेज पर अकेली तड़प रही है प्रियतम।

काती तुरसां सेवती, पीपर लेती पूज।
सुन्दर देह वटार ने, क्युं होया अणबूज॥ 13॥

मैं कार्तिक में तुलसी की पूजा करके तथा पीपल की पूजा करके अपना जन्म व्यतीत कर लेती। हे प्रियतम! आप मेरी देह अपवित्र करके अनजान क्यों बन गए।

पीपर पूजूँ नेम ती, तुरसाँ पूजूँ सींच।
सुन्दर सावण आ पुगो, पिवजी तीजां बीच॥ 14॥

मैं नियमपूर्वक पीपल पूजती हूँ। तुलसी को जल सिंचन करती हूँ। हे प्रियतम! आप सावन की तीज तक आ जाओ।

काती न्हाऊँ नेम ती, तुरसाँ सीचूँ रोज।
सुंदर नित वरतां रहूँ, नौ कन्या ने भोज॥ 15॥

मैं कार्तिक स्नान करती हूँ। नियम से तुलसी को जल सींचती हूँ। नित व्रत करती हूँ। नित नौ कन्याओं को भोजन करवाती हूँ। यह सब आपके लिए करती हूँ।

अवलां तो मद जोबन्यो, दूजो फागण जोर।
सुंदर पिव होरी रम्या, करी ओर की ओर॥ 16॥

एक तो पहले से ही जोबन का मद चढ़ा है, दूसरा फागण ने जोर का उमंगित उत्पात मचाया है। ऐसे में प्रियतम ने मेरे संग होली खेली और कुछ का कुछ कर दिया।

सुन्दर फागण खेलतां, उड़्यो खूब गुलाल।
साजन ने बाथां भरी, कर दी मालामाल॥ 17॥

सुन्दर कहती है कि- फागुन में खूब गुलाल उड़ी। होली खेलते-खेलते (फागुन खेलते-खेलते) साजन ने मुझे बाँहों में भर लिया और (प्रेम) सम्पन्न कर दिया।

फागण जोबन पीवजी, तीनइ एक सरूप।
सुन्दर तनकइ छेड़तां, तपे जेठ ज्युँ धूप॥ 18॥

फागुन, यौवन और प्रियतम - तीनों एक समान हैं। तीनों को तनिक-सा भी छेड़ दो, तो मदमस्त हो जाते हैं। जैसे जेठ में धूप प्रखर हो जाती है, उसी प्रकार ये तीनों भी हो जाते हैं।

फागण चूक्यो पिव, रमण, वानर चूक्यो डार।
सुन्दर पछतायाँ करे, कूट्याँ करे कपार॥ 19॥

फागुन मास में यदि प्रेमी गोरी से रमण करने का अवसर चूक जाए और बन्दर डाल का लक्ष्य चूक जाये, तब पछताने के अलावा कुछ नहीं हो सकता। चूका अवसर दुबारा हाथ नहीं आता। ऐसा व्यक्ति माथा ठोक-ठोककर पछताता ही रह जाता है।

रित तो कुदरत को करम, रित जीवण री आस।
सुन्दर रितुआँ सावगी, साजन को घर वास॥ 20॥

ऋतुएँ तो प्रकृति की कृपा हैं। ऋतुएँ जीवन की आशा हैं। ऋतुएँ तभी सकार्थ होती हैं, जब प्रियतम की घर में उपस्थिति हो।

रित वसंत उमगी उमंग, तन-मन में सरसाय।
सुन्दर रस लोभी भंमर, रस पी-पी मदकाय॥ 21॥

वसन्त ऋतु उमंगित होकर बहार से खुशनुमा हो गई है। यह तन और मन को सरस बना रही है। रस के लोभी भँवरे, रस पी-पी कर मदमस्त हो रहे हैं।

सुंदर सरद सुहावणी, सहजी, सहजी सीत।
उर उमगे ऊमस मिटे, रुचे नेह की रीत॥ 22॥

सुन्दर कहती है कि- शरद बहुत सुहानी ऋतु है। इसमें सुहाती-सुहाती ठंड पड़ने लगती है। हृदय उमंगित हो जाता है। ऊमस कम पड़ जाती है। स्नेह की मनुहारें मनभावन होने लगती है।

रित हेमंत मन भावनी, पिव सेजाँ सरसाय।
सुन्दर सीरक ओढ़ ने, बाथाँ भर सो जाय॥ 23॥

हेमन्त की ऋतु मनभावन है। प्रियतम सेज को सरस बनाते हैं। सुन्दर कहती हैं- रजाई ओढ़कर मुझे बाँहों में भरकर सो जाते हैं।

थर-थर धूजूँ सिसिर में, पिव बिन हिव अकलाय।
सुन्दर पिव बाथाँ भरे, जद ऊषण्यो आय॥ 24॥

शिशिर ऋतु में ठंड के कारण थर-थर काँप रही हूँ। प्रियतम के बिना मन व्याकुल हो रहा है। सुन्दर कहती है- प्रियतम बाँहों में आबद्ध कर लें, तब ही ऊषण्यो (उष्णता) आ पायेगी।

ग्रीसम तू घण बेरड़ी, सायब छड़े न सेज।
सुन्दर तपसो जेठ को, रंग-रस को परहेज॥ 25॥

अरे ग्रीष्म ऋतु! तू बहुत बैरन है। तेरे कारण सायब (प्रियतम) सेज पर नहीं चढ़ते। तेरी जेठ की भीषण गर्मी हमारे रंग-रस में बाधा डालती है। प्रियतम की सेज पर चढ़ने की इच्छा ही नहीं होती।

वरसालो जद सुगनियो, सायब होवे पास।
धार-धार वरसइं करे, सुन्दर चारइ मास॥ 26॥

चौमासा (वर्षा ऋतु) तभी सुखदाई होती है, जब प्रियतम साथ में हों। तब तो तू भले ही चारों महीने जोरदार ढंग से बरसता ही रह।

सावण में सरस्या नहीं, भादव करी न चाह।
सुन्दर फागण नी रम्याँ, होयो जनम तबाह॥ 27॥

श्रावण में रसिकता नहीं दिखाई, भादवा में भी रमण की चाह नहीं रखी तथा फाल्गुन में भी होली नहीं खेली, तब तो जीवन व्यर्थ में नष्ट हुआ जानना चाहिए।

रित तो आणी जावणी, मास बरस को रंग।
सुन्दर सोइ रित सोवणी, जिण रित साजन संग॥ 28॥

ऋतुएँ तो आती-जाती रहती हैं। यह तो महीनों और सालों की रंगत (प्रभाव) है। सुन्दर कहती है- सुहानी ऋतु तो केवल वही होती है, जिस ऋतु में प्रियतम साथ हों।

सुन्दर के ये दोहे अबोले रहकर भी मुखर बने रहते हैं। ऐसा लगता है कि ये अपना संदेसा नयनों की भाषा से प्रसारित करते हैं।

नयन कहीं नयणा सुणी, नयणा विया निहाल।
सुंदर नयणा कहिगया, हिवड़ा रो सब हाल॥ 29॥

नयनों ने कहा, नयनों ने सुना, नयन प्रफुल्लित हो उठे। सुन्दर कहती है- नयनों ने अपने हृदय की बात कह दी। सारा हाल मौन रहकर भी प्रेषित हो गया।

स्रोत-आशाराम भुवाई, रीछालाल मुहाँ, गुलकारीबाई दमामी, सजना।

निमाड़ी ऋतु गीत

वसन्त निरगुणे, रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी'

ग्रीष्म गीत

आवसे रे पिया फागुण मयनो, हमरा दादाजी लेणऽ आवसे।
मति जाओ गोरी फागुण मयनऽ, किनका सी खेलां हम होळ्ई।
काकी भाभी सी पिया खेलो होळ्ई, सौकन पर पिचकारी।
आवसे रे पिया फागुण मयनो, हमरा मामाजी लेणऽ आवसे।
मति जाओ गोरी फागुण मयनऽ, किनका सी खेलां हम होळ्ई।
काकी भाभी सी पिया खेलो होळ्ई, सौकन पर पिचकारी।
आवसे रे पिया फागुण मयनो, हमरा वीराजी लेणऽ आवसे।
मति जाओ गोरी फागुण मयनऽ, किनका सी खेलां हम होळ्ई
काकी भाभी सी पिया खेलो होळ्ई, सौकन पर पिचकारी।
आवसे रे पिया फागुण मयनो॥

– स्रोत–श्रीमती हेमलता उपाध्याय–खण्डवा

हे स्वामी! इस बार फागुन के महीने में मेरे पिताजी मुझे लेने के लिए आयेंगे और मैं अपने पीहर जाऊँगी। पति–पत्नी से कहता है– हे गोरी! फागुन के मदमस्त महीने में तुम मायके मत जाओ। हम किसके साथ होली खेलेंगे? पत्नी कहती है– काकी और भाभी से होली खेलना और मेरी सौत जो है, उस पर रंग डालना। हे स्वामी! इस बार फागुन के मदमस्त महीने में मेरे मामाजी मुझे लेने के लिए आयेंगे और मैं अपने मैके में होली खेलूँगी। पति कहता है– हे प्रिये!

फागुन के मदमस्त महीने में तुम पीहर मत जाओ। हम किसके साथ होली खेलेंगे, किस पर रंग डालेंगे? पत्नी कहती है- तुम्हें होली खेलने का इतना ही शौक है, तो तुम्हारी काकी और भाभी मौजूद हैं, उनसे होली खेल लेना और रंग डालने का शौक है तो मेरी सौतन पर रंग डालकर अपनी मन की भड़ास निकाल लेना। हम तो हमारे मैके जरूर जायेंगे। हे स्वामी! फागुन के मदमस्त महीने में मेरे भाई मुझे लेने आ रहे हैं और मैं उनके साथ अपने मैके जाऊँगी। पति-पत्नी को मना करते हुए कहता है- फागुन के मदमस्त रंगीले त्योहार पर तुम मैके मत जाओ। हम किसके साथ होली खेलेंगे? गोरी कहती है- काकी, भाभी से होली खेल लेना, सौतन पर रंग डालना। पत्नी होली के बहाने पति को सौतन का उलाहना देती है।

हाँ, रे हो बालम तुम बिन फागुण आयो॥ टेक॥
पर कऽ फाग म्हारा पीयू संग खेली
भर मुट्ठी उड़ऽरे गुलाल, ललना।
अबके फाग म्हारा पियू घर नाहीं,
कुणका संग खेलूंगा फाग हो।
हो बालम तुम बिन फागुण आयो॥
प्रीतम कऽ हाऊँ पत्रिका लिखूं, नयन रया ललचाय, ललना।
आसपास हरि नाम लिख्योज, सुख-दुख लिख्यो नहीं जाय।
हो बालम तुम बिन फागुण आयो॥
राधिका ना आंगण वृक्ष चन्दन ना, उड़-उड़ बैठे काग, ललना।
उड़-उड़ काग सुलेक्सणा रे, म्हारा पियूजी आवेगा आज।
हो बालम तुम बिन फागुण आयो॥
झूठा रे ब्राह्मण, झूठी रे पोती, झूठा ते बन केरा काग, ललना।
आसी-आसी कोस म्हारा पियूजी बसत है, कहाँ से आवेगा आज।
हो बालम तुम बिन फागुण आयो॥
फागुण मास पपैया रे बोलऽ, झींणकर बोलऽ ताल, ललना।
भाग मिल्यो हरी बंसी को स्वामी, रुखमणी कलेवो मनाय।
हो बालम तुम बिन फागुण आयो॥

हे स्वामी! आपके बिना फागुन फीका लग रहा है। पिछले साल मैंने स्वामी के साथ होली खेली थी। मुट्ठी भर-भर कर गुलाल उड़ाया था। अब मेरे स्वामी घर नहीं हैं, किनसे होली खेलूँ? प्रियतम को मैं पत्रिका लिखूँ तो मेरे नयनों में नीर भर आता है। आसपास हरि नाम लिखा है। सुख और दुःख लिखा नहीं जा रहा है। राधिका के आँगन में चन्दन का वृक्ष है, उस पर आकर कौवा बैठा है। हे सुलक्षण कौवे! उड़कर मुझे शगुन बता कि मेरे स्वामी कब आयेंगे। तो अब जल्दी से तू उड़ जा। सारे ब्राह्मण झूठे और झूठी उनकी बातें हैं। झूठा है वन में रहने वाला कौवा। मेरे स्वामी बहुत दूर चले गये हैं। वे आज कैसे आ सकते हैं? फागुन माह में पपीहा बोल

रहा। झींणे-झींणे वाद्य बज रहे हैं। दुर्भाग्य से ऐसा समय आता है कि कृष्ण की बाँसुरी की मधुर तान नहीं सुनने को मिल रही है। रुकमणी कृष्ण बिना भोजन कर रही है। हे स्वामी! तुम्हारे बिना फागुन महीना फीका लग रहा है।

मोहनी बनके, महाराज आये नंदकुमार,
छली बिरज की नार॥
चौक: *माथा पर बिन्दी महाराज केशर की आड़,*
चोटी पाटी पाड़ी जड़ाव टीकी।
जगमग ललाट नैन निम्बू की फाड़,
नथ बेसर बुल्लाक नाक मऽ लटकावऽ अपार।
दोहा: *कर्णफूल झूली रह्या झूमी-झूमी, श्रवणन बीच गुलजार।*
गळा बीच गलसी नऽ महाराज, मोती नऽ का हार।
छली बिरज की नार॥
चौक: *नैन बीच सुरमो, काजल की रेख।*
सोनेरी गयणा जड़ी दन्त नकछक पहिन्या, बना मनहारी भेक।
दोहा: *हरि-हरि चूड़ियाँ पहिन काँच की अंगिया बूटेदार।*
गुलगच का लहेंगा, चटकिलो आड़ो चीर जरतार।
पांव मऽ पायल महाराज, झनन झनकार।
छली बिरज की नार॥
चौक: *चल्या बरसाने महाराज, वो नंदकिशोर, चंचल चपल चकोर।*
सुणी नऽ सब सखियन महाराज।
सिमटी चहुँओर।
बिरज भान की पोर॥
दोहा: *राधा प्यारी लगी पूछणऽ कौन तुमारो गाँव।*
किन्न पठाई, कसी आई, कहो तुमारो नाम।
घूँघट पट खोलो महाराज, बोलो करऽ प्यार।
छली बिरज की नार॥
चौक: *कृष्णाजी बोल्या महाराज, हँस-हँस करऽ वात।*
चलो हमारी साथ।
नंद का घर चलो महाराज, जागरण छे रात।
आज होय परभात॥
दोहा: *बरसाना सी चली राधिका, मन मोहन का संग।*
छल बल करके लाया महेल मऽ, लूट लिया रस रंग।
पांव पड़ी नऽ महाराज, छूटी भुवन सार।

छली बिरज की नार॥

चौक: *मन्नू बनवारी महाराज गावऽ प्रेमचंद*
दौलत सिह का छंद।
कन्हैया किसन महाराज, गावऽ कड़ी बंद।
मगन प्रेम आनन्द॥

दोहा: *गंगा नायक ज्वाल रंगेला, दुश्मन का हरि आप।*
भाऊ नारायण कय जबर छे, ध्यान सिंह विसराम।
पूनम चंद दुलीचंद महाराज, गावऽ ऊँकार।
छली बिरज की नार॥

– स्रोत–महंत भँवरदास–दवाना

मनमोहन कृष्ण, नंद के कुमार ने अपने मन में विचार किया कि मैं भी गोपिका का रूप धारण करूँ और सभी ब्रजबालाओं को ठग कर आऊँ। तभी उन्होंने अपना स्वरूप बदला। माथे पर बिंदिया लगाई, जो केशर से युक्त है। फिर अनेक चोटियाँ बनाकर उन्हें बाँधा। इसे 'माथा गूँथना' या 'चोटी पाटी' कहते हैं। चोटी बनाने के बाद माथे पर रत्नजड़ित बिंदिया लगाई, जो उनके चेहरे की सुन्दरता को बढ़ा रही है। कान्हा की आँखें नींबू की फाँकों के समान बड़ी और सुन्दर हैं। उनमें काजल लगाया है। नाक में नथ पहनी और नाक के मध्य भाग में बुलाक (एक प्रकार का गहना) पहन लिया है। कानों में कर्णफूल और झुमके पहने हैं, जो कानों की शोभा बढ़ा रहे हैं। फिर गले में गलसणी (आभूषण) पहना और अनेक प्रकार के मोतियों के हार पहने। फिर आँखों में काजल और सुरमा लगाया, दाँतों में सोने की चौब लगाई। सभी प्रकार के गहने, जो जहाँ पहनने लायक थे– हाथ, पाँव, सिर, कमर, बाजू पर पहने। सभी स्वर्ण निर्मित थे।

हाथों में हरी–हरी चूड़ियाँ पहनी हैं, जो काँच की हैं। अपने शरीर पर बूटेदार याने फूलों से युक्त अंगिया (चोली) पहनी है। गुलाबी रंग का रेशमी लहँगा पहना है, जो काफी चटकीला है और उस पर जरी के सुन्दर काम युक्त साड़ी पहनी है। पाँवों में पायल पहनी है, जिसके घुँघरुओं से झंकार उत्पन्न हो रही है। सभी शृँगार करके कृष्णजी बरसाने की ओर प्रस्थान करते हैं। वे किशोर चपल, चंचल और बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहे हैं। बरसाने की सभी सखियों ने अनोखी ब्रजबाला को देखा और उसे घेर लिया है। उसे लेकर वे राधिका के पास पहुँची हैं। राधा ने उन्हें देखा और पूछने लगी– हे सखी! तुम कौन से गाँव में रहती हो? तुम्हें यहाँ पर किसने भेजा है? किस काम से आई हो? कहो, तुम्हारा नाम क्या है? जरा घूँघट को हटाकर अपनी छवि तो हमें दिखाओ। तब कृष्ण रूप गोपिका ने कहा– हे राधे! हमारे साथ चलो, आज नंदबाबा के घर जागरण है। उन्होंने तुम्हें बुलाने के लिए मुझे भेजा है। जागरण करके प्रभात में वापस अपने गाँव आ जाना।

बरसाने से राधिका को अपने साथ लेकर मनमोहन चले। उन्हें छल–बल से किसी प्रकार

अपने महल में ले आये हैं। रात भर रस-रंग में मनुहार करते-करते बीत गई है। राधिका का यौवन रस लूट लिया और सबेरा होते ही राधिका बरसाने की ओर चल देती हैं।

इस फाग गीत की रचना मन्नु बनवारी ने की है। इसके साथ में प्रेमचन्द, दौलत सिंह के छन्द भी इस कविता गीत में जुड़ते हैं। कन्हैया, किशन उन्हें प्रेम और आनन्द के साथ गाते हैं। गंगा नायक और ज्वाला रंगीला भी इस फाग समूह से जुड़े हैं। वे भगवान से प्रार्थना करते हैं- प्रभु! आप हमें दुश्मन से बचाये रखें।

देवर म्हारो रे यो हरिया रूमाल वालो रे
देवर म्हारो रे।
हाँ, कि देवर म्हारो यो हरिया रूमाल वालो रे।
बिन्दी घड़ई दे देवर आदो वाटो थारो रे।
टीको घड़ावऽ तो दुखऽ माथो। देवर म्हारो रे......... ॥
देवर म्हारो रे यो हरिया रूमाल वालो रे।
झुमका घड़ई दे रे देवर आदो वाटो थारो रे।
लटकन घड़ावऽ तो दुखऽ माथो। देवर म्हारो रे......... ॥
देवर म्हारो रे यो हरिया रूमाल वालो रे।
ठुस्सी घड़ई दे रे देवर आदो वाटो थारो रे।
दुलरी घड़ावऽ तो दुखऽ माथो। देवर म्हारो रे......... ॥
देवर म्हारो रे यो हरिया रूमाल वालो रे।
बावट्या घड़ई दे रे देवर आदो वाटो थारो रे।
बाजूबद घड़ाओ तो दुखऽ माथो। देवर म्हारो रे......... ॥
देवर म्हारो रे यो हरिया रूमाल वालो रे।
पायल घड़ई दे रे देवर आदो वाटो थारो रे।
आयल घड़ावऽ तो दुखऽ माथो। देवर म्हारो रे......... ॥
देवर म्हारो रे यो हरिया रूमाल वालो रे॥

– श्रीमती गंगाबाई तोमर-दवाना से प्राप्त

मेरा देवर हरे रूमाल का शौकीन है और उसके हाथ में हमेशा हरा रूमाल रहता है। हे देवरजी! आप मुझे बिन्दिया घड़वा देंगे, तो मैं तुम्हें उसमें से आधा हिस्सा दे दूँगी। यदि आपने टीका घड़वाया तो मेरा सिर दर्द करने लगेगा। इसी प्रकार अपने देवर से अनुनय-विनय के स्वर में प्रार्थना करते हुए कहती है- झुमके घड़वा देना, लेकिन लटकन मत घड़वाना। ठुस्सी घड़वा देना, लेकिन दुलरी मत घड़वाना। वरना ये जेवर मेरा सिर दर्द करेंगे। बाँहों में पहनने वाले पुराने जमाने के बावठिया (गहना) बनवा देना। बाजूबंद मत घड़वाना, मेरा सिर दर्द करेगा। हे देवर! आप मुझे पाँव में पहनने के लिए पायल घड़वा देना। आयल मत घड़वा लाना, जिससे मेरा सिर दर्द बढ़ जायेगा।

किशनजी पोची तो पेरावो, म्हारा रंग सी भर्‌या दुई हाथ।
गोरी गोरी बैया नऽ हरी-हरी चूड़ियां, तो चूड़ी नऽ प चोप लगावो।
किशनजी पोची तो पेरावो, म्हारा रंग सी भर्‌या दुई हाथ।
ऊदा-ऊदा शालू नऽ जरद किनारी, केशरिया सी कोर लगावो।
किशनजी पोची तो पेरावो, म्हारा रंग सी भर्‌या दुई हाथ।
केतरा बरस का कुंवर कन्हैया, केतरा बरस राधे प्यारी।
किशनजी पोची तो पेरावो, म्हारा रंग सी भर्‌या दुई हाथ।
बारा बरस का कुंवर कन्हैया, भर जोबन राधे प्यारी।
किशनजी पोची तो पेरावो, म्हारा रंग सी भर्‌या दुई हाथ।

स्रोत-श्रीमती कान्ता जोशी-खण्डवा

हे किशन जी! आप मुझे पोहची (हाथ में पहना जाने वाला आभूषण) पहना दीजिये, क्योंकि मेरे दोनों हाथ रंग से सराबोर हैं। गोरी बाँहों में हरी-हरी चूड़ियाँ हैं। इन्हीं चूड़ियों के आसपास इन्हीं के अनुरूप बंद यानी अलग प्रकार की चूड़ियाँ पहना दो। आसमानी या बैंगनी रंग की साड़ी राधिका ने पहनने के लिए रखी है। हे श्याम! इसमें केशरिया रंग की गोट किनार लगवा दो। कितने बरस के कुँवर कन्हैया हैं? कितने बरस की राधिका प्यारी हैं? बारह बरस के कुँवर कन्हैया हैं और भर यौवन में राधिका हैं। यानी राधिका भगवान श्रीकृष्ण से बड़ी है। हे श्याम! आप मुझे हाथों में पोहची पहना दो।

काजल की डिब्बी खोलो ननंद बाई, मयनो आयो फागुन को।
बिन्दी तो म्हारी जूनी पुरानी, टिको नवो घड़ाओ ननंद बाई,
मयनो आयो फागुन को, झूमकी तो म्हारी जूनी पुरानी,
एरिंग नवा घड़ाओ ननंद बाई, मयनो आयो फागुन को।
ठुस्सी तो म्हारी जूनी पुरानी, नेकलिस नवो घड़ाओ ननंद बाई,
मयनो आयो फागुन को, कंगन तो म्हारा जूना पुराणा,
घड़ी नवी मंगाड़ो ननंद बाई, मयनो आयो फागुन को।

स्रोत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय-खण्डवा

प्रिय ननद! तुम काजल की डिब्बी को खोलो, क्योंकि फागुन का मदमस्त महीना आ गया है। मैं श्रृँगार करके अपने प्रियतम से होली खेलूँगी। पर जितने भी आभूषण हैं - बिन्दिया, झूमकी, ठुस्सी, कंकन - ये सभी पुराने हैं। इनके स्थान पर तुम मुझे नये आभूषण बनवा दो। ननद तो अपनी भाभी से खार खाए बैठी थी, क्योंकि उसने पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में नेग नहीं दिया था। अन्त में वह अपने लाड़ले देवर के समक्ष जाकर उसकी अनुनय-विनय करती है और उसे रिझाने का प्रयत्न करती है।

फाग खेलनऽ कऽ आई ब्रजनारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

चौक: अईं सी आई सुघड़ राधिका, वईं सी कुंवर कन्हाई।
हिल मिल फाग परस्पर खेलऽ, शोभा बरनी नी जाई।
नंद घर बटती महाराज भर-भर थारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

टेक: लई-लई रंग कनक पिचकारी, कृष्ण का सामऽ चलाई।
छिटकऽ रंग अंग सब भिज्या, झूलऽ चराचर होई।
परसपर नारी महाराज भिजी सारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

चौक: बाजत ताल मिरदंग बाँसुरी, भैरवी तान सुणाई।
उड़त अबीर गुलाल कुसुमल, सकल बिरज पर छाई।
इन्द्र सी घटा महाराज, बरसऽ भारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

चौक: राधा नऽ सुणई दी सकीयन कऽ, झूठ-झूठ ग्यारई।
लिपटी-लिपटी गई श्याम सुन्दर सी, बाँह पकड़ी नऽ लाई।
झूमी गई सारी महाराज, खड़ी रही मन मारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

चौक: छीन लई मुख मुरली पीताम्बर,
शीश पऽ चून्दड़ ओढ़ाई।
बिन्दी झाल नयन बींच कजला, नाक मऽ बेशर पिराई।
बन गई नारी महाराज, हँसी-हँसी दे तारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

चौक: हँसी-हँसी नऽ मुख मरोड़ी, मरोड़ी नऽ, कहाँ गई चतुराई।
कहाँ तुम्हारो बाबा नंदजी, कहाँ है जसुमती माई
ली नऽ छोड़ाई महाराज, कहे ब्रज नारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

चौक: फाग लिया बिन जावा नी देऊँगी, करो कोटि उपाई।
लेऊँगी कसर निकाल सब दिन की, तुम चित चोर चुराई।
बहुत दधि माखन, खायो भारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

चौक: चाँद खां दीन कय
सुन प्यारे होरी हरि की गाई।
जोगीलाल रुप्पा कथा कहते, सबका मन मऽ भाई।

भीमसिंह भीलाला महाराज, हारी बाजी मारी।
कहाँ मिलऽ गिरधारी॥

स्रोत–महंत भँवरदास–दवाना

होली खेलने के लिए सभी ब्रज की स्त्रियाँ इकट्ठा होकर विचार कर रही हैं कि हमारे प्यारे कृष्ण कन्हैया कहाँ पर मिलेंगे। इधर से राधिका सखियों के संग तैयार होकर निकली हैं और उधर से कृष्ण कन्हैया निकले हैं। दोनों दल हिलमिल कर होली खेलेंगे। उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। नंदबाबा के घर थाली भर–भर कर गुलाल बँट रहा है। सारी सखियाँ सोने की पिचकारियाँ लेकर तैयारी से आई हैं और आते ही उन्होंने कृष्ण के ऊपर रंग छिटका है। सभी के शरीर रंग से भीग गये हैं। सारे कपड़े रंग में सराबोर हो गये हैं। कुछ फट भी गये हैं। सस्त्री और पुरुष दोनों परस्पर होली खेल रहे हैं। सभी स्त्रियों की साड़ियाँ भींग गई हैं। इस समय अनेक प्रकार के बाजे बज रहे हैं। मृदंग, बाँसुरी, ढप पर राग भैरवी सुनाई दे रही है। चारों तरफ इस समय अबीर गुलाल और केशरिया रंग उड़ रहा है। ब्रज में मानो रंग की घटा सी छा गई है।

राधिका ने सखियों से कहा कि आज कान्हा को जबरन पकड़ लाना है। उन्हें सजाकर, गोपी बनाकर नंदजी से फगवा लेंगी। सभी गोपियों ने झपटकर कृष्ण को पकड़ लिया है। उन्हें बाँह पकड़कर राधा के पास लाई हैं। राधा के सामने कृष्ण मन मारकर खड़े हैं। तब सभी गोपियों ने उनके हाथ से मुरली छीन ली। पीताम्बर उतार लिया है और अनोखा शृंगार किया। अंगिया, घाघरा, चूनरी सिर पर ओढ़ाई है। माथे पर झाला और बिंदिया लगाई है। आँखों में काजल लगाया है। नाक में नथनी पहनाई है। सारे शृँगार करके कृष्ण को स्त्री बना दिया है। सभी ताली बजाकर कृष्ण का उपहास कर रही हैं। कृष्ण को उलाहना दे रही हैं। कहती हैं– आप तो अपने आपको बहुत ही चतुर समझते थे। कहाँ है तुम्हारी चतुराई? दिखाते क्यों नहीं? कहाँ है तुम्हारे नंदबाबा? कहाँ है तुम्हारी माता यशोदा? जो तुम्हें आकर छुड़ा ले जायें। आज तो उनसे फगवा लेकर ही रहेंगे। आप कितने भी उपाय कर लीजिये, आज हम आपको नहीं छोड़ेंगी। आज सभी दिनों की कसर पूरी करेंगी। बहुत सताया था तुमने हमें। आज हम तुम्हें सतायेंगे। तुम हमारे चित्त को बेसुध कर देते थे। तुम चितचोर हो। तुमने हमारा बहुत–सा दही माखन खाया है।

इस फाग गीत की रचना चाँद खां दीन ने की है। उसने भगवान श्रीकृष्ण या श्रीहरि की होली गाई है। उनके साथ में जोगीलाल, रूप्पाजी उनके कथन को ठीक करते हैं या उनके साथ गीत को आगे बढ़ाते हैं। उन्हीं के साथ में भीमसिंह भिलाला भी गाते हैं। वे सभी मिलकर हारी हुई, कलगी–तुर्रा बाजी को गाकर जीत लेते हैं।

साड़ी लाई दऽ कि नारीदार घाघरो घेर वाळो।
मकऽ लाई दिजो भरतार घाघरो घेर वाळो।
कल्ला कड़ा मकऽ चाँदी का लाई दऽ घुघरी वाला रे।

कि कल्ला घुघरी वाला रे।
नथ लई दऽ छब्बादार। घाघरो घेर वाळो।
कान करण फूल सोना का लईदऽ लूम वाला रे।
करण फूल लूम वाला रे।
बिन्दी झाला लेऊँगा जोरदार
घाघरो घेर वाळो।
बाजुबंद सरदेवड़िया लाई दऽ चाँदी वाला रे बालम।
चाँदी वाला रे बालम।
कम्मर कंदोरो सर चार, घाघरो घेर वाळो।
घुघर माल बईल्या नकऽ बाँधी नऽ गाड़ी धुरवाजो रे।
गाड़ी धुरवा जो रे।
मीठो तेल माथा कऽ लगई नऽ, बाल जमावजो रे।
मोठी राम गाँव दिलदार,
घाघरो घेर वालो रे।

स्रोत-श्री मोतीराम यादव-निमरानी

पत्नी-पति से प्रार्थना करते हुए कहती है- हे स्वामी! मुझे अच्छी किनारेदार साड़ी ला दो और उसके साथ घेरदार लहँगा (घाघरा) सिलवा दो। ये दोनों तो आप मेरे लिए लाकर दे ही देना। इसके बाद आप मेरे पहनने के लिए चाँदी के घुँघरूदार कल्ले ला देना। उसके साथ ही मेरे नाक में पहनने के लिए झेला नथ ला देना। मेरे कानों में पहनने के लिए करणफूल ला देना, जिसमें लटकनें लगी हों। उसी के साथ मेरे शीश पर लगाने के लिए बिन्दिया और टीका ला देना। मेरी बाँहों में पहनने के लिए बाजूबंद ला देना। साथ ही हाथों में पहनने के लिए चाँदी के देवड़िया (गहना) ला देना, जिसमें चाँदी की सरें (जंजीरें) लगी हों। इतना शृँगार माँगने के बाद पत्नी-पति से कहती है- हे स्वामी! अब आप बैलों को घूघरमाल (घुँघरू जड़ित पट्टा) बाँधो और गाड़ी में जोतो। जब तक मैं सिर में मूँगफली का तेल लगाकर बालों को सुव्यवस्थित करके (जमाकर) आ रही हूँ। हे स्वामी! मैंने जो बताया, वह मुझे लाकर देना। भूलना मत।

फागुन फरक्यो नऽ चईत लागी गयो, रनु बाई जोवऽ छे वाट।
आसी रुड़ी ग्यारस वो माता, कब आवसे,
टोपली को घड़ण्यो झमराल्यो वीर भूली गयो, वोको लगी गयो सुपड़ा पर ध्यान।
आसी रंगेली ओ देवी थारी चूँदड़ी, फागुण फरक्यो नऽ चईत लागी गयो।
गउरबाई जोव छे वाट, आसी रुड़ी ग्यारस वो माता कब आवसे।
बाजूट को घड़ण्यो सुतार्‌यो वीर भूली गयो,
वोकी लगी गई हालऽ पर ध्यान।
आसी रंगेली ओ देवी थारी चूँदड़ी,

फागुन फरक्यो नऽ चईत लागी गयो
सईत बाई जोवऽ छे वाट।
आसी रुड़ी ग्यारस वो माता कब आवसे,
गऊड़ा को वावण्यो किरसाण वीर भूली गयो
वोकी लगी गयो खेती पर ध्यान।
आसी रंगेली ओ देवी थारी चूँदड़ी।

फागुन का महीना खत्म होने को आया है और चैत्र मास का महीना शुरू हो गया है। रनुदेवी प्रतीक्षा कर रही है। आज सुहावनी ग्यारस आ गई है। झमराल भाई मेरे निमित्त टोकनियाँ क्यों नहीं बना रहा है? उसका ध्यान तो सूपड़े बनाने पर लगा है। वह टोकनियाँ कब बनायेगा? बाजूट बनाने वाले सुतार भाई का ध्यान हल बनाने में लगा है। गेहूँ बोने वाले किसान भाई का ध्यान खेती में लगा है।

चलूँ, उन्हें अपना वादा याद दिला दूँ। फागुन महीना खत्म होने को है और चैत्र मास आने वाला है। चैत्र गणगौर पर्व का महीना है। टोपली, बाजूट और जवारे बोने वालों को सचेत कर दूँ। रनुदेवी उनके सामने खड़ी होती है। देवी के स्वरूप और चुनरी को देखकर वे मंत्रमुग्ध हो जाते हैं और उन्हें गणगौर पर्व की याद आ जाती है।

ईश्वरजी हम चइत का मयना मऽ आया राज, काई तमारो काम छे जी।
चन्द्रावली हम गवरल आणो लेणऽ आया राज, गवरा राणी लई जावां जी।
ईश्वरजी म्हारी गवरल को शीश सो धमक राज, गवरा राणी लई जावां जी।
ईश्वरजी म्हारी गवरल को शीश जो धमकऽ राज, गवरा बेटी ना भेजां जी।
चन्द्रावली हम लावां लावां सोठवा सोठ राज, गवरा राणी लई जावां जी।
ईश्वरजी म्हारी गवरल को शीश सो छुट्टो राज, गवरा बेटी ना भेजां जी।
चन्द्रावली हम लावां नवरंग्या नाड़ा राज, गवरा राणी लई जावां जी।
ईश्वरजी म्हारी गवरल को शीश सो उगाड़ो राज, गवरा बेटी ना भेजां जी।
चन्द्रावली हम लावां दखणी रो चीर राज, गवरा राणी लई जावां जी।
ईश्वरजी म्हारी गवरल का हाथ सो बांध्या राज, गवरा बेटी ना भेजां जी।
चन्द्रावली हम लावां-लावां सोहन चूड़ीलो राज, गवरा राणी लई जावां जी।
ईश्वरजी म्हारो गवरल छे काचा दूध की पाळई राज, गवरा बेटी ना भेजां जी।
चन्द्रावली हमनऽ खरचा छे दुणेरा सा दाम राज, गवरा राणी लई जावां जी।

ईश्वरजी गौरी को लेने आये हैं। गौरी को न भेजने के लिए उनकी माँ अनेक बहाने करती हैं। कहती हैं- हे ईश्वर! तुम्हारे यहाँ चैत्र मास में ऐसा कौनसा काम आ पड़ा है, जो तुम गौरी को लेने आ गये। ईश्वर कहते हैं- चन्द्रावलीजी हम लेने आये हैं, और गौरी को लेकर जायेंगे। चन्द्रावली कहती हैं- ईश्वरजी मेरी गौरी के सिर में दर्द है। उसका सिर दर्द बन्द हो जाए, तब मैं

गौरी को भेज दूँगी। ईश्वर कहते हैं- मैं गौरी को सोंठ औषधि खिला दूँगा और सिर दर्द को ठीक कर लूँगा, आप चिन्ता मत करो। मैं लेकर ही जाऊँगा। मैं गौरी को कैसे भेज दूँ? ईश्वर कहते हैं- मैं नवरंग के नाड़े लाया हूँ। आप गौरी का शीश गूँथ दीजिए। मैं लेकर ही जाऊँगा। चन्द्रावली कहती हैं- ईश्वर मेरी गौरी के पहनने लायक अभी वस्त्र तैयार नहीं हैं, मैं कैसे भेज दूँ। ईश्वर कहते हैं- मैं दक्षिण से बहुत बढ़िया और कीमती साड़ी लाया हूँ। आप गौरी को विदाई में वही साड़ी पहनाकर भेज दीजिए। चन्द्रावली कहती हैं- ईश्वर मेरी गौरी के हाथों में चूड़ियाँ नहीं हैं, मैं गौरी खाली हाथ कैसे भेज दूँ। ईश्वर कहते हैं- अरे! आप चूड़ियों की चिन्ता मत करो। मैं सोने की चूड़ियाँ और कँगन लाया हूँ, उन्हें पहनाकर विदा कर दीजिए। अन्त में कुँवरराज के तर्कों से हारकर अन्तिम बहाना करते हुए चन्द्रावली कहती हैं- ईश्वर मैंने गौरी का लालन-पालन कच्चा दूध पिला-पिलाकर किया है। उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला है। मैं गौरी को कैसे भेज दूँ? ईश्वर गुस्से से कहते हैं- मैंने विवाह किया है, उसमें मेरा दुहरा खर्च हुआ है। अब कुछ भी हो, मैं गौरी को लेकर ही जाऊँगा। इसके आगे सासुजी की सारी बहानेबाजी धरी की धरी रह गई। आखिर गौरी को तैयार करके ईश्वर के साथ भेजना ही पड़ा। 'कच्चा दूध' शब्द के प्रयोग से गौरी की किशोर वय की प्रतीति होती है। माँ का दर्द यह है कि कच्ची उम्र वाली लड़की को वह अभी ससुराल नहीं भेजना चाहती, इसीलिए इतने तर्क करती है, लेकिन दामाद के तर्कों के आगे सास निहत्था हो जाती है और हठीले दामाद के साथ गौरी को विदा करना पड़ता है। किशोरवय के नव विवाहितों की मानसिकता का सुन्दर वर्णन इसमें मिलता है।

हां रे चैत्र मास नी रुतु लागे प्यारी, गोविन्दा घर आओ रे।
चैत्र मास नी विलमण कईजो, म्हारा वाला घर आओ रे॥
धरती लिला गोमुख हरकी नऽ, हरकी सारी प्रजा रे,
नव रे नदी नव नी कुलंता, तो पुरुष बिना कयसी नारी॥
गोविन्दा........................ ॥
राधिका ना आंगण पीपळी रे, न पेला पिंड खजूर रे,
छिन-छिन जोऊं थारी वाटड़ी रे, तो सखिया नो लेड़ो॥
गोविन्दा........................ ॥
ध्रुव दिशा ना धुंधला रे, बिज चमुके भारी रे,
केशव कुबजा नऽ लई गया रे, हमनऽ ते मेल्या बिमारी॥
गोविन्दा........................ ॥
नहीं न्हाया गंगा गोमती, नहीं बठ्या साधु की संग रे,
ब्रजलाल नी विनती रे, हूं तो भुली रे गोकलिया नी वाट॥
गोविन्दा........................ ॥

हे स्वामी! चैत्र का महीना बहुत प्रिय लगता है। हे गोविन्द! चैत्र माह में घर आ जाओ। इस माह मेरा मन तुममें लग रहा है, यानी तुम्हारी बहुत याद आ रही है। तुम घर आ जाओ। हे

स्वामी! आषाढ़ माह में वर्षा के कारण धरती रूपी गाय का गोमुख हरा हो गया है। वर्षा आने और हरियाली सर्वत्र छाने से जन-जन प्रसन्न हो गये हैं। नदियों में नया जल आ गया है। वे नये जल वाली हो गई हैं। ऐसे मौसम में बिना पुरुष के कोई भी स्त्री कैसे रह सकती है।

हे स्वामी! राधा के आँगन में पीपल का वृक्ष है, वहीं पास में खजूर का पेड़ भी है। पल-पल वह तुम्हारी राह तक रही है। सखियाँ उसका मजाक बना रही हैं। हे स्वामी! ध्रुव दिशा में बदली छा गई है, पानी बरस रहा है। भारी बिजली चमक रही है। शायद कृष्ण किसी दूसरी स्त्री के प्रेम में पड़ गये हैं, उसने उन्हें अपने वश में कर लिया है। मुझे उन्होंने बीमारी के बहाने का संदेशा भिजवा दिया है।

हे स्वामी! न मैंने पवित्र गंगा और गोमती जैसी नदियों में स्नान किया और न मैंने कभी साधु-सन्तों की सत्संग की। ब्रजलाल कवि विनती करते हैं - मैं तो कृष्ण के गोकुल गाँव की राह में रम गया हूँ, अर्थात् मैंने कृष्ण की भक्ति की राह पकड़ ली है। जब तक वे नहीं आयेंगे, तब तक मैं बारह महीनों के सभी कष्ट सहन करूँगा। जैसे राधा-कृष्ण की प्रतीक्षा में सारे दिन बिताती है। बारहमासा प्रायः अनेक बोलियों की प्रिय लोक विधा रही है। निमाड़ी ही नहीं मध्यप्रदेश की अन्य मालवी, बुन्देली और बघेली तथा छत्तीसगढ़ी में बारामासी साहित्य वाचिक परम्परा में प्रभूत है।

चैत मास गणगौर खुशी अपार, खुशी अपार।
निमाड़ मऽ महिमा छाई अपरम्पार॥
चौकः *आ... रे... चैत महीने की बखत वो आई।*
शुभ दिन ग्यारस मूठ धराई।
नाचऽ गावऽ लोग लुगाई।
देवाजी बजा दो हाथ झालरियो
जय-जय गणगौरी॥
चौकः *आ... रे... बामण का घर जाग बोया,*
आठ दिन तक मंगल होयऽ।
छोरी नऽ पाती खेलणऽ जाय,
होवऽ आनंद की बरसात।
देवा झालरियो थारा चरण नमावां माथ।
चौकः *आ... रे... तिथि तीज के बठाड़ऽ पाटऽ।*
नवा रोज लगऽ जाती वाटऽ।
धाणी भूगड़ा का तमोल वाटऽ।
सारी माड़ी बिगड़ी बणई दऽ बात।
देवा झालरियो थारा चरण नमावां माथ॥
चौकः *म्हारी माड़ी कऽ मयन्दी मिस्सी लगाई।*

तन ऊपर सिंगार सजाई।
तन मन सी जो कोई ध्यावऽ,
शिवराम भजऽ नौरात।
देवा झालरियो थारा चरण नमावां माथे।

चैत्र महीने में खुशियाँ अपार हैं। निमाड़ का लोक-प्राण उत्सव गणगौर आ गया है। चैत्र महीने के शुभ दिन एकादशी को इस त्योहार की शुरुआत होती है। इस दिन ब्राह्मण के घर जाग (जवारे) बोये जाते हैं और माता के आगमन में स्त्री-पुरुष दोनों हाथों से तालियाँ बजाकर झालरिया देते हैं। आठ दिन तक ब्राह्मण जल सींचकर जवारों की सेवा करता है। इसी समय कुँवारी कन्याएँ फूल-पाती खेलने अमराई में जाती हैं। इस समय ऐसा लगता है, मानो आनन्द की बरसात हो रही है।

चैत्र महीने की तीज के दिन देवी गणगौर धणियर के रथ सजाकर, उन्हें ढोल-ढमाके, गाजे-बाजे के साथ ब्राह्मण के घर तक ले जाते हैं और रथों में प्राण-प्रतिष्ठार्थ जवारे रखे जाते हैं। संध्या के समय आरती करके महिलाएँ मेहंदी, धानी, भूगड़े (चने) का प्रसाद बाँटती हैं। नवें दिन गणगौर की विदाई की जाती है। माँ जगत् जननी सारे बिगड़े कामों को सुधार देती हैं। श्रद्धा से सभी चरणों में शीश नवाते हैं।

माता गणगौर को महावर, मिस्सी, मेहंदी चढ़ाकर सुन्दर साज-श्रृँगार करके सुसज्जित करते हैं। जो कोई मनुष्य इनका सच्चे मन से ध्यान करता है, उसका कल्याण होता है। गायक शिवराम भाई इस प्रकार माता गणगौर का नौ दिन तक ध्यान करते हैं।

आ... रे... आई गणगौरी आई रे, रय सब आनंद मनाई रे।
आ... रे... चैत महीना का बीच, मात गणगौर पुजाई रे॥
चौक: *वो शुभ अवसर चैत की बेला मऽ अनऽ तिथि ग्यारस।*
शुभ दिन माता की मूठ धराय नऽ, अनऽ रय आठ दिन।
आ... रे.. वाड़ी मऽ लगी रुसनाई रे।
कि घर-घर खुशी नऽ छाई रे।
चैत महीना का बीच माता गणगौर पुजाई रे।
चौक: *ऊ आठ दिन मंगल होवऽ।*
अरू नर-नारी सभी हरसावऽ।
अमुवा की बाग मऽ छोरी नऽ पाती खेलणऽ जाय।
आ... रे... बागा नऽ मऽ धूम मचाई रे, कि दुल्लव लाड़ी बणाई रे।
ओ... चैत महीना का बीच माता गणगौर पुजाई रे।
चौक: *तिथि तीज का रोज माता को पाठ बिठावऽ।*
घर-घर माता कऽ लायी नऽ, चरण नऽ मऽ शीश नमावऽ।

दाँत नऽ कऽ मिस्सी लगाई रे, हाथ नऽ मऽ मेहन्दी लगाई रे।
चैत महीना का बीच माता गणगौर पुजाई रे।
तिथि चौथ का रोज भरी नऽ रथ लाया बौड़ाय।
वाटऽ तमोळ भूगड़ा अरू जोड़ा देऽ जिमाई।
आ... रे... राग शिवराम नऽ गाई रे ढोलक शिवशंकर बजाई रे।
पंचमी देकर बिदाई रे।
चैत महीना का बीच माता गणगौर पुजाई रे।

माता गौरी का पर्व गणगौर आ गया है। सभी आनन्द मना रहे हैं। चैत्र महीने में देवी गणगौर की पूजा की जाती है। इसी शुभ महीने की एकादशी तिथि को माता गौरी के नाम से जवारे बोये जाते हैं। जो समूह रूप में ब्राह्मण, पटेल या मन्दिर में बोये जाते हैं। अलग से किसी घर में जवारे नहीं बोते। जवारे बोने के स्थान को 'माता की वाड़ी' कहा जाता है। ब्राह्मण ही आठ दिन माता की सेवा पूजा करता है और माता के आने से घर-घर में आनन्द सा छा जाता है।

इन्हीं आठ दिनों तक स्त्रियाँ मंगलगीत गाती हैं और कुँवारी कन्याएँ आम्रकुंजों में 'पाती' खेलने जाती हैं। बाग-बगीचों में धूम मच जाती है। लड़कियाँ यहीं दूल्हा-दुल्हन बनकर खेल खेलती हैं। उनके गठबंधन होते हैं। दुल्हन के सिर पर पाती से भरे दो लोटे और आम के पत्ते रखे जाते हैं।

तीज को माता गौरी या रनुदेवी के रथ सजाये जाते हैं। इसे देवी का 'पाठ' बिठाना नाम दिया जाता है। प्रत्येक घर से देवी रनु के रथ बाड़ी में आते हैं और पूजा-अर्चना के साथ जवारों की प्राण-प्रतिष्ठा करके रथ को सिर पर उठाकर वापस घर लाते हैं। चतुर्थी तिथि को माता रनुदेवी को स्नान कराया जाता है। महावर, मिस्सी, मेहंदी लगाई जाती है, क्योंकि आज रनुदेवी ससुराल जाने वाली होती हैं। पूजा करने के बाद संध्या की बेला में सभी घरों से रथ निकालकर एक स्थान पर एकत्र होते हैं। यहाँ धानी और चने का प्रसाद बाँटा जाता है। कभी किसी की मान-मनौती पूर्ण होती है, तो वह रनुदेवी के रथों को मान-मनौती के रूप में वापस अपने घर में ले जाते हैं। संध्या को चार बार माता की आरती की जाती है। पंचमी को माता को स्नान करवाकर, नाड़े से माथा गूँथकर, पीला वस्त्र ओढ़ाकर, गुड़-चावल का दही युक्त भोग लगाया जाता है। इसके पश्चात् जोड़े जिमाये जाते हैं।

इस गीत की रचना शिवराम ने की है और इनके साथ ढोलक पर शिवशंकर ने संगत की है। पंचमी तिथि को देवी रनु को ससुराल विदा कर दिया जाता है।

बेटी म्हारी चइत को मयनो
दिन सुहाणो, रनादेवी कऽ गुण गावां।
ओ झालरियो।

पिता म्हारा डंका लगावसां,
हार पेरावां सा।
रनादेवी कऽ घर लावां।
ओ झालरियो।
बेटी म्हारी ग्यारस का दिन बेटी मूठ धरांड़ा।
आठवां दिन घर लावां।
ओ झालरियो।
पिता म्हारा कंकु लगावसा,
पल्लो ओड़ावसां, रनादेवी कऽ घर लावसां।
ओ झालरियो।
बेटी म्हारी दवाणा गाँव का रमेश भाई पटेल
हाथ जोड़ी नऽ गुण गावऽ।
पिता हमारा मयसर गाँव का
बसंत भाई वाड़ी की पूजा करऽ
ओ झालरियो।

स्रोत– सुश्री अर्चना टेलर–ठीकरी

हे बेटी! चैत्र का महीना बड़ा सुहावना है। रनुदेवी को मेहमान के रूप में घर लाकर उनका गुणगान करें। यह झालरिया नृत्य माता गणगौर को समर्पित है। हे पिताजी! ढोल की थाप लगवाइये। हार बनाकर पहनायें। रनुदेवी को मेहमान रूप में घर लायें। हे बेटी! एकादशी के दिन ब्राह्मण के घर जवारे बोकर अनुष्ठान करें और ठीक आठवें दिन रनुदेवी को मेहमान रूप में घर लायें। हे पिताजी! देवी के मुखमण्डल पर कुमकुम का टीका लगायें, उन्हें पीला वस्त्र पहनायें और रथ सजाकर जवारों की प्राण–प्रतिष्ठा करें। उन्हें मेहमान रूप में घर में लायें।

हे बेटी! अमुक व्यक्ति माता रनुदेवी के गुणगान कर रहे हैं और महेश्वर के अमुक व्यक्ति माता की बाड़ी (जवारों की प्राण–प्रतिष्ठा स्थान) की पूजा कर रहे हैं।

सोन्ना रूपा का घड़ा घड़ीला रेशम लम्बी डोर, ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी गंगा भरिया, जमना भरिया जाय कवेरी झकोळ, ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी, पयलऽ जो आणो ससराजी आया, धवळो घोड़ो लाया ओ झालरियो दऽ।
पिताजी अबकी आणो पछो फेरी देवो, सासरिये नहीं जावां, ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी दूसरऽ जो आणो जेठजी आया, लाल घोड़ी लो लाया, ओ झालरियो दऽ।
पिताजी अबको आणो पछो, फेरी देवो, खेली लेवां, फूल नऽ पाती ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी तीसरऽ जो आणो देवरजी आया, काळो घोड़ीलो लायो, ओ झालरियो दऽ।
पिताजी अबको आणो पछो फेरी देवो, सासरिये नहीं जावां, ओ झालरियो दऽ।

बेटी म्हारी चौथो जो आणो स्वामीजी आया, छैल बछेरी लाया, ओ झालरियो दऽ।
पिताजी अबको आणो पछो फेरी देवो, खेली लेवां फूल नऽ पाती, ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी ससरो भी फिरी गयो, जेठ भी फिरी गयो, आड़ा राव को कुंवर लाड़लो
यो नहीं पाछो जासे, ओ झालरियो दऽ, पिताजी चईत वैसाख को घाम पड़ऽ नऽ
म्हारो कड़ी रो बाळो कुमलासे, ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी अड़दा लगावसे, पड़दा लगावसे, तम्बु तणई नऽ ळई जासे, ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी अड़दा लगावसे, पड़दा लगावसे, छतरी लगई नऽ लई जासे, ओ झालरियो दऽ।
पिताजी जल जमना को कालो पाणी, देखी नऽ डर लागऽ, ओ झालरियो दऽ।
बेटी म्हारी नाव बढ़ावसे, डोंग्या लगावसे, अवली लगई नऽ जासे, ओ झालरियो दऽ।

सोने और चाँदी के घड़ों में लम्बी रेशम की डोर बँधी हुई है। रनु अपनी सहेलियों के साथ खेल रही हैं। इतने में उनके ससुर लेने आ जाते हैं। पिता पुत्री को समझाते हैं– हे बेटी! अब खेलना बन्द कर दो। तुम्हें लेने के लिए तुम्हारे ससुर आ गये हैं। वे सफेद घोड़े पर सवार होकर तुम्हें लेने आये हैं। रनु कहती है– पिताजी! अबकी बार तुम उन्हें वापस कर दो। मैं ससुराल ससुरजी के साथ नहीं जाऊँगी। दूसरी बार रनु को लेने के लिए जेठ आते हैं। वे सुन्दर और गठीले घोड़े पर सवारी करके आये हैं। पिताजी पुत्री से कहते हैं– हे बेटी! अब खेलना छोड़ दे। तुझे लेने के लिए तेरे जेठजी आये हैं। तू उनके साथ चली जा। रनु कहती है– पिताजी! अबकी बार तुम उन्हें लौटा दो, हम फूल पत्तियों का खेल-खेल लें। तीसरी बार रनु को लेने उसके देवरजी आये हैं, ये चंचल काले घोड़े पर सवार हैं। पिता पुत्री को समझाते हुए कहते हैं– हे बेटी! तुम्हें लेने अब तुम्हारे देवर आये हैं। रनु कहती है– पिताजी! अबकी बार भी आप उन्हें वापस भेज दीजिये। अभी खेल-खेल रहे हैं। चौथी बार रनु को लेने स्वयं उसके पति आते हैं। वे एक हंसवरणी चंचल घोड़ी पर सवार हैं। पिता पुत्री से कहते हैं– बेटी! अबकी बार तुम्हें लेने स्वयं तुम्हारे स्वामी आये हैं। रनु कुछ परेशान हो जाती है और कहती है– पिताजी! अबकी बार आप उन्हें भी वापस भेज दीजिये। पिता समझाते हुए कहते हैं– बेटी! तुम्हारा ससुर लौट गया। जेठ लौट गये, देवर लौट गया, लेकिन ये हाडा वंश के कुँवर कन्हैया हैं। इन्हें वापस नहीं किया जा सकता। जिद मत करो बेटी। रनु कहती है– पिताजी! मैं कैसे ससुराल जाऊँ? चैत्र बैसाख की कड़ी धूप पड़ रही है। मेरी गोद में जो छोटा बच्चा है, वह कुम्हला जायेगा। इसलिए मैं नहीं जाऊँगी। तब पिता पुत्री को समझाते हुए कहते हैं– तम्बू वाली गाड़ी में बिठाकर तुम्हें छाता लगवाकर ले जायेंगे। बेटी अपने पिता से कहती है– जमुना और गंगा का काला पानी देखकर मुझे डर लगता है। मैं कैसे ससुराल जाऊँ? पिता कहते हैं– वे नाव मँगवायेंगे। उसमें अवली पाल लगाकर बठाकर तुम्हें ले जायेंगे। अन्त में सभी बहानों और स्वजनों को छोड़कर रनु धणियर के साथ ससुराल विदा हो जाती है।

नीलई दराय को घाघरो।, सालुड़ा री कोर, घमघोल घाघरो।
पेरी वयठी नऽ रनुबाई निसर्या, वाट मऽ मिली गया धणियरजी

मुट्ठी भरी राळ्यो गुलाल, घमघोल घाघरो, हमकऽ हमारी माय मारसे।
तुमखऽ दीसे गाळऽ, घमघोल घाघरो, नीलई दराय को घाघरो।
सालुड़ा री कोर, घमघोल घाघरो, पेरी वयड़ी नऽ गऊरबाई निसर्‌या,
वाट मऽ मिली गया ईश्वरजी, मुट्ठी भरी राळ्यो गुलाल, घमघोल घाघरो।
हमकऽ हमारी माय मारते, तुमकऽ दिसे गाळऽ, घमघोल घाघरो।
नीली दराय को घाघरो, सालुड़ा री कोर, घमघोल घाघरो।
पेरी वयड़ी नऽ सईत बाई निसर्‌या, वाट मऽ मिली गया ब्रह्माजी,
मुट्ठी भरी राळ्यो गुलाल, घमघोल घाघरो, हमकऽ हमारी माय मारसे,
तुमख दीसे गाळऽ, घमघोल घाघरो, नीलई दराय को घाघरो
सालुड़ा री कोर, घमघोल घाघरो, पेरी वयड़ी नऽ रोयण बाई निसर्‌या
वाट मऽ मिली गया चन्द्रमाजी, मुट्ठी भर राळ्यो गुलाल, घमघोल घाघरो।
हमकऽ हमारी माय मारसे, तुमख दीसे गाळऽ, घमघोल घाघरो।
नीली दराय को घाघरो, सालुड़ा री कोर, घमघोल घाघरो।

नीले-हरे रंग का घेर-घुमेर घाघरा है। उस पर केशरिया रंग की किनारी गोटेदार साड़ी पहनी हुई है। इस प्रकार पहन ओढ़कर रनुबाई घर से निकली हैं। रास्ते में उन्हें धणियरजी मिल गये और उनका रास्ता रोककर उन पर एक मुठ्ठी गुलाल डालकर सराबोर कर दिया। क्योंकि होली का त्योहार है। रनु ने नाराज होकर धणियरजी से कहा कि आपने मुझ पर गुलाल डाल दिया, अब हमें माँ मारेंगी। साथ ही तुमको गालियाँ देंगी। तुमने हमारे कपड़े खराब कर दिये।

हरे रंग का घेर-घुमेरदार घाघरा है। उस पर केशरिया रंग की किनारी गोटेदार साड़ी पहनकर गऊरबाई (गौरी देवी) घर से निकली हैं। रास्ते में उन्हें ईश्वरजी मिल गये और उनका रास्ता रोककर उन पर एक मुठ्ठी गुलाल डालकर गुलाल से उन्हें सराबोर कर दिया। होली का त्योहार है। गौरा देवी ने नाराज होकर ईश्वर जी से कहा कि मुझ पर गुलाल डालकर आपने अच्छा नहीं किया। अब हमें हमारी माँ मारेंगी और साथ में आपको गालियाँ देंगी। तुमने हमारे नये के नये कपड़े खराब कर दिये हैं।

दोय मयला रा बीच, पोपटड़ो रे मोती चुगी रह्यो रे।
कोई मत देवो रे उड़ाय, आप ही आप पंछी उड़ी जासे।
रनुबाई अतिसय रोय, हिवड़ऽ लगई नऽ धणियर लई जासे
दोय मयला रा बीच, पोपटड़ो रे मोती चुगी रह्यो रे।
कोई मत देवो रे उड़ाय, आप ही आप पंछी उड़ी जासे
गऊर बाई अतिसय रोय, हिवड़ऽ लगई नऽ ईश्वर लई जासे
दोय मयला रा बीच, पोपटड़ो रे मोती चुगी रह्यो रे।
कोई मत देवो रे उड़ाय, आप ही आप पंछी उड़ी जासे।

सईत बाई अतिसय रोय, हिवड़ऽ लगई नऽ ब्रह्मा लई जासे,
दोय मयला रा बीच, पोपटड़ो रे मोती चुगी रह्यो रे।
कोई मत देवो रे उड़ाय, आप ही आप पंछी उड़ी जासे
रोयण बाई अतिसय रोय, हिवड़ऽ लगई नऽ चन्द्रमा लई जासे।

स्रोत- संजय महावत-बड़वाह

दो महलों के बीच में तोता मोती (अनार के दाने) चुन-चुनकर खा रहा है। कोई इसे उड़ाना मत। अपने आप ही वह उड़ जायेगा। रनुबाई अत्यधिक रो रही हैं। धनियर जी उसे हृदय से लगाकर ले जायेंगे। इसी प्रकार गऊर बाई (गौरी देवी) अत्यधिक रो रही हैं। उसे ससुराल जाना है, इसलिए रो रही हैं। ईश्वरजी उसे समझाते हुए अपने हृदय से लगाकर सांत्वना देते ले जायेंगे। दो महलों के बीच में एक तोता, मोती के समान अनार के दाने खा रहा है। कोई इसे उड़ाना मत। यह अपने आप उड़ जायेगा। सईत बाई (सावित्री देवी) ससुराल जाने के नाम से अत्यधिक रो रही हैं। ब्रह्माजी उसे सांत्वना देते हुए हृदय से लगाकर ले जायेंगे।

माता ऊच्यो पिपलई लम्बा पान, चढ़िया पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो राजा घणियरजी की पाग, तिल्व पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो राणी रनुबाई री गोद, पल्लव पर सूरीमल ऊणी रह्यो ओ।
माता ऊच्यो पिपलई लम्बा पान, चढ़िया पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो ईश्वरजी की पाग, तिल्व पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो राणी गऊरबाई री गोद, पल्लव पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता ऊच्यो पिपलई लम्बा पान, चढ़िया पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो राजा ब्रम्हाजी की पाग, तिल्व पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो राणी सईत बाई री गोद, पल्लव पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता ऊच्यो पिपलई लम्बा पान, चढ़िया पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो राजा चन्द्रमाजी की पाग, तिल्व पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।
माता उग्यो राणी रोयण बाई री गोद, पल्लव पर सूरीमल ऊणी रह्यो ओ।
माता ऊच्यो पिपलई लम्बा पान, चढ़िया पर सूरीमल ऊगी रह्यो ओ।

- कल्पना पवित्रा पाटीदार-घेघावां

ऊँचे से पीपल के लम्बे-लम्बे पत्ते हैं। उदित होते सूर्य के प्रकाश से पीपल के पत्ते चमक रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे सूर्य भगवान राजा धणियरजी के साफे से उदित हो रहे हैं और उसके प्रकाश से धणियरजी की साफे की कलंगी जगमगा रही है। उदित होते सूर्य से ऐसा प्रतीत होता है कि वह रानी रनुबाई के पल्लू से उदित हो रहा है। भास्कर के प्रकाश से रनुदेवी की साड़ी का पल्लू जगमगा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह रनुदेवी की कोख हरी होने की सूचना दे रहा हो।

इसी क्रम में राजा ईश्वरजी, राजा ब्रह्माजी और चन्द्रमाजी के साफे पर सूर्य का प्रकाश गिर रहा है। मानो सूर्य इन तीनों के साफे से उदित हो रहा है। सूर्य के प्रकाश से तीनों के साफे दैदीप्यमान हो रहे हैं। वहीं रानी गऊरबाई, सईतबाई, रोयणबाई के पल्लू पर सूर्य का प्रकाश दैदीप्यमान हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो सूर्यदेवता इन्हीं तीनों की गोद से उत्पन्न हुए हैं अथवा यहीं से उदित हुए हैं। उनके प्रकाश से तीनों की साड़ियों के पल्लू जगमगा रहे हैं या तीनों की कोख हरी हो गई है – इस बात का संकेत कर रहे हैं।

बाकी वलेण नद्दी ववऽ म्हारी सई होण, सेलई जामुण गयरी छाया।
त्यां भोला धणियर राजा धोत्या धोवऽ, रनुबाई हुया पणियार।
हमकऽ देखी नऽ राजा छींटा मत उड़ावजो।
हमरा पिताजी हम पर खीजऽ।
तुम्हरा पिताजी गोरी काई ओ करसे, चार दिन हँसी रलई खेलां।
अबीर गुलाल ना थाल हो भरिया, रंग नी उड़ऽ पिचकारी।
बाकी वलेण नद्दी ववऽ म्हारी सई होण।
सेलई जामुण गयरी छाया॥
त्यां भोला ईश्वर राजा धोत्या धोवऽ, बाई हुया पणिहार।
हमकऽ देखी नऽ राजा छींटा मत उड़ावजो।
हमरा पिताजी हम पर खीजऽ।
तमरा पिताजी गोरी काई ओ करसे, चार दिन हँसी रलई खेलां।
अबीर गुलाल ना थाळ हो भरिया, रंग नी उड़ पिचकारी।
बाकी वलेण नद्दी ववऽ म्हारी सई होण, सेलई जामुण गयरी छाया।
त्यां भोला ब्रम्हा राजा धोत्या धोवऽ, सईत बाई हुया पणिहार।
हमकऽ देखी नऽ राजा छींटा मत उड़ावजो।
हमरा पिताजी हम पर खीजऽ।
तुम्हारा पिताजी गोरी काई ओ करसे, चार दिन हँसी रलई खेलां।
अबीर गुलाल ना थालऽ ओ भरिया, रंग नी उड़ऽ पिचकारी।
बाकी वलेण नद्दी ववऽ म्हारी सई होण, सेलई जामुण गयरी छाया।
त्यां भोला चन्द्रमा राजा धोत्या धोवऽ, रोयण बाई हुया पणिहार।
हमकऽ देखी नऽ राजा छींटा मत उड़ावजो।
हमरा पिताजी हम पर खीजऽ।
तुमरा पिताजी गोरी काई ओ करसे, चार दिन हँसी रलई खेलां।
अबीर गुलाल ना थाल हो भरिया, रंग नी उड़ऽ पिचकारी।
बाकी वलेण नद्दी ववऽ म्हारी सई होण, सेलई जायेण गयरी छाया।

स्रोत–सुश्री कल्पना, पवित्रा पाटीदार, घेघावां

टेढ़ी–मेढ़ी नदी बह रही है। उसके किनारे पर गहरी छाया वाला जामुन का पेड़ है। उस स्वच्छ जल से धणियर राजा स्नान करके अपनी धोती धो रहे हैं। इतने में रनुबाई पानी लेने के लिए नदी किनारे आती है। धणियरजी मजाक स्वरूप उन पर पानी उछाल देते हैं। रनु नाराज होकर कहती है– आप हम पर पानी मत छिड़किये। हमारे पिताजी नाराज होंगे। तब धणियरजी प्रत्युत्तर में कहते हैं– हे गोरी! तुम्हारे पिताजी हमारा क्या कर लेंगे? क्योंकि होली का मदमस्त महीना है। इसमें कोई भी बुरा नहीं मानता है और तुम्हारे पिताजी भी बुरा नहीं मानेंगे। इस समय अबीर–गुलाल की थालियाँ भरी हुई हैं और रंग से भरी हुई पिचकारियों से रंग उड़ रहा है।

इसी क्रम में ईश्वरजी स्नान करते हैं, गऊरबाई (गौरा देवी) पानी लेने आती हैं और ईश्वरजी मजाक में उन पर पानी की बौछार कर देते हैं। गौरी नाराज होकर कहती हैं– आप हमें पानी की बौछारों से गीला मत कीजिये। हमारे पिताजी हम पर नाराज होंगे। ईश्वरजी गौरी से कहते हैं– होली का त्योहार नजदीक है। होली में कोई भी बुरा नहीं मानता। तुम्हारे पिताजी बुरा नहीं मानेंगे। इस समय अबीर–गुलाल के थाल भरे हैं और रंग की पिचकारियाँ छूट रही हैं। गीत में यही क्रम ब्रह्मा–सईतबाई, चन्द्रमा–रोहिणी के साथ दोहराया जाता है।

रनुबाई का सिर पर दोय गगरी छे जी,
असा भोला धणियरजी की दोय कलगी।
जल कसी भरूं?
खड़ी भरूं तो राजा रामचन्द्र देखऽ
बठी भरूं तो भिजाय चून्दड़ी,
जल कसी भरूं?
गऊर बाई का सिर पर दोय गगरी छे जी,
असा भोला ईश्वरजी की दोय कलगी,
जल कसी भरूं?
खड़ी भरूं तो राजा रामचन्द्र देखऽ
बठी भरूं तो भिजाय चून्दड़ी,
जल कसी भरूं?
सईत बाई का सिर पर दोय गगरी छे जी,
असा भोला ब्रह्माजी की दोय कलगी,
जल कसी भरूं?
खड़ी भरूं तो राजा रामचन्द्र देखऽ
बठी भरूं तो भिजाय चून्दड़ी
जल कसी भरूं?
रोयण बाई का सिर पर दोय गगरी छे जी,
असा भोला चन्द्रमा जी की दोय कलगी,

जल कसी भरूं?
खड़ी भरूं तो राजा रामचन्द्र देखऽ
बठी भरूं तो भिजाय चून्दड़ी
जल कसी भरूं?

रनुदेवी के सिर पर दो गगरियाँ हैं। धणियरजी की शीश की पगड़ी पर दो कलंगी शोभायमान हैं। जल कैसे भरूँ? खड़ी भरती हूँ तो राजा रामचन्द्र देख रहे हैं। बैठकर जल भरती हूँ तो मेरी अमूल्य चूनरी भींज जाती है। जल कैसे भरूँ? गऊरबाई (गौरा देवी) के सिर पर दो मटकियाँ हैं। ईश्वरजी के शीश के साफे पर दो कलंगियाँ शोभायमान हैं। जल कैसे भरूँ? खड़ी भरती हूँ तो राजा रामचन्द्र देखते हैं। बैठकर जल भरती हूँ तो मेरी साड़ी भींज जाती है। जल किस प्रकार भरूँ? सईतबाई (सावित्री देवी) के सिर पर दो गगरियाँ रखी हुई हैं। भोले-भाले ब्रह्माजी के शीश के साफे में दो कलंगियाँ लगी हुई हैं। जल कैसे भरूँ? खड़े होकर जल भरती हूँ तो राजा रामचन्द्र देखते हैं। बैठकर जल भरती हूँ तो मेरी साड़ी भींग जाती है। मैं जल किस प्रकार भरूँ? इस सोच में रनुदेवी, गौरीदेवी, सईतबाई, रोयणबाई न ठीक से जल भर पा रही हैं और न ठीक से अपने प्रियतम को नजर भरकर देख पा रही हैं। वह असमंजस में संकुचित हो रही हैं। इसके कारण उसका सौन्दर्य और द्विगुणित हो जाता है।

रूणझुण-रूणझुण राणी रनु बाई चल्या पीयर नी वाट।
रस्ता मऽ मिली गई वांजुली बाई।
अधबीच रस्तो रोक्यो ओ।
एक बालो माता हमकऽ ओ देवो,
जबऽ तुम पीयर पधारो ओ।
कंडा सी कंडो तूनऽ फोड्यो वांजुली बाई
ऊपर सी ढोलई राख ओ।
दिवला सी दिवलो तून जोयो वांजुली बाई।
धारण पोयचा हाथ ओ।
भर्‌या कलश तूनऽ ढोल्या वांजुली बाई।
डेल कऽ ठोकर मारी ओ।
सासु नणदुल तूनऽ त्यागी वाँजुली बाई।
पड़ोसण प्रीत लगाई ओ।
रूणझुण-रूणझुण गऊर बाई चल्या पीयर नी वाट।
रस्ता मऽ मिली गई वांजुली बाई
अधबीच रस्तो रोक्यो ओ।
एक बालो माता हमकऽ ओ देवो।
जवंऽ तुम पीयर पधारो ओ।

कंडा सी कंडो तूनऽ फोड़्यो वांजुली बाई।
ऊपर सी ढोलई राख ओ।
दिवला सी दिवलो तूनऽ जोयो वांजुली बाई।
धारण पोयचा हाथ ओ।
भर्‍या कलश तूनऽ ढोल्या वांजुली बाई।
डेल कऽ ठोकर मारी ओ।
सासु नणदुल तूनऽ त्यागी वांजुली बाई।
पड़ोसण प्रीत लगाई ओ।

स्रोत– सुश्री कल्पना, पवित्रा पाटीदार–घेघावां

रुनझुन–रुनझुन करती रनुदेवी अपने मैके के रास्ते पर जा रही हैं। इस रास्ते के बीच एक बंध्या स्त्री रास्ता रोककर खड़ी हो गई है। माता से प्रार्थना करती है– हे माँ! मुझे एक पुत्र प्रदान कीजिये। इसके बाद आप अपने मैके जाइए। माता ने बंध्या स्त्री से कहा– तुमने शास्त्रों के विपरीत काम किये हैं। तुम्हें बच्चा कैसे होगा? बंध्या ने कहा– मैंने लोक व्यवहार के विपरीत क्या कार्य किया है? माता ने कहा– तुमने कण्डे से कण्डा तोड़ा है और घूरे पर राख डाली है। दीपक से दीपक जलाकर मध्यगृह के खम्भे से हाथ पोंछे हैं। भरे हुए कलश का पानी व्यर्थ बहा दिया। घर की दहलीज को ठोकर मारी है। सासुजी और ननद रानी का त्याग किया है। उनकी बात नहीं सुनी। उनकी सेवा नहीं की और अपनी पड़ोसन से अत्यधिक प्रेम किया है। इस कारण तुम्हें बच्चा नहीं होगा। यदि तुम ये सब काम बंद कर दो, तो तुम्हें बच्चा होगा। ये सभी काम दोषपूर्ण हैं।

अगर चन्दन बिल पाती, किनकी करां हम आरती जी॥
थारी आरती मऽ भर्‍या को भंडार, छत्तीस करोड़ देवता ओ।
तम तो उतरो म्हारी रनुबाई नार, हम कब लगऽ जोवां थारी वाट।
अगर चन्दन बिलपाती, किनकी करां हम आरती जी॥
थारी आरती मऽ भर्‍या ओ भंडार, छत्तीस करोड़ देवता ओ
तम तो उतरो म्हारी गऊर बाई नार, हम कब लगऽ जोवां थारी वाट।
अगर चन्दन बिलपाती, किनकी करां हम आरती जी॥
थारी आरती मऽ भर्‍या ओ भंडार, छत्तीस करोड़ देवता ओ।
तम तो उतरो म्हांरी सईत बाई नार, हम कब लगऽ जोवां थारी बाट।
माता अगर चंदन बिलपाती, किनकी करां हम आरती जी॥
थारी आरती मऽ भर्‍या ओ भंडार, छत्तीस करोड़ देवता ओ।
हम तो उत्तरो म्हारी रोयण बाई नार, हम कब लग जावां थारी वाट।

स्रोत–रंजना, प्रमिला रन्सौटै–महेश्वर

अगर चन्दन और बेलपत्र लेकर हम किसकी आरती करें? इस आरती को हम सम्मान देते हैं। इस आरती में छप्पन प्रकार के भण्डार भरने की क्षमता है और यह आरती छत्तीस करोड़ देवी-देवताओं की होती है। हे रनुबाई! आप प्रकट हों जाओ या आकाश से उतरो। हम कब तक आपकी प्रतीक्षा करें। अगर, चन्दन और बेलपत्र लेकर हम किसकी आरती करें? इस आरती में विभिन्न वस्तुओं का भण्डार भरा है। यह आरती छत्तीस करोड़ देवी-देवताओं की होती है। हे गौरा देवी! आप प्रगट हो। हम कब तक आपकी प्रतीक्षा करें? अगर, चन्दन और बेलपत्र लेकर हम किसकी आरती करें? इस आरती में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ भरी हुई हैं। यह आरती छत्तीस करोड़ देवी-देवताओं की जाती है। हे सईतबाई! तुम प्रगट हो। हम आपकी कब तक प्रतीक्षा करें? अगर, चन्दन और बेलपत्र लेकर हम किसकी आरती करें? इस आरती में छप्पन प्रकार की वस्तुओं का भण्डार भरा हुआ है। यह आरती छत्तीस करोड़ देवी-देवताओं की होती है। हे रोयणबाई! आप प्रगट हो जाओ। हम कब तक आपकी प्रतीक्षा करें?

मारूजी पाँच अरज म्हारी सुणो हो, नणद बाई का वीरा जी।
मारूजी स्याला रहूँ आप य्हाँ, उन्हाल रहूँ बाप य्हाँ।
मकऽ चौमासा मामा घर पोयचाय देवो जी, मारू जी पाँच अरज म्हारी॥
मारूजी, स्याळऽ रहूं धाबा पऽ, उन्हाळऽ रहूं छज्जा पऽ।
मकऽ चौमासा मऽ मयल थिगाय देवो जी, मारूजी पाँच अरज म्हारी सुणो हो॥
मारूजी, स्याळा पेरां पोमचो, उन्हाळऽ पेरां चून्दड़ी
मकऽ चौमासा लेहरिया रंग देवो जी, मारूजी पाँच अरज म्हारी सुणो हो॥
मारूजी सासु मार लाकड़ी, नणद मार थापड़ी, मकऽ तुम तो हिरदा सी लगाय लेवो जी।
मारूजी पाँच अरज म्हारी सुणो हो, नणद बाई रा वीरा जी॥

स्रोत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय-खण्डवा

हे स्वामी जी! मेरी पाँच विनती सुन लीजिये। हे मेरी प्यारी ननद के वीर! मेरी पाँच विनती मान लीजिये। हे स्वामी! ठण्ड के मौसम में मैं आपके यहाँ रहूँगी, गर्मी के मौसम में मैं अपने पिताजी के घर रहूँगी और बरसात के मौसम में आप मुझे मामाजी के घर पहुँचा देना। हे स्वामी! मैं ठण्ड के मौसम में ऊपरी (धाबा) पर रहूँगी। गर्मी के मौसम में छज्जे पर रहूँगी। बरसात के मौसम में आप ऊँचे शानदार महल बनवा देना। हे स्वामी! ठण्ड के मौसम में मैं भारी जरी की साड़ी पहनूँगी। गर्मी के मौसम में मैं हल्की-फुलकी चूनरी पहनूँगी और बरसात के मौसम में मुझे आप राजस्थानी लहरिया ला देना। हे स्वामी! आपकी माँ मुझ पर गुस्सा करे या मारे, ननद रानी ताना या उलाहना मारे, तब आप मुझे हृदय से लगा लेना। हे स्वामी! मेरी पाँच विनती मान लीजिये।

म्हारो गोरो सो रंग कोमलाय रे, तावड़ा धीरऽ तपजे।
म्हारी चून्दड़ को रंग उड़ी जाय रे, तावड़ा धीरऽ तपजे।

दोहा: *सासरिया कऽ जाऊँगी, संग म्हारा भरतार।*
उधी पेरी चून्दड़िया नऽ गला मऽ नौसरियो हार।
म्हारो जोबन हिलौला खाय रे।
तावड़ा धीरऽ तपजे।

दोहा: *फूल्यो फूल गुलाब को, बाग खिली कचनार।*
नीम्बू नारंगी लगऽ री, केवड़ो तेल झराय।
रस जोबन को गिरी-गिरी जाय रे।
तावड़ा धीरऽ तपजे।

दोहा: *पंथ चलऽ तो पग दुखऽ म्हारो दिल बहुत घबराय।*
बोलूं तो बुरो लगऽ मन रह्यो झपटाय।
मकऽ सोऊं तो नीद नहीं आवऽ रे,
तावड़ा धीरऽ तपजे।

दोहा: *संग मऽ साजन सांवरो, लूटज फूल अनार*
दास गोविन्द की मति करो सेज रे।
तावड़ा धीरे तपजे।

स्रोत-श्री दशरथ चौहान-घट्टी

मेरा गोरा रंग इस धूप को सहन नहीं कर रहा है। मेरा तन कुम्हला रहा है। मेरे गोरे रंग की बजाय श्याम हुआ जा रहा है। हे धूप! तुम तेज मत तपो। इस धूप में मेरा तो क्या, मेरी चूनरी तक का रंग उड़ा जा रहा है। मैं अपने ससुराल जा रही हूँ और साथ में मेरे स्वामी भी हैं। मैंने आसमानी रंग की साड़ी पहनी है और मेरे गले में नौ लड़ वाला अमूल्य हार है। मेरा मदमस्त यौवन हिलोरें ले रहा है। गुलाब के फूल खिले हैं। बागों में कचनार फूली है। साथ ही बागों में नींबू, नारंगी की बहार आई हुई है। वहीं केवड़ा सुगन्धित तेल में सराबोर हो गया है। इसी मदमस्त केवड़े के रस के समान मेरा यौवन का रस भी छलक रहा है। रास्ते में चलती हूँ तो मेरे पैर दर्द करते हैं और मेरा दिल बहुत घबरा रहा है। स्वामी से बोलूँ तो उन्हें बुरा लगेगा। मैं मन ही मन संकुचित हूँ - क्या करूँ, क्या कहूँ, मैं सोती हूँ तो मुझे नींद ही नहीं आती है।

हे मेरे स्वामी! मेरे इस मदमस्त यौवन का रस लूट लीजिये। जिस प्रकार अनार के दानों से रस निकाल लेते हैं। उसी प्रकार मेरे यौवन का रस निकाल लीजिये। हे स्वामी! आप मेरी सेज पर आइए और मेरे अतृप्त यौवन को शान्त कीजिये। गोविन्ददास यही बात बता रहे हैं।

दोयलो छे रे महाराज, परवस दोयलो छे रे महाराज।
चौमासा रे सरीखो नीर झड़े रे वाला, पंछी पियासा जाय,
मूसलाधार मेवा घणां बरसें, तो नीर बहे निराधार॥
प्रियतम हुया परवश, पड़ी गया परेम का चाळा मऽ।

स्याला मां ठण्ड घणी पड़ऽ रे वाला, रुख कागज लिखऽ।
पत्र लिखूं रे म्हारा नयन भींजऽ रे वाला, धूप पड़े नऽ सुहाय,
नरसिंह ना स्वामी नऽ जाई कर जोरे वाला, जोवनियो कुमलाय॥
प्रियतम परवश हो गये।

प्रियतम! परवश हो गये हैं। परदेश में किसी पराई स्त्री के प्रेम में पड़ गये हैं, इसलिए इधर आने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। उस स्त्री में बिलम गये हैं। हे स्वामी! यहाँ चौमासा में एक सरीखा झड़वाला (घनघोर) पानी गिर रहा है। पक्षियों को पीने के लिये स्वच्छ पानी तक नहीं मिल रहा है, इसलिए वे प्यासे मर रहे हैं। मूसलाधार पानी बरस रहा है, हद छोड़कर बेहद पानी बरस रहा है। हे स्वामी! ठण्ड की ऋतु में इतनी अधिक ठण्ड पड़ रही है कि पूछो मत। जाड़े में तुम्हारी याद आ रही है, इसलिए रुक्मिणी पत्र लिख रही है। पत्र लिखते-लिखते कृष्ण की याद में आँखें भींग जाती हैं। पत्र में वह स्वामी को जल्दी घर आने के लिए लिख रही है। हे स्वामी! गरमी में एक सरीखी धूप पड़ रही है, धूप जरा भी अच्छी नहीं लगती।

नरसिंह स्वामी कहते हैं- मेरे स्वामी (कृष्ण) से कहिए कि मेरा यौवन व्यर्थ ही जा रहा है, यौवन कुम्हला रहा है, इसलिए जल्दी से घर आ जाओ। मैं राह देख रही हूँ।

अमुक भाई वालई कऽ राखड़ी की भरात।
पिया हमखऽ रे राखड़ी घड़ई देव।
उंढ़ालई सेज पिया मोहे नऽ सुहावे।
जुदा-जुदा पलंग तुलई देव।
पिया हमखऽ रे राखड़ी घड़ई देव।
चौमासा की सेज पिया मोहे न सुहावे।
पिया हमखऽ रे पियर पहुँचई देव।
पिया हमखऽ रे राखड़ी घड़ई देव।
स्याला की सेज पिया बहुत रसालई।
पिया हमखऽ रे हिया सी लगई लेव।
पिया हमखऽ रे राखड़ी घड़ई देव॥

अमुक भाई की पत्नी को राखड़ी का शौक है। हे प्रिय! मुझे भी राखड़ी बनवा दीजिये। हे प्रिय! ये गर्मी की सेज मुझे नहीं सुहाती। हमें तो अलग-अलग पलंग डलवा दें। हे प्रिये! चौमासा की सेज मुझे नहीं भाती। आप तो हमें मायके भेज दीजिये। हे प्रिये! ये जाड़े की सेज बड़ी रसीली है। इसमें आप मुझे अपने हृदय से लगा लीजिये। इस गर्मी से ऊब चुकी हूँ।

इना रे पाणी की चतरई, झगड़ो सो लाग्यो।
झगड़ता-झगड़ता पगारा मऽ गया।

पगारा का गणपत देवश झगड़ो सो तोड़ावो रे।
तमरो झगड़ो राजा भंवर हमसे ना टूटऽ,
तमरो झगड़ो राजा भंवर महादेव देव तोड़ावसे।
इना रे पाणी की चतरई, झगड़ो सो लाग्यो,
झगड़ता-झगड़ता चंवरा मऽ गया।
चवरा का महादेव देव झगड़ो सो तोड़ावो रे।
तमरो झगड़ो राजा भंवर हमसे ना टूटऽ,
तमरो झगड़ो राजा भंवर चोलई का भैरुंग तोड़ाव रे
इना रे पाणी की चतरई झगड़ो सो लाग्या,
झगड़ता-झगड़ता चोलई मऽ गया।
चोलई का भैरुंग देव झगड़ो सो तोड़ावो रे,
तमरो झगड़ो राजा भंवर हमसे ना टूटऽ,
तमरो झगड़ो राजा भंवर नागलवाड़ी भिलट तोड़ायऽ रे
इना रे पाणी की चतरई, झगड़ो सो लाग्यो,
झगड़ता-झगड़ता नागलवाड़ी मऽ गया।
नांगलवाड़ी का भिलट देव, झगड़ो सो तोड़ावो रे,
तमरो झगड़ो राजा भंवर हमसे ना टूटऽ,
तमरो झगड़ो राजा भंवर साठई राव तोड़ावऽ रे।
इना रे पाणी की चतरई, झगड़ो सो लाग्यो,
झगड़ता-झगड़ता साठई राव पास गया,
साठई राव हमारो झगड़ो, सो तोड़ावो रे।
तमरो झगड़ो राजा भंवर हमसे ना टूटऽ,
तमरो झगड़ो राजा भंवर कुन्दई राणो तोड़ावऽ रे।
इना रे पाणी की चतरई, झगड़ो सो लाग्यो,
झगड़ता-झगड़ता कुन्दई राणा पास गया।
कुन्दई राणा हमारो झगड़ो सो तोड़ावो रे।
हमरो झगड़ो राजा भंवर हमसे ना टूटऽ,
तमरो झगड़ो राजा भंवर काजल राणी तोड़ावऽ रे।
तातो तपेलो ओ काजल पाणी की सर्‌यो।
न्हावड़्यो-धोवड़्यो रायसल कऽ पालण सोवाड़्यो॥ 1॥
आधी रात काजल आगऽ आधी रात पाछ ओ।
मंज ओ रात काजल सरग निशाणी लगाई ओ॥ 2॥
एक पयड़ी चढ़्या काजल दूसरी पयड़ी चढ़्या।
तीजी मऽ काजल गया ओ सरग माय॥ 3॥

माताजी-माताजी करी काजल हाँक मारी ओ।
खोलो की खोली ओ माता म्हारी वजीर किवाड़॥ 4॥
माची बसन्ता माताजी उठी आया वो।
आई नऽ खोली दिया वजीर किवाड़ वो॥ 5॥
आधी रात काजल आधी रात पाछ ओ।
मंज रात ओ काजल तू क्यो अरू आया वो।
बाला रायसल नऽ धरी आया वो।
सासु नणद माता म्हारी मसला सा बोल्या,
राजा इन्द्र की बेटी काजल थारा बाप का राजमऽ
पाणी को पड़्यो हयकार ओ।
अंगूठा की झाल बरमट पोइची ओ।
गई-गई पिताजी का पास ओ।
जाओ-जाओ बेटी काजल रायसल कऽ सम्भाल।
भेजूं-भेजूं हो बेटी थारा लूला लंगड़िया भाई नकऽ
पड्यो कि पड़्यो पाणी मूसलधार ओ।
वई गई वई गई वैयराट की धरती ओ॥ 6॥

स्रोत-श्री गुलाब माय कुशवाह-दवाना

सृष्टि और जीवन में पानी का बहुत महत्त्व है। बिन पानी सब सून। जल ही जीवन है। पर पानी कहीं तो अधिक गिरता है और कहीं कम गिरता है। एक समय इस बात पर राजा भँवर की लड़ाई पानी से हो गई। दोनों झगड़े की सुलह के लिये सारी दुनिया में फिरते हैं। दोनों झगड़ते हुए पगारा ग्राम के गणेश देवता के पास जाते हैं। कहते हैं- हमारा झगड़ा तोड़ दीजिये। गणेशजी मना करते हुए कहते हैं- राजा भँवर तुम्हारा झगड़ा मुझसे नहीं टूटेगा। आप तो मेरे पिताजी महादेवजी के पास चवरागढ़ जाओ। दोनों चवरागढ़ शिव के पास जाते हैं। विनयपूर्वक कहते हैं- हे सदाशिव! हमारे झगड़े का निवारण कीजिये। शंकरजी भी झगड़ा तोड़ने से मना कर कहते हैं- तुम्हारा झगड़ा तो चोली ग्राम के भैरव देव तुड़वा सकते हैं। तब दोनों चोली ग्राम के भैरवदेव के पास जाते हैं। भैंरोदेव भी असमर्थता दर्शाकर उन्हें नागलवाड़ी भिलटदेव के पास भेजते हैं। दोनों नागलवाड़ी भिलटदेव के जाते हैं। अपनी बात कहते हैं- भिलटदेव (नागदेवता) भी झगड़ा तोड़ने में असमर्थ रहते हैं। कहते हैं- आप तो साठईराव के पास जाइए, वे ही आपका झगड़ा न्यायपूर्वक तुड़वा सकते हैं। दोनों साठईराव के पास गये। साठईराव ने भी असमर्थता व्यक्त की और कहा कि- आपका झगड़ा तो कुन्दई राणा ही तुड़वा सकते हैं। राजा भँवर और मेघ देवता कुन्दई राणा के पास जाते हैं। पर कुन्दई राणा भी कोई सन्तुष्टिपूर्ण उत्तर नहीं देते। तो वे कहते हैं- तुम्हारा झगड़ा तो मेरी पत्नी काजल राणी तुड़वा सकती हैं। दोनों काजल राणी के पास जाते हैं।

क्योंकि पृथ्वी पर पानी का अकाल पड़ा था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची थी। काजल रानी ने उन्हें आश्वासन दिया कि पानी जरूर बरसेगा। तुम दोनों घर जाओ। दोनों को विदा करने के बाद काजल रानी ने तपेले में पानी गर्म किया और उससे अपने बालक रायसल को स्नान कराया। मध्यरात्रि में काजल रानी ने स्वर्ग जाने वाली निसरणी लगाई। एक पैढ़ी चढ़ी, दूसरी पैढ़ी चढ़ी और तीसरी में वह स्वर्ग लोक पहुँच गई। अपने पिता के भवन के पास जाकर काजल रानी ने माताजी-माताजी! कहकर आवाज लगाई। माँ दरवाजा खोलो। खटिया पर सोई माँ ने सुन लिया। यह आवाज मेरी बेटी काजल की है। उन्होंने आकर दरवाजा खोल दिया।

अन्दर आने पर माता ने काजल से पूछा- बेटी! आधी रात के समय तुम्हारा आना कैसे हुआ और तुम्हारा पुत्र रायसल कहाँ है? कुशल से तो हो? बताओ। तब काजल रानी ने कहा- हे माँ! मेरी सास और ननद मुझे ताने मारती हैं। कहती हैं कि राजा इन्द्र की बेटी के राज में अकाल कैसे पड़ा? यहाँ तो पानी ही पानी होना था। इन वचनों को सुनकर मुझे अँगूठे से लगाकर मस्तिष्क तक तेज गुस्सा आया है। माँ से मिलने के बाद काजल रानी अपने पिता के समक्ष गई। पिताजी को अपनी स्थिति से अवगत कराया। पिता पुत्री को आश्वासन देते हुए कहते हैं- बेटी! तुम घर जाओ। अभी मैं तुम्हारे लूले-लंगड़े भाइयों को भेजता हूँ, जो पृथ्वी पर वर्षा करके जल की कमी को पूर्ण कर देंगे। पिता के आदेश पर लंगड़े-लूले बादलों ने इतना पानी बरसाया कि राजा विराट की पृथ्वी जल से परिपूर्ण हो गई, जलमग्न हो गई।

ताम्बा पित्तल का ओ काजल घड़ीला नऽ लिया
पाणी कऽ चली सरवर पाल जायलड़ी रो नीर।
आधी सई नऽ आगऽ नऽ आधी सई नऽ पाछऽ।
इचमण चमक काजल राणी जायलड़ी रो नीर।
एक बंद छोड़्यो ओ काजल दुजो बंद छोड़्यो,
तीजा बंद गई सरवर पाल ओ जायलड़ी री पाल,
घड़ीला मेल्या ओ काजल सरवर री पाल।
चोमलड़ी मेली चम्पा डाल ओ जायलड़ी रो नीर।
माँजा की सुवा काजल डोल सो नाख्या ओ,
डोल सो न्हाख्यो काजल कुवा का माय।
रीतो डोल काजल को पाणी नी देखाय ओ,
समुंदर गयो ओ काजल बायलड़ी रो नीर॥ 1॥
रीता घड़ीला ओ काजल उठाई ओ लिया
लगी गया घर को काट ओ जायलड़ी रो नीर
हाथई पर बट्या कुदई राणो काई ओ बोलऽ
आधा बठ्या राजा राजपूत आधा बठ्या ओ
डोड्या चौहान जायलड़ी रो नीर॥ 2॥

इचमण बठ्यो ओ कुदई राणो मसलो सो बोल ओ
राजा इंदर की काजल रीता घड़ीला नऽ लाया ओ
पापी पड़ियो ओ हयकार ओ जायलड़ी रो नीर
अंगठा झाल ओ काजल बरमट गई ओ,
घड़ीला मेल्या ओ पणियारा माय चोमलड़ी खुटी माय,
ताता तपेला ओ काजल पाणी ओ मेल्यो
पाणी समायो गायवाड़ा माय जायलड़ी रो नीर॥ 3॥
रायसल वाला कऽ ओ काजल न्हावड़ण लायी ओ,
न्हावड़ी धोवाड़ियो ओ काजल बस्तर सी पेरावां,
आंख अंजन की देख ओ जायलड़ी रो नीर।
चांद सुरीज का काजल खम्ब सो रोपीया ओ
रेखम बांध्या लम्बा डोर ओ जायलड़ी रो नीर॥ 4॥
रायसल बालुड़ा कऽ काजल धाय लगायो
बालुड़ो धवाड़्यो ओ काजल पालणा सोवाड़ियो,
हासु बाई कऽ मेली रखवाल ओ जायलड़ी रो नीर,
सरग निसाणी ओ काजल नऽ लगई दी
काजल चली वका दादाजी का देश,
जायलड़ी रो नीर॥ 5॥
दरीवान, दरीवान ओ काजल हाँऊ ओ माड़ी,
दरीवान दरवाजा, खोलो जायलड़ी रो नीर।
मांची बठन्ता ओ माता नऽ सुणी ओ लिया
जसो बेटी काजली की आवाज
दरीवान, खोल्या ओ, इंदर पूछण, ओ लाग्या,
आधीरात आगऽ आधीरात पाछऽ ओ काजल,
रायसल बाला कऽ कहां मेली आया ओ
जायलड़ी रो नीर॥ 6॥
चांद सूरीज का ओ दादाजी खम्ब सा रोपीया ओ,
रेशम बांध्या लाम्बा डोर ओ जायलड़ी रो नीर
हासू बाई कऽ मेली रखवाल ओ जायलड़ी रो नीर
सरवर पाणी ओ काजल लेणऽ कऽ गई ओ,
पाणी को पड़्यो हयकार, ओ जायलड़ी रो नीर॥ 7॥
रीता घड़ीला नऽ ओ दादाजी काजल घर लाई
भरी सभा मऽ कुन्दई राणो मसलो सो बोल्या ओ
राजा इंदर की काजल रीता घड़ीला नऽ लाई

ओ जायलड़ी रो नीर।
एक जो मेघ दादाजी हमकऽ देवो वो
वरस नव खंड पिरथी ओ जायलड़ी रो नीर।
जाजे ओ बेटी काजल थारा काकाजी का पास
ओ देगऽ ओ मेघ, जायलड़ी रो नीर॥ 8॥
काकाजी, काकाजी दरीवान खोलो,
रसवाई करन्ता ओ काकी नऽ सुणी ओ लिया,
जसो बेटी काजल को आवाज
दरीवान खोल्या ओ काकाजी पूछणऽ लग्या ओ
इतरी रात कऽ ओ काजल आवणो क्यों हुयो,
रायसल बाला कऽ कहां मेलो आया ओ
जायलड़ी रो नीर॥ 9॥
एक जो मेघ ओ काकाजी हमकऽ तो देवो
वो वरष नव खंड प्रिथ्वी ओ जायलड़ी रो नीर
एक जो मेघ ओ काजल वीराजी पास जाओ
वो तमकऽ दिसे लंगड़ियो मेघ जायलड़ी रो नीर
वीराजी ओ वीराजी काजल नऽ हाक ओ मारी
दरीवान दरीवान दरवाजा खोलो
झुला झुलन्ता ओ वीराजी नऽ सुणी ओ लियो
जसो बेन्या काजल को आवाज
ओ जायलड़ी रो नीर॥ 10॥
दरीवान खोल्या ओ वीराजी पूछवा लाग्या ओ
रायसल बाला कऽ कहां मेली आया
ओ जायलड़ी रो नीर।
न्हावड़ीयो धोवाड़ीयो वस्तर सो पेराया ओ
चांद सूरीज का ओ वीराजी खम्ब सा रोपीया
रेशम बांध्या लम्बा डोर ओ जायलड़ी रो नीर
हासु बाई कऽ मेल्या ओ रखवाल
कुन्दई राणो मसलो सो बोल्यो ओ
जायलड़ी रो नीर॥ 11॥
एक जो मेघ वीरा ओ हमकऽ देवो ओ
वरष नव खंड प्रिथ्वी ओ जायलड़ी रो नीर।
एक जो मेव ओ काजल तमकऽ ओ देवा
हासु बाई का मांगा मांगी जाओ

सोन्ना रूपा का ओ काजल नारियल मढ़ाओ
हासु बाई हमकऽ परणाओ ओ जायलड़ी रो नीर
जब जाई नऽ देवां लंगड़्यो मेघ ओ
लंगड्यो ओ मेघ लई नऽ ओ काजल घर सो आया,
कुन्दई राणा कऽ बोलऽ मसला का बोल
ओ जायलड़ी रो नीर॥ 12॥
हासु बाई नणद का ओ कुन्दई राणा मांगा मांगी आया ओ
जब जाई लाया लंगड्यो मेघ
ओ जायलड़ी रो नीर॥ 13॥

काजल रानी का प्रदेश भयंकर दुर्भिक्ष से पीड़ित है। पृथ्वी पर पानी की एक बूँद भी नहीं बची है। ऐसी स्थिति में काजल रानी ताम्बे और पीतल के घड़े लेकर प्रदेश की सभी सहेलियों को लेकर पानी लेने चल पड़ी हैं। आधी महिलाएँ आगे और आधी महिलाएँ पीछे चल रही हैं और बीच में काजल रानी चल रही हैं। किंवदंती के अनुसार काजल माता राजा इन्द्र की बेटी है। इन्द्रलोक से पृथ्वी पर वर्षा के बादल लाने का श्रेय उसे ही है। निमाड़ में इस मिथ गाथा को अनुष्ठानपूर्वक बीज अंकुरित होने के बाद वर्षा न होने पर समारोहित करने की परिपाटी है। पानी की तलाश में काजल एक वन से दूसरे वन में भटक रही हैं, क्योंकि पृथ्वी पर अकाल पड़ा है। ऐसे में पानी कहीं भी नहीं मिल रहा था। तालाब, कुँए, बावड़ी सूख गये थे, तीसरे वन में एक कुँए में पानी का अनुमान लगाकर काजल रानी ने बाल्टी डाली, लेकिन कुँए में पानी का नामोनिशान नहीं था। यहाँ तक कि वह सहेलियों के साथ समुद्र तक पहुँची, लेकिन विशाल समुद्र भी सूख गया। वह निराशह होकर लौटी। चौक में कुन्दई राजपूत राजा जनसभा के बीच में बैठे काजल रानी की प्रतीक्षा कर रहे थे। खाली घड़े देखकर राजपूत राणा क्रोधित हो गया, वह काजल रानी को ताने मारने लगा। उसने कहा– तुम राजा इन्द्र की बेटी होकर बिना पानी के किस प्रकार खाली घड़े लेकर लौट आई। तुम तो नाम मात्र की इन्द्र की बेटी हो। अनेक व्यंग्य बाण कुन्दई राजा काजल रानी पर छोड़ने लगा। जहाँ खाली मटके लुढ़क रहे थे, वहीं सभी महिलाओं ने ताम्बे और पीतल के खाली घड़े भी रख दिये।

ढूँढ–ढूँढकर बड़ी मुश्किल से जो पीने का पानी था, उसे गरम किया, अपने शिशु को काजल रानी ने गाय की गोठाण में प्रतीक रूप में स्नान कराया। फिर उसे वस्त्र पहनाये, आँखों में काजल लगाया। शिशु को दूध पिलाया और पालने में सुला दिया। कुंवारी ननद हासुबाई को पालने का शिशु सौंपकर काजल रानी नसैनी लगाकर स्वर्ग की ओर चढ़ने लगी। पिता इन्द्र के द्वार पहुँचकर उसने द्वार पर चौकीदार को आवाज लगाई। पलंग पर बैठी हुई माँ ने आवाज सुनी, उसने बेटी की आवाज पहचान ली। उसने चौकीदार को आज्ञा दी – यह आवाज काजल बेटी की है, यथाशीघ्र दरवाजा खोल दो। दरवाजा खुल गया। काजल ने राजभवन में प्रवेश किया। पिता इन्द्र ने पूछा– हे बेटी! इस समय तुम्हारा आगमन कैसे हुआ, अर्द्धरात्रि को यहाँ आने का

क्या कारण है? काजल ने कहा– पिताजी मैं अपने बच्चे को ननद के पास छोड़ आई हूँ। चारों ओर अकाल पड़ा हुआ है, बारह–बारह कोस तक पानी का नामोनिशान नहीं है। मेरे पति कुन्दई राणा अलग व्यंग्य बाण मारते हैं। आप कृपा करके मुझे एक बादल का टुकड़ा दे दें, ताकि पृथ्वी जल से परिपूर्ण हो जाये। पिता ने कहा– पुत्री यह काम मेरा नहीं है, तुम अपने काकाजी के पास जाकर अपनी व्यथा दर्शाओ और उनसे प्रार्थना करो तो वे तुम्हें एक बादल प्रदान कर देंगे। काजल माता काकाजी के महल में गई। महल के द्वार पर पहुँचकर काजल ने आवाज लगाई। रसोई में बैठी काकी ने उसकी आवाज पहचान ली। काकाजी और काकी ने भतीजी के असमय आने का कारण पूछा। बेटी तुम पर कौन सा संकट आ पड़ा है, तुम्हारा रायसल बालक कहाँ है? काजल धैर्य पूर्वक काका और काकी को समस्त हाल–समाचार सुनाती है। विनती करती है– काकाजी एक मेघ दे दो जो नवखण्ड पृथ्वी को जल से परिपूर्ण कर सके, काकाजी असमर्थता दर्शाते हैं और कहते हैं बादल देने या पानी बरसाने का अधिकार तो तुम्हारे भाई का है, इसलिए तुम अपने भाई के पास जाओ। काजल अपने भाई के घर गई। झूले पर बैठे हुए भाई ने बहिन की कुशल पूछी फिर आने का कारण। बहिन ने वही बात दुहराई जो पिता और काका को कही थी। भाई ने कहा– मेरे पास अच्छा एक भी बादल नहीं है। एक लंगड़ा बादल है। यदि तुम ले जा सको तो ले जाओ, पर मेरी एक शर्त है, तुम अपनी ननद हासुबाई से मेरा ब्याह करवा दो।

काजल रानी ने भाई की शर्त मान ली। उसने भाई को सगाई के रूप में सोने का नारियल दिया। भाई ने उसे एक लगड़ा बादल दे दिया। ज्यों ही पृथ्वी पर काजल माता ने पाँव रखा त्यों ही चारों ओर पानी गिरने लगा। कुन्दई राणा को आश्चर्य हुआ। काजल रानी किस प्रकार बादल ले आई? इसके बदले में उसने क्या दिया? काजल रानी को दिये गये तानों का जवाब देना था। इसलिए उसने पति से कहा– 'तुम्हारी बहन का ब्याह मेरे भाई से करके लंगड़ा बादल लाई हूँ, वर्ना पानी मिलना असंभव था। यही लंगड़ा बादल आज भी पृथ्वी की प्यास बुझा रहा है।'

कुन्दई राजा ने अचम्भे से पूछा– यह बादल लंगड़ा किस प्रकार है? लंगड़ा इस प्रकार कि जब यह घोड़े की तरह चलता है, तब कहीं कम वर्षा होती है, और जब यह हाथी की तरह धीमी गति से चलता है तब अधिक वर्षा होती है, और लंगड़ा बादल जहाँ कहीं बैठ जाता है तब वहाँ अधिक से अधिक वर्षा होती है।

तांबा और पीतल का काजल राणी और घड़ीला लिया।
की सेरी मंऽ ऊबी औ काजल माता सईन बुलावऽ।
एक बंद छोड़ियो काजल राणी दुजौ बंद छोड़ियो ओ।
तिजा बंद गई औ, काजल सरवर की पाल।
घड़ीलण नऽ मैली या काजल सरवरी पाल ओ।
की चौमल मेली का जल बांदेली जाल ओ।
मांजा की धोया काजल घड़ी लण धोया ओ।

झाकी झकौली काजल घड़ीलण भरीया।
हाथ सौ धोया काजल पांय सौ धोया।
की मुखड़ो सौ धोयो काजल झोंझा नीर।
की ऊँची सी बईड़ी मेलेण गवलेण धेनु चरावऽ।
की हमरा घड़ीला काजल नइं हम उठावां ओ।
की छत्तीस पान को औ काजल राणी बिड़ीलो
तम हमारो खाओ।
की तमारो बिड़ीलो मेलेण गवलेण नइं हम चावां।
की हमरो कुंदई राणो मेलेण गवलेण बड़ो खून खराबा रे।
की जसीपत चाहो काजल राणी वसी पत चबाड़ो।
की घड़ीलण उठाया काजल घरऽ वाटऽ लाग्या।
की एक बंद छोड़ीयो काजल दूजो बंद छोड़ियो।
तिजा बंद आई ओ काजल अपणा घर ओ।
घड़ीला उतार्‌या काजल तुम पणीयारा मेलया।
की चोमळ मेली काजल नवरंग खूटी ओ।
ताता ओ तपेला काजल पाणी ओ मेलीयो।
की कचेरी सी धारीयौ कुन्दई राणो घर भी आयो।
की तांबा की दुकड़ी काजल पाणी भी सारीयो।
की न्हावण कऽ बैठीयौ रे कुंदई राणो न्हावण कऽ बठ्या।
की हाथ सा धोया कुंदई राणो पांय सा धोया।
की हमरी पूट काजल तम रगड़ी देओ।
की तांबा की टुकड़ी काजल-देख्या दाड़ीम दाँत ओ।
की कांका रसीया नऽ रंगीया दाड़ीम दांत ओ।
की टांडा बरूड़ की कुंदई राणा ओ भी वई नऽ आयो।
काथा रे चूना की कुंदई राणा मलीन देवाणी।
की पान की डाली नऽ कुंदई राणा औ भी वई नऽ आई।
की छत्तीस पान को कुंदई राणा बिड़ीलो बणायो रे।
की औ रे बिड़ीला कुंदई राणा हमनऽ रे चाब्यो।
की दिन ओ उग्यो ओ काजल नदी देखणऽ जवाओ।
की नइं तो हेड़ा ओ काजल तमनऽ बणई ओ।
की छे मईना की रात ओ काजल तमनऽ बधई ओ।
की बाला ओ भिलणु ओ काजल तमनऽ न्हवाड़िया ओ।
की काजल कंकू तमनऽ लगायो ओ।
की न्हवाड़ियाँ छोवाड़ियाँ काजल तुमनऽ पालणा सोवाड़ियो ओ

की बारा ओ बरस ओ पड़ोसेन ओ तुबी अबोलो।
की छे मयना की रात ओ काजल तुमनऽ बणाईयो ओ।
की छे मण चन्दी घोड़िला तुकऽ मंडाऊ।
की पछी आऊं घौड़िला हिस मत मारजे।
की छे मण चोखा कुकड़ा तुकऽ आरू न्हांरवां।
की पछी नी आऊं रे कुकड़ा बांग मत दीजे रे।
की सरग निसाणी ओ काजल राणी निसाणी तमनऽ लगई ओ।
की काजल राणी की जनमी नऽ आवतऽ सी देखी।
की पाँच ओ बरस की काजल तूखऽ परणई औ।
की नहीं ओ देख्या औ देख्या अमरापुरी का झाड़ ओ।
की काई विपत औ काजल थारा पर आई।
की मेलेण गवलेण को जलमी हमनऽ बीड़िलो चाब्यौ ओ
की एक ओ गुना वो जनमी तम माफ करो ओ।
की बारी रे मेघ हीरा नक जन्मी म्हारी गुना माफ करो।
की टाण्डा रे बरूड़ को हीरा म्हारा टाण्डा ववाड़ी लाओ।
की नइं तो कुंदई राणो हेड़ऽ नकसुद खाल।
की बखत नऽ बीरीयां ओ जन्मी म्हांरी हम तो नइं बरसा।
की एक-एक डोळा काजल रड़ऽ धूणी धार ओ।
की गई ओ की गई ओ काजल खाड़िया मेघ काका पास।
की एतरी रात कऽ ओ काजल कल्यांग आवणुं हुयो ओ।
की मेलेणु गवलेण को रे काका म्हांरा बीड़िलो हमनऽ चाब्यो।
की दिन उंग्या रे काका देखऽ म्हारो कुंदई राणो आमुल नदी।
की टांडा बरूड़ को काका म्हारो टांडो ववाड़ी लाओ रे।
नइं तो दिन उंग्या काका म्हारी हेड़ऽ नकसुद खाल रे।
की पागड़ी पंचो खोड़िया काका बांधी लियो रे।
की आवंदा नगारा खोड़िया काका सीदा ओनऽ कर्‌या रे।
की तू भी घर जाओ काजल बाला भीलणा कऽ सम्भाल।
की बारई मेघ भतीजा खोड़िया काका नऽ साथ मंऽ लिया रे।
की नगारा पऽ चौप रे खोड़िया काका नऽ तमनऽ लगई रे।
की दादुर बिजळई रे खोड़िया काका रे बायर करी रे काका साथ मंऽ लिबी रे।
की व्हाळ आंधी खोड़िया काका रे साथ मंडली रे।
की गाज तो गरजतो खोड़िया काका वाट रे लग्यो।
की वरसीया की वरसीया बारई मेघ मुसल की धार रे।

की टांडा रे बरूड़ को कुंदई राणो टांडो बई आयो रे।
दिन रे उंग्यो कुंदई राणो नदी देखणऽ गयो रे।
की साचा बोलिया और काजल तम साचा बोलिया।
की दस अंगुलिया थारा सोना मड़ाऊ काजल गलऽ नौ सरियो हार।
की दिन उंग्यो रे घोड़िला तूनऽ ईस मारी रे।
की संवदारऽ हुयो रे कुकड़ा तूनऽ बांग दी रे।
की बारा औ बरस की पड़ोसेन तू बी अबोलो हुती।
की संवदारऽ हुयो ओ पड़ोसेन तूनऽ घट्टी मांड़ियो औ।

काजल माता ताँबे और पीतल के घड़े लेकर पानी लेने जाती है। वहीं पर एक पहाड़ी है। उस पहाड़ी पर एक ग्वालन पशुधन चरा रही है। काजल माता ने घड़ों को माँजा-धोया, स्वच्छ जल भरा और ग्वालन से कहा कि मेरे घड़े उठा दो। ग्वालन ने एक शर्त रखी कि मैं तुम्हारे घड़े उठाकर सिर पर तब रखूँगी, जब तुम मेरे द्वारा बनाया गया बत्तीस पानों का बीड़ा खा लोगी। काजल माता ने अनेक मनुहारें की और बताया कि मेरे पति कुंदई राणा काफी तुनक मिजाज के हैं। उन्होंने मेरे पान से रंजित लाल होठों को देख लिया तो वे चाबुकों से मेरी चमड़ी उधेड़ देंगे। ग्वालन ने एक बात की रट ही पकड़ ली। खाना हो मेरा बत्तीस पान का बीड़ा तो कहो, वरना मैं चली। हार मानकर काजल माता ने बत्तीस पान का बीड़ा खाया और ग्वालन ने काजल माता के सिर पर बेड़ा चढ़ा दिया। काजल माता पानी लेकर घर आई। कुंदई राणा कचहरी से घर आये। आते ही उन्होंने आदेश किया कि मेरे स्नान के लिए पानी रख दो। काजल माता ने तांबे के पात्र में पानी रखा। कुंदई राणा स्नान करने बैठे। काजल माता ने सोचा कि क्यों न मैं पानी में अपने पान से रंजित होठों को देखूँ। जैसे ही काजल ने पानी में देखा कि उधर कुंदई राणा ने भी देख लिया। काजल के लाल रक्तमय होठों को देखकर तुरन्त गुस्से से पूछा कि- तुम्हें पान किसने खिलाया? बताओ, नहीं तो मैं चाबुक से मार-मारकर चमड़ी उतार दूँगा। काजल ने बताया कि मैं अमुल नदी पानी लेने गई थी, तो नदी में टांडा-बरूड़ के पान और कत्थे-चूने की डालियाँ बहकर आ गई। मैंने उनसे पान बनाकर खा लिया। तब क्रोधित होकर कुंदई राणा ने कहा- मैं कल सुबह अमुल नदी को देखने जाऊँगा। यदि तुम्हारी बात सत्य हुई तो ठीक। नहीं तो चाबुक से तुम्हारी चमड़ी उधेड़ दूँगा। रात्रि हुई, कुंदई राणा अपने महल में सो गये। काजल रानी अपने महल में बैठी चिन्ता में डूबी सोच रही कि मैंने अपने पति से इतना बड़ा झूठ कैसे बोल दिया? अब यदि मेरी बात सत्य नहीं हुई तो कुंदई राणा मेरी चमड़ी उधेड़ देंगे। ऐसा सोचकर काजल ने अपने पिता के पास जाने का विचार बनाया।

काजल माता ने अपने बच्चे को स्नान कराया। वस्त्र पहनाये और दूध पिलाकर पालने में सुला दिया। फिर घोड़े की घुड़साल में जाकर उसे पर्याप्त अनाज डाला और कहा कि जब तक मैं स्वर्ग से वापस न आ जाऊँ, तुम आवाज मत करना। यही हिदायत उन्होंने मुर्गे के दड़बे में दाना डालकर कही। काजल स्वर्ग सीढ़ी लगाकर चली जाती है, अपने पिता इन्द्र के द्वार। स्वर्ग जाकर

काजल ने माता-पिता को आवाज लगाई और दरवाजा खोलने की मनुहार की। माता-पिता ने पूछा- बेटी इतनी रात में आने का क्या कारण है? बेटी ने सारा वृतान्त बताया। काजल ने कहा कि- पिताजी! बादलों को आदेश दो कि वे टांडा-बरूड़ पर इतने बरसे कि टांडा-बरूड़ की पानवाड़ी बहकर अमुल नदी में आ जाये। पिता ने कहा- बेटी! बादल मेरी आज्ञा का पालन कैसे करेंगे, क्योंकि बरसात का मौसम समाप्त हो गया है। अब बिना मौसम बरसात कैसे हो सकती है? पिता के मना करने पर काजल अपने काका के पास जाकर अनुरोध करती है। काका को अपनी भतीजी से विशेष प्रेम था। अत: काका ने नगाड़े पर थाप दी और नगाड़े के बजते ही भाई-भतीजे इकट्ठे हो गए। उन्हें काका ने कहा कि- मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम टांडा-बरूड़ की पनवाड़ी पर इतना बरसो की वह तहस-नहस हो जाये और टूटकर उनके पान अमुल नदी बहकर आ जायें। सभी भाई-भतीजों ने तूफानी जोर-शोर से बरसना शुरू कर दिया। टांडा-बरूड़ की पानवाड़ी तहस-नहस हो गई और पान उड़कर अमुल नदी में आ गये। काजल माता ने देखा कि उसका काम हो गया है। स्वर्ग से जैसे ही काजल रानी ने पृथ्वी पर पैर रखे, मुर्गे और घोड़े ने पदचाप पहचान ली और बांग देकर लोगों को सुबह होने की सूचना दी। घोड़े ने हिनहिनाकर माता काजल के आदेश का पालन किया। किंवदंती है कि वह रात्रि छः महीने की रात्रि थी। सुबह कुंदई राणा अमुल नदी को देखने जाते हैं। अमुल नदी पर जहाँ-तहाँ पान चिपके हैं और कत्थे-चूने की डालियाँ हैं। घर आकर कुंदई राणा ने प्रसन्न होकर रानी काजल से कहा कि- हे काजल! हम तुमसे बहुत खुश हैं, तुमने जो कहा था वह सत्य है। अमुल नदी में पान बहकर आये हैं और कत्थे-चूने की डालियाँ भी हैं। इस प्रकार काजल माता ने छः महीने की रात्रि का निर्माण किया था।

पनिहारिनें पनघट से वापस जा रही हैं
पाणी मोकलो रे पाणी मोकलो इन्द्र महाराज
नद्दी नाला सुखई गया नऽ सावलिया रे।
पशु-पक्षी, पशु-पक्षी रे प्यासा जाय
पाणी मोकलो रे पाणी.......... ॥
गाय का तिरण सुखई गया नऽ सावलिया रे।
गौ बधुवा रय बिलखाय
पाणी मोकलो रे पाणी.......... ॥
कुंवा जो वावड़ी सुखई गया नऽ सावलिया रे
अरे पणिहारी रे, पणिहारी रे पछी जाय
पाणी मोकलो रे पाणी........ ॥

स्रोत- श्री छोगालाल कुमावत सुजस-टाडा बरूड़

हे इन्द्र महाराज! अब तो वर्षा कीजिये। चारों तरफ हाहाकार मचा है। नदी-नाले सूख गये

हैं, जिसके कारण पशु-पक्षियों का गला प्यास से रुँध गया है। पानी जल्दी दीजिये और खूब वर्षा कीजिये। पृथ्वी तप्त हो जाये। हे साँवलिया! जल्दी से वर्षा कीजिये। गाय के चरने के तिनके और पीने का पानी अब खत्म हो गया है। उनके थनों में दूध नहीं उतरता है। उनके बछड़े भी भूखे-प्यासे और व्याकुल हैं। हे साँवरिया! हे गोपाल! जल्दी वर्षा कीजिये। गाँव के कुँए और बावड़ियाँ सूख गई हैं, पानी से रिक्त हो गई हैं। वहाँ पर पानी लेने जाने वाली पनिहारिनों भी बिना पानी के घड़े खाली लेकर लौट रही हैं। अत: वर्षा के देवता इन्द्र महाराज! आपसे विनती है धरती पर वर्षा कीजिये। यही हमारी प्रार्थना है।

पाणी बिना केमऽ जिवऽ संसार। हरि तम सुणजो करूण पुकार॥
सरग छीर-सागर पौढ़िया। सबई जगा का पालनहार॥
तमकऽ कमी होय तो झेलो। हमरा डोळा नसी दुई-दुई धार॥ 1॥
जळ बिनऽ जीव तिरण बिन गोधन। झूरी-झूरी रया सब नर-नार॥
झाड़ तजी पछी अकाश मऽ । उड़ी रया पर पसार॥ 2॥
केऊं रूठिया तम इन्दर राजा। करी मन मऽ सोच विचार॥
येरावत बठी नऽ बादळा लावजो। करी जाओ वर्षा दऽ धुवा धार॥ 3॥

स्रोत-छोगालाल कुमरावत 'सुजस'-टाडा बरूड़

हे प्रभु! हमारी करुण पुकार सुनिये। पानी के बिना कौन जीव इस संसार में जीवित रह सकता है। आप तो स्वर्ग को छोड़कर क्षीरसागर में चले गये। हे जग के पालनहार! तुम्हें अगर और पानी की कमी हो तो हमारे बहते आँसू ले लीजिये। जल के बिना सभी जीव-जन्तु और पशु-पक्षी त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। पक्षी भी सूखे वृक्षों को छोड़कर आकाश में उड़कर मेघों की ओर तक रहे हैं। हे इन्द्र महाराज! आप रूठे क्यों हो? कुछ गलती हो तो माफ करो एवं अपने ऐरावत हाथी पर बैठकर आईये। पृथ्वी पर धुँआधार वर्षा करो।

थारी व्हाल राणी कऽ कोठड़ी मऽ, कोंडो रे इंदोरी राजा।
धरती अबोलो प्रभुजी क्यों लियो राज॥
थारी दादूर बिजलई कऽ आगीवान, करारें इंदोरी राजा।
धरती अबोलो प्रभुजी क्यों लियो राज॥
थारा अवदाँ नगारा सिदा करोरे इंदोरी राजा।
धरती अबोलो प्रभुजी क्यों लियो राज
थारी गोया की लछमी भूख-तीस मर रेऽ इंदोरी राजा
धरती अबोलो प्रभुजी क्यों लियो राज॥
थारी धरती कऽ हरी चूंदड़ वड़ाओ रेऽ इंदोरी राज
धरती अबोलो प्रभुजी क्यों लियो राज॥

हे इन्द्र देवता! तुम्हारी पत्नी ने हवा को किसी कोठरी में बन्द कर दिया है। हे प्रभु! आपने धरती से मुँह क्यों मोड़ लिया है? हे प्रभु! बरस जाइएँ। बादल और बिजली को सर्वप्रथम भेजो। वह चमक-दमक के साथ जोरों से वर्षा करेंगे। आपने धरती से अबोला क्यों ले लिया है? तुम्हारे बिना घास सूख गयी है और पक्षी तक भूख-प्यास से व्याकुल हो रहे हैं। आप जोरों से गर्जना करते हुए बरस जाइए और अपनी धरती बेटी को हरीतिमा की चुनरी पहना जाइए।

हाँ वो कुल ववु ताम्बा पीतल की घड़ीला लिया
राजा रे राम पाणी को पड्यो हयकार रे।
हाँ वो कुल ववु सेरी मऽ उब्या सई नऽ बुलावऽ वो।
हाँ वो कुल ववु आधी सई नऽ आगऽ आधी सई नऽ पाछऽ
हाँ वो कुल ववु एक बंद छोड़्यो, दूजो बंद छोड्यो
हाँ वो कुल ववु तीजा बंद गया सरवर री पाळऽ ओ।
हाँ वो कुल ववु घड़ीला मेल्यो सरवर री पाळऽ ओ।
हाँ वो कुल ववु चोमल मेली वासेण जाळ ओ।
हाँ वो कुल ववु घड़ीला माँजा की मुंजा ओ,
हाँ वो कुल ववु घड़ीला सी घड़ीला अवढ़ाया ओ।
हाँ वो कुल ववु ऐलई की पणिहारी मसला सा बोल ओ।
हाँ वो कुल ववु थारो ससरो गाँव को पटील ओ
राजाराम पाणी को पड्यो अवसणा रे।
हाँ वो कुल ववु खोदाड़ो तलकपुरा तालाब वो,
हाँ वो कुल ववु अंगठा की झाळऽ बरमट गई वो,
हाँ वो कुल ववु रीता घड़ीला उठई लिया वो
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
हाँ वो कुल ववु एक बंद छोड्यो दूजो बंद छोड्यो
हाँ वो कुल ववु तीजा बंद आया राय अंगणा माय वो
हाँ वो कुल ववु रीता घड़ीला मेल्या पणियारा माय वो
हाँ वो कुल ववु चोमल मेली लाल खुटी वो
हाँ वो कुल ववु अनसन लई नऽ सोया मजघर माय वो।
हाँ वो कुल ववु दिन डूब्यो नहीं दियो, नई बत्ती वो,
हाँ वो कुल ववु हाथई पर सी ससराजी आया वो,
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
हाँ वो कुल ववु नई दियो नई अरू बत्री ओ
ससराजी बलऽ की जलऽ थारी तलकपुर की पटलई,
राजाराम पाणी को पड्यो अवसणा रे।

हाँ रे ससराजी खोदाड़ो, खोदाड़ो तलकपुर मऽ तालाव रे
हाँ रे ससरा जी ऐलई की पणिहारी नऽ मसला सा बोलऽ रे
हाँ वो कुल ववु थारो ससरो गाँव को पटील ओ
हाँ वो कुल ववु पाणी को क्यों पड़्यो हयकार वो,
हाँ वो कुल ववु दिया लगावो तम अरू बत्ती वो।
खोदाड़ां तलकपुर मऽ तलाव वो।
हाँ रे ससराजी पछा जाई नऽ सोई अरू गया रे,
हाँ वो कुल ववु दाड़क्या लावां मुजुर लगाव वो,
हाँ वो कुल ववु एक सवऽ कुदावला हुई सव पावड़ा
हाँ वो मजूर लगाया नई मिलऽ पाणी की तुषार
हाँ रे ससराजी साँझ हुई नऽ हथई पर सोई गया।
हाँ रे आधीरात आगऽ आधीरात पाछऽ रे।
हाँ रे ससराजी मजरात सपनो सो आयो रे।
हाँ वो कुल ववु सपना मऽ मांगऽ छोरो नऽ ववु ओ।
कुकड़ा जो मांगता हम बोकड़ा सा देता
हाँ वो कुल ववु एक छोरो नऽ एक म्हारी ववु वो।
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
हाँ रे ससराजी चादर ओयढ़ी सोई अरू गया रे
हाँ रे ससराजी सवा पयर दिन अरू चढ़ी आयो रे
हाँ वो कुल ववु ससराजी ससराजी करी नऽ हाऊऽ मारी
हाँ वो कुल ववु ससरो रड़ऽ नऽ दुणी धार वो
हाँ वो कुल ववु कुकड़ा सी बोकड़ा हम दिता वो
हाँ वो कुल ववु सवसार मऽ एक छोरो एक ववु वो।
ससराजी बुलावो जोशी बामण वो
हाँ वो कुल ववु उगण दिशा सी बामण बुलावो वो
हाँ वो कुल ववु बामण पोथी खोली नऽ बठ्या वो
हाँ वो कुल ववु नई देवो मुंडा सी जुबाब वो
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
हाँ वो कुल ववु मांग्यो छे छोरो नऽ अरू ववु
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
हाँ वो कुल ववु एक-एक डोला ससराजी रड़ऽ धुणीधार रे
हाँ वो कुल ववु एक छोरो नऽ एक म्हारी ववु वो
कसा खोदाड़ां नऽ तलकपुर को तलाव वो।
ससराजी कलजुग नऽ तमरो जो नाव वो।

हाँ रे ससराजी ताता भोजन हम नित देवांगा।
हाँ रे ससराजी रावल बरी नऽ तम भोजन खाजो
हाँ रे ससराजी बुलाओ-बुलाओ म्हारा माता-पिता जी।
हाँ रे ससराजी बुलाओ म्हारा माड़ी जायो हीरो रे।
हाँ वो कुल ववु ससरा नऽ चिठिया नऽ लिखी वो।
हाँ वो कुल ववु भेजी की भेजी कुल ववु का पियर वो।
हाँ वो कुल ववु चिट्ठी सुणी न सब हुआ उदास वो।
हाँ वो कुल ववु आया की आया माय नऽ बाप हो।
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
हाँ वो कुल ववु आया की आया माड़ी जायो हीरो रे।
हाँ वो कुल ववु माय-बाप तो रड़ऽ दुणीधार वो।
हाँ वो लच्छमीबाई भाई-बहण सी तनाजो पड़्यो वो।
हाँ वो बईण म्हारी सराप आयो तो राखी मकऽ कुज बांधऽ
हाँ रे हीराजी धरम की ठाईण अरू वणई लियो तुम,
वो तो तमक राखी बांध वो।
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
ससराजी बुलाओ-बुलाओ वाजा नऽ ढोल रे
ससराजी बुलाओ तलकपुर की सई नऽ
हाँ वो कुल ववु सबई आया नऽ मिला भेटी हुई वो।
हाँ वो कुल ववु वाट लाग्या काई अरू बोलऽ वो।
हाँ रे ससराजी को वंश घट नऽ पीयर को बदऽ रे।
हाँ वो कुल ववु बाजा-गाजा सी अरू वाटऽ लाग्या रे।
हाँ वो कुल ववु एक बंद छोड़्यो दूजा बंद गया वो
हाँ वो कुल ववु तीजा बंद सरवर री पाल वो।
हाँ वो कुल ववु एक पग धर्‌यो अलवाय रगी लागी ओ
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।
हाँ वो कुल ववु दूजा पांय मऽ घोटणा डूब्या ओ
हाँ वो कुल ववु कमर छाती पाणी लागऽ लाग्यो
हाँ वो कुल ववु लोग ते लागी नदी-नदी पांय वो
हाँ वो कुल ववु बीच तलाव मऽ गया छोरो अरू ववु वो।
हाँ वो इचमण जाई नऽ समापत हुया वो।
राजाराम पाणी को पड़्यो अवसणा रे।

कुल बहू ने ताँबे-पीतल के घड़े लिये और गली में आकर सहेलियों को बुलाया। आगे

सहेलियाँ आगे, आधी सहेलियाँ पीछे चल रही हैं। उन्होंने एक वन छोड़ा, दूसरा वन छोड़ा और तीसरे वन में सरोवर किनारे पहुँची। कुल बहू ने घड़ों को उतारकर सरोवर पाल पर रखे और अपनी चोमल को बाँस के समूह जाल पर रखा। कुल बहू ने घड़ों को माँजा और धोया। पनघट पर इतनी भीड़ थी कि घड़े से घड़ा टकरा रहा था। तब 'ऐलई' पीपर की पनिहारनियों ने कुल वधू को कटु वचन कहे- हे कुल वधू! तुम्हारा ससुर तो गाँव का पटेल है। हे कुल वधू! तलकपुरा में एक तालाब खुदवा लो। यह सुनकर बहू को गुस्सा आया। उसे अँगूठे से लगाकर सिर के बालों तक गुस्सा आ गया। तब कुल वधू ने अपने खाली घड़े उठा लिये और वापस अपने घर की ओर चल दी। उसने एक वन छोड़ा, दूसरा वन छोड़ा, तीसरा वन पार करके वह अपने घर आई। कुल बहू ने खाली घड़े पणियारे पर रखे और अपनी चोमल खूँटी पर टाँग दी और कुल बहू अनशन लेकर सो गई। सूर्यास्त होने को आया। उसने दिया-बत्ती कुछ नहीं लगाया। वह अनशन लेकर सोती रही।

उसी समय उसके ससुरजी चौपाल पर से उठकर घर आये। तब उन्होंने बहू को आवाज लगाकर दीया-बत्ती करने को कहा। तब बहू ने क्रोधित होकर कहा- जल जाये तुम्हारे तलकपुरा की पटलाई। हे ससुरजी! तलकपुरा में तालाब खुदवाइए। ये बातें मुझे ऐलई पीपर की पणिहारियों ने कही है कि तुम्हारे ससुर तो गाँव के पटेल हैं। वे इस काम को करने में समर्थ हैं, फिर तलकपुरा में तालाब क्यों नहीं बनवा लेते। पानी की बड़ी असुविधा होती है। तब ससुर ने कहा- बहू! दीया-बत्ती लगाओ। कल से मैं तालाब का काम शुरू करवाता हूँ। इतना कहकर ससुरजी सोने चले गये। सुबह दाड़की मजदूरी वालों को बुलाकर काम शुरू करेंगे, ऐसा सोचकर वे पलंग पर गये।

सुबह हुई ससुरजी ने अपने वादे के मुताबिक काम शुरू करवा दिया। एक सौ के करीब फावड़े वाले मिट्टी भर रहे हैं। दो सौ कुदाली-गैंती से तालाब की खुदाई का काम शुरू हुआ। इतने मजदूर काम करते रहे, पर पानी का कहीं अता-पता नहीं था। तब संध्या समय ससुरजी चौपाल में आकर सो गये। मध्यरात्रि में उन्हें एक स्वप्न आया। स्वप्न में जो देवता आए, उन्होंने आदेश दिया कि यदि तुम अपने बहू-बेटे की बलि चढ़ा दो या भेंट कर दो, तो तालाब में पानी ही पानी होगा। ससुर ने स्वप्न में ही उत्तर दिया- यदि आप मुर्गे माँगते तो मैं बकरे की बलि चढ़ा देता, पर संसार में मेरा एक ही पुत्र और बहू है। मैं उनका बलिदान नहीं दे सकता हूँ। ऐसा कहकर ससुरजी चादर ओढ़कर सो गये। सवा पहर दिन चढ़ आया, ससुरजी नहीं जागे। तब कुल वधू ने आवाज लगाकर उन्हें जगाया। कुल बहू को देखकर ससुरजी अत्यधिक करुणा करके जोर-जोर से रोने लगे। तब बहू ने पूछा- ससुरजी! क्या हुआ? ससुरजी ने स्वप्न की बात कही और कहा कि देवता यदि मुर्गे की बलि माँगते तो हम बकरे की बलि चढ़ा देते। पर देवता ने मेरे पुत्र और तुम्हें बलि के रूप में माँगा है। संसार में मेरा एक ही पुत्र और एक ही बहू है। मैं तुम्हारा बलिदान कैसे दे दूँ? इसलिए मैं रो रहा हूँ। तब कुल बहू ने कहा- ससुरजी! पूर्व दिशा से ब्राह्मण को बुलाइये।

पूर्व दिशा से ब्राह्मण आया और अपनी पोथी खोलकर बैठ गया। उस ब्राह्मण के मुख से वाक्य नहीं निकल रहे थे। वह बोलने में असमर्थ था। बड़ी मुश्किल से ब्राह्मण ने कहा– बहू! इस पोथी में योग यह है कि तालाब एक जोड़ा पुत्र और बहू का माँग रहा है। जब ससुरजी ने सुना तो उनकी एक आँख से दो-दो धारें आँसुओं की बह निकलीं। उन्होंने रोते हुए कहा– मेरा एक ही बेटा और एक ही बहू है। किस प्रकार तालाब का काम चालू रखें? तब बहू ने सांत्वना देते हुए कहा– ससुरजी! कलयुग में तुम्हारा नाम अमर हो जायेगा, यदि हमारे दोनों के बलिदान से पानी आ जायेगा। तब ससुर ने कहा– बेटी! तू चली जायेगी तो मुझे भोजन कौन देगा? मैं खाना कहाँ खाऊँगा? तब बहू ने कहा– मैं रोजाना थाल परोसकर आपको भोजन दूँगी।

तब कुल बहू ने अपने ससुरजी से कहा– हे ससुरजी! मेरे मायके वालों को बुलाइये। मेरे माता-पिता और मेरे सहोदर भाई को संदेश देकर बुलाईये। तब ससुरजी ने चिट्ठी लिखी और बहू के पीहर भेज दी। चिट्ठी पढ़कर पीहर में सभी उदास हो गये। वे अपनी बेटी की ससुराल आये। माता-पिता और सहोदर भाई तथा गाँव के सभी लोग बहन की ससुराल आये। माता-पिता दोनों रोने लगे। रोते ही जा रहे हैं– हे लक्ष्मी बेटी! तेरे चले जाने से बहुत कष्ट होगा। हे बहन! राखी के दिन तेरे भाई को राखी कौन बाँधेगा? बहन ने भाई को समझाते हुए कहा– भाई! धर्म की बहन बना लेना। वही तुम्हें राखी बाँधा करेगी। सभी से मिलने के बाद बहू ने ससुरजी से कहा– हे ससुरजी! सारे गाँव के लोगों को इकट्ठा करो। मेरी सहेलियों को बुलाओ और बाजे तथा ढोल वाले को भी बुलाओ। इतना सुनते ही सब जन-समूह इकट्ठा हो गया। सभी से मिल-भेंट कर दोनों पति-पत्नी तालाब की ओर चले। बहू ने मन ही मन कहा– मेरे ससुर का वंश तो हम दोनों के जाने के बाद ही समाप्त हो जायेगा। मेरा आशीष है, मेरे पीहर में वंशवृद्धि हो। आगे-आगे बाजे वाले, पीछे ढोल वाले बजाते जा रहे हैं। कुल बहू और उसके पति तथा जनसमूह ने एक वन छोड़ा, दूसरा वन छोड़ा, तीसरे में वे तालाब के किनारे पहुँचे।

दोनों पति-पत्नी ने तालाब की पूजा की, नारियल चढ़ाया और जैसे ही तालाब में प्रवेश किया, तालाब में तली दिखने लगी। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गये, पानी भी बढ़ता गया। मानो तालाब में पानी का स्रोत फूट पड़ा हो। पहले पानी घुटने-घुटने हुआ, फिर बढ़कर कमर तक आया, फिर छाती तक आया। उसके बाद दोनों पति-पत्नी पानी में डूब गये। देखते-देखते पति-पत्नी पानी में डूब गये। देखते-देखते अदृश्य हो गये। सभी लोग उन्हें प्रणाम करने लगे। दोनों पति-पत्नी का बलिदान लेकर तलकपुरा का तालाब जल से पूर्ण हो गया। आज भी वह तालाब तलकपुरा में देखा जा सकता है। गाड़ियों के पहियों के निशान आज भी इस बात की गवाही दे रहे हैं।

लोकश्रुति : बहू ने अपने वादे के अनुसार ससुर को भोजन देने का वचन दिया था, वह आज भी निभाती है। ठीक भोजन के समय थाली में भोजन परोस कर कुल बहू का हाथ तालाब से ऊपर आता है। ससुरजी थाली उठाकर भोजन करते हैं और थाली वापस कुल बहू के हाथ पर

रख देते थे। किसी दुष्ट ने एक दिन दुष्टता की। जिस समय वह थाली आई। ससुरजी थे नहीं, उस दुष्ट ने खाना खाकर थाली में पाखाना करके थाली हाथ पर रख दी। उस दिन से न तो हाथ बाहर आया, न ही भोजन की थाली। लेकिन तलकपुरा के तालाब का पानी तब से कभी नहीं सूखा।

वर्षा ऋतु गीत

डेडर माता पाणी दे कि छाणी
डोड्यो-डोड्यो।
साल सूखो गधा भूख्यो
काला खेत मऽ दही की हाँडी
भाई मही की हाँडी
डोड्यो-डोड्यो॥

हे मेंढक माता! जल्दी से पानी बरसा। सच है, जब भी मेंढक चिल्लाकर शोर करते हैं, टर-टर टर्राते हैं, तब-तब पानी बरसता है। हे मेंढक माता! जल्दी से पानी बरसा। पानी नहीं आने से सूखे (अकाल) की स्थिति बन न जाये, इसलिए खूब वर्षा हो। धान की फसल अच्छी हो। खूब चावल खाने को मिलें। अकाल पड़ेगा, तो गधे तक भूखे मर जायेंगे। अच्छी वर्षा होगी तो खेतों में कपास की फसल अच्छी होगी। जब खेत में सफेद कपास खिलेगा तो इस प्रकार दिखेगी, मानो खेत दही की मटकी हो। जैसे श्वेत छाछ सब जगह फैला हो। अच्छी फसल की कामना सभी को होती है। तुम जमकर बरसो तो सभी सुखी होंगे। 'डोड्यो-डोड्यो' एक प्रकार की निरर्थक टेक है, जो बच्चे सामूहिक स्वर में दोहराते हैं।

हाँ रे मोकलजो रे बरसाद, सांवळिया मोकळ जो बरसाद।
हाँ रे सारी परजा जोवऽ रे थारी वाट,
सांवळिया मोकळजो बरसाद॥
झांझ करताळ ऐना हाथ विराजे, गावत राग मल्लार रे।
राग मल्लार केदारो रे गावे, इन्दर प्रसन्न थाय॥
सांवळिया......... ॥
धूर्व दिशा नी उठी वादळी रे वाळा, बिज झबुके झार रे।
गगन मऽ गोळा गड़ गड़्या रे वाळा,
बादळनो थयो झणकार॥
सांवळिया.......... ॥
मूसलाधार मेवा घणां बरसे वाळा, नीर झड़े निराधार रे।
आंगण घर मा कीच मचा रे वाळा,
नीर थये निराधारा॥

सांवळिया........ ॥
नानीबाई नी सासु अरज करऽ रे वाळा,
अरज करऽ बारम्बार रे।
नरसिंह स्वामी नऽ सांवरा रे वाला,
शरण मऽ राखो रे म्हाराज॥
सांवळिया........... ॥

हे साँवरिया प्रभु! ऐसी बरसात भेजो, जिससे कि धरती पर पानी ही पानी हो जाय। जल्दी पानी भेजो, लोगों के यहाँ नहाने तक का पानी नहीं मिल रहा। सारी प्रजा पानी की प्रतीक्षा में है। हे साँवलिया! जल्दी से पानी भेजो। झांझ करताल लेकर नरसिंह भगत राग मल्हार और केदार में भजन गा रहे हैं। इन रागों से वे वर्षा के देवता इन्द्र को प्रसन्न कर रहे हैं। तब ध्रुव दिशा से बादल उमड़ने-घुमड़ने लगे, बिजलियाँ चमकने लगीं। आकाश में बादलों की गड़गड़ाहट से ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो गोले छूट रहे हैं। बादलों के शोर के साथ ही आकाश में झन-झन की झनकार करती बरसात हो रही है।

दत्तो दऽ दत्तो दऽ कोठी फोड़ी दऽ
कोठी मऽ नी होय तो कणगो फोड़ी दऽ
दत्तो दऽ दत्तो दऽ।
चूल्हा मऽ खुटड़ो, थारो बेटो ऊटड़ो।
दत्तो दऽ दत्तो दऽ।
कोठी पऽ बायरी, थारी बेटी मांजरी।
दत्तो दऽ दत्तो दऽ।
खिच्चा मऽ साबू, थारो बेटो बाबू।
दत्तो दऽ दत्तो दऽ।
कोठी पऽ सुई, थारो बेटो फुई।
दत्तो दऽ दत्तो दऽ।
कोठी पऽ दातलो, थारो बेटो पातलो।
दत्तो दऽ दत्तो दऽ।
कोठी पऽ धाणी, थारी बेटी काणी।
दत्तो दऽ दत्तो दऽ।

यह गीत वर्षा के प्रारम्भ में ज्येष्ठ महीने में बच्चों के द्वारा गाया जाता है, जिसमें वर्षा का आह्वान है। बच्चे घर-घर अनाज माँगते हैं। कहते हैं- हे माँ! हमें दान में अनाज दो। बाहर न हो तो कोठी को फोड़कर दे दो। कोठी में नहीं हो तो कणगा (बड़ी कोठी) को तोड़कर दे दो। चूल्हे में लकड़ी का ठूँठ, तुम्हारा बेटा ऊँट। कोठी पर झाड़ू (बायरी), तुम्हारी बेटी बिल्ली। जेब में साबू,

तुम्हारा बेटा बाबू। कोठी पर सुई, तुम्हारा बेटा धागा। कोठी पर हँसिया (दातला), तुम्हारा बेटा पलता। कोठी पर धाणी, तुम्हारी बेटी काणी।

गीत में छोटी-छोटी तुक जोड़ने का प्रयास बच्चों को कविता के आनन्द का एहसास करवा जाता है।

आ... रे... मन की कोई नऽ नी जाणी रे रसिया
आ... रे... मन की कोई नऽ नी जाणी रे रसिया
कोई नऽ नी जाणी संजा फूली कोमलाणी।

चौक: *मथुरा गयो म्हारो रंग रंगीलो, मन कऽ लगई नऽ ताळो।*
जा रे आसाड़ का बादल मधुवन, ब्रज मऽ नी बरसा पाणी।
रे रसिया मन की कोई नऽ नी जाणी॥

चौक: *झाड़ कऽ तुमनऽ दुखड़ो सुणायो, पेळो पड़्यो नऽ कुमलाणी।*
हाय सरावण साँवरा रे, हुई गई सूरत बिराणी।
रे रसिया मन की कोई नऽ नी जाणी॥

चौक: *उजड़ी गयो म्हारो मधुबन, सारो भादव कलप न्यारो।*
प्रीत लगाई नऽ आग लगाई, लई नऽ सीक बिराणी।
रे रसिया मन की कोई नऽ नी जाणी॥

चौक: *भंवरा गुंजऽ मधुबन मऽ सारा, कुँवार करम कऽ फोड़ऽ।*
म्हारा करम देखो मथुरा मऽ मोहन, कुब्जा की गेरी रह्यो गाड़ी।
रे रसिया मन की कोई नऽ नी जाणी॥

स्रोत- रामलाल साद-डैवर

राधा विरह व्याकुल होकर कह रही हैं- अरे! किसी ने भी मेरे मन की पीड़ा को नहीं समझा, न ही उसे जानने की कोशिश की। क्यों मैं व्याकुल हूँ? मैं फूल की तरह हूँ, जो सुबह खिलता है और संध्या समय मुरझा जाता है। इसी प्रकार मेरी भी दशा है। मेरे स्वामी तो मथुरा में गये। रंग-रंगीले स्वभाव वाले श्याम मथुरा जाने से पहले ऐसा ताला लगाकर गये हैं, जो उनके आने पर ही खुलेगा। जा रे आषाढ़ के बादल! मधुवन में मत बरसना। ब्रज में भी नहीं बरसना। यहाँ के लिए तो हमारे आँखों की बरसात ही काफी है। वृक्ष को तुमने दुःख सुनाया तो वह भी तुम्हारे विरह में कुम्हला कर पीला पड़ गया। हाय श्रावण! तुम तो साँवरे सलोने मोहन के स्वरूप हो। तुम्हें देखकर श्याम की याद आना स्वाभाविक है। ऐसा लगता है, वह सूरत ही पराई हो गई है।

मेरा मधुवन सारा उजड़ गया है। भादव कलप रहा है। तुमसे प्रीत लगाकर मैंने अपने जीवन में आग लगा ली। कौन जाने किसकी तुमने सीख ले ली है। श्याम जो मथुरा से अभी तक

नहीं आये हैं। इधर भँवरे गुंजायमान होकर मधुवन में घूम रहे हैं। कुँवार मास अपना सिर फोड़ रहा है। यह मेरे कर्म का ही दोष है, जो मोहन मथुरा गये। मथुरा में मोहन कुब्जा दासी की गाड़ी को चला रहे हैं या गृहस्थी रूपी गाड़ी को हाँक रहे हैं। वे मथुरा में कुब्जा सौतन में बिलम गये हैं।

सबसी मोटी जुगदरी माता,
घर लिप्या घर का आंगणा लिपी वळई लम्बी पटसाल,
सबसी मोटी जुगदरी माता,
नख छोल्या किरसाण चावल रांदी लिया,
जिमी लिया सामी मजघर राम,
सबसी मोटी जुगदरी माता,
जुगदरी को टोपलो गाड़ी मऽमेल्यो,
जुपी दिया धवल्या की जोड़ राम,
सबसी मोटी जुगदरी माता,
पाँच चास किरसाण वाई दिया,
वरसी गया भर भादव मेघ राम,
सबसी मोटी जुगदरी माता।

हे जुवार माता! हम आपकी वन्दना करते हैं। हे गणेशजी! हम आपके चरण स्पर्श करते हैं। संसार में सबसे बड़ी ज्वार माता है। किसान की पत्नी ने पानी गर्म किया और उसमें ठण्डा पानी मिलाकर उसे आँगन में रख दिया। किसान ने स्नान किया, उसकी पत्नी ने सोलह श्रृंगार किये। घर-आँगन को गोबर से लीपा और लम्बी सी पटसाल को भी बिछा दिया है। नाखून से तरासे गये चावलों को बनाया, उसमें गुड़-घी डालकर किसान ने भोजन किया। इस के बाद ज्वार माता को टोकने में भरा। उसे गाड़ी पर रखा और गाड़ी में सफेद रंग के बैल जोत दिये। पति-पत्नी दोनों गाड़ी से खेत में गये। खेतर पाल देवता की कुमकुम अक्षत से पूजा की। नारियल फोड़ा और पाँच कतार ज्वार माता के बो दिये। ज्वार माता बोते ही भादव मास के समान पानी बरसा। फसल की बुआई हो गई। फसल शनैः-शनैः बड़ी हो गई। फसल से खर पतवार निकालने के लिए किसान खेत में कोलपा (डोरा) चलाते हैं और मस्ती में हालुर गाते हैं।

काळई रे वादळई नीळई रेख,
दादुर सुहाणी लागऽ राजऽ।
छोटी-मोटी मारूणी का लम्बा-लम्बा केशऽ।
हाथ रंगाड़ो गोरी को पियु परदेशऽ।
बाग मऽ जाजो महाराज।
नारियल बेडाड़ी लावजो राजऽ।
राय आंगण ढोलई दिजो राजऽ।
कालई रे वादळई नीलई रेख,

बाग में जाजो महाराज।
लवंग बेडाड़ी लावजो राजऽ।
काळई रे वादळई नीळई रेख,
दादुर सुहाणी लाग राजऽ।

काले-काले बादलों में बिजली चमक कर नीले प्रकाश की रेखा के समान सुहावनी लग रही हैं। प्रियतम परदेश में हैं और प्रिया उदास हैं। प्रिया कद में छोटी हैं, लेकिन उसके बाल काफी लम्बे हैं। गर्भावस्था के कारण उसके हाथों में मेहंदी लगाई जा रही है। हे प्रियतम! गोरी को बहलाने के लिए बाग में जाईये। वहाँ से नारियल तोड़कर ले आईये। नारियल तोड़ कर गोरी की गोद में रख दीजिये। हे प्रिये! बाग में जाईये। वहाँ से लोंग तोड़कर ले आईये। उन्हें गोरी के ससुर के आँगन में रख दीजिये।

आयो-आयो रे वावणी को दिन रे,
खेत मऽ वत्तर पड़ी।
जिमण कऽ हाँऊ बठी गयो,
कलस्यो धरी लियो पास।
पूरण पोलई का साथ, घीव खायो पळई बीस रे।
खेत मऽ वत्तर पड़ी।
आयो-आयो रे वावणी को दिन रे॥
खेत मऽ हाँऊ गयो,
निकल्या तीफन का चाँस।
गेरतऽ-गेरतऽ बारा बजा,
हुई गयो पेट खलास।
ऐतरा मऽ ववु लाई रोटा की पोटलई रे।
खेत मऽ वत्तर पड़ी।
आयो-आयो वावणी को दिन रे।
जीमण कऽ हाँऊ बठी गयो,
कलस्यो धरी लियो पास।
अमाड़ी की भाजी संग,
रोटा खाया वकी सात,
कांदो भी खायो नक्खी तीन रे।
खेत मऽ वत्तर पड़ी।
आयो-आयो वावणी को दिन रे,
खेत मऽ वत्तर पड़ी।

स्रोत- सुश्री मधुबाला अत्रे-खरगौन

बोनी का दिन आ गया। वर्षा से धरती और खेत तृप्त हो गये हैं। बोनी का समय हो गया है। खाना खाने के लिए मैं बैठ गया हूँ। लोटा भरकर मैंने पास में रख लिया है। घर में पूरणपोली बनी थी। मैंने सात पूरणपोली खाई और उसमें करीब बीस पली (एक पुराना नाप) या बीस चम्मच घी डालकर खाया है।

खेत में जाकर मैंने बोने के लिए तिफन (एक प्रकार का औजार) धुराई या जोती। तिफन चलाते-चलाते मुझे बारह बज गये और मेरा खाना खाया हुआ हजम हो गया। इतने में देखा तो बहू रोटी की पोटली लेकर आ गई। बहू रोटी लेकर खेत में पहुँची। वह रोटी रखती है और मैं खाना खाने बैठता हूँ। अमाड़ी की भाजी (सब्जी) के साथ ज्वार के साढ़े तीन रोटे खा गया हूँ और उसके साथ मैं तीन प्याज भी खा गया हूँ। आज बोनी का दिन आ गया है।

म्हारा कृष्ण गया परदेश आज नहीं आया रे,
मथुरा ना मारग माय कि वाट हमी जोवां रे।
सखी आषाढ़ महीनो आयो कि शिव हम पूजा रे,
सखी शिव नऽ चढ़ावां बेल की शिव नऽ रिझावां रे॥ 1॥
सखी श्रावण महीनो आयो कि झूला हमी बांधा रे,
म्हारा कृष्णजी नहीं आया कि झूला केम झूलां रे॥ 2॥
सखी भादव महीनो आयो कि रंग मऽ रूमां रे,
म्हारा कृष्णजी नी परसां थाळ कि बिड़ला बणावां रे॥ 3॥
सखी कुँवार महीनो आयो कि बनफूल फूल्या रे,
म्हारा आई गया भगवान कि मंगळ गावां रे॥ 4॥

परदेश गये कृष्ण आज तक नहीं आये हैं। हम सब मथुरा की तरफ देख रहे हैं। कब कृष्ण आयेंगे। हे सखी! आषाढ़ महीना आ गया है। हम भगवान शिवशंकर की पूजा करें। उन्हें श्रद्धा से बेल पत्र चढ़ायें। वे जरूर प्रसन्न होंगे और हमारे स्वामी कृष्णजी को घर लौटने की प्रेरणा देंगे। हे सखी! श्रावण महीना आ गया है। हम श्रावण झूले बाँधे। पर झूला हम किस प्रकार झूलें। कृष्ण अभी तक नहीं आये। हे सखी! भादों का महीना आ गया है। भादौ में कृष्ण आ गये हैं। हम उनके लिये छत्तीस तरह के पकवान बनाकर थाल सजायें और उन्हें प्रेम से भोजन करायें। भोजन के बाद हम उनके लिये पान का बीड़ा लगायें। हे सखी! कुँवार महीना आ गया। वन में तरह-तरह के फूल खिल गये हैं। मेरे स्वामी! घर आ गये हैं। मेरे भगवान आ गये हैं। आओ! हम सब मंगल गाएँ। आनन्द मनाएँ।

म्हारो आयो जोवन वई जाय, सांवळिया नऽ कयजो रे जाई समझाई।
आषाढ़ मास भला आविया रे वाला, मोर पपैया बोलऽ।
कीड़ी-मकोड़ी सब घर करऽ रे वाळा, सागर करऽ रे किलोल।
श्रावण मास भला आविया रे वाला, झिर-मिर वरस्या मेघ।

भींजऽ रुपैया नो हार, भादव मास भला आविया रे वाला।
धमकी नऽ वरस्या मेघ, दळ-बादल सब छाई रया रे वाला,
कोण सन्देशो लई जाय, कुंवार मास भला आविया रे वाला,
इन्दर पूरिया आस, नरसिंह ना स्वामी न जाई कयजो रे वाला,
राधिका जोवऽ थारी वाट।

मेरा यौवन व्यर्थ ही जा रहा है। स्वामी परदेश में हैं। कृष्णजी से यह बात समझाकर कह देना। स्वामी! आषाढ़ लग गया। पानी बरसने लगा। मोर-पपीहे बोलने लगे। कीड़े-मकोड़े तक अपने-अपने बिलों में लौट आये हैं। सागर-सरोवरों में लहरें उठने लगी हैं। स्वामी! श्रावण महीना आ गया है। झिर-मिर पानी बरस रहा है। राधा की चूंदड़ी भीग रही है और गले का नवरत्नों का हार भी भीग रहा है। स्वामी! भादौ का महीना आ गया है। काले-काले बादल मूसलधार वर्षा कर रहे हैं। हे स्वामी! इतने बादल इधर-उधर जा रहे हैं। पर मेरा यह संदेश कौन ले जायेगा। स्वामी! कुँवार मास लग गया है। कुँवार में प्रतीक्षा करने वाली नायिका राधिका की आस पूरी हो गई है। कृष्ण राधा का मिलन हो गया है। नरसिंह स्वामी ऐसे ही राधा कृष्ण के मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पिया दुई दिन पियर जावां नऽ मुख सी बोली
पातलिया क्यों लियो जी अबोलो।
एक बारा बरस सी नांदी रहीं रे थारा अंगणाऽ,
मकऽ भेजो हो महीनों तो आयो सरावणऽ।
मकऽ लई देवो जी अन्दना फुन्दना,
हम जावां झुलसां जी, वीरा घर झुलणा।
मैंदी मऽ रंगीया दुई हाथ हिंडोलो गावां।
म्हारा रंग मऽ भीज्या दुई हाथ कुणकऽ बतावां,
तुम करो म्हारा सी प्यार प्रेम रस मिलो॥
पातलियो क्यों लियो जी अबोलो॥
चवरी का फेरा फिरी बन्धानी थारा पदरऽ।
अलबेला तूनऽ नहीं रे जाणी रे म्हारी कदरऽ।
पिताजी नऽ पंगत दिवी बठाड़ी दी सदरऽ।
छन्दगाल्या, जी निवतार आणा दस पन्दरऽ।
एक दीयो दायजो बटऽ सुपारी पानऽ।
म्हारा हितु भाई मऽथारी रहेसे पहिचाण,
तुम करो म्हारा सी प्रेम रस मिलो॥
पातलियो क्यों लियो जी आज अबोलो॥
लाग्यो भादो पक्ष उजालई गंगा चढ़ी पूर।

हम न्हावा सखी न का संग खोब भरपूर।
थारा पदर बन्धाणी तुम तो बड़ा अड़भंग।
अलबेला जी तुम पैला छोड़ी देवो ढंग।
एक ऋषि पंचमी भाई बीज हरतालई,
हऊं कसी रहूं रे उपास, उमर म्हारी बालई।
तुम करो म्हारा सी प्रेम रस मिलो॥
पातलिया क्यों लियोजी आज अबोलो॥
एक कुंवार महीनऽ आई जाजो घर ऊपर।
छन्दगालिया म्हारा स्वामी जसा जेठ की धूप।
गाड़ी पर बठी नऽ आई जाजो गुप चुपऽ।
दुशमन भी देखी नऽ बलई जाय म्हारो रूपऽ।
तुम करो म्हारा सी प्रेम रस मिलो॥
पातलिया क्यों लियो जी आज अबोलो॥

पत्नी द्वारा सावन में अपने माता-पिता के यहाँ जाने की बात सुनने पर जब उसका पति मौन हो उठता है, तब स्त्री कहती है- बारह वर्षों से मैं तुम्हारे यहाँ की सारी आज्ञाओं को शिरोधार्य किये आ रही हूँ। अब सावन आया है। इन दिनों तो मुझे अपने मैके भेज दो। मुझे भुजाओं में बाँधने और चोटी में गूँथने के लिए फुंदे ला दो। अपने भाई के यहाँ जाकर हम झूला झूलेंगे और हाथों में मेहंदी लगाकर हिंडोला (झूले के गीत) गायेंगे, लेकिन इन रंग भरे हाथों को वहाँ कौन देखेगा? प्रियतम तुम तो यहीं रहोगे, यह सोचते ही नायिका व्यग्र होकर कहने लगती है, तुम मुझसे प्यार करो। प्रेम से सराबोर होकर मिलो। ऐसे समय में आपने मौन व्रत क्यों ले लिया है?

अग्नि को साक्षी रख लग्न के समय मैं तुम्हारे हाथ बँधी हूँ, लेकिन प्रिय आज तक भी तुमने मुझे नहीं पहचाना। पिताजी ने दान-दहेज भोज आदि देकर तुम्हारे साथ बिठा दिया था। दस-बीस मेहमान भी थे, दहेज साथ में था और पान-सुपारी भी बाँटी गई थी, वह इसलिए मेरे सगे-सम्बन्धियों में तुम्हारी पहचान रहेगी। मेरा सर्वस्व तुम्हारे हाथों में है। इस बात को याद दिलाते हुए वह पुनः विनती करती है कि तुम मुझ से प्यार करो। अपने प्रेम से सराबोर कर दो। मैं मैके जाना चाहती हूँ। इस पर आपने यह मौन क्यों ले लिया है?

भादौ के महीने में गाँव की नदी में बाढ़ आयेगी। उन दिनों वहाँ हम सखियों के साथ जल क्रीड़ा करेंगी। छोटी उमर में न जाने कितनी पूजा-अराधना के पश्चात् ही मैंने तुम्हें पाया है। ऋषि पंचमी, भाई दूज व हरतालिका जैसे कठिन उपवास भी किये हैं। मैं तुम्हारे पल्ले बँधी हूँ। तुम पर बड़ा दायित्व है, लेकिन तुममें तो अभी अल्हड़पन ही भरा हुआ है। अतएव हे प्रिय! तुम अपना पुराना ढंग छोड़ दो। मुझसे प्यार करो, मौन व्रत क्यों ले लिया है? इस कुँवार के महीने ही आ जाना, हम श्राद्ध-पक्ष के दिनों से अपने पूर्वजों की स्मृति में श्राद्ध का अर्घ्य चढ़ायेंगे। लेकिन गाड़ी

लेकर चुपके से ही आना। मेरा रूप देखकर शत्रु जल उठते हैं। अतएव हे प्रिये! तुम मुझसे प्यार करो। मैं मैके जाना चाहती हूँ। फिर भी आज आपने मौन क्यों ले लिया है? बारह वर्ष हो गये, पति-पत्नी के प्रेम को आजतक नहीं समझ पाया है। पत्नी-पति को मैके जाने के बहाने सुन्दर ढंग से समझाने की कोशिश करती है।

गोरी महीनों असाड़ को दल बदल चले चारी देश का,
कि हुकुम चाकर इन्द का, कि रूम झुम बरसे,
मोरा पिया बिन जीव तरसे।
जंगल मऽ हुई रही हरियाळी, चमक रही बिजली बादल मऽ,
इन्द्र महराज खड़या दल मऽ,
सजनी दूसरा महीना सावन को, गोरी महीना सावन को,
मनसुबो सब सहेलिन को, की विचार करती,
कोई करती झूला नऽ का।
झूला न्हाखूं रे सजना पिया संग झुलूं म्हारी जान
हाथ मऽ फूल गुलाब ना,
कईं फूल पड़िया रस्ता मऽ।
सजनी तीसरो महीनों गोरी महीनो भादौ को,
पूर चड़ियो नदियन मऽ
काय से उतरू म्हारी जान।
म्हारा पिया की खबर पूछूं या बैरन रस्ता मऽ,
चमक रही बिजली बादल मऽ।
सजनी चौथा महीना कुंवार को,
धान पाकिया सभी जनमत का।
म्हारी जान काल घर कयती, कोई दुशमन जली बली जाय,
सरद गई कलंगी पाणी मऽ।
चमक रही बिजली बादल मऽ।

प्रियतम परदेश में हैं। प्रिया प्रतीक्षा कर रही है। परदेश से प्रियतम कब आयेंगे? हे प्रिये! पहला महीना आषाढ़ का है। चारों ओर से बादल घुमड़ गये हैं। राजा इन्द्र के आदेश का पालन करते हुए बादल रिमझिम-रिमझिम पानी बरसा रहे हैं। ऐसे पानी की बौछारों से गोरी का मन अपने सजन के बिना तरस रहा है।

पानी बरसने से जंगल में हरियाली छा गयी है। बादलों में बिजलियाँ चमक रही हैं। मानो साक्षात् इन्द्र का दल आ खड़ा हो गया है। हे प्रिये! तुम्हारे विरह को सहन करते-करते दूसरा महीना सावन का आ गया है। सब सहेलियाँ इकट्ठा होकर विचार-विमर्श कर रही हैं। चलो, झूला झूलें। यदि आप यहाँ होते तो मैं भी आपके साथ झूले पर झूलती। किसी के हाथों में गुलाब

का फूल था, जो झूला झूलते हुए छिटक कर हाथ से गिर गया है। कहीं रास्ते में गिर पर पड़ा है। आपकी राह देखते-देखते तीसरा महीना भादव का आ गया है। नदियों में पानी भरपूर हो गया है। नदियों में बाढ़ आ गई है। ऐसे में मैं किससे संदेश पूछूँ या दूँ। मुझे तो भय लग रहा हैं, कहीं आप मुझसे मिलने तो नहीं आ रहे हो। नदी को कैसे पार करोगे? ये बैरन नदी भी मेरी सौत हो गई है, जो आपका रास्ता रोक रही है। बादलों में बिजलियाँ चमक रही हैं।

हे साजन! आपका रास्ता देखते-देखते तीन माह गुजर गये। चौथा महीना कुँआर का आ गया है। कुँआर मास में सभी प्रकार की पकने वाली फसलें पक गई हैं। वन में तरह-तरह के फूल खिल गये हैं। जनमानस खुश हैं। ऐसा प्रतीत होता है कोई दुश्मन की नजर मुझे लग गई है। मेरे रूप सौन्दर्य से यहाँ सभी जलते हैं। आपका रास्ता देखते-देखते थक गई हूँ। तुम्हारी दी गई कलंगी पानी में मुरझा गई है। अब तुम कब आओगे?

मस्त सरावण महीनो आयो, नागपंचमी को दिन आयो।
नाग मंडाऊं म्हारा कवला मऽ, दूध चढ़ाऊं थारा अवला मऽ।
शीश भोला का जरा बिराजऽ, गंगा बठाऊ थारा चवरा मऽ।
ताग मंडाऊं म्हारा कवला मऽ, दूध चढ़ाऊं थारा अवला मऽ।
गळा भोला का माला बिराजऽ, नाग लमटाऊं थारा चवरा मऽ।
नाग मंडाऊं म्हारा कवला मऽ, दूध चढ़ाऊं थारा अवला मऽ।
हाथ भोला का त्रिशूल बिराजऽ, डमरू बजाऊं थारा चवरा मऽ।
नाग मंडाऊं म्हारा कवला मऽ, दूध चढ़ाऊं थारा अवला मऽ।
पांव भोला का नेऊर बिराजऽ, घुंघरु बजाऊं थारा चवरा मऽ।
नाग मंडाऊं म्हारा कवला मऽ, दूध चढ़ाऊं थारा अवला मऽ।
संग भोला का पार्वती बिराज, जोडी बणाऊं थारा चवरा मऽ।
नाग मंडाऊं म्हारा कवला मऽ, दूध चढ़ाऊं थारा अवला मऽ।

स्रोत-सुश्री रुकमणी बाई कुशवाह-मनावर

मस्त श्रावण का महीना आ गया। उसमें नागपंचमी का दिन भी आया। मैं अपने घर के दरवाजे में दोनों ओर नागदेवता का चित्र बनाऊँगी। नाग के चित्र बनाकर पूजा करूँगी। उसके साथ ही नाग की बाँबी पर दूध चढ़ाऊँगी। भोलेनाथ के गले में रुद्राक्ष की माला है। उसके साथ ही उनके गले में नाग पहनाऊँगी। सदाशिव के हाथ में त्रिशूल है और उस त्रिशूल में डमरू बाँध के मैं चौरागढ़ में डमरू का नाद सुनाऊँगी। शिवशंकर के पाँवों में नेवरिया बँधी हैं। उनमें घुँघरू डलवाकर उन घुँघरुओं की अनुगूँज मैं सम्पूर्ण चौरागढ़ को सुनाऊँगी। भोलेनाथ के साथ पार्वती की जोड़ी है। इस जोड़ी की मैं चौरागढ़ में पूजा करूँगी। नागपंचमी को मैं अपने दरवाजे के दोनों ओर नागों के सुन्दर चित्र अंकित कर उनकी पूजा करूँगी। इसी दिन नाग की बाँबी पर दूध चढ़ाकर नागराज को प्रसन्न करूँगी।

नीम निम्बोली पाकी, सावण महीनों आयो जी।
हमरा तो मोठा भाई तूकऽ नींद कसी आव जी।
तमरी तो बेन सासरिया मऽ झुरऽ जी।
झुरऽ तेकऽ झुर नऽ दीजो, अबके सावण लावां जी।
नीम निम्बोली पाकी सावण महीनों आयो जी।
हमरा तो लोकेन्द्र भाई तूकऽ नींद कसी आवजी।
तमरी तो भावना बईण सासरिया मऽ झुरऽ जी।
झुरऽ तेकऽ झुर नऽ देवो अबके सावन लावां जी।
नीम निम्बोली पाकी, सावण महीनों आयो जी।

नीम के वृक्ष पर निम्बोलियाँ पक गई हैं। सावन का महीना आ गया है। ओ मेरे बड़े भाई! इन दिनों तुमको नींद कैसे आ रही है? देखो, तुम्हारी छोटी बहन ससुराल में तुम्हें याद कर रही है, जो रो रही है, उसे हम लेने सावन में जरूर जाएँगे। नीम पर निम्बोलियाँ पक गई हैं। सावन का महीना आ गया है। ओ मेरे लोकेन्द्र भाई! इन दिनों तुमको नींद कैसे आ रही है। देखो, तुम्हारी भावना बहन ससुराल में तुम्हें याद कर रही है। इस पर भाई कहता है- जो बहन रो रही है, उसे रोने दो, हम अपनी बहन को लेने इस सावन में जरूर जाएँगे।

कुम्हार्‌या की छोरी माटी लाई, जेको बिंद्रावन बनायो हो राज।
बामण की छोरी बीजा लाई जेको रोपो लगायो हो राज।
आप म्हारी तुलसा एक पत्ती हुई दो पत्ती, तीन पत्ती लहेरा ले हो राज।
आज म्हारी तुलसा चार पत्ती पाँच पत्ती हुई, छः पत्ती लहेरा ले हो राज।
आज म्हारी तुलसा सात पत्ती आठ पत्ती हुई, नौ पत्ती लहेरा ले हो राज।
आज म्हारी तुलसा दस पत्ती ग्यारह पत्ती हुई, बारवां मऽ लहेरा ले हो राज।
मेघनाथ की बेटी तुलसी, कहो तो तमकऽ परणावां हो राज।
कहो तो बेटी ब्रह्मा वर लाऊं, कहो ते शंकर से परणावां हो राज।
ब्रह्माजी तो पिताजी बूढ़ा घणा, शंकरजी की दो दो नारी हो राज।
कहो तो बेटी सूर्य वर लावां, कहो चन्द्ररमा परणावां हो राज।
सूर्य पिताजी तपऽ घणो तपियो, चन्दरमा नी शीतल ठंडी छाया हो राज।
लाओ-लाओ ते पिताजी कृष्ण वर लाओ, उनका सी हमकऽ परणावो हो राज।
असा कस्ट तप तपिया बेटी मुंहमांग्या वर पाविया हो राज।
श्रावण मास पिताजी नीळो नी खायो, भादव मास बाळझे दई नी मोड़ियो हो राज।
कुंवार ना महीना मऽ खीर नी खाई, कार्तिक ठंडा पाणी न्हाया हो राज।
मागशिर महीना हेम घड़ो न्हाया, पोष महीना पंथ नी चलिया हो राज।
महा महीना मऽ चूंदड़ नी ओड्या, फागुन मऽ होळी नी खेल्या हो राज।
चैत्र मास पिताजी पीयर नी गया, वैशाख ताता पाणी न्हाया हो राज।

जेठ का मास पिताजी पंच धुणी तपिया, आषाढ़ दिवळो नी जोयो हो राज।
असा कसा तप बाई तुलसाजी तपिया, कृष्ण सरिखा वर पाया हो राज।

स्रोत–श्रीमती शांताबाई–मंडवाड़ा

कुम्हार की लड़की मिट्टी लाई और उसने आँगन में तुलसी क्यारा (वेदी) बनाई। ब्राह्मण की लड़की तुलसी के बीज लाईं। उन बीजों को क्यारे में बोया गया। पानी से सींचा गया। तुलसी अंकुरित हुई और उसके पत्ते निकलने लगे। आज मेरी तुलसी में पहला पत्ता आया, दूसरा आया, फिर तीसरा भी पत्ता फूटा। इसके बाद चौथा, पाँचवा, छठा पत्ता भी लहराने लगा। फिर तो सात, आठ, नौ पत्ती वाली मेरी तुलसी का पौधा हो गया। दिनोंदिन वह बढ़ रही है। दस, ग्यारह, बारह फिर अनेक पत्तियाँ तुलसी में लहराने लगीं। हरी हो गईं। बड़ी हो गईं। उनमें मंजरियाँ तक निकलने लगी।

तुलसी मेघनाथ की बेटी है। वह अब विवाह योग्य हो गई है, उसके लिए कौन सा वर ढूँढा जाय। उसका विवाह कहाँ ढूंढा किया जाय? पिता पुत्री से पूछते हैं– यदि तुम कहो तो तुम्हारे लिए ब्रह्माजी जैसा वर ढूँढा जाय या शंकर के साथ विवाह कर दें। इस पर बेटी कहती है– ब्रह्माजी तो बूढ़े हैं और शिवशंकर की दो पत्नियाँ पहले से ही मौजूद हैं। पिता फिर कहते हैं– कहो तो बेटी तेजस्वी सूर्य से तुम्हारा विवाह रचा दें या शीतल चन्द्रमा से ब्याह करा दें। इस पर बेटी कहती है– नहीं! नहीं पिताजी सूर्य में ताप बहुत है और चन्द्रमा का ठंडापन मुझे सहन नहीं होगा। यदि आपको मेरे विवाह का चिन्ता हो तो मेरा विवाह श्रीकृष्ण से कर दें। इस पर पिता कहते हैं– अरे बेटी! तूने हमारे मुँह की बात छीन ली, जिसने कोई बड़ा तप किया होता है उसे ही भगवान कृष्ण जैसे वर मिलते हैं। तुम्हें तो मुँहमांगा वर मिल जायेगा। तुमने ऐसा कौन सा तप किया है?

बेटी कहती है– पिताजी! मैंने बारहमासी व्रत किया था। श्रावण मास में मैंने हरी सब्जियाँ नहीं खाई। भादव में ताजा जमाया हुआ दही नहीं खाया। कुँवार मास में खीर का भोजन नहीं किया। मार्गशिर में बिल्कुल ठण्डे पानी से नहाया। पोष महीने में मैं घर से नहीं निकली। माघ माह में नई चूंदड़ी नहीं पहनी। फागुन में होली नहीं खेली। चैत्र महीने में मायके नहीं गई। वैशाख मास में गरम जल से स्नान किया। जेठ माह में पंच धुनी (अग्नितप) किया। आषाढ़ मास में दीपक नहीं जलाया। इस प्रकार मैंने तपस्या की है, उसी से मुझे मुँहमांगा वर मिला है। कहते हैं– तुलसी से कृष्ण ने सालिगराम के रूप में विवाह किया है और तुलसी क्यारी में सालिगराम के रूप में तुलसी के साथ सदैव विराजते हैं। चार महीने ऐसी बरसात हो कि चारों ओर मूसलाधार वर्षा हो। एक ऐसा ही प्रसंग नानीबाई के मायरा गाथा में नरसिंह दास के साथ घटित होता है, तब वे अपने प्रभु से प्रार्थना करते हैं। यह उल्लेख तब का है, जब नानीबाई का मायरा (मामेरा) भरने नरसिंह भगत नानीबाई के ससुराल पहुँचते हैं। नरसिंह भगत का बड़ा अपमान किया जाता है, उन्हें गाय–भैंस बाँधने की जगह पर ठहराया जाता है। रूखा–सूखा भोजन दिया

जाता है। नरसिंह जी स्नान करने बैठते हैं तो अधिक गर्म पानी दिया जाता है। ठण्डा पानी माँगते हैं तो नानीबाई की सासु कहती हैं- ठण्डा पानी नहीं है। ठण्डा पानी ही चाहिए तो अपने प्रभु गोपाल साँवरिया से माँगो।

चलो न उद्धव माधोपुरी जावां, कृष्ण कन्हैया कऽ लई आवां॥
शीतल चंदन अंग लगावां कामनी करत किल्लोल हो।
ये दीनानाथ की प्रीत रे उद्धव, शुकर मास आषाढ़ हो॥ चलो.......... ॥
एक तो रे उद्धव थाना बिना हो, दूजो पीहू परदेस हो।
तीसरो मेऊ झर-झर बरसे श्रावण अधिक समाय हो॥ चलो........... ॥
भादव रैन बिहावण उद्धव, रैन इंधारी रात हो।
बिजली चमके नऽ हिवड़ो लरजे, सखियाँ रह्यो नहीं जाय हो॥ चलो............ ॥
कुँवार मास नी आस रे उद्धव, पिहू नहीं आयो म्हारो हो।
अबके बेर पिहू म्हारो आवऽ, जीवता छोडू पपैया हो॥ चलो........... ॥
कार्तिक की तो पूरणमासी, सखियाँ गावण हारी हो।
हऊं अति अबला प्रेम सुंदरी, केकऽ भवन लगी जावां हो॥ चलो......... ॥
मागसिर पड़त सुखा रे उद्धव, भींजे अंग ना चीर हो,
चकवा-चकवी किलौल करऽ, वो सरवर मझधार हो॥ चलो.......... ॥
पोष हो कागदी होवे रे उद्धव, अखियाँ मऽ रूप भरावै हो।
चुन-चुन कलियां सेज बिछाऊं, पिहू नहीं आयो म्हारो हो॥ चलो.......... ॥
माघ मऽ आंगणा ठाड़ी रे उद्धव, बहुविधि से उपदेशा हो।
कुबजा सौतन म्हारी रे उद्धव, जीत हरि बिलमाया हो॥ चलो........... ॥
फागुण फाग उड़ावो रे उद्धव, दूना रंग बहाऊ हो॥ चलो.......... ॥
चैत्र मास मऽ सब बन फूल्या, भंवरो करऽ गुंजारा हो।
उड़-उड़ भंवरो आम पर बठऽ, ये दुःख सयो नहीं जाय हो॥ चलो.......... ॥
वैशाख मऽ बांस कटावां, चूना से बंगलो चुनावां हो।
चुन-चुन कणी का महल बणाया, किन की संग हम रवां हो॥ चलो.......... ॥
जेठ मास की महिमा रे उद्धव, बारहमासी हम गावां हो।
सूरदास प्रभु तुम हो मिलन को, हरि गत की गत न्यारी हो॥
चलो नऽ उद्धव माधोपुरी जावां।

स्रोत- ठाकुर भूरेसिंह मौर्य-जसवाड़ी

बारामासी गीतों के कृष्ण नायक हैं और राधा नायिका है। राधा-कृष्ण और गोपियों के सभी प्रसंग इन गीतों में मिलते हैं। उद्धव प्रसंग इन गीतों का एक खास प्रसंग होता है। यह गीत उसी का उदाहरण है। गोपियाँ उद्धव से कहती हैं- उद्धवजी आपका ज्ञान-ध्यान रहने दीजिए, चलो हम सब मथुरा चलें और कृष्ण को मनाकर गोकुल गाँव में ले आयें। सारी गोपियाँ विरह में

जल रही हैं, शीतलता के लिए पूरे शरीर में चंदन लगा रही हैं। कामिनियाँ किल्लोल कर रही हैं। हम जैसे दीन दुखियों के नाथ हैं यानी स्वामी हैं। शुक्र है कि आषाढ़ मास लग गया है। वर्षा होने लगी है, थोड़ी ठण्डक हो गई है। पर उद्धवजी फिर भी मन में शान्ति नहीं है, उद्विग्नता है। एक तो आप यहाँ आये हो, हमें समझाने-बुझाने। तुम्हारा समझाना-बुझाना बेकार है। दूसरे हमारे प्रियतम परदेश में हैं। तीसरे सावन की झड़ियाँ और सावन-सेरों के रूप में पानी दिनरात झर-झर बरस रहा है। उद्धवजी भादव की काली रातें डरावनी लग रही हैं। बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है, हृदय काँपता है। कृष्ण के बिना रहा नहीं जा रहा है। सखियाँ उदास हैं। कुँवार महीने में कृष्ण के आने की उम्मीद जगी थी, पर प्रियतम कृष्ण नहीं आये। यदि इस बार प्रियतम कृष्ण आ गये तो पपीहों को उनकी कैद से आजाद कर दिये जायेंगे।

कार्तिक महीने की शरदपूर्णिमा अत्यन्त सुहावनी होती है। स्वच्छ चाँदनी सर्वत्र बिछ जाती है। शीतल चाँदनी को देखकर सखियाँ गीत गाने लगी हैं। मैं अबला नारी हूँ, केवल प्रेम करना जानती हूँ। प्रेम ही सुन्दरता है और ताकत है। पर क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? किसके घर जाऊँ? जहाँ कृष्ण मिल सकें। मार्गशीर्ष महीने में रुक-रुककर बारिश हो रही है, अचानक बरसने वाले पानी से शरीर के वस्त्र भींग रहे हैं। तालाब किनारे चकवा-चकवी खेल रहे हैं।

पौष महीना कागज के समान पतला है। कब सुबह हुई और कम शाम आ गई, पता ही नहीं लगता है। पौष में दिन छोटे होते हैं और रातें बड़ी होती हैं। दिन आँखों में समा नहीं रहा है। प्रियतम की प्रतीक्षा में प्रतिदिन रात्रि में बगिया से चुन-चुनकर सेज पर कलियाँ सजाती हूँ, पर प्रियतम पौष माह में भी नहीं आये।

माघ महीने में आँगन में खड़ी होकर प्रियतम की प्रतीक्षा करती रही। किसी प्रकार से प्रियतम का संदेश मिल जाय। पर मुझे लगता है, किसी दूसरी औरत ने उन्हें जीत लिया है और अपने में बहला लिया है।

फागुन खूब रंग गुलाल उड़ाने का समय है, पर प्रियतम घर में नहीं हैं। किसके साथ होली खेलूँ। फागुन में भी स्वामी नहीं आये। यदि प्रियतम आ जायेंगे तो पिचकारी भर-भरकर खूब रंग खेलूँगी। दुगुना रंग घोलूँगी। चैत्र महीने में जंगल के पेड़-पौधों के फूल खिल गये हैं। भँवरे फूलों पर गुन-गुन कर मंडरा रहे हैं। भँवरों की गुँजार सुनाई दे रही है। भँवरे उड़-उड़कर आम के मौरों (फूलों) पर बैठ रहे हैं, उनका रस ले रहे हैं। यह देखकर मन में टीस उठ रही है। इसका दुख सहा नहीं जा रहा है। वैशाख में बाँस कटवा लेंगे, उसकी बाँसुरी बनवा लेंगे। चूने से एकदम धवल बंगला पुतवा लेंगे। एक-एक ईंट से सुन्दर महल बनाया गया है, पर समस्या यही है कि इस महल में किसके साथ रहें? जेठ महीने की महिमा ही अलग है। धूप पड़ती है। पसीना बहता है। जेठ बारामासी गीत गाकर हम अपना मन बहलाते हैं। सूरदास कहते हैं- यह प्रभु यानी श्रीकृष्ण के मिलने का समय है। प्रभु ही हमारी मन की गति (दशा) को समझ सकते हैं। वही हमारी मन की पीड़ा हरण कर सकते हैं।

गावो म्हारो हरि अवतार कि कृपा करो नी घणी,
असुर भया हो कंसराय, कंसा से अरज करे॥
पोष महीनों महाराज देवकी माता न गर्भ रहे,
सोच करे दिन रात, बालक मोहे धीरज नहीं॥ 1॥
माघ महीनों महाराज, संवरा देवी सारजा,
पुत्र दीजे वो सारजा माय, कळु मऽ थारो नाम रहे॥ 2॥
फागुण महीनों महाराज, झांझर झंकारा करे,
मुट्ठी-मुट्ठी उड़ऽ रे गुलाल, गोपी नऽ बहुरंग करे॥ 3॥
चैत्र महीनों महाराज, रुकमणी रूप धरे,
घर-घर होय मंगळाचार, गोपी नऽ आनंद करे॥ 4॥
वैशाख महीनों महाराज, पीयर मऽ नऽ मोकलजो,
मोकलजो वे दिन चार, पीयर मऽ नऽ मोकलजो॥ 5॥
जेठ महीनों महाराज, बाला नऽ सपनो दियो,
धीरज धरो हो देवकी माय, कंस कऽ निवंस करूं॥ 6॥
आषाढ़ महीनों रे महाराज, दादुर बिजली चमकऽ,
बन-बन बोले मोर, कोयल हुंकारा करे॥ 7॥
सरावण महीनों महाराज, छोटा-मोटा बूंद झरे,
बन-बन बहता नीर, पपैया पीहू-पीहू करे॥ 8॥
भादो महीनों महाराज, बाळा जनम लियो,
तिथि अट्ठव बुधवार, चरण मऽ सीस धरे॥ 9॥

श्रीकृष्ण विष्णु के अवतार हैं, वे हम पर कृपा करें। हम उनके गुण गाते हैं। उन्होंने कंस जैसे दुष्ट असुर को नष्ट किया। माता देवकी और वासुदेव कंस से प्रार्थना करते रहे, लेकिन वह दुष्ट देवकी के एक-एक कर सात शिशुओं को मार चुका। अब देवकी के आठवें गर्भ में विष्णु के अंश बनकर श्रीकृष्ण पल बढ़ रहे हैं। देवकी के ये नौ महीने अत्यधिक चिन्ता भरे हैं।

पौष माह में देवकी ने गर्भ धारण कर लिया है। उनके मन में दिन-रात एक ही चिन्ता है, यह बालक भी कंस के हाथ चढ़ गया तो नहीं बच पायेगा। यह सोच-सोचकर उसके मन का धैर्य छूटता जा रहा है। माघ महीना लगते ही देवकी माता शारदा यानी विद्या की देवी सरस्वती का स्मरण (सुमिरन) कर रही है। हे शारदा माता! इस बार तुम मुझे विद्या बुद्धि वाला पुत्र देना, जिससे कि तुम्हारा नाम जग में रहे। मैं तुम्हें सदैव याद करती रहूँ।

फागुन महीने में चारों ओर झांझ-करताल बजने लगे हैं, डफ-ढोल और झांझ-करताल की समवेत ध्वनि (झंकार) सुनाई दे रही है। मुट्ठी भर-भर कर रंग-गुलाल उड़ने लगा है। गोपियाँ आपस में एक दूसरे को रंग-गुलाल से सराबोर कर रही है। देवकी को इसका एहसास

हो रहा है। चैत्र महीने में श्रीकृष्ण ने राधा-रुक्मिणी का रूप (स्वांग) धर लिया था, जिससे घर-घर मंगलाचार होने लगा था, गोपियों ने कृष्ण के इन रूपों का खूब आनन्द उठाया था।

वैशाख महीना सुहावना है। हे स्वामी! मायके जाने की अनुमति जरूर देना। मायके में दो चार दिन रहना अच्छा लगता है। पुरानी सखियों से भेंट होती है और मायके में भाई बहन, भाभी, भतीजे, माता-पिता सबके साथ रहने का मौका मिलता है। देवकी-वासुदेव से ऐसा महसूस कर निवेदन कर रही हैं। जेठ माह में देवकी ने सपने में श्रीकृष्ण को देखा। उसने माता को धैर्य बँधाया कि वह कंस को निरवंश कर देगा।

आषाढ़ माह में बादल छाने लगे, बिजलियाँ चमकने लगी। वन में मोर बोलने लगे। आम्रकुंजों में कोयल कुहुक रही है। देवकी को बादलों की गरज-तरज, मोर की पुकार, कोयल की कुहू-कुहू सुनाई दे रही है। श्रावण महीने में कभी झड़ी और कभी सेरों के रूप में पानी बरस रहा है। चारों ओर पानी बह निकला है। पपीहा 'पी-पी' की रट लगाने लगा है।

भादव का महीना आते ही देवकी के गर्भ में नौ माह पूरे हो गये हैं। उनकी कोख भादव कृष्ण पक्ष की अष्टमी दिन बुधवार अन्धेरी रात में घनघोर वर्षा के बीच कंस की काल कोठरी में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। भगवान श्रीकृष्ण ने मथुरा में अवतार ले लिया। वासुदेव सूपड़े में रखकर जमुना पार गोकुल में जशोदा के यहाँ श्रीकृष्ण को रख आये और जशोदा की लड़की को ले आये। इस प्रकार कृष्ण कंस के हाथों से बच गये। कारागृह के दरवाजे अपने आप खुल गये थे। पहरेदार सब सो गये थे। उस समय दैवगत सभी तरह की अनुकूलताएँ हो गई थी। यह कृष्ण का ही प्रभाव था। बाद में श्रीकृष्ण कंस का वध करते हैं और दुष्टता से प्रजा को छुटकारा दिलाते हैं।

श्रावण आयो सायबो हो... श्रावण आयो सायबो नऽ
माथऽ आयो मेघ।
भीजण लागी पंखुड़ी नऽ, धूजण लाग्यो शरीर।
बिंदराबन ना मोरीड़ा हो, बिंदराबन ना मोरीड़ा नऽ
म्हारा घर रमवा आव।
सोना मंडाऊ थारी पंखुड़ी हो, सोना मड़ाऊ
थारी पंखुड़ी नऽ रूपा मंडाऊं थारी चोच।
धरती नी आरती करूं हो, धरती नी आरती करूं,
पवन करूं परवार
बीज लड़ी नऽ करूं दीवलो हो, बिजलड़ी नऽ करूं दीवळो,
नऽ गाऊं राग मल्हार।

सावन में सायबा (प्रियतम को सम्बोधन) आ गये हैं, इधर आकाश में बादल छाने लगे

हैं। बादलों को देखकर मोर नाचने लगे हैं। पानी बरसने लगा है। मोर के सुन्दर पंख भींजने लगे हैं। उनका शरीर गीला होने से काँपने लगा है। हे वृन्दावन में सुन्दर नृत्य करने वाले! तुम मेरे घर नाचने आना। तेरे पंख मैं सोने से मढ़वा दूँगी, चाँदी से तेरी चोंच मंढवा दूँगी। फिर मैं धरती की आरती करूँगी। पवन की वन्दना करूँगी। उस आरती में बिजली का दीपक बनाऊँगी, फिर वन्दना में राग मल्हार गाऊँगी।

मोकळ जो बरसात सांवळिया मोकळजो बरसात।
म्हारो आयो जीवन नहीं जाय, सांवळिया मोकळजो बरसात।
तो गोपी घराणा दई रया, वाला,
सामळो जशोदा माय।
दूध पिलई तिनऽ मोटो हो किन्हो
ते गुण बिसरी जाय॥ सांवळियो.......... ॥
आषाढ़ मास भला आविया रे वाला,
बोलऽ पपैया मोर।
कीड़ी-मकोड़ी घर करे रे,
आज सागर करऽ किलोळ॥ मोकलजो......... ॥
श्रावण मास मऽ नी सुन्दरी वाला,
ऊबी ते सरवर पाल।
अंसुवन भींजऽ म्हारो काचळो रे,
पसीना मऽ भींजऽ म्हारो चीर॥ सांवलिया........... ॥
भादव मास भला आवियो रे वाला,
झिर-झिर बरसे मेउ।
नदी जमना भर चले,
कोण संदेशो लई जाय॥ मोकलजो.......... ॥
तो कुंवार मास भला आविया
इन्दर पुरवे आस।
भक्त नरसिंह अरज करे
आन राखो ते शरण लगाय॥ सांवलिया........... ॥

हे साँवलिया! (श्रीकृष्ण को सम्बोधित) ऐसी बरसात भेजो, जिससे मेरा जीवन सार्थक हो जाय, बिना पानी के सारे प्राणियों का जीवन बेकार जा रहा है। ब्रज अंचल की सारी गोपियाँ माता जशोदा को उलाहना दे रही हैं कि हमने तुम्हारे कृष्ण को दूध पिला-पिलाकर इतना बड़ा किया है, ये सब हमारे उपकार आप भूल गई हैं, अब हमारे यहाँ पानी की जरूरत पड़ रही है, तब कृष्ण यहाँ नहीं हैं। गोपियों की शिकायत रूपी प्रार्थना भगवान कृष्ण तक पहुँचती है और वर्षा आने के आसार दिखाई देने लगते हैं। आषाढ़ में बादलों को देखकर मोर-पपीहा बोलते हैं।

कीड़े-मकोड़े बिल में चले जाते हैं। सागर में लहरें उठती हैं। श्रावण में सुन्दर नायिका सरोवर पर खड़ी प्रियतम की प्रतीक्षा करती है। इधर आँसुओं से उसकी चोली भींजती है, उधर पसीने में उसके कपड़े भींग जाते हैं।

भादव में झिर-मिर पानी बरसता है। जमुना (नर्मदा) में भरपूर जल बहने लगता है। उस पार अब कौन संदेश ले जाय। कुँवार माह में इन्द्र ने सबकी इच्छा पूरी कर दी। भक्त नरसिंह मेहता कहते हैं- भगवान कृष्ण सबकी ऐसे ही सबकी इच्छा पूरी करें।

श्याम सुन्दर ब्रज रास मऽ आयो
परदेसी मऽ बिलम रह्यो।
जेठ तपऽ नित शंख, अषाढ़ मऽ घटा घुमड़ आई
श्रावण बंधत हिंडोल, श्याम सुंदर ब्रजरास,
कुब्जा मऽ बिलम रह्यो॥ श्याम.......... ॥
भादव रैन सो रैन, कुवारिया मऽ मोरा बोल रहे।
लग्यो कार्तिक मास, चन्द्रमा तारे छटक रहे॥ श्याम......... ॥
मागसिर अग्नि संदेश, पोषवा राधेजी हरख रहे।
लाग्यो महामास श्याम, चकवा संग बिलम रहे॥ श्याम........ ॥
फागुन रैन सो रैन, चेतवा मऽ केशवा फूल रहे।
लग्यो वैशाख मास श्याम मेरी बैया क्यों न धरे॥ श्याम......... ॥

हमारा श्याम सुन्दर (कृष्ण) परदेश में उलझ गया है। उनके आने की अभी कोई उम्मीद नहीं है। इधर जेठ महीना खूब तप रहा है, हर तरफ बैचनी है। आषाढ़ में घन-घटाएँ घुमड़ आई हैं, परेशान कर रही हैं। सावन में बाग-बगीचों में झूले बँध गये हैं, किशोरियाँ झूल रही हैं। श्याम सुन्दर यहाँ नहीं हैं। वे दूसरी स्त्री में बिलम गये हैं। भादव की काली रात डरावनी है। कुँवार में मोर बोल रहे हैं, जो टीस पैदा करते हैं। कार्तिक में रात्रि में चन्द्रमा और तारे छिटक गये हैं। धुली चाँदनी बिखरी है। चाँदनी वदन को जला रही है। मार्गशिर माह अग्नि तापने का उबाऊ समय है। पौष में कृष्ण के आने का संदेश पाकर गोपियाँ प्रसन्न हो गई हैं। माघ मास आ गया फिर भी श्याम नहीं आये, किसी चकवा के संग बिलम गये हैं। उनकी दशा चकवे के समान हो गई है। फागुन में दिन और रात एक से हैं। चैत्र में टेसू फूल गये हैं। वैशाख मास में श्याम के आने की उम्मीद है, वे जरूर आकर मुझे बाँहों में भर लेंगे।

सखी आयो हो आषाढ़ मास, कोयल बोलऽ ओ।
कोयल करऽ रे किलोल पपैयो बोलऽ ओ।
सखी आयो ओ सरावण मास, सई नऽ झूल ओ।
घर-घर झूला बंधाय कृष्णजी झूल ओ।
सखी आयो भादव मास, काली घटा छाई ओ।

आसा वरसऽ बारई मेघ, बिजली नऽ चमक ओ।
सखी आयो कुँवार मास, वरना ईतऽ ओ।
सब लश्कर हुओ तैयार, दसेरो जीतऽ ओ।
सखी आयो ओ कार्तिक मास, सई नऽ न्हाव ओ।
बामण कऽ दखणा दे, सुफल पावऽ ओ।

हे सखी! आषाढ़ मास आ गया है। कोयल कुहकने और, किलोल करने लगी है। साथ में पपीहा भी बोल रहा है। हे सखी! सावन मास आ गया। सखियाँ झूल रही हैं। घर-घर झूले बँधाये हैं। कृष्णजी झूला झूल रहे हैं। हे सखी! भादव मास आ गया है। काली घटा छा रही है। काले-काले मेघ एक साथ बरस रहे हैं। बादलों के साथ बिजली चमक रही है। हे सखी! क्वार मास आ गया है। वर्षा बीत गई है। सभी लोग मिलकर लाव-लश्कर के साथ दशहरा जीतने जा रहे हैं। हे सखी! कार्तिक मास आ गया है। सखियाँ कार्तिक स्नान कर रही हैं। ब्राह्मण को दक्षिणा देकर आशीर्वाद पा रही हैं।

घर रहो, घर रहो जी, अब को चौमासा मारुजी, घर रहो जी।
घर रहो, नणदी रा वीर, अब को चौमासो मारुजी, घर रहो जी।
रहो तो राँधा खिचड़ी जी, जाओ तो नखछोलियो भात।
मारुजी जाओ तो नखछोलियो भात।
घर रहो, घर रहो जी, अब को चौमासा मारुजी, घर रहो जी।
राहे तो ओढ़ां चून्दड़ी, लाओ तो दखणी रो चीर।
घर रहो, घर रहो जी, अब को चौमासो मारुजी, घर रहो जी।
रहो तो सजा सिणगार, जाओ तो रवां उदास।
मारुजी जाओ तो रवां उदास।
घर रहो, घर रहो जी, अब को चौमासो मारुजी, घर रहो जी॥

स्रोत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय-खण्डवा

हे प्रियतम! इस चौमासा याने बरसात के मौसम में तो घर पर ही रह जाओ। परदेश नौकरी पर मत जाओ। यदि आप रहेंगे तो मैं खिचड़ी बनाकर खिलाऊँगी। यदि तुम्हें जाने की जल्दी है तो नाखूनों से तराशे गये चावल बनाकर खिला दूँगी। आप घर पर रहेंगे तो मैं सुन्दर साड़ी पहनूँगी और आप चले जाओगे तो दक्षिणी साड़ी पहनूँगी। हे प्रियतम! आप रहेंगे तो मैं सोलह शृंगार करूँगी और चले जाएँगे तो एकदम उदास पड़ी रहूँगी। बरसात के चार महीने तुम घर रहोगे तो आनन्द रहेगा।

राखी जिरोती को आयो रे तिवार।
मिलऽ नी म्हारो वीरो बईण रड़ऽ धूणिधार।

राखी जिरोती बीच आई इरपोष,
कर्म अभागेण करम कऽ दे दोष।
क्यो नी दियो मकऽ वीरो करतार।
मिलऽ नी म्हारो वीरो.......... ॥
वीरो हुतो तो मकऽ लेण कऽ आवतो।
आई मण्डप मऽ म्हारो मायरो सजावतो।
लाई नी दिती भलई साड़ी को तार।
मिलऽ नी म्हारो वीरो.......... ॥
अड़ोसेण-पड़ोसेण डाली सजावऽ।
पीरो आयो लेण सखी कऽ बतावऽ।
बईण की टूटी नी आँसू की धार।
मिलऽ नी म्हारो वीरो.......... ॥
कई मत दिजे प्रभु वीरो दई दिजे।
बिना वीरा की प्रभु क मती कीजे।
मोतीराम गावऽ नऽ दिन दितवार
मिलऽ नी म्हारो वीरो.......... ॥

स्रोत- श्री मोतीलाल यादव-निमरानी

निमाड़ में राखी और जिरोती का त्यौहार विशेष रूप से मनाया जाता है, लेकिन इन दोनों त्योहारों के बीच में जो रविवार का दिन आता है, वह 'इरपोष' के नाम से जाना जाता है। इरपोष पर एक प्रकार से भाई की ओर से बहन को उपहार दिया जाता है, जो बहन को भाई के घर आने का राखी बाँधने का निमंत्रण होता है। बहन के लिए निमाड़ में इरपोष का अत्यधिक महत्त्व है। इरपोष त्योहार राखी और जिरोती त्योहारों के बीच की कड़ी है। इरपोष पर यह त्योहार जब ही अच्छा लगता है, जब इरपोष देने वाला भाई मौजूद हो। भाई और बहन एक दूसरे के पूरक हैं। भाई हो और बहन न हो, तो भाई की कलाई और आरती दोनों सूनी रहेगी। बहन हो और भाई नहीं हो, तो इरपोष और मण्डप सूना रहेगा। इसलिए बहन और भाई दोनों होना चाहिए।

बहन यही प्रार्थना भगवान से कर रही है- हे भगवान! मुझे भाई क्यों नहीं दिया? मेरा भाई होता तो इरपोष के दिन मुझे लेने के लिए आता, इरपोष लाता। भाई होता तो मण्डप के दिन मेरे लिए मामेरा लेकर आता - भले ही वह हल्की-सी साड़ी लेकर मेरे मण्डप में आ खड़ा होता।

मेरे पड़ोसन खुश है, क्योंकि उनके भाई हैं और वे उनके लिए इरपोष लाये हैं और बहनें आरती सजाकर भाइयों को मंगल टीका लगाकर आरती कर रही हैं। मेरी आँसुओं की लड़ नहीं टूट रही है। दुखियारी बहन भगवान से प्रार्थना कर रही है- हे भगवान! मुझे भी एक भाई दे देता, तो मैं अपनी सभी खुशियाँ पूरी कर लेती। अगले जन्म में मुझे भाई जरूर देना। वह भगवान से प्रार्थना करती है कि- हे भगवान! किसी भी बहन को बिना भाई की मत रहने देना या बहन के

साथ भाई भी अनिवार्य रूप से पैदा हो। बिना भाई की कोई बहन न हो। मोतीराम यादव यही बात इरपोष के दिन सभी को बता रहे हैं। यह दिन रविवार का दिन होता है।

इरपोस देण कऽ नी आयो रे हीरो म्हारो।
इरपोस देण कऽ नी आयो रे हीरो म्हारो।
छोटी भाभी का प्रेम मऽ बिलमायो।
हीरो म्हारो इरपोस देणऽ कऽ नी आयो॥
पैला दाड़ा की मनऽ आस लगाई
हुयो भमसारो हाऊँ उठी नऽ न्हाई
मनऽ मोती चौक पुरायो॥
हीरो म्हारो इरपोस........ ॥
सवा मुठ्ठी से हीरा गहूं लई आवतो।
एक नायल संग कापड़ो लावतो।
मनऽ चूरमा को सोय लगायो॥
हीरो म्हारो इरपोस........ ॥
गोबर घोली मनऽ आंगण लिपायो।
मखमल की रे मन पाट बिछाओ।
मनऽ मोती का चौक पुरायो॥
हीरो म्हारो इरपोस........ ॥
थारा कारण हीरा भोजन नी खायो।
सारा जो दिन आँसू नैणा बहायो।
तूनऽ बईण को नातो नी निभायो॥
हीरो म्हारो इरपोस........ ॥
कई कऽ वीरा नकऽ बईण पावऽ
राखी तिवार पर बहुत याद आवऽ।
तून माथा पर टीको नी लगायो॥
हीरो म्हारो इरपोस........ ॥
गुरु मुरली म्हारी इरपोस सजावसे।
बईण बिना नैन नीर बहावसे।
राधेश्याम नातो निभायो॥
हीरो म्हारो इरपोस........ ॥

स्रोत- श्री वीरेन्द्र यादव-सेगाँवा

मेरा भाई मुझे इरपोष देने के लिए नहीं आया। मेरी भाभी के प्रेम में मोहित होकर वह भूल ही गया कि आज इरपोस का दिन है। अगले दिन से मैं आशा लगाकर बैठी थी कि कल

मेरा भाई उपहार लेकर आयेगा। सुबह से उठकर मैंने सर्वप्रथम स्नान किया और भाई के आने की खुशी में मोती के चौक पूरे हैं। हे भाई! मेरे लिए सवा पास (अँजुली भर) गेहूँ, एक नारियल और एक ब्लाउज का कपड़ा ले आता। मैंने तेरे भोजन के निमित्त चूरमा बनाने का निश्चय किया है। पर मेरा भाई इरपोस लेकर नहीं आया है। गोबर घोलकर मैंने आँगन को लीपा है। उसके आने के उपलक्ष्य में मखमल का बिछौना बिछाया है। इसे मैंने मोतियों से चौक पूराकर उस पर मखमल का बिछौना बिछाया है। पर मेरा भाई इतनी तैयारी के बाद भी नहीं आया है।

हे वीर! तुम्हारे नहीं आने से मैंने भी भोजन नहीं किया। सारे दिन तुम्हें याद करके रोती रही हूँ। क्या तुझे बहन की याद नहीं आई? तूने सारे नाते-रिश्ते भुला दिये हैं। कई भाइयों की बहनें नहीं होतीं, उन्हें राखी के त्योहार पर बहन की याद आती है। उनकी कलाईयाँ सूनी रहती हैं। कोई उन्हें राखी नहीं बाँधता है। आज मैं तेरे माथे पर तिलक लगाती, पर तुम नहीं आये। तूने तिलक तक लगाने के अधिकार से वंचित कर दिया है।

मुरलीदास महाराज इरपोष सजाकर देने को तैयार हैं, लेकिन उनकी बहन नहीं है। वे बिना बहन के हैं, इसलिए आज उन्हें अपनी बहन याद आ रही है और वो रो रहे हैं। पड़ोस के राधेश्याम भाई की बहन है और वे अपनी बहन का रिश्ता निभाने के लिए इरपोष का उपहार लेकर अपनी बहन के घर जा रहे हैं। मुरली महाराज ऐसी बहनों को इरपोष देने के लिए सदैव तैयार हैं, जिनके भाई नहीं है। वे सबके भाई हैं।

राखी माथऽ पड़ी रे राखी माथ पड़ी।
पइसा लई नऽ उधार, गई भाई का द्वार।
बाँधणऽ राखी को तार।
भावज खूब तो लड़ी, राखी माथऽ पड़ी रे॥
नहीं साधन गाड़ी को, हाँऊ पांय-पांय गई।
नहीं आव को कयो रे हाँऊ देखती रई।
घर मऽ भावज को राज, वो तो हुई गई नाराज।
बोली खोटी कदी रे, राखी माथऽ पड़ी रे॥
राखी पूनम का दिन, इनऽ घाट तो करी।
म्हारो भाई बड़ो सीधो गयो बयरू सी डरी।
पछी लगी गई वाट, रीखई गई अड़घाट।
आसी पड़ी फाटम फाट, राखी माथऽ पड़ी रे॥
नहीं टोपी अंगरका पोरया पारई कऽ दिया।
नहीं चोली को नाप दियो लड़गा पिया।
सासु नणदल का बोल बाँची रयो चोल।
दिल हुयो डावांडोल जाऊं गई रे गाड़ी।

राखी माथऽ पड़ी रे॥
हाँऊ करम अभागेण कसी पैदा तो हुई।
नानपण से आयो दुखी म्हारी माय मरी गई।
हाँऊ कलपूं दिन रोज, नहीं देखी मनऽ मौज।
बड़ो दुख को आयो बोझ,
लगी आँसू की झड़ी रे, राखी माथऽ पड़ी रे॥
बिना मान पान से पीयर जाजे मति।
बड़ो होयगा अपमान, असी होयगा गति।
बईण रहे उदास गावऽ गरबी मुरली घर
जिव्हा सरस्वती को वास।
लगी ज्ञान की घड़ी, राखी माथऽ पड़ी रे॥

स्रोत- श्री मोतीलाल यादव-निमरानी

इस गीत के पीछे दो कहावतें छिपी हैं। दो कहावतों की पृष्ठभूमि पर यह गीत बना है- 'घट्टी ऐची न बइण घर-घर की हुई' तथा 'बिना मान पान पीयर नी जाणू'।

पहली कहावत का अर्थ है। बहन ने घट्टी (आटा चक्की) को बेच दिया और वह राखी बाँधकर जो नेग लायेगी, उससे घट्टी पुनः खरीद लेगी, पर राखी के नेग में उसे कुछ नहीं मिला। बहन घट्टी (चक्की) में अनाज पीसकर अपना परिवार चलाती थी। इसलिए वह बेरोजगार और बेघरबार हो गई। दूसरी कहावत का अर्थ है- बिना बुलाए या आमंत्रण के मैके (पीयर) मत जाओ। बिना बुलाये पीयर जाने से बहन की दुर्दशा होती है। वही इस गीत का मूलभाव है-

'राखी का त्योहार कर्जदार हो गया'। पैसे उधार लेकर बहन भाई को राखी बाँधने गई। तो भाभी ने बिना बात का झगड़ा मचाया। बहन राखी बाँधने भाई के गाँव गई। जाने का कोई साधन था। बहन पैदल चलकर अपने भाई के गाँव गई। घर पहुँची, तो भाभी ने आदर-सत्कार स्वरूप आने का भी नहीं कहा। वह देखती ही रह गई। घर में भाभी की हुकूमत चलती है, वही घर की बागडोर सँभाले है। उसका शासन चलता है और उसने बहन का अपमान किया। इसकी उसे तनिक भी लज्जा नहीं आयी। भाभी ननद को अपने घर में देखकर बहुत गुस्सा है। राखी पूर्णिमा के दिन त्योहार के पकवान बनाने के स्थान पर भाभी ने दलिया बना ली। मेरा भाई बड़ा सीधा-सादा है। वह अपनी पत्नी से डरता है। इस प्रकार अपमान को देखकर बहन वापस अपने घर आने की तैयारी करती है। वापस जाने पर रास्ते में नदी भरपूर मिली। उसके कारण वह घिर गई। वह बड़ी भयभीत होती है। किसी प्रकार नदी का पानी उतरता है। बहन नदी पार करके अपने घर रोते-रोते प्रस्थान करती है। बहन रो रही है कि न तो मेरे बच्चों को कपड़े दिये, न ही मुझे ब्लाउज का पीस दिया और साड़ी भी नहीं दी भाई ने। अब मुझे मेरे पतिदेव डाँटेंगे। क्या उत्तर दूँगी? सास-ननद के स्वभाव से मैं परिचित हूँ। मेरा देवर तो हमेशा गड़े पत्थर उखाड़ने में माहिर है। मेरा मन डाँवाडोल हो जा रहा है। शर्म और लज्जा में डूबी जा रही हूँ।

मैं जन्म से ही कर्महीन पैदा हुई हूँ। बचपन में ही मेरी माता का देहान्त हो गया। मैंने बचपन का कुछ भी सुख प्राप्त नहीं किया। क्या होती है मौज मस्ती, उसे नहीं जाना। क्या होता है खेलकूद, यह भी मैंने नहीं जाना। बस, काम में व्यस्त रही। इसका मुझे बड़ा दुःख है। मेरे जीवन में दुःखों का बड़ा भारी बोझ है। इस दुःख को याद करके बहन की आँखों से सावन भादौ के पानी के समान आँसू बहे जा रहे हैं। बहन सभी बहनों को सचेत करने के लिए कह रही है– जब तक मैके से कोई बुलावा नहीं आये या भाई लेने न आये, तब तक मैके मत जाना, वरना बड़ा अपमान होगा। यही बात मुरलीदासजी महाराज अपने गीत में सभी को बता रहे हैं। इस प्रसंग से बहन उदास है। मुरलीदासजी महाराज इस बात को गीत के माध्यम से सभी को समझा रहे हैं। उनकी जिह्वा पर सरस्वती जी का वास है और ज्ञान की छड़ी से सभी को समझा रहे हैं।

लगी गयो सरावण पड़ी गयो पाणी,
भोला की गली आई रे, मकऽ कोई नऽ नी देखी।
शीश भोले का जटा बिराजे, गंगा बहाई नऽ चली आई है॥
मकऽ कोई नऽ नी देखी।
कान भोला का कुन्डल बिराजे, हीरा चमकई नऽ चली आई रे॥
मकऽ कोई नऽ नी देखी।
गला मऽ भोला का माला सोहे, सर्प लिपटई नऽ चली आई रे॥
मकऽ कोई नऽ नी देखी।
हाथ भोला का त्रिशूल सोहे, डमरू बजाईन नऽ चली आई रे।
मकऽ कोई नऽ नी देखी।
पांव भोला का नेऊर सोहे, घूंघरू बजाई नऽ चली आई रे।
मकऽ कोई नऽ नी देखी।
संग भोला का पारबती सोहे, जोड़ी सजाईन नऽ चली आई रे।
मकऽ कोई नऽ नी देखी।

स्रोत– श्रीमती उषा चौधरी–बड़वानी

श्रावण में शिव पूजा, शिव आराधना का महत्त्व माना गया है। शिव की पूजा आकाव के फूल, बिल्व पत्र, चन्दन आदि से की जाती है। श्रावण का महीना लग गया है। पानी भी गिर गया है। ऐसे में मैं शिव पूजन के लिए भोलेनाथ की गली में गई। मन्दिर में गई। मुझे जाते हुए किसी ने नहीं देखा। भोलेनाथ का जटाजूट रूप अच्छा लगता है। मैं उसमें गंगा को बहाकर चली आई। सदाशिव के कानों में कुण्डल अच्छे लगते हैं। मैं उनमें हीरा जड़वाकर आई हूँ। भोलेनाथ के गले में रुद्राक्ष की माला अच्छी लगती है। मैं उनको सर्प भी लपेटकर आई हूँ, जो शिव को सदा से प्रिय है। गिरजापति के हाथ में त्रिशूल अच्छा लगता है। उस त्रिशूल में डमरू बँधा है। मैं उसे बजाकर चली आई हूँ। भोले–भण्डारी के पाँवों में नुपूर अच्छे लगते हैं। मैं उन्हीं नुपूरों के घुँघरू बजाकर आ गई हूँ। मुझे किसी ने भी नहीं देखा। शिवशंकर की जोड़ी पार्वती के साथ सदा से

रही है और मैं इन दोनों का श्रृँगार करके वापस चली आई हूँ। मुझे किसी ने नहीं देखा।

कुण भाई जासे चाकरी नऽ कुण भाई जासे गढ़ रे गुजरात
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
मोठा भाई जासे चाकरी नऽ छोटा भाई जासे गढ़ रे गुजरात,
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
कुण भाई की घोड़ी कऽ घुंघरू, नऽ कुण भाई की घोड़ी कऽ जड़ियो रे जड़ाव।
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
मोठा भाई की घोड़ी कऽ घुघरू न, छोटा भाई की घोड़ी कऽ जड़ियो रे जड़ाव।
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
कुण भाई लावसे चुन्दरी, न कुणऽ भाई लावसे दखणिया रो चीर।
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
एक भाई लावसे चुन्दरी दूसरो भाई लावसे दखणिया रो चीर।
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
दूर-दूर की म्हारी भावना बईण तुक लेण कुण भाई जासे
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
जासे-जासे म्हारो लोकेन्द्र भाई घोड़ा कुदावतो लावसे।
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
घोड़ा का टापुर वाज्या, बईण कहे म्हारों भाई आयों।
पायल को पिन्जण को ठुमकासे वाज्यों, भाई कहे की म्हारी बईण आई।
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।
पयली राखी म्हारा लोकेन्द्र भाई कऽ बांधू,
लोकेन्द्र भाई नऽ दिवी लाल गाय।
लाल गाय का जाय हालऽ हाकऽ,
म्हारा वीरा रे सावण सेरा वरसी गया।

कौन सा भाई नौकरी पर जाएगा और कौन सा भाई गुजरात गढ़ से बहन को लाने जाएगा। हे मेरे भाई! सावन का पानी बरस गया है। बड़े भाई नौकरी पर जाएँगे और छोटे भाई गुजराज गढ़ से अपनी बहन को लेने जाएँगे। ये मेरे भाई सावन का पानी बरस गया है। किस भाई की घोड़ी को घुँघरू बाँधे जाएँगे और किस भाई की घोड़ी को रत्न जड़ित जड़ाव से श्रृँगार किया जाएगा। मेरे भाई सावन का पानी बरस गया है। एक भाई चूनर ले आयेगा और दूसरा भाई दक्षिण की प्रसिद्ध साड़ी लायेगा। दूर देश की रहने वाली मेरी भावना बहन तुमको लेने कौन जाएगा? तुझे लेने के लिए लोकेन्द्र भाई जाएँगे और वे घोड़ा दौड़ाते हुए तुम्हें लेकर आ जाएँगे। घोड़े की टापुर की आवाज बहन पहचान लेती है। मेरा भाई आया है। पाँवों की पायल की आवाज सुनकर भाई भी पहचान लेता है। मेरी बहन आ गई है। बहन सकुशल मैके आती है। रक्षा बन्धन के दिन

अपने लोकेन्द्र भाई को राखी बाँधती है। लोकेन्द्र उसे नेग स्वरूप लाल गाय भेंट करते हैं। लाल गाय के बछड़े खेती में हल जोतेंगे।

सावण वरस्या भादव वरस्या वरसण लाग्या मेऊला।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
राई बोया जीरा बोया बोवण लाग्या आजम।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
राई काटिया जीरा काटिया काटण लाग्या आजमा।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
आठ नव मयना पूरा हुया, ललना जाया रे बालमा।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
अंगणा बठिया भाट ब्राह्मण घर मऽ बठिया भूवा बाई।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
हत्थी बकस्या घोड़ा बकस्या, बकसण लाग्या खजिना।
केशरिया सायब देवा नारायण ललना।
पड़दा मऽ सी जच्चा बोलिया, हाथ संखेरो रे बालमा।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
उस लड़के का ब्याव कराँगा, शादी कराँगा।
खरचो बढ़्यो रे बालमा।
केशरिया सायब देवो नाराण ललना।

स्रोत– सुश्री गंगाबाई तोमर–दवाना

सावन में रिमझिम पानी बरसा। भांदव में पानी की झड़ियाँ लगीं। हर तरफ बादल बरसने लगे हैं। हे केशरिया सायब! धरती भी ऋतुमति हो गई है और हरियाली छा गई है और इधर मेरी कोख भी हरी हो गई है। मैं गर्भवती हूँ। हे स्वामी! मुझे एक पुत्र की कामना है। धरती पर पानी बरस जाने के बाद खेतों में राई बोई गई। जीरा बोया गया। पत्नी गर्भावस्था में है, इसलिए अजवाइन भी बोयी गयी है। उधर फसल बड़ी हो रही है और पत्नी के गर्भ में बच्चा पल रहा है। प्रकृति अपना चक्र पूर्ण कर रही है। आठवाँ महीना पूरा हुआ और नौवें महीने के पूर्ण होते ही पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया। फसल भी बड़ी हो पक गई है।

जैसे ही पुत्र का जन्म हुआ, खुशियाँ मनाई गई। ब्राह्मणों को बुलाया गया। पुत्र के शुभ लक्षण पूछे गये। आँगन में सम्मानीय ब्राह्मण देवता बैठे हैं, चारण भाट बैठे हैं तथा घर के अन्दर बुआजी बैठी हैं। पुत्र जन्म की खुशी में पति महोदय ने हाथी–घोड़े दान में दिये और खजाने से धन लुटाने लगे। तब परदे के अन्दर से पत्नी ने कहा– अब हाथ रोकिये। पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में क्या सभी कुछ लुटा दोगे? हाथ रोकिये! लड़का हुआ है तो इसकी शादी होगी, इसकी

परवरिश पर खर्च तो होगा ही। क्या अभी ही सब कुछ खर्च कर दोगे? जरा हाथ रोकिये! पत्नी की बात सुनकर पति सचेत होते हैं और हाथ रोक देते हैं।

दूर देश की ओ म्हारी काळ्ई वादळ्ई, पाणी कब आवसे।
आवसे-आवसे ओ बईण सावण सेरा, भादव झड़ी लगावसे।
कां की बईण पेरऽ लाल पटोलो, कां की बईण पेरऽ घनचोलो।
भावना बईण पेरऽ लाल पटोलो, उमा बईण पेरऽ घनचोलो।
दूर देश की ओ म्हारी काळ्ई वादलई, पाणी कब आवसे।
आवसे-आवसे ओ बईण सावण सेरा, कां की बईण पेरऽ लाल पटोलो।
कां की बईण पेरऽ घनचोलो, वीणा बईण पेरऽ लाल पटोलो।
शोभा बईण पेरऽ घनचोलो।

माँ बच्चों को झूले पर सुला रही है। वह लोरी गा रही है। हे दूर देश से आने वाली काली बदली! तू पानी लेकर कब आयेगी? पानी कब बरसेगा? तब बादल प्रति उत्तर में कहता है- जब सावन का महीना आयेगा, तब सावन में सेरों के रूप में पानी बरसेगा। भादव महीने में पानी की झड़ी लगेगी। सावन माह में बहनों का आगमन होगा। कौन सी बहनें आयेंगी? क्या पहनकर आयेंगी? कौन सी बहन लाल पटोले की महँगी साड़ी पहनकर आयेगी, कौन सी बहन घनचोला (एक पुराने समय की रेशमी साड़ी) पहनकर आयेगी। भावना बहन लाल पटोले की साड़ी पहनकर आयेगी। उमा बहन घनचोला पहनकर आयेगी। दूर देश से आने वाली काली बदली तू पानी लेकर कब आयेगी? पानी कब बरसेगा? तब बादल प्रति उत्तर में कहता है- जब सावन का महीना आयेगा, तब बौछारों के रूप में पानी बरसेगा। भादव मास में पानी की झड़ी लगेगी। सावन में बहने अपने भाइयों को राखी बाँधने आयेंगी। कौन सी बहन लाल पटोले की साड़ी पहनकर आयेगी? कौन सी बहन घनचोला पहनकर आयेगी? वीणा बहन लाल पटोले की साड़ी और शोभा बहन घनचोला पहनकर अपने मायके भाइयों को राखी बाँधने आयेंगी।

भर भादव वरस्यो रे आँगण बीच कीच मच्यो।
वा तो बलदेव भाई वाली रपट पड़ी॥
वे को कड़ रो बटवो रे इलायची, दाणा दाण बिखर गया॥
वो को देवर दौड़्यो रे, टपा-टप ऐच लिया॥
वो की नणद खारेली रे, खोला मऽ सी छीन लिया रे॥
वो की सासु सपोती रे, आधा-आधा वाट लिया रे॥

स्रोत-श्रीमती गंगाबाई तोमर-दवाना

भादव महीने में पानी बरसने से कीचड़ हो गया है। गोरी के आँगन में भी कीचड़ हो गया है। ऐसे में बलदेव भाई की पत्नी सज-सँवरकर निकली, आँगन में आते ही उनका पैर फिसल

गया। उनकी कमर में लटका हुआ बटुवा बिखर गया। देवर दौड़ पड़ा, उसने बिखरी हुई एक-एक इलायची को बीन लिया। उसकी जिद्दी ननद ने उससे सारी इलायची छीन ली। उसकी सास और अच्छी थी, उसने देवर और ननद के बीच आधे-आधे इलायची बाँट दिये। बहू ठगी सी देखती रह गई, बेचारी कर ही क्या सकती थी?

लेवो वसुदेव हाथ मऽ कूची, खोलो ते वजीर किवाड़॥
झुलऽ पालणों नन्दलाल॥
आधी रात आगऽ नऽ आधी रात पाछऽ, कृष्ण नऽ लिया अवतार।
झूलऽ पालणो नन्दलाल॥
न्हावड़्यो जो धोवाड़ियो, सुपड़ाऽ मऽ सोवड़ियो॥
साँवलो सो अंग देखाय।
झूलऽ पालणो नन्दलाल॥
मखमल का तो झगा नऽ टोपी, रेशम फुन्दा लगाव॥
झूलऽ पालणो नन्दलाल॥

हे वासुदेव जी! लीजिये इस कारावास की चाबी और निर्भय होकर मुझे गोकुल ले चलें। तब माता ने उन्हें स्नान करवाया। दूध पिलाया, मखमल के वस्त्र पहनाये और उन्हें सूपे में सुला दिया। अपने आप कारावास के दरवाजे खुल गये। वासुदेव सूप को सिर पर रखकर चले।

मैया मकऽ चन्द्र खिलौणो लाई दऽ।
नई तो मकऽ तारा दई नऽ समझाई दऽ॥
गव्वा भी लाई दऽ मकऽ बछवा भी लाई दऽ।
नई तो मकऽ बंसी दई नऽ समझाई दऽ॥
मैया मकऽ चन्द्र......... ।
चकरी भी लाई दऽ मकऽ भंवरी भी लाई दऽ॥
नई तो मकऽ पतंग दई नऽ समझाई दऽ।
मैया मकऽ चन्द्र......... ।
माखन नी लेऊँ मैया मिश्री नी लेऊँ।
तू तो मकऽ चन्द्र खिलौनो लाई दऽ॥
मैया मकऽ चन्द्र......... ।
कहाँ सी लाऊँ रे बेटा चांद नऽ तारा॥
तू तो राजा माखण मिश्री खाई लऽ॥

कृष्ण चन्द्रमा को खिलौने के रूप में पाने के लिये मचल उठते हैं। माँ उन्हें चकरी, भौरी, पतंग के प्रलोभन देती है। अन्त में माँ कहती है- मेरा राजा बेटा तो माखन मिश्री खायेगा, लेकिन कृष्ण नहीं मानते हैं। तब माता यशोदा बाल हठ के आगे हार जाती हैं और थाली में पानी भरकर

चन्द्रमा की परछाई कन्हैया को दिखाती हैं। कन्हैया उसे पकड़ने और खेलने में मस्त हो जाते हैं। माखन उनका प्रिय भोज्य रहा है। माखन चाहे घर का हो या गोपियों के घर का हो, वे माखन चुराकर खाने से भी नहीं चूकते, ऐसे ही जब गोपिकाएँ माता यशोदा से शिकायत करती हैं। माता अपने लाड़ले को समझाती है।

काई बधाई छे जी आज बाबा नंद घर।
काई आनंद भयो आज बाबा नंद घर॥
एक लक्ष गव्वा ब्राह्मण दिवी॥
माणी मणासो दिया दान, बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी आज.......
दधी जो लेकर ग्वालिन आई॥
दधी रो मची गयो कीच, बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी आज.......
फुलड़ा जो लेकर मालन आई॥
चम्पा-चमेली रो हार, बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी आज.......
चार सखी मिल कृष्ण निपजायो॥
कंस के करे निरवंस, बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी आज.......
चन्द्रसखी मिल मंगल गावे॥
घर-घर आनंद बधाई, बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी आज बाबा नंद घर॥

याचक ब्राह्मणों की द्वार पर भीड़ लग गई है। बाबा नंदजी ने एक लाख गायों का दान दिया। मनों सोना-चाँदी का दान दिया, ग्वालिने दूध-दही की मटकियाँ लेकर आई। इस खुशी के मौके पर सभी ने दूध-दही से होली खेली। इससे नंदजी के आँगन में कीचड़ मच गया है। मालन ने चम्पा, चमेली के फूलों के हार से घर को सजाया है।

बजाये बिन्द्राबन नंद किशोर मुरली मन मोहनी॥
सुन के नाचे मोर मुरली मन मोहनी॥
जल जमुना भरन को हिलमिल गुजरिया जाय॥
सुन के मुरली तान को, कुंभ गिरऽ जल माय॥
मारग भूल गई सुने नहीं ठोर...... ॥
दधि गोरस बेचने चली, गवालिया मथुरा हाट॥
सुन मुरली मारग भूली, सिर से गिर गई माट॥

देती कान्हा को गारी, बैठा है कठोर......
गई गूजरी नंदभवन को, सुनो जशोदा मात॥
छीन लो मुरली मोहन की, बजाता है वो दिन-रात॥

वृन्दावन के बीच जब कन्हैया बंसी बजाते तो मोर नाचने लगते थे। गोपिकाएँ जमुना जल भरने आती तो मुरली की तान सुनकर मुग्ध हो जाती, जिससे उनकी मटकियाँ पानी में डूब जाती। कोई गोपी दूध-दही बेचने जा रही हो तो उसे रास्ते में बंसी का स्वर सुनाई पड़ते ही वह रास्ता भूल जाती और उनके सिर से मटकियाँ तक गिर जाती थी। जब कृष्ण की मुरली की शिकायत करने गोपियाँ माता यशोदा के पास जाती तो वे माता से कहती हैं- हे माँ! मोहन की इस बंसी के कारण हम अपना सारा काम भूल जाते हैं। हम परेशान हैं, अपने लाड़ले कान्हा को क्या कहें?

दिजो नऽ हो ब्रजनार बंसी हमारी॥
कालिंदी के तीर बंसी बिसारी हो।
ले रे गई मुख ढाँक के हो घूँघट ओट छिपाय॥
ऐ जो छिपायो ना छिपे, हो असी नहीं वो नहीं कही जाय॥
लंगर कन्हैया की ढीठ, ढीठ को काई कहिये॥
भूल रहे कुछ ठौर न जाने कहाँ रख दीन्ही॥
इत-उत खेलनहार न जाने कहाँ रख दीन्ही॥
तू गूजरी जात गंवार काहे को रार बढ़ावे॥
सोच समझ मन माही काहे को लोग हँसावे॥
लोग हँसे चर्चा करे, गुण सुन्दर ब्रजनार॥
हमारी बंसी दे दीजो, मत कर मूरख गंवार॥
बंसी कसी होय कान्ह, हम नजर नी देखीं हो॥
पिता तुम्हारा बाबा नंद जी, तुम धमकी देत हो।
ले लकड़ी मुख में धरी बंसी वाको नाँव॥
तुम मोहन जशोदा के लाला, कसी पत बसऽ थारो गाँव॥
बसऽ की तो उजड़ऽ काई परवाह, तुम्हारी जी॥
तुमरा सरीखी लखनार नंद घर गोबर हेड़ऽ जी॥
हमखऽ कहतऽ मूरख गंवार, मोहन तू म्हारो मत लीजे नाँव॥
थारा सरीखा गवलई म्हारा यहाँ, घर-घर दूवऽ गाय॥
ई बंसी की साख ग्वलन तू काई जाणऽ री॥
तीन लोक कऽ मोहऽ मतऽ मारऽ री॥
बंसी ढूँढत मऽ हार्‌या हमऽ नऽ मानी हार॥
हमतो आधिन हुई माँगता तुम देवो नऽ ब्रजनार॥

श्याम सुन्दर ब्रजनाथ, आपकी बंसी लीजो हो॥
लेवो न कुंवर पहिचाण, हँसतऽ मुख बंसी बाजे हो॥
वृन्दावन की कुंज गलिन मऽ रचियो रास विलास॥
ब्रज नारिन के संग मऽ नित होय हास-उल्हास॥

हे ब्रज की बालाओं! हमारी बंसी दे दो। कालिन्दी के तीर पर हम अपनी बंसी भूल आए थे। कोई गोपी अपना मुख ढाँक के घूँघट की ओट में बंसी छिपाकर उसे ले गई है, लेकिन वह छिपाये नहीं छिपेगी। वह ऐसी भी नहीं है कि कोई उसे लेकर मुकर जाये। इस पर गोपियाँ कहती हैं- झूठे कन्हैया की ढिठाई को क्या कहें? तुम कहीं और अपनी बंसी भूल आये हो और दोष हमारे सिर लगाते हो। तुम तो इधर-उधर मटरगस्ती करने वाले हो, उसे न जाने कहाँ रख आए हो। बाबा नंद के लाल बंसी हमने नहीं ली है।

इस पर कृष्ण कहते हैं- हे ग्वालिन गूजरी! तू व्यर्थ ही झगड़ा क्यों बढ़ाती है, अपने मन में सोच-समझकर देख ले, लोगों को क्यों हँसाती है? हे ब्रजसुन्दरी! जब लोग इस बात को सुनेंगे तो हँसेंगे, यहाँ-वहाँ चर्चा करेंगे। अब भी हमारी बाँसुरी दे दो, मूर्खता और गँवारपन मत करो। इस पर गोपियाँ कहती हैं- बंसी कैसी होती है। कान्हा! हमने तो उसे अपनी नजर से देखा भी नहीं है। तुम्हारे पिता नंदबाबा हैं, इसलिए व्यर्थ की धमकी देते हो, एक लकड़ी के टुकड़े को मुख में रख लिया और उसे बंसी कहते फिरते हो। हे यशोदानन्दन! इस तरह झूठ बोलने से गाँव नहीं बसता। इस प्रर क्रोध में आकर कृष्ण कहते हैं- गाँव उजड़े या बसे, तुम्हें इसकी क्या परवाह, तुम्हारे जैसी तो लाखों स्त्रियाँ नंदबाबा के घर गोबर निकालती हैं। सुनकर गोपियों को भी क्रोध आ गया। वे कहती हैं- हमको गँवार कहते हो। हे मोहन! तुम हमारा नाम मत लो। ग्वाले हमारे यहाँ गायें दुहते हैं। विनम्र होकर कृष्ण कहते हैं- बंसी के महत्त्व को। हे ग्वालिनों! तुम नहीं समझ सकती हो? इसने तीनों लोकों को अपने बस में कर लिया है। तू मुझे शब्द के मार मत मार, बंसी को ढूँढते-ढूँढते मैं हार गया हूँ।

हे ब्रजनार! तुम हमारी बंसी लौटा दो। इतना सुनते ही हँसते हुए ब्रजबाला ने बंसी लौटा दी और बोली- हे कान्हा! अपनी बंसी को पहचान लो। तुम्हारे हँसने से ही बंसी बजने लगी है। इस तरह ब्रज की गोपियों के साथ श्रीकृष्ण का वृन्दावन की गलियों में हास-उल्हास चलता रहता है। दुनिया के लिए वे देवता स्वरूप रहे हों, लेकिन ब्रज के लोगों के लिए वे सखा-इष्ट-मित्र ही रहे हैं।

कसी ब्याहू राधे कन्हैयो थारो कालो री॥
कसी ब्याहू राधे........... ॥
वृन्दावन की कुंज गली मऽ लूट-लूट दही खायो॥
कसी तो करोगी म्हारी राधा को गुजारो री॥
कसी ब्याहू राधे कन्हैयो थारो कालो री॥

म्हारी राधिका आसी गोरी जसो चन्द्र उजालो॥
थारो कन्हैयो आसो कालो, बरस भादव की रैना तो अंधारी रे॥
कसी ब्याहू राधे......... ॥
कालो–कालो मत कर समधन, कालो जगत उजालो।
नाग नाथी रेत पर नाख्यो, वोकी फुसकार सी श्याम
भयो कालो री........... ।
कसी ब्याहू राधे.......... ॥
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरण नऽ बलिहारी॥
थारी राधिका तूज रखी लऽ॥
जुग–जुग जिवऽ म्हारो नंद को दुलारो री॥
कसी ब्याहू राधे कन्हैया थारो कालो री॥

हे यशोदा! मैं तेरे काले कन्हैया से अपनी बेटी का विवाह कैसे कर दूँ? मेरी राधिका चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है और तेरा कन्हैया भादव मास की काली–काली अंधियारी रात्रि की तरह काला है। तेरा कन्हैया है भी तो माखन चोर। कोई गुण ढंग भी तो नहीं है, जिससे मैं रीझकर अपनी बेटी पर विवाह कर दूँ। वह खुद तो चोरी करके खाता है, मेरी बेटी का गुजर कैसे करेगा? मैं नहीं देती अपनी बेटी, इस काले घनश्याम को। तब माता यशोदा ने कहा– मेरा कन्हैया भी गोरा ही था, लेकिन जब वह कालियादह में कूदा, तब कालिया नाग की फुसकार से मेरे कान्हा का रंग काला हो गया है। देना हो तो अपनी बेटी दे दो, वरना अपने ही पास रख लो, मुझे नहीं करना कन्हैया का विवाह। जुग–जुग जिये मेरा नंदकिशोर। मैं अपने कान्हा की शादी कहीं और कर लूँगी, रख लो अपनी बेटी अपने ही पास।

जल जमना की पाल खालऽ नंदजी को बाल।
नंद जी को बाल कुंवर कंस को काल......... ।
जल जमना की पाल खेलऽ, नंदजी को बाल॥
नाना भाई नऽ मांड्यो छे ख्याल, चेंडु, पाटली को दान॥
संग गुंवाल रे बाल, कान्हो खेली रह्यो ख्याल॥
कान्हा को ख्याल गवालन नऽ देख्या कर॥
लगी गैंदनऽ पर चोट, लगी वासुक पर ढोट॥
गेंद गिरी रे पयाल, जल जमना की पाल....... ।
गेंद की सुद पर चल्या कृष्ण मुरार॥
जमना मऽ कुदियो कान्हो देती ललकार॥
खबर सुणी नऽ माता यशोदा भी आई॥
देती लड़कन को गाल, देती लड़कन को गाल॥
म्हारो नानो सो बाल, डुबियो सरवर की पाल॥

जल जमना की पाल.......... ॥
नागेण कहती रे नाना भाई, तू किनको छै बाल॥
किन्हीं छे बाल, थारो रूप छे अपार॥
कंत भूली नऽ वैरी नऽ बहकायो रे॥
तू किन्हीं छे रे बाल थारो रूप छे अपार॥
केवा छोड़्या घर बार मकऽ आव अवाल॥
जल जमना की पाल............ ॥
खड़ी रहो नागेण नार, चूड़ी लेऊंगा उतार॥
जगा थारा नाग कऽ देखूँ कितरो बलवान॥
अँगूठो मोड़ी नागेण नाग जगाव रे॥
उठाया अग्नि का लोल, मची रहई रे घमाछोल॥
वहाँ हुई रे किलोल, जल जमना की पाल......... ॥
नाग लपट्यो बदन सी चल्यो अपणों द्वार॥
चल्यो अपणो द्वार लग्या घर की वाट॥
नाग नाथी नऽ प्रभु हुया असवार रे॥
नागेण जोड़ऽ हाथ, हाँऊ तो भूली दीना नाथ॥
मकऽ माँग्यो दीजे रे, अवात॥
जल जमना की पाल, खेलऽ नंदजी को बाल॥
नई आई भरपूर, कान्हो जाज कूद॥
कान्हा है रे मजबूत॥
गोकुल का लोग सब देख नर नारी॥
यशोदा थारा कान्हा कऽ बधाव॥
थारा मुख मऽ तीन ताल, गरबी गावऽ खुशीयाल॥
जल जमना की पाल खेल नंद जी को बाल॥

जमुना के कालियादह में कूदने के बाद ग्वालबाल माता यशोदा को खबर देने पहुँच जाते हैं। माता यशोदा ने लड़कों को गालियाँ दीं, मेरे छोटे से बच्चे को कालियादह में कूदने से रोका क्यों नहीं? वह कहीं डूब गया तो क्या होगा?

कालियादह में कूदने के बाद कृष्ण सीधे कालिया नाग के पास पहुँच जाते हैं। नागिनें उन्हें देखकर मंत्र-मुग्ध रह जाती हैं और कान्हा से पूछती हैं- हे बालक! भूल से तो तू यहाँ नहीं आ गया। तुझे किसी बैरी ने बैर निकालने के लिए यहाँ भेज दिया? तब कृष्ण ने कहा- मुझे किसी ने बहकाया नहीं है और न ही मैं रास्ता भूला हूँ। मेरी बात सुनो, सब अपना सौभाग्य सूचक चूड़ा उतार दो। आज मैं तुम्हारे नाग को मारकर ही जाऊँगा। देखूँ, उसमें कितना बल है। तब नागिनों ने नाग को जगाया और नाग के जागते ही अग्नि की ज्वालाएँ उठने लगीं और घमासान

युद्ध हुआ। युद्ध में नाग को परास्त करके नाग को नाथ कर वे पानी से बाहर आये। तब नागिनों ने प्रार्थना की- हे नटवर नागर! हमें हमारा सुहाग वापस कर दो। हमें सुहाग दान दो। तब उनकी प्रार्थना स्वीकार कर उन्होंने कालिया नाग से कहा- जा, मैं तुझे जीवनदान देता हूँ। इस कालियादह को छोड़कर वह कहीं और चला गया और इस प्रकार जमुना का जल शुद्ध और पीने लायक हो गया।

माथऽ धरी गागर गोरी पाणी जाय॥
कान्हा नऽ तो कंकरी मारी गागर फूटी जाय॥
गुवालन घुमटा वालई हो, मेरी असलम की चोलई हो॥
पेरी बसंती साड़ी हो, तू केका घर की नार॥
पेरी ओड़ी नऽ निसरी गोपी, दही बेचन को जाय॥
दूर खड़ो यूँ कृष्ण कय, तू केका घर की नार॥
पेरी असलम की चोलई हो, पेरी बसन्ती साड़ी हो॥
तू के का घर की नार माथऽ धरी गागर गोरी......... ।
हाँऊ तो जाऊँ रे कान्हा दही बेचन कऽ तू क्यों पूछऽ वात॥
क्यों कहे रे हिवड़ा, थारा मुख मऽ केतरा दाँत॥
गुवालन घुमटा वालई हो पेरी असलम की चोलई हो॥
पेरी बसन्ती साड़ी हो, तू केका घर की नार॥
माथऽ धरी गागर गोरी जमना पाणी जाय....... ।
ऊँची गुवालन मतवालई हो, मत कर गुमान॥
हाथ को झालो देवुँगा, थारी मटकी देवुँ ढुलाय॥
गुवालन घुमटा वालई हो, पेरी असलम की चोलई हो॥
पेरी बसन्ती साड़ी हो, तू केका घर की नार॥
माथऽ धरी गागर गोरी........ ॥
जाणी नी देवुँगा तूकऽ गुवालन, बाबा नंद की आण॥
बाजूबंद पेरणऽ वालई, तू छे नार नखरा दार॥
माथऽ धरी गागर गोरी जमना पाणी जाय॥

गोपियों ने सोलह शृँगार किये- मखमल की अंगिया पहनी, बूटीदार लहँगा पहना, बसन्ती रंग की साड़ी पहनी, आँखों में काजल लगाया और सज-धजकर सिर पर दूध-दही-माखन की मटकियाँ रखकर मथुरा बेचने के लिए चली हैं। मधुबन के रास्ते में उन्हें कन्हैया ने रोका और कहा कि 'कर' के रूप में तुम मुझे माखन दो, तब मैं तुम्हें इस रास्ते से जाने दूँगा। इनमें से एक गोपी ने घूँघट की ओट से कहा- कैसा 'कर'? हमें नहीं देना माखन का 'कर'। हे कान्हा! माखन खाने के लिए आपके मुख में दाँत हैं भी या नहीं? तब कन्हैया ने कहा- ए ग्वालन! सीधे से माखन दे दो, वरना मैं तेरी मटकी फोड़ दूँगा। मैं भी बाबा नंद का लड़का हूँ और बिना कर लिये

तुम्हें जाने नहीं दूँगा। आखिर थककर ग्वालन को माखन देना ही पड़ा और श्याम ने माखन खाया।

अरे माखन की चोरी छोड़ कन्हैया मैं समझाऊँ तोय॥
अरे गोरस की चोरी छोड़ कन्हैया मैं समझाऊँ तोय॥
बाबा नंद घर नव लख धेनू, नित को माखन होय॥
अड़ोसेण-पड़ोसेण केवा लागी, थारो कन्हैया चोर॥
अरे माखन की चोरी........... ॥
मैं जाणूं कन्हैया गयो गायन में, रह्यो सड़क पर सोय॥
काँ की सखी नऽ बिलमायो रे कानुड़ा,
कमली दिनी रे गँवाय॥
अरे माखन की चोरी.......... ॥
गाँव-परगाँव की आवे सगायो, नित की चरचा होय॥
बड़ा घराना को कुंवर लाड़ियों, कैसे सगाई नहीं होय॥
अरे माखन की चोरी........... ॥
ले लाठी बाबा नंदजी आया, अब पकड़यो छे चोर॥
अन्दर से यशोदा बोली, अब मारेंगे तोय॥
अरे माखन की चोरी............ ॥
बार-बार समझाऊँ रे कन्हैया, दिन-दिन दूणों होय॥
थारो कयो माता एक नी मानू, भले सगई नी होय॥
अरे माखन की चोरी छोड़ कन्हैया मैं समझाऊँ तोय॥

हे कन्हैया! माखन की चोरी छोड़ दे, मैं बार-बार तुझे कहती हूँ। अरे! अपने घर में नौ लाख गायें और भैंसें हैं और घर में नित्य-प्रतिदिन नया माखन होता है। फिर भी तू माखन की चोरी करता है। चोरी करना कोई अच्छी बात नहीं है। पड़ोस की ग्वालनें मुझे तेरी शिकायत करती हैं। ताने देती हैं, तेरा कान्हा चोर है। अरे! अपने घर क्या कमी है, जो तू माखन चुराकर खाता है? मैं समझती थी कि तू गैया चराने वन में गया होगा। बता, तू कौन से स्थान पर छुपा बैठा था। किस ब्रजबाला से आँख मटक्का कर रहा था? बता, तेरी कम्बली कहाँ है? कृष्ण चुपचाप खड़े हैं। गाँव-गाँव से तेरी सगाई की बातें आ रही हैं, पर तेरी चोरी वाली बात सुनकर सभी वापस लौट जाते हैं। आश्चर्य है कि तू इतने बड़े घराने का लाड़ला कुँवर है, फिर भी सगाई नहीं हो रही है। चोरी करना कोई अच्छी बात नहीं है।

इतना सुनते ही नंदबाबा आ जाते हैं और कहते हैं- हमारा मोहन माखन का चोर है। यह सुनकर माता कृष्ण से कहती है- अब तुझे नंदबाबा लाठी से पीटेंगे। नंदबाबा लाठी उठाते हैं। आखिर माता ही बीच-बचाव करती है। पुनः कृष्ण को समझाती है- अब तो माखन चोरी छोड़

दे। फिर भी कृष्ण माता से कहते हैं– माँ! मैं तुम्हारी आज्ञा पालन नहीं करूँगा। चाहे मेरी शादी हो या न हो, मैं माखन चोरी नहीं छोड़ूँगा।

जलम्या कृष्ण मुरार भक्त हित कारण।
मथुरा मऽ लियो अवतार, गोकुल झूले पालणा॥
लाग्यो पोष मयनु महाराज, देवकी मैया सोस करऽ।
जड़ी दिया वजीर किंवाड़, कंस का जेल पड़्या।
लाग्यो माघ मयनु महाराज, सुमरऽ देवी सारजा।
म्हारी लाज राखो सारजा माय, सारो म्हारो कारजा।
लाग्यो फागुण मयनु महाराज, केशव बन फूल रह्या।
उड़ी रयो अबीर गुलाल, राखी नऽ सब होरी खेलऽ।
लग्यो चैत्र मयनु महाराज, चौकी बठाड़ी दाणव की।
जड़ी दिया वजीर किवाड़, आगल जड़ी लोहा की।
लग्यो वैशाक मयनु महाराज, आगिन का रोळ चलऽ।
जसो जलऽ अलाब, तपन या कसी बुझऽ।
लग्यो जेष्ट मयनु महाराज, गगन मऽ धूल उड़ऽ।
तपी रयो रोगण घाम, बदन कोमलाय रयो।
लग्यो आषाढ़ मयनु महाराज, ध्रुव दिशा गाज रई।
बन मऽ बोलऽ मोर, पपैयो शोर करऽ।
लग्यो सरावण मयनु महाराज, सखी नऽ सरवर न्हावऽ।
झूली रह्या झुला डार सखी, नऽ सब झूल रई।
लग्यो भादव मयनु महाराज, बाला नऽ जलम लियो।
तिथि आठव बुधवार, चरण मऽ शीश धर्‌यो।

स्रोत– श्री रामलाल साद–डैवर

भगवान श्रीकृष्ण ने भक्तों के हित करने की खातिर जन्म लिया है। उन्होंने मथुरा की जेल में अवतार लिया और गोकुल में जाकर झूला झूले हैं। पौष महीने में माता देवकी ने गर्भ धारण किया। माता मन में अफसोस कर रही है– मेरे सात पुत्रों को तो कंस ने मार दिया, अब आठवें पुत्र का क्या होगा? बंदीगृह में बंद करके वासुदेव–देवकी को लोहे के किवाड़ बन्द कर दिये। दोनों जेल में पड़े हैं। माघ महीना लग गया। माता देवकी सरस्वती से प्रार्थना कर रही है– हे माँ सरस्वती! मुझे गुणवान पुत्र प्रदान करना। मेरी लज्जा रखना। मेरा सारा कार्य आपके सुपुर्द है।

फागुन महीना लग गया है। वन में टेसू के फूल खिल गये हैं। चारों ओर अबीर–गुलाल उड़ रहा है। सभी सखियाँ होली खेल रही हैं। चैत्र महीना लग गया। कंस ने वासुदेव–देवकी पर और कड़ा पहरा बिठा दिया है। जेल के किवाड़ों को और मजबूती से बंद करके लोहे की कड़ी

अर्गलाएँ लगा दी हैं। वैसाख माह लग गया है। अग्नि के समान लू-लपट चलने लगी है। दिन जैसे जलता हुआ अलाव हो। तपन ऐसी है कि कितना भी पानी पियो, प्यास बुझती नहीं है। तपन ऐसी कि कहीं भी मन को आराम नहीं है, शान्ति नहीं है।

आषाढ़ महीना लग गया है। ध्रुव दिशा यानी उत्तर दिशा से बादल गरजने लगे हैं और बादलों की गड़गड़ाहट से पानी की अगवानी में मोर बोलने और नाचने लगे हैं। श्रावण महीना लग गया है। सभी सखियाँ सरोवर में स्नान करने जा रही हैं। कहीं पर झूले बाँधे गये हैं और सखियाँ सब मिल-जुलकर झूला झूल रही हैं। भादव महीना लग गया। तब जाकर भगवान श्रीकृष्ण ने बालक रूप में जन्म लिया है। उस दिन की तिथि अष्टमी थी, रोहिणी नक्षत्र था तथा बुधवार के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया है।

चलो न उधवजी माधो बन चालां,
हरि नऽ मनई घर लावां।
चोवा चंदन अंग उधव जी, गोपियन करऽ सिनगार रे।
प्रीत करन घर आई राधिका, प्रथम महीनो अषाढ़ रे।
ये कहो उधव हऊं बारा बरस की, तेरा बसर को कंवर कन्हैया रे।
रिमझिम-रिमझिम मेऊलो बरसऽ, श्रावण मऽ उठऽ हिल्लोर रे।
भादौ मऽ रैत इन्धारी उधव जी, अकेली सोऊं डर लागऽ।
वाहुर चमकऽ नऽ मेऊओ बरसऽ, काँपी उठऽ तन म्हारो रे।
कुंवार मऽ आस निरास उधव जी, नहीं पिया घर म्हारो रे।
म्हारा पिया परदेश मऽ छाये, वो बिन्द्राबन माही रे।

स्रोत- श्री रामलाल धनगर-कुकडोल

हे उद्धवजी! चलो, मधुवन में चलकर श्रीकृष्ण की मनुहार करके ले आयें। चन्दन को घिसकर गोपियों ने शीतल श्रृँगार किया। राधिका का प्रेम श्रीकृष्ण से अधिक है। मधुर मिलन का प्रथम महीना आषाढ़ मास है।

हे उद्धवजी! मैं तो बारह बरस की हूँ और कान्हा की उम्र तेरह वर्ष की है। श्रावण महीने में रिमझिम-रिमझिम पानी बरस रहा है। मन में आनन्द की हिलोरें उठ रही हैं। हे उद्धव! भादव मास की अँधेरी रात्रि में डर लगता है। मैं अकेली कैसे सोऊँ? प्रियतम के बिना सेज सूनी है। बिजली चमक रही है और उसके साथ पानी भी बरस रहा है। ऐसी गर्जना होती है कि मैं काँप उठती हूँ। कुँवार मास में आशा निराशा में बदल गई है। श्याम नहीं आए। मेरे प्रियतम परदेश में हैं और मैं वृन्दावन में अकेली उनके विरह में तड़फ रही हूँ।

म्हारो गयो रे जोबन वली आवऽ,
सांवलिया से जाई कयजो समझाय॥
आषाढ़ जो मयनो लगियो वाला, बन मऽ बोलऽ मोर।

रिमझिम-रिमझिम मेवलो बरसऽ, धरणी नऽ कर्‌यो सिंणगार।
सांवलिया से जाई कयजो समझाय॥
सरावण मयनो लगियो वाला, सखी नऽ सरवर न्हाय।
लई नऽ चीर वालो, कदम पर चढ़ियो, सखी नऽ करऽ अरदास।
सांवलिया से जाई कयजो समझाय॥
भादव मयनो लगियो वाला, धमकी नऽ बरसऽ मेव।
सरवर नद्दी नऽ भरपूर चढ़ी नऽ, नीर झकोला खाय।
सांवलिया से जाई कयजो समझाय॥
कुंवार मयनो लगियो वाला, कलि नऽ फूली बनमाय।
नरसिंहया स्वामी साँवरो हो, रंग भरी रास रमाय।
सांवलिया से जाई कयजो समझाय॥

स्रोत- श्री रामलाल साद-डैवर

मेरा मदमस्त यौवन कृष्ण के विरह में व्यर्थ जला जा रहा है। यह बात कोई मेरे परदेश बसे प्रियतम (साँवलिया) को जाकर बता दे। प्रतीक्षा करते-करते इधर आषाढ़ का महीना आ गया है। मोर बोलने लगे हैं। रिमझिम पानी बरस रहा है। धरती ने हरियाली का नया शृँगार कर लिया है। फिर सावन का महीना आ गया है। सहेलियाँ सरोवरों में स्नान करने जा रही हैं। उस समय नटखट कृष्ण उनके वस्त्र चुराकर कदम की डाल पर चढ़ बैठे थे, तब बिचारी सभी सखियाँ अनुनय-विनय करके उनसे अपने वस्त्र माँग रही थीं। वह दृश्य मेरी आँखों के सामने घूम रहा है। भादव का मदमस्त महीना लग गया है। बादल जोर-जोर से घुमड़-घुमड़ कर जोरदार बारिश कर रहे हैं। सभी नदी-नालों में पानी चढ़ गया है। उनमें पानी पर्याप्त होकर बह रहा है। लहरों के उफान से पानी हिलोरें ले रहा है। उसी प्रकार मेरा मदमस्त यौवन उफान पर है। कोई यह बात मथुरावासी श्याम से कहे। कुँवार महीना लग गया है। सभी प्रकार के फूल बाग-बगीचों में खिल गये हैं। नरसिंह स्वामी श्याम से अरज कर रहे हैं- कुँवार मास में रास रचाकर सभी की मनोकामना पूर्ण कर दीजिये।

सुन्दर सहेली ब्रजरास मऽ आई, पियु परदेश मऽछाय रया।
जेठ मास अनाधुन गाजे, आषाढ़ मऽ बादल होय रया।
सावन मेऊलो बरस रयो हो, भादव झड़ियां लाग रही।
सुन्दर सहेली ब्रजरास मऽ आई॥
कुंवार मास स्वाति बूंद तो बरसऽ, कार्तिक मोतिड़ा निपज रया।
मागशिर मास दिवाली तो आई, पोष हिमालो होय रयो।
सुन्दर सहेली ब्रजरास मऽ आई॥
महा मास बसंत रुत आई, फागुन होली होय रई।
चैत्र मास दसेरा हो आयो, वैशाक आखातीज होय रई।

सुन्दर सहेली ब्रजरास मऽ आई॥
जलम-जलम को दास तुम्हारो, नरसी ध्यान लगाय रया।
बाई मीरा थारी विनती हो, बारा मासी गाय रयो।
सुन्दर सहेली ब्रजरास मऽ आई॥

स्रोत-श्री रामलाल यादव-कुकडोल

सुन्दर गोपियाँ सोलह शृँगार करके प्रतीक्षा कर रही हैं कि कब श्याम आये और रास रचाये। पर श्याम तो मथुरा में जाकर मथुरा के ही हो गये। परदेशी प्रियतम बन गये हैं। प्रतीक्षा करते-करते ज्येष्ठ महीना लग गया है। बादल गरजने लगे हैं और इसी प्रतीक्षा में आषाढ़ महीना आ गया। पूरे नभमण्डल पर बादल छा गये हैं। प्रतीक्षा करते-करते श्रावण महीना आ गया, पानी बरसने लगा है। भादव का महीना आ गया और भादव महीने में तो घनघोर बरसा हो रही है।

पानी बरसते-बरसते कुँवार (अश्विन) महीना आ गया। स्वाति नक्षत्र में जल बरसने से जो पानी की बूँद सीप में बंद हो गई, वह कार्तिक महीने में मोती का रूप धारण करने लगी है। कार्तिक मास के अन्तिम चरण यानी मागशिर महीने के शुरू में दीपावली का पर्व आ गया है। पौष महीने से ठण्ड की शुरुआत हो चुकी है। माघ महीने में बसन्तपंचमी आ गई। फागुन महीने में होली का त्योहार आ गया है। चैत्र महीने में दशहरे का त्योहार आ गया है। वैशाख महीने में आखातीज (अक्षय तृतीया) का पर्व आ गया है। अब तक श्याम नहीं आये हैं। जन्म-जन्म का दास तुम्हारा नरसिंहजी है और मीराबाई आपको इस बारहमासी में गुणगान करके याद कर रही है।

म्हारो पूरो रे सन्देश, ऊधो माधो जाई कहो रे।
मागशिर मास मेली गया, छोड़ी गया म्हारा नाथ।
नगर द्वारिका मऽ छाई रया, कमला नो भरतार।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
पोष मास पोसया नहीं, मुख तजियो रे अन्न।
सपना मऽ जोऊ म्हारी सेजलड़ी, हरि प्रभु से ध्यान।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
महा मास म्हारो महिरो, चिन्ता व्याकुल थाय।
पान फूल सेज पर मव्ळ्या, जीवा नी आदव राय।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
फागुण मास मऽ आविया उड़ऽ अबीर गुलाल।
सोलह सौ गोपी फाग रमऽ, रमऽ प्रभुजी सात।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
चैत्र चिन्ता चोरी गया, चोरी गया म्हारा नाथ।

बणिया हो द्वारिका ना बसिया, छोड़ी गया मझधार।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
वैशाक बनपति मोठिया, मोही अम्मर छाय।
बाग लगाई अम्बा आमली, बोया दाड़िम डाल।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
जेठ मास वाला आविया, तपऽ रोहिणी घाम।
बाहर जावां तो धूप लगऽ, उमर बालई वेष।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
आषाढ़ मास वाला आविया, कोमल पंथ सिधार।
काग कोयल बन बोलिया, बन बोल्या रे मोर।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
श्रावण मास वाला आविया, एक आवे नी जाय।
पनघट भींजे म्हारी चून्दड़ी, भींजऽ हिवड़ा नो हार।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
भादौ मास वाला आविया, गरजऽ गगन अकास।
गाजी गरजी नऽ मेऊ बरसअ, नदी नऽ जाय भरपूर।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
कुंवार मास नी कामनी, गरबो रमावा
नौ दुरगा नी रातरी, रमा प्रभुजी ना साथ।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥
कार्तिक मास दिवालड़ी, उग्यो पुन्योव को चाँद।
पहलो बधावो म्हारा हरिजी, नऽ नरसी मैवा छे दास।
ऊधो माधो जाई कहो रे॥

स्रोत– श्री रामलाल यादव–कुकडोल

उद्धव को कृष्ण ने गोपियों की खबर लेने के लिए गोकुल भेजा। जब उद्धव जी ने गोकुल जाकर गोपियों को विरह व्याकुल देखा तो दंग रह गये। गोपियाँ उद्धवजी से कह रही हैं– हे उद्धवजी! हमारा पूरा संदेश श्याम से जाकर कहना। जो बातें हम आपके सामने कह रही हैं, वही बातें श्याम को विस्तार से बताना। मागशिर महीने में श्याम हमें छोड़कर चले गये। द्वारिका नगरी में बस गये हैं लक्ष्मीपति भगवान। हम प्रतीक्षा ही करती रहीं। फिर पौष मास लग गया। हमने एक माह से अन्न ग्रहण नहीं किया। सूनी सेज को हम स्वप्न में देखते बार–बार ध्यान कर रहे हैं। कब श्याम इस शैय्या पर आयेंगे। प्रतीक्षा करते–करते पौष माह भी बीत गया। माघ माह में मेरे घर मंगल कार्य आया। मुझे चिन्ता हो रही है। बिना श्याम के यह मंगल कार्य कौन और कैसे पूर्ण करायेगा। यहाँ फूल–पत्तों से सजी सेज सूनी पड़ी है। श्याम के बिना किस प्रकार जीवनयापन

करें? देखते-देखते माघ मास भी बीत गया और फागुन मास आ गया। इस महीने में श्याम के साथ गोपियाँ होली खेलती थीं। उसी उड़ते अबीर-रंग-गुलाल की याद अभी तक गोपियों के मानस पटल पर है। वही याद करके वे सब गोपियाँ उद्धव को बताती हैं। श्याम की प्रतीक्षा करते-करते चैत्र मास आ गया। श्याम चोरी से चुपके-चुपके चले गये। अब वे द्वारिका नगरी में जाकर बस गये हैं और मुझे यहाँ मझधार में अकेली छोड़ गये। वैशाख मास लग गया है। श्याम की प्रतीक्षा करते-करते हमने उन्हें प्रसन्न करने के लिए छायादार वृक्ष लगाये। आम, इमली और अनार के वृक्ष अब बड़े हो गये हैं। उनकी छाँव में आकर श्याम बैठेंगे। इसी छाया में बैठकर फलों का रसास्वाद करेंगे, लेकिन श्याम नहीं आये। जेठ मास लग गया। रोहिणी नक्षत्र लग गया। रोहिणी नक्षत्र की तेज धूप लग रही है। बाहर जाने की इच्छा नहीं होती है। बाहर निकलना दूभर हो रहा है और उस पर मेरी उम्र बालिग है। मैं इस धूप को कैसे सहन करूँ।

आषाढ़ मास आ गया। कोयल ने अपने स्वर में यह शुभ संदेश सभी को दे दिया है। कौवे और कोयल बोलने लगे हैं। साथ ही वन में मोर भी बोलने लगे हैं। श्रावण मास आ गया है। बादलों की आवाजाही शुरू हो गई है। एक बादल आ रहा है, दूसरा बादल जा रहा है। मैं पनघट पर खड़ी थी, इतने में बदली बरसी और उसके बरसने से मेरी चूनरी और हार दोनों भींग गये हैं। भादव मास आ गया है। घुमड़-घुमड़ कर बादल आकाश में गर्जना कर रहे हैं। गरज-तरज कर बादल बरस रहे हैं। भरपूर पानी गिरने से नदियों में पर्याप्त पानी बढ़ने लगा है। कुँवार मास में सभी स्त्रियाँ गरबा खेलने जा रही हैं। माता दुर्गा की आराधना में मंगलगीत नौ दिन गा रही हैं। यदि कृष्णजी यहाँ होते, तो हम भी उनके साथ रास रचाते। कार्तिक मास लग गया है। कार्तिक मास में दीपावली का त्योहार आ गया। शरद पूर्णिमा की चाँदनी छिटकी हुई है और शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान श्याम भी आ गये। पहले श्याम को बधाइये, जिनके नरसिंह मेहता दास हैं।

आलत्या काटूं कुलत्या काटूं काटूं मूगड़ी
म्हारा सी नी होय रे बालम दूयरी दाड़की॥
म्हारा पिता की बेटी हँऊ लाड़की
पछी चली जाऊँगी हऊँ वतरा मान की।
आलत्या काटूं कुलत्या काटूं .... ॥
म्हारा भाई नऽ भेजी सजई नऽ पालकी।
म्हारी माय नऽ नाँव धर्‌यो म्हारो जानकी।
भोलई घणी छे बालम मन की।
म्हारा सी नी होय रे बालम दूयरी दाड़की।

स्रोत- श्री राजेन्द्र सिंह चौहान-घेघावां

पत्नी अपने पति से कहती है- हे बालम! मैं कुलथी भी काटती हूँ, मूंग भी काटती हूँ। मुझसे यह दोहरा काम नहीं होता। मैं अपने पिता की लाड़ली पुत्री हूँ। मैं बड़ी जिद्दी हूँ। अपने पिता के घर वापस चली जाऊँगी। मेरे भाई ने बड़े अरमानों से मुझे डोली में बिठाकर विदा किया

है। मेरी माँ ने बड़े प्यार से मेरा नाम जानकी रखा है। हे प्रियतम! मैं बड़े भोले मन की हूँ। हे बालम! मुझसे दोहरी मजदूरी नहीं होती है।

दो-दो पत्ती चुनती जाय, गाय को खिलाती जाय।
गाय ने दिया दूध, दूध।
दूध की बणई खीरऽ।
खीर चटाई मामा को मामा को, मामा ने दिये दो पैसे।
वो पैसा की नाड़ा नऽ टीकी।
नाड़ा टीकी सास को सास को।
सास नऽ मार्‌या घुम्मा घुम्मा।
आँसू पड़ऽ सोला, आँसू पोछऽ मखमल सी।
मखमल दियो धोबी कऽ, धोबी नऽ तो फाड़ी डाल्यो।
दरजी नऽ टाकां लगाया, फूल वाली नऽ फूल दिया।
फूल चढ़ाया संजा कऽ, संजा नऽ दिया भाई, भाई।
भाई की सगाई, सगाई, घर मऽ आई भौजाई।

स्रोत- सुश्री कामिनी तोमर-दवाना

दो-दो पत्तियाँ चुनकर गाय को खिलाई। गाय ने दूध दिया, उसकी खीर बनाई। खीर बनाकर मामा को खिलाई। मामाजी ने खर्च करने के दो पैसे दिये। दो पैसे के नाड़ा-टीकी खरीदकर सास को दिये। सासुजी ने क्रोधित होकर पीटा। सासुजी के मारने से आँसू गिरे। उन आँसुओं को मखमल से पोंछा। मखमल को धोबी घर धुलने के लिए दिया। धोबी ने मखमल को धोने में फाड़ डाल। दरजी ने उसे ठीक करके दो टाँके लगाये। फूलवाली मालन ने फूल दिये। वही फूल संजा माता को चढ़ाये। संजा माता ने आशीष स्वरूप भाई प्रदान किया। भाई प्राप्त होने के बाद उसकी सगाई हुई। सगाई के बाद भाई की शादी हुई, घर में भाभी आई। घर में सब आनन्द ही आनन्द हुआ।

छोटी सी गाड़ी रूलकती जाय, रूलकती जाय।
ओका मऽ बठी संजा बइण।
घाघरो घमकावती जाये, चूड़िलो चमकावती जाय।
बिछिया बाजावती जाय।
छोटी सी गाड़ी रुलकती जाय॥
ओका मऽ बठी कामिनी बईण,
घाघरो घमकावती जाय।
चूड़िलो चमकावणी जाय।
बिछिया बजावतो जाय।
छोटी सी गाड़ी रुलकती जाय।

ओका मऽ बठी जानू बईण।
घाघरो घमकावती जाय।
चूड़िला चमकावती जाय।
बिछिया बजावती जाय।
छोटी सी गाड़ी रुलकती जाय।

स्रोत– सुश्री कामिनी तोमर, दवाना

छोटी–सी गाड़ी चलती जा रही है। चलती जा रही है। उसमें संजाबाई बैठी हैं। संजाबाई ने खूब श्रृँगार किये हैं। उनका लहंगा खूब घेरदार है। हाथ में पहिना चूड़ा खूब चमकदार है। पाँव में जो बिछिये पहनी हैं, वे गाड़ी के चलने से खूब बज रहे हैं। संजाबाई खूब सज–धजकर बैलगाड़ी में बैठकर अपने ससुराल जा रही हैं। ऐसी ही कामिनी, जाह्नवी बहन भी ससुराल जा रही है।

नरवत रे नव दिन रयजे, वासी रे कूलर खाजे।
नरवत का नव दस भाई बेटा, अली गली मऽ चाबे चणा।
एक चणा की आई डोट, नरवत माँगऽ गरदन तोड़।
रूड़ो रे नरवत काई साड़ो माँगऽ।
भाई गिलक्यो साड़ो माँगऽ, यो साड़ो काँ पावऽ काँ पावऽ।
अगासणी रे भाई पगासणी।
सोड्ल्या सोंडल माण्डलियो, इना मांडल म राम छे, राम छे।
रामा–रामा दासीड़ा, दास तोड़ा पाणीला।
चोरण दिसे, चोरण दिसे, फूल फाफड़ी खेलण दिजे।
लऽ रे नरवत, आसी, आसी थारी दाड़ी क लगी फाँसी,
कूची करोड़ कूची करोड़, कूची गई मालवऽ–मालवऽ।
मालवऽ सी आई साड़ी, साड़ी मऽ दोरो, दोरो।
जो नरवत को छोरो, छोरा न मारी लातऽ–लातऽ।
जाई पड़्या गुजरात, म्हारा नरवत की अयली गऊर पयली गऊर,
जो माँगऽ सो धवल्यो बइल धुरु, नरवट क चैत्या फूल।

हे रूपवान नरवत! तुम नौ दिन रहना। हम तुम्हें अच्छे पकवान और गूलर खिलायेंगे। इस नरवत के दस भाई और बेटे हैं, जो गलियों में अलमस्त घूम रहे हैं। इन्हें जो पसन्द है, वही करते हैं। किसी की भी गरदन तक मरोड़ सकते हैं।

हे नरवत! तुम्हें कौन से फूल पसन्द हैं, जो तुम्हें चढ़ायें? हाँ, तुम्हें गिलकी के फूल पसन्द हैं। अरे! इन्हें हम कहाँ खोजें, जो हमें मिल जाएँ? इन फूलों को मैंने आकाश–पाताल में ढूँढा, तब कहीं जाकर मिले हैं। जिस मन्दिर में रामरूप नरवत बैठे हैं, उन्हें मैं यह फूल चढ़ाऊँगी। हे

राम! हम तो आपके दास हैं। दास का काम होता है सेवा करना, पानी पिलाना। मैं चुपके से फूलपाती खेलने आई हूँ। कूची करोड़ (एक प्रकार का फूल) लाई हूँ। यह फूल मालवा गया और वहाँ से सुन्दर साड़ी लेकर आया है। इस साड़ी में एक डोरी है, जो नरवत का लड़का है, उस लड़के ने नरवत को लात मार दी और जो गुजरात में जाकर गिरे हैं। मेरे नरवत की यह पहली गौर है और नरवत को सब तरह के फूल अर्पित करती हूँ।

तू तो म्हारा दिल नयणा जती रे
धड़ी एक बिसरूं नी राम।
राजा दशरथ का चारई पूत, शरद, भरत, दुई राम लक्ष्मण,
शरद भरत राज दियो, राम लक्ष्मण बनवास।
तू तो म्हारा.............. ॥
राम लक्ष्मण बन चल्या रे, न सीता कऽ लई गया साथ,
आला नीला वास कटाया, मड़िया करी तैयार।
तू तो म्हारा.............. ॥
राम नऽ कुवा खणाया, लक्ष्मण लावऽ नीर,
सीता की वाड़ी मऽ दवणो, राप्यो रे मारीच चरी-चरी जाय।
तू तो म्हारा.............. ॥
धवळा कपड़ा रे रावण, भगवा करिया लिया बाँधी भेज,
हाथ मऽ लीवी कारवा, घड़ी मोयो सीता देश।
तू तो म्हारा.............. ॥
थाल भरी बनफल, सजई लाई रे, भिक्षा लेवो साधु राम,
आसी भिक्षा कबहूं नी लेवां रे, वो सीता का हाथ।
तू तो म्हारा.............. ॥
छाछी सीता रे हम जाणता, एक पुरुष की नार,
लंका पति रावण लई गयो, क्यों नी दियो सराप।
तू तो म्हारा.............. ॥
थाल भरी मोती सीला लाई, भिक्षा लेवो साधु राम,
राम रेवा कऽ जिन्ह छोड़ी दिवी, नऽ सीता कऽ लिवी उठाय।
तू तो म्हारा.............. ॥
छाछी सीता रे हम जाणता, एक पुरुष की नार,
लंका पति रावण लई गयो, क्यों नी दियो सराप।
तू तो म्हारा.............. ॥
काई करूं छोटा लक्ष्मण देवर वाचा लिवी हराय,
तीन साल बालइ भसम करूं, थारो रावण कऽ वाटऽ।

तू तो म्हारा.............. ॥
गढ़ लंका को म्हारो मायरो, नऽ मंदोदरी म्हारी माय,
रावण बंदो हीरो लग रे, कसी पत देऊ रे सराप।
तू तो म्हारा.............. ॥
मीराबाई के प्रभु सांवरा रे, राखो ते शरम लगाय,
जलम-जलम की दासी तुम्हारी, राखो रे लज्जा हमारी।

तुम तो मेरे दिल में आँखों की ज्योति की तरह बसे हो। हे राम! एक पल भी मैं तुम्हें भूल नहीं सकती। राजा दशरथ के चारों पुत्र हैं- राम-लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न। भरत और शत्रुघ्न को राज्य और राम को वनवास दिया। राम-लक्ष्मण वन को चले, सीता को भी साथ ले गये। वन में राम लक्ष्मण ने हरे सूखे बाँस काटकर कुटिया तैयार की। रामजी ने कुँआ खोदा, उसमें से लक्ष्मणजी पानी लाते हैं। सीताजी की कुटिया के पास मोगरा लगाया है, मारीच उसे खा जाता है। इतने में सफेद कपड़ों को रावण ने भगवा रंग लगाया, जोगी बनकर आया। हाथ में कटोरा लिये सीता की कुटिया के पास आया। थाली भरकर वनफलों की भिक्षा देने सीता आई, तो साधूराम बोला- ऐसी बँधी हुई भिक्षा मैं नहीं लूँगा। थाली भरकर मोती सीता लाई, अब तो लो साधुराम। लक्ष्मण-रेखा को जिसने छोड़ दी, रावण ने उसे उठा लिया।

सीता के सत्व को तब जानते, एक पतिव्रता को तब मानते - सती सीता ने उस समय लंकापति रावण को श्राप क्यों नहीं दिया, जब वह सीता का हरण करके ले जा रहा था। सीता का जवाब था- क्या करूँ, लक्ष्मण ने वचनबद्ध कर दिया था। वह तो तीनों लोकों को भस्म कर सकती थी, उसके सत् के आगे रावण क्या है? उसने आगे कहा- गढ़ लंका मेरा मैका है और मन्दोदरी मेरी माता है। रावण मेरा पिता लगता है। कैसे श्राप देती?

मीराबाई के प्रभु सांवरे! मुझे सदैव अपनी शरण में रखना। मैं तो आपकी जनम-जनम की दासी हूँ। मेरी लज्जा रखना।

सुकदेव जी कऽ आओ मनाय रे॥
माता नऽ मांड्या रोसणा॥
हाँ रे वाला चांद बिना न केवी चांदणी॥
हाँ रे वाला तारा बिना न केवी रात रे॥
माता नऽ मांड्या रोसणा॥
हाँ रे वाला माय बिना न केवी मायरो॥
हाँ रे वाला बाप बिना न केवी लाड़ रे॥
माता नऽ मांड्या रोसणा॥
हाँ रे वाला सासु बिना न केवी सासरो॥
हाँ रे वाला ससरा बिना न केवी लाज रे॥

माता नऽ मांड़्या रोसणा॥
हाँ रे वाला नहीं मनऽ कंडा सी कंडो भाजियो॥
हाँ रे वाला नहीं नाड़ी रूखड़ा राख रे॥
माता नऽ मांड़्या रोसणा॥
हाँ रे वाला नहीं मनऽ दिवला सी दिवलो जोयो॥
हाँ रे वाला नहीं पोयचा धारण हाथ रे॥
माता नऽ मांड़्या रोसणा॥
हाँ रे वाला नहीं मनऽ पाणी पिता गव्वा गेरी॥
हाँ रे वाला नहीं मार्‌या सेरी का सांड रे॥
माता नऽ मांड़्या रोसणा॥
हाँ रे वाला नहीं मन चरता पंछिड़ा उड़ाया रे॥
हाँ रे वाला नहीं रड़ाया सेरी मका बाल रे॥
माता नऽ मांड़्या रोसणा॥
हाँ रे वाला नहीं मनऽ मनभरी बालो धवाड़ियो॥
हाँ रे वाला नहीं हेड़ी मन की भरात रे॥
माता नऽ मांड्या रोसणा॥

स्रोत- श्रीमती गोदावरी बाई

सुखदेवजी को मनाकर लाओ। माता ने विलाप करना शुरू किया। चन्द्रमा के बिना चाँदनी सूनी लगती है और तारों के बिना रात अच्छी नहीं लगती। माताजी के बिना मायका अधूरा होता है। पिताजी के लाड़ के बिना सभी का लाड़-प्यार फीका है। बिना सासुजी के ससुराल-ससुराल नहीं लगता है। बिना ससुर के शर्म कैसी होगी। मैंने कभी कंडे से कंडा नहीं (उपला) तोड़ा। मैंने कभी घूरे पर राख भी नहीं डाली। मैंने कभी दीपक से दीपक भी नहीं जलाया। दीपक जलाकर मध्यगृह के खम्बे से कभी हाथ तक नहीं पोछे। मैंने कभी पानी पीती गायों को नहीं भगाया। मैंने कभी गली के साँड देवता को भी नहीं सताया। मैंने कभी दाना चुगते हुए पक्षियों को नहीं उड़ाया। मैंने कभी गली में खेलने वाले बच्चे को नहीं रूलाया। मैंने अभी तक बच्चे को मन भरकर दूध नहीं पिलाया। मेरी मन की अभिलाषाएँ अभी पूरी नहीं हुई।

चाँदा थारी चाँदणी सी रात राज॥
रमवा जो गई थी सीता सयर मऽ हो राज॥
रम्या-रम्या घड़ी दुई चार राज॥
एतरामऽ आई गई भीलई निंदुली हो राज॥
रमी-रमी घर सी आया राज॥
खिंडकी तो खोलो राज॥

रमवा जो गई थी सीता सयर मऽ हो राज॥
जलता बलता स्वामीजी उठड़िया राज॥
खूटी मऽ हेड़्या चाँदी चोपका हो राज॥
मार्‌या-मार्‌या दुई अरू चार राज॥
दिन तो निकालूं थारा बाप यहाँ हो राज॥
रड़ता कूढ़ता माक्यां सिधारया राज॥
माय मिल्या बाप मिल्या कहो बेटी मन की वात॥
कांय खऽ मार्‌या चाँदी चोपका हो राज॥
तुम्हारी बेटी हाथ की चालाक राज॥
मुंडा की उतारी राज॥
इ कारण मार्‌या चाँदी चोपका हो राज॥

रात्रि में चन्द्रमा की निर्मल चाँदनी फैली है। सीता शहर में गरबा खेलने गई थी। गरबा खेलते-खेलते रात के दो पहर बीत गये। राह देखते-देखते पति को गहरी नींद आ गई। जब वह गरबा खेलकर पहुँची। उसने खिड़की से आवाज लगाई। जलते-भुनते चिढ़कर स्वामीजी उठे। खूटी पर टँगी चाँदी की चाबुक को उतारा और दो चार चाबुक लगा दिये। कहा- सूर्योदय से पहले अपने पिता के घर चली जाना। मरती क्या न करती। पति के व्यवहार से दुखी रोते कलपते वह मैके आ गई। यहाँ माता-पिता मिले। माता-पिता ने पूछा- बेटा, मन की क्या बात हुई? किस कारण तुम पर चाबुक का प्रहार हुआ, दोष क्या है? बेटी ने बतलाया- मैंने चोरी की है, यह इलजाम लगाया और कहा कि तू मुँहजोरी करती है, इसी मुँहजोरी के कारण ही मुझ पर पति ने चाबुक से प्रहार किया, जबकि मैं नवरात्रि में गरबा खेलने गई थी।

रावजी मकऽ लाई देवो जड़ाव को झूमको।
रावजी मकऽ लाई देवो जड़ाव को झूमको।
झूमको पेरी नऽ हाँऊ पाणीला गई थी,
म्हारी सासू कऽ लग्यो बड़ो तनको॥
रावजी मकऽ लाई देवो....... ॥
झूमको पेरी नऽ हाँऊ रसवई मऽ गई थी,
म्हारी नणद कऽ लग्यो बड़ो छनको॥
रावजी मकऽ लाई देवो....... ॥
झूमको पेरी नऽ हाँऊ मंदिर मऽ गई थी,
म्हारी जेठाणी कऽ लग्यो बड़ो तनको॥
रावजी मकऽ लाई देवो....... ॥
झूमको पेरी नऽ हाँऊ मेला मऽ गई थी,
म्हारी देराणी कऽ लग्यो बड़ो तनको॥

रावजी मकऽ लाई देवो....... ॥
झूमको पेरी नऽ हाँऊ घूमण कऽ गई थी,
म्हारी पड़ोसेण कऽ लग्यो बड़ो तनको ॥
रावजी मकऽ लाई देवो जड़ाव को झूमको ॥

स्रोत– श्रीमती हेमलता उपाध्याय–खण्डवा

हे स्वामीजी! मुझे रत्न जड़ित झुमका ला दो। झुमके को पहनकर मैं पानी लेने गई थी। मेरी सासूजी को बड़ा बुरा लगा। हे स्वामीजी! मुझे रत्न जड़ित झुमका ला दो। झुमके को पहनकर मैं रसोईघर में गई थी। मेरी ननद रानी को बड़ा बुरा लगा। झुमके को पहनकर मैं मन्दिर में गई थी। मेरी जेठानी को बड़ा बुरा लगा। झुमके को पहनकर मैं मेला देखने गई थी। मेरी देवरानी को बड़ा बुरा लगा। झुमके को पहनकर मैं टहलने के लिये गई थी। मेरी पड़ोसन को बड़ा बुरा लगा। हे स्वामीजी! मुझे रत्न जड़ित झुमका ला दो।

नवदुर्गा की रात चाँदणी गरबो खेलण गई ॥
सखी ओ मनऽ नथ छोगा की खोई ॥
सासु भी ढूंढऽ म्हारी, ससरो भी ढूंढऽ ॥
देवर करऽ थई–थई, देवर करऽ थई–थई।
सखी ओ मनऽ नथ छोगा की खोई ॥
जेठ भी ढूंढऽ म्हारी जेठानी भी ढूंढऽ।
भतीजी करऽ थई–थई, भतीजी करऽ थई–थई।
सखी ओ मनऽ नथ छोगा की खोई ॥
नणद भी ढूंढऽ म्हारी नणदई भी ढूंढ ॥
भाणिज करऽ थई–थई, भाणिज करऽ थई–थई।
सखी ओ मनऽ नथ छोगा की खोई ॥
हाँऊ भी ढूंढऽ म्हारा स्वामी भी ढूंढऽ ॥
छोरो करऽ थई–थई, छोरो करऽ थई–थई।
सखी ओ मनऽ नथ छोगा की खोई ॥
नव दुर्गा की रात चाँदणी,
गरबो खेलण गई, सखी ओ मनऽ नथ छोगा की खोई ॥

– रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी'–दवाना

हे सखी! नवरात्रि की चाँदनी रात में गरबा खेलने गई तो वहाँ मेरी जड़ित नथ कहीं खो गई। उसे सासुजी ने ढूँढा (ससुरजी ने ढूँढा। पर वह नहीं मिली। इससे मेरा देवर बहुत ही गुस्से में हो गया। हे सखी! मैंने रत्न जड़ित नथ कैसे खो दी? उसे जेठजी ने ढूँढा, जेठानी ने ढूँढा, पर

वह नहीं मिली। इससे भतीजा बहुत ही गुस्से में हो गया। हे सखी मैंने रत्न जड़ित नथ कैसे खो दी? उसे ननद ने ढूँढा, ननदोई जी ने ढूँढा, पर वह नहीं मिली। इससे भान्जे ने मुझे धमकाया। हे सखी! मैंने रत्न जड़ित नथ कहीं खो दी है। मैंने भी ढूँढा, मेरे पति ने ढूँढा, पर वह नहीं मिली इससे मेरा लड़का बहुत ही गुस्से में हो गया। हे सखी! मैंने रत्न जड़ित नथ कहीं हो खो दी है। नवरात्रि की चाँदनी रात में गरबा खेलने गई थी, वहीं मैंने रत्न जड़ित नथ कहीं खो दी है। मेरी नथ बड़ी अनमोल थी।

नवदुर्गा छे माता हमारी, चरण पर जावां वारी॥
हम विनती करां छे तुमारी, चरण पर जावां वारी॥
पड़वा का दिन घट रोपियो, आई सैलपुत्री नार॥
नंदी ऊपर बैठ के, नकछक कियो सिनगार॥
लियो चक्र त्रिसूल जिनऽ धारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 1॥
दूज का दिन आविया, ब्रह्मचारणी मात॥
एक हाथ मऽ सुमरणी, कमंडल दूजा हाथ॥
जिनऽ हंसा पर किंवी सवारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 2॥
तीज का दिन चन्द्रघटा, सिंग पर भई सवार॥
दस भुजा आयुध सजऽ, मार रही किंलकार॥
घंटा घनन रया झनकारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 3॥
चौथें रोज कुशमान्डा, सिंघ ना भई सवार॥
बारा आभूषण साजिया, सोला किया सिनगार॥
देख आतुर भये नर नारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 4॥
पाँचवे दिन असकन्द माता, कृतिका अवतार॥
कार्तिक स्वामी जलमिया, देवनऽ का सरदार॥
किबी मोर ऊपर असवारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 5॥
छट का दिन कत्यानी, चत्र भूजा घनघोर॥
देवी को रूप देखके कऽ, भगत मचावऽ शोर॥
गुण गाई रया दे दे तारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 6॥
सातवां रोज कालरात्री, खर पर भई सवार॥
हाथ मऽ खप्पर धरे, मुंडन माला धार॥
जिनऽ चंडी को रूप लियो धारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 7॥
आठवऽ रोज महागौरी, पारबती का अवतार॥
कैलाश गढ़ राजबी, शिव-शिव रही पुकार॥
थारां दर्शन की बलिहारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 8॥
नवें दिन सिद्धदात्री, महालक्ष्मी कों अवतार॥

देवता सनमुख खड़े, करते हैं मिंनवार॥
करो इच्छा पूरण म्हारी, चरण पर जाऊं वारी॥ 9॥

नवदुर्गा हमारी माता है, उनके चरणों में हमारा वंदन है। हम विनती करते हैं– माँ! आपके चरणों पर हम वारी जाते हैं। पड़वा के दिन घट स्थापना की, शैलपुत्री रूप में माँ आई। माँ नंदीगण पर सवार सुन्दर वस्त्र आभूषण धारण किये हैं।

माँ के चक्र त्रिशूल धारण स्वरूप के दर्शन कर सब वारी जाते हैं। दूज के दिन ब्रह्मचारणी माताजी आई हैं। एक हाथ में स्मरण माला है, दूजे हाथ में कमण्डल है, जो हंस पर सवार होकर आई। चरणों पर हम वारी जाते हैं। तीज का दिन चन्द्रघण्टा माता जी आई हैं, जो सिंह पर सवार हैं, जिनकी दसों भुजाओं में अस्त्र–शस्त्र हैं, जिनकी ललकार से दिशाएँ गुँजायमान हैं। जैसे बादल की गड़गड़ाहट से कम्पन होता है, ऐसी माताजी के चरणों में वंदन है। पाँचवें दिन स्कन्द माता आई, जिसका दूसरा नाम कार्तिका है, जिसने कार्तिक स्वामी को जन्म दिया, जो देवताओं के सरदार हैं। ऐसी देवी के चरणों में वंदन है। छठे दिन कात्यायनी माताजी आई हैं, जिनकी चार भुजाएँ हैं। देवी का रूप देखकर भक्त शोर मचाते हैं। देवी का गुणगान ताली बजाकर करते हैं। सातवें दिन कालरात्रि देवी आई हैं, जो गधे पर सवारी करके आई हैं। हाथ में खप्पर है, गले में मुँड माला है, जिसने चंडिका रूप धारण किया है, ऐसी माताजी को सत–सत नमन है। आठवें रोज महागौरी देवी आई हैं, जिसका दूसरा रूप पार्वती (गौरी) है। उनके दर्शन की महिमा अपार है। नवें दिन सिद्धदात्री देवी आईं, जो महालक्ष्मी का अवतार हैं। देवता जिसके सम्मुख खड़े हैं, मनवार करते हैं– हे माँ! हमारी इच्छा पूर्ण करना।

उग्यो शरद पूनम को चांद, म्हारा हिरदां उपजो ज्ञान॥
म्हारा लोकेन्द्र भाई की नार, म्हारा घर गरबो रमबा आवऽ।
हम कसा आवां हो सहेली, हमरो ससरो सुतबार॥
ससरो सुत बार, सासू का अखरा सुभाव॥
सासु का अखरा सुभाव नणंद मरोड़ऽ गाल॥
उग्यो शरद पूनम को चांद, म्हारा हिरदा उपजो ज्ञान॥
म्हारा मनीष भाई की नार, म्हारा घर गरबो रमावा आवऽ॥
हम कसा आवां ओ सहेली, हमरो ससरो सुत बार॥
ससरो सुत बार, हमरी सासु का अखरा सुभाव॥
सासु का अखरा सुभाव, नणद मरोड़ऽ गाल॥
उग्यो शरद पूनम को चांद म्हारा हिरदा उपजो ज्ञान॥
म्हारा बसंत भाई की नार, म्हारा घर गरबो रमवा आवऽ॥
हम कसा आवां ओ सहेली, हमरो ससरो सुत बार॥
ससरो सुत बार, हमरी सासु का अखरा सुभाव॥
सासु का अखरा सुभाव, नणद मरोड़ऽ गाल॥

शरद पूनम का चन्द्रमा उदित हुआ है। मेरे मन में चन्द्रमा को देखकर ज्ञान उत्पन्न हुआ है। मेरे लोकेन्द्र भाई की पत्नी मेरे यहाँ गरबा खेलने आ जा। ओ सहेली! हम कैसे आएँ, हमारे ससुर जी दरवाजे पर सोए हैं। सासुजी का स्वभाव तीखा है, ननद रानी गाल कूचती है। शरद पूनम का चन्द्रमा उदित हुआ है। उसके निर्मल प्रकाश से मेरे मन में ज्ञान उत्पन्न हुआ है। मेरे धीरेन्द्र भाई की पत्नी मेरे यहाँ गरबा खेलने आ जा। ओ सहेली! हम कैसे आएँ, हमारे ससुरजी दरवाजे पर सोए हैं। सासुजी का तीखा स्वभाव है। ननद रानी गाल कूचती है। शरद पूनम का चन्द्रमा उदित हुआ है। उसके निर्मल प्रकाश से मेरे मन में ज्ञान उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार अन्य नामों को जोड़कर गीत में विस्तार किया जाना है।

साला की सरपट, पागड़ी बाँधू लटपट।
छोगा को तीर, साला बोली को सालो।
हत्थी पड़ऽ-पड़ऽ मूत रे, भर दियो तलाव।
धोबी कपड़ा नी धोवऽ रे, भूत भरया गंधाय।
साला बोली को सालो रे, काढ़्या वाड़ की घोड़ी रे।
भडांग-भडांग जाय, बठणऽ वाळो हिजड़ो रे।
बोम देतो जाय रे, साला बोली को सालो रे।
गाँव पिछवाड़ की आमली रे, तीखा-तीखा पानऽ।
सासु ववु लड़ी पड़ी रे, हुई का काट्या कान।
साला बोली को सालो रे, तीन टिचका की टोपली रे।
रंगली दलण जाय रे, वेगी-वेगी आवजे रंगली।
सालो भूरतो जाय रे, साला बोली को सालो रे।
जुपरी ऊपर जुपरी, मिया पकावऽ दाल।
मिया की तो दाढ़ी जली गई, बीबी तोड़ऽ कानऽ।
साला बोली को सालो रे।

यह गीत अतुकान्त गीत है और न कोई अर्थ में सामंजस्य है। इसमें साला एक पुरुष है तथा रंगली उसकी पत्नी है। साला की सरपट पागड़ी बांधूँ जल्दी से। पगड़ी के कोने में रत्नजड़ित तीर है। हाथी सोते-सोते पेशाब करता है और उससे तालाब भर गया है। ऐसे गंदे कपड़ों को धोबी भी नहीं धोयेगा। काठियावाड़ की सुन्दर घोड़ी है। वह तेज गति से चलने वाली है। उस पर कोई वीर पुरुष ही सवारी कर सकता है। गँवार बैठेगा तो उसे बैठने में तकलीफ होगी। गाँव के पिछले हिस्से में एक इमली का पेड़ है। उसके पत्ते तीखे-तीखे हैं। सासु और बहू दोनों में लड़ाई हो गई है। दोनों ने एक दूसरे के कान काट लिये हैं। तीन टिच्चे यानी पुराने नाप की एक टोकनी है। उसमें पीसने के लिए अनाज लेकर रंगली जा रही है। हे रंगली! अनाज पीसकर जल्दी आना वरना साला भूखा ही चला जायेगा। मंजिल पर मंजिल घर बना है। वहाँ मियांजी दाल पका रहे हैं और ऐसे में उनकी दाढ़ी जल गई है। उनकी बीबी उनके कान मरोड़ रही है।

गो गो काई करऽ, गो गा पाछऽ नंदी आई,
नंदी पाछऽ हँऊ गई, गई पीयर की वाटऽ-वाटऽ।
वाटऽ मऽ मिल्यो मोरऽ-मोरऽ, मोर बिचारा उड़ी गया।
नऽ घूघर की घमस्याण, देती होय तो दऽ ओ पड़ोसण।
मकऽ लगी वारऽ-वारऽ, घर-घर की जुवारऽ-जुवारऽ।

हे माँ! तुझे क्या बताऊँ? आज मैंने एक सपना देखा, उसमें मैंने एक पर्वत देखा। पर्वत के पीछे से एक नदी निकल रही थी। उस नदी के किनारे-किनारे मैं जाने लगी। मुझे लगा, जैसे यह राह मेरे पीहर की ओर जा रही है और सचमुच में मैं सपने में मायके पहुँच गई। उस रास्ते में काले-काले बादलों को देखकर सुन्दर नृत्य करने वाले मोर दिखाई दिये, पर बैलगाड़ी में जुते हुए बैलों की घण्टियों की आवाज सुनकर बिचारे मोर उड़ गये, मेरा सपना टूट गया।

हे माँ! मेरा यह सपना सच्चा है, मुझे मेरे भाई मायके ले जाने के लिए आने वाले हैं। मुझे जल्दी से अनाज का दान दे दे, मुझे देर हो रही है। मुझे और घरों में भी जाना है। हर घर की बारी मुझे निभानी है। अनाज मिलते ही बच्चे घर मालकिन को आशीष-वचन कहते हैं और दूसरे घर के सामने 'गोगा' माँगने लगते हैं। बच्चों के पर्व-त्योहार उनके बाल मनोविज्ञान पर आधारित होते हैं।

शीत गीत

तूनऽ गोरधन ग्वाला कऽ मार्‌यो परभात मऽ।
बंशी वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।
मुरली वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।
हाँऊ तूकऽ बिन्दी घड़ई देऊं, आधी रात मऽ।
मुरली वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।
हाँऊ तूकऽ झुमकी घड़ई देऊं आधी रात मऽ।
मुरली वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।
हाँऊ तूकऽ माला घड़ई देऊं आधी रात मऽ।
मुरली वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।
हाँऊ तूक कंगन घड़ई देऊं आधी रात मऽ।
मुरली वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।
हाँऊ तूकऽ पायल घड़ई देऊं आधी रात मऽ।
मुरली वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।
तूनऽ गोरधन ग्वाला कऽ मार्‌यो प्रभात मऽ।
बंशी वाला हम नी जावां थारी साथ मऽ।

स्रोत- श्रीमती कान्ता जोशी-खण्डवा

हे श्याम! हम तुम्हारे साथ नहीं जायेंगे, क्योंकि तुमने गोरधन नाम के ग्वाले को प्रात:काल में मरवा दिया था। निर्दोष गोरधन ग्वाले को मारने का पाप-दोष आप पर है। इसलिए हम तुम्हारे साथ नहीं है। हे मुरली बजाने वाले! हम आपके साथ कहीं नहीं जायेंगे। मैं तुम्हारे लिए तत्काल चाहे आधीरात हो बिन्दी घड़वा सकता हूँ। मैं बिन्दिया लेकर क्या करूँगी। तुम्हें पाप लगा है। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी। कन्हैया माला, कंगन, पायल आदि बनवाने का लालच गुजरियों को देते हैं। पर गुजरियाँ सभी चीजों के लिए मना करके कहती हैं- हे मुरलीवाले! हम तेरे साथ नहीं जायेंगे। तब कृष्ण अपने किये पर पश्चाताप करते हैं और दीपावली के दूसरे दिन पड़वा को गोबर से बनाये गये ग्वाले गोरधन की पूजा का अमर वरदान देते हैं। तब से घर-घर में गोरधन पड़वा को गोरधन की पूजा होती है।

बाके बिहारी थारी आरती गाऊं, श्याम सुन्दर थारी आरती गाऊं।
मदन मुरानी थारी आरती गाऊं, आरती गाऊं प्रभु तुमकऽ रिझाऊं।
साँवरा गिरधारी थारी आरती गाऊं॥
मोर मुकुट प्रभु सिर पर सोवऽ, मधुरी बंसरी मन के मोवऽ।
धुन सुन-सुन हाँऊ सुध बिसराऊं, बाँके बिहारी थारी आरती गाऊं॥
चरणों सी निकली गंगा प्यारी, जिन्न तारी दुनिया सारी।
उन चरणन मऽ शीश झुकाऊं, बाँके बिहारी थारी आरती गाऊं॥
मुझ अबला का नाथ आप छे, मुझ गरीब की लाज आप छे।
किन शब्द नऽ मऽ तुमकऽ रिझाऊं, बांके बिहारी तेरी आरती गाऊं॥
चाह नहीं कुछ तुम से पाऊं, एक अरज प्रभु तुमको सुनाऊं।
केवल भवसागर तर जाऊं, बांके बिहारी थारी आरती गाऊं॥
जो नर-नारी आरती गावऽ, सब सुख भोग परम पद पावऽ।
अगर कपूर की जोत जलाऊं, बांके बिहारी थारी आरती गाऊं॥

हे बाँके बिहारी! हे श्याम सुन्दर! हे मदनमुरारी! मैं तुम्हारी आरती गा रही हूँ। आरती गाकर मैं तुम्हें रिझा रही हूँ। श्याम सलोने! मैं तुम्हारी आरती गा रही हूँ। आपके शीश पर मोर मुकुट शोभित है। आपकी बाँसुरी की मधुर धुन पर मेरा मन मोहित है। इस मधुर धुन को सुनकर मैं अपनी सुधि भूल जाती हूँ। जिन चरणों से गंगाजी निकली हैं। गंगाजी ने सारी दुनिया का उद्धार किया है। उन्हीं चरणारविन्दों में मैं अपना मस्तक झुका रही हूँ। मैं गरीब असहाय अबला नारी हूँ। आप मेरे सहायक हैं। मैं गरीब और अनाथ हूँ। मेरी लज्जा आपके हाथों में है। किस प्रकार मैं अपनी व्यथा सुनाकर तुमको रिझाऊँ। मेरी चाहने की या मेरी कोई माँग नहीं है। एक अर्जी जरूर सुन लेना। मुझे इस संसार रूपी सागर से पार लगा देना। जो नर-नारी इस आरती को गाते हैं, वह सभी सुखों से परिपूर्ण हो जाते हैं। अगर और कपूर की जोत जलाकर, हे बाँके बिहारीजी! मैं तुम्हारी आरती गा रही हूँ।

तुम करो राधिका आरती, पयली आरती मोर मुकुट की।
शोभा कुंडल कानऽ की, तुम करो राधिका आरती।
दूसरी आरती गले कंठ की, शोभा फूलन हार की।
तुम करो राधिका आरती, तीसरी आरती भुजा बंद की।
शोभा धनुष बाण की, तुम करो राधिका आरती।
चौथी आरती पांव पावड़िया, शोभा तेकी चाल की।
तुम करो राधिका आरती, पाँचवी आरती संग राधिका।
जोड़ी राधेश्याम की, तुम करो राधिका आरती।

स्रोत– श्रीमती गंगाबाई तोमर–दवाना

हे राधिका! तुम श्रीकृष्णजी की आरती करो। पहली आरती मोर मुकुट की, जिनके कानों में कुण्डल हैं, ऐसे श्याम की आरती करो। हे राधिका! तुम श्रीकृष्णजी की आरती करो। दूसरी आरती गले यानी कण्ठ की कीजिये, जिनके गले में फूलों की माला शोभित है। हे राधिका! ऐसे श्याम की आरती करो। तीसरी आरती बाँहों की कीजिये, जिसमें बाजूबंद बँधा है, हाथ में धनुष है। हे राधिका! ऐसे गोपाल की आरती करो। चौथी आरती पाँव में पावड़िया पहने हैं और जो टेढ़े खड़े रहते हैं। हे राधिका! ऐसे मोहन की आरती करो। पाँचवी आरती राधिका के संग श्याम की करो, जो राधेश्याम के नाम से जाने जाते हैं। तुम इस सुन्दर जोड़ी की आरती करो। हे राधिका! श्रीकृष्ण की आरती करो।

नमो–नमो तुलसा महारानी, नमो–नमो तुलसा महारानी।
नमो–नमो हरी की पटरानी, कोमल डाली कोमल पत्तियाँ।
कोमल रूप धर्‌यो महारानी, नमो–नमो तुलसा महारानी।
सोला सिंगार कियो महारानी, ऊपर ओड़ी जरी की साड़ी।
नमो–नमो तुलसा महारानी, छत्तीस भोग हरि–हरि आगे।
बिना तुलसा हरि एक न पावें, नमो–नमो तुलसा महारानी।
ऐसो जप तप कियो महारानी, सालिकराम की बनी महारानी।
नमो–नमो तुलसा महारानी, मीरा बाई के प्रभु गिरधर नागर
हरि के चरण लिपटानी, नमो–नमो तुलसा महारानी॥

स्रोत– श्रीमती शकुन्तला चौहान–दवाना

हे तुलसी महारानी! आपको नमन है। हे हरि भगवान कृष्ण की पटरानी! आपको नमन है। आपकी डालियाँ और पत्तियाँ कोमल हैं। आपने कोमल रूप धारण किया है। हे तुलसी महारानी! आपको नमन है। आपने सोलह श्रृंगार किये हैं। उस पर आपने जरी की साड़ी ओढ़ रखी है। छत्तीस प्रकार के पकवान भगवान श्रीहरि के आगे रखे हैं। पर आपके बिना वह छप्पन भोग श्रीहरि को अर्पण नहीं होते हैं। जब तक तुम्हारा पवित्र स्पर्श न हो, तब तक उनका भोग

स्वीकार नहीं होगा। आपने कैसा जप-तप किया है? जिससे तुम शालिगराम की पटरानी बनी हो। मीराबाई के प्रभु गिरधारी हैं। वह भगवान के चरणों से लिपटी हुई है।

तमोलण लाई केवड़िया रा पान, म्हारा घर आओ श्री भगवान।
चाँद बिना केवो चाँदणो, तारा बिना केवी रात।
पुरुष बिना केवी स्त्री, म्हारा संत बिना राम।
तमोलन लाई........... ॥
माय बिना केवो मायरो, बाप बिना केवा लाड़।
सासु बिना केवो सासरो, सासरा बिना केवी लाज।
तमोलन लाई........... ॥
अम्बा से मीठी आमली, निरधनिया मीठो धन।
वांजा ने मीठा पालणा, संतत मीठा राम।
तमोलन लाई........... ॥
बागा मऽ अम्बो मवरियो, केरिया में लटालूम।
बिलम रयो बालो नरसिग नो, श्यामी हिवड़ो हिलोरा ले।
तमोलण लाई केवड़िया रा पान, म्हारा घर आया श्री भगवान।

स्रोत-श्रीमती तुलसीबाई पंवार-दवाना

तमोलन केवड़े के पत्ते लेकर जल्दी आओ। मेरे घर श्रीभगवान आने वाले हैं। चाँद के बिना चाँदनी सूनी है। तारों के बिना चन्द्रमा शोभा नहीं पाता। पुरुष के बिना स्त्री का जीवन निरर्थक है और संतों को हमेशा राम से प्रेम रहा है। माता के बिना मायका सूना होता है। पिता के बिना लाड़ अधूरा होता है। कोई पिता की कमी को पूर्ण नहीं कर सकता है। सास के बिना ससुराल अधूरी होती है। ससुर के बिना लाज शर्म किससे की जाए। सास-ससुर, दोनों ससुराल में होने चाहिए। आम से मीठी इमली है। निर्धन को धन से अधिक प्यार होता है और बाँझ स्त्री को बच्चों से अधिक स्नेह होता है और संतों को हमेशा राम मीठे फल की तरह लगते हैं। बागों में आम के वृक्ष पर मौर आ गये हैं। वह आमों से लद गया है। इन्हीं में नरसिंहजी बिलम गये हैं। वे अपने श्याम के गुणगान करके मस्त हैं।

या जमना रलियावणी, जाको निरमल छे नीर।
राधिका पाणी संचरिया काई पेर्‌या छे लैगा चीर।
हो जी म्हारी घूंघट सी बातां करलो उबा जमुना का तीर।
चोली तो खासी बणी, म्हारी अंगिया बूटादार,
अस्सी रुप्या की दुलरी म्हारी बेसर शोभादार।
हो जी म्हारा चूड़िला चोप जड़ाव दो।
उबा जमुना का तीर।

चोखा मऽ लापसी म्हारा, नयणा घी की धार।
राधिका थाल परोसिया जिमोते कृष्ण मुरार।
हो जी थारी मिनवाराकर हारी।
उबा जमुना का तीर।
सूरज थाणे पूजती जी भर मोतीयन की थाल।
घड़ी एक वेगा उगजो, म्हारे कृष्ण मिलन की आस।
हो जी म्हाने दरसण देता जाजो।
उबा जमना का तीर।
जमुना के ऐसे मेरे धेनु चरावऽ, सुभद्रा बाई थारो वीर।
ऐसी मारी धापकी, धोरी, थारी बंसी ले जाऊँगी छुड़ाय।
हो जी थारी बंसी ने जग मोया
उबा जमना के तीर।

स्रोत- सुश्री सुशीलाबाई चौहान-दवाना

जमुना का तट बहुत सुन्दर है। इसका पानी स्वच्छ और निर्मल है। राधिकाजी जमना तट पर पानी लेने जा रही हैं। उन्होंने लहँगा और साड़ी पहनी है। उधर से कृष्णजी जमना तट पर आकर खड़े हो गये। वे राधा से बात करना चाहते हैं। राधा यह बात समझकर कृष्ण से कहती हैं- ए जी! घूँघट की ओट से तुम मुझसे बातें कर सकते थे। दोनों जमुना के तट पर खड़े हैं। राधिकाजी की चोली बहुत सुन्दर है और उस पर अंगिया बूटीदार पहनी है। अस्सी रुपये की मेरी हुलरी (निमाड़ी गहना) है। नाक की नथनी की शोभा अपार है। आप मेरी चूड़ियों में सोने की चोप जड़वा दो।

चावल और लपसी बनाई है, उसमें घी डाला गया है। जैसे आँसुओं की धार लगती है, उसी प्रकार घी की धार डाली गई है। राधिका ने थाल परोसा है। हे मुरारी! खाना खाइए। तुम्हारी मनवार करके मैं हार गई हूँ। हे सूर्यदेवता! मैं तुम्हारी पूजा मोतियों के थाल भरकर करती हूँ। तुम थोड़ी देर से उदित होना। मुझे कृष्ण से मिलने की आशा है। हे श्याम! मुझे दर्शन देते जाना। यमुना के इर्द-गिर्द गायें चराने वाले ग्वाले! सुभद्रा के वीर! तुझे ऐसा धप्पा लगाऊँ कि तुम्हारी बाँसुरी गिर जायेगी और मैं उसे तुमसे छुड़ा ले जाऊँगी। इस बाँसुरी ने जग को सम्मोहित किया है। तुम यमुना के किनारे खड़े रह जाओगे।

म्हारा बाल गोविन्दा जी म्हारा घर रमवा आजो जी।
म्हारा बाल गोविन्दा जी, म्हारा घर रमवा आजो जी।
लाडू मंगाई देऊं पेड़ा मंगाई देऊं साथ मऽ माखण मिश्री जी।
म्हारा मन मऽ असी आवऽ कि छप्पन भोग जिमई देऊं।
म्हारा बाल गोविन्दा जी............... ॥

हाथ धुलई देऊं पांव धुलई देऊ, अरू धुलऊं थारो मुंडा जी।
म्हारा मन मऽ असी आवऽ कि, अपणा हाथ निल्हई देऊं।
म्हारा बाल गोविन्दा जी.............. ॥
झरमळूया री झूल सिलई देऊं, राधा संग री टोपी जी।
म्हारा मन मऽ असी आवऽ, कि अपणा हाथ पिरई देऊं।
म्हारा बाल गोविन्दा जी.............. ॥
राधा बुलई देऊं रुक्मणी बुलई देऊं, अरू बुलाऊं सतभामा जी।
म्हारा मन मऽ असी आवऽ, कि अपणा हाथ पिरई देऊं।
म्हारा बाल गोविन्दा जी.............. ॥
राधा बुलई देऊं रुक्मणी बुलई देऊं, अरू बुलाऊं सतभामा जी।
म्हारा मन मऽ असी आवऽ, संग मऽ रास रचई देऊं।
म्हारा बाल गोविन्दा जी.............. ॥

स्रोत- श्रीमती गंगाबाई तोमर-दवाना

हे छोटे से श्याम! मेरे घर खेलने आना। मैं तुम्हें लड्डू मँगा दूँगी, पेड़े मँगा दूँगी। इसके साथ ही माखन और मिश्री भी मँगा दूँगी। मेरा मन ऐसा करता है कि मैं आपको छप्पन प्रकार के भोजन खिला दूँ। मैं आपके हाथ धुला दूँ। मुँह धुलवा दूँ। मेरे मन में ऐसी आती है कि मैं आपको अपने हाथों से स्नान करा दूँ। झिलमिल करते हुए वस्त्र पहना दूँ। राधा संग की टोपी बनाकर आपको अपने हाथों से पहना दूँ।

मैं आपके साथ खेलने के लिए राधिका, रुक्मिणी और सत्यभामा को बुला दूँ। मेरे मन में ऐसी आती है कि इनके साथ मैं आपका रास रचा दूँ या आप आगे बढ़कर इनके साथ रास रचायें।

थाली भर कर लाई रे खिचड़ो, ऊपर घी की वाटकी
जिमो म्हारा साँवरिया जिमावे बेटी जाट की।
बाबुल म्हारो गाँव गयो रे, ना जाणऽ कब आवऽगा।
ओका भरोसा रयो तो भूखो ही रह जायगा।
आज जिमाऊ थाने खिचड़ो, काल मही की राबड़ी।
जिमो म्हारा साँवरिया............. ॥
बार-बार हाऊँ मंदिर जुड़ती बार-बार खोलती।
क्यों नी जिमे साँवरिया, मैं कयड़ी-कयड़ी बोलती।
तू जिमे जवंऽ हाँऊ जिमू मानु ना कोई लाठ की।
जिमो म्हारा साँवरिया............. ॥
परदो तो हाँऊ भूल गई मोहन, परदो फिर लगायो जी

धावलिया री ओर बैठकर, श्याम खिचड़ो खायो जी
भक्ति हो तो करमा जैसी, सावलियो घर आवेला।
साँचा प्रेम हरि से हो तो, मूरत बोले काठ की।
जिमो म्हारा साँवरिया, जिमावे बेटी जाट की॥

स्रोत– श्रीमती गंगाबाई तोमर–दवाना

थाली भरकर खिचड़ा लेकर करमाबाई उस पर घी की कटोरी रखकर भगवान श्रीकृष्ण को भोग लगाने जा रही है। वह मन्दिर में जाकर खिचड़ा भगवान श्रीकृष्ण के सामने रखकर भगवान से कहती है– मेरे पिताजी गाँव गये हैं। पता नहीं कब लौटेंगे? उनके भरोसे तो भगवान भूखा रहना पड़ेगा। आज तो मैं तुम्हें खिचड़ा खिला दूँगी। कल मैं मही की खट्टी राब बनाकर खिलाऊँगी। हे भगवान! भोजन जीम लो। मैं बार–बार मन्दिर से बाहर जाती हूँ। बार–बार मन्दिर के द्वार बन्द करके खोलती हूँ, यह देखने के लिए कि तुमने खाना खा लिया होगा, पर खाना तो वैसे ही धरा है। तुम भोजन कर लो, तो मैं भी भोजन करूँ। हे प्रभु! आप भोजन ग्रहण कीजिये। परदा डालना तो मैं भूल गई। अरे! अच्छा परदा लगा देती हूँ। शायद आप परदे में खाने वाले हैं। परदा लगाने के बाद भगवान श्रीकृष्ण आप रूप प्रगट होकर खिचड़ा खा गये हैं। भक्ति हो तो करमाबाई जाट की तरह, जिसने अपनी भक्ति से भगवान श्रीकृष्ण को बुलाया और खाना खिलाया। यदि भगवान से सच्चा प्रेम होगा, तो लकड़ी की मूरत भी बोलने लगेगी। हे श्याम! खाना खा लो। आपको खिलाने के लिए जाट की बेटी आई है।

याद आवऽ रे, थारी याद आवऽ रे,
म्हारा चार भुजा रा नाथ, थारी याद आवऽ रे।
शीश तुम्हारा मुकुट बिराजऽ,
थारी कलंगी नऽ मन मोयो, थारी याद आवऽ॥
कान तुम्हारा कुन्डल बिराजऽ,
थारा मोती नऽ मन मोयो, थारी याद आवऽ॥
गला तुम्हारा माळा बिराजऽ,
थारी कंठी नऽ मन मोयो, थारी याद आवऽ॥
हाथ तुम्हारा पोची बिराजऽ,
थारी बंसी ने मन मोयो, थारी याद आवऽ॥
पांव तुम्हारा नेऊर सोहऽ,
थारा झाँझर नऽ मन मोयो। थारी याद आवऽ॥
संग तुम्हारे राधा सोहऽ,
थारी जोड़ी नऽ मन मोयो, थारी याद आवऽ॥

स्रोत– श्रीमती गंगाबाई तोमर–दवाना

हे चारभुजा के नाथ! मुझे तुम्हारी याद आती है। बार-बार मैं तुम्हें याद कर रही हूँ। तुम्हारी हर पल याद आती है। आपके शीश पर मुकुट विराजित है। उस पर लगी कलंगी ने मेरा मन मोहित किया है। मुझे आपकी याद आती है। आपके कानों में कुण्डल है और उसमें लगे मोती मुझे मोहित करते हैं। मुझे आपकी उस छवि की याद आती है। आपके गले में सुन्दर माला है। साथ में आपके गले में कंठी है। उस कंठी ने मेरा मन मोह लिया है। उस अलौकिक छवि की याद मुझे बार-बार आती है। आपके हाथों में पोहची (निमाड़ी गहना) है और हाथों में रखी बाँसुरी ने तो मुझे आनन्द के सागर में डुबो दिया है। मुझे बार-बार उस छवि की याद आती है। आपके पाँवों में नेऊर (निमाड़ी गहना) है और उसके साथ ही आपके पैरों में पायल है। पायल की झंकार से मेरा मन आनन्दित है। मेरी आँखों में तुम्हारी छवि बस गई है। बार-बार मुझे तुम्हारी याद आती है। आपके साथ में राधिकाजी विराजमान हैं। आपकी इस सुन्दर जोड़ी ने मेरा मन मोहित किया है। आपकी यह छवि मुझे बार-बार याद आती है।

छोटी-छोटी गऊवा छोटे-छोटे ग्वाल।
छोटो म्हारो मदन गोपाल।
काँ रय गऊवा नऽ काँ रय ग्वाल।
काँ रय म्हारो मदन गोपाल।
छोटी-छोटी गऊवा छोटे......... ॥
वाड़गा रय गऊवा, नऽ वाड़गा रय ग्वाल।
मयला मऽ रय म्हारो मदन गोपाल।
छोटी-छोटी गऊवा छोटे......... ॥
काई खाय गऊवा, नऽ काई खाय ग्वाल।
काई तो खाय म्हारो मदन गोपाल।
छोटी-छोटी गऊवा छोटे......... ॥
घास खाये गऊवा नऽ दूध पीये ग्वाल।
माखण खाये म्हारो मदन गोपाल।
छोटी-छोटी गऊवा छोटे-छोटे ग्वाल।
छोटो सो म्हारो मदन गोपाल॥

स्रोत- श्रीमती गोपीबाई चौहान-दवाना

छोटी-छोटी गायें हैं, छोटे-छोटे ग्वालबाल हैं और उनमें छोटे हैं मदनगोपाल। कहाँ पर रहेंगी गायें, कहाँ पर ग्वालबाल और कहाँ रहेंगे मदनगोपाल? बाड़े में (एक प्रकार का पशुओं का रहने का स्थान) गायें रहेंगी। उनके निकट झोपड़ी में ग्वालबाल रहेंगे और महल में मदनगोपाल रहेंगे। क्या खायेंगी गायें, क्या खायेंगी ग्वालबाल, क्या खायेंगे मदनगोपाल? गायें घास खायेंगी, दूध ग्वालबाल पीयेंगे और माखन मदनगोपाल खायेंगे। छोटी-छोटी गायें हैं, छोटे से ग्वालबाल हैं

और उनमें छोटे मदनगोपाल हैं। बालकृष्ण सब गोप ग्वालबालों में सबसे छोटे हैं। उन्हें प्रसन्न करने के लिए सब मिलकर यह गीत गाते हैं।

हीरा रे... कुण दीसे गोरधन थारा लाकड़ा, कुण तो दिसे आग।
कुण समटऽ गोरधन थारी साड़ी नऽ, कुण धोवऽ रे दाग॥
वो हीरा वो... परबत रे दीसे गोरधन थारा लाकड़ा, बिजली तो दिसे आग।
कि भुतावल्यो रे समटऽ गोरधन थारी साड़ी, नदी तो धोवऽ दाग रे .... ॥
वो हीरा रे... पेलई से पागा का काई बाँधणा, धोयो-धोयो रंग जाय।
पराई रे तिरिया सी काई हाँसणा बोलण, कचेरी मऽ बांध्यो रे जाय......... ॥
वो हीरा कुसमल पागा का बांधणा नहीं, धोयो-धोयो रंग जाय।
पराई रे तिरिया सी हाँसणा बोलणा, चतुर तो जीती जाय रे......... ॥
वो हीरा वो सूको अम्बो जेको सरबड़्यो, कयरी तो हिलोला रे खाय।
कि चाखण वालो चाखी गयो, मूरख तो कावा रे खाय रे। ....
वो हीरा वो... चारई रे गोरी वो, चारई सार की।
गई पनघट की वाट रे, कि एक रे गोरी मुड़्यो काटिलो
तीनई तो रई रे बिलखाय। ....
वो हीरा कुण रे हेड़ऽ गोरी थारो काटिलो, कुण तो तीकऽ रे पांव।
कि नावी रे हेड़ऽ गोरी थारो काटिलो, स्वामी तो तोक रे पांव। ....
वो हीरा... वो... संवदारया रे घटा जेका ददपणा,
गवली तो गावऽ गीत, दलणऽ रे वालई करम फुतलई
बाजूबंद झोला रे खाय। ....
वो हीरा... प्रथम रे सारा देवी शारदा, गणपति का लागां रे पांय।
कंठ मऽ रे माता दीजे घेंघलई, भुवानी का लागां पांय।
हीरा रे... किनऽ रे मांड्या मांडव थारा मांडवा,
किनऽ रे देख्या धारा का कोटऽ, किनऽ रे देखी थारी मंधाता। ....
हीरा रे... राम न देख्या मांडव मांडणा,
लछमण नऽ देख्या धारा कोट, सीता माता नऽ देखी मंधाता।
हीरा रे... हाथ मऽ रे रखणा तेज पावलई
धामण को रे बठाडा डांड, पयलो रे झटको देवां रे सुगसुयड़ी।
दूसरो देवां रे शीशमऽ।
हीरा रे... पानऽ रे बिना पान पियलई, गोया बिना झूरऽ रे गाय।
के मरद रे, बिना झुरऽ रे घर की स्त्री, बेटा रे बिना झुरऽ माय।
हीरा रे... चारई रे जुवान्या चारई सारका, चल्या रे कलाई दूकान।
वाटकी की करजे बेटा घुटकी, तुमऽ को लीजे बेटा चार।

हीरा रे... बड़ा रे घर का बड़ा-बड़ा वटला।
छोटा रे घर का छोटा वटला।
बड़ा घर की बड़ी-बड़ी बढ़ई, छोटा घर की छोटी रे बढ़ई।
बड़ा घर का बड़ा आँगणा, छोटा घर का छोटा आँगणा।
हीरा रे... चालर चर से माता चमकती, चरऽ ते बिराणी जिरात।
चालर का रे खवाण्या घुंघरू, ढूंढऽ रे सारा गुवाल।
हीरा रे... कालई रे नऽ वादलई, धुखऽ की तरफ सी उठी रे।
झाड़ी से झाड़ी टकराय, बरात्री रे कालई वादलई।
खोदरा रे खाल्या एक करी गई।
हीरा रे...गाय रे... सौ पूला खाई गई रे घास।
मही रे दूध का वदऽ खाल्या खोदरा।
माखण की बँधी रे पालऽ।
हीरा रे... कान्हा रे गोरधन हुई रे कई जुगमुगी
चन्दर वालई देख रे ख्याल, गोरधन को रे कर्‌यो रे डोबरो।
चन्दन वालई भागऽ रे द्वार।
हीरा रे... परकी रे दीवालई जेकी पर गई
अबर की दीवालई आज, राणा को होय तो रे रण मऽ आवजे
लौंड़ी को होय तो दपड़ी रयणे।
हीरा रे... बयड़ी रे का आड़ व्हाँ छे चीणा बोर।
म्हारा रे बराबर गावण वाला गावजे रे।
नहीं तो हगाड़ा छे मण बोर।........
हीरा रे... खेती रे खेड़ा कुंदा माल
बइल रखांगा दौदालऽ, बयऊ लावां नदिया पार की
घूंघट मऽ रे जाय।
हीरा रे... नीलई रे तूमड़ा का नीला तूमड़ा
नीलई रे वासण की जालऽ, नीलई रे टोपी कुंदई राणा
लई गयो काजल राणी को नावऽ।
हीरा रे... बयड़ा का रे नऽ वाड़ा, जेका कई चाकला।
वाचरू न मांड्यो ख्याल, वई से नऽ उतर्‌या देव डोंगरिया,
तीसई नाटी गायऽ।

स्रोत-श्री वीरेन्द्र यादव-सेंगावां, श्री शान्तीलाल धनगर-दवाना

(हीरा रे... लम्बी लय टेक के साथ, गोवर्धन पड़वा के दिन धनगर समाज के लोग हीरा (हीड़) गाते हैं। हीड़ कार्तिक पड़वा पर गोरधन के समक्ष गाये जाने वाले दोहेनुमा गीत हैं। इसे

दो दल गाते हैं। एक दल प्रश्न करता है। दूसरा दल उसका उत्तर देता है।)

हे गोवर्धन! तुम्हारी मृत्यु हो गई है। तुम्हारी मृत्यु पर कौन तुम्हें जलाने के लिए लकड़ियाँ देगा? कौन तुम्हारी चिता प्रज्ज्वलित करेगा? कौन तुम्हारी चिता की राख को समेटेगा? कौन उस स्थान को साफ करेगा, जहाँ तुम्हारी चिता जली थी? हे गोवर्धन! तुम्हारी चिता के लिए लकड़ियाँ पर्वत देंगे। बिजली तुम्हारी चिता प्रज्ज्वलित करेगी। आँधी तुम्हारी चिता की राख समेटेगी और नदी उस स्थान को पवित्र करेगी, जहाँ पर तुम्हारी चिता जली थी। पीले रंग के साफे का क्या पहनना? उसका रंग बार-बार धुलने पर उड़ जाता है। पराई स्त्री से क्या प्रेम करना। वह प्रेम कभी भी तुम्हें कचहरी तक ले जा सकता है। केशरिया रंग के साफे को बाँधना नहीं। उसका रंग भी धोने से उतर जाता है। पराई स्त्री से चतुर मनुष्य ही जीत सकता है। सूखा हुआ आम पुनः हरा हुआ और उस पर आम लगे। चतुर मनुष्य ने अपना काम पूरा कर लिया। मूरख मनुष्य पछताता रहता है। चार सहेलियाँ बराबर की हैं। चारों पानी लेने जा रही हैं। एक सहेली को रास्ते में पैर में काँटा चुभ गया और टूट गया। तीनों सखियाँ अपनी सहेली के साथ रो रही हैं।

हे गोरी! कौन तुम्हारा काँटा निकालेगा? कौन तुम्हारा पाँव सँभालेगा? नाई तो तुम्हारा काँटा निकालेगा और तुम्हारे स्वामी तुम्हारे पाँव सँभालेंगे। सुबह की छटा जब देखने लायक होती है, जब दूध दुहा जा रहा हो। माखन बन रहा है। यह तभी संभव है, जब धनगर लोग गाँव के बीच में हों। मैं चक्की चलाने वाली नाजुक-सी स्त्री हूँ और चक्की पीसते समय उसके बाजूबंद झूम रहे हैं। हे हीरा! प्रथम तो देवी सरस्वती का स्मरण करें। श्रीगणेशजी के चरण स्पर्श करें। कण्ठ में गुँजायमान आवाज दे। भवानी माता के चरण स्पर्श करें। हे हीरा! किसने माण्डवगढ़ की रचना की है? किसने 'धारा' नगरी याने धार को देखा है और किसने 'मान्धाता' ओंकारेश्वर को देखा है? हीरा रे! रामचन्द्रजी ने गढ़ माण्डव को देखा है, लक्ष्मणजी ने धार नगरी को देखा है और माता सीता ने मान्धाता यानी ओंकारेश्वर देखा है। हे हीरा! हाथ में तेज कुल्हाड़ी रखना चाहिए। उसमें अजगर जैसा मोटा डाड होना चाहिए। पयला झटका 'सुगसुयड़ी' के पेड़ पर चलाना चाहिए और उसके बाद शीशम का पेड़ काटना चाहिए।

हे हीरा! पत्तों के बिना पीपल कैसा? गोया गायों के बिना सूना होगा। मर्द यानी पुरुष के बिना स्त्री को कोई मान-सम्मान नहीं होगा। बिना पुत्र की माता हमेशा रोती रहेगी, याद करती रहेगी। हे हीरा! चार जवान चारों बराबर के हैं। वे चारों शराब की दुकान पर डटे हैं, कटोरी में डालकर शराब पी रहे हैं। शराब पीने के बाद वे कटोरी चाट रहे हैं। हे हीरा! बड़े घर का बड़ा ओटला, छोटे घर का छोटा ओटला होता है। बड़े घर की बड़ी बड़ाई होती है। छोटे घर की छोटी तारीफ होती है। बड़े घर का बड़ा आँगन और छोटे घर का छोटा आँगन होता है। हीरा रे! झालर गाय किसी और की जिरात यानी चरने के स्थान पर चर रही है, झालर गाय के घुँघरू कहीं खो गये हैं और ग्वाले लोग उन्हें ढूँढ रहे हैं। हीरा रे! काली बदली उठी है उत्तर दिशा की ओर से। तेज हवा से पेड़ से पेड़ टकरा रहे हैं और काले रंग का बादल बरस गया। बरसने से नदी-नालों में पूर आ गयी है। हीरा रे! एक गाय सौ पिंडी घास खाती है। दूध और दही की नदियाँ बह

निकलीं और माखन की तो दीवार बन गई है। हीरा रे! कृष्ण भगवान और गोरधन ग्वाले में लड़ाई हो गई। चन्द्रावली देख रही हैं। गोरधन का शीश कट गया लड़ाई में। चन्द्रावली अपने घर के दरवाजे की ओर भागी है।

हे हीरा! पिछली दीवाली पिछले साल गई। इस वर्ष की दीपावली आज है। यदि शूरवीर योद्धा हैं, तो रणक्षेत्र में आना और यदि दासीपुत्र होगा तो छुप जायेगा। हीरा रे! पहाड़ की ओट में चीनी बेर का पेड़ है। हे गाने वाले! मेरे बराबर गाना। यदि मेरे बराबर नहीं गाया तो छः मन बेर उठाना पड़ेगा। हे हीरा! खेती करेंगे, जहाँ कुंदा घास होगी। यानी उसे साफ करके उस पर खेती करेंगे। बैल मजबूत रखेंगे। पत्नी लायेंगे वो नदी के पार घूँघट की ओट में रहेगी। हरे रंग के तरबूज हैं। हरे रंग के बाँस हैं। हरे रंग की टोपी पहने कुन्दई राणा है और वे रानी काजल को छोड़कर चले गये हैं। हे हीरा! पहाड़ी है, जो काफी लम्बी-चौड़ी है। वहाँ पर मैदान है। उस मैदान में गाय का बछड़ा खेल दिखा रहा है। इतने में आकाश से देवता पर्वत पर उतरते हैं। इनको देखकर गाय प्यासी ही घर आ जाती है।

हाँ कसी आऊं रे कन्हैया म्हारा घर काम घणेरो.........
दस बजऽ हऊं रोटी पोऊं, बारा बजऽ हऊं सोऊं।
रे चार बजऽ हऊं घट्टी पीसूं, छाछ बिलाऊं रे॥
कसी आऊं रे.......... ॥
ससरा जी तो जिमणऽ बठ्या, सासु मांगऽ पाणी रे।
बड़ा जेठ सा जिमणऽ बठ्या, थाल परोसूं रे।
कसी आऊं रे.......... ॥
छोटी बइसा रो माथो दुखऽ, भाभी ऊपर आवो रे
छोटा देवर सा जिमण बठ्या, माखी उड़ाऊं रे।
कसी आऊं रे.......... ॥
ससराजी तो बूढ़ा बठ्या, कुसंबो लई बुलावो रे।
हाथ-पाँव तो चलता धूजऽ, लाठी सम्भालूं रे।
कसी आऊं रे.......... ॥
बड़ा घराना की हऊं छे, कन्हैया मन्दिर कसी आऊं रे।
हाथ जोड़ी नऽ करूं विनती, तू ही चल्यो आ रे।
कसी आऊं रे.......... ॥
चन्द्रसखी ब्रजबाल की शोभा हरि चरण चितवारी रे।
वृन्दावन की कुंज गली मऽ रास रमायो रे।
कसी आऊं रे कन्हैया म्हारा घर काम घणेरो रे॥

स्रोत- श्रीमती शकुन्तला चौहान-दवाना

हे कन्हैया! मैं कैसे तुम्हारे मन्दिर (घर) आऊँ? मेरे घर बहुत सारा काम है। दस बजे रोटी बताती है, बारह बजे सोती हूँ और सुबह के चार बजे से चक्की (घट्टी) चलाकर अनाज पीसती हूँ। उसके बाद छाछ बिलौती हूँ। इतने कामों में व्यस्त हूँ। मैं कैसे तुम्हारे घर आऊँ? इसके बाद ससुरजी खाना खाने बैठते हैं। सासुजी पानी माँगती हैं। इसके बाद बड़े जेठजी साहब खाना खाने आते हैं। उनकी थाली परोसती हूँ। इतने कामों में व्यस्त हूँ। मैं तुम्हारे मन्दिर में कैसे आऊँ? छोटी ननद रानी का सिर दर्द कर रहा है। वह मुझे सिर दबाने के लिए ऊपर बुला रही है और छोटे देवर खाना खाने बैठे हैं। उनकी मक्खियाँ उड़ाना भी मेरा काम है। इतने भारी काम में व्यस्त हूँ। मैं तुमसे मिलने कैसे आऊँ? काम पर काम चलते हैं। ससुरजी खाना खाने के बाद तम्बाकू पीते हैं। वे तम्बाकू और हुक्का लेकर बुला रहे हैं। उनके हाथ-पाँव काम नहीं करते। उन्हीं लाठी के सहारे चलाकर लाती हूँ। उनकी लाठी भी सँभालना जरूरी है। इतनी व्यस्तता के कारण तुम्हारे दर्शन करने कैसे आऊँ?

मैं बहुत बड़े घर की हूँ। बाहर निकलकर मन्दिर किस प्रकार आऊँ? लोग नाम धरेंगे। मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ। तुम्हीं मन्दिर से चलकर मेरे घर आकर मुझे दर्शन दो। चन्द्रसखी की विनती है- वह तो तुम्हारे बालस्वरूप पर बारी जाती है। तुमने वृन्दावन की कुंज गलियों में रास रचाया है। हे कान्हा! उसी रासमण्डल की शोभा मुझे घर बैठे दिखा जाओ। मेरे घर में अत्यधिक काम है।

नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविन्दा।
नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविन्दा॥
सब देवन में मऽ आप बड़े हैं।
पूजन में महादेवा, भजो रे मन गोविन्दा......... ॥
सब सखियों में राधा बड़ी हैं।
नव लख तारा बीच चंदा, भजो रे मन गोविन्दा......... ॥
सब नदियों में सरजू बड़ी है।
मोक्ष तारण तट गंगा, भजो रे मन गोविन्दा......... ॥
सांवली सुरतिया मेरे मन भाई,
लख-लख आये आनंदा, भजो रे मन गोविन्दा......... ॥
एक घड़ी नित हरि को भज ले,
छोड़ के गोरख धंधा, भजो रे मन गोविन्दा।
नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविन्दा॥

स्रोत- श्रीमती गोदावरीबाई तोमर

हे नटवर! हे नंदजी के लाल! मैं आपका मन से स्मरण कर रही हूँ। हे गोविन्द! आपका नाम प्रतिपल स्मरण कर रही हूँ। सभी देवताओं में श्रीकृष्णजी बड़े हैं, जो छत्तीस कलाओं से युक्त हैं। लेकिन सबसे पहले पूजा में बड़े हैं शिवशंकरजी। सभी सखियों में राधिकाजी बड़ी हैं

और वे ऐसी शोभायमान हैं, जैसे नौ लाख तारों के बीच चन्द्रमा शोभा पाता है। सभी नदियों में सरयू नदी बड़ी है। बड़े होने का कोई महत्त्व नहीं है। मोक्ष प्राप्ति के लिए तो गंगा मैया ही है। गंगा मैया के तट पर ही मुक्ति प्राप्त होती है।

हे श्याम! तुम्हारी साँवली-सलोनी छवि मेरे मन में समा गई है और उसे बार-बार देखकर मेरा मन प्रफुल्लित हो जाता है, एक घड़ी ही भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण कर लो, तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा। भवसागर से पार हो जाओगे। घर के काम तो हमेशा चलते रहेंगे। इस सब गोरखधन्धे को छोड़कर हरि का नाम स्मरण एक घड़ी के लिए तो जरूर कर लो। उन्हें एक घड़ी तो याद करो, तो तुम संसार सागर से पार हो जाओगे।

थारे कौड़ी लगे न दाम, मिठाई ले लो पंचरंगी।
घेवर में घनश्याम बिराजे, दाऊजी के भैया।
फेनी के हर तार में बोले कृष्ण-कन्हैया।
देखो खड़ी मैं राधेश्याम।
मिठाई ले लो पंचरंगी......... ॥
नुकती में श्रीनाथ बिराजे, नाथ द्वारका वाले,
मावा-बाटी मनमोहन श्याम मुरलिया वाले।
देखो चकती में चारो धाम।
मिठाई ले लो पंचरंगी......... ॥
मालपुए और रसमलाई में है, चक्र सुदर्शनधारी।
रसगुल्ले में राधेजी हैं, श्री वृषभान दुलारी।
देखो बरफी में बैठे बलराम।
मिठाई ले लो पंचरंगी......... ॥
हलवे में लक्ष्मण भैय्या, जिनका रूप निराला।
श्रीखण्ड में बैठे सियाराम।
मिठाई ले लो पंचरंगी......... ॥
राजभोग में राम बिराजे, संग में जनक दुलारी।
कलाकंद में कौशल्या जी पर बलीहारी।
केशर डाली पिस्ता बादम।
मिठाई ले लो पंचरंगी......... ॥
मोती पाक में माता गवरा संग भोले भण्डारी।
देखो जलेबी में बैठी है मैया बीजासन वाली।
शारदा मंडल ये प्रणाम।
मिठाई ले लो पंचरंगी......... ॥

– श्रीमती गंगाबाई तोमर-दवाना

तुम्हें रुपया, पैसा, कौड़ी कुछ नहीं लगेगा। ये पंचरंगी मिठाई ले लो। यह पंचरंगी मिठाई अनोखी है, अद्वितीय है। घेवर में घनश्याम हैं, जो बलरामजी के भाई हैं। फेणी मिठाई के हर तार में कृष्ण कन्हैया विराजित हैं। रबड़ी में राधा सहित श्याम विराजित हैं। नुकती में श्रीनाथजी हैं, जो द्वारिका में बसते हैं। मावा-बाटी में मनमोहन श्याम मुरली बजाते हैं। चकती मिठाई में चारों धाम विराजमान हैं। मालपुए और रसमलाई में चक्र सुदर्शनधारी हैं। रसगुल्ले में राधिकाजी हैं, जो वृषभानु की दुलारी हैं। बरफी में बलरामजी बैठे हैं। हलुवे में हनुमानजी हैं, जो माता अंजनी के लाल हैं। लड्डू में लक्ष्मण भैया हैं, जिनका रूप निराला है। श्रीखण्ड में सीताजी सहित रामजी विराजमान हैं। राजभोग में रामजी विराजमान हैं, संग में राजदुलारी सीताजी भी हैं। कलाकंद में कौशल्या माता विराजमान हैं। केशर और पिस्ते से बनी मिठाई की बलिहारी है। मोतीपाक मिठाई में माता गौरादेवी विराजमान हैं। जलेबी में बीजासन वाली मैया बैठी हैं। शारदा-मण्डल इन्हीं मिठाइयों के नाम से अपने-अपने इष्ट को मिठाइयों के आस्वाद में महसूस करते हुए सभी देवताओं का गुणगान कर रहा है। यह महिलाओं की अद्‌भुत कल्पना है।

एक बसंत पंचमी मस्त, माघ को मयनो।
मन मोहन साँवरा समली नऽ खेलनऽ आवजो॥
एक राधा रुक्मणी, सकल गुवालन आई।
गोकुल मथुरा दरम्यान धूम मचाई।
एक असी तो मोहन नऽ खबर पाई।
तरह, तरह का रंग भरी नऽ किवी चतुराई।
रंग लूटी लियो महाराज, बिलम नहीं करजो।
मन मोहन साँवरा समली नऽ खेलनऽ आवजो॥
मिली गया बीरजका लोग आलम छे सारो,
राधा नऽ पल्लव मन मोहन को पकड़्यो।
भर्‌यो रे रंग पिचकारी उड़ऽ फुवारा,
राधा नऽ गुलाल मन मोहन पर डार्‌यो।
एक झूमी पड़्या नंदलाल कई तो जाणो,
मन मोहन साँवरा समली नऽ खेलनऽ आवजो॥
सब सखिणऽ मिली नऽ रंग मोहन पर छिटकऽ,
मची रही बिरज मऽ धूम मयनू फागुण को।
मिली गया नंदजी का लाल मुलाजो कांको,
दई डालो हमारो फाग देसी गवलन को।
हुई गई रे गड़दा, पेच करऽ जुरमानो,
मन मोहन साँवरा समली नऽ खेलनऽ आवजो॥
बखत पऽ जमऽ रागनी बखत पऽ खूब पाया।

बखत सी उड़ऽ गुलाल घटा खूब छाया।
ई केशवराम उस्ताद हरि गुण गाया।
जीवऽ से खेले फाग मुवा सो गया।
आई आवल की घड़ी राम परवानो।
मन मोहन साँवरा समली नऽ खेलनऽ आवजो॥

स्रोत- महंत भँवरदास-दवाना

माघ महीने में वसंत पंचमी का दिन आया है। मनमोहन श्याम सँभलकर होली खेलने आना। राधा, रुक्मिणी और अन्य ग्वालिनें आई हैं। गोकुल और मथुरा के बीच धूम मची है। इस प्रकार की खबर मोहन ने पाई है। विभिन्न प्रकार के रंग घोलकर पिचकारियाँ सभी ने तैयार कर ली हैं, रंग के मौसम का आनन्द लूटने के लिए। जब सभी जनसमूह इकट्ठा हो गया, तो राधा ने श्याम के दुपट्टे का पल्ला पकड़ लिया और पिचकारी में भरा रंग श्याम पर छिटक दिया है। श्याम राधा से लिपट गये हैं और सोच रहे हैं किधर जाएँ?

इसके बाद सभी सहेलियों ने श्याम पर रंग छिटका है। सारे ब्रज में फागुन माह की धूम मची है। जब श्रीकृष्णजी मिल ही गये हैं, तो उनसे रंग खेले बिना कैसे छोड़ दें? कोई बन्दिश नहीं है। दस ग्वालिनों ने कृष्ण को पकड़ लिया और कहा- हम दसों ग्वालिनों को होली का उपहार (फगवा) दो। होली खेलते-खेलते सभी रंग में सराबोर हो गई हैं।

वक्त-वक्त की बात है। वक्त पर ही राग-रागिनी गाई जाती है। वक्त आने पर ही उनका खूब रंग जमता है। वक्त पर ही होली का त्योहार आता है। समय पर ही गुलाल के बादल छाते हैं। यही बात केशवराव सभी से कह रहे हैं- जीवित है, तो होली खेलेंगे। मरा हुआ आदमी, क्या ख़ाक होली खेलेगा? कब परब्रह्म परमेश्वर का बुलावा आ जाए।

चौक: *रूत बसंत होली आई, वो बाल ग्वालों के संग।*
श्याम मधुवन में, मन मोहन मुरली बजाई।
चौक: *वो मुख सी मुरली बजावऽ, धर मुरली अधर सुनावऽ।*
वो नट नागर, कई रागणी गावऽ, उमरावजी! कला श्याम देव की गावऽ
छै राग छत्तीस रागिनी और दुरपत्ती तान।
उमरावजी! रूषी मुनीयन कऽ मन भाई।
दोहा: *सुनी नऽ ठाड़ा रही गया रवि-रथ चंद्र-कुसंग।*
इन्द्र अखाड़ा की अप्सरा, हुयो देव लोक दंग।
वो मीठी धुन सुनाई, वो ग्वाल बालो संग।
श्याम मधुबन में, मनमोहन मुरली बजाई।
चौक: *वा मधुर-मधुर धुन बाजी, वा भर निद्रा मऽ जागी।*

चली ब्रजनारी, जिन घर का धंधा त्यागी।
उमरावजी! कोई पाटीयन मांग सवारऽ
कोई-कोई मोती गूँथ लिये बिन्दी झालर माय
कोई नैनन कजला सारऽ।

दोहा: *नक छक गहना पेर बदन, पर सुनेरी सिनगार।*
दुलरी तिलरी पंचलरी, गल बीच मोतियन हार।
वो सब सिणगार सजाई, बाल-ग्वालऽ नऽ संग।
श्याम मधुबन मऽ, मन मोहन मुरली बजाई।

चौक: *आभूषण बारा तन पऽ सजाया,*
ली हात झारी पिचकारी, चली घर-घर।
श्रीकृष्ण गुण गाया, मन मोहन कऽ अरज लगावऽ।
ब्रजनारी भर पिचकारी, ग्वाल बालनऽ का संग मोहन पऽ रंग बरसावऽ।

दोहा: *अबीर गुलाल का बादल छाया, मलिन भई रवि ज्योत।*
रंग मऽ हुई गया बाल गुवाल, ब्रजनारी लोथम लोत।
होली सब का मन भाई, ग्वाल, बालनऽ कऽ संग।
श्याम मधुबन में, मन मोहन मुरली बजाई।

चौक: *प्रभु दर्शन का हित आया, वो गगन मंडल पर आया।*
देवगण सारा वो कुसुमल फूल बरसाया।
उमरावजी! पाया दर्शन देवता सारा,
जो नयन सी निरखऽ हरि, कटऽ जनम का पाप।
वैकुंठ धाम पठाया।

दोहा: *संमत चौदा को साल कर्‌यो छंद तैयार।*
इना दिन शंकर हरि का चाकर, विनवै बारम्बार।
वो प्रभु की होली गाई, वो ग्वाल बालनऽ का संग।
श्याम मधुबन मऽ, मोहन मुरली बजाई॥

वसन्त ऋतु आई, उसके साथ ही होली का त्योहार भी आ गया है। ग्वालबालों को साथ लेकर मोहन ने मधुवन में मनमोहक मुरली बजाई है। उन्होंने मुख पर मुरली रख ली है और होठों से बाँसुरी बजाने लगे हैं। वो नटनागर कई प्रकार की राग-रागिनी के साथ बाँसुरी बजा रहे हैं। वह ऐसी-वैसी बाँसुरी नहीं बजा रहे हैं, वेद-शास्त्रों में वर्णित छत्तीस रागिनियों को प्रवीणता के साथ बजा रहे हैं कि उस बाँसुरी की तान पर ऋषि-मुनिजन प्रमुदित और प्रसन्न हैं।

उस मुरली की मधुर तान सुनकर सूर्य का रथ और चन्द्रमा का अश्व खड़ा रह गया है। इन्द्र अपने स्वर्ग में अप्सरा सहित चकित रह गये हैं। ऐसी मनमोहने वाली राग से बाँसुरी बजाई कि सब देवतागण आश्चर्यचकित और मोहित हो गये।

उस मुरली की मीठी तान जब ग्वालनों के कानों में पड़ी, तो जो निद्रा में थी, वह जाग पड़ी। उठकर उन्होंने अपने घर के कामों का त्याग कर दिया। सभी ग्वालनें उठ गई हैं। कोई चोटी बना रही है, कोई मोतियों को माँग सजा रही है, किसी ने अपने बालों में ही मोतियों को गूँथ लिया है। कोई आँखों में काजल लगाकर तैयार हो रही हैं। प्रत्येक अंग के जो गहने थे, उन्होंने पहन लिए हैं। मानो सोने का शृँगार किया हो। दुलबी, तिलरी, पंचलरी मोती की मालाएँ पहन ली हैं। सारी की सारी मालाएँ उनके गले में शोभायमान हो रही हैं और वे पूरा शृँगार करके मधुवन की ओर चल दी हैं। नाना प्रकार के आभूषण पहनकर हाथों में झारियाँ और पिचकारी लेकर घर से निकलकर भगवान श्रीकृष्ण के गुणगान करती हुई चली जा रही हैं। मधुवन में जाकर श्रीकृष्ण से विनती कर रही हैं।

सभी ग्वालनों ने श्रीकृष्ण के साथ होली खेलना शुरू किया है। अबीर और गुलाल के बादल ही छा गये हैं। चन्द्रमा की छवि भी मलिन लग रही है। सभी ग्वालबाल रंग में सराबोर हो गये हैं। ब्रज नारियाँ सभी की सभी कीचड़ और रंग में सराबोर हो गई हैं। यह होली सभी के मन को भा गई है। प्रभु के दर्शन करने हेतु सभी देवता आए हैं और वे गगन मण्डल से फूल बरसा रहे हैं। देवताओं ने श्रीकृष्णजी के दर्शन किये और अपने आपको धन्य किया है। जो श्रीकृष्ण के इस रूप के दर्शन करता है, उनके जन्म-जन्मातर के पाप कट जाते हैं।

संवत् 1400 में इस फाग गीत की रचना हुई है। वह दिन सोमवार का था। जिस रचनाकार ने रचना की, वह अनाम है। वह हरिभक्त भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में विनती कर रहा है और प्रभु श्रीकृष्ण के गुणगान कर रहा है।

आई-आई रे बसंत ऋतु भंवरा गूंजऽ,
अम्बुआ की डाल कोयल बोलऽ।
शीश बनाजी को सेहरा सोवऽ।
लरी नऽ का बीच-बीच हीरा चमकऽ।
आई-आई रे बसंत ऋतु.......... ॥
कान बना कऽ कुंडल सोवऽ।
कुंडल का बीच-बीच मोती चमकऽ।
आई-आई रे बसंत ऋतु.......... ॥
गला बना का माला सोवऽ।
कंठी का बीच-बीच हीरा चमकऽ।
आई-आई रे बसंत ऋतु.......... ॥
हाथ बना का घड़िया सोवऽ।
अंगूठी का बीच-बीच नगीना चमकऽ।
आई-आई रे बसंत ऋतु.......... ॥

संग बना का बन्दड़ी सोवऽ।
जोड़ी का बीच-बीच हीरा चमकऽ।
आई-आई रे बसंत ऋतु भंवरा गूंजऽ।
अम्बुआ की डाल कोयल बोलऽ॥

स्रोत- श्रीमती हरिकुँवर बाई-निमरानी

अहा! वसंत ऋतु आ गई। भँवरे गूँजने लगे हैं। आम की डाल पर कोयल बोलने लगी है। दूल्हे के शीश पर साफा शोभायमान है। उस साफे में मोतियों की लड़ियों के साथ हीरे शोभायमान हैं। दूल्हे ने कान में कुण्डल पहने हुए है। कुण्डलों में चमकीले मोती जड़ित हैं। दूल्हे के गले में माला शोभा दे रही है। उस माला के साथ कंठी भी जँच रही है। कंठी के बीच-बीच में हीरे जड़े हैं, जो अलग ही चमक रहे हैं। दूल्हे ने हाथ में कीमती घड़ी पहनी है। घड़ी के साथ हाथ की अँगुली में हीरे जड़ित अँगूठी भी पहन रखी है। दूल्हा और दुल्हन की जोड़ी सुहावनी लगती है। दोनों की जोड़ी के बीच में हीरे चमक रहे हैं अथवा दोनों हीरे के समान चमक रहे हैं।

अम्बे की डाल कोयलिया काली, बोले अमरत वाणी।
सजो रे सजो सणगार सजीनऽ, वसन्त गीत जसगावा।
अम्बे....................... ॥
केसरिया सालु सब पेरे, पेरी कुसुमल चोली।
नन्द नो कुंवर एकलो रे आयो, रमवा नऽ बलजोर।
अम्बे....................... ॥
चालो रे भैया बसन्त रमीये, आई बसन्त रुतु रुड़ी।
नरसिंग नो स्यामी बसन्त खेले, हो चमके चुड़िलो रे।
अम्बे....................... ॥

आम की डाली पर काली कोयल अमृत से सराबोर वाणी गुँजार कर रही है। सभी शृँगार करके तैयार होकर चलो। वसन्त के गीत गाये। वसन्त ऋतु की बड़ाई करें। सभी ने केशरिया रंग की साड़ी पहनी है। अंग में लाल रंग की चोली पहनी है। नंदजी के कुँवर कन्हैया अकेले ही सबको रास रमायेंगे। चलो भैया! वसन्त की शोभा देखने चलें। वसन्त ऋतु सबसे अलग ऋतु है। नरसिंहजी वसन्त के बहाने श्याम को याद कर रहे हैं। रास रमने में सभी की चूड़ियाँ चमक रही हैं।

बसन्त वदावां चालो ब्रज की नार रे।
सखि नन्द पोल ठाड़े मुरारी॥ टेक॥
नवी-नवी सकियां नवल छन्द गावे, नवल-नवल बल जोरी।
नवल सुणावे नवल ढप वाजे, नवल राधिका गोरी।

वसन्त............. ॥
नव-नव चीर कुसुमल पेरे, नवसत आभूषण सजिया रे।
नव-नव खेल करत मोहन से, नवल कानजी ने भजियो रे॥
वसन्त............. ॥
राधे भी चन्द्र भगा चन्द्रावली, भाम ललिता जाये।
चन्द्रावली घट-घट पूरवे, अम्बा मोर जब लेवे।
वसन्त............. ॥
चव-चव चन्दन अगर खुमका, उड़त गुलाल अवीर।
राधेजी हाथ लीदी पिचकारी, छिड़कत श्याम शरीर।
वसन्त............. ॥
शिवपुरी पर पुरी नग्र लोकमां, तीन लोक संध्या पावे।
प्रथम बदावो वसन्त पंचमी लीला, सूरदास गुण गावे।
वसन्त............. ॥

वसन्त ऋतु की पूजा करने सभी ब्रज की स्त्रियाँ चलो। नंदजी के दरवाजे में श्रीकृष्णजी खड़े हैं। नई-नई सखियाँ नये छंद गा रही हैं। एक दूसरे को छेड़ रही हैं। नये ढप बाजे बज रहे हैं। नये श्रृँगार में राधाजी खड़ी हैं। सभी ने नये लाल रंग के कपड़े पहने हैं। नये आभूषण पहने हैं। वे नये प्रकार के खेल-खेल रही हैं। राधिका, चन्द्रावली, भामा, ललिता आई हैं। चन्द्रावली आम के मोरों से सभी सजावट कर रही हैं। चन्दन, अबीर होली का गुलाल उड़ रहा है। राधाजी ने हाथ में पिचकारी लेकर श्याम पर रंग छिटक दिया है। शिवपुरी से तीनों लोकों में ऐसा आभास होता है मानो संध्या घिर आई हो। प्रथम बधावा वसन्त पंचमी का होता है। होली की शुरुआत होती है। सूरदारजी वसन्तपंचमी और होली के बहाने राधा-कृष्ण का गुणगान कर रहे हैं।

उतारो आरती, पुरुषोतम घर आविया।
मास अधिक मास पुरुषोतम पधार्या,
विष्णु रूपा, ब्रह्मस्वरूपा श्रीकृष्ण पधार्या।
उतारो आरती पुरुषोतम.......... ॥
माथे मुकुट मोर पीछ सोहे।
मोती केरी सेर बे बे।
मोती केरी सेर बे बे जोड़ ती सुहाविया।
उतारो आरती पुरुषोतम.......... ॥
काने कुंडल रूड़ा मीना कारी सोहे।
लटकणिया हीरा ना साथे।
लटकणिया हीरा ना साथे, कान मा लटकविया।
उतारो आरती पुरुषोतम.......... ॥

कड़ली काँधे बाजूबंद रुड़ा सोहे।
अंगलियु नी अंगूठी मा।
अंगलियु नी अंगूठी मा नीलम जड़ाविया।
उतारो आरती पुरुषोतम......... ॥
पीला पीताम्बर धारी प्रभुजी छे सोहे।
लीला-लीला पेंच शोभे।
लीला पेंच शोभे, ऐमे रे सोहे।
उतारो आरती पुरुषोतम.......... ॥
मुरली मधुर हाथ पकड़ी छे प्रेम की।
गाढ़ी गेली गोपी दौड़ी।
गाढ़ी गेली गोपी दौड़ी कान तो घुमाविया रे।
उतारो आरती पुरुषोतम.......... ॥
केशर चंदन ना तिलक ललाटे।
चंदन बिना चोखा साथे।
चंदन बिना चोखा साथे फुलड़े वधाविया।
उतारो आरती पुरुषोतम.......... ॥
सुन्दर सुहावणा श्याम सुन्दर सोहे।
नारायण ना पुरुषोतम ना।
नारायण ना पुरुषोतम ना हमें गुणला गाविया।
उतारो आरती पुरुषोतम घर आविया।
मास अधिक मासे पुरुषोतम पधारिया॥

आरती उतारिये आज पुरुषोत्तम भगवान घर आये हैं। अधिक मास के अन्तर्गत पुरुषोत्तम भगवान पधारे हैं। विष्णु के स्वरूप, ब्रह्म स्वरूप श्रीकृष्णजी घर आये हैं। जिनके माथे पर मुकुट और उसमें मोर पंख लगा है। मोती की दो-दो लड़े उस मुकुट में लटक रही हैं। कानों में कुंडल मीना जड़ित हैं। उन कुंडलों में हीरे जड़ित लटकने लगी हैं। बाहों पर बाजूबंद हैं। हाथ की अंगुलियों में नीलम जड़ित अँगूठियाँ हैं।

श्याम ने पीले रंग की रेशमी धोती पहन रखी है। उस पर हरा दुपट्टा कसा हुआ है। श्याम के हाथों में मुरली शोभित है, जो प्रेम की प्रतीक है। ऐली-गेली गोपियों को खूब छकाते हैं। वे उन्हें पकड़ने दौड़ती हैं। कान्हा को पकड़कर इधर-उधर घुमाती हैं। श्रीकृष्णजी के शीश (ललाट) पर केशर का तिलक लगा है। चन्दन के साथ चावल भी अनिवार्य रूप से लगे हैं, फूलों से कृष्णजी को बधाया गया है। इस रूप में श्याम सुन्दर अधिक ही सुन्दर लग रहे हैं। हम इन्हीं नारायण, इन्हीं पुरुषोत्तम प्रभु जी के गुणगान कर रहे हैं। आरती उतारिये आज भगवान पुरुषोत्तम हमारे घर पधारे हैं।

तुम जाजो खेत मेऽ हाळ गेरणऽ जाजो,
हाऊं रोटा देणऽ आई जाऊँगा।
असी राँदू मूंग की दाळ रे।
दुई चार कवुळ खाई जाऊँगा॥
बड़ो छोटो छे म्हारो वानो बाल रे,
अंसी राँदू मूंग की दाळऽ रे।
दुई चार कवुळ खाई जाऊँगा॥
लाल मिरची को पडी गयो काल रे,
कई सी उधार लई आऊँगा।
अंसी राँदू मूंग की दाळऽ रे।
दुई चार कवुळ खाई जाऊँगा॥
मत देजो भलती सलती गाळ रे,
समय पर हाऊं आई जाऊँगा।
अंसी राँदू मूंग की दाळऽ रे।
दुई चार कवुळ खाई जाऊँगा॥
काई हुई गाँव मऽ बबालऽ रे,
खेत म आई नऽ कई जाऊँगा।
अंसी राँदू मूंग की दाळऽ रे।
दुई चार कवुळ खाई जाऊँगा॥
तम देजो थाली पर थाप रे,
हाऊँ गीत तो गाई जाऊँगा।
अंसी राँदू मूंग की दाळऽ रे।
दुई चार कवुळ खाई जाऊँगा॥
तम जाजो खेत मऽ हाळ गेरनऽ जाजो।
हाऊं रोटा देणऽ आई जाऊँगा।

हे स्वामी! तुम खेत में हल चलाने जाना। मैं रोटी देने आ जाऊँगी। मैंने मूँग की जोरदार दाल बना ली है। मैं दो चार ग्रास खाकर खाना देने आऊँगी।

मेरे छोटे-बड़े बच्चे हैं। उन्हें सम्भालने में तो समय लगता है। इसलिए जल्दी से मूँग की दाल बना ली है। लाल मिर्ची घर में समाप्त हो गई है। कहीं से उधार मिर्ची माँगकर मैंने जोरदार मूँग की दाल बनाई है। ज्यादा समय हो जाये, भूख लगे तो थोड़ा सहन करना। गालियाँ देने मत लग जाना। मैं भी समय पर पहुँच जाऊँगी। खेत में आकर मैं गाँव के हाल-चाल आपको सुनाऊँगी, गाँव में क्या हुआ क्या नहीं हुआ। सब बातें खेत में आकर तुम्हें बताऊँगी। खाना खाने के बाद थोड़ा नाचेंगे-गायेंगे। तुम थाली पर थाप लगाकर बजाना। मैं थाली की थाप पर नृत्य गान

करूँगी। तुम खेत में हल हाँकने जाना। मैं रोटी लेकर आऊँगी। मैंने आज मूँग की दाल जोरदार बनाई है।

बालम रे म्हारी सुणी लेवो वात।
हाँऊ नी जाणऽ की खेत मऽ ॥
गोरी ओ तूकऽ जाणूं पड़ऽगाऽ
खेत मऽ काम तूकऽ करनूं पड़ऽगा।
बालम रे म्हारी.......... ॥
खेत मऽ जाऊँ तो मक घाम लगऽ रे।
हाँऊ तो तुमकऽ देऊ समझाय।
बालम रे म्हारी............. ॥
गोरी ओ तूकऽ जाणूं पड़ऽगा।
खेत मऽ काम तूकऽ करनूं पड़ऽगा।
खेत मऽ जाऊं तो म्हारो पेट दुखऽ,
संजा कऽ बुखार आई जाय।
बालम रे म्हारी सुणी लेवो वात।
हाँऊ नी जाणऽ की खेत मऽ।
गोरी ओ तूकऽ जाणूं पड़ऽगा।
खेत मऽ काम तूकऽ करनूं पड़ऽगा।

स्रोत- सुश्री ममता बड़ौले-खरगोन

पत्नी कामचोर है। अत: पति से कहती है- हे स्वामी! मैं खेत में काम करने नहीं जाऊँगी। मुझसे खेती का काम नहीं होता है। पति महोदय कहते हैं- हे प्रिये! तुम्हें खेत में जाना पड़ेगा और काम भी करना पड़ेगा। पत्नी-पति से कहती है, मैं खेत में जाऊँ तो मुझे धूप लगती है और यह धूप मैं सहन नहीं कर सकती हूँ। अत: इस कड़कती धूप में मैं खेत में काम करने नहीं जाऊँगी। पति-पत्नी से कहता है- धूप हो या छाँव हो, तुम्हें खेत में जाना ही पड़ेगा। काम करना ही पड़ेगा। पत्नी पुन: पति से कहती है- खेत में काम करने से मेरा पेट दर्द करने लगता है। साथ ही संध्या समय मुझे बुखार आ जाता है। अत: मैं खेत में काम करने नहीं जाऊँगी। पति-पत्नी से कहता है, पेट दर्द करे या बुखार आये। तुम्हें खेत में काम करने जाना पड़ेगा।

खेता मऽ छाई बहार, किरसाण भाई
खेता मऽ छाई बहार।
रोटा जुवार का हो, भाजी अमाड़ी की हो,
रोटी का साथ अचार।
किरसाण भाई खेता मऽ छाई बहार।
वाट छे कटली हो, रात छे अन्धारी हो।

माथा पर चारा का भार।
किरसाण भाई खेता मऽ छाई बहार।
कपास का फुलड़ा हो, पाणी का डाबरा हो।
गोफण कऽ हाथ सम्भाल।
किरसाण भाई खेत मऽ छाई बहार।
खेता मऽ छाई बहार, किरसाण भाई
खेता मऽ छाई बहार।

स्रोत- श्रीमती प्रेमलता नारमदेव-भोपाल

हे किसान भाई! इस समय तेरी खेती में बहार आ गई है। पानी अच्छा और समय पर गिरा। इसलिए सभी फसलें अच्छी हैं। जुवार की रोटी और अम्बाड़ी की भाजी निमाड़ का प्रिय भोजन है। वही खाना खाकर या उसे पोटली में बाँधकर उसके साथ अचार लेकर खेती की रखवाली करने जाना। रास्ता काटों भरा है। जूते पहनकर जाना, क्योंकि शाम तक तुम्हें खेत में रहना है। काम करना है। रात अन्धेरी भी है। आते समय तुम्हारे सिर पर चारे (घास) का गठ्ठर होगा, अतः सावधानी से चलकर घर आना।

कपास में फूल लग गये, फल भी लगने लगे हैं, फल यानी घेटे लग गये हैं। साथ ही ज्वार की फसल भी खड़ी है। उसे पक्षी नुकसान पहुँचायेंगे। अतः अपने हाथ में गोफन (एक रस्सी से बुना यंत्र) ले जाना और उससे पक्षियों को भगाना वरना वे फसल चौपट कर देंगे। किसान भाई इस समय तेरा खेत में रहना जरूरी है, क्योंकि खेत में सभी प्रकार की फसल पकने पर है। इस समय खेत में बहार छा गई है।

गऊ काटण नहीं जाऊँ रे, सायब जी
गऊ काटण नहीं जाऊ रे।
गऊ काटण म्हारी भौजई कऽ भेजो
उनकी रसोई हम रांधा, सायब जी।
गऊ काटण नही जाऊँ रे।
गऊ काटण म्हारी देराणी कऽ भेजो,
उनको पाणी हम भरां साहेब जी।
गऊ काटण नहीं जाऊँ रे।
गऊ काटण म्हारी सौत कऽ भेजो,
उनकी सेजा हम सोवां, सायब जी
गऊ काटण नहीं जाऊँ रे।

-'निमाड़ का लोक साहित्य समग्र' से साभारः रामनारायण उपाध्याय

मैं गेहूँ काटने नहीं जाऊँगी। हे प्रिये! मैं गेहूँ काटने नहीं जाऊँगी। गेहूँ काटने को मेरी

भौजी को भेजो। उनके हिस्से की रसोई हम बना लेंगे, मैं गेहूँ काटने नहीं जाऊँगी। गेहूँ काटने को मेरी देवरानी को भेजो। मैं उनके हिस्से का पानी भर लूँगी, लेकिन गेहूँ काटने नहीं जाऊँगी। गेहूँ काटने मेरी सौतन को भेजो। मेरी सौतन की सेज पर मैं सोयी रहूँगी। हे प्रिये! मैं गेहूँ काटने नहीं जाऊँगी।

मनऽ वायो संकर चार कपास रे,
कपास म्हारो कुण ऐचऽ।
ससरो भी घर नी, सासु भी घर नी
असी छोटो देवर मनायो नी जाय।
कपास म्हारो कुण ऐचऽ।
मनऽ वायो संकर चार कपास रे।
जेठ भी घर नी, जेठानी भी घर नी।
असी छोटो भतीजो मनायो नी जाय।
कपास म्हारो कुण ऐचऽ।
मन वायो संकर चार कपास रे।
देवर भी घर नी, देराणी भी घर नी।
असो छोटो नात्यो मनायो नी जाय।
कपास म्हारो कुण ऐचऽ।
नणद भी घर नी नणदई भी घर नी,
असो छोटो भाणिज मनायो नी जाय।
कपास म्हारो कुण ऐचऽ।
मन वायो संकर चार कपास रे,
कपास म्हारो कुण ऐचऽ।

स्रोत– श्रीमती सेवन्तीबाई तोमर–दवाना

मैंने अपने खेत में चार संकर कपास लगाया है। कपास फूटकर खेत एकदम सफेद झक हो गया है। मेरा कपास कौन चुनेगा? ससुरजी और सासुजी घर पर नहीं हैं। देवरजी से मिन्नतें की। चलो कपास चुन लाये, लेकिन वह नहीं मानता है। कपास चुनने नहीं जाता है। जेठजी और जेठानी घर पर नहीं हैं। छोटे भतीजे से मनवार की, चलो कपास चुन लायें, लेकिन उसने भी मना कर दिया। अब मेरा कपास कौन चुनेगा? देवरजी–देवरानी भी कोई काम से बाहर गये हैं। नाती जो घर में था, उससे कहा– चलो, कपास चुन लायें। लाखों मनवार के बाद भी उसने मना कर दिया। अब मेरा कपास कौन चुनेगा? ननदोईजी और ननद रानी भी घर पर नहीं हैं। छोटा भान्जा घर में है। उससे कहा– चलो, कपास चुन लायें। उसकी भी लाखों मनवार की, लेकिन वह भी कपास बिनने के लिए खेत पर जाने को तैयार नहीं हुआ, अब मेरा कपास कौन बिनेगा?

बुन्देली ऋतु गीत

डॉ. ओम प्रकाश चौबे

प्रकृति के विभिन्न परिवर्तित रूप ऋतुओं के नाम से अभिहित हैं। इन्हीं भिन्न ऋतुओं में विविध गीत गाये जाने का प्रचलन ग्रामीण क्षेत्रों में है। यद्यपि परम्परा में छः ऋतुएँ मानी जाती हैं। लेकिन उत्तरी भारत में चार ऋतुएँ प्रधान हैं- वर्षा, शरद, बसंत और गीष्म। सुश्रृत के मत से माघ-फाल्गुन शिशिर, चैत्र-वैशाखः बसंत, ज्येष्ठ-आषाढ़ः ग्रीष्म, श्रावण-भाद्रपदः। वर्षा, अश्विन-कार्तिकः शरद तथा अग्रहायण-पौषः हेमन्त माना जाता है। इन समस्त ऋतुओं में व्रत-त्योहारों पर गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में ऋतुओं की विशेषताओं के साथ-साथ त्योहारों से जुड़ी भक्ति एवं उन देवी-देवताओं के चरित गायन, प्रकृति चित्रण तथा लोक जीवन की झलक मिलती है। ऋतुओं के जीते जागते चित्र गीतों के माध्यम से व्यक्त किये जाते हैं। ऋतु गीतों में श्रृँगार, करुणा, क्षमा, दया आदि भावनाओं के साथ ही सामाजिक प्रथाएँ, रीति-रिवाज एवं रूढ़ियाँ बोलती सी प्रतीत होती हैं।

बुन्देली ऋतुगीतों में पावस में झूला, मल्हार, कजरी, हिंडोला, सैरे, राछरे, रैया, पाई, सावन, रसिया, शरद में कार्तिक स्नान के गीत, दिवारी, नर्मदा स्नान के यात्रा गीत, ग्रीष्म में फाग, लेद, देवीगीत, पवारे, बारामासी आदि प्रमुख रूप से गाये जाते हैं। इन गीतों में सामाजिक चेतना, संस्कृति के तत्त्व भी समाये होते हैं। ऋतु गीत भाव प्रधान होते हैं।

ऋतुगीतों की परम्परा बहुत प्राचीन है। संस्कृत में महाकाव्यों में ऋतु वर्णन का विधान था। इसके अतिरिक्त ऋतुकाव्य की एक स्वतंत्र परम्परा भी थी, जिसका मूल उत्स लोकगीतों में ही प्रतीत होता है। ऋतुकाव्य ऋतु पर्वों और ऋतुगीतों की लोक परम्परा से प्रेरित होकर ही रचा गया है। प्रकृति का मानवीकरण, आत्मीयता की स्थापना तथा मानवीय भावों, सुख-दुख की अनुभूतियों का ऋतुओं से संबंद्ध देखने की परम्परा कुछ ऐसे तत्व हैं जो ऋतुकाव्य और ऋतु संबंधी

लोकगीतों की मौलिक एकता को प्रकट करते हैं। प्रकृति भगवान का लीलामय रूप एवं अनन्त अपार शक्ति तथा वैभव का स्त्रोत है इसलिये सर्वप्रथम प्राकृतिक शक्ति पूजा ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के ऋषियों ने की। तत्पश्चात् मानव ने निर्बाध रूप से प्रकृति की पूजा की। लोक साहित्य एवं लोक काव्य साहित्य प्रकृति के भिन्न-भिन्न आयामों की पूजा है।

लोक प्रतिभा ने लोकगीतों के माध्यम से इसे स्वीकारा है। वैसे तो लोकजीवन के बारह महीनों में कोई दिन ऐसा नहीं, जबकि गीतों का आयोजन न होता हो। यहाँ ऋतुओं संबंधी गीतों का विभाजन वर्ष के भिन्न-भिन्न महीनों में मनाये जाने वाले उत्सवों व्रत-त्योहारों को आधार मानकर करें तो उचित होगा। ऋतुओं के श्रृँगार परिवर्तन की कला का स्वागत मानव मन अदम्य उत्साह व उत्सुकता के साथ करता है। विभिन्न ऋतु विषयक गीतों में विभिन्न भाव परिलक्षित होते हैं।

पावस गीत

कजरी स्त्रियों द्वारा वर्षा ऋतु में गाये जाने वाले गीत हैं। इनमें प्रकृति वर्णन तथा राधा-कृष्ण विषयक प्रसंग होते हैं।

के हरे रामा उठी घटा घनघोर बदरिया,
कोना दिशा से घन गहराने, काहँ बरस गये मेह,
अग्गम दिशा से घन गहराने, पच्छम बरस गये मेह,
जिनके पिया परदेश बसत हैं, असुवन भींजे गलसारी,
जिनके पिया परदेश बसत हैं, छाई महल अंधियारी,
बदरिया कारी रे हारी ....

आसमान पर काली घटायें छाने लगीं। किस दिशा से बदली आई, वह बदली कहाँ बरसी? पूर्व से बदली आई और पश्चिम दिशा में बरस गई। बरखा ऋतु विरहीजनों के लिए बड़ी कष्टदायी होती है, खासकर उन्हें जिनके पति प्रवासी हैं। पति प्रवासी हों तो उसे विरहाग्नि सताती है। पति की याद करके वह रोती रहती है। ऐसी विरहिणी को तो सब अंधकारमय ही दीखता है।

हरे रामा बेला फूलों आधी रात, चमेली भुनसारें रे हारी।
कोना लगाये बेला फूल, कौना लगायी चमेली।
बाबुल आंगन बेला फूले, ससुराल चमेली।
कौना ने सींचे बेला फूल, अरे कौना चमेली।
माता सींचे बेला फूल, ननद चमेली।

बेला आधी रात में फूला है, चमेली भोर में फूली। ये बेला-चमेली किसने लगाये? बेला मेरे पिता ने आँगन में लगाया था, चमेली मेरी ससुराल में लगायी गई थी। इन बेला-चमेली को किसने सींचा? माता ने बेला की सिंचाई की तथा ननद ने चमेली को सींचा।

कै हरे रामा नदी जमना के तीर,
जुनरिया बो दई रे हारी ....
कै मोरे रामा छूटी ससुर जी की भैंस,
जुनरिया चर रई रे हारी ....
कै हरे रामा जनुरी-जुनरी सब चर लई,
रै गये ठठेरे रे हारी ....

यमुना नदी के तट पर ज्वार बो दी गई है। मेरे श्वसुर की भैंस छूट गई तथा वह ज्वार के पौधों को खा रही है। भैंस ने पूरी ज्वार खा ली, उसके ठूठ ही अब शेष बचे हैं।

के हरे रामा आज बिरज में श्याम बन मनिहारी रे हारी,
वृन्दावन की कुंज गलिन में, फिर रये जुगल किशोर।
हे कोउ ब्रज में चुरियाँ पैरन वारी रे हारी ......
दौरी-दौरी आई राधका, देखन लागी दोर,
हम सी बिटिया बृज में चुरियाँ पैरनहारी रे हारी,
हरी लाल और पीरी चुरियाँ, देत हैं जुगल किशोर,
कर मसकें चुरियाँ पैरावें, चीने राधा प्यारी रे हारी।

आज ब्रज में कृष्ण ने मनिहारी का वेश बनाया, कृष्ण ने स्त्री का वेश बनाया, कुछ चूड़ियाँ लीं और वृन्दावन में चूड़ी बेचने निकल पड़े। वे गली-गली में चूड़ी पहननेवालियों को आवाज लगाते फिरते थे। चूड़ी वाली की आवाज पर राधा दौड़ी-दौड़ी आती हैं। उन्हें चूड़ियाँ पहननी थीं। राधा चूड़ी वाली के समीप गई, उसकी रंग-बिरंगी चूड़ियों में उन्हें पसंद आई, वे पहनने लगीं। कृष्ण चूड़ी पहनाते और राधा की कलाई दबाते थे, उनकी यह हरकत देखकर राधा ने उन्हें पहचान लिया।

हरे रामा झूला-झूलें मोहन मदन मुरारी रे हारी,
हरे रंग कौ बनो पालनो, डोर हरीरी रामा,
हरे मारा ग्वाल झुलावें झूलें कुंजबिहारी रे हारी,
हरे रंग की कछनी काँछें, रसिया नंद दुलारो रामा,
हरे राम हरे कदम की डार, झूलें बनवारी रे हारी,
राधे के संग सब सखियाँ सिंगरें हरीरे हरी रे रामा,
अरे रामा माथे टिकती हरी, हरी री सारी रे हारी,
चुरियाँ लहरेदार हरी री, हरी चुनरिया चोली रामा,
हरे राम अब छवि क्या बरनों हर की छब न्यारी रे हारी,
चढ़ विमान सुर-नर-मुनि देखें, लगे फूल बरसावन रामा,
हरे रामा कालीचरण कहें राखो लाज हमारी रे हारी।।

आज कृष्ण झूला-झूल रहे हैं। उनका पालना हरे रंग का बना है तथा उसमें रेशम की डोर लगी है। कृष्ण अपने ग्वाल-बाल सखाओं सहित झूल रहे हैं। ब्रज की सखियों ने हरे रंग का श्रृँगार किया है। हरी साड़ी, माथे की हरी टिकली, हरी बिन्दी, हरी चूड़ी, हरी चूनर आज इस तरह के श्रृँगार को देखकर स्वर्ग के देवता भी आकाश मार्ग से फूलों की वर्षा कर रहे हैं।

तीजा गीत

गौरा ठांड़ी हैं हाला हजूर, शिव के मनावे खों
कहाँ पाऊ धतूरे के फूल, शिव के चढ़ावे खों
ठंडे से पानी गरम कर ल्याई, गौरा ठांड़ी है हाला हजूर
शिव के सपरावें खों ....
कहाँ पाऊ अकौबा के फूल, शिव के चढ़ावे खों
गौरा ठांड़ी है हाला हजूर शिव के मनावे खों ....

आज तीजा का त्योहार है, इस समय गौरा देवी शिवजी को पूजा के माध्यम से प्रसन्न करने का यत्न कर रहीं हैं। वे सोचतीं हैं कि धतूरे के फूल कहाँ मिलेंगे? शिव को धतूरे के फूल अर्पित करूँगी। शिवजी के स्नान हेतु उन्होंने गर्म पानी की व्यवस्था की है। स्नान कराने के उपरांत उन्हें आक के पुष्प चढ़ातीं हैं। शिव पूजन हेतु समस्त सामग्री एकत्रित करके उनका विधिवत् पूजन किया गया।

झूला गीत

हिडोला झूलत नवल किशोर,
सावन तीज सुहावन लागे,
घन गरजे बोले मोर।
सरजू तट वन वन प्रमोद में,
विहरत है चितचोर,
सखियन सब तन-मन-धन,
निरखत-निरख तन तोर,
हिंडोला झूलत नन्द किशोर।

आज मुरली मनोहर श्याम झूला झूलते हैं। आज श्रावण महीने की तीज है, बादल गरजते हैं, जंगल में मोर बोलते हैं। कृष्ण वन विहार कर रहे हैं। सखियाँ उनको बड़ी तन्यमता से निहार रहीं हैं।

बदरिया बरसों बिरन के देसा में,
कहना सें ऊनई कारी बदरिया, कहना परस गये मेव,
अग्गम से ऊनई कारी बदरिया, पच्छम बरस गये मेव,

किनकीं भर गईं ताल तलैयाँ, किनके भरे सागर ताल,
ससुरा की भर गई ताल-तलैयाँ, बिरना भर गये सागर ताल।

हे बादलों! तुम मेरे भाई के देश में बरसो। बदली कहाँ से आई, कहाँ बरसी? पूर्व से बदली आई तथा पश्चिम में बरस गई। बारिश होने से किसके ताल भर गये? किसकी तलैयाँ भरीं? ससुर की तलैयों में पानी भर गया तथा भाई के तलाब पानी से लबालब हो गये।

देखो सखी पावस की अधकाई,
पिय बिन मेरे, चित चैन परत नहीं,
बिरह पीर सरमाई .....
झिरना झिरत बवत निरमल जल,
पवन चले पुरवाई ...
आयो सावन बिन मन भावन,
झूलन तीज न भाई ....

हे सखी यह वर्षा पूर्ण यौवन पर है इस समय मेरे पति नहीं हैं और यह बरखा मेरे विरह में वृद्धि कर रही है। मैं उनकी याद में आँसू बहाती हूँ। श्रावण का महीना आ गया यह मेरे मन को नहीं भाया इस समय सखियाँ झूला झूल रही हैं।

झूलें हिंडोरा आज सिरी ब्रज राज किशोर,
कृष्ण झुलावैं राधे झूलें, निरखें नैनन कोर,
उर में कारे बदर अकासे, किलकें-थिरकें मोर,
कदम डरैया पाट चंदन के, नैनू रेशम डोर,
मोहन बंसी राधा गुन-गुन, जसुदा लेय हिलोर,
झूलें हिंडोरा आज सिरी ब्रज राज किशोर।

आज राधा-कृष्ण झूला झूलते हैं। राधा झूले पर बैठी हैं तथा कृष्ण झूला झुला रहे हैं, आसमान पर काले बादल छाये हैं, मोर उन्हें देखकर कूक रहा है। झूला कदंब की डाली पर डाला गया है। चंदन का पलना है, जिसमें रेशम की डोर बँधी है। कृष्ण मुरली वादन करते हैं तो माता यशोदा उस ध्वनि पर बलिहारी जाती हैं।

सावन

ये गीत श्रावण मास में स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं। गीतों में प्रकृति शृँगार तथा लोक जीवन की झलक होती है। प्रकृति में एक नई प्राण चेतना की हरीतिमा भर जाने का उल्लास और अपने अभाव का विषाद लोकगीतों में मुखरित होता है।

लगी रे सुख साहुन की झिरियें,
दादुर बोले पपीरा बोले, बोल रहे बगियाँ।

रिमझिम-रिमझिम मेहा बरसे, कीच मची गलियाँ,
गोरी-गोरी बैंयाँ गुदन गुदाये, हरे काँच चुरियाँ।
माथे बीज संवारी सोहे, नथ लटके मुतियाँ,
सावन में पिया आवन कह गये, कौल करी किरियाँ।
जिय विश्वासी खबर न लीनी, सोच करें सखियाँ।।

श्रावण में मूसलाधार वर्षा हो रही है।यह सबको सुख पहुँचाती है। इस समय दादुर, मोर, पपीहे बोलते हैं। चारों तरफ कीचड़ व्याप्त है। श्रावण में मैंने अपनी बाँह पर गुदने गुदवाये, कलाइयों में हरे काँच की चूड़ियाँ पहनीं, माथें पर बीज गले में गहना पहन समस्त शृंगार किया था, वे कहकर गये थे कि आ जायेंगे, लेकिन नहीं आये। मुझे उनके न आने पर बड़ा कष्ट हो रहा है।

सावन

अग्गम मेंदी ऊंगी केसरिया लाल, पच्छम मोल बिकाय।
कै मेंदी राचनू मोरे लाल ....
लाओ भौजी सिलौटी केसरिया लाल, बारौ मेहंदी के पान,
कै मेंदी राचनू देवरा रचाये, छींगरी ननदी रचाये दोई हाँत ......
हम कैसे रचेहें मेहंदी केसरिया लाल, हमारे बलम गये जूज,
देवरा दिखाने भाई खें केसरिया लाल, ननदी दिखावें दोई हाँत ....
हमरी को देखे मेंदी केसरिया लाल, मायके हमारे दूर ....
ठांड़ी अंगना विसूरती केसरिया लाल, कोऊं संदेशो लय जाव ....
हंसा पंछी बोलन लगे केसरिया लाल, हमई संदोशों लय जाय ....
नैनन काजल लै लीने फाड़े आँचल छोर ....
सेहें के काँटे मंगावती केसरिया लाल, लिख दये दो-दो बोल,
काहे को जनमीती केसरिया लाल, छत्री धरम निभाऊती।

मेहंदी पूर्व दिशा में उगी तथा पश्चिम में ले जाकर बेची गई। देवर ने अपनी भाभी से कहा कि भाभी आप मेहंदी पीसने के लिए सिल-लोड़ा लाओ, हम मेहंदी लगायेंगे। बट जाने के उपरांत उन दोनों ने मेहंदी लगा ली। देवर ने अपनी छिंगरी में तथा ननद ने दोनों हाथों में मेहंदी लगायी। भाभी कहती हैं, मैं मेहंदी कैसे रचाऊँ? हमारे पति तो रण जूझने को गये हैं। वह स्त्री आँगन में खड़ी-खड़ी रो रही है। वह अपना संदेशा मायके में पहुँचाना चाहती है। पक्षी कहते हैं कि हम तुम्हारा संदेशा ले जायेंगे। उस स्त्री ने अपने काजल मिश्रित आँसुओं से अपने आँचल के पललू को फाड़कर सेई के काँटे से संदेशा लिखा। हे माता! मैंने जन्म ही क्यों लिया? मैंने जन्म लेकर तेरी कोख को दाग लगाया। मैं तो कटारी मारकर मर जाती तो अच्छा होता, क्षत्रिय धर्म का निर्वहन तो कर ही लेती, क्योंकि पति के न होने पर मेरे लिये पूरा संसार ही सूना लगता है।

बरसत बड़ी-बड़ी बूंद, बिजरी चमक जीरा डर लागे,
कौना दिशा बदला भये, कहनाँ बरस गये मेव ....
अग्गम दिशा बदला भये, पच्छम बरस गये मेव ....
कौना की भींजी रंग चूनरी, कौना की पचरंग पाग ....
राधे की भींजी रंग चूनरी, मोहन की पचरंग पाग ....

आज बड़ी-बड़ी बूंदों के साथ बारिस हो रही है, बिजली भी चमकती है। मुझे बड़ा डर लग रहा है। बादल किस दिशा से आये, कहाँ बरसे? पूर्व से आकर बादल पश्चिम में बरस गये। बारिश से राधा की चूनर तथा कृष्ण की पाग भींग गई।

चार चपेटा लै लियो, माई साहुन आये।
साहुन के दिन चार री, माई साहुन आये।
एक चना दो देवली माई, साहुन आये।
कौन सी गुइयाँ दूर री माई, साहुन आये।
राधा सी गुइयाँ दूर री माई, साहुन आये।
वीरन लुबौवा जांय री माई, साहुन आये।
आंगू नौवा पीछें बामना माई, साहुन आये।
बीच बहिन की पालकी माई, साहुन आये।

हे माता! सावन का महीना लगा है, मुझे चपेटा मँगवा दें। यह त्योहार चार दिनों का ही तो होता है। एक चने में दो दाल (देउल) होते हैं। सावन आया है, मेरी कौन-सी सखी सबसे च्यादा दूर है, उसे बुलाना होगा। राधा नाम की सखी दूर रहती है। उसके भाई को भेजकर उसे बुलवा लो। भाई नाई-ब्राह्मण के साथ उसे लेने गये। उसे लेकर आ रहे हैं, आगे-आगे नाई चल रहा है, पीछे ब्राह्मण बीच में बहिन पालकी पर बैठकर आ रही है।

मेंदी के दो दस पान लोचन मेंदी हम गये मोरे लाल।
कौना ने टोरी मुठी दो मुठी, कौना ने टोरी छबलन मोरे लाल।
देवरा ने टोरी मुठी दो मुठी, भौजी ने टोरी छबलन मोरे लाल।
तो लोचन मेंदी हम गये मोरे लाल ....
काहे की सिल मंगाव, काहे के लोड़न बटाइयो मोरे लाल,
रूपे की सिल मंगवाईयो, बोठी के लोड़ों मोरे लाल।
कौन रचाई दो छींगरी मोरे लाल, कौने रचाये दोई हाँत मोरे लाल।
देवरा रचाई दो छींगरी, भौजी रचाई दोई हाँत मोरे लाल।
कौना की रच गई लाल भुलल, तो कौना बदाये मोरे लाल।
तो पहले लुबौआ जायो नौवा के संग जिन पठाइयो मोरी माय।
दूजे लिबौवा ससुरा आइयो, उनके संग जिन पठाइयो मोरी माय।

तीजे लिबौवा जेठा आइयो, उनके संग जिन पठाइयो मोरी माय।
चौथे लिबौवा देवरा आइयो, उनके संग जिन पठाइयो मोरी माय।
पाँचवे लिबौवा सैंयां आये, ते ओढ़ चादर चली जाय मोरी माय।

उक्त गीत में मेहंदी तोड़कर लाने, पीसने एवं हाथों में लगाने का चित्रण है। देवर भाभी ने मेहंदी लाकर बँटवाई, फिर दोनों ने मेहंदी लगाई। मेहंदी रचने के उपरान्त नायिका जो कि अभी अपने मैके में थी, उसे लिवाने उसके ससुर आये। नाई और जेठ आये, लेकिन वह उनके साथ नहीं जाती। अंत में जब उसका पति लेने आया तो वह उसके साथ सज-धजकर चली जाती है।

गरजे बरसे रे बदरवा, बिजली चमके चारऊ ओर,
सहुना गरजे भदवा बरसे, पवन चले चहुँओर,
नानी-नानी बुंदियाँ में नेहा बरसे, दादुर मचाये शोर।
गरजे बरसे रे बादरवा, बिजली चमके चारऊ ओर।

श्रावण-भादों में वर्षा सबसे अधिक होती है। चारों दिशाओं में बिजली चमकती है, घन गर्जना करते हैं। वायु चारों ओर बड़े वेग से चलती है, पानी लगातार बरसता है, उस समय मेंढक बोलते हैं।

मोरे राजा किवरियाँ खोल, रस की बूँदें परीं,
पैलऊं आँधी बैहर आई, दूजें बादर दये दिखाई,
तीजें कठिन अंधेरी छाई, उठी-उठी रे घटा घनघोर,
पैली बूंद गिरी अर्राई, मोरे माथे आय जुड़ाई,
मैंने चोली भौत दुकाई, मोरी देह भई सरावोर,
रस की बूँदें परीं ....

हे प्रिय! आप किवाड़ खोलें, यहाँ बारिश हो रही है। पहले आँधी आई, फिर बादल घिर आये, अंधियारी छा गई, फिर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। वर्षा की पहली बूँद मेरे माथे पर गिरी तो ठंडक का अनुभव हुआ, फिर तो बड़े जोर की वर्षा होने लगी। मैं सराबोर हो गई हूँ।

पिया पापी पपीरा ने माने, पिया पिया धुन ठाने।
यह पिय-पिय बोल सुनावै, मोय बिरहा सोर जार जनाबे।।
जो पीर पराई ने जाने ....
इत दादुर अति उकताने, उत काम कठन सरताने,
जो छेड़त अपनी ताने ....
जे तो ब्रज गोपिन हितकारी, जे हैं प्रीतम श्याम बिहारी।
जे तो कुब्जा हात बिकाने, पिया पापी पपीहा न माने।

पपीहा सुबह से ही पीव-पीव की रट लगाये हुये है। पपीहा के बोल बिरहीजनों की

विरहाग्नि भड़काते हैं। अत: उन्हें पपीहा का बोलना नहीं भाता। पपीहा के साथ ही बरसात में मेंढक बोलते हैं, वे भी विरह को बढ़ाते हैं। कृष्ण तो बज के हैं ब्रजवासियों के हितैषी हैं, लेकिन फिर वे कुब्जा के साथ क्यों रहने लगे?

मल्हार

अरि बहना जमना किनारे घनश्याम,
बजावै मुरली रसभरी ....
अरी बहना तान सुरीली, मुरली बज रही,
अरी बहना देखन को चले ब्रजधाम बजावै मुरली ....
जबसें सुनी है मुरली श्याम की,
अरी बहना दिल में बसी है आठों याम बजावै मुरली ....
मुरली सुनन को बहना सब चलैं,
अरी बहना घर के तजोरी सब काम बजावै मुरली ....

अरी बहिन! कृष्ण यमुना किनारे मुरली वादन करते हैं। वह धुन बड़ी रसीली होती है। हम आज ब्रजधाम देखने चलेंगे, क्योंकि कान्हा की मुरली तो दिल में बस गई है। जब से उनकी मुरली सुनी, तब से आठों पहर वह धुन मन में बसी है। ऐसा लगता है कि मोहन के लिए घर बार छोड़कर उनके पास ही रहूँ।

करखा

श्रावण-भादों मास में कजली के दिन पुरुष वर्ग द्वारा सैरा नृत्य किया जाता है। इसमें करखा सैरा, पाई एवं पड़गर गीत गाये जाते हैं। गीतों में शृँगार तथा वीर रस की अभिव्यक्ति होती है। इसके अलावा प्रकृति एवं लोक जीवन विषयक गीत भी होते हैं।

खेरे की गा लऊँ अरे खेरापति, मेंड़ मिड़ोइया देव।
जरिया भुमिया अरे येई गाँव के, देवा नाव ने जानें कोय।।

सर्वप्रथम ग्राम की देवी खेरापति का स्मरण कर लूँ। हे माँ! हम सबकी रक्षा करना। तत्पश्चात् ग्राम की सीमा के रक्षक देव का स्मरण कर लूँ। इनके अतिरिक्त जो भी इस गाँव की भूमि पर देवतागण हैं, उनका स्मरण कर लूँ तथा जिनके मैं नाम नहीं जानता हूँ, उनको भी गाकर स्मरण कर लूँ। आप सब देव मिलकर हमारे इस गायन को सफल बनाने का आशीष दें और हमारी रक्षा करें।

खेरे बिहूने अरे रुखड़ों बिना, बिन सारे ससुरार।
बैना बिहूनी अरे भैया बिना, गलियों में बिसूरत जाय।।

कोई भी गाँव बिना वृक्षों के सूना-सूना लगता है। इसी प्रकार से अगर किसी ससुराल में साली न हो तो वह भी सूनी-सूनी लगती है। बहिन का यदि कोई भाई न हो तो उसे बिना भाई के

सारा घर सूना लगता है, वह भाई की याद करके गलियों में रोया करती है।

सदा तो भुवानी अरे दुरग दायनी हो, सन्मुख रहत गनेश।
पाँच देवता अरे रक्षा करें, कऊँ विरमा विशनू महेश।।

माँ दुर्गे तू मेरे दाहिने अंग की रक्षा कर, सामने श्री गणेश जी रक्षक होंगे। ब्रह्मा, विष्णु, एवं शिव अर्थात् पाँचों देवता हमारी रक्षा करेंगे। तात्पर्य यह कि यदि पाँच बड़े देवता रक्षा करें, तो उसका इस संसार में कौन-क्या बिगाड़ सकता है?

सदा तो तुरैया रे अरे फूले नहीं हो, सदा ने साहुन होय।
सदा ने छत्री अरे रन खों चढ़े, कऊं सदा ने जीवे कोय।।

तुरैया की बेल में सदैव फूल नहीं लगते, अर्थात् तुरैया केवल वर्षा ऋतु में ही फूलती है। इसी प्रकार रक्षाबंधन भी हमेशा नहीं होता, केवल श्रावण महीने की पूर्णिमा को होता है। क्षत्रिय भी समय पर युद्ध करते हैं, हमेशा रणक्षेत्र में नहीं जाते और दुनिया में कोई अमर नहीं है। एक न एक दिन सभी को मृत्यु का वरण करना है।

असाढ़ा तो गरजे अब सहुना लगे, वन में कुहक रई मोर।
वीरन लुबौआ अब आये नहीं, मोरो सांय-सांय जी होय।।

आषाढ़ मास में बादलों की गर्जना ही होती रही और अब श्रावण मास आ गया। इस मास में घनघोर वर्षा हो रही है, जंगल में मोर कुहुक रहा है। मेरा भाई अभी तक मुझे लेने नहीं आया है, मेरा मन घबरा रहा है। श्रावण माह में भाई अपनी बहिनों को लेने उनकी ससुराल में जाते हैं और एक बहिन प्रतीक्षारत है, उसका भाई श्रावण में नहीं आया। क्यों नहीं आया? यह सोचकर उसके मन में तरह-तरह की शंकायें जन्म ले रही हैं।

असढ़ा तो लागे रे सहुना लगे, दूब गई हरयाय।
वीरन लुबौआ आये नहीं, घर चुनरी धरी है रंगाय।।

आषाढ़ माह समाप्त हो गया, श्रावण आ गया। वर्षा होने से दूबा की हरियाली छटा बड़ी सुहावनी लग रही है। लेकिन मेरे भाई मुझे लेने अभी तक नहीं आये। मैंने अपनी चूनर रंगवाकर रख ली थी कि मैं इस चूनर को ओढ़कर अपने भाई को राखी बाँधूँगी। वह अभी तक मैंने सहेजकर रखी है।

साहुन सुहानी अरे मुरली बाजे, भादों सुहानी मोर।
तिरिया सुहानी अरे जबहई लगे, ललुआ झूले पौर के दोर।।

श्रावण मास में बाँसुरी की ध्वनि बड़ी सुहावनी लगती है। भाद्रपद में मोर नाचता है, इससे भी यह अच्छा लगता है। इसी तरह स्त्री तभी अच्छी लगती है, जब उसकी पौर में उसका बेटा झूले पर झूलता रहता है।

बैठी तो रैयो रे अरे रानी सतखंडा हो, खैयो डबों के पान।
जब हम आहें अरे रन जूजके, तोरी मुतियन भरा देहों माँग।।

एक योद्धा अपनी नव ब्याहता पत्नी को समझाता है, वह कहता है कि– हे प्रिये! मैं युद्ध करने जा रहा हूँ, तुम सतखंडा महल में बैठकर पान के बीड़े चाबते रहना। मैं जल्द ही रण जीतकर वापस आऊँगा और तब तुम्हारी माँग मोतियों से भर दूँगा।

जरियो तो बरियो रे, राजा तोरे सतखंडा हो।
तोरे पानों पै परे रे तुसार,
तोरे अकेले रे जियरा बिना, सूनो लागे सकल संसार।।

पत्नी कहती है कि राजा तुम्हारा सतखंडा महल जल जाये, तुम्हारे पानों पर तुषार पड़ जाये, क्योंकि अकेले तुम्हारे न होने से मुझे सारा संसार सूना लगेगा।

नाँय सें आ गई रे, अरे नदी बेतवा हो, माँय से आ गई रे धसान।
दोई नदियों के अरे कहूं बीच में, झंडा रोपैं मरद मलखान।।

बरसात अपनी चरम सीमा पर है, और इस तरफ बेतवा नदी में पूर आ गया है। उस तरफ से वर्षा की अधिकता के कारण धसान नदी में भी पूर आया है। इन दोनों नदियों के बीच में ही मलखान अपनी विजय का झंडा लिये हुए खड़े हैं।

काये सें आ गई रे, अरे नदी बेतवा हो, काये सें आ गई रे धसान।
काहे में बड़गव रे सम्मर धनी, काहे में मरद मलखान।।

बेतवा नदी में पूर क्यों आ गया और धसान में भी पूर क्यों आया? सम्मर का धनी अर्थात् ऊदल युद्ध के लिए क्यों बढ़ रहा है? और वीर मलखान क्यों झंडा लिए हुए दोनों नदियों के बीच खड़ा है?

नदिया तो बढ़ गई रे अरे नदी बेतवा हो, कछरन कैल धसान।
मरदों में बड़ गये रे सम्मर धनी, तेगा में मरद मलखान।।

बेतवा नदी है, इसलिए उसमें बारिश में पूर आना स्वाभाविक है। धसान में भी कई छोटी नदियों का जल एकत्रित हो गया, इसीलिए उसमें भी बाढ़ आ गई है। ऊदल तो एक जाँबाज मर्द था, इसीलिए वह युद्ध में आगे डटा है और मलखान तो अपनी तेग चलाने में शुरू से ही जग-जाहिर थे, इसीलिए वे तेग-तलवार में सर्वश्रेष्ठ हैं।

उरजन गुरजन रे अरे झूला डरे हो, झूले सकल रनवास।
एक ने झूले अरे लाखन बहू, जेके कंथा डरे परदेस।।

लाखन राना का गौना हुआ, उनकी पत्नी अभी आई ही थी कि लाखन युद्ध करने को चले गये। सावन का महीना है, महल के गुरजों पर जहाँ-तहाँ झूले लगे हुए हैं, पूरा रनिवास झूल रहा है।

लेकिन लाखन की पत्नी नहीं झूल रही, क्योंकि उसका पति ऐसे समय में उसे अकेला छोड़ परदेस को गया है। उस विरहिन का दुख कोई नहीं जानता।

हरी कराँदी रे अरे झकझून सी हो, हरे सुआ तोरे पंख।
हरे बछेरा राजा परमाल के, दोई दल में करत किलोर।।

बरसात में करोंदी पर हरियाली छायी है। तोते के पंख भी उसी तरह हरे हैं, और राजा परमाल की घुड़सार में भी हरियल घोड़े हैं, जो कि दोनों दलों में किलोर करते घूम रहे हैं।

ऊदल मारे रे अरे चौड़ा भली करी हो, बरनई तुमारी होय।
लाखन राना अरे जिन मारियो, परदेसी पाँवने होय।।

ऊदल नामक योद्धा को चौड़ा ब्राह्मण ने धोके से मार दिया, सारा महोबा शोक में डूब गया, इतने बड़े बहादुर की धोखे से हत्या कर दी गई? ऊदल का मित्र लाखन अभी जीवित है, महोबा के लोग कहते हैं कि ऊदल को तो चौड़ा ने धोखे से मार ही दिया। जो हुआ सो हुआ, लेकिन उनके मित्र कन्नौज के राजकुमार को तुम लोग मत मारना, क्योंकि लाखन राना तो हमारे परदेशी पाहुने हैं।

कौवा के बोले रे अरे मौवा भुंजे हो, भर दुफरे लठों की मार,
ब्यारौ की बेरा अरे डुबरी चढ़ी, बेटा कूंडे करो तैयार।

बिल्कुल भोर में ही अर्थात् पक्षियों के बोलते ही नाश्ते के लिए महुआ भूने गये। दोपहर में लाठियाँ चलने लगीं और रात्रि में भोजन के लिए डुबरी बनी है, बेटा अपने-अपने बर्तन तैयार करो, डुबरी खाने के लिये।

सैरो तो सैरो रे सब कोऊ कहे हो, सैरो भलो होय।
डड़ला चूके अरे बैयां लगे, जेकी पीर घनेरी होय।।

सैरे के बारे में कुछ लोगों की धारणा कुछ इस तरह से भी है। सैरा-सैरा तो सब कोई कहता है, लेकिन यह देखने सुनने में भला लगता है, करने वाले का यदि डंडा जरा सा चूका कि सामने वाले को उसकी बड़ी करारी चोट पड़ती है।

पैले लुवउआ अरे बहू जात हैं, करिया काट गव गैल।
कै दुख हुइयें अरे लुहरी के, कै मिलहें बलम नादान।।

नव ब्याहता को लेने के लिए पहली बार उसके भाई बंधु जा रहे थे। रास्ते में काले नाग ने सामने रास्ते आकर अपशगुन कर दिया। अब या तो उस नव ब्याहता स्त्री की कोई सौत होगी या फिर उसका पति अवयस्क होगा। तात्पर्य यह कि अपशगुन कहीं न कहीं जरूर फलित होगा।

बैल जो बंदो अरे लीला धोरिया हो, बैंवे टगर के खेत।
हँसिया तो लैले रे चौड़ी पीठ के, जेपे चौपर खेलत जाँय।।

एक स्त्री अपने पति को सलाह दे रही है कि अगर बैल बेचना चाहो तो नीले और सफेद बैलों को बेच दो। अगर खेत बेचना चाहो तो पठार वाले खेत बेच देना और हंसिया खरीदो तो चौड़े फाल के ही खरीदना, जिससे कि चौगुनी फसल कट सके।

ढीमर घर लड़का भये, धरे मूँड़ पै जार।
मछली तो रो रई अरे कहू ताल में, मोरे आ गये हैं जी के काल।।

ढीमर के घर अगर लड़का हुआ तो वह निश्चित रूप से ही मछलियाँ मारेगा। अपने सिर पर मछली फंसाने का जाल लिए रहेंगे। यह समाचार जानकर कि ढीमर के घर पुत्र हुआ है, मछली अपनी किस्मत को कोस रही है कि अब ये हमारी जान के दुश्मन पैदा हो गये।

ने आये ने आन दे, चुनरी ओढ़ फटाय।
आसों के साहुना रे इतहई करो, राखी बाँदो गाँव के लोग।।

एक पत्नी को जो अपने भाई के श्रावण में न आने का अफसोस कर रही है, उसका पति समझा रहा है कि– हे प्रिये! चिन्ता न करो, अगर तुम्हारा भाई नहीं आया तो न आने दो। इस साल के श्रावण में तुम घर पर रहो, और राखी गाँव के लोगों को बाँध देना।

चंचल लुगइया रे अरे हरवाये की, सींकन कजरा देय।
मारे बखर के रे भौंदू सो रये, ओको जीरा लहरिया लेय।।

एक खेतीहर बँधुआ मजदूर का गौना अभी–अभी ही हुआ है, उसकी पत्नी शौकिया मिजाज की है। वह हर रोज शाम को अपने पति के लिए प्रतीक्षारत रहती है, पति के लिए शृंगार करती है, आँखों में काजल आँजती है, लेकिन उसका बुद्धू पति सब दिन का हारा थका लौटता है, तथा खा–पीकर सो जाता है। उसकी नवयौवना दुल्हन की आशा निराशा में बदल जाती है।

ककरी तो खइये रे, अरे नोनें चरचरी हो, डंगरा सेत सुपेत।
यारी तो करिये अरे उन छैल सें, जेकी ओठों ने आई रेख।।

ककड़ी हमेशा कड़क ही खानी चाहिये, जिसके खाने से चरचराहट की आवाज आती हो और डंगरा सफेद रंग का अच्छा होता है। इसी तरह से कम उम्र के लड़के से प्रेम करना चाहिये, जिसकी मूँछ के बाल भी न निकले हों।

बाँड़ी लुखरिया रे कोदों दरे, गाये राग मलार।
दानों ने एकऊ अरे बाहर गिरे, ओकी कुदई महोबे जाय।।

करखा में कुछ हास्य गीत भी होते हैं, जैसे कि इस गीत में एक लड़ई/सियार की पत्नी कोदों दर रही है, वह इतनी सुगर है कि बाहर एक भी दाना नहीं गिर रहा। उस कोदों से निकले चावल इतने अच्छे बने कि वे सीधे महोबा अर्थात् आल्हा–ऊदल के घर भेजे गये।

चिंटी तो बैठी रे मौवा तरें, नौ खरिया भुस खाय।
सात समुन्दर को पानी पिये, बा तो भूकई भूक चिल्लाय।।

एक चींटी महुआ के पेड़ के नीचे बैठी है, और उसने बड़े-बड़े नौ डला भूसा खा जाने के बाद सात समुद्र का पानी पीया है। फिर भी उसे बड़ी तेज भूख लगी है, उसका भूख के मारे बुरा हाल है।

हरी तो दोअरियाँ रे पीरी करों, कर गौने की चाल।
ऐसे पठादे अरे सिया जानकी, राजा राम ने उतरें पार।।

हरे दरवाजों को पीला करा दो, क्योंकि राम जी का गौना हो रहा है। सीता को इस तरह से भेजना कि श्रीराम वन को न जा पायें।

कै डर भागे अरे आल्हा, डर हांके ऊदल की हांक।
भेद बता दे अरे जियरा के, कैसें छोड़े उरई मैदान।।

प्रस्तुत गीत में मामा माहिल जो कि उरई को छोड़कर भाग गये थे, उनसे एक योद्धा ने पूछा क्यों मामा! महोबा से क्या आल्हा के डर से भागे हो? या फिर ऊदल की डाँट से डर गये? तुम मुझे अपने मन की बात बतला दो कि किस कारण से उरई का मैदान छोड़कर भाग आये हो।

ने हम भागे आला डर हो, नें ऊदल की हाँक।
खरच बड़ा गये अरे जियरा के, जैसे छोड़े उरई मैदान।

न तो मैं आल्हा के डर से भागा हूँ और न ही ऊदल ने मुझे हाँक लगाई है। अरे! मेरी तो पूंजी समाप्त हो गई, इसलिए मैं उरई को छोड़कर आ गया।

रोमन-रोमन अरे गांसी लगी, बरया असी सेल को घाव।
मामा विश्वासी अरे आओ ने, चौड़ा जेत खम्म लयें जाय।।

ऊदल को चौड़ा ब्राह्मण ने धोखे से मारा था, ऊदल को अन्त समय में बड़ा कष्ट हो रहा है, रोम-रोम में दर्द का अहसास हो रहा है। ऊदल को चौड़ा ने अस्सी मन के सैल शनीचर नामक हथियार से प्रहार किया था। उन्हें उस घाव से ज्यादा दर्द इस बात का था कि अभी तक विश्वासघाती मामा नहीं आया और चौड़ा जेत खम्म लिये जा रहा है, जिसके लिए ऊदल ने प्राणों की बाजी लगाई थी।

दौरत आवे रे नदी बेतवा, डूबत आये रे कछार।
आदी नदी में अरे पानी बहे, आदी बैंवे रक्त की धार।।

बेतवा नदी के मैदान में हमेशा युद्ध होते रहते थे, नदी में रक्त की धार बहती रहती थी। नदी

बेतवा में बाढ़ आई हुई है, बाढ़ के आने से नदी का पठार डूबता जा रहा है। आधी नदी में तो पानी बह रहा है, लेकिन आधी नदी में रक्त की धार बह रही है।

इतनी तो बेरां अरे का गाइये, लइये कौन के नाव।
अलख निरंजन देखो परमा गुरू, देवा नाव ने जाने कोय।।

इतने समय में क्या गायें? किसका स्मरण करें। मेरे तो अलख जगाने वाले शिव ही श्रेष्ठ हैं। मैं उनके अतिरिक्त किसी देवता को नहीं जानता।

इतनी तो बेरां अरे दो गाइये, एक ओड़ी एक गाय।
गाय के बछड़ा अरे हर में जुतें, कऊँ घोड़ी के रन चढ़ जांय।।

इतने समय हम दो स्मरण करें, एक ओड़ी तथा दूसरी गाय का। क्योंकि गाय से होने वाले बछड़े तो हल में जोते जाते हैं, तथा ओड़ी के बच्चे ओड़े युद्ध में योद्धाओं का साथ देने रणभूमि में जाते हैं।

गेवड़े जुनरिया अरे पिया जिन बओ रे, को रखवारी जाय।
हम तो चले जैहें अपने मायके, कऊँ भुन्टा बरेदी खाँय।।

एक किसान की पत्नी अपने पति को समझाती है- हे प्रियतम गाँव से लगे हुए खेत में ज्वार मत बोइये, क्योंकि उसकी रखवाली करना जरूरी होगा। मैं तो अपने मायके चली जाऊँगी, फिर रखवाली कौन करेगा? सूना खेत देखकर गाँव के लोग भुट्टे तोड़ लेंगे।

दो-दो गगरियें अरे जब जल भरें हो, हुलको गुबर की हेल।
नउआ पठे दे अरे अब मायके, धन हो गई गौने जोग।

जब कोई युवती दो दो पानी से भरी गगरी सिर पर रखने लगे तथा एक बड़ा टोकना भरके गोबर भी उठाने लगे- तो अब मायके से नाई को उसकी ससुराल भेज दो कि अब हमारी बच्ची गौने के योग्य हो गई है। अर्थात् घर-गृहस्थी के कार्य में निपुण हो गई है।

खेत बिगाड़े रे अरे कूरा काँस ने हो, सभा बिगाड़ी कूर।
लरका बिगाड़े अरे बऊओं ने आदी रात खों, भर दये कान।।

खेत में खरपतवार यानी अनावश्यक कूड़ा करकट हो जाये तो फसल पनप नहीं पाती। सभा में यदि कोई कायर व्यक्ति हो तो वह भी बिगड़ जाती है। इसी तरह से लड़कों से उनकी पत्नियाँ रात्रि में कान भरकर घर परिवार में ही बैर करवा देती हैं।

रैन बिहूनी लगे चंदा बिना, नदिया बिना जल धार।
देश बिहूनों अरे बेटों बिना, ऊँसई बिना पुरस की नार।।

रात्रि बिना चन्द्रमा के सूनी-सूनी सी लगती है। यानी अगर कृष्ण पक्ष हो तो रात्रि अच्छी नहीं लगती। उसी तरह से नदी में अगर पानी न हो, सूखी हो तो अच्छी नहीं लगती। किसी राज्य में बेटे ने हों, वीर न हों तो वह भी ठीक नहीं। पति के बिना पत्नी का भी कोई अस्तित्व नहीं होता। विधवा का समाज में दीन-हीन का स्थान होता है।

ऐड़ी हावर अरे छूटे नहीं, छूटे नैयां हरद के दाग।
तेल की फरिया रे फाटी नहीं, कंथा जूझन चले परदेस।।

किसी नव यौवना का अभी-अभी गौना हुआ था, उसकी एड़ी का महावर भी नहीं छूटा, हल्दी भी ज्यों की त्यों मौजूद है। उसके तेल की फरिया भी नई की नई रखी है और उसका प्रीतम युद्ध के लिए रणक्षेत्र में जा रहा है।

पाई

मोरे मन दुबदा तो तोरे मन नैयाँ, बिंदिया लेहों तो पैरहों के नई रे
पैरवे खों पैर लेहों, रेबे खों नैयां, ककना लेहों तो पैरहों के नई रे
पेरवे खों पैर ले हों, रेबे खौं नैयां, टोडर लेहों तो पैर हों के नई रे
पैरवे खों पैर लेहों रेबे खों नैयां, बिछिया लेहों तो पैरहों के नई रे
पैरवे खों लेहों रेबे खों नैयां, मोरे मन दुबधा तो तोरे मन नैयां।।

उक्त गीत में नारी का सहज शंकालु स्वभाव का वर्णन है, उसका पति कहता है कि तेरा मन दुविधा में रहता है, तू कोई एक बात नहीं तय कर पाती। पति ने कहा- चल आज तुझे कुछ गहने, कपड़े खरीद दूँ। पहले उसने कहा कि तुझे माथे की बिंदिया ले देता हूँ, पहनेगी न? पत्नी ने कहा कि पहनने को तो पहन लूँ, लेकिन रहने का तो कोई ठिकाना नहीं है। फिर उसके पति ने कंगन लेने को कहा तो उसने अपनी शंका व्यक्त की, उसके पति ने उसके तोड़र, बिछिया आदि लेने को कहा तो उसकी पत्नी ने वही दुविधापूर्ण स्थिति बतला दी।

ये सारे जीजा, रमझिरियों बिलम रये
टोड़र मांजत, टोडर मांजत झेलभभई
बिछिया मांजत बिछिया मांजत झेल भई,
ककना मांजत ककना मांजत झेल भई,
दुहरी मांजत दोहरी मांजत झेल भई,
ये सारे जीजा, रमझिरियों बिलम रये।।

साले और जीजा मिलकर कहीं घूमने को निकले थे कि वे रमझिरिया पर ही रुक गये। उन दोनों की पत्नियाँ विचार कर रहीं हैं कि हम अपनी तैयारी कर रहे थे, थोड़ा ही समय लगा कि ये दोनों पता नहीं कहाँ चले गये? थोड़ा सा समय टोड़ल मांजने में लगा, थोड़ा सा कंगन में तो थोड़ा सा दुहरी की सफाई में लगा होगा कि ये दोनों वहीं पर रुक गये।

देवा गनेश मनाहों पैलऊं, देवा गनेश मनाहों।
जो कछु पूजे सांज सकारें, भोग लगा फिर पाँहों पैलऊं।
आप विराजे रतन सिंहासन, झालर शंक बजाहों पैलऊं।
तुलसी दास आस रगवर की, गनपत चरन मनाहों पैलऊ।
देवा गनेश मनाहों पैलऊं, देवा गनेश मनाहों।

हर प्रकार के बुन्देली गीतों में सुमरनी होती है अर्थात् देव आवाहन। इनमें चाहे गणेश जी का आवाहन हो या माँ शारदा का, शिव का या वीर हनुमान का, लेकिन आवाहन होता जरूर है। उक्त पाई में श्रीगणेश का आवाहन है, एक बुंदेली कवि की पूजा कुछ इस प्रकार से है –

मैं पहले श्री गणेश भगवान की वंदना करूँगा, उसके पश्चात् ही कुछ होगा। गणेश के पूजन में मेरी जो भी सामर्थ्य होगी उसके अनुसार प्रभु का पूजन करके उन्हें भोग लगाऊँगा, फिर मैं सपरिवार खाऊँगा। हे प्रभु! आप तो रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजमान हैं, मैं आपके पूजन में झालर और शंखनाद करूँगा। भक्त तुलसीदास को तो प्रभु श्रीराम का सहारा है, लेकिन वह राम भक्त तुलसी भी पहले गणेश के चरणों की वंदना करेंगे, तत्पश्चात् वह श्री राम को स्मरण करेंगे। तात्पर्य यह कि गणेश को समस्त देवताओं में पहला स्थान दिया गया है। प्रत्येक देवता के पूजन में गणेश की सर्वप्रथम वंदना की जाती है।

पीरी सी माटी करोंदा लगा आई हिलमिल ले,
चलो जिठनियाँ चल देवरानियाँ हिलमिल ले,
भर पनियाँ जाँय हिलमिल ले, कै पनियाँ जाँय हिलमिल ले।
गगरी उतारी समद में धर दई कुड़री रे,
बिरछ की हार हिलमिल ले, आँगे जिठनियाँ पीछें देवरानियाँ हिलमिल ले
के भरन पनियाँ जाँय ....
लगा कछोटो चढ़ गई लंगर लागी रे, करोंदा खान लागी रे,
एक करोंदा हीरो–पीरो दूजो रे, करोंदा लाल दूजो रे,
एक करोंदा खों हाँत पसारो, कटला रे, लगो ओकी बाय कटला रे।
को तोरो काँटों हेरे, बहुरिया की तीरो, गहे तोरी बाँय, हिलमिल ले,
देवरा तो मोरो काँटो निकारे, सैयां रे, गहे मोरी बाँय हिलमिल ले,
भरन पनियाँ जाँय हिलमिल ले, के पनियाँ जाँय हिलमिल ले।।

पीली मिट्टी में करोंदे के पौधे को लगाया था और अब वह वृक्ष बन गया है, फलने–फूलने लगा है। किसी परिवार की दो वधुएँ पानी भरने को जा रहीं हैं। कवि कहता है कि हर परिवार की बहुओं को हिलमिल कर रहना चाहिये, हमारे भारत की यह समृद्धशाली परम्परा रही है। वह तो समस्त पृथ्वी को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दृष्टि से देखता है।

देवरानी और जिठानी पानी भरने को जा रही हैं, हिलमिल कर जाओ। दोनों साथ में ही

पानी भरने के बर्तन लेकर गईं। उन्होंने अपनी-अपनी सिर की गगरी उतारकर घाट पर रख दी और कुड़री को वृक्ष की डाल पर रख दिया। दोनों ने पानी भरा और चल दीं। आगे-आगे जिठानी और उसके पीछे देवरानी पानी भरकर जा रही हैं। उन्हें आते में करोंदे के फल दिखे, कुछ लाल-लाल थे, कुछ पीलापन लिये और कुछ हरे थे। स्त्रियों को खटाई बड़ी प्रिय होती है, कुछ खास मौकों पर। तो उन दो में से एक की निगाह जब उन करोंदों पर पड़ी तो अनायास ही उसके मुँह में पानी आ गया। फिर तो उसने अपने सिर की गगरी को एक तरफ रखा और अपनी पहनी हुई साड़ी को कसकर वह बाला करोंदे के पेड़ पर चढ़ गयी। वह अपनी पसंद के करोंदों को खाने लग गयी। उसने देखा कि कुछेक लाल रंग के हैं, कुछेक हरे-पीले मिश्रित रंग के हैं, उसने उन्हें तोड़ने को हाथ बढ़ाया था कि करोंदे का काँटा उस युवती की बाँह में चुभ गया। यही नहीं उसकी बाँह में चुभकर काँटे की नोंक टूट गयी। अब कौन उसके काँटे को निकालेगा, कौन उसकी बाँह थामेगाघ उसने कहा कि मेरा देवर मेरी बाँह से काँटा निकाल देगा और मेरा प्रीतम मेरी बाँह थामेगा।

कौवा से यारी लगांये गलगलिया, रेशम की धोती घरी लंयें ठाँड़ी,
सपरे ने कौवा मनाय गलगलिया, तार्ती जलेबी दूदा के लड्डआ,
खावे ने कौवा, मनाय गलगलिया, झंझन झाड़ी फौहारे के पानी,
पीवे ने कौवा पियाय गलगलिया, कौवा से ....

पक्षियों में भी आपस में प्रेम होता है। कौवे को गिरधर कवि ने अपवित्र कहा, किसी ने कौवे की आवाज को कर्कश कहा तो किसी ने उसके रूप पर टिप्पणी की। लेकिन यहाँ तो कुछ उल्टा ही है। गलगल नामक पक्षी कौवे से प्रेम कर बैठी, वह तो कौवे की दीवानी हो गई। गलगल ने कौवे के लिए क्या कुछ नहीं किया। सुबह सबेरे अपने प्रेमी कौवे की खातिर वह रेशमी धोती लायी, सोचा कि नहाने के उपरान्त उसे यह धोती पहनने को दूँगी। इसे पहनने से वह रूप का राजा लगेगा। लेकिन यह क्या कौआ तो खड़ा हुआ है, वह स्नान ही नहीं करना चाहता। उसकी प्रेमिका उसे मना रही है। जैसे-तैसे उसने स्नान किये तो गलगल उसके लिए गर्म-गर्म जलेबियाँ दूध एवं लड्डू लेकर आई है, उसे खाने के लिए आग्रह कर रही है, लेकिन कौआ है कि वह उसकी बात ही नहीं मान रहा। अन्त में वह अपने प्रेमी कौवे के लिए फव्वारे का पानी भरकर लायी और उस पागल प्रेमी को पीने के लिए प्रेमिका अनुरोध कर रही है, लेकिन कौआ मानता ही नहीं।

रामा जनकपुर आये सजनी, रामा जनकपुर आये।
कारे खेत की माटी मंगाई, आर माटी मंगाई,
ढिंगधर अंगन छवाये सजनी
सुरहन गऊ के गोबर मंगाय, आर गोबर मंगाये,
ढिगधर भुवन लिपाये सजनी,
गजमुतियन के चौक पुराये, आर चौक पुराये,
सोने के कलश धराये सजनी

तुलसी दास आस रगवर के, आस रगवर के,
सखियों ने मंगल गाये सजनी
रामा जनकपुर आये सजनी, रामा जनकपुर आये।।

भगवान श्रीराम अपनी ससुराल जनकपुरी आये हैं, उनका स्वागत किस प्रकार किया गया। खेत की काली मिट्टी मँगवाकर सारा आँगन छपवाया गया। तत्पश्चात् सुरहिन गाय का गोबर मँगवाकर सारा भवन लिपवाया गया। चौक पूरने को मोती मँगवाये गये। ऐसे उन मोतियों से चौक पूरा। उस चौक पर सोने का कलश तथा चौमुखा दीया जलाकर रख दिया और अन्त में श्रीराम जी के लिए जनकपुरी की स्त्रियों ने मंगल गीत गाये।

काहे लगाई लौलैंये तलैयों पै, काहे लगाई लौलैया,
ठंडे से पानी गरम कर लाई, गरम कर लाई,
सपरो ननंद के भैया, तलैयों पै ....
रेशम धोती धरी लयें ठांडी, धरी लंय ठांड़ी
पैरो नंद के भैया, तलैयों पै ....
ताती जलेबी दूदा के लडुवा आर दूदा के लडुआ,
जे लो ननद के भैया, तलैयों पै ....
झंझन झाड़ी फौहारे को पानी, फौहारे को पानी,
पीले ननद के भैया, तलैयों पै ....
लौंगेन खील लगाई यार बिरियाँ, लगाई यार बिरियाँ
चाबो ननद के भैया, तलैयों पै ....
रंगा महल में चौपर डारी, आर चौपर डारी,
खेलो ननद के भैया, तलैयों पै ....
काहे लगाई लौलैया तलैया पै, काहे लगाई लौलैया।।

एक पत्नी अपने पति से पूछती है कि आपने तालाब पर इतनी देरी क्यों कर दी कि रात्रि का दूसरा पहर लग गया है? वह अपने पति के स्नान हेतु पानी को गरम करके ले आयी, मेरी ननद के भैया गरम पानी से स्नान कर लो। स्नान के उपरान्त अपने पति को वस्त्र पहनने को दिये। फिर खाने में गर्म-गर्म जलेबियाँ, दूध तथा लड्डू परोस दिये। फौवारे का पानी पीने को दिया, तत्पश्चात् लौंग, इलायची युक्त बीड़ा लगाकर दिया, कहा कि मेरी ननद के वीरन बीड़ा चाब लो। अन्त में रंगमहल में चौपड़ डाल दी गई और दोनों चौपड़ खेलने लगे।

बेला सगंधे लेय बाखर में, बेला सगंधे लेय,
कौना लगाई बेला चमेली, कौना लगाये अनार,
राजो लगाई बेला चमेली, रनियाँ लगाये अनार,
काहे कें सीचों बेला चमेली, काहे सिंचाओ अनार,

दूदा सें सींचो बेला चमेली, दईरा के सींचो अनार,
नींदन लागी बेला चमेली, नींदन लागे अनार,
फूलन लागी बेला चमेली, फूलन लागे अनार,
कौंना खों सोहे बेला चमेली, कौना खों सोहे अनार,
राजों खों सोहे बेला चमेली, रनियों खों सोहे अनार,
बेला सुगंधे लेय बाखर में, बेला सुगंधे लेय।।

किसी बड़े घर (बाखर) के आँगन में बेला लगा है, उसकी सुगंध चहुँओर फैल रही है। किसने बेला-चमेली लगाई, किसने अनार लगाये? राजा ने बेला-चमेली लगाई, रानियों ने अनार लगाये। बेला-चमेली तथा अनार की सिंचाई किससे की जाये? दूध से तो बेला-चमेली सींचो तथा दही से अनार को सींच दो। फिर बेला-चमेली, अनार की निंदाई, गुड़ाई होने लगी। बेला-चमेली तथा अनार फूलने लग गये। उनकी सुगंध फैलने लगी है। बेला-चमेली, अनार किसे शोभा देंगे? राजा को बेला-चमेली भाते हैं तथा रानी को अनार अच्छे लगते हैं।

बही जाऊँ मोरे राजा हिलोरों में, मरी जाऊँ मोरे राजा मरोरों में।
फरबन-फरबन आ गई नरबदा जू, आ गई नरबदा।
पिड़री भीजें हिलोरों में ....
पिड़रन-पिड़रन आ गई नरबदा जू आ गई नरबदा।
जंगिये भीजें हिलोरों में ....
करहन-करहन आ गई नरबदा जू आ गई नरबदा,,
छतियें भीजें हिलोरों में ....
मरी जाऊँ मोरे राजा हिलोरों में।।

बरसात अपनी चरम सीमा पर है, नर्मदा नदी में पूर आया हुआ है। धारा का वेग इतना तेज है कि नायिका नदी पार करने में असमर्थ हो रही है, वह अपने प्रीतम से कहती है- अरे! मैं तो बही जा रही हूँ, धारा का वेग बड़ा तेज है। पहले नर्मदा जी मेरे पंजों तक ही थीं। लेकिन जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ती हूँ तो उनका जलस्तर बढ़ता ही जा रहा है, पंजों से पिंडली तक डूबने लगी, फिर मेरी जाँघों तक पानी आ गया, आगे बढ़ी तो कमर-कमर पानी हो गया। मैं आगे कैसे जाऊँ? वेग तो बढ़ता ही जा रहा है, अब मेरी छाती तक डूबने लगी है।

महंगे बीज बुआये अनोखी नें, महंगे बीज बुआये।
काहे के हर बखर बनाये, काहे कीं पड़हारी रे।।
ये हरिया हर लैंके निकरे, को तौ भई समरारी रे।।
बारो सो देवरा हर लैके निकरी, भौजी रे भई समरारी रे।
दूबर पिछौरा रे चपोला पनैयाँ, पैर चली समरारी रे।।
महंगे बीज बुआये अनोखी ने, महंगे बीज बुआये।।

मेरी भौजी बड़ी अनोखी है, उसने महंगे बीज बो दिये। किस लकड़ी का हल बना है, किसकी पड़हारी लगी है? धतूरे का हल बनवाया तथा हडुआ की लकड़ी की पड़हारी लगाई है। कौन हल लेकर निकला, कौन उसे सम्हालने वाला है? देवर हल लेकर निकला, भौजी ने संभाला। भौजाई चरकने की आवाज वाले जूते पहिन कर खेत में बोनी करवाने निकली। इस तरह से अनोखी ने महंगे बीज खेत में बो दिये।

रुमक झुमक चले अइयो रे, साहुन के बदला रे,
कौना दिसों बदला भये, साहुन के बदला रे,
कहाँ बरस गये मेघा रे, साहुन के बदला रे,
अग्गम दिसों बदला भये, साहुन के बदला रे,
पच्छम बरस गये मेघा रे, साहुन के बदला रे,
कौना की भींजे चूनरी, साहुन के बदला रे,
कौना की पचरंग पाग, साहुन के बदला रे,
राधे की भीजें चूनरी, साहुन के बदला रे,
मोहन की पचरंग पाग, साहुन के बदला रे,
रुमक झुमक चले अइयो रे, सहुन के बदला रे।

हे सावन मास के बादलों तुम उमड़-घुमड़ कर झूमते-नाचते हुए आना और जमकर वर्षा करना। कौन दिशा में बादल हो रहे हैं और कौन दिशा में ये मेघ वर्षा कर रहे हैं? उत्तर दिशा में बादल होने लगे और पश्चिम दिशा में घनघोर वर्षा की। वर्षा होने से किसकी चूनरी भींग गई और किसकी पाग? वर्षा हो जाने से राधिका जी की चूनरी भीग गई और कान्हा के सिर की पगड़ी भीग गई। इन उमड़ते-घुमड़ते सावन के बादलों ने बड़ा उत्पात मचा दिया।

बजाई वंशी रे जमुना के तीर श्याम बजाई बंसी,
काहे की तोरी मोहन मुरलिया, काहे के मौचंग रावरे,
ये मोहना रे, जमुना के तीर..........
हरे बाँस की मोहन मुरलिया, रूपे के मौचंग रावरे,
कै सुर बाजे तोरी मोहन मुरलिया, कै बाजे मौचंग रावरे,
नौ सुर बाजे तोरी मोहन मुरलिया, दस बाजे मोचंग रावरे,
बजाई वन्शी रे, जमना के तीर श्याम बजाई वंशी।।

माता यशोदा के लाड़ले कान्हा ने आज यमुना के तीर पर बाँसुरी बजा दी। अरे! इस बैरन बाँसुरी का जादू तो यहाँ सब पर चढ़ जाता है। जरा पता तो करो कि बाँसुरी काहे की बनी है और काहे की मौचंग बनी है? मोहन की बाँसुरी हरे बाँस की है और चाँदी के मौचंग बने हुए हैं। श्री कृष्ण की मुरली कितने सुरों की बनी है तथा मौचंग में कितने सुर हैं? मोहन की बाँसुरी के नौ सुर हैं तथा मौचंग में दस स्वर बने हुए हैं।

मारी बलमा रे, खेतल कंकड़ मारी बलमा,
कौनां कटाई जे रोलियाँ रे, कौने हरीरे बाँस।
मोहन कटाई जे रोलियाँ रे, राधे हरीरे बाँस,
काहे कटाई जे रोलियाँ रे, काहे हरीरे बाँस।।
कुलरौ कटाई जे रोलियाँ रे, बखिया हरीरे बाँस,
काहे के आवें जे रोलियाँ रे, काहे हरीरे बाँस।
गाड़ी हो आयीं जे रोलियाँ रे, पड़लों हरीरे बाँस।।

मुझे मेरे पति ने खेलते में कंकड़ी मार दी। पता नहीं खेल-खेल में ऐसा भी कहीं होता है? ये रोलियाँ किसने कटवाई हैं? किसने हरे-हरे बाँसों को कटवाया है? मोहन ने रोलियाँ कटवाई हैं तथा राधे ने हरे बाँस कटवा डाले हैं। बाँस किससे काटे गये तथा किस औजार से रोलियाँ काटी गईंघ् कुल्हाड़ी से रोलियाँ तथा बका से हरे बाँस कटवाये गये। रोलियाँ किस पर आयीं तथा बाँस किस पर आये? गाड़ी में रोलियाँ भरकर आयी तथा पड़ों पर हरे बाँस लादकर लाये गये।

झोका खाय आज मोरी गागर, झोका खाय झकोरा खाये।
सिर पर घड़ा, घड़ा पर घैला, पतरी कमर राधा लफ-लफ जाये।
जो जमना के घाट बंधे हैं, धोको सो कछु जानो जाये।
संग की सखियाँ दूर निकर गईं, मोय विलमा लईं कदम की छाँय।
कैसे भरों सखी झुक-झुक पानी, बारी उमर मोरो जिया घबराय।
झोका खाय आज मोरी गागर।

आज राधिका जी की गगरी पता नहीं क्यों झुक-झुक जाती है। हवा के झोंके भी चल रहे हैं। मैंने सिर पर बड़ा सा घड़ा रखा, उसके ऊपर छोटा घड़ा रखा। इनके बोझ से मेरी कमर बल खा रही है, कहीं मोच न आ जाये। यमुना जी के घाट वैसे तो पक्के बने हैं, लेकिन कहीं धोका न हो जाये। राधा जी की सहेलियाँ पानी भरकर दूर निकल गईं, लेकिन कान्हा ने उन्हें कदम के नीचे रोक लिया है। मैं झुककर पानी कैसे भरूँगी? मेरी उम्र अभी नादान है, यह सोचकर मुझे बड़ी घबराहट होने लगी है।

सिर पैसें गगरिया कैसे गिरी,
गैल में मिल गये ससुरा हमारे, ससुरा हमारे
उनई खों परदा करन लगे,
सिर पैसें गगरिया ऐसे गिरी।
गैल में मिल गये जेठा हमारे, जेठा हमारे
उनई खों परदा करन लगे,
सिर पैसें गगरिया ऐसे गिरी।
गैला में मिल गये देवरा हमारे, देवरा हमारे

उनई खों परदा करन लगे,
सिर पैसें गगरिया ऐसे गिरी।।

एक नव ब्याहता स्त्री जब पहली बार अपनी ससुराल जाती है, तो उसे नये घर में बड़ा डरकर रहना पड़ता है, परदा भी करना पड़ता है। उसी परदे के साथ घर का समस्त काम वह करती है। प्रस्तुत गीत में कुछ इसी तरह का चित्रण है। जब वह स्त्री पानी भरने को जाती है, तो परदा (घूँघट) के कारण उसके सिर पर रखी गगरी गिर जाती है। इसका कारण यह था कि रास्ते में उसके ससुर मिल जाते हैं, जिन्हें वह परदा करने लगती है। हड़बड़ाहट में उसके सिर से गगरी गिर जाती है। जब वह बिना गागर के घर पहुँची तो उसके घर वाले उससे पूछते हैं कि गागर कैसे गिर गई? बहू जवाब देती है कि मैं अपने ससुर, जेठ, देवर के मिलने पर उन्हें परदा करने लगी, जिससे मेरे सिर की गागर गिर गई।

नैना बान काय मारे अटा बारी,
गौरी के नैना अधिक रसीले रे अधिक रसीले,
जैसे आम रतनारे अटा बारी,
गौरी को मुखड़ा भौतई सुहानो रे भौतई सुहानो,
जैसे चाँद सितारे अटा बारी,
गोरी–गोरी बइयाँ हरी–हरी चुरियाँ रे हरी–हरी चुरियाँ,
बाजूबंद न्यारे अटा बारी,
नाक नथुनियाँ कमर करधुनियाँ, कमर करधुनियाँ
बिछिया देख ठनकारे अटा बारी,
नैना बान काय मारे अटा बारी।

अरी ओ अटा पर रहने वाली तूने अपने नैनों के बाण क्यों चला दिये? मैं तो उन बाणों के लगते बेसुध हो गया। उसके नयन इतने रसीले हैं जैसे गुलाबी आम रस से भरा हो। उसका मुख इतना सुन्दर है कि जिसके सामने चाँद–सितारे फीके पड़ जायें। उसका रंग गोरा है गोरी–गोरी बाँह में हरे रंग की चूड़ियाँ बहुत अच्छी लग रही हैं। गोरी बाँह में हरी चूड़ी उस पर बाजूबंध जो सुन्दरता में चार चाँद लगा रहे हैं। वह अपनी नाक में नथनी पहने है, कमर में करधनी शोभायमान हो रही है, पैरों में बिछियों के बजने वाले घुंघरू हैं। एक तो वैसे भी तुम्हें विधाता ने फुरसत में गढ़ा है। उसने अपनी सारी विशेषतायें तुम्हें दे डालीं और उस पर यह श्रृंगार।

पाई

नादान वन रस लेते, गोरी तोरे नादान वन रस लेते,
गोरी धना होती रे वन की हिरनियाँ, वन की हिरनियाँ
सैंयाँ शिकारी होते गोरी तोरे ....

गोरी धना होती जल की मछरिया रे, जल की मछरिया,
सैंयाँ ढिमरवा होते गोरी तोरे ....

नादान बने रहने में ही फायदा है, अतः नादान बनकर मजे लेते रहते हैं। अगर वह जंगल की हिरनी होती और मैं शिकारी होता तो कितना अच्छा होता। वह यदि मछली होती और मैं ढीमर होता तो भी अच्छा होता।

पड़गर

गौनो लैकें निकर गये बालम चाकरिया
सोई कौना के हांत संदेश पठाये,
सो कौना के हांत पठादऊँ पतियाँ,
सोई सुअना के हांत संदेश पठादऊँ,
सारों के हांत पठादऊँ पतियाँ,
सोई याद तुमारी जब पिया आवे,
सो रात नें आये मोय निंदिया,
गौनों लैकें.......

मेरा गौना करवाकर मेरे पति मुझे ससुराल में छोड़कर, नौकरी करने चले गये। मैं यहाँ अकेली रह गई। उन्होंने मेरी सुधि ही नहीं ली। मैं किसके हाथों संदेशा पहुँचाऊँ, किसके हाथ से चिट्ठी भेजूँ? सुआ के हाथ सन्देशा पहुँचा दूँ तथा सारस के द्वारा पत्र पहुँचा दूँ। मुझे हर घड़ी अपने पति की याद आती है, मुझे न दिन में चैन है और न रात में नींद।

सुख सोये शहर जागे रे रसिया,
जब मोरे रसिया फरकों हो आये
सोई भौक उठी रे बैरन कुतिया,
सोई जब मोरे रसिया अंगना हो आये
डिड़क उठी रे बैरन पड़िया,
सोई जब मोरे रसिया आये उसारों
सो चरक उठी रे बैरन खटिया।

जब सारा संसार मध्य रात्रि को सुख की नींद में सोया रहता है, तब मेरा प्रेमी जागता है और मुझे मिलने मेरे घर आता है, लेकिन उसके घर तक आते-आते कितनी बाधाएँ आयीं। जब वे घर के बाहर तक आये थे, उस समय बैरन कुतिया ने भौं-भौं करना शुरू कर दिया। जब वे आँगन में आये तो पड़िया डिड़कने लगी, जब ये मेरे बिस्तर पर आये, तो ये बैरन खाट चरमरा उठी। हमारे मिलन के बीच कितनी बाधाएँ नहीं आयीं।

कहाँ डार आई नार नवेली बिछिया,
सोई सब कौऊ ढूंढे इछिया-बिछिया,
गोरी धन ढूँढे अपने रसिया,
सोई कोई ढूँढे कान तरूकला,
गौरी धन ढूंढे अपने बिछिया,
सोई-कौना ने ले दये कान तरूकला,
कौना ने ले दये हैं रे बिछिया,
सोई देवरा ने ले दये कान तरूकला,
सैयाँ ने ले दये हैं रे बिछिया,
कहाँ डार आई ....

एक अल्हड़ युवती के पैर के बिछिया गिर गये, उससे तब से पूछ रहे है कि- अरी नवेली नार! तू अपने पैरों की बिछिया कहाँ गिरा आई। यह सुनकर घर के लोग उसकी बिछिया ढूँढने में लग जाते हैं और वह तो अपने पति को ही ढूंढ रही है, उसे क्या। फिर सब उसके कानों के तरूकला ढूंढने लगं, लेकिन उसे क्या फर्क पड़ता। किसने उसके कानों के तरूकला लिये थे? किसने उसके पैरों के बिछिया लिये थे? उस युवती के देवर ने कानों के तरूकला लिये थे तथा पति ने पैरों के बिछिया लिये थे।

रसिया बिना गौनो मोरो को लै जाय,
सोई पैले लुबौआ मोरे ससुरा री आये,
ससुरा के संगे मोरी जैहे नें बलाय,
सोई दूजे लुबौआ मोरे जेठा री आये,
सो जेठा के संगै मोरी में बलाय,
तीजे लुबौआ मोरे देवरा री आये,
सो देवरा के संगें मोरी जेहे ने बलाय,
सोई चौथे लुबौआ मोरे सैयां री आये,
सो सैयां के संगे मोरी डोली चली जाय,
रसिया बिना गौनों मोरो को लै जाय,
रसिया बिना ....

जिसके संग मेरा विवाह हुआ है, मैं तो गौना भी उसी के संग कराऊँगी। इसीलिए मेरा गौना दूसरा कोई भी नहीं करवा सकता। गौना कराने पहले पहल मेरे ससुर जी आये हैं, लेकिन उनके साथ मेरी बलाय जाये। दूसरी बार मुझे लेने मेरे जेठजी आये, उनके साथ भी मैं नहीं जाऊँगी। चौथी बार मेरा गौना कराने मेरे पति आये है, अब तो मैं उनके साथ खुशी-खुशी चली जाऊँगी। मैं तो डोले में बैठकर अपने पति के साथ जाऊँगी।

रतनारे नैन करों री कारे रतनारे,
सोई कौनां पै पैरों हीरी-पीरी चूरियाँ,
सोई कौनां पै नैन करों री, कारे रतनारे ....
सोई सैंया पै पैरों हीरी-पीरी चुरियाँ,
सोई देवरा पै नैन करों री, कारे रतनारे ....
रतनारे नैन करों री कारे रतनारे,
कौना ने लै दयीं हीरी-पीरी चूरियाँ,
कौना ने लै दये कजर, कारे रतनारे ....
सैयां ने लै दयीं हीरी-पीरी चूरियाँ,
सो देवरा ने लै दये कजर कारे रतनारे ....
रतनारे नैन करों री कारे रतनारे।

अरी देख! तुझे विधाता ने आकर्षक सा यौवन दिया है। तेरे बड़े-बड़े नेत्र जिनमें लालिमा छाई हुई है, कोई देखेगा तो तुझे उसकी नजर ही लग जायेगी। मेरी मान, तू नयनों में काजल लगा, जिससे किसी की नजर नहीं लगेगी।

देख सखी! यह यौवन तो विधाता की देन है, मैं किसके लिए हरी-पीली चूड़ियाँ पहनूँ और किसके लिए अपनी आँखों में काजल लगाऊँ? तू अपने पति के लिए हरी-पीली चूड़ियाँ पहिन और देवर के लिए काजल लगा। किसने चूड़ियाँ ले दीं और किसने काजल ले दिया? पति ने चूड़ियाँ तथा देवर ने काजल ले दिया, अब तो मेरी बात मान।

लड़ियो ने सास न्यारी कर दे,
सोई अटा अटारी सब तुम ले ले,
एक टूटी टपरिय हमें रे दे दें,
बासन भाँड़े सब तुम ले ले,
एक फूटी कुपरिया हमें रे दे दें
लड़ियो ने सास न्यारी कर दे,
लड़ियो ने ....

सास से लड़ाई झगड़ा नहीं करना, भले ही उसको अलग कर देना। वह बेचारी अलग-थलग पड़ी रहेगी, लेकिन उससे झगड़ा नहीं करना। अरी बहू! मेरे बनवाये इसे महल के दो महलें तुम ले लेना और एक टूटी झोपड़ी मुझे दे देना, लेकिन मैं तेरी सास हूँ, मुझसे न झगड़ना। तुम सारे बर्तन ले लेना। मुझे एक टूटी-फुटी थाली ही दे देना, लेकिन मुझसे झगड़ा नहीं करना। मुझे अलग कर देना।

चलो चलिये हाट इमलिया की, चलो चलिये।
सौदा री सूत मोय कछू नई चायने,

एक ललक मोय बिछिया की।
सौदा री सूत भोय कछू नई चायने,
एक ललक मोय बिंदिया की।
सौदा री सूत मोय कछू चायने,
एक ललक मोय कजरा की।
चलो चलिये हाट इमलिया की,
चलो चलिये।।

कुछ सहेलियाँ इमलिया की हाट जाने के लिए एक दूसरी को कह रही हैं। कुछेक बोलीं मुझे कोई सौदा सामान तो खरीदना नहीं है, लेकिन एक बोली कि मुझे तो बिछिया खरीदने की ललक है, इससे इमलिया की हाट चलो। एक बोली कि मुझे और तो कुछ नहीं खरीदना, मुझे तो माथे की बिंदिया चाहिये, तो चलो। इस तरह से उन सखियों को काजल, चूड़ी आदि खरीदना थे।

मथरा में कनैया ने जनम लये मथरा में,
सोई जब हरि जनम लये मथरा में,
सो जगत पहरुवा सोय रहे मथरा में,
सोई लै बसदेव चले रे गोकल खों,
सो झपट के जमना मैया चरन गहे मथरा में,
सोई लै बसदेव पौर भये ठाढ़े,
सोई झपट जसोदा मैया बदन गहे मथरा में,
मथरा में कनैया ने जनम लये मथरा में।।

मथुरा में कृष्ण जी का जन्म हुआ। ईश्वर की लीला देखिये कि जन्म लेते ही जागते हुए पहरेदार सो गये। वसुदेव जी ने श्रीकृष्ण को उठाया और गोकुल की ओर चल दिये। पहरेदार तो सो रहे थे, इससे कोई रोक-टोक नहीं थी। श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद में हुआ था, पानी अपने पूरे जोर-शोर से बरस रहा था, इस कारण यमुना जी में भीषण बाढ़ आई हुई थी। वसुदेव बिना परवाह किये उस बाढ़ में अपने लल्ला को लिये हुए चले जा रहे थे। यमुना मैया को तो प्रभु के चरण छूना थे, सो वे अपना प्रवाह बढ़ा रही थीं। वसुदेव जी सिर पर एक टोकरी में कृष्ण जी को लिटाये चल रहे थे। यमुना जी उनके सिर तक आ गईं और फिर सिर से ऊपर श्रीकृष्ण जी के पैर छुए और धीरे-धीरे प्रवाह कम कर दिया। वसुदेव जी बिना दिक्कत के उस पार पहुँच गये। गोकुल में नंदबाबा के घर पहुँचे। यशोदा मैया ने प्रभु को तुरन्त अपनी गोदी में उठा लिया।

नैया डार के कनैया राधा ठाड़ी पैले पार,
काहे की तोरी नाव निवरिया,
काहे डार पतवार भैया, नैया डार दे ....
सूके सगौना की नाव निवरिया,

अम्मां डार किरबार भैया, नैया डार दे ....
को तोरी नाव में बैटियो राधा,
को है खेवनहार भैया, नैया डार दे ....
राधा तो नाव में बैठियो घयारे,
मोहन बैठन हार भैया, नैया डार दे ....
नैया डार दे कनैया राधा ठांड़ी पैसे पार नैया डार दे।

राधिका जी नदी के उस पार खड़ी हैं, और कान्हा इस पार खड़े हैं। वृषभान नंदिनी अर्थात् राधा जी को इस पार आना है। एक लोक कवि की कल्पना देखिये – हे प्रभु! आप नदी में नाव डलवा दीजिए, जिस पर बैठकर आपकी राधा इस पार आ जायेंगी, वह नाव भी आपको ही लेकर जानी होगी। वह नाव किस लकड़ी की बनी है, उसकी पतवार किस लकड़ी की होगी? नाव सूखे सागौन की लकड़ी की बनेगी, उसकी पतवार आम की बनाई जायेगी। उस नाव में कौन बैठेगा, उसकी पतवार कौन चलायेगा? अर्थात् कौन उस नाव का खेवनहार होगा? उस नाव में राधिका जी बैठेगी और मोहन यानी गिरधर गोपाल उस नाव के खेवनहार होंगे।

राछरे

राछरा गीतों का संबंध सावन से होता है। बहिनों को ससुराल से मायके बुलाया जाता है। सावन में भाई को राखी बाँधना तथा कजलियों का त्योहार मनाना ये मुख्य कार्य बहिनों के होते हैं। समस्त राछरा गीतों में कजलियों का वर्णन तथा उस पर हुए युद्धों की झलक मिलती हैं। कजली के दिन स्त्रियाँ कजलियों की पूजा करके उन्हें झूलों पर झुलाती हैं, उनके ऊपर दूध छिड़का जाता है तथा उनकी परिक्रमा करते समय राछरा गीत गाये जाते हैं।

दुलारी हरि संग खेलो प्यारी राछरों,
माथे हो बीच जड़ाये हो, ओके बेंदन की छब न्यारी।
कान तरूकला झझरी बारे, ओके लटकन की छब न्यारी।
गरे खंगवारो गुंजाब कौ, ओकी हंसली की छब न्यारी।
बाँहन बौटा झंजरी कौ, ओके बाजूबंद की छब न्यारी।
हाँतन ककना जड़ाय कौ, ओके ककड़ों की छब न्यारी।
कम्मर करधौनी झंझरी की, ओके चावन की छब न्यारी।
ओकी पाँव पैजनियाँ झंजरी, ओके बिछियन की छब न्यारी।
खेलो-खेलो नदी जमना तीर, दुलारी हरि संग खेलो प्यारी राछरो।

उक्त राछरा गीत में बुन्देली शृंगार की बड़ी सजीव अभिव्यक्ति हुई है। वृषभान दुलारी राधा के साथ कृष्ण राछरा खेल रहे हैं। राधा जी के माथे की बीज में रत्न जड़े हैं, उनके माथे का बेंदा बहुत सुन्दर है। वे कानों में झंजरीदार तरूकला पहने हुए हैं। तरूकला में लगे लटकन बड़े सुहावने

दीखते हैं। गले में हंसली, खंगोरिया पहने हैं। बाँहों में झजरीदार बहुँटा तथा बाजूबंद शोभायमान हो रहे हैं। हाथों में जड़ाऊ कंगन, कमर में सुन्दर करधन, पाँव में पैजनियाँ, बिछिया, इस तरह से राधा जी सिर से पैर तक के समस्त आभूषण पहनकर यमुना तट पर कृष्ण के साथ राछरा खेलने आयी हैं।

चंद्र कुंवर को राछरो रे माई, चंद्र कुंवर को ....
काहे के महल उठाइयो, काहे के ढोरे हैं बाँस,
रहबे को महल बनाइयो, शोभा खों ढोरे हैं बाँस,
दिन दस रहन न पाईयो, डस लये करिया नाग।
पाँव महावर नई छूटियो, फरिया के छूटे न दाग।
इन्द्रलोक सें गहनों जो आओ, बहुआ चंद्रावल के जोग।
हम कैसे कपड़ा पैरियो, बारे में भओ है विनास।
माथे पै बिंदिया बाँधी नहीं, मोती भरी नैयां माँग।
हम बिध को काहो बिगारियो, बारे में हो गव विनास।
जर तो जईयो मैया तोरी कूँख, जिनमें लये हैं औतार।
जल बिन नदिया बिहूनी रे माई, वैसई पती बिन नार।

यह चन्द्रकुँवर का राछरा है – महल क्यों बनाये जाते हैं, बाँस क्यों छाये जाते हैं? रहने के लिए महल तथा महल की शोभा के लिए बाँस लगाये जाते हैं। महल बना उसमें निवास भी होने लगा, लेकिन ठीक से दस दिन भी नहीं रह सके और काले विषधर ने उन्हें डँस लिया। उनकी पत्नी जिसका गौना अभी-अभी हुआ था, उसके पैरों में लगा महावर भी नहीं छूट पाया था। फरिया से हल्दी के दाग भी नहीं छूटे और वह अल्प समय में ही विधवा हो गई। चंद्रावलि को इन्द्रलोक से गहना आया था लेकिन वह कहती है कि मैं ये साज श्रृंगार कैसे कर सकती हूँ, मेरा तो सब कुछ चला गया। उसे पहनने के लिए इन्द्रलोक से कपड़े आये, लेकिन वह कैसे पहन सकती थी? वह कहती है कि मैंने अभी तक न तो अपने माथे में बैंदी ही बैंदी है, न ही मोतियों को मांग में सजा पाई। मैंने विधाता का ऐसा क्या बिगाड़ा था। जिसके कारण मुझे बाल्यावस्था में ही विधवा बना दिया। अरी माता! तेरी कोख क्यों नहीं जल गई, जिससे मैंने जनम लिया था। जिस तरह से जल के बिना नदी सूनी लगती है, उसी तरह बिना पति की स्त्री का जीवन ही सूना हो जाता है।

सबरे उरगिया उरई गये, मैया हमई उरई खों जाँय।
भैया भली है उरई की चाकरी ......
कहाँ तो धरो मैया जीन पलेंचा, कहाँ धरे हथयार।
घुल्लों टंगे हैं जीन पलेंचा, उतई धरे हथयार।
घोड़ी बाँधों घुड़सार में बेटा, कस ले होजा सवार।

छींकत घुड़ला पलानियों बेटा, बरजत भये असवार।
बैन पकर लई फेटली, माता घोड़े की रे बाग।
रनियाँ पकर गई पाँवड़ी, भैया भली है उरई की चाकरी।
बैठी तो रैयो रानी सतखंडों, खैयो डबों के पान।
हम तो पलट घर आइयो, मुतियों भरेहों तोरी मांग।
जरियो तो बरियो तोरे सतखंडा, पानौं पै परे रे तुषार।
तोरे अकेले जीरा बिना, सूनो लगे सकल सिंसार।
ऊँचे तो खेरो बरी को पेड़ों, जे तरें लये हैं उतार।
दुश्मन आनकें घेरियो रे भाई, वीरन डारे हैं मार।
ओढ़ पिछौरा रानी सो रहीं, सपने में वीरन दिखाँय।
हम तो गये रानी चाकरी, बैरों ने डारो है मार।
सपनो देवर मोरे आइयो, तुमरे वीरन डारे हैं मार।
अग्गम पच्छम सब देखियो, प्रीतम कहूँ ने दिखाय।

उरग के समस्त निवासी उरई चले गये तो हम भी उरई जायेंगे, उरई में रहकर नौकरी करना अच्छा है।

मेरे जीन-पलैचा तथा हथियार कहाँ रखे हैं? घुल्ले पर जीन पलेंचा तथा हथियार टंगे हैं। बेटा! जाने के पूर्व तैयारी कर लो, घोड़ी को घुड़सार में बाँधकर उसे तैयार कर लो और तुम भी तैयार हो जाओ। तैयार होकर जैसे ही वह योद्धा घोड़ी पर बैठने लगा कि उसी समय छींक हुई उसे जाने के लिए सबने रोका था। उसकी बहिन ने उसकी फेंट पकड़ ली, माँ ने घोड़े की लगाम थाम ली, उसकी रानी ने उसके पांयचों को पकड़ लिया। योद्धा बोला कि मुझे जाने से मत रोको, मैं शीघ्र ही वापस आ जाऊँगा। तुम मेरे सतखंडे महल पर बैठकर पान चबाती रहना। जब मैं वापस आऊँगा तो तुम्हारी माँग मोतियों से भर दूँगा। रानी कहती है कि तुम्हारे महल में आग लगे, पानों पर तुषार पड़ जाये? तुम्हारे न होने पर मुझे यह संसार सूना लगेगा वह नहीं मानता। एक ऊँचे कस्बे में जहाँ वट वृक्ष लगा था, उस स्थान पर वह उतर जाता है। उसे दुश्मनों ने घेर लिया और मार डाला। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर चादर ओढ़कर सो जाती है। उसे स्वप्न आया तो वह अपने देवर से बोली कि मुझे स्वप्न आया है कि तुम्हारे भाई को किसी ने मार डाला है। मैंने सब तरफ देखा, लेकिन वे कहीं नहीं दीखते।

साहुन मईना नीको लगे, गेंवड़े भई हरयाल।
साहुन भुंजरियाँ वै दई, भादों में दई हैं सिराय।
ऐसो है कोऊ भैया धरमी, बैन खों लवो है बुलाय।
आसों के सहुना घर के करो, आंगे के देहों कराय।
सोने की नांदें दूदों भरीं, सो भुजरियें लेव सिराय।

कै जैहें तला की पार रे भैया, कै जैहें भुजरियाँ सूक।
धरी भुजरियें मानक चौक में, वीरा रहे तुलाय।
कैसी बैन हटैं परी, बरवस लेत पिरान।
आसों के सहुना जूझ के हैं, आगे के देहों कराय।
नयनिया बुलाव री बरबरी में, बुलावा देव फिराय।
दौरी-दौरी नाइन फिरे, घर-घर फिरे नकीब।
कहाँ धरी माथे की बिंदिया, काहँ धरे सिंगार।
डबियन धरी माथे की बिंदिया, बक्सन धरे सिंगार।
कहाँ धरी है करहा कटरिया, कहाँ धरी गैंड़ा की ढाल।
कोनां टंगी करहा कटरिया, घुल्लन टंगी है ढाल।
कहाँ धरो सुरसी को बागों, कहाँ निरमोला पाग।
जमखाने में धरो सुरसी को बागो, ऊपर धरी है पाग।
झूला झूलत भैया खों लेव बुलाय, छप्पन भोग देव करवाय।
सोने के थारन परोसो, रूपे के गडुवन नीर।
एक कौर भैया ने लओ, दूजो दओ सरकाय।
कै लला माछी गिरी, कै टूटो मूंड को बार।
ने तो मैया माछी गिरी, ने टूटो मूंड को बार।
कुंवर कलेवा वे करें, जो क्वांरी ब्याहुन जाँय।
हम कलेऊ का करें, हम रन जूझन खों जाँय।
रचाये शुम्म घुड़िया के, पूंछ रची सराबोर।
बारन-बार मोती गुहें, किसवारन हीरालाल।
बिटियों के डोला सजे, बहुओं की चौड़ेल।
लहर-लहर डोला चले, पचरंग चली चौड़ेल।
जेठी पकर लई ताजमों, लुहरी घोड़ा की बाग।
जेठी खों पठैयो मायकें लुहरी को तुम पै भार।
धरी भुजरियाँ तला की पार, बिटिया आन सिराव।
टूटी फौजें दुश्मन की, बहनें भगने होय भग जाव।
हाथ काहू के परियों नहीं, लग जैहें कुल में दाग।
तुपकन के कुदुंवा लगे, मूंडों के गंजे हैं पहार।
सबरे लड़े इड़ियन छिड़ियन, मंगादा लड़े मैदान।
मारत-मारत भुज्जै रै गई, ललकारत रै गई भाँस।

श्रावण का माह है चारों ओर हरियाली दीखती है। इस मास में कजलियाँ बोई जाती हैं तथा भाद्र में उन्हें विसर्जित किया जाता है। ऐसा कोई धर्म परायण भाई है जो बहिन को लिवा लाये।

उसका भाई कहता है कि यह श्रावण यहीं करो, अगले वर्ष का वहीं करवा दूँगा। सोने की नांद दूध से भरवाकर उसमें कजली विसर्जित करवा दो। स्त्री बोली कि मैं तो कजलियाँ जलाशय में ही विसर्जित करूँगी, नहीं तो यहीं सूख जायेंगी। कजली मानक चौक में रखी है, भाई परेशान है। उसकी बहिन ने हठ पकड़ ली है। वह कहता है कि देखो यह श्रावण हमारे लिए युद्ध करने का है, अगले वर्ष तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगा। बहिन ने नाइन को बुलवा लिया और पूरे नगर की स्त्रियों को बुलौवा करा दिया। तत्पश्चात् वह श्रृंगार करने लगती है। कहाँ पर मेरी बेंदी है, कहाँ सिंगारदानी है? डलिया में बेंदी तथा पेटी में श्रृंगारदानी रखी है। मेरी कमर की कटारी कहाँ है? ढाल कहाँ रखी है? कोने में कटार तथा घुल्ले पर ढाल टंगी है। मेरा बागा कहाँ है, पाग कहाँ है? जमखाने में सुरसी का बागा, उसी के ऊपर पगड़ी है।

भाई झूला झूलता है उसे लिवा लाओ, उसे भोजन करवा दो। भोजन का थार परोसा गया, पीने के लिए पानी लाया गया। भाई ने एक ग्रास लेकर थाली सरका दी। किसी ने पूछा क्या थाली में मक्खी गिर गई अथवा बाल गिरा है? नहीं ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, भोजन वे करें जिन्हें ब्याह रचाने जाना है? अरे! हम क्या भोजन करें, हमें तो युद्ध में जाना है।

युद्ध के लिए घोड़ी सुसज्जित की गई। बेटियों को डोली में बैठाया गया, वधुओं को चौड़ेल में बैठाकर डोले तथा चौड़ेल चलने लगे। जब योद्धा जाने लगा तो उसकी स्त्रियों ने उसे रोककर कहा कि तुम युद्ध के लिए मत जाओ...। वह कहता है कि जेठी स्त्री को मायके पहुँचा दो, छोटी पर यहाँ की जिम्मेदारी है। मुझे कजलियाँ विसर्जित करवानी हैं। वे जैसे ही तलाब पर पहुँचे कि दुश्मन ने धावा बोल दिया। स्त्रियाँ कहती हैं कि देखो हम किसी दुश्मन के हाथ नहीं आयेंगे। अगर भाग सको तो भाग जाओ। दुश्मन ने पकड़ लिया तो हमारा कुल कलंकित होगा। बड़ा भीषण युद्ध होने लगा। लाशों के पहाड़ लग गये, रक्त की नदियाँ बहने लगीं। युद्ध में मुगल सेना थी।

रैया

घरर-घरर नदिया बहे, अरे रैया,
गौरी धन पनियाँ खों जाँय,
घिरी रे बदरिया फूहर चली,
अरे रैया आ गई बैरन बरसात,
सूनी मड़ैया मोहे डर लागे,
अरे रैया गरजत घन आधी रात,
घिरी रे बदरिया फूहर चली,
अरे रैया आ गई बैरन बरसात,
भादों में पंछी घर छोड़े नहीं,
अरे रैया बनजारे बन जिन जाँय,

जूझो को डंका रन खेतन बजो,
अरे रैया सजना लड़न खों जाँय,
सजना बसत परदेस में,
अरे रैया नैनन नीर बहाँय ....

बरसात का मौसम है, बारिश होने से नदी अपने वेग पर है। उसकी घरर-घरर की आवाज हो रही है। इसी समय बादल घिर आये और बरसात आ गई। मैं अपनी मड़ैया में अकेली हूँ। मुझे बड़ा डर लग रहा है, क्योंकि पानी बरसने के साथ-साथ बादल भी बड़ी जोर की गर्जना कर रहे हैं। यह भाद्र मास है, इस समय न तो पक्षी अपना बसेरा छोड़ते हैं, न ही बनजारे वन को जाते हैं। मेरे पति एक योद्धा हैं, रण पर जाने के लिए जैसे ही डंका बजा कि वे युद्ध के लिए चले गये। मेरे पति तो प्रवासी हैं, ऐसे समय में मैं अकेली उनकी याद में आँसू बहा रही हूँ।

घरर-घरर नदिया बहे अरे रैया, गोरीधन माहो अनांय,
काहे की सिल सपरन गई, काहे के जल अस्नान।
सुन्ने की सिल सपरन भई अरे रैया, गंगा के जल अस्नान।
सपर खोर ठांड़ी भई अरे रैया, सूरज की रफ लेय।
सूरज देवता तुम तो बड़े अरे रैया, तुमसे बड़ो नैयाँ कोऊ।
सपर खोर घर आईयो अरे सासो, पलका तो देव बिछाय।
हँस-हँस पूँछे उनकी सासोली अरे बहुआ, कैसो री बदन मलीन।
कै तोरो मूंड़ धमकियो अरे बहुआ, कै सिर आई है ताप।
ने सिर मूंड़ धमकियो अरी सासो, ने चढ़ आई है ताप।
आज के सपने माता का कहूँ अरी सासो, सपने दिखाने नंदलाल।
दूदा दहेड़ों जम गये अरी सासो, कुखियन जमें री नंदलाल।
आज कनैया जू ने जनमन लये, अरी सासों जेई सें बदन मलीन।
पैलो मास जब लागियो अरे रैया, मनरा रे काहे पै जाय।
मनरा तो कईये सासो आम पै अरे रैया, अमवा तो देव मंगवाय।
झमक अटरियाँ देवरा चढ़ गये अरी भौजी मनरा रे काहे पै जाय।
छोटे से देवरा लड़ बावरे अरे देवरा, मनरा रे अमवाँ पै जाय।
बाग बगीचों भौजी हम फिरे, अरे भौजी अमवा तो कहूँ ने दिखाय।
अम्मां तो कईये हरे बागों में अरे देवरा, उतई सें देव मंगाय।
झमक अटरियाँ देवरा चढ़ गये अरे भौजी, अंचरा तो देव पसार।
घरर-घरर नदिया बहे अरे रैया, गोरीधन माहो अनांय।।

नदी घरर-घरर की आवाज के साथ प्रवाहित हो रही है। उस नदी में एक स्त्री स्नान करने जाती है। वह कौन-सी शिला पर बैठकर स्नान करेगी, कौन से जल में स्नान करेगी? वह वधु

स्वर्ण निर्मित शिला पर बैठकर गंगाजल से स्नान करेगी। स्नानोपरान्त वह सूर्यदेव का आव्हान करती है। हे देव! आप इस संसार में सबसे बड़े हैं, आपसे बड़ा कोई नहीं है। सूर्यदेव से बड़ी मेरी माता हैं, जिन्होंने मुझे नौ-दस मास गर्भ में रखा है। वह स्त्री स्नान करके घर आई तो उसकी सासूजी ने उसे पलंग बिठा दिया। उसकी सासू उससे हँसकर पूछतीं है कि- अरी बहू! आज तुम कुछ उदास सी दिख रही हो ... इसका क्या कारण है? क्या तुम्हारे सिर में दर्द हो रहा है या फिर तुम्हें ज्वर हो आया है? बहू बोली कि- हे माता! मैं आपसे एक स्वप्न के विषय में बताऊँ, मुझे आज स्वप्न में एक बालक दिखा था। जिस तरह से दही के बर्तन में दूध से जमकर दही हो जाता है उसी तरह से मेरी कोख में शिशु आ गया है। इसी कारण से मैं कुछ अनमनी सी दिख रही हूँ।

सासू पूछती हैं कि बहू तेरा पहला महीना लगा है, तो तेरा मन क्या खाने को कर रहा है। आप मुझे आम मंगवा दो। वहाँ से उसका देवर आ जाता है, वह भी अपनी भाभी से उसकी खाने की इच्छा के विषय में पूछता है। फिर वह बाग में जाकर आम लाकर भाभी को देता है।

गैल में आवै रैया दो जने अरे रैया, लीली घोड़ी के असवार,
लीली तो बाँदो करौंद सें अरे रैया, गगरी तो देओ उठाय,
गगरी तो जबई उठाइहों अरे रैया, चलो हमारे साथ,
लाल-लाल डोला सजे अरे रैया, पचरंग सजे हैं कहार,
डोला उतारे बारू रेत में अरे रैया, बिछियन भर गई धूल,
डोला उतारे बाग में अरे रैया, फुलवन भर गई गोद,
डोला उतारे बजार में अरे रैया, लड्डुअन भर गई गोद,
डोला तारे पौर में अरे रैया, ब्याही के ढुक-ढुक जायें,
डोला से भीतर आईओ अरे रैया, ब्याही तो पूछें बात,
कै तुम लाये पिया पावनी अरे रैया, कै लाये जनम की सौत,
पीसे तुमारे पीसने अरे रैया, और खिलावै लाल,
मायें पटक दऊँ तोरे पीसने अरे रैया, ठांड़े पटक तोरे लाल,
गगरी उठाये की दोस्ती अरे रैया, आन बसीं परदेश,
दौरी-दौरी बनियाँ कें गई अरे रैया, बेसर धर विष देव,
कैसे परी तुम सांकरें अरे रैया, बेसर धर विष लेव,
छलिया ने मोसें छल करे अरे रैया, आन परी परदेश,
ओढ़ पिछौरा सो रई अरे रैया, मुख में माँछी जायें,
धाय-धाय परदेशन जरे अरे रैया, ठांड़ो पंछी पछताये,
गगरी उतारे की दोस्ती अरे रैया, आन परी परदेश।

एक सँकरे मुख का सुन्दर सा कुँआ है। उसपर एक सुन्दर नवयौवना पानी भर रही है। उस कुँए के रास्ते से दो घुड़सवार निकले, उनकी घोड़ी नीली थी। उन्हें देखकर वह बाला कहती है कि आप अपनी घोड़ी को करोंद से बाँध दें तथा मेरी गागर सिर पर रखवाने में मदद करें।

घुड़सवार युवक कहता है कि देखो मैं तुम्हारी गगरी तब ही उठाऊँगा, जब तुम मेरे साथ चलने का वचन दोगी। युवती उसके साथ जाने को राजी हो जाती है। उसको ले जाने के लिए सुन्दर डोला सजाया गया तथा कहार सुसज्जित हुए। डोले में बैठकर वह चल दी। डोले को जब एक रेतीले स्थान पर उतारा गया तो उस बाला के बिछियों में रेत भर गई। जब डोला बाग में उतारा, तब उसकी गोद फूलों से भर गई। डोला बाजार में उतारा तो उसकी गोद लड्डुओं से भर दी गई। फिर आगे चलने पर युवक का घर आ गया। डोले को पौर में उतारा तो युवक की ब्याहता पत्नी झाँक रही थी। वह युवक जब भीतर आया तो पत्नी पूछती है कि डोले में कौन स्त्री है? क्या कोई पाहुनी को तुम लाये हो अथवा मेरे लिए सौत लेकर आये हो?

पति कहता है कि न तो वह पाहुनी है न तेरी सौत है। अरे! यह तो तुम्हारे घर में तुम्हें सहारा देगी, तुम्हारे लाल की देखरेख करेगी, अनाज पीसने का काम करेगी, तुम क्यों परेशान होती हो? इन पति पत्नी की बातें वह स्त्री सुन रही थी। उसे युवक की बात सुनकर बड़ा दु:ख हुआ। अरे इसने तो मेरे साथ धोखा किया है। इसने मुझे छला है। वह दुखी होने के साथ क्रोधित भी थी। उसे अपना भविष्य अंधकारमय दीख रहा था। क्रोध की अधिकता में उसने बड़ा भयानक निर्णय लिया। वह एक बनिये की दुकान पर जाती है, उससे कहती है कि मुझे बेसर रखकर विष दे दो! बनिया कहता है कि ऐसा क्या संकट आ पड़ा कि तुम्हें बेसर (नथ) रखकर विष लेना पड़ रहा है? युवती बोली कि एक छलिया ने मुझे छला है, इसलिए मैं तुम्हारे पास आई हूँ। वह विष लेकर आई तथा उसने विषपान कर लिया, तत्पश्चात् वह एक चादर ओढ़कर सो गई।

तीक्ष्ण विष के प्रभाव से वह मृत्यु को प्राप्त हुई। उसके मुँह से झाग निकल रहा था, जिससे उसके मुँह में मक्खियाँ बैठ रही थीं। कुछ समय उपरांत सबको विदित हो गया कि परदेशिन मृत अवस्था में पड़ी है। युवक ने उसकी अन्त्येष्टि कराई, अब उसकी चिता धूँ-धूँ करके जल रही है। युवक पश्चाताप कर रहा है कि देखो गागर उठाने में हमारी दोस्ती हुई और इतनी शीघ्रता में उसे आग के हवाले होना पड़ा।

श्रम गीत

उठी-उठी रे घटा घनघोर तो बदरिया के,
पानी तो झिला रे मिल होय रहे।।
बे तो कौनां दिशा बदरा भये मोरे पिया,
कौना दिशा बदरा भये।
बेतो कहनां बरस गये मेव रे बदरिया के ।। पानी तो ....
बेतो अग्गम दिशा बदरा भये मोरे पिया,
अग्गम दिशा बदरा भयेते।
बेतो पच्छम बरस गये मेव रे, बदरिया के।। पानी तो ....
बेतो कौना की भीजें रंग चूनरी मोरे पिया।

कौनां की भीजें रंग चूनरी।
बेतो कौना की पचरंग पाग रे बदरिया के।। पानी तो ....
बेतो राधे की भीजें रंग चूनरी मोरे पिया,
राधे की भीजें रंग चूनरी।।
बेतो मोहन की पचरंग पाग तो बदरिया के।
पानी तो झिला रे मिल हो रहे।।

श्याम वर्ण के बादलों की घटा इस तरह की उठी कि मेघों की गर्जना के साथ वृष्टि होने लगी। इस वर्षा के मेघ किस दिशा से हुए थे और किस दिशा से बारिश हो गई? उत्तर की ओर से बादल उठे और पश्चिम में वर्षा हो गई। इस अतिवृष्टि से किसकी चूनर भीग गई, किसके सिर की पचरंगी पाग भीगी? इस वृष्टि से वृषभान दुलारी राधिके की सतरंगी चूनर भीग गई तथा ब्रजराज कृष्ण की पचरंगी पगड़ी भीग गई।

गाड़ी बारे मसक दे बैल, अवै पुरवैया के बादर ऊनये,
कौना बदरिया ऊँनई रसिया, कौना बरस गये मेव,
अग्गम बदरिया ऊँनई रसिया, पच्छम बरस गये मेव।
घुंघटा बदरिया ऊँनई रसिया, गलुवा बरस गये मेव,
अवै पुरवैया के बादर ऊनिये ....

अरे ओ गाड़ीवान! तनिक शीघ्रता से गाड़ी चलाओ, क्योंकि पूरब की हवा चलती है, पूरब में बादल छा रहे हैं। तेज बारिश होने की सम्भावना है। अत: बैलों को तेज चलाओ। बादल किस दिशा से घिर कर आये, कहाँ बरस गये? पूर्व से घिरकर बादल आये और पश्चिम में बरस गये। बादल के बरसने से घूँघट भीग गया तथा शरीर पानी से भीग रहा है।

भुनसारे के पनियाँ ने जाव री ननदिया,
नेहा तो लगा रे कौनऊ लै जैहे ....
बेतो कौन ने कुंअला खुदाये री ननदिया ....
कौना ने कुंअला खुदाये ते,
बेतो कौना धरा दई पाट री ननदिया ....
बेतो सुसरा ने कुंअला खुदाये री ननदिया,
सुसरा ने कुंअला खुदाये ते,
बेतो देवरा डरा दई पाट री ननदिया ....
बेतो कौना वरन सिर बेहोरो कईये,
कौना वरन सिर बेहोरे,
बेतो कौना वरन पनहार री ननदिया ....
नेहा तो लगा रे कौनऊ लै जैहे,

बेतो गुमची वरन सिर बेहोरो कईये,
गुमची वरन सिर बेहोरे,
बेतो शामलिया पनहार री ननदिया,
नेहा तो लगा रे कौनऊ ले जैहें।

एक स्त्री अपनी ननद को समझाती है कि देखो तुम सुबह-सुबह पानी भरने न जाया करो, नहीं तो कोई मनचला तुमसे प्रेम करके तुम्हें ले जायेगा। कुँआ किसने खुदवाया, पाट किसने डलवायी? मेरे ससुर जी ने कुँआ खुदवाया तथा देवर ने उस पर पाट डलवायी। पानी भरने के घड़े किस रंग के हैं, पानी भरने वाली का रंग रूप कैसा है?पानी के घड़े, गुमची के जैसे (रक्तवर्ण) हैं तथा पनिहारी साँवले रंग की है।

बिलवारी

जाय बसे परदेस पिया री मोरे,
जाय बसे परदेश ....
कौना के हाँतों पाती लिख भेजों,
सो कौना के हाँत संदेश ....
सुअना के हाँत पाती लिख भेजों,
सो सारों के हाँत संदेश ....
जब-जब याद पिया की आवै,
सो दिल मे उठत कलेश ....

मेरे पति परदेस में बस गये हैं, उनकी कोई खबर नहीं आती, मैं यहाँ उनके लिए परेशान हूँ। उनको कैसे खबर दी जाय, कैसे संदेशा पठाया जाये? तोते के द्वारा पत्र लिखके पहुँचाओ तथा सारस से उन्हें संदेशा पहुँचा दो। उनकी जब भी याद आती है तो मन बड़ा दुखी हो जाता है।

कौना हरें लंये जाय हो घीरथ पै,
कौना हरें लंये जाय ....
कौना की जा बेटी, कौना की जा बहुआ,
कौन हरें लये जाये हो घीरथ पै ....
जनक की जा बेटी, दशरथ की जा बहुआ,
असुर हरें लंये जाय हो घीरथ पै ....

एक रथ पर कोई किसी स्त्री का अपहरण करके लिये जा रहा है। वह अपहरणकर्ता कौन है तथा किसका अपहरण करके ले जा रहा है? किसकी वह बहू है, किसकी बेटी है तथा कौन लेकर जा रहा है? वह महाराज दशरथ की पुत्रवधू, विदेहराज जनक की बेटी सीता है तथा लंकापति रावण उनका अपहरण करके रथ में बैठाकर ले जा रहा है।

दिनरी

देखे होंय तो बताव री सहेलरी,
रातें के वीरा मोरे पाउने,
वे तो एक दिन देखे मैंने दरजी की दुकनिया,
बैठे-बैठे बटुवा सुआंय री सहेलरी ....
वे तो एक दिन देखे मैंने पटवा की दुकनिया,
बैठे-बैठे बटुवा में डोरा डरांय री सहेलरी ....
राते के वीरा मोरे पाउने ....

हे सखी! तुमने मेरे पाहुने जो रात में आये थे- उन्हें देखा है, तो मुझे बतला दो? सखी बोली कि वे एक दिन दरजी की दुकान पर बैठ बटुवा सिलवा रहे थे। एक दिन पटवा के यहाँ बैठे बटुए में डोरी डलवा रहे थे, मैंने उन्हें वहीं देखा है।

शरद गीत

बुन्देलखण्ड में नवरात्र के अवसर पर गाये जाने वाले गीत 'जस' कहे जाते हैं। इन गीतों की अंतिम लाईन में सुमर-सुमर माई तोरे जस गावैं' या पंचाभगत माई तोरे जस गावैं' जस शब्द की आवृत्ति होती है। यश को यशोगान भी माना गया है और जस में दुर्गा देवी के यशोगान होते हैं। इस अंचल में शक्ति पूजा के रूप में माँ दुर्गा भवानी को विशेष महत्व दिया गया है। जवारों का त्योहार देवी शक्ति के प्रति बुन्देलखण्ड वासियों की असीम श्रद्धा का परिचायक है। जस गायन में देवी के चरित्रों का वर्णन उनके युद्ध विषयक प्रसंग हमें बरबस ही शक्ति पूजा के लिए प्रेरित करते हैं। देवी शक्ति के नौ रूप नवरात्र की नौ दिनों की पूजा के परिचायक हैं - जस समूह रूप से गाये जाते हैं। जसों में सर्वमंगल की कामना होती है।

जस गीत

देवी मोरे अंगना आई, निहुर के पैयां लागों,
काहो देख मैया अंगने आंई, काहो देख मुस्कानी,
दूदा देख मैया अंगना आई, पूता देख मुस्कानी,
देवी मोरे अंगना आई, निहुर के पैयां लागो..........
ठंडे से पानी गरम कर लाई, सपरो मोरी आद भुवानी,
तातीं जलेबी मुगद के लडुवा, जेलो मोरी आद भुवानी,
झन-झन झाड़ी फुहारे को पानी, पीलो गोरी आद भुवानी,
लौंगन कील कील वीणा लगाये, रूचो मोरी आद भुवानी,
रंग महल में चौपर डारी, खेलो मोरी आद भुवानी,
रंग महल में सेजें डरीं हैं, सोलो मोरी आद भुवानी,

कजरीवन सें सिंगा मंगाये, घूमो मोरी आद भुवानी,
सुमर-सुमर मैया तोरे जस गावै, चरन छोड़ कहां जाऊं भवानी,
निहुर के पैयां लागो..........

देवी माता मेरे घर आँगन में आई हैं, मैं उनके चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद लेना चाहूँगी। मैया क्या देखकर मेरे घर आई हैं तथा क्या देखकर मुस्कुरा रहीं हैं? हमारे घर में दूध तथा पूत देखकर वे खुश होकर आयी हैं। ठंडे पानी को गर्म किया गया है। हे माँ! आप स्नान कर लें। गर्म-गर्म जलेबियाँ बनायी हैं, माता आप थोड़ा जलपान कर लें। आपके लिये ताजा जल भरवाया है, आप उसे पी लें। हमने आपके लिए पान बनाकर रखा है, आप पान का सेवन कर लें। मैंने कक्ष में चौपड़ डाली है, आप चौसर खेल लें। कजलीवन से आपके लिए आपका प्रिय वाहन सिंह मंगवाया है, आप उस पर सवारी कर लें। हे माता! हम आपका क्या सत्कार कर सकते हैं, बस हम तो आपके चरण सेवक हैं, आपके चरणों में ही हमें आसरा मिलता है।

अरे माई देशा पराये धांदू रहो हो माँ, अरे माई ....
अरे धांदू रे कहां तुमाये जनमन भये, अरे कहाँ भयो औतार,
कहाँ बसे हैं तोरे गोतिया, अर कहाँ मतारी बाप,
रानी जगदेहरा देशा पराये धांदू ....
अरे हिंगलाज जनमन लये, महीं धरें अवतार,
महीं बसे तोरे गोतिया, और मही मतारी बाप,
रानी जगदेहरा, देशा पराये.....
में अरे धांदू रे, गुन गाले गुरू आपने और गुरू की शरन में जाव,
गुरू की धोले धोतियाँ, कट जेंहें जनम के पाप,
रानी जगदेहारा, देशा पराये ....
अरे धांदू रे कौन सगर खुदाइयो, को पीवे पान,
को करे अस्नान, रानी जगदेहरा देशा पराये ....
ये अरे धांदू रे पीपर पत्र ने टोरियो, और बरे ने मारियो घाव,
गऊ शाला सपरन करें, ओकी मरे गरव से नास,
ये अरे धांदू रे एक गऊ दो बाछला, और एकई उनकी माय,
एक भयी जग नादिया, और एक कोलू को बैल,
ये अरे धांदू रे एक बेल दो तूमरी, और एकई उनकी माय,
एक भई जालपा और एक संतो के वास,
ये अरे धांदू रे सुमर-सुमर जस गाईयो, अर जै बोलो हिंग्लाज,
रानी जगदेहरा, देशा पराये धांदू रहे हो माँ ....

माता के भक्त धांदू अपना घरबार छोड़कर अन्यत्र रहने लगे हैं। हे धांदू भगत! आपका

जन्म कहाँ हुए? कहाँ तुम्हारा कुटुम्ब परिवार है, तुम्हारे माता–पिता कौन हैं? धांदू का जन्म हिंग्लाज में हुआ, वहीं पर उनके परिवार के लोग हैं तथा माता–पिता भी हिंग्लाज में रहते थे। अरे धांदू! आप गुरू की शरण में चले जायें उनकी सेवा सुश्रुषा करें तो आपके जन्म जन्मांतरों के पाप नष्ट हो जायेंगे। किसने समुद्र खुदाया, कौन उसका पानी पीते हैं व कौन लोग उसमें स्नान करते हैं? धांदू आप पीपल का पत्ता न तोड़ना तथा वट वृक्ष भी नहीं काटना, उसका बड़ा पाप लगता है। एक गाय है उसके दो बछड़े हैं, शंकर का वाहन नंदी भी एक ही है तथा कोल्हू में एक बैल जोता जाता है, लेकिन दोनों में कितना अंतर है। एक पर शिव सवारी करते हैं, दूसरे की आँख में पट्टी बांधकर कोल्हूं जोता जाता है, ये तो अपने–अपने कर्मों के फल हैं। तूमें की बेल से दो फल हुए एक साधू संतों के पास रहता है और दूसरा देवी के पास होता है। हम माता जगदम्बे का स्मरण करके उनके जस गाते हैं, हिंग्लाज वाली माता की जय।

चले पवन के साथ बगीचा, उड़ चले हो माँ ....
कहना लगा दई मैया बेला चमेली,
कहना लगा इये गुलदार बगीचा ....
बागों लगा दयी मैया बेला चमेली,
अंगना लगा दये गुलदार बगीचा ....
काहे कें सींची मैया बेला चमेली,
काहे कें सीचों गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
अमृत सींचो मैया बेला चमेली,
अमृत से गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
काहे से गोड़ी मैया बेला रे चमेली,
काहे से गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
खुरपन गोड़ी मैया बेला रे चमेली,
ओई सें गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
कौनां ने टोरी मैया बेला रे चमेली,
कौना ने गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
देवी ने टोरी मैया बेला रे चमेली,
लंगड़े ने गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
कौना चढ़ाऊं मैया बेला रे चमेली,
कौना चढ़ा दऊं गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
देवी चढ़ा दऊं मैया बेला रे चमेली,
लंगड़े चढ़ा दऊं गुलदार बगीचा, उड़ चले ....
सुमर–सुमर माई तोरे जस गाऊं,
जै बोलो हिंग्लाज, बगीचा, उड़ चले हो माँ ....

हवा के झोंके के साथ बगीचे के पौधे झूम रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि वे पेड़–पौधे हवा के साथ उड़ रहे हों। बेला, चमेली, गुलदार कहाँ लगाये गये? बेला चमेली बगीचों में लगायी गयी तथा गुलदार आँगन में लगा है। इन समस्त पौधों को काहे से सींचा जाता है? बेला चमेली को अमृत से सींचा जाता है, गुलदार में अमृत सींचा जाता है। बेला, चमेली को कैसे गोड़ा गया, किसने बेला, चमेली तथा किसने गुलदार तोड़े? देवी ने बेला, चमेली तथा लंगड़े ने गुलदार तोड़े। बेला चमेली तथा गुलदार किन्हें चढ़ायेंगे? देवी को बेला, चमेली तथा लंगड़े को गुलदार चढ़ायेंगे। हे हिंग्लाज वाली माँ! हम आपके गुणगान करते हैं, आपकी जय हो।

अरे जग तारे धरें नरसिंगी रूप, राम ने जग तारे,
देखो जग तारे, धरे नरसिंगी रूप, राम ने जगतारे,
अरे जब पिहलाद समद में डारे, धर लये नौका रूप,
जब पिहलाद अंगन में डारे, सो हो गये झरना रूप,
जब पिहलाद सरग सें पटके, सो गोदी लये सरूप,
अरे अब पिहलाद खम्ब सें बोदे, सो धर लये नरसिंह रूप,
खम्ब फार हिरनाकुश मारे, लये पिहलाद उबार,
तुलसीदास राम की लीला कोऊ ने पावै पार,
राम जी ने जग तारे ....
धर नरसिंगी रूप राम जी ने जग तारे।

प्रभु श्रीराम ने नृसिंह रूप में अवतरित होकर समस्त संसार का उद्धार कर दिया। उनके भक्त प्रहलाद को जब हिरण्यकश्यप ने समुद्र में गिरवाया, तब प्रभु ने नौका का रूप बनाकर अपने भक्त की रक्षा की। प्रहलाद को जब पहाड़ की चोटी से गिराया गया, तब प्रभु ने अपने आश्रित भक्त को गोद में लेकर उसके प्राणों की रक्षा की। प्रहलाद को अग्नि में जलाने का प्रयत्न किया तब उसे झरने के जल के समान वह अग्नि शीतल जान पड़ी। अंत में हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को तप्त खंभ से बाँधा, तब श्रीराम ने नृसिंह रूप में प्रकट होकर हिरण्यकश्यप को मारकर अपने भक्त की रक्षा की। भक्त तुलसीदास कहते हैं कि प्रभु की लीला अपरम्पार है, उसका कोई पार नहीं पा सका।

हरदौल बुन्देला लाड़ले हो माँ,
अरे कहाँ तुमारे जनमन भये हो माँ,
अरे कहाँ भये औतार, बुन्देला लाड़ले हो माँ।
अरे दतिया में जनमन लये हो माँ,
अरे उतई धरे औतार बुन्देला ....
अरे काय भरे तोरी पांवड़ी हो माँ,
अरे काहो भरे हैं हतयार बुन्देला ....
अरे दूदा भरे तोरी पांवड़ी हो माँ,

अरे रकत भरे हतयार बुन्देला ....
अरे कहाँ धरी तोरी पांवड़ी हो माँ,
अरे कहाँ धरे हतयार बुन्देला ....
अरे आरों धरीं तोरी पांवड़ी हो माँ,
अरे घुल्लों टंगे हतयार बुन्देला ....
अरे सुमर-सुमर जस गाइये हो माँ,
अरे पूजत सब संसार बुन्देला ....
हरदौल बुन्देला लाड़ले हो माँ।

बुदेन्लखण्ड में हरदौल को लाला संबोधन दिया गया है। वे चम्पावती के देवर (लाला) थे। लेकिन उसके पश्चात् वे सारे बुन्देलखण्ड के लाला हो गये। हरदौल सबके प्रिय हैं। हरदौल का जन्म कहाँ हुआ? वे कहाँ अवतरित हुए? हरदौल का जन्म-अवतरण दतिया में हुआ। हरदौल की पाँव की खड़ाऊँ में क्या भरा है। उनके हथियार में क्या लगा है? हरदौल की पावड़ी में दूध भरा है तथा उनके हथियार रक्तरंजित हैं। अरे हरदौल! आपकी पांवड़ी तथा हथियार कहाँ टाँगे हैं। हथियार खूँटी पर टंगे हैं। पाँवड़ी आलों में रखी है। हम भक्त देवी जालपा के जस गाते हैं। उन भगवती को सारा जगत पूजता है। वे सबकी पूजनीय हैं।

अरे कोहल बोले सुआ आम की डार धौरागिर में
धौरागिर में कोहल बोले सुआ आम डार धौरागिर में
अरे कहां रहें मैया नीले परेबा,
कहां रहें जंगी मोर डार धौरा गिर में
कोहल बोले सुआ आम डार धौरा गिर में............. ।। 1 ।।
अरे कुंआला रहें मैया नीले परेवा,
अरे वन में रहें जंगी मोर डार धौरागिर में,
कोहल बोले सुआ आम डार .... ।। 2 ।।
अरे काहो चुने मैया नीले परेवा,
अरे काहो चुने जंगी मोर डार धौरागिर में .... ।। 3 ।।
अरे ककरा चुने मैया नीले रे परेवा,
अरे मुतियां चुने जंगी मोर आम धौरागिर में,
काहल बोले सुआ आम डार धौरागिर में .... ।। 4 ।।

कोयल तथा तोता धौलागिरी के पहाड़ में आम की डाल पर चढ़कर बोलते है। माता के नीले कबूतर कहाँ रहते हैं तथा उनके विशाल मोर कहाँ रहते हैं। नीले कबूतर कुँए में रहते हैं तथा मोर जंगल में रहते हैं। कबूतर क्या खाते हैं, मोर क्या खाते हैं? कबूतर कंकड़, पत्थर तथा मोर मोती चुगते हैं।

शंक बजे साधू जगे माया, और विगुल बजें रजपूत माँ,
भगत सुनें दुरगा जगी माया, लंयें खड्ग तिरशूल माँ,
भूरा सिंग वारे करहें सवारी माँ, शोभा बरनी न जाय माँ,
अरे आंगें देखे जा रये बजरंगी, पीछे भैरव जांय माँ,
एक हाँत भैया खरपर धारें, दूजें लयें तरवार माँ,
जब जब भीर परी है भक्तन पै, तब-तब लये अवतार माँ,
भक्तों खों माँ गोद खिलावें, पापी दये है संहार माँ,
तीन लोक चौदा भवनन में, हो रयी जै-जैकार माँ,
माँ के भवन की शोभा न्यारी, धरम धुजा फैराय माँ,
जय जगदम्बा मोरी मात भवानी, रखियो मोरी लाज माँ,
सुमर-सुमर मैया तोरे जस गावै, जै बोलो हिंगलाज माँ.......

शंख ध्वनि की आवाज सुनकर साधू-संत जाग उठते हैं। बिगुल की ध्वनि से सैनिक राजपूत सजग हो उठते हैं। इसी तरह से दुर्गा देवी अपनों भक्तों द्वारा उनके जस सुनकर प्रसन्न होती हैं। उनके आयुध खड्ग और त्रिशूल हैं, जिन्हें माता धारण किये होती हैं। दुर्गा श्वेत रंग के सिंह (वाहन) पर आरूढ़ हैं, उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। देवी के आगे वीर बजरंग चलते हैं तथा पीछे भैरव। माता के एक हाथ में रक्त का खप्पर है तथा दूसरे हाथ में खड्ग शोभायमान हो रहा है। जब भी माता के भक्तों पर कोई संकट आया, तब वे उन्हें बच्चों के जैसा दुलार करती हैं। वे उन्हें गोदी में खिलाती हैं तथा पापियों के लिए कालरात्रि बनकर उनका संहार करती हैं। तीनों लोकों और चौदह भुवनों में माता की जयकार हो रही है। माता का मंदिर अद्वितीय है, उसके ऊपर धर्म रूपी ध्वजायें फहरा रही है। हे आदिशक्ति दुर्गा माँ! आप सबकी सहायक हो जाईये तथा हम भक्तों का कल्याण करिये। हम आपके उत्तम चरित्रों का गायन करते हैं। बोलो हिंग्लाज माता की जय।

मैया माय भुवन में, बादर ऊनये हो माँ,
मैया उमड़-घुमड़ घन गरज रहे हो माँ,
अरे बिजली दमकत जाय-भुवन पर बादल ......
अरे कौन दिशा बदला भये हो माँ,
अरे कहां बरस गये मेव भुवन पै ....
मैया पूरब दिशा बदला भये हो माँ,
अरे पच्छम बरस गये मेव भुवन पै ....
मैया कौना की भीजे रंग चूनरी हो माँ,
अरे कौना की पचरंग पाग भुवन पै ....
मोरी भैया की भीजें रंग चूनरी हो माँ,
अरे लंगड़े की पचरंग पाग भुवन पै ....

मैया कैसे के सूकी रंग चूनरी हो माँ,
अरे कैसे पचरंग पाग भुवन पै ....
मैया लहरो सूके चूनरी हो माँ,
अरे लपटन पचरंग पाग भुवन पै ......
मैया सुमर-सुमर जस गाईये हो माँ,
अरे चरन लाग सुक पाय भुवन पै ....
बादल ऊनये हो रये माँ।

आज देवी के मन्दिर पर बादल छा रहे हैं। आसमान में घने बादलों के साथ बिजली चमकती है, बादल गर्जना कर रहे हैं। ये बादल किस दिशा से आये तथा कहाँ बरस गये? पूर्व दिशा से बादल आये तथा पश्चिम दिशा में आकर वर्षा करने लगे। पानी के बरसने से किन-किन के वस्त्र भीगे? मैया की चूनर तथा लंगड़े के सिर की पगड़ी भीग गई। उन दोनों के भीगे वस्त्र कैसे सूखे? लहरों से चूनरी तथा लपटों से पाग सूखी। माता के गीत उनका स्मरण करते हुए हम गाते हैं, उनके चरण छूने से भक्तों को सुख की अनुभूति होती है।

भक्तें

माई सब पै किरपा राखियो हो माँ
कहना रहे कोयलिया रे कहना दोई मोर
कहना रहे जालपा, कहाँ जुगलकिशोर।।1।।
अमुवा रहे कोयलिया रे, वन में दोई मोर
मढ़ में रहें जालपा, रन जुगलकिशोर।।2।।
काहा खावै कोयलिया रे, काहा दोई मोर
काहा लैवें जालपा, को जुगलकिशोर।।3।।
अमुवा खावे कोयलिया रे, कंकड़ दोई मोर
नरियल लैवें जालपा, सोई जुगलकिशोर।।4।।
कैसें आवे कोयलिया रे, कैसें दोई मोर
कैसें आवे जालपा, कैसें जुगलकिशोर।।5।।
कुहकत आवै कोयलिया रे, नाचत दोई मोर
किलकत आवैं जालपा, सोई जुगलकिशोर।।6।।
सुमर-सुमर माई तोरे जस गावैं, जै बोलो हिंगलाज
माई सबपै किरपा राखियो हो माँ।।7।।

बुन्देली गीतों में लोकहित की भावना कूट-कूट कर भरी है। उक्त भगत का भी इसी तरह की भावना से ओतप्रोत आशय है। हे माँ जगत जननी! आप समस्त जीवों पर अपनी कृपा बनायें। कोयल कहाँ रहती है, मोर कहाँ रहता है? माता का निवास कहाँ है तथा जुगलकिशोर कृष्ण कहाँ

रहते हैं? कोयल आम पर, मोर जंगल में, मंदिर में माता तथा रण क्षेत्र में कृष्ण रहते हैं। कोयल क्या खाती है, मोर क्या खाता है, माँ को कौन सी चीज प्रिय है तथा कृष्ण को क्या भाता है? कोयल कैसे आयेगी, मोर कैसे आयेंगे, माता जगतजननी तथा कृष्ण कैसे आयेंगे? कोयल कुहू-कुहू बोलकर, मोर नाचते हुए, माता तथा कृष्ण किलकारी मारते आयेंगे। हे हिंगलाज पर निवास करने वाली माँ! हम भक्त आपके चरित्रों का गुणगान करते हैं। हम पर आप अपनी कृपादृष्टि बनाये रखें।

को जाने केवल माय, मरम तोरो को जाने।
चोटी ऊपर चुटीली सोहे, के हाँ-हाँ रे।
चुटबंद की छब-न्यारी मरम तोरो को जाने को।
टिकली ऊपर बिदली सोहे, के हाँ हाँ रे।
बेंदा की छब न्यारी, मरम तोरों को जानें को।
काल तरूकला साने के सोहे, के हाँ हाँ रे।
झुमका की छब न्यारी मरम तोरो को जाने को।
छोटी-छोटी अंखियों में सुरमा सोहे, के हाँ हाँ रे।
कजला की छब न्यारी मरम तोरो को जाने को।
नाक नथुनियाँ सोने की सोहे, के हाँ हाँ रे।
बेसर की छब न्यारी मरम तोरो को जानें को।
हार हमेल गरे में सोहे, के हाँ हाँ रे।
गजरों की छब न्यारी, मरम तोरो को जाने को।
बाँह बरा बाजूबंद सोहै, के हाँ हाँ रे।
चार-चार चरिया काँच की सोहै, के हाँ हाँ रे।
कंगना की छब न्यारी, मरम तोरो को जाने को।
दसऊँ उंगरियों में मुदरी सोहै, के हाँ हाँ रे।
छल्ला की छब न्यारी मरम तोरी को जाने को।
घूम-घूमारो लेंगा सोहे, के हाँ हाँ रे।
कमर करधानी रूपे की सोहे, के हाँ हाँ रे।
दुलरी की छब न्यारी मरम तोरो को जाने को।
पांव पैजना झंजरी सोहें, के हाँ हाँ रे।
बिछिया की छब न्यारी मरम तोरों को जाने को ।
सुमर-सुमर माई तोरे जस गावें, के हाँ हाँ रे।
जै बोलो हिंगलाज मरम तोरी को जाने को।

हे माँ! हम अबोध बालक आपके रहस्यों को क्या जानें, आप जगत जननी हैं। आप अपने शरीर में नख से शिख तक आभूषणों से सुशोभित हैं। भक्तगण आपके रूप के दर्शन करके अपने हृदय में आपकी छवि अंकित करते हैं। आपका सौम्य रूप सभी को आशीष प्रदान करने वाला

है। आपके सिर में बालों की चोटी बंधी है, उसके ऊपर चुटकी शोभायमान हो रही है। माथे पर बिंदी, उसके ऊपर बेंदी फिर जड़ाऊ बेंदा आपने पहना हुआ है। कानों में तरूकला–झुमके आँखों में सुरमा तथा काजल, नासिका में नथ तथा बेसर, गले में हार, हमेल तथा गजरे, बाँह में बरा, बाजूबंद, बोटा, चूड़ी, कंगन, अँगूठी छल्ला। इनके अलावा घुमावदार लहँगा, चूनर कमर में करधन, दुलरी पाँव में पैजना, अँगुलियों में बिछिया आदि आपको शोभायमान हो रही हैं। हे माँ! भक्तगण तेरे गुणगान करते हैं। हिंगलाज वाली माँ तेरी जय हो।

कईये संदेसे राजा राम के हो माँ ....
पेड़ तोड़ फल खाये रे, दिया बाग उजार,
असुर पकड़ गये लंका, सब दई जराय ....
कूंद पवनसुत जल्दी रे, भये सागर पार,
सीता खबर सुनाई, रगवर खों जाय ....
चूड़ामणि दई सीता ने, कह दई समजाय,
करे ना देर करूणानिधि, पीछे पछताय ....
राम–राम सुन रामा रे, दल भयो तियार,
जामवंत नल नील, अंगद हनुमान ....
कर रामेश्वर स्थापना, दिया सेत बनाय,
समद पार लंका, दल दियो रमाय ......
पार राम दल मेलो रे, कईयो समजाय,
पाती लिखी रामा ने, दई अंगद पठाय ....
भरी सभा में अंगद ने, दियो पैर जमाय,
कोऊ से पैर उठोना, रावन उठवाय ....
पैर परो ने सेवक के, सुनियो समजाय,
दे अईयो जनक दुलारी, रहो कुशल मनाय ....
मूँछ पकरकें रावण रे, क्यां बके गमार,
सीता सहज मिलेगा, लड़ले तलवार ....
सजधज रीछ बंदर बारे, लै लै पहार,
खल बल परी लंका में, मची हाहाकार ....
मेघनाद घर गरजो रे, लंका मैदान,
खेंच धनुष खों मारो, लक्षमन खों वान ....
शक्ति लगी लखन खों रे, व्याकुल भये राम,
वीर संजीवन ल्याये, मिले लक्षमन राम ....
राम लखन महरावण रे, लै गवो पताल,
पता लगा लै आये, अंजनी के लाल ....

मेघनाद सिर काटो रे, दस शीश कटाय,
नार सलोचन सती भयी, पति शीश हंसाय ....
राज विभीषन दीनों रे, कर कृपा निधान,
राम लखन लै सीता, लौटे हनुमान ....
राम लखन लंका चढ़े हो माँ।।

यह कथा श्रीराम जी की है – सीता माता को रावण अपहरण करके ले गया। पवनपुत्र हनुमान सीता जी का पता लगाने समुद्र पार करके लंकापुरी गये। वहाँ सीता जी को रावण की अशोक वाटिका में रखा गया था। हनुमान जी सीता से मिले, तत्पश्चात् उन्होंने रावण की उस बगिया के फल खाये, पेड़ तोड़े और सारी वाटिका को नष्ट कर डाला। रावण के राक्षस जब उन्हें पकड़कर ले गये तो उन्होंने रावण की सोने की लंका जला दी। वापस आते समय सीता जी से चूड़ामणि निशानी के रूप में लाये, वह चूड़ामणि श्रीराम जी को दी और कहा कि प्रभु अब शीघ्रता करें, लंका जाकर माता सीता को ले आयें। श्रीराम दल के दो वानरों नल और नील ने समुद्र पर पुल बनाया, वह रामेश्वर नाम से जाना जाता है, जिससे सारी वानर सेना ने समुद्र पार किया और वह लंका पहुँची। तत्पश्चात् घीराम जी ने बाली पुत्र अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजा। अंगद ने रावण को बहुतेरा समझाया कि वह सीता माता को श्रीराम को सौंप दे तो बिना युद्ध के ही समझौता हो सकता है, राम जी की शरण में रावण आ जाये, लेकिन वह क्यों मानता? अंत में अंगद ने रावण के दरबार में अपनी जाँघ रोपकर कहा कि तुम्हारे शूरवीर सरदारों में से जो भी हमारी जाँघ हिला देगा, तो हम हार मान लेंगे। उस घमंडी रावण ने कहा कि युद्ध करने से हम नहीं डरते, हम तो तलवार के बल पर राम को पराजित करेंगे। लंका में जितने भी वीर थे, सबने अंगद की जाँघ को हटाने के लिए प्रयत्न किये, लेकिन किसी से भी वह पैर नहीं हिल सका। जब रावण नहीं माना तो राम रावण युद्ध हुआ। रावण पुत्र मेघनाद ने लक्ष्मण जी को शक्ति बाण मारा, वे मूर्छित हो गये, हनुमान द्वारा संजीवनी लायी गयी। लक्ष्मण जी उससे ठीक होकर पुनः युद्ध करने लगे। युद्ध के चलते ही रावण का भाई अहिरावण श्रीराम–लक्ष्मण को अपनी माया से अपहरण करके पाताल ने गया। वीर बजरंग ने पातालपुरी जाकर अहिरावण से युद्ध कर श्रीराम लक्ष्मण को ले आये। लक्ष्मण जी द्वारा मेघनाद मारा गया। अंत में श्री राम ने रावण का वध किया तथा रावण के भाई विभीषण को लंका का राजा बनाकर सीता जी को लेकर सेना सहित लौटे।

हंसा चाल मृग नैन लाड़ली के भुअन कहाँ,
तोरे भुवन कहाँ, तोरे रहन कहाँ,
तोरे गमन कहाँ, अस्थान कहाँ ....
काहे को चइये मैया सोरा सुपेती,
काहे को चइये हरे पीरे बिजना,
झालर दार बिजना गोटादार बिजना ....
सुआ पंखी विजना, मोती वारे बिजना ...

जाड़े खों चइये मैया सोरा सुपेता,
गर्मी खों चइये हरे पीरे बिजना,
झालरदार विजना, गोटादार बिजना,
सुआ पंखी विजना, मोती वारे बिजना .....
कौना खों चइये तोरी सोरा सुपेती,
कौना खों चइये हरे पीरे बिजना,
ज्वाला खों चइये मैया सोरा सुपेती,
लगड़े खों चइये हरे पीरे बिजना,
सुमर-सुमर मैया तोरे जस गाऊँ,
तोरे जस गाऊँ मैया तुमें मनाऊँ,
चरन छोड़ कहाँ जाऊँ।
हंसा चाल मृग नैन लाड़ली के भुवन कहाँ।।

अरे हंसों की जैसी चाल चलने वाली, मृगी के सदृश नेत्रों वाली माँ! आपके भवन कहाँ हैं? आपका निवास कहाँ है? आप कहाँ जा रही हैं? आपका कौन-सा स्थान है? आपको ओढ़ने के वस्त्र क्यों चाहिये तथा हरे पीले रंग के झालरदार पंखे जिनमें गोट लगी हो, उनका सुआ पंखी रंग हो, उनमें मोती लगे हों, वे सुन्दर पंखे क्यों चाहिये?

ठंड के लिए श्वेत वस्त्र तथा गर्मी से बचने हेतु पंखा चाहिये। अरे माता! ये दोनों चीजें किसको देंगी, माता ने कहा कि ज्वाला को श्वेत वस्त्र तथा लंगड़े को पंखा लेकर देना है। हे भगवती! हम भक्तगण आपका स्मरण करते हैं, आपके चरणों में ही हमें आसरा मिलता है।

कै लख उमई रे, अरे तो मैया गूजर जाटा की।
जै बोलो मैया गूजर जाटा की।
कै लख उमई बेटी भाट की हो माँ।
नौ लख उमई वीरा गूजर जाटा की,
दस लख उमई बेटी भाई की हो माँ।
काय पै आवै मैया गूजर जाटा की,
काये पै आवै बेटी भाट की हो माँ।
पैदल आवे वीरा गूजर जाटा की,
गड़लन आवै बेटी भाग की हो माँ।
काहा चढ़ावै मैया गूजर जाटा की,
काहा चढ़ावै बेटी भाट की हो माँ।
पान सुपारी वीरा गूजर जाटा की,
धुजा नारियल भाट की हो माँ।

काहा जो माँगे मैया गूजर जाटा की,
धुजा नारियल भाट की हो माँ,
काहा जो माँगे मैया गूजर जाटा की,
काहा जो माँगे बेटी भाग की हो माँ।
अन्न धन माँगे मैया गूजर जाटा की,
दूध पूत माँगे बेटी भाट की हो माँ।
अन्न धन आकें मैया गूजर जाटा की,
दूध पूत आकें भाट की हो माँ।
कोढ़न काया, बाँझ की गोद भराइयो,
माई के भुवन कौ दै परकम्मा अटा छत्र जै बोलियो हो माँ।।

अरी माता! आपके दर्शनार्थ कितने लक्ष गूजर तथा जाट की कन्याएँ एकत्रित हैं। वे आपका जयकारा बोलती आ रही हैं। दस लाख भाट कन्याएँ तथा नौ लाख गूजर जाट कन्या आ रही हैं। भाट कन्या किस सवारी पर तथा गूजर जाट बालाएँ किस सवारी से आयेंगी? गूजर जाट की बेटियाँ पैदल तथा भाट की कन्याएँ गाड़ियों पर आयेंगी। वे कन्याएँ आपको क्या चढ़ावा लायेंगी? गूजर जाट कन्याएँ पान सुपारी लायेंगी तथा भाट कन्याएँ ध्वजा एवं नारियल का चढ़ावा लायेंगी। आपसे वे कन्याएँ क्या-क्या वर माँगेंगी? गूजर की बेटियाँ अन्न धन माँगेंगी तथा भाट कन्याएँ दूध तथा पुत्र का वरदान लेने आयेंगी। माता ने सबको इच्छित वरदान दिये। कोढ़ियों को स्वस्थ शरीर, बाँझ स्त्रियों को पुत्रवती का वरदान दिया। सबने माता के भवन की परिक्रमा की, उन्हें छत्र चढ़ाये। माता की जय हो, उनके भक्तों ने जयकारा लगाया।

अब मानो मोरी केवल माँ,
नैची ऊँची घटियाँ विकट उजार, जहाँ वीरा लंगड़े, लगाई फुलवार, ।। 1।।
नैची ऊँची घटियाँ चढ़ी ने जाँय, बाँयं पकर लंगड़े लै जाँय।।2।।
सुन्ने की छिड़ियाँ मैया देव बनवाय, फुलवा गोढ़न मालन जांय, ।।3।।
रूपे के घड़ेलना मैया देव बनवाय, फुलवा सींचन मालन जांय, ।।4।।
बंसा पतऊवा मैया देव बनवाय, फुलवा टोरन मालन जांय, ।।5।।
छोटी-छोटी मालन लम्बे-लम्बे केश, फुलवा टोरे मरद को भेष, ।।6।।
बीन-बीन फुलवा सजाई फुलवार, झड़ गये फुलवा, रह गई बाँस,
मोरी केवल माँ .... ।।7।।

हे माँ! आप हमारा निवेदन स्वीकारें। आपके प्रिय भक्त लंगड़े ने एक ऊबड़-खाबड़ स्थान पर फूलों की बगिया लगाई है। उस बगिया के रख-रखाव में बड़ी असुविधा हो रही है। उस स्थान पर ऊँची घाटियाँ हैं, जिन पर चढ़ने में- हे माँ शेरावाली! हम दर्शनार्थियों के लिये जो आपके स्थान पर आपके दर्शन पाते हैं, कुछ सुविधायें प्रदान करें। आपके भवन में आने के लिए ऊँची-ऊँची

पहाड़ियाँ हैं, घना जंगल है, बीच-बीच में आपके सेवक लंगड़े ने फूलों की क्यारियाँ लगाईं है, ऐसे दुर्लभ रास्तों से होकर हमें आपके दर्शनों के लिए आना पड़ता है। ये ऊँचे घाट हमसे चढ़े नहीं जाते तो आपके लंगड़े हमारी बाँह पकड़कर ले जायें। आप रास्ते में स्वर्ण की सीढ़ियाँ बनवा दें। आपके फूलों के बगीचे की मालिन देख-रेख करे। उनकी सिंचाई के लिए चाँदी के घड़े हों उनमें पानी भरकर माली उन्हें सींचे। बाँस के बर्तन को लेकर मालिन फूल तोड़ने जायेंगी। मालिन छोटी है उसके बाल बहुत लम्बे हैं। वह बालों का जूड़ा बनाकर मर्द के वेश में फूल तोड़ती है। अरे! उसने बड़े जतन से फूल एकत्रित किये कि हवा के एक झोंके ने उसके फूल उड़ा दिये, अब बाँस की खाली टोकरी उसके पास रह गई।

बीरोठ

मइया के दुआरे ऊँची-नीची घटियाँ, हमसें चढ़ी ना जाय हो माँ ....
लड़िया बुलाय देवी, घटियाँ छटाय देवी, सब मिल सेवक आये हो माँ ....
मइया के दुआरे हमें भूक लगत है, हलवइया बुलाय देवी, बुंदिया छटाय देवी।
सब मिल सेवक आवै हो माँ ....
मइया के दुआरें हमें प्यास लगत है, कहरा बुलाय दैवी, गगरा भराय देवी।
सब मिल सेवक आवै हो माँ ....
मैया के दुआरें हमें नींद लगत है, दरजी बुलाय देवी, गद्दा सिलाय दैवी।
सब मिल सेवक आवै हो माँ ....

माता के भवन में जाते समय नीची-ऊँची घाटियाँ पड़ती हैं, उन घाटियों से होकर जाने में परेशानी होती है। घाटियों को समतल करने हेतु मिस्त्री को बुला लो, वह रास्ता बना देगा, जिससे भक्तगण आसानी से आ-जा सकेंगे। देवी के द्वार पर जाते समय भूख लगती है, इसलिए हलवाई को बुलाकर बूंदी बनवा देंगे। सब भक्त प्रसाद ग्रहण करके देवी दर्शनों को जायेंगे। वहाँ जाते में यात्रियों को प्यास लगती है, किसी कहार से कहकर पानी के बर्तन रखवा देंगे, जिससे यह दिक्कत भी नहीं होगी। देवी के दर्शनों को जाते में हमें नींद आती है, इसलिये दरजी को बुलाकर गद्दे बनवा देंगे, इस तरह से देवी के भक्तों की सब बाधाएँ दूर हो जायेंगी।

नौरता/सुआटा

सुआटा या नौरता बुन्देलखण्ड में क्वाँरी कन्याओं द्वारा खेला जाने वाला एक अनुष्ठान परक खेल है। नौरता आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नौ दिन तक चलता रहता है। नवरात्रि में खेले जाने के कारण और शक्ति से जुड़े होने से उसे "नौरता' कहा गया है। इस समय अनुष्ठान, पूजन, व्रत के साथ कन्याओं द्वारा गीत गाये जाने का प्रचलन है। नौरता में गायन, नर्तन और चित्रांकन (चौक बनाना) की लोक कलाएँ खेल-खेल में सीखने की व्यवस्था है।

अपनी गौर की झाँईं देखो, कहो पैरे देखो, कान तरूकला देखो, नाक नथुनिया देखा।
हाथ ककनवा देखो, पाँव पैजनिया देखो, पराई गौर की झाई देखो, काहो पैरे देखो।
नाक नकटी देखो, कान बूची देखो, पाँव पोलू देखो, धमक चलू देखो।

नौरता के खेल में कन्याओं के दो दल होते हैं, वे हर काम में प्रतिस्पर्धा करते हैं। गौरी की मूर्ति बन गई तो वे कहती हैं कि अपनी गौरी को देखो कैसी सुन्दर दिखती हैं। उनके कानों में कर्णफूल हैं, नाक में नथ पहने हुए हैं, हाथों में कंगन हैं। दूसरी गौरी की नाक चपटी है, कान बूचे हैं, पाँव भी ठीक नहीं हैं, पूरा शरीर बेडौल है।

मोरी गौरा माँगे धतूरे के बन्ना, सो कहाँ पाहों रे लाल।
मोरे भैया-भतीजे हाटे गये हैं, पाटे गये हैं, कारी ले कुंजल, चौक बसन्तो।
ले मोरी गौरा, लेव महादेव, जो तुम मागों सोई चढ़ैहों।

आज मेरी गौरा धतूरा माँगती हैं, धतूरा कहाँ से लायें? मेरे भाई-भतीजे हाट गये हैं, वे धतूरा लायेंगे, हमारी गौरा तथा महादेव जो भी माँगेंगे, हम उन्हें भेंट करेंगे।

मोरी पीठ के सूरजमल भैया, चंदामल भैया,
जे दोई भैया चार भतीजे, लुबाउन जैहें बुलाउन जैहें,
सिर गोला पाग संवारत जैहें, पियरे पाट पहराउत जैहें,
लीली सी घोड़ी कुंदाउत जैहें, लाल छड़ी चमकाउत जैहें,
वन की चिरैया चुगाउत जैहें, उखरे बाग लगाउत जैहें,
क्वांरी सी कन्या वियाहत जैहें, व्याही सी बिटिया चलाउत जैहें।

मुझसे छोटे मेरे दो भाई हैं, सूरजमल तथा चंदामल। दो भाई तथा चार भतीजे हैं, वे ही लिवाने-पहुँचाने जायेंगे। वे अपने सिर पर बँधी पाग को सम्भालते हुए जायेंगे, वे पीले वस्त्र पहने होंगे। उनके हाथ में लाल छड़ी होगी, सवारी के लिए नीली घोड़ी होगी। वे रास्ते में चिड़ियों को दाना-पानी चुगाते जावेंगे, रास्ते में सूखे पेड़ों के स्थान पर नये वृक्ष लगवायेंगे। क्वाँरी कन्या का विवाह करवा देंगे। ब्याही का गौना करवाते जायेंगे।

खेल तो बेटी खेल लो, भाई-बाबुल के राज,
जब दुर जैहें बेटी सासरे, सास न खेलन देय,
रात पिसावै पीसनों, दिन में गुबर की हेल,
दूरा के देसा दई है गौरा बेटी, दई है सबई बेटी,
को बेटी तोहें लिवाबन जैहें, बुलावन जैहें।

अरी लाड़ो! अभी जब तक तुम्हारा विवाह नहीं हुआ, तब तक माता-पिता के यहाँ खूब खेल लो, जब तम ससुराल चली जायेगी, तब वहाँ तेरी सास नहीं खेलने देगी। रात में वह अनाज

पिसवायेगी दिन में गोबर करायेगी। मेरी गौरा बेटी दूर देश में ब्याही गई है। उसे हम लिवाने जायेंगे।

तिल के फूल तिली के दाने, चंदा ऊंगे बड़े भुनसारें,
ऊँगन होय तो हाँय बारो चंदा, हम घर होय लिपना पुतना,
सास न होय दैहों गारियाँ, ननद न होय कोसे बिरना,
भाई को कहो न करहों, बाबुल को कहो न करहों,
पीनी की खेप न धरहों, गोबर की हेल न धरहों,
चकिया को डड़ा न पकर हों, तवा कुचैया न धरहों,
बासी को कौर न दैहों, ताती होय तो लप-लप खैहों।

तिल के फूल फूले हैं, उसके फल लगे हैं, जिनमें तिली के दाने हैं। आज चाँद बड़े भोर में उदित हुआ है। हे चाँद! तुम शीघ्रता से उगना, क्योंकि हमारे घर में सुबह लिपाई-पुताई होती है।

भगत

फूलों जार पहार करोंदी वन फूली हो माँ,
कौना बरन जाकी बोंड़ी जगतारन, कौना बरन फूल हाय माँ,
गेंहुँआ बरन जाकी बोंड़ी जगतारन, सुरंग बरन फूल होय माँ,
पैलो फूल जब टोरो जगतारन, बेला भरो रंग होय माँ,
दूजो फूल जब टोरो जगतारन, नांद भरो रंग होय माँ,
कौना की रंग दऊँ सुरंग चुनरिया, कौना की पचरंग पाग माँ,
ज्वाला उड़ा दऊँ सुरंग चुनरिया, लंगड़े पचरंग पाग माँ,
माई के भुवन के दै परकम्मा, नेंके परो दोउ पाँव माँ।

पूरे पहाड़ में लगे पौधे फूल रहे हैं, करौंदी भी फूली है। करौंदी की कली कैसी होती है, कैसे फूल होते हैं? गेहूँ के रंग की कली तथा स्वर्ण के रंग के फूल खिले हैं। माता जगत जननी ने जब पहला फूल तोड़ा तो उसका एक कटोरा रंग निकला। दूसरा फूल तोड़ने पर एक नाद रंग हो गया। इस रंग से किसकी चूनर तथा किसकी पगड़ी को रंगें? ज्वाला देवी की चूनर तथा लंगुरे की पाग को रंगा जावेगा। ये कैसे सूखेंगे? घुल्लों पर चूनर तथा मड़वा पर पगड़ी सूखेगी। किसे चूनर उड़ायें, किसे पगड़ी बाँधें? ज्वाला देवी माँ की चूनर तथा लंगुरे को पाग बाँधेंगे। तत्पश्चात् माता के भवन में परिक्रमा देकर उनको साष्टाँग प्रणाम करेंगे।

सुरत मोरे तोई सें लगी रे, तोईसें लगी रे,
बंसी वाले सें लागे दोई नैन रे सुरत मोरी ....

मेरा पूरा ध्यान वंशीधर कृष्ण पर ही लगा है। कृष्ण से ही मेरे नैन लगे हैं।

सुरत के दो-दो बिजना रे, दो-दो बिजना रे,
एक संजा डुलाऊँ इक भोर रे सुरत मोरी ....

मेरे पास सुरत रूपी दो पंखे हैं, जिन्हें मैं सुबह-शाम डुलाती रहती हूँ।

बीरोठ

बीरोठ गीत भोई समाज में मढ़ई (ढाल) निकलते समय गाते हैं, जो व्यक्ति ढाल रखता है, उसके सिर पर बीरोठ गीत गाकर देवताओं को बुलाया जाता है। उसके सिर पर देवता आते हैं तो इस समाज के गुनियों, ओझाओं के मंत्रों की प्रतियोगिता सी होती है। इस क्षेत्र में कई जगहों पर मढ़ई भरती हैं। वहाँ पर समाज के लोग तो एकत्रित होते ही हैं, साथ में अन्य समाज के भी शामिल हो जाते हैं। उस स्थान पर मेला सा लग जाता है।

सूखी सी सेमर सररू डार,
जे चढ़ मुरगा बोलियो बारे देव जे चाढ़ा,
जे चढ़ मुरगा बोलियो रे।।
उतरे ने मुरगा हम चढ़ जाँय, हम चढ़ जाँय के जे चाढ़ा
जे चढ़ मुरगा बोलियो रे .... जे चढ़ देखें ढुर माला रे।
कौन वीर मोरे बसे रे पहार, बसे रे पहार कौना तो,
कौना बसे ढुर मालय बारे देव कौना तो,
कौना बसे ढुर मालय रे ....
करूवा वीर मोरों बसे पहार रे, बसे पहार कै नरसिंगा,
नरसिंग बसे ढुर मालय बारे देव ....
कौना वीर खों नरियल देहों, पपरिया देहों कौना खों,
कौना खों देहों बारे बोकरा बारे देव ....
करूवा वीर खों नरियल देहों, पपरिया देहों कै नरसिंगा,
नरसिंग देहों बारे बोकरा बारे देव ....

एक सूखी सेमल है, जिसकी डाली सीधी है। उस डाल पर मुर्गा चढ़कर बांग देता है। यदि मुर्गा डाल से उतरे तो हम उस पर चढ़ें और हिमालय पर्वत पर चढ़कर अपने देव को देख लें। कौन सा वीर पहाड़ों में रहता है तथा कौन हिमालय में रहता है? करूवा वीर पहाड़ों पर बसता है तथा नरसिंह हिमालय में रहता है। हम वीरों का पूजन कर रहे हैं, किसे हम नारियल, पपड़ियाँ चढ़ायें तथा किसे बकरे की बलि दें? करूवा वीर को नारियल, पपड़िया तथा नरसिंह वीर को बकरे की बलि देंगे।

उक्त गीत में वीरों के निवास के संबंध में बतलाया है। कोई पहाड़ में बसता है तो कोई हिमालय में। गौंड़ों के धर्म गुरू ने तथा उनकी धार्मिक पुस्तकों में भी हिमालय पर उनके देवता

का निवास बतलाया है। उनके अनुसार हिमालय पर शंभू शंकर रहते थे। हो सकता है कि स्थान परिवर्तन के कारण गीत में नरसिंह वीर का नाम आया है या फिर वही नारसिंह शंभू शंकर रहे हों।

माई तोरो उमव देव गाइये हो,
इक नारी इक अंजनी, दोई मिल माहो अनांय,
सेवा करें महादेव की, दोई मिल माँगे पूत ....
कौने जाये गड़ेरूवा, कौने दोई बोक,
कौना ने जाये बैहा नारसिंग, कौना हनुमान ....
गाड़र जाये गड़ेरूवा, छेरी दोई बोक,
नारी ने जाये बैहा नारसिंग, अंजनी हनुमान ....
काहे खों जाये गड़ेरूवा काहे दोई बोक,
काहे खों जाये बैहा नारसिंग, काहे हनुमान ....
चढ़वे खों जाये गड़ेरूवा, कटवे दोई बोक,
चलवै खों जाये बेहा नारसिंग, पुजवे हनुमान ....
घरर-घरर नदिया बहे, बैहा उतरे पार,
बैहा की माता जा कहैं, बैहा बै ने जाय ....
बैवो-बैवो जिन कहो, बैवे कौन गमार,
मैं बैहा अग्गासिया, बसों नदी के पार ....
बैहा उतरो पहार सें, टोरत जार पुंवार,
सांकर टोरे लौहे की, फारे बजर किवार ....
सुमर-सुमर जस गाईये, जै बोलो हिंगलाज,
चरन छोड़ कहाँ जायें, चरनों की आस ....

आज हम माता के चरित्रों का गायन कर रहे हैं। एक स्त्री तथा अंजनी दोनों साथ-साथ ऋतु स्नान करतीं हैं, वे दोनों देवाधिदेव की स्तुति करते हैं तथा वे पुत्र का वरदान भी माँगतीं हैं। किसने गाड़र के बच्चों को जना, किसने बकरों को? किसने नरसिंग को तथा किसने हनुमान को जन्म दिया? गाड़र ने गड़ेरूवा, बकरी ने अपने बच्चे, स्त्री ने नरसिंह को तथा अंजनी ने हनुमान को जन्म दिया। गाड़र के, बकरी के बच्चों को, नरसिंह को तथा हनुमान को क्यों जन्मा?

बलि के लिए गड़ेरूवा, काटने के लिए बकरे, चलने को नरसिंह तथा पूजन हेतु हनुमान जन्में थे। नदी घरर-घरर की ध्वनि के साथ प्रवाहित हो रही है, उसी समय नरसिंह (बैहा) नदी पार करते हैं। उनकी माता को डर है कि कहीं वे नदी के तेज बहाव में बहकर न चले जायें। (नरसिंह) कहते हैं कि बहने के बारे में तो सब कहते हैं लेकिन नादान ही बहते हैं। मैं तो नदी में ही रहता हूँ, फिर भला कैसे बह सकता हूँ? बैहा नरसिंह जब पहाड़ से उतरे तो वे झाड़-झंखाड़ तोड़ते जाते हैं, वे मजबूत लोहे की साँकल तथा ब्रज से कठोर किवाड़ों को फाड़ देते हैं। हम देवी

का स्मरण करके उनका यशोगान करते हैं। सब भक्त मिलकर हिंगलाज की जय का जयकारा लगाते हैं। हे माता! हम आपकी शरण में हैं, हमें आपका ही सहारा है।

नेंची ऊँची घटियाँ बसे रे कुमार, बसे रे कुमार
चंगा घडे़लना वे गड़ बारे देव रंग चंगा,
चंगा घड़ेलना वे गढ़ रे ....
लैदे मोरी सास घड़ेलना मोल, घड़ेलना मोल,
कुड़री तो लैदे जड़ाऊ की बारे देव,
कुड़री तो लैदे जड़ाऊ की रे,
कै लख कईये घड़ेलना मोल, घड़ेलना मोल,
कै लख कुड़री जड़ाऊं की रे ....
इक लख कईये घड़ेलना मोल, घड़ेलना मोल
दो लख कुड़री जड़ाऊ की बारे देव,
दो लख कुड़री जड़ाऊ की रे ....
छुटक जुदैया निरमल रैन निरमल रैन,
श्यामल पनियाँ खों नीकरीं बारे देव श्यामला,.
श्यामल पनियाँ खों नीकरीं रे ....

किसी गाँव में घाटी के समीप एक रंगाचंगा नाम का कुम्हार रहता है। एक स्त्री उस कुम्हार से घड़े बनवाने आती है। उसने अपनी सासू से कहा कि मुझे पानी भरने के लिए अच्छे घड़े खरीद दो, घड़ों के साथ में कुड़री भी मंगवा दें। रंगचंगा द्वारा बनाये घड़ों का मोल कितना है तथा जड़ाऊँ कुंड़री का कितना मोल है? एक लाख के घड़े तथा दो लाख की कुंड़री है। चाँदनी रात में वह स्त्री पानी भरने जाती है। वह साँवले रंग की है। स्त्री ने पानी भरा और वह अपने घर आ गई।

अटक नदी बैरन भई रे देव ....
काहे कें उतरें पार बारे देवता, अटक नदी बैरन भई रे
काहे की नैया बनी रे देव ....
काहे के पतवार बारे देवता, अटक नदी बैरन भई रे
सूके सगौना की नैया बनी रे देव ....
अम्मां डार पतवार बारे देवता, अटक नदी बैरन भई रे।।

आज अटक नदी हमें बैरिन के जैसी सिद्ध हो रही है। नदी में पूर आया हुआ है और हमारे देवता को नदी पार करना है। वे नदी कैसे पार करेंगे? देवता को पार कराने नदी में नाव डाली गई, नाव किस लकड़ी की बनी है, उसकी पतवार किस लकड़ी की है?

नाव सागौन की लकड़ी की तथा पतवार आम की डाल से बनाये गये।

भगत

कौना के पाले हरयल सुअना, कोना ने पपीहा मोर,
बादर गरजे घनघोर, बिजली चमकै चहुँओर,
जेठा तपै तो भारई बोलियो हो माँ ....
दुदुआ पिये माई के हरियल सुअना,
मोती चुने पपीरा मोर, तीतर बोले बड़े भोर,
रामहि राम पंछी भजै, माई जेठा तपै ....

किसने हरे तोते पाले, किसने पपीहा मोर पाले? बादल गर्जना करते हैं, बिजली चमकती है। ज्येष्ठ में अधिक गर्मी पड़े तो भारई (एक कीट) बोलता है। तोते दूध पीते हैं, मोर मोती चुगते हैं। तीतर बड़े भोर में बोलते हैं, पक्षी राम नाम की रट लगाये हुए हैं।

कार्तिक गीत
शरद-बारामासी

गये कातक में कृष्ण बजा बाँसुरी, एक दुःख एक हांस री,
मईना अग्गन आयो आली, देखो आये ने वनमाली।
प्रीतम प्रीत की रीत न पाली, अब तो आन लागो सखी पूष मास री ....
सरदी दिन दूनी दरसाती, पी बिन थर-थर काँपें छाती।
ऊधो ल्याये जोग की पाती, उन सौतन नें लये श्याम फांस री ....
अब जो आओ माव महीना, ब्रज वालों कों मुस्कल जीना।
ब्रज खों तज कुब्जा खों चीना, इतै गैयाँ लौ चरती न घास री,
फागुन में ब्रजभान किशोरी, पिय बिन कैसे खेलें होरी,
नई आये हरि चैत लगोरी, सखी फूल रहे फूल जे पलास री,
आओ है वैसाख सखीरी, हिरदें विरह दमार लगी री।
सौतन के सोचों भई पीरी, जेठ मईना में लेत हों उसांस री।
असढ़ा उठी घटा घनघोरे, वन में नाच रहीं जे मोरें।
नदिया नारे लेत हिलोरें, गुइयाँ सैयां के हिये बीच मांस री।
सावन रिमझिम बूंदें बरसें, श्याम दरसन खों नैना तरसें।
आली कांकड़ जाऊँ घर सें, बैरी फूल रओ भदैयाँ जो काँस री।
आली क्वारै साल बिलानी, अब लो आये ने सैलानी,
रातें परी-परी बर्रानी, लौड़ मईना में होय पूरी आस री ....
इतने में मनमोहन आये, ब्रज वासिन के दुःख मिटाये,
नित नऊ बाँके रास रचाये, दास कहें मिटी बृज की जा प्यासी री,
एक दुःख एक हाँस री ....

कृष्ण कार्तिक के महीने में बाँसुरी बजाकर गये। हे सखी! उनके जाने पर एक तरफ दु:ख होता है तो एक तरफ हंसी आती है। कार्तिक से अगहन आ गया, लेकिन कृष्ण अभी तक नहीं आये, उन्होंने हमारे प्रेम को नहीं पहचाना और अब तो पूस मास भी आ गया। इस समय शीत व्याप्त होने लगी है। मेरे प्रिय के न होने से मैं शीत में काँप रही थी। उसी समय उद्धव जी योग के लिए पत्र ले आये। कुब्जा रूपी सौत ने कृष्ण को फँसा लिया है।

अब माघ का महीना आ गया। इस मास में ब्रजवासियों का जीना दूभर हो रहा है, क्योंकि कृष्ण नहीं हैं, उन्होंने ब्रज को छोड़कर कुब्जा को अपना लिया है। माघ से फाल्गुन आ गया, यह रंग अबीर का पर्व है। फाल्गुन में वृषभान सुता आपके न होने से होली का त्योहार कैसे मनायेंगी?

अब तो चैत्र का महीना भी लग गया और कृष्ण नहीं आये! चैत्र में पलाश फूल रहे हैं। कुछ समय बीतने पर वैशाख भी आ गया। इस समय विरह रूपी अग्नि विरहीजनों को व्याप्त हो रही है, उस पर कुब्जा सौत उसके कारण में दयनीय स्थिति में पहुँच गई हूँ। ज्येष्ठ के महीने में उसाँसे ले रही हूँ। आषाढ़ के महीने में घटायें छाने लगीं, वन में मोर नाच रहा है, वर्षा के कारण नदी नालों में पानी बढ़ गया है। हे सखी मेरे मन में एक गाँठ सी पड़ गई है। घावण में पानी बरसने लगा, कृष्ण की एक झलक के लिए मेरी आँखें तरस गईं। हे सखी! मैं घर से निकलकर कहाँ जाऊँ? इस समय काँस फूल रहे हैं। क्वाँर का महीना भी लग गया, कृष्ण नहीं आये, वे मुझे रात्रि में स्वप्न में दिखे थे। लौड़ का महीना (अधिकमास) लग गया और इस माह में मेरी आस पूरी हो गई।

कृष्ण आ गये सबके मन उनके आने पर प्रसन्न थे। उन्होंने आकर ब्रजवासियों के दु:ख दूर कर दिये। कृष्ण ने आकर रोज नये-नये रास रचाना शुरू कर दिये। कृष्ण से मिलकर ब्रजवासियों की प्यास बुझ गई, सब तृप्त हो गये।

शरद ऋतु

कहत राधिका सुनो कन्हैया, कार्तिक कैसे अन्हैंये।
राई दामोदर बन जईये ....
नित्य सबेरे भोरई उठकें सखियन टेर लगइये।
तेल तिली सें त्यागन करिये, कोरे तटन नहईये।
नौन तेल को त्यागन करिये, घिया गकरियां खईये।
खाट पिड़ी को त्यागन करिये, भू पै सैन लगइये।

राधा जी कहती हैं कि हे कान्हा! हम कार्तिक का त्योहार मनायें। उसके लिए हम राई दामोदर बन जायें। कार्तिक के पूरे मास में प्रतिदिन हम बड़े भोर में उठेंगे, अपनी सखी-सहेलियों को बुलाकर एकत्रित कर लेंगे। हम स्नान के पूर्व या उसके पश्चात् तेल का सेवन नहीं करेंगे। हर रोज नये-नये घाटों पर स्नान करने जायेंगे। खाने में नमक तथा तेल को त्याग देंगे। इन दिनों हम

बाटी घी लगाकर खायेंगे। रात्रि विश्राम के लिए हम खाट को छोड़कर भूमि पर शयन करेंगे, इस तरह से व्रत पूरा होगा।

अब मन लागा, अब चित लागा,
सेवरिया न चूकियो जसुदा के नन्दन आरती,
जो मैं ऐसो जानती कि आहें आज कन्हाई,
गैयन के गोबर मंगाउती, ढिंगधर अंगन लिपाउती,
मुतियन चौक पुराउती, पटरी देती डराय ....
सोन के कलश मंगाउती, जल तौ लेती भराय,
पूजा की थारी लगाउती, आरती लेती उतार,
धो-धो गेउन पिसाउती, कपड़न लेती छनाय,
छप्पन भोजन बनाउती, रुच-रुच भोग लगाउती।
सोने के पलंग बिछाउती, उर हरि को लेती पौड़ाय।
हरि के चरन दबाउती, मन चाहत फल पाउती ....

अब कृष्ण भक्ति में मन लग ही गया है तो फिर उनकी सेवा में कमी नहीं आनी चाहिये। अगर मुझे पूर्व विदित हो कि आज नंदगोपाल आयेंगे तो मैं उनके आने के पूर्व समस्त तैयारियाँ उनके स्वागतार्थ कर लेती। पहले तो गोबर से पूरे घर की लिपाई करती, उनके बैठने के स्थान पर मोतियों का चौक पूरती, उस पर चौकी डालती, स्वर्ण कलश में गंगाजल भरवाकर उसे स्थापित करवाती। कृष्ण के पूजन के लिए एक थाली सजाती तथा उनकी आरती उतारती।

उन हरि के भोजन के लिए स्वच्छ धुले हुए गेहूँ पिसवाकर उनके आटे को कपड़े से छानती, उसके बाद अपने प्रभु के लिए छप्पन प्रकार के व्यंजन बनाकर रख लेती, उन व्यंजनों का भोग अपने आराध्य को लगाती। भोजनोपरांत उनके विश्राम के लिए सोने का पलंग बिछवा देती तथा उस पर उनको विश्राम करने को कहती। मेरे प्रभु विश्राम कर रहे होते, उस समय मैं उनके पैर दबाती, मेरी सेवा से वे प्रसन्न होकर मुझे मनचाहा वरदान देते।

उक्त गीत में एक भक्त की भावना बड़े सजीव ढंग से व्यक्त की गई है।

उठो मोरे हर जू भये भुन्सारे, गऊअन के बंद खोलो सकारें।
उठो मोरे हरजू दातुन कर लो, दातुन करो मोरे कुंज बिहारी।
कोहे की दातुन काहे के गड़ुआ, काहे को जल भर ल्याई जसोदा।
झारे की दातुन सोने को गड़ुआ, जमना को जल भर ल्याई जसोदा।
धर्म मिलाकर बैठीं जसोदा, अपने कन्हैया खों रचतीं कलेवा।
कच्चर, पापर सेव सिंघारे, माल पुआ मन मोहन प्यारे।
इंजन विंजन सरस निगौना, बेसन के दस बीसक दौना।
जेवें कृष्ण जुआवै जसोदा, बाब ढुरें प्यारी रूक्मन राधा........

माता यशोदा अपने कान्हा को सुबह-सुबह जगाती हैं, कृष्ण को सुबह जगाने का कारण यह भी है कि गौचारण के लिए सुबह ही जाना होता है।

यशोदा कहती हैं कि लल्ला भोर हो गई, उठ जाओ- शीघ्रता से तैयार हो आओ, फिर तुम्हें गायें चराने जाना है। उठकर दातुन कर लो, दातुन काहे की है, कौन सा लोटा है और कौन सा जल भरकर यशोदा लायीं हैं? दातुन झारे की है, सोने के लोटे में यमुना का जल भरकर यशोदा लायी हैं। फिर वे अपने कान्हा के लिए कलेवा बना रही हैं। कलेवा में पापड़, सेव, सिंघाड़े, मालपुआ बनाये गये। निगौना बेसन का साग भी बनाया था। कृष्ण कलेवा कर रहे हैं यशोदा मैया प्रेम से कलेवा करवातीं हैं। राधा, रूक्मिणी उन्हें पंखे से हवा कर रही हैं।

मांगत माखन रोटी गोपाल प्यारे, अपने गुपाल जू खाँ रोटी बनादऊं।
एक छोटी इक मोटी गोपाल प्यारे, अपने गुपाल जू खाँ गहनों गढ़ा दऊँ,
छल्ला छाप अंगूठी गोपाल प्यारे, अपने गुपाल जू खाँ झैया सिया दऊँ,
उर जरकन की टोपी गोपाल प्यारे।

आज कृष्ण गोपाल माखन-रोटी माँगते हैं, यशोदा कहती हैं कि मैं अपने लाल के लिए रोटी बनाऊँ, एक छोटी रोटी बनाऊँगी तथा एक मोटी। मैं अपने बेटे के लिए गहने बनाऊँगी, जिनमें छल्ले की छाप वाली अंगूठी होगी। उसे वस्त्र सिलाऊँगी। वस्त्रों में झबला तथा जरकन वाली टोपी होगी।

सखी नंददुलारे ढूँढें न मिले, जसुदा जू को घ्यारो ढूँढे न मिलें।
घाट बाट सबरे हम ढूँढे, ढूढ फिरे जग सारो, ढूँढे न मिले।
मधुवन ढूँढो महावन ढूँढे, ढूँढे फिरे वृन्दावन सारी, ढूँढो ने मिले।

आज कृष्ण मिल ही नहीं रहे। मैंने उन्हें सब स्थानों पर ढूँढ लिया, लेकिन वे नहीं दिखे।

पपीहा गिरधारी मोरो बारो, गिर न परै,
एक हाँत हरि मुकट समारें, दूजे हाँत पर्वत लंये ठाड़ो, ...
लयें लकुटिया फिरें जसोदा, सो तन तन सब कोऊ देव सहारो, ...
एक हाँत हरि मुरली समारें, सो दूजे हाँत पर्वत लये ठाँड़ो, ...
लयें लकुटिया फिरें जसोदा, सो तन-तन सब कोऊ देव सहारो,..........

पपीहा सुबह से ही पीव-पीव की रट लगाये हुये है। पपीहा के बोल विरहीजनों की विरहाग्नि भड़काते हैं। अत: उन्हें पपीहा का बोलना नहीं भाता। पपीहा के साथ ही बरसात में मेंढक बोलते हैं, वे भी विरह को बढ़ाते हैं। कृष्ण तो ब्रज के हैं, ब्रजवासियों के हितैषी हैं, लेकिन फिर वे कुब्जा के साथ क्यों रहने लगे?

मन लै गयो कुंज गलन बारो, मन लै गयो,
अरे मोर मुकुट बंसी बारो, मन लै गयो,
रंग रंगीलो छैल छबीलो, सो घर-घर दद लूटन बारो ......

वह रसिया हमारा चित चुरा ले गया है। वह तो मोर के पंखों का मुकुट पहनता है तथा बाँसुरी लिये रहता है। वह बड़ा रंगीला सजीला है, सारे ब्रज में वह माखन की चोरी करता है।

कहा करों तकदीर, कुंजन बन छोड़ गये ए ऊधौ,
जो मैं होती जल की मछरिया,
कृष्ण करते अस्नान चरन गह लेती ए ऊधौ,
जो मैं होती सुरहन गऊवा,
कृष्ण दुहाते गाय, गगर भर देती ए ऊधौ,
जो मैं होती वन की हिरनिया,
कृष्ण चलाते बान, प्रान तज देती ए ऊधौ।

ब्रज में कृष्ण का संदेशा लेकर आते हैं, उनकी बात सुनकर ब्रजबालायें कहती हैं कि हे उद्धव हमारी किस्मत ही खोटी है, जो कि कृष्ण हमें छोड़कर मथुरा चले गये। अगर मैं जल की मछली होती और कृष्ण स्नान करने आते तो हमें उनके चरण पकड़ लेती। अगर मैं सुरहन गाय होती तथा कृष्ण गाय दुहने आते तो मैं उनकी गागर दूध से भर देती। मैं यदि वन की हिरनी होती, कृष्ण उस पर यदि बाण चलाते, तो मैं अपने प्राण ही उन्हें निछावर कर देती।

हमें छोड़ काँ जाओ बृजवासी, जो तुम छोड़ हरि हमें जैहों,
सो तज देहों प्रान गरे डारों फाँसी, मोर मुकट हरि अधिक विराजे,
सो कलियन बीच बिहारी जू की झाँकी, नैनन सुरमा अधिक विराजे,
सौ भौहन बीच बिहारी जे की झाँकी, कानन कुण्डल हरि अधिक विराजे,
सो मोतिन बीच बिहारी जू की झाँकी।

ब्रजबालायें कृष्ण के वियोग को क्षणभर भी नहीं सहन कर सकतीं। कृष्ण वियोग होते ही वे अपने प्राण त्यागने-फाँसी लगाकर मर जाने को तैयार हैं। कृष्ण को मोर मुकुट बहुत अच्छा लगता है। मुकुट की कलियों के बीच बिहारी जी की छवि दिखती है। कृष्ण की आँखों में सुरमा सुशोभित होता है, उनकी भौहों के बीच बिहारी जी की छवि अंकित होती है। उनके कान के कुण्डल बड़े भले लगते हैं, कुण्डलों के मोतियों के बीच बिहारी जी की छवि दृष्टव्य होती है।

भई ने विरज की मोर, सखी री मैं तो ....
कहना रहती कहना चुनती, कहना करती किलोर ....
मथुरा रहती विन्द्रावन चुनती, गोकल करती किलोर ....
विन्द्रावन की सकरी गलियाँ, उड़ती पंख सकोर ....

उड़-उड़ पंख गिरे धरनी में, सो बीनत नंदकिशोर ....
उन पंखों को मुकट बनायो, सो बाँधत नंदकिशोर ....
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छब, छलिया जुगल किशोर ....

एक ब्रजबाला कृष्ण के सान्निध्य के लिए ब्रज की मोर बनना चाहती है। हे सखी! अगर मैं ब्रज की मोर होती तो कितना अच्छा होता। मोर बनकर कहाँ रहती, क्या चुगती तथा कहाँ पर घूमती-फिरती? मथुरा में रहती, वृन्दावन में चुगती तथा गोकुल में घूमा करती। वृन्दावन के संकरे रास्तों में मोर अपने पंख सिकोड़कर चलता। मेरे पंख धरती पर गिरते तो कृष्ण उन्हें बीना करते, पंखों का एक मुकुट बनता और वे उसे बाँधते, देखो मेरा तो जीवन ही सार्थक हो जाता। चंद्रसखी कहते हैं कि मैं तो कृष्ण की बालरूप की छवि का ही स्मरण करती हूँ। वे कृष्ण तो छलिया हैं।

आ जाऊंगी बड़े भोर, दहीरा लैकें आ जाऊंगी बड़े भोर,
ने मानों कुढ़री धर राखों, जड़े हैं नगीना अमोल,
ने मानों चुनरी धर राखो, लिखे हैं पपीरा मोर,
ने मानों मटकी धर राखो, सारे बिरज को मोल,
दहीरा लैकें आ जाऊँगी बड़े भोर।

एक सखी ने कृष्ण से दूसरे दिन बड़े भोर में आने का वादा किया, लेकिन वह कहती है कि कान्हा आज मुझे जाने दो। मैं कल सुबह दही लेकर आ जाऊँगी, तुम जितना चाहो उतना दही ले लेना। अगर मेरा भरोसा न हो तो तुम ये मेरे सिर की कुड़री रख लो, इसमें अनमोल रत्न जड़े हैं, अगर भरोसा न हो तो मेरी ये चूनर जिसमें मोर पपीहें अंकित हैं, उसे रख लो। इस पर भी नहीं मानते तो मेरी दही की मटकी ही अपने पास रख लो, यह मटकी बड़ी अनमोल है।

अब न दुहाहों ऐसी गईया, श्याम रे सें अब न दुहाहों ....
इक कारे दूजे कम्बल ओढ़ें, उचक गई मोरी गईया,
कबऊँ तो दोहें वे सेर दुसेरा, कबऊँ दुहें अत्पईया,
कबऊँ दुहें कबऊँ सेन चलावें, सो उचट परी मोरी गइया।
कौन रंग गाय कौन रंग बछड़ा, कौन रंग लगवईया,
लाल रंग गाय सफेद रंग बछड़ा, कारे हैं कृष्ण कन्हैया।
घेर-घेर ग्वालन जुर आईं, बिचक परी मोरी गईया,
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छब, छलिया जुगल किशोर।।

मैं अब कृष्ण से गाय की दोहनी नहीं कराऊँगी, वे बड़े नटखट हैं। एक तो उनका रंग वैसे ही काला है, ऊपर से वे काले रंग की कंबली ओढ़ते हैं, इस तरह से उन्हें देखकर मेरी गाय विदक जाती है। कभी कृष्ण सेरों दूध दुहते हैं तो कभी आध छटाक ही दुहते हैं। वे गाय को दुहते समय आनाकानी करते हैं, तो मेरी गाय बिदक जाती है। गाय का कैसा रंग है, बछड़ा कैसा है, गाय को दुहने वाले का रंग कैसा है। लाल रंग की गाय है, बछड़े का रंग सफेद है तथा दुहने वाले कृष्ण

श्याम रंग के हैं। उनके गाय दुहते समय यहाँ की ग्वालिनें आकर उन्हें घेर लेती हैं, जिससे मेरी गाय बिदक जाती है।

तुलसा महारानी नमो नमाँ, हर की पटरानी नमो नमाँ,
कौन से मईना में भई तोरी पूजा, सो कौन मईना भये हरियाली ....
कातक मईना में भई तेरी पूजा, सो अगहन मास भई पटरानी ....
क्वांरी गावै घर वर पावै, सो तरनी पुत्र खिलावै महरानी ....
ब्याही गावै लाल खिलावै, सो लाल अमर तेरा हुआ महारानी,
बूढ़ी गावै बैकुण्ठ खों जावे, सो स्वर्ग पालकी तुम महारानी,
छप्पन भोग छत्तीसई व्यंजन, सो बिन तुलसा हरि एक ना मानी,
तुम तुलसा पूरन तप कीनो, सो शालकराम भई पटरानी, ...

हे तुलसा माता! आपको नमस्कार है, आप श्रीहरि की प्रिया हैं, आपको हमारा नमस्कार है। तुलसा किस माह में पूजी गई, किस महीने में उनमें हरियाली हुई? कार्तिक मास में तुलसी की पूजा हुई तथा अगहन में वे हरी-भरी हो गई। अगर क्वाँरी कन्या उनका पूजन करें तो अच्छा घर-वर मिलता है। विवाहिता को पुत्र की प्राप्ति होती है। भगवान को भोग लगाते समय छप्पन तरह के व्यंजन हों और अगर तुलसी पत्र न हो तो वे भोग स्वीकार नहीं करते।

कब जैहें मोरे मन की दुबदा, कब जैहें मोरे मन की,
जब जैहें जब हरि को भजूँगी, सेवा गोबरधन की,
इन पांवन परकम्मा देहों, छाया गोबरधन की,
जब नंदरानी गरव से हुइयें, आस पुजे मोरे मन की,
जब श्रीकृष्ण कलेऊ माँगे, दद माखन और रोटी,
जब श्रीकृष्ण खिलौना माँगे, चंद्र-सूरज की जोड़ी,
जब ध्श्रीकृष्ण जी माँगें दुलैया, राजा वृषभान की बेटी,
रुनक-झुनक बहु मंडल डोले, आसा पूरन भई मन की।

मेरे मन में हमेशा दुविधा बनी रहती है, पता नहीं ये कब जायेगी? जब यह मन से निकल जायेगी, तो मैं कृष्ण का स्मरण करूँगी। गोवर्धन की परिक्रमा करूँगी। जब नंदरानी यशोदा गर्भ धारण करेंगी, तब मेरे मन की मुराद पूरी होगी। बाल कृष्ण जब कलेवा माँगेंगे, तो वे दधि-माखन और रोटी माँगते हैं, जब वे खिलौने की माँग करेंगे, तो सदैव चन्दा-सूरज ही माँगते हैं। वे दुल्हिन के रूप में राजा वृषभान की बेटी राधा को ही माँगते हैं। अगर ऐसा हो जाये कि राधा-कृष्ण का विवाह हो तो मेरे मन की आस पूरी होगी।

लै गव चीर मुरारी मोरो हर, लै गव चीर मुरारी,
लैकें चीर कदम पै बैठो, मैं जल मांझ उगारी ....

चीर हमारो दै दे मनमोहन, न हम दैहें गारी ....
चीर तुमारो जब हम दैहें, हो जाव जल से न्यारी ....
जो हम जल सें न्यारे हुइयें, लोग हँसे दे तारी ....
लोग हँसे सो हँसन दे राधा, हम हैं पुरुष तुम नारी,
मोरो हर लै गव चीर मुरारी ....

कृष्ण आज यमुना में स्नान करने वाली ब्रजबालाओं के चीर अपहरण करके ले गये। वे सबके चीर लेकर कदम्ब पर बैठ गये और यहाँ हम समस्त सखियाँ जल में निर्वस्त्र हैं। हे कान्हा! आप हमारे वस्त्र दे दें, नहीं तो हम आपको गालियाँ देंगी। कृष्ण कहते हैं कि तुम्हारे वस्त्र तो हम एक शर्त पर ही देंगे, जब तुम जल से बाहर आओ। अगर हम बाहर आये तो इस स्थिति में देखकर लोग हमारी हँसी उड़ायेंगे। कृष्ण कहते हैं कि देखो राधा लोग हँसते हों तो हँसे। अरे! मैं पुरुष हूँ, तुम स्त्री हो। हमें किसी की परवाह नहीं।

दिवारी नृत्यगीत

बुन्देलखण्ड के संघर्षमय इतिहास और वीर प्रसविनी धरा का प्रभाव शायद इस क्षेत्र के दिवारी नृत्य पर परिलक्षित होता है। दिवारी नृत्य वीर रस से परिपूर्ण है। दिवारी गायन में श्रृंगार रस की अधिकता है, लेकिन इस क्षेत्र का नर्तन देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे सैनिक लोग युद्ध से पूर्व जो रियाज करते थे, वही इस नृत्य में सम्मिलित हैं। दिवारी गीत दो पंक्तियों के होते हैं, ये दोहे जैसे हैं।

दिवारी

अरे ढोल के औ बजवैया,, तोरे न आयी औठन रेख रे।
एक बजौटी ऐसी बजा दे, मोरी नग-नग फरकै देह रे।।

अरे ओ ढोल के बजाने वाले! तेरी तो अभी मूँछ की रेख भी नहीं आई। तू एक ऐसी बसौटी बजा दे, जिससे मेरा शरीर नृत्य के लिए फड़क उठे।

बाजत आवै ढोल सौ, नाचत आवै ग्वाल रे।
बाजत आवै बाँसुरी, औ ढमकत आवै ढोर रे।।

ढोल बजता आ रहा है तथा ग्वाल बाल नृत्य करते आ रहे हैं। बाँसुरी बजती है तथा गायें मस्त चाल से आ रही हैं।

अरे होती बछिया अहीर की, चरती मेंड़ लगाय रे।
ठुमक-ठुमक पग धरती पै धरती, जैसे गोरी सासरे जाय रे।।

अगर मैं अहीर की बछिया होती तो मेंड़ लगाकर चरती रहती। वह बछिया धरती पर

ठुमककर चलती होती, वह ऐसी चलती जैसे कि कोई नई नवेली दुल्हन अपनी ससुराल जाती है।

जल तौ जुठारे जल की मछरी, भौरा जुठारे फूल रे।
कहा चढ़ाओं मैं देवी शारदै, बछला जुठारे दूध रे।।

जल को मछली ने जूठा कर दिया, फूल को भौंरे ने। अब मैं शारदा देवी को क्या अर्पित करूँ, क्योंकि गाय के दूध को तो बछड़े ने ही जूठा कर दिया।

पैलऊं सुमरो शारदा, फिर दूजे गौर गनेश रे।
तीजें सुमरों सरसुती, मोरे आन बिराजो कंठ रे।

बुन्देली के हर गायन या नर्तन के पूर्व सुमरनी से गायन प्रारंभ होता है। सुमरनी अर्थात् देव स्मरण उक्त दिवारी में भी सर्वप्रथम स्वर की अधिष्ठात्री देवी शारदा, गौरी पुत्र गणेश, सरस्वती का स्मरण किया गया है, वे सब मिलकर गायन में सहायता करें।

देखे कनैया नंद के भैया जे तोरे छरछंद रे।
कबऊं बजावै बांसरी फिर कबऊं बजै मौचंग रे।

कन्हैया बड़ा नटखट है, वह अपनी ओर सबका ध्यान आकर्षित करने के लिए अलग-अलग लीलायें करता है, कभी वह बाँसुरी बजाता है, तो कभी मौचंग।

तुमरे अंगना दरदरे मोहे, ककड़ा गड़गड़ जायें रे।
आये कन्हैया नंद के, ककड़ों की मचा रये धूर रे।।

तुम्हारा आँगन बड़ा खुरदरा है। नाचने में हमारे पैरों में कंकड़ चुभ जाते हैं, लेकिन जैसे ही कृष्ण वहाँ आये तो उनके तथा उनके साथियों के नृत्य करने से वे कंकड़ धूल में परिणत हो गये।

माता शारदा सुर दये, सो गनपत जू ने ज्ञान रे।
माता पिता ने जनम दये भैया, रूप दये करतार रे।

माता शारदा ने गायन के लिए मधुर सुर दिया है, गौरीपुत्र गणेश ने ज्ञान दिया। मेरे माता-पिता ने मुझे जन्म दिया तथा प्रभु ने मुझे रूप-रंग दिया है।

लम्में बसेड़ा काटियो, जीकी सरग नसेनी होय रे,
जीपे चढ़कें देखियो प्यारे, कहां दिवारी होय रे।

दिवाली देखने की बड़ी उत्सुकता है, उसे देखने के लिए बहुत लंबा बाँस कटवाओ उसकी नसेनी पर चढ़कर देखो तो कि किस तरफ दिवारी हो रही हैं।

नंद बाबा के द्वार में भैया, रई है निवरिया छाय रे।
तोय बोकरा देऊंगी, मोरी भाका के रखवार रे।

नंदराय के द्वार पर एक घना नीम का वृक्ष लगा है, वहाँ देवता स्थापित हैं। मैं उन देवता को बकरे की बली चढ़ाऊँगी, वे मेरे गायन को मधुर बनायें।

खेरे बिहुने रूखड़ो बिना प्यारे, बिन सींगन की गाय रे।
बैन बिहूनी भैया बिना, गलियों में बिसूरत जाय रे।

किसी गाँव में वृक्ष न हों तो वह सूना-सूना लगता है, गाय के सींग न हों तो वह अज्छी नहीं लगती, बहिन का भाई न हो तो उसका मायका सूना होता है।

कलकत्ता की कालका, जिनके लम्में केश रे।
तीन जगा रक्षा करो भैया, घर अंगना परदेस रे ।

कलकत्ता की काली माता के बड़े लम्बे केश हैं। हे माँ! आप हमारी रक्षा करें वह रक्षा घर की, आँगन की तथा परदेस में जाने पर वहाँ भी रक्षक हों।

विन्द्रावन बसवो भलो भैया, जहां बसत बृजराज रे।
गोरस बेंचत हर मिलें प्यारे, एक पंथ दो काज रे।

वृन्दावन में निवास करना बहुत अच्छा है। यहाँ पर दही बेचने जाने में कृष्ण मिल जाते हैं, उससे दो गुना फायदा हुआ, एक तो दही का बेचना, दूसरा कृष्ण की छवि के दर्शन।

अंगना बोबई ऊंगियो अरे, घर में हींसी गाय रे।
ढील दे बछला नांयके मोय, खिरकों होत अबेर रे।

आँगन में बोबई का पौधा उगा है, घर में गाय अपने बछड़ा के लिए रंभाती है। उसका बछड़ा खोल दो मैं जल्दी दुहनी कर लूं, क्योंकि मुझे खिरक जाने में विलंब हो रहा है।

विन्द्रावन की गैल में भैया, खरा उरैयां लेय रे।
खरा की पूंच में बंदी घुगइया, सो घर-घर चूमा लेय रे।

वृन्दावन के रास्ते में एक खरगोश धूप ताप रहा है, उसकी पूँछ में किसी ने एक लकड़ी बांध दी है तो दौड़ने में वह लकड़ी आने-जाने वालों के मुँह में लगती है.

करकें-करकें करूवा चले सोई, औघट चले मसान रे।
आदी रात डोंका चले, कोऊ राही के लेत पिरान रे ।

करूवा देवता तो किनारे-किनारे चलता है, मसान रास्ता छोड़कर चलता है, मंत्र द्वारा मूठ चलायी जाती है जो मध्यरात्रि में चलती है, वह जिसपर चलाई जाती है, उसकी मृत्यु होती है।

विन्द्रावन की रज रमें भैया, बरसाने की धूर रे।
उड़-उड़ लागे अंग में प्यारे, पाप होंय सब दूर रे।।

वृन्दावन और बरसाने की धूल बड़ी पवित्र है, उस भूमि पर श्रीकृष्ण ने लीलाएँ की हैं, वह धूलि जिस किसी के माथे पर उड़कर लग जाये तो उसके समस्त पापों का नाश हो जाता है।

बिन पत्ता की छेवलिया प्यारे, बिन बछला की गाय रे।
बिन भैया की बहिनियां, गलियों में बिसूरत जाये रे।

अगर पलाश के पत्ते न हों तो वह अच्छा नहीं लगता, बिना बछड़े की गाय भी अच्छी नहीं लगती इसी तरह से किसी लड़की का भाई न हो तो वह भी सूनापन महसूस करती है, भाई की याद में वह रोती जाती है।

आवन-आवन कै गये भैया, आये न बारा मास रे।
ठाट पुराने हो गये सोई, चटकन लागे बाँस रे।।

वे पिछले बारह महीनों से आने-आने की कह रहे है, लेकिन अभी तक नहीं आये है। घर का छान-छप्पर पुराना हो गया है, बाँस भी चटक रहे हैं।

बोली तो तन में लगी, अर बोली जानों तीर रे।
दूजे खाँ परवै नहीं, जे घाव करें गंभीर रे।

वाणी का प्रभाव बड़ा गंभीर होता है। वह बाण की नोक से भी ज्यादा तीक्ष्ण होती है। वाणी का घाव भी लगता है और ऊपर से पता भी नहीं चलता।

पैले पार को बाजरा भैया, गोरी रखावे जाय रे।
गोरी को चित कऊं और है, सो सुआ बाल लै जायें रे।

एक स्त्री अपने खेत में लगे बाजरे की रखवाली करने जाती है, लेकिन उसका मन कहीं अन्यत्र है, जिससे खेत में तोते बाजरे की बालें ले जाते हैं।

वृन्दावन मुरली बजी सो मोहे तीनई लोक रे।
वे तीनों मोहे नहीं प्यारे, रहे कौनकी ओट रे।

वृन्दावन में कृष्ण ने बाँसुरी बजाई, जिसके प्रभाव से तीनों लोक सम्मोहित हो गये, लेकिन तीन ऐसे भी हैं जो मुरली के सम्मोहन से बचे रहे, वे कौन हैं?

सती न मोही सत से प्यारे, शेष न मोहे कान रे।
ग्रंथ न मोहे ज्ञान सें, सुन लीजे चतुर सुजान रे।

सती अपने सत्य से विचलित नहीं हुई, शेषनाग जो पृथ्वी धारण किये हैं, वे भी मोहित नहीं हुए, वेदों पर भी मुरली का प्रभाव नहीं पड़ा।

गड़रा कें छिरियाँ बड़ीं, अहीरों की बढ़ गई गाय रे।
बमनों के बेटा बड़े, बहुओं के पर गये काल रे।

गड़रियों के गाडरें बढ़ गईं, अहीरों के यहाँ गायें बढ़ गई, ब्राह्मणों के लड़के बढ़ गये हैं। लड़कों की संख्या लड़कियों के अनुपात में ज्यादा होने से बहुओं की कमी हो गई।

फदर–फदर भाजी चुरे भैया, चटुआ कुलांटे लेय रे।
चटुआ की छाती बरै, वो भाजी चुरन दे देय रे।

भाजी फदर–फदर की आवाज के साथ पक रही है। उसमें चटुवा डला है, वह ऊपर–नीचे हो रहा है। अरे! यह मुआ चटुआ तो भाजी को ठीक से पकने ही नहीं देता।

अन्न में धौरी जूरनी भैया, सारों में धौरी गाये रे।
तिरियों में लाखन बहू, देवतों में बड़े हनुमान रे।

अनाजों में सफेद रंग की ज्वार उत्तम होती है। गायों में सफेद गाय, स्त्रियों में लाखन राना की पत्नी श्रेष्ठ है। इसी तरह से देवताओं में पवनपुत्र हनुमान बड़े हैं।

बम्बुलिया/लमटेरा/रमटेरा

माघ मास में मकर संक्रांति के समय बुन्देलखण्ड में कई स्थानों पर मेले लगते हैं। जन समुदाय उन मेलों में झुंड के रूप में जाते हैं। उस अवसर पर लमटेरा गाये जाते है। इस पर्व में स्नान, पूजन, दान आदि का विशेष महत्त्व है। मेले में जाने की तैयारियाँ ग्रामवासी महीनों पहले कर लेते है। पहले यात्रा जाने के लिए इतने साधन नहीं थे, लोग पैदल चलकर तीर्थ क्षेत्र में पहुँचते थे। पैदल के अलावा बैलगाड़ी में भी यात्रा की जाती थी। आज भी लोग मेला जाने के लिए काँवर ले जाते है।

नरवदा मैया दूदन तो बहें रे, दूदन तो बहें रे,
तिरवेणी बहत रसधार रे, नरवदा मैया हो ....

नर्मदा जी में दूध की धार बह रही है तथा त्रिवेणी में रस की धार निकल रही है।

नरवदा में बन्सी तो डरी रे, बन्सी डरी रे,
लमडोरा डरे हैं पैले पार रे, नरवदा मैया हो ....

नर्मदा जी में बाँसुरी डली है तथा अलगोजा उस पार है।

बरऊवा भैया नैया ने खेवें रे, नैया न खेवें रे,
वो तो निरखें नथनियाँ की गूंज रे, बरौवा भैया हो ....

बरौवा अर्थात् नाविक नाव नहीं चलाता। वह तो मेरी नथ की गूंज को ही देख रहा है।

बरौवा भैया नैया ने खेवे रे, नैया ने खेवे रे,
मोरी गुइयाँ छिकी है पैले पार हो, बरौवा भैया हो ....

नाविक नाव नहीं चला रहा। मेरी सखी उस पार है और उसे नाव से इस पार आना है।

अतर की दो-दो सिसियाँ रे, दो-दो सिसियाँ रे,
पलको पै धरीं हैं महकाँय रे, अतर कीं तो हो ....

इत्र की दो-दो शीशियाँ मेरे पलंग पर रखीं हैं। उनसे इत्र की भीनी-भीनी खुशबू आती है।

वरस जा अरे दो-दो बुंदियाँ रे, दो-दो बुंदियाँ रे,
मोरे कंथा घरई रह जाँय रे, बरस जा अरे हो ....

हे मेघों! आप यदि पानी बरसा देंगे तो अच्छा होगा, क्योंकि पानी बरस गया तो मेरे पति घर में ही रहेंगे, वरन् वे तो जा रहे हैं।

सड़क पै अरे हिन्नां तो लड़ें रे, हिन्नां तो लड़ें रे
गढ़लंका में लड़रये हनुमान रे, सड़क पै अरे हो ....

सड़क पर हिरण लड़ रहे हैं और लंका में हनुमान जी लड़ रहे हैं।

चरकनूं मोरी चुरियाँ रे, मोरी चुरियाँ रे,
मगमेला में उड़ गईं चकनाचूर हो, चरकनूं अरे हो ....

मेरी चूड़ियाँ बड़ी कच्ची हैं। मैं मेले गई तो वे जरा से बोझ में टूट गईं।

भजन बिन सूनी दईरा रे, सूनी दईरा रे
हिरदे में बसाले सियाराम रे, भजन बिन हो ....

प्रभु के भजन के बिना यह शरीर सूना है। यदि हम भजन करेंगे तो अपने हृदय में प्रभु को बसा लेंगे।

कुँवर दोई राजा दशरथ के रे, राजा दशरथ के
बे तो ऊबे जनक जू की पौर रे, कुंवर दोई हो ....

महाराज दशरथ के राजकुमार श्रीराम-लक्ष्मण जनकपुर नरेश विदेहराज जनकजी के द्वार में ऊबनी हेतु गये हैं।

देहरिया दुरलव तो भई रे, दुरलब भई रे
मोरे अंगना तो भये हैं विदेश रे, देहरिया अरे हो ....

विवाह के पश्चात् मेरे लिए मायके की दहलीज कठिन हो गई। मेरा घर-आँगन मुझे विदेश जैसा हो गया।

फुलन के दो-दो गजरा रे, दो-दो गजरा रे
पैरईया अकेले भोलानाथ रे, फूलन के अरे हो ....

मेरे पास फूलों की दो मालाएँ हैं और पहनने के लिए केवल भोलेनाथ ही हैं।

अबै के गये कबै मिलहो रे, कबै मिल हो रे
मोरे जीरा तलफ मर जाँय रे, अबै के गये हो ....

अरे! तुम आज जा रहे हो, यह तो बता दो कि फिर कब मिलोगे? कहीं विरह में मेरे प्राण ही न निकल जायें।

अबै के गये जबई मिले रे, जबई मिलें रे,
जब अम्मां मोहर लग जाँय रे, अबै के गये हो ....

मैं अभी जा रहा हूँ और तब आऊँगा, जब आम के पेड़ों में बौर आ जायेंगे।

नजर को क्या मिलनो रे, क्या तो मिलनो रे,
मुस्क्यावै गजब पर जाय रे, नजर को अरे हो ....

अरे! नजर का मिलना भी कोई मिलना है, बस तुम्हारी तो एक मुस्कान ही मिलने के लिए काफी है।

नजरिया तोरी चरचों रे, तोरी चरचों रे,
घुंघटा में चला रयी दोई नैन रे, नजरिया तो हो ....

अरे उसकी नजरों की तो काफी चर्चा हो रही है, वह तो घूँघट में ही अपने नयन बाण चला देती है।

घुंघट पट ऊँचे तो करो रे, ऊँचे तो करो रे,
परदेसी सें करले चिनार रे, घुंघट पट हो ....

अपना घूँघट तनिक ऊँचा तो कर लो, मैं दूर देश से आया हूँ, मुझसे पहचान बना लो।

चुनरिया मोरी बलमा रे, मोरी बलमा रे,
लहरों में उड़ी चली जाय रे, चुनरिया अरे हो ....

ओ मेरे पतिदेव! मेरी चूनर तो नर्मदा की लहरों में ही उड़ती चली जा रही है।

चुनरिया अरे लैदे बलमा रे, लैदे बलमा रे,
जेमें लिखे पपीरा दोई मोर रे, चुनरिया अरे हो ....

एक स्त्री अपने पति से कहती है कि मुझे एक चूनर ला दो, जिसमें मोर पपीहे लिखे हों।

लहरिया मोरे बलमा रे, मोरे बलमा रे,
लहरों में बहे चले जाँय रे, लहरिया तो हो ....

मेरे पति तो बड़े नाजुक तथा हल्के-फुल्के हैं। वे तो थोड़ी सी लहर में ही बहे जा रहे हैं।

सड़क पै अरे अम्माँ तो लगाऊंती रे, अम्मां लगाती,
अद्घटियों लगाती कचनार रे, सड़क पै अरे हो ....

मेरी इच्छा है कि मैं सड़क के आजू-बाजू में आम लगवा देती तथा आधी घाटी तक कचनार लगाती।

बलम की अरे आवन की सुनी रे, आवन की सुनी रे,
कुंअला पै पटक आई खेप रे, बलम की अरे हो ....

उसने जैसे ही अपने पति के आने का समाचार सुना तो वह उतावली में कुँए पर ही अपनी पानी की रस्सी छोड़कर आ गई।

बड़े तप गौरा ने करे रे, तप तो करे रे,
भोले बाबा खों लये हैं मनाय रे, बड़े तो तप हो ....

गौरा जी ने बड़ा कठिन तप किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें भोलेनाथ वर के रूप में मिले।

पीसत छोड़े पीसने, चुरत चनन की दार रे,
बारे छोड़े पालने और कुटम परवार रे, पीसत छोड़े हो ....

मैंने मेला जाने की खुशी में पीसने का काम ही छोड़ दिया, चूल्हे पर चने की दाल अधपकी छोड़ी तथा अपने दुधमुँहे बच्चे को पालने में छोड़ा। अपना घर-परिवार सब कुछ छोड़कर तीर्थ यात्रा को रवाना हो गई।

बमुरिया के काँटे ने साले रे, कांटे ने सालें रे,
जैसे सालें ननदिया के बोल रे, बमुरिया के हो ....

मेरी ननद इतने कटु वचन बोलती है कि वे बबूल के काँटों से भी तीक्ष्ण होते हैं और वे मुझे बड़े तकलीफ देय होते हैं।

भजन की जाई बेरा रे, जाई बेरा रे,
पट खोलो छबीले भैरों लाल रे, भजन की अरे हो ....

भजन भक्ति के लिए भोर का समय ही उचित होता है। हे भैरवनाथ! आप कपाट खोलें मुझे दर्शन करना है।

किवरिया खोलन तो कहो रे खोलन कहो रे,
नातर लौट पलट घर जाँय रे, किवरिया अरे हो ....

यदि दरवाजे खोलने का मन हो तो खोल दो, नहीं तो फिर मैं अपने घर को लौट जाऊँ।

ककनवा अरे नये-नये चले रे, नये तो चले रे,
दुहरी के चलन गये भूल रे, ककनवा अरे हो ....

ये नयी चलन के कंगन तो अभी-अभी बनने लगे हैं और अब दुहरी बनना बंद हो गई है।

चले तो आवै कमरतिया रे कमरतिया रे,
जैसे गैंदा हजारी तोरें फूल रे, चले तो आवैं हो ....

कांमरिया इस तरह से आ रहे है, जैसे हजार कली वाला गैंदा खिला हो, अर्थात् यात्रा पूरी करके लौटने वाले अति प्रसन्न हैं।

चली तो आवै बम्बुलिया रे, बम्बुलिया रे
लट छोरें भरें ईगुर माँग रे, चलीं तो आवैं हो ....

तीर्थयात्रिणी तीर्थ यात्रा से वापिस आ रही है। वे अपने केश खुले रखे हैं तथा उसकी माँग सिंदूर से भरी हुई है।

खबर मोरी लंये रैयो रे, लंयें रइयो रे,
काशी के बसैया भोला नाथ रे, खबर मोरी हो ....

हे काशी विश्वनाथ! आप हमारी सुधि लिये रहना, इस संसार में सिवा आपके मेरा कोई नहीं है।

चलन कहो सांची कईयो रे, सांची कईयो रे,
हम बाँदें कनक कन्डादार रे, चलन कहो हो ....

अगर मेले में चलना हो तो सच-सच कह दो जाना है तो मैं रास्ते के लिए आटा, कंडे और दाल की पोटलियाँ बांध कर तैयारी कर लूँ।

बननियाँ मायके गई रे, मायकें तो गई रे,
घरे रोवें तखरिया पौवा सेर रे, बननियाँ अरे हो ....

एक बनिये की घरवाली अपने मैके गई है। उसके जाने पर यहाँ तखरिया, बाँट सब वैसे ही पड़े हैं।

कपट की बिरियाँ ने चाबो रे, बिरियाँ ने चाबो रे,
कत्था चूना में फट जैहें गाल रे, कपट की अरे हो ....

अरे! तुम छल वाला पान मत खाना वरन् तुम्हारे गाल फट जायेंगे।

गंजेरी के फंदे तो परी रे, फंदो परी रे,
ओखों गांजो मलत दिन जाय रे, गंजेरी के तो हो ....

अरे! मेरा नसीब बड़ा खोटा निकला जो मुझे गंजेड़ी पति मिला, उसका पूरा समय गाँजा मलने में ही चला जाता है।

वचन के तुम सांचे तो कड़े रे, सांचे कड़े रे,
मग मेला में गैलई मोरी बाँय रे, वचन के अरे हो ....

मेरा प्रेमी बात का पक्का निकला, उसने इतने बड़े मेले में मेरी बाँह थाम ली।

नजर भर देखन ने पाये रे, देखन ने पाये रे,
वे तो हो गये पहरिया की ओट रे, नजर भर हो ....

मैं उन्हें ठीक से देख भी नहीं पाई थी कि वे पहाड़ी की ओट में चले गये।

बिहर में मछौं तो लगी रे, मछौं तो लगी रे,
पनहारन के चींथे गोला गाल रे, बिहर में अरे हो ....

एक बावड़ी में मधुमक्खी का छत्ता लगा है। उस बावड़ी में एक पनिहारी पानी भरने गई तो मधुमक्खी ने उसके गाल पर काट लिया।

अंगनवा में ठांड़ी मुररे रे, ठांड़ी मुररे रे,
मोहे झूना ने ल्याये लड़ीदार रे, अंगनवा में हो ....

उसका पति बाजार से वापस आया और पत्नी के लिए चूनर न लाया तो उसने गुस्से से अपना मुँह फेर लिया।

इमलिया अरे पत्तों तो घनी रे, पत्तों तो घनी रे,
जहाँ काटी अबेरा सिया राम रे, इमलिया तो हो ....

एक इमली में बड़े घने पत्ते हैं, उस इमली के तले श्रीराम जी ने अपना वनवास का समय व्यतीत किया था।

निकर आई धौके में रे, धोके में रे,
मोसें मजले करी नयीं जाँय रे, निकर आई हो ....

मैं तो बड़े धोखे में निकल आई थी, लेकिन यहाँ आने पर पता चला कि तीर्थ स्थल पर पैदल बहुत चलना होता है। अब मेरा हाल यह है कि मुझसे आगे नहीं चला जा रहा।

कजल बिन सूनी अंखियाँ रे, सूनी अखियाँ रे
बिन बैंदी के सूने लिलार रे, कजल बिन हो ....

काजल के न लगने से आँखें सूनी-सूनी लगती हैं। इसी तरह से बैंदी के न लगाने से माथा सूना लगता है।

कजलवा थोरे दईयो रे, थोरे दईयो रे,
तोरे ऊंसई लगनियाँ हैं नैन रे, कजलवा तो हो ....

अरे! तुम काजल थोड़ा सा ही लगाना, क्योंकि तुम्हारी आँखें तो वैसे ही कजरारी दिखती हैं।

अगनियाँ के जाड़े तो परे रे, जाड़े परे रे,
मोरी चोली में रूइया भराव रे, अगनियाँ के हो ....

हे प्रिय! अगहन मास में बड़ी कड़ाके की ठंड पड़ रही है, तुम मेरी चोली में रूई भरवा दो तो अच्छा रहेगा।

मलनियाँ मायके तो गई रे, मायके गई रे,
भैरों लल्ला गये हैं सुसरार रे, मलनियाँ अरे हो ....

मालिन अपने मायके गई है और भैरव अपनी सुसराल चले गये।

मिहक आवै बेला पुरहन की रे, बेला पुरहन की,
पुरवैया बसादे भोलानाथ रे, मिहक आवै हो ....

बेला के पुष्पों की बड़ी तेज खुशबू आ रही है। हे भोलेनाथ! क्यों न यहाँ पर बेला की क्यारी लगा दें।

अंगनवा में तुलसी बिरछा रे, तुलसी के बिरछा,
वेतो ठाड़ी जपै सियाराम रे, अंगनवा में हो ....

आँगन में तुलसी का पौधा है। गृहणि तुलसी के पौधे के पास खड़ी होकर राम नाम का जप कर रही है।

कगदवा में लिख देती रे, लिख देती रे,
घर होती कलम और बोर रे, कगदवा अरे हो ....

मेरे पास अगर कलम-दवात होती तो मैं कागज पर एक पत्र जरूर लिख देती।

मलनियाँ टेरत आवैं रे, टेरत आवैं रे,
कलमी लैले छबीले भैरों लाल रे, मलनियाँ अरे हो ....

मालिन कलमी आम को लेकर आई है, वह आवाज देती है। सो हे भैरव! आप कलमी आम ले लो।

सुरज मुख पनियाँ न जैंहों रे, पनिया न जैहों रे।
मोरी बेंदी के रंग उड़ जाँय रे, सुरज मुख हो।

मैं तेज धूप में पानी भरने नहीं जाऊँगी, क्योंकि धूप की अधिकता से कहीं मेरी बेंदी का रंग न उड़ जाये।

घुंघट पट ऊँचे तो करो रे, ऊँचे तो करो रे,
परदेसी सें करले चिनार रे, घुंघट पटा हो ....

अरे! तनिक अपना घूँघट ऊँचा तो कर लो, तभी तो किसी अजनबी से पहचान होगी।

मिलन खों बैयाँ फरकें रे, बैंयाँ फरकें रे,
दरसन खों तरस रये दोई नैन रे, मिल खों ....

उनसे मिलने के लिए मेरी बाँह फड़क रही है तथा उनके दर्शन को मेरे नयन तरसते हैं।

ननद मोरी बड़ी विषकरया रे, बड़ी विषकरया,
विष बाँदे चुनरिया के छोर रे, ननद मोरी हो ....

मेरी ननद बड़ा विषैला बोलती है, विष तो जैसे वह अपने पास ही रखती हो।

बारामासी

बारहमासी गीतों में विरहणी नायिका को प्रमुख पात्र बनाकर जिसके प्रिय प्रवासी हैं, उनके विरह और मिलन की अभिव्यक्ति होती है। गीतों में बारह महीनों के क्रमवार वर्णन से इन्हें ऋतुगीत के अंतर्गत शामिल कर लिया गया है।

बारामासी एक ऐसी विशिष्ट विधा है, जिसमें विरहिणी अपने प्रिय को कभी नहीं भुला पाती। प्रत्येक महीने में ऋतुओं की विशेषता के साथ-साथ ही उनकी विरहिणी पर होने वाली प्रतिक्रिया भी प्रकट हो जाती है। बारहमासे में प्रकृति के चित्रण में नायिका की विरह वेदना के वर्णन को देखने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि साहित्य में विरह वेदना की देन बारहमासे से ही मिली है। इन गीतों में विरह रूपी कसक तो जैसे लोक का पर्याय बन गई है।

हमारे पिया बदरिया हो गये, बरसे ने एकऊ बेर ....
पूस रजाई भराऊती रे, एक गदेला ख्वार,
एक पलंग पै पौड़ती, फिर उड़ती यार बहार ......
माव मीड़ा हो रहे रे, मान महत्तम लीन,
वे कुब्जा के बस परे, मोय बिरहा ने दुख दीन,
चैत चितरका घाम परे, मोय छिन-छिन लगत प्यास,
मन मोरो अब जा कहें, उड़ चलो पिया के पास।
असड़े अंग आगी लगे रे, जर गये सकल शरीर।
प्रेम बूंद बरसे नहीं, अब जियरा धरे ने धीर।

साहुन सखियाँ ऊपजे रे, पिया मिलन की आस,
पिया मिलाये ने मिलें, जर भयो करेजा राख।
भादों रात भियांयदी रे, निश इंदियारी रात।
मन मोरो जब जा कहे, कब सुनूं पिया की बात।
अगन अंग फरकन लगे रे, मोय सतावै पीर।
पिया खबर लियो मोरी, अब जीरा धरे ने धीर।
हमारे पिया बदरिया हो गये ....

मेरे पति कृष्ण उस बदली के जैसे हो गये, जो आसमान पर छाती तो है लेकिन बरसती नहीं। इसी तरह से कृष्ण के आने पर मैंने सोचा था कि शीत से बचने के लिए मैं रजाई–गद्दा में रूई भरवा लेती और तब ठंड से बचना हो जाता, लेकिन जब वे नहीं आये तो मैं क्या करती। माघ का महीना आ गया, यह बड़े महत्व का महीना होता है, लेकिन वे तो कुब्जा के साथ रह रहे हैं और मुझे विरहाग्नि में जला रहे हैं।

चैत्र के महीने में तो ग्रीष्म की अधिकता होती है, अत्यधिक गर्मी के कारण मुझे बार–बार प्यास लगती। मेरा गला सूख रहा था, उस समय ऐसा मन करता कि अब तो मैं उनके पास ही चली जाऊँ। आषाढ़ मास में तो विरह की अधिकता से मेरा समूचा शरीर ही जल रहा था। मैं अधैर्य हो रही थी, लेकिन वे नहीं आये। श्रावण तो मिलन की आस लेकर आया, लेकिन जब वे नहीं आये तो मेरा हृदय जलकर खाक हो गया। भाद्रमास की अंधेरी काली रातें बड़ी भयावनी लगती हैं, उस समय मेरा मन हर घड़ी यही सोचता कि मैं कब उनसे बात कर लूँ। अगहन मास में मेरे बायें अंग फड़कते थे, तो मुझे ऐसा लगता था कि यह उनसे मिलन का संकेत है, मुझे विरह की पीड़ा सता रही थी। हे प्रिय! अब तो आकर मेरी सुधि लो, मेरा मन बड़ा आतुर हो रहा है।

श्याम बिन कौन हरे जा हो पीर ....
असढ़ा रे धन गरजन लागे, साहुन गैर गम्भीर।
चहुँदिस बरसत मेव, क्वांर मास बरसा भई थोरी।
कातक मच गई कीच, अरे अगन मास हर पाती भेजी,
और लिख पठाये संदेश, पूष मास में जाड़े परत हैं।
माव में तपत शरीर, ...
अरे फागुन मास में होली मनायी, कौना पै डारों अबीर,
अरे भजले रामा कौना पै डारों अबीर,
चैत मास फूलन की वर्षा, वैशाखें भई धूर,
अरे सूरश्याम जा कानो वरनों, जेठ मिलत रगवीर,
श्याम बिन कौन हरे जा पीर ....

कृष्ण के बिना यह पीड़ा कोई दूर नहीं कर सकता। आषाढ़ मास में बादलों की गर्जना शुरू

हुई, श्रावण में तीव्र वर्षा हो रही है। क्वाँर में वर्षा थोड़ी हुई, कार्तिक में कीचड़ व्याप्त है। अगहन में कृष्ण ने पत्र भेजा। पौष के महीने में ठंड पड़ने लगी। माघ में कुछ तपन व्याप्त थी। अब फाल्गुन का रंग रंगीला महीना आ गया, लेकिन आपके (कृष्ण के) न होने से रंग अबीर किस पर डाला जाये? चैत्र में फूलों की अधिकता होती है। वैशाख में गर्मी तथा धूल होती है। सूरदास कहते हैं कि मैं कहाँ तक वर्णन करूँ, ज्येष्ठ मास में कृष्ण आये, सबके मन तृप्त हो गये।

फाग-होली

ऋतुराज बसंत प्रकृति का अनुपम अद्वितीय श्रृंगार है, तभी इसे ऋतुओं की साम्राज्ञी कहा जाता है। बसंत का पदार्पण सम्पूर्ण सृष्टि को प्राणवान बना देता है। वृक्षों को पतझड़ के पश्चात, नव कोंपलें आने लगती हैं। वृक्ष रंग बिरंगे पुष्पों से आच्छादित हो जाते हैं। सुनहरी फसलों से आच्छादित खेतो को देखकर हृदय उमंगित हो उठता है। प्रकृति नवयौवना दृष्टिगत होने लगती है। बसंतागमन पर प्रकृति का परिवर्तन ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि ऋतुपति के आगमन के लिए प्रकृति स्वागत कर रही हो। इस मधुमति ऋतु का संबंध आनंद और उल्लास के प्रतीक कामदेव के साथ जोड़ा जाता है। परिणामस्वरूप फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी के दिन मदनोत्सव मनाया जाने लगा, अर्थात् बसंतारंभ में काम देवता के रूप में अर्चित होने लगे।

वर्ष के त्योहारों में होली ही एक ऐसा त्योहार है, जिसमें मानव मन सहज ही उन्मुक्त हो जाता है। शिष्टाचार और मर्यादाओं का उल्लंघन भी सहजता से स्वीकारा जाता है।

मधुमास के इस महीने में होली का त्योहार आता है। बुन्देली लोक जीवन में इससे अधिक खुशी और आनंद का अवसर शायद ही कोई आता हो। ऋतुओं के श्रृंगार परिवर्तन की कला का स्वागत मानव मन अदम्य उत्साह और उत्सुकता के साथ करता है। विभिन्न ऋतु विषयक गीतों में विभिन्न भाव परिलक्षित होते हैं।

भौंरा-भौंरा भौराये, कजरीवन कारे भौराये,
कौना की बेटी सीया जानकी, कौना की कईये गौरा ये,
राजा जनक की सिया जानकी, राजा हिमांचल गौरा ये,
कौना ब्याही सिया जानकी, कौना ब्याही गौरा ये,
कजरी वन कारे भौराये ....

ये कजली वन के भँवरे हैं, जिनका काला रंग होता है। सीता किसकी बेटी है, गौरा किसकी है। राजा जनक की बेटी सीता है तथा गौरा हिमांचल की बेटी है। सीता का विवाह किनसे हुआ, गौरा का किनसे? सीता का विवाह श्रीराम से तथा शिवजी से गौरा का विवाह हुआ।

जिन करियो मान-गुमान उमरिया, थोरे दिनन की पाँवनी।
अरे हाँ, रे उमरिया जैसे बूँदा ओस को, अरे पवन लगे ढुर जाय।
अरे हाँ, रे उमरिया जैसे पूरा घास कौ, अरे आग लगे जर जाय।

अरे हाँ रे उमरिया लीप पोत भौ में धरे, अरे घर के लोग डरांय।
उमरिया ....

हमें अभिमान नहीं करना चाहिये, क्योंकि हमारी उम्र थोड़ी सी ही है। हम तो यहाँ मेहमान जैसे आये हैं। हमारा जीवन तो ओस की बूंद के जैसा है। जिस तरह से ओस में थोड़ी सी हवा लगने पर ओस खत्म हो जाती है, उसी तरह से मानव जीवन है। जीव के शरीर से निकल जाने के उपरान्त उसे भूमि पर लिटाया जाता है जीव के रहते जो सबका प्रिय था, जीव के निकलने के अनन्तर उसके परिजन ही उसे देखकर डरने लगते हैं।

हमपै रहो शारदा दायनी, जा तोरे बाने की लाज ....
अरे हाँ दुरगा संकट की काटनहारी, सब देवन की सरदार ....
दुरगा सात दीप नवखण्डा में, तोरी जोत जरे दिनरात ....
अरे हाँ दुरगा संकट की हारनी, तुम राखो हमारी लाज ....
हमपै रहो शारदा दायनी .....

हे माता शारदा! आप हमारे दाहिने ओर रक्षा करें, हमें आपके वाने का सहारा है। आप लोगों के संकट दूर करती हैं तथा समस्त देवताओं की अधिष्ठात्री आप ही हैं। सात द्वीप तथा नौ खण्डों में आपकी जय हो रही है। आप समस्त संकट दूर करती हैं। हे माँ! आप मेरी भी रक्षक हों।

का मिलत तुमें रंग बोरे में, फट जैहें चुनरिया निचोड़े में,
गोरो गात बिगारो न मोरो, श्याम रहो तुम दोरे में ....
तें मोरे मैं तोरे में, का मिलत तुमें रंग बोरे में ....

हे कान्हा! आपको हम पर रंग डालने में क्या मिल जाता है? रंग से भीगी चुनर को बार-बार रंग निकालने में निचोड़ेंगे तो वह फट ही जायेगी। मेरा गोरा रंग है, तुमने रंग लगा दिया तो मेरा चेहरा खराब हो जायेगा। अतः आप कृपया मुझसे दूर ही रहें।

चौसठ जोगन दुरगा गाईये, फिर बिघन बिनासनहार,
फिर बिघन बिनाशनहार हूहै तेरी शक्ति,
रक्षा करो सहाय, जगत में तेरी भक्ति,
सिर पै रईयो शारदा, मैं तेरो आधार,
नैनों में नौ दुर्गा, फिर रईयो सदा सवार ....
अरे दूजें गौरी के नंदन गाईये, हो विद्या के भण्डार,
विद्या के भण्डार और कलकत्ता काली,
नैनन में हैं अष्टभुजी हिंगलाज में वास,
कंठ कालका सरसुती, जिभिया में जयन्ती नार ....
जप होत तुम्हारे द्वार में, होजा सिंगा पै असवार,

सिंगा पै असवार रहे, आसन असमानी,
लयें खप्पर तरवार, बाँय में विन्ध्यवासनी,
चरन मैं बंदों खप्पर वाली के, तेरो नाम जपै संसार ....
नाव जपै सिंसार, जग में जोगन मैया,
मोरी पार लगाव, बीच में डोले नैया,
अगन बचैयो फाग में, विनती सौ-सौ बार ....
कहें फकीरे लाल जी, ने आवै दिल में हार।

आज हम गायन का आरम्भ चौसठ जोगिन दुर्गा से करेंगे, फिर सिद्धि विनायक गणेश जी का आव्हान करेंगे। एक शक्ति प्रदान करेंगी तो दूसरे समस्त विघ्नों का नाश करेंगे। इन दोनों शक्तियों की सहायता से ही हमारा गायन सफल होगा। फकीरे लाल जी कहते हैं कि कलिकाल में ये दोनों ही सबके सहायक तथा रक्षक होते हैं।

बल खोंरे सुमरों हनुमान, सुर खों सुमर लऊँ माता शारदा हाँ।

शक्ति के लिये पवनपुत्र हनुमान का स्मरण करेंगे तथा मधुर स्वर के लिए शारदा देवी के स्मरण से गायन शुरू करेंगे।

सुमरों रे गौरा के गनेश, पिरथम मनालऊँ माता शारदा हाँ।

आज हम गौरी माता के पुत्र गणेश जी का स्मरण करते हैं, फिर शारदा माता का। इनके स्मरण से समस्त काम सिद्ध होंगे।

खड़ी

घर भाये न बालम काँ छाये, कौन सौत ने बिलमाये,
जबसे गये खबर न भेजी, नहीं संदेश पठाये,
सोचत रैन होत भुनसारें, मग हेरत दिन नित जाये,
कौन उपाय करें का मथुरा, कंत बसंत बिना आये।

कृष्ण अभी तक घर नहीं आये पता नहीं उन्हें किस सौत ने रोक लिया है। वे जब से गये हैं हमारी कोई खबर नहीं ली न ही अपना कोई संदेशा ही भेजा। उनके विषय में सोचते-सोचते पूरी रात निकल गई। समझ में नहीं आता कि कौन-सा उपाय किया जाये जिससे वे आ जायें।

डिढ़खुरयाऊ

जुर आये सखिन के झुंड कनैया, झूमर खेलें राधा सें।

आज होली के अवसर पर सखियों के झुण्ड के झुण्ड राधा के यहाँ एकत्रित हुए हैं, वे राधा के साथ झूमर खेलती हैं।

चौकड़िया

श्यामलिया खाँ घेरे राधा, श्यामलिया खाँ घेरे लाल।
रोजई होत सबेरें राधा ....
एक सखी अतर रंग घोरे, एक केशर घोरे राधा ....
एक सखी कमर लिपटानी, एक पीताम्बर छोरे राधा,
ईसुर फाग मची गोकुल में, नंद बबा के दोरे राधा,
श्यामलिया खाँ घेरे लाल।

कृष्ण को राधा रोज-रोज सुबह से ही घेर लेती हैं, होली का त्योहार है। राधा की सखियों ने आज कृष्ण को घेरकर परेशान कर दिया। एक सखी रंग में इत्र मिलाये थी, तो दूसरी केसर युक्त रंग बनाकर लाई। एक उनकी कमर में लिपट गई तो एक ने उनका पीताम्बर खोल दिया। ईसुरी कहते हैं कि आज नंदराय के द्वार पर होली की धूम मची हुई है।

कुंजन हो रयी फाग राधा, दै दे बुलौवा सखियों खों,
कौन के हाँत कनक पिचकारी, कौना के हांथे रंग डोरी,
राधा के हाँत कनक पिचकारी, कृष्ण के हांथे रंग डोरी,
कै मन केसर घोरी बिरज में, कै मन उड़त गुलाल,
नौमन केसर घोरी बिरज में, दस मन उड़त गुलाल,
कौन की भींजें सुरंग चुनरिया, कौन की पचरंग पाग,
राधा की भींजें सुरंग चुनरिया, कान्हा की पचरंग पाग,
लहरन सूखें सुरंग चुनरिया, झखरन पचरंग पाग।

आज ब्रज की कुंज गलियों में राधा-कृष्ण की फाग हो रही है। किसके हाथ में सोने की पिचकारी है, किसके हाथ में रंग अबीर है? राधा पिचकारी लिये हैं, कृष्ण रंग। कितने मन रंग घोला गया तथा कितने मन केसर घोलाघ् नौ मन केसर तथा दस मन अबीर है। किसकी सुन्दर चूनरी भीगी किसकी पाग भीगी? राधा की चूनर तथा मोहन की पाग रंग गई। भीगे वस्त्र लहरों में सुखाये गये।

अनबोले रहो ने जाय, ननद बाई वीरन तुमारे अनबोला,
गैया दुहाउन तुम जैयो उतै, बछड़ा खों दैयो छोर,
भौजी हमारी वीरन हमारे तब बोलें, अनबोल रहे ने जाय।

अरी ननद बाई! मुझसे बोले बिना नहीं रहा जाता और तुम्हारे भाई तो बोलते ही नहीं हैं। ननद बोली-भाभी आप आज गाय दुहने जाना तथा बछड़े को छोड़ देना, तब मेरे भाई बोलेंगे।

मोपै रंगा न डारो सांवरिया, मैं तो ऊँसई अतर में डूबी लला,
केसर डार रसरंगा बनाई, हरे बाँस पिचकारी लला ....

भर पिचकारी मोरे सन्मुख मारी, भींज गई तन सारी लला,
जो सुन पाहें ससुरा हमारे, आउन न दैहें बखरियों लला ....
जो सुन पाहें जेठा हमारे, आउन न दैहें खरियों लला,
जो सुन पाहें सैयां हमारे, आउन न दैहें सिजरियों लला ....
मोपै रंग न डारो सांवरिया, मैं तो ऊँसई अतर में डूबी लला।।

हे कृष्ण! तुम आज मेरे ऊपर रंग न डालना, क्योंकि मैं तो वैसे ही तुम्हारे रंग में रंगी हूँ। केसर डालकर रंग बनाया गया, हरे बाँस की पिचकारी बनी है। कृष्ण ने रंग से भरी पिचकारी उस ब्रज बाला पर चला दी, वह कृष्ण के रंग से सराबोर हो गई। वह ब्रजबाला कहती है कि देखो अगर मेरे ससुर ने सुन लिया तो वे मुझे अपनी बाखर में नहीं आने देंगे, जेठ भी नहीं आने देंगे और अगर मेरे पति ने सुन लिया तो वे तो मुझे अपनी सेज पर ही नहीं आने देंगे। इसलिए मैं रंग से बचना चाह रही थी।

जा होरी खेलें राम लला, जा होरी खेलें ......
राम लला गोविन्द लला ....
केसर भर पिचकारी मारे, मानो भदईयाँ परे झला,
जा होरी खेलें राम लला ....

आज राजा राम होली खेल रहे हैं, वे सब पर केसर से भरी पिचकारी चलाते हैं, वह पिचकारी इतनी तेजी से चलती है जैसे कि भाद्रपक्ष में मेघ बरस रहे हों।

सिया खेलें राम संग फाग,
अवध में भरे कटोरा केसर के,
अरे हाँ रे अवध में कै मन केसर घोरी,
अरे कै मन उड़त गुलाल ....
नौ मन केसर घोरियो,
और दस मन उड़त गुलाल ....
कौना की भीजें सुरंग चुनरिया,
और कौना की पचरंग पाग ....
सीता की भीजें सुरंग चुनरिया,
और रामा की पचरंग पाग,
अवध में भरे कटोरा केसर के ....

आज सीता जी श्रीराम के साथ फाग खेलती हैं। अवध में आज होली विशेष रूप से मनाई जा रही है। केसर से भरे कटोरे रखे हुए हैं। अवध में कितने मन केसर घोला गया, कितने मन अबीर आया? नौ मन केसर तथा दस मन अबीर उड़ाया गया। आज सीता–राम होली के रंगों से सराबोर हो रहे हैं।

लेद

हठ पर गई गौरा नार महादेव, मड़िया बना देव बाग में ....
काहे की मड़िया बने, उर काहे के लागे किवार महादेव.....
सोने की मड़िया बने और रूपे के लागे किवार महादेव ......
मड़िया बना देव बाग में ....

आज तो गौरी मैया ने शिवजी के समक्ष हठ पकड़ ली। वे कहती हैं कि आप बाग में ही मड़िया बना दो। शिवजी को उनकी हठ माननी पड़ी। उन्होंने मड़िया बनवा दी। मड़िया कैसी बनी, उसमें कौन से किवाड़ लगे हैं? मड़िया स्वर्ण की बनी थी तथा उसमें चंदन के किवाड़ लगे थे।

सखयाऊ

भोजन करवे पावने बैठे हैं, फिर पर सें धनी चौहार,
परसें धनी चौहान भरो है जैसे मेला,
हितुवा नातेदार बैठ गव है चन्देला,
चाँदी के पटा धरे, जिनपै बैठे वीर,
सोने के गडुवा धरे पीवे खें कंचन नीर ....
पीवे खें कंचन नीर, डार दयी पतरी आंगे,
दार भात और कढ़ी, सान में परसन लांगे,
पापर खारे और बरा, रायता छौंक बघार,
शक्कर में दोना भरे, हलुवा है मशालेदार ....
हलुवा है मशालेदार, परस दये नरम सुहारी,
परम प्यारी लगे, कचौरी की छब न्यारी,
रसगुल्ला रस सें भरे, लगी करारी धार,
लड्डुवा परसे मगद के, फिर बरफी खोवादार,
बरफी खोवादार, जलेबी और सेव खारे,
दूध मलाई खूब, सबई के धरे अंगारे,
कलाकंद बादाम के, सूते लच्छेदार,
फैनी परसी चुरमुरी, फिर पावनाँ करें विचार ....
पावने करें विचार, नवात समरथ हम पाये,
किसम-किसम के खूब, आज भोजन बनवाये,
मालपुवा और दुधबरा, घी शक्कर में डार,
खीर बदामी असबनी, बड़ी मशालेदार ....
बड़ी मशालेदार, चकाचक माल खुवाबैं

सबखें एकई भांत, खड़े पृथ्वी परसावै,
बूढ़े अस्सी बरस के, बिन दांतन के वीर,
इच्छा भोजन हो रहे, आनंद भयो शरीर.....
आनंद भयो शरीर, बने भुजिया बेसन के,
जब परसें नमकीन और चटनी कैथन की,
बुंदी मंगोड़ा चटपटे, बड़े तरावटदार,
बेसन की बरफी बनी, घुइयाँ की साग तैयार ....
साग बनी तैयार, बनाकें धरें अंगारे,
रूच-रूच व्यंजन बने, स्वाद सब न्यारे-न्यारे,
सकल पदारथ सब कछु, मेवा और मिष्ठान,
हाँत जोर आज्ञा दयी, पृथ्वीराज चौहान।

दिल्लीपति महाराज पृथ्वीराज की पुत्री बेला का विवाह परमर्दिदेव चंदेल के पुत्र ब्रह्मानंद के साथ सम्पन्न हुआ। इस समय हरे मण्डप तले जेवनार हो रही है। महोबा के पाहुनों को पृथ्वीराज स्वयं भोजन परोसते हैं। इस समय एक मेला जैसा लगा हुआ है। अपने रिश्ते-नातेदारों के साथ चंदेले भी बैठे हैं। बैठने के लिए चाँदी के पटा रखे गये। पानी पीने के लिए सोने के लोटे रखवाये गये, फिर पत्तलें डाली गईं। जेवनार में कच्ची-पक्की पंगत का प्रचलन बुन्देलखण्ड में है। कच्ची पंगत में कढ़ी, चावल, रोटी, दाल, बरा, पापड़ आदि परोसे जाते हैं। जेवनार में पहले कच्ची पंगत के व्यंजन परोसे गये फिर पक्की पंगत के जिनमें हलुवा, सुहारी, कचौरी, रसगुल्ला, लड्डू, बरफी, जलेबी, सेव, दूध-मलाई, कलाकंद फैनी, मालपुवा, दुधवारा, खीर, सब्जियाँ, चटनी, अचार आदि व्यंजन परोसे गये। परसे जाने पर पृथ्वीराज ने जेवनार में उपस्थित मेहमानों को हाथ जोड़कर भोजन करने का निवेदन किया। इस तरह से जेवनार पूरी हुई।

छंदयाऊ

दोहा: *जबसे हरि मथुरा गये, तजकें हमसें हेत।*
तबसें देखों बदन में, मदन मरोरें देत।
टेक: *दै रओ वदन मरोरें भारी, आये न गिरधारी।*
छंद : *आये गिरधारी न आजी, उन बिन सेज डरी हैं खाली।*
बिरहा बान जेठ में पाली, मुझ पै आकें,
अपनो जौ दुख कीसें कावै, सबरी रातें जागत जावैं।
बैरन छिनभर नींद न आवै, गई मुरझाकें।
उड़ान: *मुरझानी अति माननी, तन की दशा बिसारी,*
अब लग आओ असाढ़ वा सजनी, उठी घटा नमकारी।
टेक: *सावन में मन भावन झेपैं, ऐसी बिछरन डारी।*
छंद: *मोरी जा है बारी वैस, जाये कैसें सहो कलेश,*

आपुन छाये सौत के देश न खबर लई।
भादों जल बरसे गंभीर, मोरे उठे करेजें पीर,
थर-थर काँपै मोर शरीर, सुध बुध भूल गई।
उड़ान: *सुध बुध भूली है सखी, बिरहा वान की मारी।*
क्वांर अवाई जान श्याम की, भौत निहारी।
टेक: *कार्तिक में सब ग्वाल बाल जुर, घर-घर नचत दिवारी।*
छंद: *घर-घर नाचै ब्रज के वासी, बाजें ढोल-ढाल चौरासी।*
मोरे मन में छाई उदासी, ना कछु भाये।
ऐसो लगत आगन की ऐरी, तन में हूल उठत है मेरी।
मैं हों बिना श्याम की चेरी, हरि ना आये,
उड़ान: *हरि न आये हैं सखी, कोटि जतन कर हारी।*
किये पठाऊँ को जाय द्वारके, पूष भओ अनजारी।
टेक: *जो कोऊ लाल माघ में हमखाँ, देतो लाय मिलारी।*
छंद: *अपनों दुख सुख उनसें काती, मोरे जी की तपन बुझाती।*
जब कऊ होरी फाग सुहारीती, फागुन मइयाँ,
करतों चित्र चैत में चैन, सजती सिंगारन सें ऐन।
लेती पूज पुतरिया बैन, सखी पुतरियाँ लारी।
वैसायक अक्ती खाँ पाकें लेती नाम लिवारी।
माधौ सिंह बनाकै गावै, बारामासी घ्यारी।

कृष्ण जबसे हमें छोड़कर मथुरा गये हैं, तब से हम विरहाग्नि में जल रहीं हैं। वे तो नहीं आये, लेकिन हम उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। उनके न आने का दु:ख मैं किससे कहूँ? कृष्ण की याद में मैं पूरी रात जागती रहती हूँ, नींद ही नहीं आती। ज्येष्ठ से आषाढ़ लग गया। असाढ़ में आसमान पर काली घटायें छा जाती हैं, घन गर्जना के साथ बरसते हैं उस समय जमीन से सौंधी खुशबू आती है। सावन में मेरे प्रिय से ऐसा विछोह हुआ कि मुझसे बिछड़ने का क्लेश नहीं सहा जाता।

मैं अभी अवयस्क हूँ, इस उम्र में मुझे यह कष्ट सहना पड़ रहा है, वे तो कुब्जा के साथ रहते हैं और मेरी खबर तक नहीं ली। भादों में घनघोर वर्षा होती है, उनके बिना मेरे हृदय में बड़ी पीड़ा होती है। मैं अपनी ही सुध भूल गई हूँ। क्वाँर के महीने में उनके आने की खबर आई थी। मैंने उनकी बहुत प्रतीक्षा की। कार्तिक में ग्वाल-बाल मिलकर नाचते-गाते हैं। वाद्य भी बजते हैं, लेकिन मेरा मन उदास है। अगहन में मेरे शरीर में हूक सी उठती रही। मैं तो श्याम विहीना हूँ। मैंने उनके आगमन के लिए अनगिनत जतन किये, लेकिन वे नहीं आये। अब पौष लगने वाला है, मैं किसको उन्हें लेने भेजूँ, जो मुझे अगहन में भी श्याम से मिला सके। अगर वे आ जाते हैं तो मैं अपना सुख-दुख उन्हें सुना देती, मेरा मन हल्का हो जाता। वे आ जाते तो फाल्गुन अच्छा हो

जाता। चैत्र में मन को चैन मिलता, मैं अपना समय अपने शृंगार में लगाती। उनके होने पर मैं पुतरियों का पूजन करती, वट के नीचे जाती। अक्ती अर्थात् वैशाख में उन्हें अपने पास बुला लेती। यह बारहमासी कवि माधवसिंह ने लिखी है।

अनरये

हंसा भये चालन हार, बहुर नहीं मिलवे के।
जम आये जमलोक सें, लयें कगदवा हाँत,
जिनके पन्ना हो गये, चलो हमारे साथ।
जम जोतें गाड़ी चलै, बरें अगन की झार।
कछु-कछु हंसा पार उतर गये, कछू हैं उतरनहार।
हंसा पिंगल देख के, उड़ आये परदेश,
डारे मोती नें चुनें, हीड़ें अपने देश।
उड़ हंसा खेतों गये, मूरख बिड़ारन जाँय।
अरे-अरे मूरख बावरे, हंस ने कौदों खाँय।

जीव के शरीर से निकलने के पश्चात् वह पुनः नहीं आता। यमराज के दूत उन्हें ही लेने आते हैं जिनकी अवधि पूर्ण हो चुकी हो। कहते हैं यमराज की गाड़ी चलती है उसके सामने अग्नि जलती रहती है। जीव को वैतरणी भी पार करनी होती है। कुछ पार उतर जाते हैं कुछ परेशान होते हैं। जीव तो अलग स्थान से यहाँ आता है उसे यहाँ कुछ भी अच्छा नहीं लगता उसे तो अपने परिजनों की याद आती है।

साखी

आँगन सूके सूकनो, वन सूके कचनार,
गोरी सूकें मायकें, हीन पुरूष की नार,
हमें सुख नैयाँ सासरे आवे के ....

आँगन में अनाज सूख रहा है, वन में ग्रीष्म की अधिकता से कचनार सूखती है। एक स्त्री जिसका अवयस्क पति है, वह अपने मैके में सूख रही होती है, क्योंकि उसे ससुराल आने का कोई सुख नहीं मिला।

नई गोरी के बालमा, नई होरी की झांक,
ऐसी होरी दागियो, तुरे कुले ना आवै आँच,
समार के यारी करो मो बालमा ....

किसी का नया गौना हुआ है, स्त्री भी नई नवेली है, पुरुष भी नया है। उसकी विवाह के पश्चात् ससुराल में पहली होली है। अरी नववधू! तुम यह होली ऐसी मनाना, जिससे कि हमारे कुल पर कोई आँच न आये।

प्रीतम प्रीत लगाय कें, बसन दूर जिन जाव,
बसो हमारी नागरी, दरशन दै-दै जाव,
नजर सें टारे टरो नई मोरे बालमा ......

हे प्रिय! मुझसे प्रेम करके अब दूर न जाना, तुम मेरे पास ही रहना, अर्थात् मुझे यहीं दर्शन देते रहना। हे प्रिय! तुम मेरी नजर से ओझल न होना।

मोय नें सुहावै ऐसी होरी पिया के बिना,
मोय नें सुहावै ऐसी होरी अरी होरी ....
जब तो बलम रन जूझ गये हैं, जबई सें आ गई बैरन होरी .....
अंगना में ठांड़े ससुरा समजावै, हँस खेलो बहू होरी ....
ढोलक बाजे रे मंजीरा बाजै, तारें बजें रे दस जोड़ी,
पिया के बिना मोय ने सुहावै ऐसी होरी .....

मेरे पति प्रवासी हैं, अत: मुझे होली का त्योहार नहीं भा रहा है। इसी समय मेरे पति युद्ध को गये हैं और अभी होली आ गई। उसके स्वसुर उसे समझाते हैं कि बहू तुम हँसी-खुशी के साथ होली का त्योहार मनाओ। होली में ढोलक, मंजीरा, ताशे बजते हैं। इतना शोरगुल हो रहा है लेकिन मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

चौकड़िया फाग

बखरी रैयत है भाड़े की, दई पिया प्यारे की।
कच्ची भीत उठी माटी की, छाई फूस चारे की।
बे वंदेज बड़ी बेबाड़ा, जेई में दस द्वारे की।
किवार किवरियाँ एकऊँ नईयाँ, बिना कुची तारे की।
ईसुर चाय निकारो जिदना, हमें कौन उबारे की।

यह शरीर रूपी बखरी तो किराये की है, जिसे हमें ईश्वर ने प्रदान किया है। यह तो बड़ी नाजुक है, जिसके दस-दस द्वार हैं। इसमें ताला भी नहीं लगता। ईसुरी कहते हैं कि उस जीवरूपी किरायेदार को विधाता जब चाहेगा, तब निकाल देगा।

अनंग की फाग

अजगर तन-तन-तन सरकत, सरकत-सरकत टबकत।
टरकत-टरकत-टरकत-टरकत, जन-जन-जन-जन हरकत।।
हरकत-हरकत चलत-चलत चल, हर-हर-हर घर तक डरकत।
हरकत-हरकत गं-गं गंधर, गं-गं गं जल तरसत।।

अजगर बड़ी सुस्ती से चलता है, वह तिल-तिल करके सरकता है। उसे चलते हुए लोग देखते हैं। सर्पों की समस्त प्रजातियों में अजगर की सबसे धीमी गति होती है।

रसिया

रसिया खों नार बनाओ री, रसिया खों,
काहू ने बैंदी, काहू ने केसर,
काहू ने चुरियाँ पैरायी रे, रसिया खों ....
काहू ने लहंगा, काहू ने सारी,
काहू ने अंगिया पैरायी री रसिया खों ....
काहू ने माहुर काहू ने मेहंदी,
काहू ने विरियाँ सचवायी री रसिया खां ....

आज हम सब सखियाँ मिलकर कान्हा से बदला लेंगे। समस्त ब्रजवालाओं ने कृष्ण को घेर लिया और उनका स्त्री वेश बना दिया। किसी ने साड़ी पहनाई, किसी ने लहंगा, किसी ने मेहंदी, किसी ने बेसर, चूड़ी, महावर तक से उन्हें सुसज्जित कर दिया। इस तरह से कृष्ण से ब्रजबालाओं ने बदला लिया।

सोउत ती मैं रंगमहल में मोहन भारी सैन,
लागी नींद उचट गई मोरी, फिर ने लगे दोई कैन
चुनरिया छोड़ो रसिया, छोड़ो रसिया
मोहे पनियाँ खों हो रयी अवेर ....
घर मोरो दूर गगर सिर भारी, मैई अकेली पनहारी,
सास हमारी बड़ी कठन है, सैंयां दैहें गारी ....
सारे ब्रज में धूम है, गलियन-गलियन रंग,
भींज न जाये मोरी चुनरिया, बरसत मोपै रंग ....
जो मैं ऐसो जानती, अंगना लगाऊती खजूर,
तापै चढ़कें देखती रे, नीरे बसो कै दुर ....
आज अकेली सांवरे, मोरे जिया घबराय,
बाज रहीं हाँतों की चुरियाँ, बाजूबंद खुल-खुल जाँय,
चुनरिया छोड़ो रसिया ....

मैं तो अपने महल में बड़े प्रेम से सो रही थी कि कृष्ण ने बाँसुरी बजाई, उनकी मुरली की आवाज से मेरी नींद खुल गई और अब आँख नहीं लगती।

हे कान्हा! मेरी चूनर छोड़ो मुझे पानी भरने जाना है, देर हो जायेगी तो बड़ा गजब होगा। मेरा घर यहाँ से काफी दूर है, फिर सिर पर भारी गगरी रखी है तथा मैं अकेली ही पनिहारी हूँ। कान्हा

मेरी सास बड़ी कठोर है और मेरा पति सुनेगा तो वह मुझे गालियाँ देगा। पूरे ब्रज में होली की धूम है, गलियों में रंग बरस रहा है अगर रंग में मेरी चूनर भीगी तो क्या होगा, क्योंकि तुम्हारे साथी रंग बरसा रहे हैं। अगर मैं ऐसा जानती तो अपने आँगन में खजूर लगा लेती, उसपर चढ़कर देख लेती कि तुम कहाँ हो, पास में हो अथवा दूर हो।

हे कन्हैया! आज मैं अकेली हूँ मेरा दिल धड़क रहा है, मेरे हाथों की चूड़ियाँ आवाज करती हैं तथा मेरी बाँह के बाजूबंद खुल-खुल जा रहे हैं।

लेद

जिन जईयो भरन कोऊ नीर कुंवर दोई,
ठांड़े सरजू तीर पै ....
अरी हाँ री सखी री, एक हाँत लिये हैं पिचकारी,
और झोरन भरें अबीर ....

आज कोई पानी भरने न जाना, क्योंकि आज होली का त्योहार है। इसलिए महाराज दशरथ के दोनों कुमार श्रीराम और लक्ष्मण सुबह से ही होली खेल रहे हैं। वे सरयू किनारे खड़े हैं। एक अपने हाथ में रंग से भरी पिचकारी लिये हैं, दूसरे अबीर लेकर हर आने-जाने वालों को रंग देते हैं।

ढप

हरे पाट के फूंदना, मनमोहना
कहाँ धराऊँ तोय, पिया अड़ घोलना,
गंगा जी की रेत में लम्बे लगे बजार,
पिया अड़ घोलना ....
इक गोरी इक साँबरी, दोउ बजारै जाँय,
कौना बिसा लये कजरा, कौना बिसा लये पान,
गौरी बिसा लये काजरा, राधे बिसा लये पान,
गोरी ढुर गये काजरा, राधे के खा गये पान,
पिया अड़ घोलना ....

ये हरे पाट के फुँदने हैं, उन्हें कहाँ रखवा दें? गंगा तट पर विशाल बाजार लगा है, दो बालायें बाजार गईं हैं। किसने क्या-क्या खरीदा? एक ने काजल तथा दूसरी ने पान खरीदे थे।

जले होरी आज जले चाहे काल,
मदन मोहन मोसें आन मिलो ....
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया,
तड़फ-तड़फ सारी रैन करें ....

अन्न बिना जैसे प्राणी तड़फै,
जल बिन जैसे मीना ....
खेलूँ न होरी तुम बिन,
लेलो कसम हमारी ....

हे मनमोहन! होली का त्योहार लग रहा है, वह कभी भी जले आज या कल, लेकिन तुम मुझे आकर मिलो। तुम्हारे बिना मुझे बड़ा सूनापन लगता है। मैं तुम्हारे लिए तड़पती रहती हूँ। अगर तुम नहीं आये तो मैं यह होली भी नहीं खेलूँगी।

लाल

दोई नैनों के मारे हमारे, जोगी भये घरवारे लाल,
अंग भबूत बगल मृगछाला, शीश जटा लपटाने ....
हाँत लयों कुड़ी बगल लयें सौटा, घर-घर अलख जगावै, हमारे ....

नयन बाण बड़े तीक्ष्ण होते हैं, मेरे पति को किसी कामिनी के नयन बाण लगे तो वे घरबार छोड़कर जोगी हो गये। उन्होंने अपने शरीर में भभूत लगा ली, बगल में मृगछाला तथा सिर में जटा-जूट लगा लिये। वे अपने हाथ में सिंगी-सोटा लेकर अलख जगाने लगे हैं।

झूला

ढुढवा लईयो राजा अमान, हमारी खेलत बैंदी गिर गई,
अरे हाँ हमारी ....
सखी री कौना सहर की जा बिंदिया,
भला कहना की धरी है खार, हमारी ....
सखी री झाँसी सहर की जा बिंदिया,
भलाँ पन्ना की धरी है खार, हमारी ....

हे महाराज अमानसिंह आप मेरी बेंदी जो कि खेलते समय कहीं खो गई है, उसे ढुँढवा दें। वह बेंदी किस शहर में बनी थी, उसमें कहाँ खार रखवायी थी? झाँसी से बेंदी बनवाई गई तथा पन्ना से उसमें खार लगवाई थी।

बसंत

अब रित आई बसंत बहारन, पान फूल पतझारन।
तपसी कुटी कंदरन माहीं, गई बैराग बिगारन।
हारन हद पहारन अगहन, धाय धवल जल धारन।
चाहत हती प्रीत प्यारे की, हा-हा करत हजारन।

बसंत की बहार वन, पर्वत, खेत-खलिहान, नदी की धाराओं और धवल धामों में सर्वत्र

फैल गई। पहाड़ की गुफाओं में छिपे हुए साधु भी तो उसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे। वह बहार उनके वैराग्य को बिगाड़ने के लिए वहाँ भी जा पहुँची।

झगड़े की फाग

टेक: *घर नईयाँ राज अमान अबे परनों में होरी,*
को खेले घर नईयाँ ....
राजा चले शिकार खों, संग सिपहिरा लोग,
हंसापुर की डाँग में, हाँका दओ लगाय। अबे .... ।। 1 ।।
हाँकत–हाँकत दुफर भये, लौट गई छकवार,
हंसापुर की डाँग में, राजा खो लगी प्यास। अबे .... ।। 2 ।।
कौनऊ ढूंढे ताल तलैया, कौनऊ तला की पार,
हंसापुर की डाँक में, हिन्दु ने खुदा दये ताल। अबे .... ।। 3 ।।
इड़ियाँ बनी छिंड़िया बनी, तला बनो गुलजार,
राजा घुसे पानी पियन, दुश्मन ने मार दई साँग। अबे .... ।। 4 ।।

महाराजा अमानसिंह घर पर नहीं हैं, अब बिना राजा के उनके राज्य में होली कौन खेलेगा? उनके बिना सब सूना–सूना लगता है।

एक समय राजा शिकार खेलने गये, साथ में सैनिक भी गये। हंसापुर नामक जंगल में शिकार करने हेतु हाँका लगवाया गया। लेकिन सारा दिन बीत गया। शिकार नहीं मिला। राजा को बड़े जोर की प्यास लगी। सारे सैनिक उस पहाड़ में पानी की तलाश में कुंआ, बावड़ी, तालाब आदि देखने लगे। उसी पहाड़ में हिन्दुओं ने तालाब खुदवाया था, वह तालाब बड़ा सुन्दर था। चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी थीं। राजा जैसे ही पानी पीने सीढ़ियों से उतरने लगे तो किसी दुश्मन ने उन पर भाले का वार कर दिया। राजा को धोखे से मार डाला था, अब उनके बिना उनका राज्य सूना हो गया। होली का त्योहार है लेकिन समस्त राज्य में शोक व्याप्त है, कौन मनायेगा ऐसे में त्योहार को?

ये सखी मारे गये हमारे बालमा, फिर हो गई आस निराश। सखी मारे गये ....
हमारे बालमा, हो गई आस निराश कहे रो–रो अलबेली,
कौरव बैरी भये, कहूँ क्या बात सहेली, मनकी मन में रे गई,
भई ने पूरी आस बालापन बिरधा गये, न कौनें भोग विलास। सखी मारे गये ....
न कौने भोग विलास, उमर हमारी बारी भोरी टूटे ने दूद के दाँत।
भरी ने गोद हमारी, हातों लालन एक तो, करती ओंकी आस।
जीवे से मरवों भलो अब हो गव सत्यानाश। सखी मारे गये ....
हो गव सत्यानाश उत्तरा रूदन मचावे, अभिमन्यु की नार।
सती होवे खो जावे भीम नकुल सहदेव जी कहें युधिष्ठर खास।
धीरज धरो ये बहु करो महल में वास, सखी मारे गये ....

करो महल में वास करता धरता तीन हैं, सत राखो विश्वास।
मनसा पूरण हो गयी खास वेद की बात, सखी मारे गये ....

वीर अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा का वृतांत उक्त फाग में आया है। उत्तरा अपने पति जिसे कौरवों ने चक्रव्यूह में धोखे से मारा था, उन अभिमन्यु के मरणोपरान्त उत्तरा अपनी सखी से कहती है कि देखो सखी मेरे पतिदेव को धोखे से मार दिया, अब इस संसार में मैं जीकर क्या करूँगी? उनके बाद तो मेरी समस्त आशायें निराशा में बदल गयी हैं। उत्तरा रो-रोकर कह रही है कि मेरे परिजन कौरव ही मेरे बैरी हो गये। क्या कहूँ, मेरे मन की आशा मन में ही रह गई। मेरा जन्म ही व्यर्थ गया। मेरी व्यथा तो देखो कि मैं बाल विधवा हो गई। मैं संसार के सुखों का उपभोग भी नहीं कर पाया और कर्मगति मुझे कहाँ से कहाँ ले आई? मेरी उम्र तो अभी बहुत थोड़ी ही है। अरे! मेरे अभी दूध के दाँत भी नहीं टूटे, मेरी गोदी भी नहीं भरी। मैं किसकी आशा करूँ। काश! मेरा एक पुत्र होता तो मैं उसके सहारे अपना जीवन जी लेती, लेकिन ऐसे जीने से क्या फायदा? इससे तो मर जाना ही अच्छा है। मेरा तो सर्वस्व ही नष्ट हो गया।

उत्तरा यह सब स्मरण करके रो रही है, वह अपने पति के साथ सती होना चाहती है। उसके पाँचों ससुर उसे सांत्वना देते हैं और कहते हैं - बहू! प्रभु की गति को कौन जान पाया है? तू धैर्य रखो, इस सृष्टि का कर्त्ता तो कोई और ही है, यही सत्य है। उस प्रभु पर भरोसा रखो। उनकी कृपा से सब ठीक होगा। हमारे वेदों में वर्णित है कि सृष्टि के रचयिता के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

साभार

1. लोक गीतों का तुलानात्मक अध्ययन, डॉ. श्रीमति विनोद तिवारी पृ. 60
2. कविता में ऋतुएँ, आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, चौमासा अंक 73 पृ. 06
3. लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 62
4. वही पृ. 78
5. प्रकृति और काव्य, डॉ. रघुवंश, पृ. 113
6. गढ़वाली लोकगीत-गोविन्द चातक-विद्यार्थी प्रकाशन दिल्ली- 51, पृ. 116
7. हरयाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. गुणपाल सिंह, पृ. 183
8. छत्तीसगढ़ी एवं बुन्देली गीतों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. दुर्गा पाठक, पृ. 247
9. बुन्देली बसंत अंक 6 पृ. 86, श्री भैयालाल व्यास
10. बुन्देली लोकगीत, शिवसहाय चतुर्वेदी
11. बुन्देली लोक काव्य, भाग-4 डॉ. बलभद्र तिवारी

बुन्देली ऋतु गीत

एन.आर. अहिरवार

मानव जीवन एवं उसके क्रिया कलाप के अन्तर्गत ऋतुओं का विशेष महत्त्व है। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ ऋतुएँ भी समान काल से होती हैं। कृषि कार्य एवं दैनिक क्रिया कलाप रीति-रिवाज आदि ऋतुओं के अनुसार विभाजित हैं। ऋतुओं के अन्तर्गत वसन्त में होली सम्बन्धी गीत, वर्षा ऋतु के पावस गीत, देवी गीत, भजन, कार्तिक गीत, दीवारी कटाई आदि के समय पिलवारी गीत आदि अधिकतर उपलब्ध हैं। ऋतु सम्बन्धी गीतों में जनमानस पूर्ण रूपेण तरंगित दिखाई पड़ता है। विभिन्न ऋतुओं में जन-मन के मनोरंजन के लिये गीत गाने की प्रथा बहुत दिनों से चली आ रही है। प्रकृति के विभिन्न परिवर्तित रूप ऋतुओं के नाम से अभिहित हैं तथा इन्हीं विभिन्न रूपों का अक्षुण्य प्रभाव एवं रंग रंजित चित्र ऋतु गीतों की अमूल्य निधि है। विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न गीत गाने का प्रचलन ग्रामीण समाज में है। ऋतुओं के अनुसार अनेक प्रकार के व्रत-त्यौहारों का आयोजन होता है। ग्रामीण समाज में इन व्रत-त्योहारों का अत्याधिक महत्त्व होता है। इन्हीं त्योहारों के समय ग्रामीण नारियाँ अपने कोकिल कण्ठों से अत्यन्त मधुर गीत गाती हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत में ऋतुओं के साथ विभिन्न गीत गाने का प्रचलन है। इन्हीं गीतों को ऋतु गीत कहा जाता है।

बुन्देलखण्ड में ऋतुओं के अनुसार पावस में झूला, सावन गीत, रसिया, शरद में कार्तिक स्नान के गीत, संक्रान्ति के समय लमटेरा बम्बुलिया गीत, फागुन में फाग बुन्देलखण्ड में ज्यादा प्रचलित है। बुन्देलखण्ड के फाग गीतों का स्थान साहित्य कला समाज एवं संस्कृति घटना एवं वातावरण, भाव एवं विचार सभी की दृष्टि से बहुत ऊँचा स्थान है। ईसुरी की फागें भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। राधाकृष्ण के प्रेम को लेकर जनपदीय कवियों ने भी असंख्य ऋतु

गीतों की रचना की है। लोक साहित्य के अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करते समय ऋतु गीतों को पृथक करके नहीं रखा जा सकता है। क्योंकि ऋतु गीत लोक साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग है। जनमानस के उन्मुक्त स्पन्दन पीड़ा, करुणा आदि भावनाओं के साथ-साथ समाज, संस्कृति एवं लोकजीवन की स्पष्ट अभिव्यक्ति हेतु गीतों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

प्रमुख रूप से ऋतु गीतों का महत्त्व सामाजिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक, भावनात्मक एवं प्रकृति दर्शन के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। पारस्परिक जीवन, मानव मन का सुख-दुख, मान-अपमान आदि के दर्शन की दृष्टि से ऋतु गीत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। लोकविश्वास, लोकरीति, लोकमत आदि सांस्कृतिक मूल तत्त्वों से ऋतु गीत सम्पन्न हैं।

ऋतु गीतों में प्रकृति का प्रभाव विभिन्न रूप से देखा जा सकता है। आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण, मनोभावों का चित्रण एवं आध्यात्मिक भावना के चित्र ऋतु गीतों के प्रकृति दर्शन में स्पष्ट हैं। मौखिक होने के कारण ये शिक्षा एवं सभ्यता से कोसों दूर हैं, किन्तु ग्रामीण जनता की कवित्व प्रतिभा इन गीतों में देखी जा सकती है। जातीय एवं सामूहिक भावनाएँ इन गीतों में स्पष्ट लक्षित होती हैं। कजली, दादरे, फाग, होली आदि सभी सामूहिक गीत हैं।

रसों की दृष्टि से शृँगार, करुणा, वात्सल्य आदि का समावेश इन गीतों में है। बुन्देलखण्ड की वर्षा ऋतु सर्वोत्तम मानी जाती है। सावन, भादों महीने उसके यौवन और यौवन की पराकाष्ठा के दिन माने जाते हैं, जो भयंकर होते हुए भी बहुत अच्छे लगते हैं। इन दिनों बुन्देली नारियाँ प्रातः चक्की पीसते समय, झूला झूलते समय, राह चलते समय, निदाई करते समय, पावस गीतों को अपने मधुर कण्ठों के माध्यम से गाती हैं। अतः एक सावन गीत से बुन्देली लोकगीतों की शुरूआत की जा रही है, जो इस प्रकार है-

कौना खों दई बावुल महल अटारी, कौना खों परदेश, मोरे लाल।
बीरन खों दई बावुल महल अटारी, वेटी खों माया परदेश, मोरे लाल।
काय खों मोरी माता जनम दऐ ते, काहे खों करी है पराई, मोरे लाल।
नाव करन खों बेटी जनम दऐ ते, सुक्खन खों करी ती पराई, मोरे लाल।
सुख तौ माता मोय सपने में नइयां, दुख सजोवर होय, मोरे लाल।
कच्ची ईंट बावुल देरी ने धरियो, वेटी न दियो परदेश, मोरे लाल।
माता कहें बेटी रोजई अइयो, बावुल कहें दोई जून, मोरे लाल।
बीरन कहें वैना अवसर अइयो, भौजी कहें कौन काम, मोरे लाल।
माया के रोए सें नदिया बहत हैं, बावुल के रोए बेला ताल, मोरे लाल।
बीरन के रोए से छाती फटत है, भौजी को जिया कठोर, मोरे लाल।

जब एक लड़की सावन के समय अपने मायके आती है, तब अधिकार एवं स्नेह की मीमांसा करती हुई अत्यधिक कारुणिक स्वर में कहती है- भाई और बहिन तो एक माता के गर्भ

से जन्में फिर यह भेद क्यों? सारा मकान एवं धन-दौलत भाई के लिए एवं मेरे लिए परदेस, ऐसा भेदभाव क्यों? हे माता! तुमने मुझे जन्म ही क्यों दिया, जब परदेस ही देना था? माता जवाब देती है कि- बेटी! धर्म के लिये तुझे पैदा किया था और सुख भोगने के लिये विवाह किया। लेकिन बेटी अत्यन्त दुखित होकर कहती है कि- 'मुझे सुख तो बिल्कुल ही नहीं है, केवल दु:ख ही दु:ख है।'

बाद में पिता से कहती है कि- पिताजी! कच्ची ईंट का घर कभी मत बनाना एवं बेटी को दूर मत ब्याहना। नारी माता-पिता भाई-बहिन, भाभी के प्रति अपार स्नेह रखते हुए भी बरबस स्नेह सम्बन्ध स्थापित करती है। उसे जीवन भर अपरिचित व्यक्तियों से सम्बन्ध बनाये रखना पड़ता है। इस पर भी माता चाहती है कि बेटी मेरे घर प्रतिदिन आए। पिता का कथन है कि बेटी सुबह-शाम दोनों समय आना। भाई कहता है कि कुछ उत्सव हो तब आना, किन्तु भाभी कहती है कि कोई काम नहीं है। भाभी दूसरे परिवार की स्त्री होती है। इसलिये यदि वह कठोर है तो अतिशयोक्ति नहीं है।

सावन गीत

झूला झूलें राम सिया संग चोटें करें।
नवआगर आगर सुन्दर वर,
प्यारी वदन निहार उमंग आनन्द भरें।
समझ प्रेम मुस्क्यांय,
घूंघट की वा ओट करें।
लख-लख भाव अलीगन बिलमत,
चतुराई बल जाय, हिरदे में अभिलाष करें।
आली वृषभान कुंवर मन भावरा,
झोंकन परसत जात मदन रस बेल करें।

रामचन्द्रजी एवं माता जानकी झूला झूल रहे हैं एवं एक दूसरे की तरफ निहार रहे हैं। एक दूसरे का वदन निहारते हुए मन में भारी आनन्द भर जाता है। सीताजी श्रीराम की प्रेम मुस्कान को समझकर अपने घूँघट से नजरें छिपा लेती हैं। चतुराई पर बार-बार बलखाते हुए अपने हृदय में मिलने की इच्छा करते हैं। कहती है कि- हे सखी! मन रूपी भँवर झोंका लेते हुए बेल रूपी मन का रस ले रहा है।

सैरा गीत

सावन महीना नीकों लगे, गेवड़े भई हरियाल।
सावन में भुजरियाँ बै दियो, भादौं दियो सिराय।
ऐसो है कोऊ धरमी, बैनन को ल्यावे लुवाय।
आसो के सावन घर के करों, आगे के दैहें हवाल।

सोने की मादें दूध भरी, सो भुजरिया लेऊं सिराय।
कै जैहें तला की पार पै, कै जैहें भुजरिया सूख।
धरी भुजरिया मलक चौक में, वीरा धरी तुलाय।
कैसी बहिन हेटें परी, वर वर लेत प्रान।
आसों के सावन जूझ के, आगे के दैहे कराय।

सावन के महीने में जब रिमझिम बारिश होती है, तब बहुत सुहावना लगने लगता है। चारों तरफ हरियाली छा जाती है। सावन में कजलियाँ बोई जाती हैं एवं भादों में विसर्जन किया जाता है। इसी समय कोई धरमी भाई हो, तो अपनी बहिन को लिवाकर आये। लेकिन कहते हैं कि इस वर्ष का सावन तो हम घर पर ही मनायेंगे आगे जो भी हो देखा जायेगा। सोने के कटोरे में दूध भरा हुआ है, इसलिये भुजरिया सिराना तो निश्चित है या तो कजरियाँ तालाब में सिरायी जायेंगी या फिर सूख जायेंगी। अन्य स्थानों पर कजरियों का विसर्जन नहीं होगा। मलक चौक में भुजरिया रखी गयी। भाई कहता है कि- बहिन! तू क्यों हठ करते हुए मेरे प्राण लेना चाहती है?' लेकिन बहिन कहती है कि- 'भाई! इस वर्ष का सावन तो जूझने का है, आगे जैसा आप कहेंगे सो होगा।'

लगी सुख सावन की झिरियाँ।
दादुल बोले पपीहा बोले, बोल रहे वगिया। लगी.......
रिमझिम रिमझिम मेहा वरसे, कीच मचो गलियाँ। लगी......
गोरी वइयाँ गुदना गुदाऐं, हरे काँच चुरियाँ। लगी........
माथे बीच ख्वारी सोहे, नथ लटके मुतियाँ। लगी........
सावन में पिया आवन कै गए, कौल करे किरियाँ। लगी........
जिय विश्वासी खबर न लीन्ही, सोच करें सखियाँ। लगी......

सावन महीने में बरसने वाला पानी मन को अति आनन्ददायक लगता है, क्योंकि चारों तरफ हरियाली छायी रहती है। जगह-जगह मेंढक की आवाज तथा बाग-बगीचों में पपीहा की आवाज अति सुन्दर लगने लगती है रिमझिम-रिमझिम पानी बरसता है, चारों तरफ कीचड़ मच जाता है। इसी समय महिलाएँ अपनी-अपनी बाँहों में गोदना गुदाती हैं। हर एक रंग की चूड़ियाँ पहिनती हैं, माथे में बिन्दी एवं मोतियों से सजी हुई नथनी पहनती हैं। एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि- सखी! मेरे पिया श्रीकृष्ण जी इसी महीने में आने की कसम खाकर गये थे, लेकिन हमसे विश्वासघात करते हुए आज तक खबर नहीं ली है। सभी सखियाँ विचार करने लगती हैं।

चार चपेटा ले लेव माई सावन आए।
सावन के दिन चार री माई सावन आए।
एक चना दो देवली माई सावन आए।

विमला की गुइयां दूर री माई सावन आए।
टौरी वारी जिज्जी दूर री माई सावन आए।
वीरन लिवौवा जांय री माई सावन आए।
आगें नउवा पीछू बमना, बीच बीरन की पालकी।
माई सावन आए।

बेटी अपनी माँ से कहती है कि– हे माँ! सावन का महीना आ गया है। मुझे खेलने के लिये चार चपेटा जरूर ले देना। बेटी माँ से बार–बार कहती है कि– माँ! चार दिन का सावन है, यही महीना तो चपेटा खेलने का है। यदि यह निकल जायेगा, तो मैं चपेटा नहीं खेल पाऊँगी। विमला कहती है कि मेरी सहेली तो दूर है, इसलिये उससे मेरी मुलाकात ही नहीं हो पायेगी। टौरी गाँव ब्याही गयी जिज्जी भी दूर है और सावन आ गया है, उससे मिलने के लिये मेरा मन लालायित हो रहा है। उसे लिवाने के लिये भाई तैयार होता है। आगे–आगे नाई एवं पीछे–पीछे पंडितजी, बीच में भाई की पालकी बहिन को लिवाने के लिये जा रही है।

कोसन बिटिया दूर री माई सावन आए।
गीता की गुइयां दूर री माई सावन आए।
को को लिवौआ जांय री माई सावन आए।
सुशीला की बिटिया दूर री माई सावन आए।
आगे नऊवा पीछू बमना बीच बीरन की पालकी।
माई सावन आए।

बेटी की शादी कई मीलों दूर हुई है। सावन का महीना आ गया है। गीता की सहेली भी काफी दूर ब्याही है। लिवाने के लिये कौन–कौन जायेंगे। सावन काफी पास आ गया है। सुशीला की लड़की काफी दूर है। आगे नाई एवं पीछे ब्राह्मण तथा बीच में भाई की पालकी बहिन को लेने जा रही है। सहेली काफी प्रसन्न हैं कि अब सावन का त्योहार अच्छे तरीके से मनेगा। सावन एवं भादों के महीनों में ज्वार, धान एवं सोयाबीन की निदाई होती है। पानी भी खूब झमा–झम बरसता रहता है। ग्रामीण महिलाएँ निदाई करने खेतों में जाती हैं। निदाई करते समय गीत के माध्यम से अपना मनोरंजन करती रहती हैं, जिससे उन्हें काम की थकान परेशान नहीं करती है। खासकर बुन्देलखण्ड में निदाई गीत निदाई के समय ज्यादा सुनने को मिलते हैं। तो लीजिये यह निदाई गीत आपके समक्ष है।

निदाई गीत

अरी ऐ बाँधें कछौटौ रे फिरत ती वन में यार,
भले मिल गए सिपइरा हो।
अरे हती ती मन में यार भले मिल गए सिपइरा हो।

शूर्पनखां अपने भाई रावण से बदला चुकाने के लिये वन में घूम रही है, क्योंकि उसे मालूम हो गया था कि भगवान श्रीराम वनवास को आए हैं और पंचवटी में ठहरे हुए हैं। इसलिये वह कहती है कि- 'हे प्रभु! मैं आपको ही ढूँढ़ रही थी। यह मेरे मन की इच्छा भी थी। यह अच्छा हुआ कि मुझे आपके दर्शन हो गए।'

अरी ऐ मार-मार लठिया रे चढ़ा दई घटिया यार,
ऊपर घटिया मचल गयी हो।
अरे मतारी बिटिया ऊपर घटिया मचल गई हो।

आपस में महिलाएँ निदाई करती जाती हैं एक दूसरे से हँसी-मजाक के तौर पर गीत भी गाती जाती हैं कि जबरन घटिया चढ़ा दी। लेकिन माँ-बेटी ऊपर घटिया पर जाकर मचल जाती हैं।

अरी ऐ बरसो तो पानी रे चुचानी उरियां यार
वै न जइयो रैजाले हो।
अरे घरै हो भग जाव वै न जइयो रैजाले हो।

निदाई करने वालों में महिलाओं के साथ एक पुरुष भी निदाई करता है, जो उनका देवर लगता है मजाक के तौर पर गाना गाकर उससे मजाक करती हैं। पानी खूब बरसता है, वह पुरुष खेत पर मकान की उरिया के नीचे खड़ा हो जाता है तो उससे वे कहती हैं कि अरे रैजाले! पानी खूब बरस रहा है, तुम कहीं बह न जाना, इसलिये घर चले जाओ।

सैरा

रिमझिम रिमझिम अरे मेहा गिरे, अंगना मच गयी कीच।
पनियां खां निकरी रे मटकी भरें, गोरी फंस गयी कीच के बीच।
साहुन सुहावनी अरे मुरली लगे, भादों सुहावनी मोर।
तिरिया सुहावनी जवहयी लगे, ललना झूले पोंर के दोर।
कजरा के कांटे अरे सालन लगे, बेंदी सोत को भाल।
आरन के नेहा जवहयी लगे, मोय सालत है अध रात।

सावन मास में खूब पानी बरस रहा है। चारों तरफ कीचड़ मचा हुआ है। एक पनिहारी घड़ा लेकर पानी भरने जाती है और कीचड़ में फँस जाती है। सावन में बाँसुरी अधिक सुहावनी लगती है। भादों मास में मोर की आवाज सुहावनी लगती है। नारी उस वक्त सुहावनी लगती है जब उसका लाल पोर के दरवाजे पर पालना में झूल रहा होता है। काजर में काँटा एवं सौत के माथे पर बिन्दी तथा प्रेमी की प्रीति आधी रात पर भी ध्यान आने पर खटकने लगती है। क्वांर मास में नवदुर्गा के समय बुन्देलखण्ड में जवारा रखने की परम्परा प्रचलित है। नौ दिन तक लोग जवारा रखते हैं, देवी गीत या देवी के भजन गाते हैं। नौ दिन तक देवी जी की खूब पूजा मान्यता

होती है। काली जी की झाँकियाँ भी सजाई जाती हैं। इस प्रकार इन नौ दिनों के नवदुर्गा या रामनवमी के नाम से लोग बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाते हैं। पंचमी एवं अष्टमी को दुर्गाजी की आरती होती है। नवमी को जवारा निकालकर बड़े उत्साह के साथ देवी गीत गाते हुए स्त्री–पुरुष इकट्ठे होते हैं। अन्त में शाम को तालाब या नदी में जवारों का विसर्जन कर देते हैं।

देवी भगत

कौना रची पृथ्वी रे दुनियां संसार,
कौना रचे पान्डवा, उनई के दरबार,
राजा जगत के मामले हो मां,
विरमा रची पृथ्वी रे दुनियां संसार,
माई रचे पान्डवा उनई के दरबार,
राजा जगत के मामले हो मां।
कांहे खां रची पृथ्वी रे दुनियां संसार,
काहे खां रचे पान्डवा अपने दरबार,
राजा जगत के मामले हो मां।
रैवे खां रची पृथ्वी रे दुनियां संसार,
रन खां रचे पन्डवा, अपने दरबार,
राजा जगत के मामले हो मां।
कौना लगाए आम नीम महुवा गुलदाख,
वेला चमेली रुच केवरो चम्पा की डार,
पाँच पेड़ नरियल के कली भौरा वास ले जाय,
राजा जगत के मामले हो मां।
मलिया लगाए आम नीम महुवा गुलदाख,
वेला चमेली रुच केवरो चम्पा की डार,
पाँच पेड़ नरियल के कली भौरा वांस दुनिया संसार,
राजा जगत के मामले हो मां।
कौना सागर खुदाए को पीवे पान, को करै स्नान,
कौना लगाए पेड़ नरियल के कौना वास ले जाय,
राजा जगत मामले हो मां।
जगदेव सागर खुदाए गऊऐं पियें पान,
बामन स्नान वेई लगाए पेड़ नारियल के,
भौरा वास ले जाय,
राजा जगत के मामले हो मां।
चुगली करी चुगल ने रे अकबर दरबार,

जगदेव बड़ो मुंआसी दरबारे न आय,
राजा जगत के मामले हो मां।
एक लख सजे कौरवा रे दो लख मुगल पठान,
फौजे सजी मुगल की दिल्ली सुल्तान,
राजा जगत के मामले हो मां।
उतरत आवे कौरवा रे संगे लयें पठान,
फौजें आयी मुगल की नदी सतलज के घाट,
राजा जगत के मामले हो मां।
ढीली वागें घुड़लन की हथियन पै निशान
कालगी सोहे मरदखां और कुसमानी पाग,
राजा जगत के मामले हो मां।
काटन लगे आम नीम महुवा गुलदाख,
वेला चमेली रुच केवरो दरमा और दाख,
काटे रुख नरियल के, पूरन लगे तलैयां, प्रजा बेहाल,
राजा जगत के मामले हो मां।
चिठियां लिखी अकबर ने रे जगदेव पहुंचाय
बेटी ब्याहौ आपनी नातर मानों हार, राजा जगत के मामले हो मां।
चिठियां पौंची सभा में रे जगदेव दरबार,
पढ़तन आयी मूरछा सब हो गए बेहाल,
राजा जगत के मामले हो मां।
माता बोले जगत की रे मोरो जगत अकेलो,
होती बाँझ, धरती फटै बजर की जामें जांव समांय।
राजा जगत के मामले हो मां।
बेटी बोले जगत की रे सुन बाबुल बात,
हमें पठै दो मुगलन कें तुम भुगतौ रजपाट।
राजा जगत के मामले हो मां।
हीन बचन जिन बोलो बारी कन्या रे,
मोरी क्षत्री धरम नशाय, तुम ब्याहों रजपूतै,
हम लें कन्यादान।
राजा जगत के मामले हो मां।
एक लख मारों कौरवा रे दो लख मुगल पठान,
फौजे मारो मुगल की दिल्ली सुल्तान।
राजा जगत के मामले हो मां।
गढ़ से उतरे राजा रे गडुवा लये हाथ,

पूजन चले कंकाली, दहिने लयें थार।
राजा जगत के मामले हो मां।
संगे आयी रनियां रे आरत लयें हाथ,
पूजन चली भुमानी जगदेव की नार।
राजा जगत के मामले हो मां।
मड़िया पौचे जगदेव रे पूजन करी चार,
विनती करी माई सें अव मोम लेव उवार।
राजा जगत के मामले हो मां।
गढ़ से उतरीं रनिया रे मोती लये थार,
गड्डुवा में गंगाजल, कंडा में आग।
राजा जगत के मामले हो मां।
पूजन चली भुमानी रे देवी दरबार,
कै तो मिड़ोइया मेड़े, लयें कै देशे वगर जै रार।
राजा जगत के मामले हो मां।
हाथ जोड़ विनती करें दुर्गा होव सहाय,
तनक काम जगदेव पै पर गव आई तोरे द्वार।
राजा जगत के मामले हो मां।
काहे को तोरो पख वदिया रे पख वदिया,
काहे कौ झांझ काहे कौ रंग चुनरौ काहे कौ द्वार।
राजा जगत के मामले हो मां।
रूपै कौ तोरो पख वदिया रे पख वदिया,
सोने कौ झांझ हरे कुसम रंग चुनरौ फूलन कौ हार।
राजा जगत के मामले हो मां।
कौ ल्यावै तोरौ पखवदिया रे पख वदिया,
कौ ल्यावे झांझ कौ ल्यावै रंग चुनरौ कौ ल्यावे हार।
राजा जगत के मामले हो मां।
वढ़हई को ल्यावे पखवदिया रे पख वदिया,
सुनरा को झांझ दरजी कौ ल्यावै रंग चुनरौ मलिया कौ हार।
राजा जगत के मामले हो मां।
को तौरौ वादैं पखवदिया रे पखवदिया,
कौ वांदै झांझ को ओढ़ै रंग चुनरो को पैरै हार।
राजा जगत के मामले हो मां।
लंगरे जू वादें पख वदिया रे पखवदिया,
हनू वांदे झांझ देवी जू ओढ़ें रंग चुनरौ वेई पैरे हार।

राजा जगत के मामले हो मां।
चंदन गारो मलियागिर रे पैती लवो लगाय,
पूजन करौ माता कौ देवी हो जा आज सहाय।
राजा जगत के मामले हो मां।
पैली टिविकिया वासुक की दूजी इन्द्र महाराज,
तीजी टिविकिया दुर्गा खां मोरी आद भुवान।
राजा जगत के मामले हो मां।
डेरे हाथ बरछी लयें रे दहिने हाथ तलवार,
ढाल चपेटा ले लई उर लै लई कमान।
राजा जगत के मामले हो मां।
गढ से उतरे जगदेव रे खड़्धार धराय,
लीली वछेड़ी हंसनी फिर वोले ललकार।
राजा जगत के मामले हो मां।
डेरे लड़े लगरवा रे दहिनें हनुमान,
वागौ सोहै चुवागौ और पगवदिया चीर।
राजा जगत के मामले हो मां।
सन्मुख लड़े जालपा रे त्रिसूलन मार,
मुगलन ने जुनरी वई जगदेव किसान।
राजा जगत के मामले हो मां।
भुन्टा-भुन्टा छांटे रे गीदन की अमान,
बचरये भगे कौरवा वच भगे पठान।
राजा जगत के मामले हो मां।
फौजे भगीं मुगल की रे दिल्ली सुल्तान,
एक लाख मारे कौरवा दो लख मारे पठान।
राजा जगत के मामले हो मां।
फौजें मारी मुगल की रे गुरजर पड़हार,
दिल्ली की हनी किवरियां दिल्ली सुल्तान।
राजा जगत के मामले हो मां।
सुमर-सुमर माई तेरे जस गाऊं,
जय बोलो हिंगलाज हुकम चले जगता के हो जाव दयाल।
राजा जगत के मामले हो मां।

जब हमारे देश में मुगल साम्राज्य था, तो उनका यह प्रश्न था कि यह पृथ्वी किसने बनायी, संसार की रचना किसने की थी एवं पाण्डवों का जन्म कैसे हुआ? तो उन्हें बताया गया कि

ब्रह्माजी ने पृथ्वी बनायी एवं सृष्टि की रचना की, पाण्डवों को उनकी माता कुन्ती ने जन्म दिया। दुबारा मुगलों ने प्रश्न किया कि पृथ्वी एवं संसार की रचना किसलिये की, पाण्डवों का जन्म किसलिये हुआ? तो उन्हें यह भी बताया गया कि यह संसार बसाने के लिये पृथ्वी की आवश्यकता हुई, धर्म की लड़ाई लड़ने के लिये पाण्डवों का जन्म होना भी जरूरी था।

राजा जगदेव का बहुत बड़ा बगीचा था। जिस प्रकार के पेड़-पौधे आदि लगे थे, इसके विषय में भी बताया गया कि बगीचे में जो आम, नीम, महुआ, चम्पा, चमेली, नारियल आदि के वृक्ष लगे हैं, वे सब यहाँ के माली द्वारा लगाए गए हैं।

राजा जगदेव द्वारा बहुत बड़ा तालाब बनवाया गया था। उनका यह उद्देश्य था कि इस तालाब में गाय पानी पीयेंगी एवं ब्राह्मण स्नान कर पूजा-पाठ आदि करेंगे। यह सब वैभव देखकर चुगलखोर ने जगदेव की शिकायत अकबर बादशाह के दरबार में की राजा जगदेव तो बड़ा घमण्डी राजा है, एक भी दिन आपके दरबार में नहीं आया। इस विषय में कुछ विचार करना चाहिए।

इस पर अकबर बादशाह ने क्रोधित होकर एक लाख कौरवा, दो लाख पठान एवं दिल्ली सुल्तान के पास जितनी फौज थी, सबने मिलकर राजा जगत के राज्य पर आक्रमण करने की दृष्टि से सतलज नदी के किनारे अपना पड़ाव डाल दिया। सेना में घोड़े-हाथी पर सवार होकर बड़े-बड़े सेनापति शामिल थे। इन सबने मिलकर जगदेव के बगीचे के जो भी वृक्ष थे, वे सब काटना शुरू कर दिये, तालाब को पूरना शुरू कर दिया। जनता बेहाल होने लगी एवं त्राहि-त्राहि मच गयी।

अकबर ने अपनी तरफ जगदेव के लिए पत्र लिखकर भेजा- या तो आप अपनी लड़की की शादी मुझसे कर दें या फिर हार मानकर हमसे समझौता कर लें। जब यह पत्र राजा जगदेव के दरबार में पहुँचा, तो पत्र पढ़ते ही उन्हें मूर्च्छा आ गयी, क्योंकि एक क्षत्रिय कुल में जन्में राजा के लिये यह सम्भव नहीं था। यह हाल सुनकर सारी प्रजा घबड़ा गयी।

राजा जगदेव की माताजी को जब यह समाचार सुनने को मिला तो वह भी घबड़ा गयीं कि मेरा बेटा जगदेव अकेला है। अब क्या होगा? हे भगवान! यदि धरती फट जाये तो मैं उसमें समा जाऊँ, क्योंकि मैं यह सब सहन नहीं कर सकती हूँ। बेटी ने जब यह सब हाल देखा कि पिताजी दादी माँ एवं सारी प्रजा दुखी हो रही है, तो पिताजी से कहा कि आप ज्यादा परेशान न हों। यदि अकबर राय मुझसे शादी करने की है, तो आप राजी हो जाइये और आप आराम से अपना राजकाज सँभालिये। एक क्षत्रिय होने के नाते जगदेव ने कहा- बेटी! ऐसा नहीं होगा। तुम्हारी शादी तो मैं राजपूत कुल में ही करूँगा। यदि ऐसा नहीं कर सका, तो मेरा क्षत्रिय धर्म सारा बेकार हो जायेगा। उन्होंने कहा- बेटी! चिन्ता मत करो। अकबर की जितनी भी सेना है, उन सबको मैं मार गिराऊँगा और मैं दिल्ली तक पीछा नहीं छोड़ूँगा।

राजा जगदेव देवीजी का भक्त था, फौरन पूजन सामग्री तैयार कर अपने किले से माँ कंकाली की पूजा के लिये चले। राजा को देखकर रानियाँ भी आरती के थाल सजाकर देवीजी के मन्दिर पहुँची विनय की कि हे माँ! यह घड़ी बड़ी मुसीबत की है। अब इससे बचाना आपका काम है। आप हमारी रक्षा करें। नहीं तो, बहुत बड़ा विध्वंस होने वाला है। इसलिए इस संकट की घड़ी में जरूर सहायता करें।

सबने मिलकर पूछा कि- 'हे माँ दुर्गा! तुम्हारा श्रृँगार क्या-क्या है, बताएँ और काहे का बना है, इसे कौन ला सकता है? हे माँ! हमें यह सब बताएँ, ताकि हम आपकी सेवा में हाजिर कर सकें।' माँ ने कहा- बढ़ई पखवदिया, सुनार झाँझ, दर्जी चुनरी एवं माली हार लायेंगे। पखवदिया लंगुरे धारण करेंगे, हनुमान जी झाँझ और देवीजी रंग चुनरी एवं हार धारण करेंगी। यह सब सामग्री लाने के बाद मलियागिर चन्दन को गारकर अपनी अनामिका अँगुली में लगाकर माँ देवी की पूजा शुरू की गयी। पहला टीका वासुदेवजी को दूसरा टीका इन्द्र महाराज को, तीसरा टीका देवीजी को लगाते हुए विनय की कि- 'हे माँ! आज मेरी मदद करो, मैं आपकी शरण में हूँ।' दुर्गा माँ राजा जगदेव पर प्रसन्न होकर अपने हाथों में ढाल, बरछी, तलवार एवं कमान लेकर मुगलों के खिलाफ लड़ाई लड़ने को तैयार हो गयी। जगदेव ने भी अपनी सेना के साथ तैयार होकर दुश्मन को लड़ने के लिए ललकारा। देवीजी के साथ लगरें, हनुमानजी आदि लड़ने के लिए समर भूमि में पहुँच गए एवं लड़ाई शुरू हो गयी।

माँ जालपा ने दुश्मन के सामने होकर त्रिशूलों की मार से मुगलों को मार गिराया। साथ ही जगदेव ने भी तलवार चलाते हुए मारकाट शुरू कर दी। यह सब देखकर दुश्मन लोग अपनी जान बचाकर भागने लगे। राजा जगत ने नरसंहार करते हुए माँ दुर्गा के सहयोग से दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये। हे माँ दुर्गा! आपको बार-बार नमन करता हूँ। जिस प्रकार राजा जगदेव की अपने सहायता की, इसी प्रकार सबकी रक्षा करना।

दिवारी

वृन्दावन की खोर में प्यारे लगी दही की हाट रे।
वेचन वारी राधिका सो ग्राहक नंद के लाल रे।

वृन्दावन के रास्तों से ग्वालिनें दही लेकर निकलती हैं और दही बेचने की टेर लगाती हैं। मुख्य रूप से राधिका जी दही बेच रही हैं एवं कृष्ण भगवान ग्राहक के रूप में दही खरीदने आते हैं।

वृन्दावन की खैर में प्यारे दयें ग्वालन टेर रे।
अरे कन्हैया बाबा नंद के गऊऐं ले जा फेर रे॥

ग्वालिनें जब वृन्दावन के रास्ते से गुजरती हैं, तो गायों की ज्यादा भीड़ रहती है। उन्हें निकलने में परेशानी होती है। जिससे वे नन्दलाल को पुकारती हैं कि- भाई! अपनी गायें एक

तरफ कर लीजिए, ताकि हम आसानी से निकल सकें।

वृन्दावन वसवो तजो प्यारे होन लगी अनरीत रे।
तनक दही के कारणें, वहियां गहत अहीर रे॥

सभी ग्वालिनें आपस में विचार करती हैं कि अब वृन्दावन का रहना छोड़ देना चाहिए, क्योंकि थोड़े से दही के कारण कन्हैया हमारा रास्ता रोकते हैं। हम लोगों का हाथ पकड़कर जबरन दही छीन लेते हैं, इसलिए यहाँ पर रहना अब ठीक नहीं है।

वृन्दावन वंसी वजी मोह लगे तीनऊ लोक रे।
वे तीनऊं मोहे नही सो, वचे कौन की ओट रे॥

जब श्रीकृष्ण जी अपनी बंसी की तान सुनाते थे, सारे ब्रजवासी उनकी धुन सुनकर मोहित हो जाते थे। लेकिन तीनों लोकों के वे तीन कौन हैं, जो उनकी मुरली की तान से मोहित नहीं हो सके।

सती वची हैं साम से प्यारे, शेष श्रवण के हीन रे।
वेद वचे हैं ज्ञान से सो ऐही जग में तीन रे॥

सती अपने सत्य के कारण, शेषनाग के कान न होने के कारण एवं वेद अपने ज्ञान के कारण कन्हैया की मुरली से मोहित नहीं हो सके।

वृन्दावन वसियो सदा प्यारे, जहां वसें ब्रजराज रे।
गोरस वेचत हरि मिलें, सो एक पंथ दो काज रे॥

सारे ब्रजवासी कहते हैं कि वृन्दावन में रहना ठीक है, क्योंकि हम सभी लोग दही बेचने जाते हैं, वहीं पर श्रीकृष्ण भी रहते हैं। इसलिए उनके भी दर्शन हो जाते हैं।

वृन्दावन की विमलता प्यारे विच गलियन की दूर रे।
उड़-उड़ लागे अंग में, सो पाप होंय सब दूर रे॥

वृन्दावन की विमलता के कारण वहाँ के रास्तों की धूल भी शुद्ध है, जिससे उसके उड़ने से हमारे सारे पाप धूल की तरह उड़ जाते हैं।

वृन्दावन की गैल में प्यारे, एक महुवा एक आम रे।
जिन तर ठाढ़े दो जनें, राधे और घनश्याम रे॥

वृन्दावन के रास्ते में एक महुवा और एक आम का पेड़ लगा है, जहाँ पर राधाजी एवं श्रीकृष्णजी खड़े हैं, क्योंकि दोनों में अगाध प्रेम है।

वृन्दावन से वन वन नहीं, प्यारे नंदगांव से गांव रे।
वंसी पट से पट नहीं सो, कृष्ण नाम से नाम रे॥

वृन्दावन के समान वन नहीं हैं, नन्दगाँव सा गाँव नहीं है, वंशी पट से पट नहीं है एवं कृष्ण के नाम से नाम नहीं है।

वृन्दावन वंसी वजी प्यारे वन में कोंपी मोर रे।
वन में व्याकुल राधिका सो तुम बिन जगुल किशोर रे॥

जब श्रीकृष्णजी अपनी मुरली बजाते थे, तो वन में मोर आदि मुरली के स्वर में नाचने एवं कूकने लगते थे। उसी समय राधिकाजी भी श्रीकृष्ण के बिना व्याकुल हो जाती थी।

कैसे अर्जुन अन मने, कैसे वदन मलीन रे।
कै तोरी माता गारी दई, कै ओछे भोजन होय रे॥

बचपन में जब अर्जुन गाय चराने का काम करते थे, तो उनके सखा ने पूछा कि अर्जुन आप उदास क्यों हो? क्या तुम्हारी माँ ने डाँटा है या आज खाना भरपेट नहीं मिला है?

ने तौ अर्जुन अनमने, ने वदन मलीन रे।
ने मोरी माता गारी दई, ने ओछे भोजन होंय रे॥

अर्जुन बोले कि- भाई! न तो मैं उदास हूँ न माँ ने गाली दी है और न ही कम भोजन मिला है।

मारत आवे उड़लत आवै ढाल रे।
ढाल विचारी का करै, ऊपै परै लुहांगी मार रे॥
कै सुर सूके लेरूवा अर मोटे की मुसियाल रे।
गइया देखी दूवरी, मोरी भूरी मलिनियां साड़ रे॥

अर्जुन ने कहा- देखो, मेरी गायों को कोई भगाता चला आ रहा है। भागते-भागते उनके मुँह सूख रहे हैं। घास भी सूख रही है। अपनी गायों को कमजोर देखकर मुझे अच्छा नहीं लग रहा है, जिससे मैं उदास हूँ।

आगन वोवई ऊगयो, मोरी घर में हींसे गाय रे।
ढील से वछड़ा गाय खां, मोय खिरका होत अवार रे।

आँगन में वोवई उगने से मेरी गाय उसे देखकर भीतर से परेशान हो रही है। इसलिये गाय और बछड़े को छोड़ दो, क्योंकि गायों को देर हो रही है।

भौजी के मरजा वीरना, अरु भौजी हो जा बांझ रे।
ओछे तो जमना मोरे, चढ़े न माठा हाथ रे॥

भौजी का भाई मर जाय और भौजी बाँझ भी हो जाये, क्योंकि कम जमें दही का माठा बनाने से मुझे खाने को नहीं मिला।

काहे खां मरजा वीरना, अर काहे खां होजा भौजी बांझ रे।
रस की वादी तुम फिरौ, कच्चे दइरा दये विलोर रे॥

अरे भाई! भौजी का भाई क्यों मरे एवं वह बाँझ क्यों हो जाय? तुम अपने रस में मस्त हो। तुमने यह देखा नहीं कि दही कम जमा हुआ है। उसमें भाभी का क्या दोष है?

देश दिवारी दो दिना अर गढ़ गोकल वारामास रे।
जो चढ़ लक्षमन देखियो, को कैसी खिलावै गाय रे॥

सब जगह दिवारी दो या तीन दिन मनाते हैं, लेकिन गोकुल में तो प्रतिदिन दिवारी होती है। क्योंकि दिवारी के दिन गायों को अच्छा-अच्छा खिलाया जाता है, उनकी पूजा भी की जाती है। गोकुल में तो बारह मास गायों की सेवा की जाती है।

आज तो गइया सूनी गयी, कौना के करै उजार रे।
कौना की खैहे जूनरी, कौना की झुभकारी मूँग रे॥

आज गायें सूनी गयी हैं। उनके साथ कोई नहीं गया है। इसलिए निश्चित किसी का नुकसान जरूर करेंगी। किसी की ज्वार खायेंगी और किसी की आई हुई मूँग की फसल उजाड़ेंगी।

आज बरेदी को भए, कौन उवेरी गाय रे।
आज बरेदी अर्जुन भए, अर भिम्मा उवेरी गाय रे॥

सखा आपस में चर्चा करते हैं कि किसने गाय निकाली हैं और कौन बरेदी है। दूसरे ने बताया कि आज गाय चराने अर्जुन गये हैं, भीम ने गायों को बाहर तक छोड़ा है।

गोदन की माता जा कहै, मोरी सुनले बेटा वात रे।
पैलऊ नाचो घर आपने, फिर रावर नाचन जाव रे॥

गोदन की माता कहती है कि- बेटा! पहले अपने घर पर नाचकर दिखाओ। यदि बन जायेगा तो ही बाहर नाचने के लिए जाना। ऐसा न करने से उचित नहीं होगा।

दिवारी के बाद अब कार्तिक गीत का नम्बर आता है, क्योंकि महिलाएँ कार्तिक स्नान करती हैं। गोपियों के रूप में जगह-जगह भ्रमण करती हुई गाती जाती हैं। कृष्ण भगवान को ढूँढती हैं कि हम आपके बिना कैसे रहें? कब आप हमें दर्शन देंगे? उनके विरह वियोग में गोपियाँ अधिक व्याकुल रहती हैं। बुन्देलखण्ड में यह परम्परा आज भी बरकरार है। प्रतिवर्ष

कार्तिक के महीने में महिलाएँ कार्तिक स्नान करती हैं। पूरे महीने अपने घर का काम छोड़कर सखी का रूप बनाती हैं। बड़ी धार्मिक भावना के साथ पूरे महीने व्रत धारण करती हैं। जिसके सम्बन्ध में कार्तिक गीत इस प्रकार हैं–

जिनके हम दासी वेई न मिले॥ टेक॥
गोकुल ढूँढे मथुरा ढूँढे, ढूँढ लई हम काशी। वेई न..........
जव से गए खवर न भेजी, न भेजी उन पाती। वेई न..........
उन विन सखियाँ ऐसे तलफें, जल विन मीन प्यासी। वेई न..........
चन्द सखी भज राधा माधौ, व्रज की नार उदासी।
जिनके हम दासी वेई न मिले।

श्रीकृष्ण कूबरी के साथ द्वारका चले जाते हैं, तो ब्रज की सारी गोपिकाएँ उनसे मिलने के लिए अति व्याकुल होकर जगह–जगह ढूँढती हैं कि कहीं भी हमारे कन्हैया मिल जायें। वे आपस में कहती हैं कि हमसे इतने निष्ठुर हो गये हैं कि जब से मथुरा गये, उस समय से न तो वापिस आये और न ही आज तक किसी प्रकार की खबर ही भेजी। हम सब सखियाँ इस प्रकार तड़फ रही हैं, जिस प्रकार बिन पानी के मछली तड़फती रहती है। चन्द्रसखी कहती हैं कि– कन्हैया के विरह वियोग में सारे ब्रज की नारियाँ उदास हो रही हैं कि हमसे ऐसा अलगाव क्यों बना लिया है। हमसे ऐसी कौन–सी भूल हो गयी है।

फीके लगे घर दोर, सखी मोय फीके लगे घर दोर॥ टेक॥
निशदिन रहस्य रचावें मोहन, तट जमना की ओर।
सुनतन ग्वाल वाल सब दौरें, मुरली की घोर। सखी ....
हमखां छोड़ कूबरी ले गए, प्रीत पिया दई टोर।
न पठवाए संदेशे उनने, दिल के कढ़ें कठोर। सखी ....
विसरत नही श्यामरी मूरत, देखत चारऊ ओर।
वैरन रात कटे न काटी, छाती उठत हिलोर। सखी ....
प्रीत करी और कर न जानी है करमन खों खोर।
चन्दसखी वे ऐसे तलफें, मीन विना जल थोर॥
सखी मोय फीके लगे घर दोर॥

ब्रज की नारियाँ आपस में चर्चा करती हैं कि– हे सखी! कन्हैया के बिना हमें अपना घर–बार अत्यन्त खराब लगता है, क्योंकि कन्हैया हमेशा यमुना तट पर रास रचाया करते थे, उनकी मुरली की आवाज सुनकर सारे ब्रज के नर–नारी दौड़ पड़ते थे। हम सबको छोड़कर कूबरी के साथ जब से गये, उस समय से हम सबसे प्रीत ही छोड़ दी है। बड़े कठोर दिल के निकले, क्योंकि कोई चिट्ठी भी नहीं भेजी। कन्हैया को हम भूल नहीं पाते, उन्हीं की याद में भटकते रहते हैं। रात में भी सही ढंग से नींद नहीं आती हैं। हम लोगों ने ही गलती की है कि कन्हैया से ऐसी

गहरी प्रीत नहीं करना चाहिए थी। किस्मत का ही दोष है। हम लोग उनके मोह में इतने फँस चुके हैं कि जैसे थोड़े पानी में मछली तड़फती है, ऐसे ही हम लोग व्याकुल हो रहे हैं।

सखी मोय श्याम बिना सुख नइयां॥ टेक॥
आपुन जाय द्वारका छाए, भए कुबजा के सइयां।
दूध के दांत गिरन न पाए, न बिसरी लरकइयां।
सखी मोय श्याम बिना सुख नइयां।
दिन न चैन रात न निदियां, भर-भर देत तरइयां।
तलफत फिरत पिया बिना जौ जी, लगहों कौन डरइयां॥ सखी ....
अंग भवूद गले मृगछाला, बैठ गई भू मइयां।
स्वामी भए कुबजा के वस में, इत भए प्रान चलइयां॥ सखी ....
लगे लगाए बाग सूख गए, कलिंयन में रस नइयां।
चन्दसखी मोहन कब लौटें, फेर चरावें गइयां॥
सखी मोय श्याम बिना सुख नइयां।

सखियाँ कहती हैं कि- हे सखी! श्याम के बिना हमें जरा भी सुख नहीं है। दुनिया के सारे सुख बेकार लग रहे हैं। हम लोगों की इतनी ज्यादा उम्र भी नहीं है। अभी हमारा लड़कपन है। ऐसे समय में हमें धोखा देकर कूबरी के साथ चले गये। उनके बिना हमें दिन-रात चैन नहीं है। हमें ऐसा लग रहा है कि उनके बिना हमारी मदद कौन करेगा? ऐसा विचार हो रहा है, वैराग्य रूप धारण कर लिया जाये एवं कन्हैया की याद में उन्हीं की माला लेकर जाप करें। घर -बार सब त्याग दें। क्योंकि वे कुबजा के वशीभूत हो गये हैं। उन्हें जरा भी हमारी खबर नहीं है। इधर हमारे प्राण निकले जा रहे हैं। उनके बिना सारे बाग-बगीचे सूख रहे हैं। फूलों में रस नहीं रहा है।

चन्द्रसखी कहती हैं कि- मोहन कब लौटेंगे, जो फिर से यहाँ गाय चरायें और हम लोगों को उनके दर्शन होने लगें।

सखी मोय तज गए नन्द किशोर॥ टेक॥
घन गरजे और मोरा कोपे, करै पपीहा शोर।
पल-पल पै वा बिजली चमके, देखत चारऊ ओर। सखी ....
भादों रैन झुकी अंधियारी, दादुल करत किलोर।
सूनी सेज पै नींद न आवै, छाती उठत हिलोर॥ सखी ....
कौना बनी विगर गई हमसे, प्रीत पिया दई टोर।
जाय वसे कुबजा के संग में, हैं आली चितचोर॥ सखी ....
फीकी लगें कदम्ब की छइयां, वैठत ते दोई जोर।
चन्दसखी मोहन कव लौटें, उनसे लागी डोर॥
सखी मोय तज गए नन्द किशोर।

गोपियाँ आपस में कहती हैं कि- सखी! हमें नन्दलाल छोड़कर चले ही गये हैं। इधर बादल की गड़गड़ाहट एवं पपीहा की आवाज सुनकर हम बेचैन हो रहे हैं। यह भादों की अँधेरी रात कितनी भयानक लगती है। मेंढक की आवाज सुनकर हमारे स्वामी के बिना अकेले नींद नहीं आती है, छाती में हूक सी उठ जाती है। हमसे ऐसी कौन-सी गलती हो गई है, जिससे कन्हैया हमें छोड़कर कुब्जा के साथ चले गये। हे सखी! श्याम तो बड़े चितचोर निकले। प्रतिदिन उनके साथ हम सब कदम्ब की छाया में बैठते थे, लेकिन उनके बिना यह कदम्ब की छाया भी फीकी लग रही है।

चन्दसखी कहती हैं कि- मोहन कब लौटेंगे, क्योंकि उन्हीं से हमारी आशा लगी है।

दही रे लैकें आ जैहों बड़ी भोर॥ टेक॥
बइयां गहौ जिन नन्द के लाला, बइयां है कमजोर॥ दही ....
हठ न करो तुम नन्द के लाला, न करियो बरजोर॥ दही ....
न मानो मोरी मटकी धर लो, लिखे पपीहा मोर॥ दही ....
न मानो मोरी चुनरी धर लो, हीरा जड़े अमोल॥ दही ....
चन्दसखी भज राधा माधौ, छलिया जुगल किशोर॥
दही रे लैकें आ जैहों बड़ी भोर॥

ग्वालिनें ब्रज में दही बेचने जाती हैं, वहीं कन्हैया रोक लेते हैं। तो वे कहती हैं- अरे कन्हैया! हमें मत रोको। हम सुबह दही लेकर फिर से आ जायेंगे। हमारी बइयाँ बड़ी कमजोर हैं, उन्हें मत पकड़ो। हमसे बरजोरी मत करो। यदि तुम्हें विश्वास नहीं है तो हमारी मटकी रख लो, जिसमें पपीहा और मोर के चित्र बने हैं। इस पर भी विश्वास नहीं हो रहा है तो हमारी चुनरी रख लो, इसमें भी हजारों की कीमत के हीरे लगे हुए हैं। चन्द्रसखी कहती हैं कि कन्हैया तो बड़ा नटखट हैं। वे किसी भी बात को सुनने के लिए तैयार नहीं हैं।

इस प्रकार का नाटक प्रतिदिन कन्हैया ब्रज नारियों के साथ किया करते हैं, लेकिन वे बुरा नहीं मानती हैं।

सखी मैं भइ न ब्रज की मोर॥ टेक॥
कौन वन उड़ती कौन बन चुनती, कौन बन करत किलोर॥ सखी ....
मथुरा उड़ती गोकल चुनती, मधुवन करत किलोर॥ सखी ....
वृन्दावन की सकरी गलियाँ, कड़ती पंख ककोर॥ सखी ....
उड़-उड़ पंख गिरें धरनी पै, वीनत जुगल किशोर॥
सखी मैं भई न ब्रज की मोर॥

सखियाँ कहती हैं कि- हे सखी! हम लोग ब्रज की मोर होते तो अति उत्तम होता, क्योंकि कन्हैया अपनी बंसी बजाते और हम लोग मोर बनकर नाचा करते। मथुरा उड़ते रहते, गोकुल में

हम लोगों को दाना मिल जाता तथा मधुवन में आनन्द के साथ विचरण करते। वृन्दावन की गलियाँ संकरी हैं, लेकिन हम लोग अपने पंख समेटकर निकल जाया करते। यदि हमारे पंख टूट भी जाते, तो कन्हैया उन्हें उठाकर रख लेते। इसलिए हे सखी! हमें जरूर ब्रज की मोर होना चाहिए था, ताकि कन्हैया के दर्शन होते रहते।

गारी बारामासी

अवै घर आ जा नंद किशोरा॥ टेक॥
पैलो मास असड़ा जौ लागो, पवन चले अति जोरा।
मोरे पिया परदेश गए हैं, घट गए ज्वानी के जोरा॥ अवै घर.........
सावन सखी झूल रई झूला, झूलै नार हिंडोरा।
मोरे पिया ने सुध बिसराई, कर दई चाल मरोरा॥ अवै घर.........
भादों मास घुमड़ झिर लागी, कीच मचो चहु ओरा।
सूनी सेज श्याम बिन मोरी, बैरी कूंक रहे मोरा॥ अवै घर.........
क्वांर मास के तीखे घामें, तप गए नदियां झोरा।
मै पापिन विरहा की मारी, हिरदें उठत हिलोरा॥ अवै घर.........
कार्तिक में पाती लिख भेजी, ऊधौ हांथ पुर जोरा।
मिलन कहौ तो मिलियो स्वामी, नहि पीछें जहर कटोरा॥ अवै घर.........
अगहन मास में चीर उतारे, पैरें लहर पटोरा।
मोय छोड़ बैरागन कर गए, श्याम बड़े चितचोरा॥ अवै घर.........
पूस मास में ठंड परी है, कांपत है तन मोरा।
नैनन नीर बहै नदिया सी, जौ तन लेत मरोरा॥ अवै घर.........
भाव मास में आमा मोरे, कोयल करत किलोरा।
आई वसंत सखी सब गावें, जीरा ललकत मोरा॥ अवै घर.........
फागुन मास में रंग बनाए, चीर रंग में वोरा।
मोरे पिया बिन सोहब नइयां, गौरी कौ बनगव होरा॥ अवै घर.........
चैत मास में टेसू फूले, हो रव घाम चरेरा।
झौरन नीम निवौरी फूली, परो करम पै फेरा॥ अवै घर.........
बैसाखै न आए प्रीतम, धरम करम को डोरा।
वेरऊं वेर निहारत दौरौ, जैसे चन्द चकोरा॥ अवै घर.........
जेठ मास पिया घर आए, हो रव राग घनेरा।
सूर श्याम छवि कालौ वरनों, चकई भवो मन मोरा॥
अवै घर आजा नन्द किशोरा॥

सखियाँ नंदलाल के विरह के वियोग में अधिक चिन्तित होकर कहती है कि बहुत दिन

हो गए हैं, अब तो हमारे घर वापिस आ जाओ। प्रथम माह आषाढ़ लग गया है, हवा बहुत तेजी से चल रही है, हमारे पिया हमको छोड़कर दूर चले गए हैं। हमारी जवानी का जोश घटता चला जा रहा है। सावन के महीने में सखियाँ झूला झूल रही हैं, लेकिन हमारे पिया नन्दलाल ने तो हमारी खबर ही भुला दी है। हमको चाल दिखाकर दूर चले गए हैं।

भादों के महीने में घनघोर वर्षा हो रही है। चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ दीख रहा है। रात के समय श्याम के बिना नींद ही नहीं आती है। ऐसे में बैरी मोर-पपीहा भी कूंक रहे हैं। क्वाँर मास की तेज धूप के कारण नदी-नालों का पानी भी तप रहा है। मैं पापिन कन्हैया के विरह वियोग में मरी जा रही हूँ। कार्तिक में ऊधौजी के हाथ चिट्ठी भी भेजी है और उसमें यह भी लिखा है कि- हे स्वामी! आप जल्दी से दर्शन दे दें, नहीं तो मैं जहर खाकर अपने प्राण त्याग दूँगी, लेकिन फिर भी कोई जबाव नहीं भेजा।

अगहन में अपना चीर उतार लहँगा पहनकर बैरागन का रूप बना लिया, क्योंकि श्याम के बिना कुछ अच्छा ही नहीं लग रहा है। पूस में ठंड का प्रकोप बढ़ गया है, जिससे मेरा बदन काँप रहा है। आँखों से आँसू की धार लगी हुई है। यह शरीर अब साथ नहीं दे रहा है। माघ में आम में बौर आ गए हैं। कोयल भी वसन्त की अवाई देखकर किलोल कर रही है। सभी सखी वसन्त बहार के गीत गा रही हैं। मेरा मन भी गाने के लिए हो रहा है, लेकिन श्याम के बिना मैं रह जाती हूँ। फागुन फाग का महीना है, चीर रंग में डुबो दिया है, लेकिन मुझे पिया के बिना कुछ अच्छा ही नहीं लगता है। मेरा गोरा बदन काला पड़ गया है। चैत्र मास में पलाश फूल रहे हैं, धूप भी तेज हो रही है, नीम में निंबौरी के गुच्छे लटक रहे हैं, लेकिन मेरी तो किस्मत ही खराब है कि अभी तक मेरे प्रियतम वापिस नहीं आए हैं। क्या करूँ? बेबस हूँ। वैशाख मास को धरम का महीना माना जाता है, फिर भी मेरे पिया नहीं आए। उनके इन्तजार में बार-बार द्वार पर खड़ी होकर चकई के समान देख रही हूँ कि शायद प्रभु के दर्शन हो जायें। जेठ के महीने में मेरे पिया घर वापिस आ गए। उनकी खुशी में कई प्रकार के राग हो रहे हैं।

सूरदासजी कहते हैं कि- श्याम की छवि का वर्णन कहाँ तक करूँ। मैंने तो चकई के समान अपना मन बना लिया है।

मोरी डारी मटकिया फोर मुरलिया वारे ने॥ टेक॥
वृन्दावन की कुन्ज गली में मिल गए ते बड़ी भोर। मुरलिया.......
दइयां खाओ मटकी फोरी, वइयां दई झकझोर। मुरलिया.......
दइयां खाके चढ़े कदम्ब पै, दयें मुरली की छोर। मुरलिया.....
चन्दसखी भज राधा माधौ, छलिया जुगल किशोर। मुरलिया........
मोरी डारी मटकिया फोर मुरलिया वारे ने।

ब्रज की ग्वालिनि दही बेचने जाती हैं। कन्हैया द्वारा परेशान करने सम्बन्धी शिकायत माँ यशोदा से करने जाती हैं एवं कहती हैं कि- हे यशोदा मइया! तुम्हारा कन्हैया बड़ा ही नटखट है।

हम लोग दही बेचने वृन्दावन जाते हैं, तो बड़े सुबह हमें वहीं मिल जाता है और देखो, दही खाया सो ठीक है, हमारी बाँह पकड़कर झकझोर भी दिया है। हम लोग कितना ही समझाएँ, लेकिन मानता ही नहीं है। बड़े परेशान हैं तुम्हारे कन्हैया से। दही खाकर हमारी दही बेचने की मटकी भी फोड़ दी और चुपचाप कदम्ब पर चढ़कर बाँसुरी बजाने लगता है। मइया! समझाओ अपने लाडले को। चन्दसखी कहती हैं कि- कन्हैया तो बड़ा ही छलिया है।

बुन्देलखण्ड में पूस-माघ के महीने में संक्रान्ति के समय ग्रामीण शंकर-पार्वती के नाम से लमटेरा गाते हैं। जब किसी तीर्थयात्रा को जाते हैं, तब भी लमटेरा गाए जाते हैं। सुनने वाले लोग इन गीतों को सुनकर यह समझ लेते हैं कि जाने वाले लोग किसी तीर्थयात्रा को जा रहे हैं। इन गीतों से लोगों में धार्मिक भावना जुड़ जाती है। भोलेनाथ के कुछ लमटेरा गीत इस प्रकार हैं-

महादेव बाबा बड़े रसियारे, बड़े रसिया रे भाई,
गोरा से जोरें बैठे गाँठ रे, अरे महादेव बाबा हो।

शंकर भगवान को रसिया शब्द से सम्बोधित किया है, क्योंकि शंकर भगवान एवं माँ पार्वतीजी दोनों गाँठ जोड़कर बैठे हैं। वह परम्परा आज भी प्रचलित है। जब कोई धार्मिक आयोजन लोग अपने घरों में करते हैं, तब पति-पत्नी गाँठ जोड़कर एक साथ पूजन आदि के लिए बैठते हैं।

निकर चलो दैकें टटिया रे, दैकें टटिया रे,
धंधे में लगन दो भैया आग रे, निकर चलो हो।

भोलेनाथ को देखकर लोगों के मन में भावना जागृत हो जाती है कि भैया मोह में फँसकर हम अपना जीवन फालतू गँवा रहे हैं। शंकर भगवान देखो, वीरान जंगल में कैलाश पर्वत पर अपनी समाधि में मस्त हैं। माँ पार्वती भी उन्हीं के पास बैठी रहती हैं। उन्हें संसार के भौतिक संसाधनों से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसा जब लोग देखते हैं तो लगता है कि हमें भी घर-द्वार छोड़कर भगवान का भजन करना चाहिए।

अरी ऐ चलवो चलवो सब कोऊ कहे रे,
ओ मोरे भैया चलवो न हाँसी खेल, चलवो ओई कौ भलो रे,
जीखां दानी बुलावें दैकें टेर रे, अरे भजन बोलो हो।

किसी भी तीर्थयात्रा के लिए जाना कोई आसान बात नहीं है। चलने की उमंग उसी के मन में पैदा होती है, जिसे भगवान स्वयं प्रेरणा देते हैं और वह व्यक्ति सब छोड़कर भगवान का भजन करता हुआ घर से चल देता है।

भजन बोलो उन हरि के रे, उन हरि के रे,
जिन हरि ने बनाई है जहान रे, अरे भजन बोलो हो।

जब भी सोते-जागते हमें समय मिले प्रभु का स्मरण जरूर करना चाहिए। क्योंकि भगवान ने यह मनुष्य का शरीर इसीलिए बनाया है कि अपने काम धंधे के अलावा राम भजन भी करना चाहिए।

जतन में लिवाऐं चलियो रे,
लिवाऐं चलियो रे मोरी देइया दरद न होय रे,
अरे जतन में भैया हो।

कोई भक्त परमात्मा से विनय कर रहा है कि- हे प्रभु! मेरी जीवन रूपी यात्रा अच्छी तरह से पूरी हो जाय, इसलिए मुझे कोई ऐसा उपाय सुझा देना ताकि मेरे इस शरीर को विशेष कष्ट न हो और मेरी जीवन यात्रा पूरी हो जाय।

निवाय लइयों गैकें बइयां रे बइयां पकरे की नइयां,
कौनऊं लाज रे, अरे निवाय लइयो हो।

हे प्रभु! यदि मेरी जीवन रूपी नाव कहीं डगमगाने लगे तो अपना हाथ लगाकर मुझे सँभाल लेना, ताकि मैं उस भवसागर से पार हो सकूँ। मेरी आपसे बार-बार प्रार्थना है कि मुझे अपना हाथ लगाकर पार कर देना।

करम गत टारी न टरै रे, टारी न टरै रे,
बैमाता ने लिख दव है लिलार रे, अरे करम गत हो।

जो जिसकी किस्मत में लिखा होगा, उसे कोई टाल नहीं सकता है। हमें अपने कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ेगा। क्योंकि जन्म होने से पूर्व ही बैमाता हमारे भाग्य में लिख देती है, उसी के मुताबिक हमें चलना पड़ता है। विधि के विधान को कोई भी शक्ति बदल नहीं सकती है।

संक्रान्ति के बाद वसन्त ऋतु लग जाती है, उस समय मौसम न ठंडा न गरम रहता है, हवा भी अच्छी चलने लगती है, आम में बौर आ जाते हैं जिस पर बैठकर कोयल अपनी कुहू-कुहू की ध्वनि से मन मोह लेती है। ठंड से निपटकर लोग भी चैन की साँस लेते हैं। फागुन का महीना भी लग जाता है। ग्रामीण महिलाएँ चना-मसूर काटती हुई अपना मनोरंजन करने के लिए बिलवारी गाती जाती हैं और अपना काम भी करती जाती हैं। बुन्देलखण्ड में ग्रामीण अँचलों में बिलवारी गाने की पुरानी परम्परा चली आ रही है। आज भी गाँव में महिलाएँ अधिकतर बिलवारी गाया करती हैं।

फगनइया की अजब बहार चुनरिया, उड़-उड़ जात बदन पै सें॥ टेक॥
ऐ अरी हां हो सखी री काहे की तुमरी चुनरिया,
अरे काहे लगी है किनार, चुनरिया, उड़-उड़ जात बदन पै सें।
ऐ अरी हां हो सखी री रेशम की मोरी चुनरिया,

अरे मुंतियन लगी है किनार, चुनरिया उड़-उड़ जात बदन पै सें।
ऐ अरे हां हो सखी री, कौना ने लै दई चुनरिया,
अरे कौना लगा दई किनार, चुनरिया उड़-उड़ जात बदन पै सें।
ऐ अरे हां हो सखी री, ससुरा ने लै दई चुनरिया,
अरे सासो लगा दई किनार, चुनारिया उड़-उड़ जात बदन पै सें।

खेत में काम करती हुई महिलाएँ आपस में गाती हुई कहती हैं कि- हे सखी! वसन्त की कितनी अच्छी ठंडी हवा चल रही है, उसके कारण मेरी चुनरिया बार-बार उड़ जाती है। दूसरी सखी कहती है कि तुम्हारी साड़ी काहे की बनी है एवं उसमें किनार किसकी लगी है? तो वह जवाव देती है कि मेरी साड़ी रेशम की बनी है और उसमें किनार मोती की लगी है। साथ में काम करने वाली सहेली कहती है कि इतनी अच्छी साड़ी तुम्हें किसने खरीद कर दी एवं किनार किसने लगवा दी? जवाब में कहती है कि मेरे ससुरजी ने यह साड़ी खरीदी थी, मेरी सासुजी ने इसमें मोतियों की किनार लगवा दी। इसलिए यह इतनी अच्छी लग रही है।

वसन्त के बाद फाग का त्योहार आता है। फाग तो हर जगह क्षेत्रानुसार अलग-अलग ढंग से मनायी जाती है, लेकिन बुन्देलखण्ड में फाग मनाने का तरीका ही कुछ और है। खासकर बुन्देलखण्ड के छतरपुर जिले में फाग कई तरीके से गायी जाती है। ढोलक नगड़िया झाँझ आदि साज-बाज के साथ राई नृत्य भी होता है। फाग कई तरह से गाई जाती है, जैसे- छन्ददार फाग, सखयाऊ फाग, डेढ़ खुरयाऊ फाग, चौकड़िया फाग एवं स्वांग (कहरवा) आदि। होली के समय परिया भी बाँधी जाती है, जिसका अलग ही ढंग है। एक लम्बी लकड़ी को गाड़ा जाता है। उसके आखिरी हिस्से पर करीब 20 फुट ऊँचाई पर 5 किलो के करीब गुड़ की परिया बाँधी जाती है। खम्भा तेल से काफी चिकना किया जाता है। खम्भे के चारों ओर खड़े होकर लोग फाग गाते हैं। खम्भे पर चढ़ने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है। जो खम्भे पर चढ़कर परिया निकाल लेता है, उसे सभी लोग बधाई के साथ-साथ पुरस्कृत करते हैं। इस प्रकार क्षेत्र में फाग मनाने का विशेष महत्त्व है। काफी पुराने समय से यह परम्परा चली आ रही है। आज भी लोग काफी हर्षोल्लास से फाग गाते हैं।

फागुन कौ महीना रंगीलौ है घरै आ जइयो राजा,
आय हाम रे घरै आ जइयो राजा॥ टेक॥
चार महीना गर्मी के लागे, हां गर्मी के लागे,
टप-टप चुऐं पसीना रे घरै आ जइयो राजा।
चार महीना बरसा के लागे हां बरसा के लागे,
टपका चुऐं बिछौना में घरै आ जइयो राजा।
चार महीना जाड़े के लागे हां जाड़े के लागे,
थर-थर कपों बिछौना में घरै आ जइयो राजा।
आह हाय रे घरै आ जइयो राजा।

कोई पत्नी अपने पति को घर से बाहर नहीं जाने देना चाहती है। वो कहती है कि– हे मेरे राजा! आप कहीं भी जाओ, लेकिन शाम को घर जरूर आ जाना। अभी गर्मी का मौसम चल रहा है, धूप काफी पड़ रही है। गर्मी से इतनी परेशान हूँ कि पसीना–पसीना हो जाती हूँ। इसलिए कहीं भी जाओ घर जरूर आ जाना।

गर्मी के बाद बरसात लग जाती है, तो वो कहती है कि इस समय भी बाहर नहीं जा सकते हो। क्योंकि मकान कच्चा है, तेज बारिश होने के कारण घर चूने लगता है, मेरे बिस्तर पर भी पानी टपकने लगता है। इसलिए आप अभी कहीं मत जाओ।

बरसात निकलते ही शीत ऋतु आ जाती है, तो पति से कहती है कि कपड़े कम हैं, ठंड कड़ाके की पड़ रही है। मैं अपने बिस्तर में काँपती रहती हूँ। इसलिए मुझे छोड़कर आप नहीं जायेंगे। इस प्रकार पूरा वर्ष निकल जाता है, लेकिन वह महिला अपने पति को घर से बाहर जाने की इजाजत नहीं देती है। अपने मोह–जाल में फँसाकर उसे गुमराह करती रहती है।

लागी प्रीति राधिका हरि की, जानी है ब्रज भर की।
को कावै को बैरी होवै, जा है बात जवर की।
बखरी बनी येई के लाने, बाहर एक वगर की।
ईश्वर श्याम ब्रज के ऊपर, छाया करौ नजर की॥

फाग में बताया गया है कि राधा और कृष्ण की बड़ी गहरी दोस्ती है। राधाजी श्रीकृष्ण को छोड़ना नहीं चाहती, इसे सारे ब्रज के नर–नारी जानते हैं, लेकिन बड़े होने के कारण कहने में सब लोग संकोच करते हैं। ब्रजवासी यह चर्चा करते रहते हैं कि– भैया! रहवास भी इसलिए बाहर बनाकर रखा है। ईश्वरीजी कहते हैं कि– हे प्रभु! इस ब्रज पर कृपा दृष्टि रखना।

नइयां कोऊ काऊ कौ संगी, पिता पुत्र अरदंगी।
कपट की प्रीति मीत स्वारथ के, चाल चले बेढंगी।
चिता चढ़ाय फूंक दई पल में, करके काया नंगी।
चिन्ता में ईश्वर घबरा रए, दुनिया देख दुरंगी॥

लोग भले ही कुछ सोचते हों, लेकिन चाहे पिता हो, पुत्र हो या औरत हो, कोई किसी का साथी नहीं है। सब अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए एक दूसरे से अपना रिश्ता जोड़े रहते हैं। अन्त में जब प्राणान्त होता है, उस समय जीव को अकेला ही जाना पड़ता है और मृत शरीर को नंगा करके चिता में जला दिया जाता है। इसलिए ईश्वरीजी कहते हैं कि– इस दोहरी चाल को देखकर मुझे घबराहट हो रही है।

तनकौ तनक भरोसो नइयां, जाने राम गुसइयां।
तरुवर से एक पत्ता टूटो, फिर न डार लगइयां।

जर वर खाक धूल में मिल गई, फिर न चुनत मुनइयां।
ईश्वर कात सुनो मन प्यारे, कोऊ काऊ कौ नइयां॥

परमात्मा ही जान सकता है कि इस शरीर का क्या होगा? इसका कोई भरोसा नहीं है, कब क्या हो जाय? जिस प्रकार पेड़ से पत्ता टूटकर नीचे गिर जाता है, लेकिन कोई चाहे कि फिर से जहाँ का तहाँ लग जाय, परन्तु लग नहीं पायेगा। शरीर से जीव निकल जाने के बाद जला दिया जाता है और जलकर धूल में मिल जाता है, फिर कोई नहीं पूछता है।

इसलिए ईश्वरी कहते हैं कि- हे प्यारे मन! इधर-उधर मत भटकना। फिर जीते जी जितना बन सके भगवान का भजन करले, बाकी दुनिया में कोई किसी का नहीं है।

देइया अवना बनत बनाऐं, बिन वालायन पाऐं।
चमड़ी ऊपर चढ़ो फफूड़ा का होने तेल लगाऐं।
कच्ची भीत बनी माटी की, कमखां कलई पुताऐं।
ईश्वर कात चूक न जइयो, जो हीरा तन पाऐं॥

मनुष्य वृद्धावस्था में पहुँचने के बाद जीवन के विषय में सोचता है कि मैं यह नहीं कर पाया, यह गलती कर डाली। यदि मुझे पुनः समय मिल जाय, तो मैं अपना अधूरा काम पूरा कर लूँ, लेकिन यह असम्भव है। जो समय निकल गया, वह पुनः वापिस आने वाला नहीं है। मनुष्य अपने शरीर का घमण्ड करता है, जो गलत है। बुढ़ापे में शरीर जीर्ण-शीर्ण होने लगता है, चमड़ी भी सिकुड़ने लगती है। ऐसे समय में यदि तेल लगाया या शरीर को ज्यादा सजाया जाये, तो क्या लाभ होने वाला है। यह शरीर नश्वर है, पता नहीं कब चला जाय।

ईश्वरी जी कहते हैं कि- भैया! यह अनमोल मनुष्य का शरीर पाकर बाहरी आडम्बर न करते हुए प्रभु का स्मरण करना चाहो, तो कर लो। यदि नहीं कर पाये, तो यह बहुत भारी गलती होगी।

रजुवा सयरन जात तला में, धुतिया धरे डला में।
कबहूँ जात अकेली रजुवा, कबहूँ जात झला में।
छूटे केश भुजन पै ऊके, उड़-उड़ जात हवा में।
पतरी कमर रंगीली चुरियां, बेंदी धरें भला में।
ईश्वर कात सुनो मन प्यारे, देखौ इन्हें कला में॥

रजुवा यानी महिला, जो तालाब नहाने जाती है और अपने कपड़े डलिया में रखकर जाती है। कभी वह अकेली जाती है, कभी महिलाओं के समूह के साथ जाती है। उसके छूटे हुए बाल बाँहों पर लटक रहे हैं, हवा के झोकों में उड़ते हुए लहरा रहे हैं। इकहरा शरीर हाथों में रंग-बिरंगी चूड़ियाँ पहने, माथे पर बिन्दी दमक रही है, जिसकी शोभा देखते ही बनती है।

ईश्वरीजी कहते हैं कि- अरे मन! मैं तो इसकी कला को देखकर बहुत हैरान-सा हो गया हूँ।

रजुवा पहिन लेत जव गाने, हीरा ठगै बिरानें।
चुरिया चार दसक बिल्लोरी, भरे रात गरदानें।
कैयक छैल लिखे कागज में, कई घिरा दए थाने।
ईश्वर कात सुनो मन प्यारे, दूध सिमइयां खानें॥

रजुवा जब गहने आदि पहनकर सज-धजकर सड़क पर निकल जाती है और चलते-फिरते लोगों को अपने मायाजाल में फँसाकर उन्हें ठगना शुरू कर देती है। दोनों हाथों में भर-भर बाँह चूड़ियाँ, गर्दन में बिल्लोरी आदि पहनकर लोगों को आकर्षित करती रहती है। कई लोगों के उसके पास पते लिखे रहते हैं और कई लोगों के खिलाफ कार्यवाही करवाकर थाने में बंद करवा देती है।

ईश्वरीजी कहते हैं कि- भैया! हमें दुनियादारी में नहीं पड़ना है। आप तो दूध सिमइयां खाओ और प्रभु का गुण गाओ, जिसको जो करना हो सो करने दो। हमें क्या लेना देना!

सूखो रूप राधिका जू कौ, श्याम बिछुड़ गवो ऊकौ।
जबसे पुरी द्वारका पौंचो, फिर न मथुरा ढूंको।
जीकै घर कौ दूध बगर गवो, ओई खावै सूकौ।
हिल्ले कोऊ लगत न देखो, बंदरा डार से चूको॥

जब श्रीकृष्णजी कूबरी के साथ द्वारका चले जाते हैं, उस समय राधिकाजी अकेली रह जाती हैं और श्याम के बिना उनका मन मलीन पड़ जाता है। वे कहती हैं कि जब से गए, फिर मथुरा की खबर ही भूल गए। जब किसी का दूध लुढ़क जाता है, तब उसको सूखा खाना पड़ता है। साथ ही मौका निकल जाने पर शायद ही कोई ठिकाने लग पाता है। इस प्रकार का चिन्तन राधिकाजी अपने मन में कर रही हैं कि कन्हैया क्या पता दुबारा दर्शन देते भी हैं कि नहीं।

अरे मन खां रे कां लौ समझाव, तोखां देखें रे मोरी जान कड़ै हां।

लक्ष्मणजी को मेघनाद द्वारा शक्तिबाण मारकर घायल कर दिया जाता है, उस समय भगवान श्रीराम-लक्ष्मण की हालत देखकर कहते हैं कि- भैया! मैं अपने मन को कैसे समझाऊँ। तेरी यह दशा देखकर मुझे लगता है कि अपने प्राण त्याग दूँ।

भर जा रे सागरिया ताल, मोरी रे गगर डूबत नइयां हां।

एक पनहारी कुँए पर पानी भरने जाती है, लेकिन कुँआ सूखा रहता है तो वह परेशान हो जाती है कि घर में पीने के लिए पानी नहीं है, क्या करूँ। तो वह कहती है कि- अरे सागर ताल! पानी से भर जा, मेरा घड़ा डूब नहीं रहा है।

काहे की स्याही करों, काहे की कलम और दोत।
काहे के कगदां करों सो लिखों कौन के बोल,
सुआ सी बैठी चली गई डोला में।
नाड़ी चीर स्याही करों, छिगरी कलम और दोत।
अँचल फार कगदा करो, सो लिखों पिया के बोल।
सुआ सी बैठी चली गई डोला में।

सौरंगा अपने पति की याद में संदेशा भेजने के लिए कहती है कि मैं किसकी कलम-दवात एवं स्याही बनाऊँ? किस चीज का कागज बनाऊँ? क्योंकि मेरे पास कुछ भी नहीं है और क्या लिखूं, मेरी समझ में नहीं आता है। क्या करूँ? लेकिन उसे जवाब मिला कि नाड़ी चीरकर खून की स्याही बनाओ, कनिष्ठा अँगुली की कलम एवं साड़ी का पल्लू फाड़कर कागज बनाकर उस पर अपने पिया (पति) को खबर भेज सकती हो।

कर्जा की कठिन मरोर, सखी सोसन में सूखे वालामा।
जोतत के वर्षा गए, और मुटीलौ हार,
कम्मर की करधनियां गयी और गरे कौ हार,
सखी सोसन में सूखे वालामा।

एक महिला अपनी सहेली से कहती है कि हमारे ऊपर इतना कर्ज हो गया है कि कर्ज पटाने में दोनों बैल एवं एक खेत, मेरी करधनी एवं गले का हार (गजरा) - यह सब चला गया। इतने पर भी कर्ज पूरा नहीं चुका है। मेरे पति इसी कर्ज की चिन्ता में सूखे जा रहे हैं।

कीनें जानी राम, काया की कौन गत होने।
भजन करें सें भौतक तर गए, तर गए सदन कसाई।
राम नाम कौ प्याला पी कें, तर गई मीरा बाई,
भज लो सीता राम, काया की कौन गत होने।
राम नाम खां भजले मनुवां, भूल करौ न भाई।
राम बिना कोई काम न आवै, दइयो न विसराई,
बनहें बिगरे काम, काया की कौन गत होनें।

किसी को कुछ पता नहीं है कि इस शरीर का कब क्या होगा? अपना जीवन सुधारने के लिए रामनाम ही एक ऐसा साधन है, जिसके कारण कई अधर्मियों का उद्धार हो गया है। कसाई जैसे लोग पार हो गए। राम के नाम पर विश्वास कर मीरा ने विषपान कर दिया, लेकिन कुछ नहीं बिगड़ा। हे भाई (मन)! रामनाम में कभी भूल नहीं करना और न प्रभु को भुलाना है। क्योंकि यह मायाजाल बड़ा कठिन है, इसमें फँसकर मनुष्य भगवान को भूला रहता है। प्रभु स्मरण से ही सारे काम बनते हैं। पता नहीं आगे क्या होगा!

हंसा करले बहार, जाने कबै उड़ जानें।

यह जीव कब चला जायेगा, कोई ठिकाना नहीं है। इसलिए जीते जी जितना हो सके, अच्छा काम करना चाहिए।

हंसा बेईमान, काया खां छोड़ के चले गए।

शरीर में वास करते हुए हंसा का पता नहीं है कि यह छोड़कर कब चला जाये?

मोरे वीरा हनुमान, लक्षमन के प्रान बचाइयो।

लक्ष्मण के घायल होने से श्रीराम अधीर होकर हनुमान जी कहते हैं कि- भाई! संजीवन बूटी जल्दी लाओ और आप ही लक्ष्मण को बचा सकते हो।

मोय सांसी बताव, आहौ कै धरहौ संदेशे।

अशोक वाटिका से सीताजी से विदा लेकर हनुमानजी वापिस होने लगे और आश्वासन दिया कि जल्दी ही श्रीरामजी आपको लेने के लिए लंका आयेंगे। मैं भी साथ में रहूँगा। तब सीता जी ने कहा था- हनुमान! सत्य बताओ कि फिर से आओगे कि खबर भिजवा दोगे।

भीतर घुसन न दैहों, तपन दूरई सें बुझालो।

हनुमान जी लंका दहन कर वापिस लौटते हैं तो ज्यादा गर्मी लगने के कारण समुद्र में कूदने का विचार करते हैं। उसी समय समुद्र कहता है कि आप अन्दर मत कूदिये। आप किनारे पर खड़े हो जायें, मेरी हिलोर आयेगी, उसी से आप अपनी तपन को शान्त कर लेना।

पैलऊं पैल की चिनार, अंगना न देखे तुम्हारे।

विश्वामित्र जी के साथ राम-लक्ष्मण जनक के दरबार में पहुँचते हैं। गुरुजी द्वारा पहचान करायी जाती है कि ये अवध नरेश दशरथनन्दन राम-लक्ष्मण दोनों भाई हैं। तब जनकजी कहते हैं कि मैं क्या जानूँ! मैंने इनका घर-द्वार तो देखा नहीं है।

फिर करियो चिनार, पैलां लगालो छाती सें।

विश्वामित्र जी पुनः कहते हैं कि- राजा जनक! ज्यादा पहचान की अभी जरूरत नहीं है। आप तो इन्हें अपनी छाती से लगा लो।

कर लइयो चिनार, मौका बखत के लाने।

रामजी से मिलकर अच्छी पहचान बना लेना, जनकराज! ये कभी वक्त पर काम आयेंगे। ऐसा विश्वामित्र जी ने कहा।

मकरी कैसो जार, ओइ में फसे रय सुरझेना।

यह माया मोह इतना कठिन है कि इस भ्रम-जाल में फँसकर मनुष्य अपने भविष्य के बारे में सोचने के लिए मजबूर हो जाता है। अन्त में पछताता हुआ इस दुनिया से विदा हो जाता है।

खेंचत मौरो चीर, तनक दया आई ना।

द्रौपदी कहती है कि भरी सभा में यह दुष्ट दुशासन मेरा वस्त्र खींच रहा है, मुझे निर्वस्त्र करना चाहता है। इसे जरा भी मेरे प्रति दया नहीं आयी।

तुम पै लाखन मरे, तुम न मरी बेला काऊ पै।

इस पृथ्वी पर लाखों जीव जन्म लेते रहते हैं, मरते रहते हैं। लेकिन यह जहाँ-तहाँ बनी रहती है। यह किसी के साथ नहीं मरती है।

इतै जुर गए जुराव, कनवज से लाखन बुला लो।

आल्हा-ऊदल ने लड़ाई लड़ने के लिए अपना पड़ाव डाल दिया। तब कहा गया था कि लाखन कनवज में हैं, उन्हें बुला लिया जाय।

कैसी बैठी चिमानी, काय कछू गिर गए तुमारे।
कै तुमरी सास ननद दुख दीन्हों, कै पिया से खिसयानी।
काय कछू गिर गए तुमारे।
न मोरी सास ननद दुख दीनों, न पिया से खिसयानी।
काय कछू गिर गए तुमारे।
सपनन दिखाने छैला हमारे, जबसे भई हैरानी,
काय कछू गिर गए तुमारे।

एक महिला को कुछ चिन्तामग्न बैठी देखकर सहेली ने पूछा, आप इतनी उदास क्यों है? क्या आपकी सास-ननद परेशान करती हैं या पतिदेव से कुछ अनबन हो गयी है? उसने जवाब दिया कि न तो सास-ननद परेशान करती हैं, न ही पति से बिगाड़ हुआ है। क्या बताऊँ! आज रात में स्वप्न में मेरे प्रेमी दिखे, जिससे मेरा मन उदास है।

मो पै रंगा न डारौ रामा लला रामा लला गोविन्द लला.....
काहे के रस रंगा बनाऐ, काहे की पिचकारी लला। मोपै......
केसर के रस रंगा बनाऐ, सोने की पिचकारी लला। मोपे......
कौना खां रस रंगा सोहै, कौना खां पिचकारी लला। मोपै......
राधा खां रस रंगा सोहै, श्यामा खां पिचकारी लला।
मोपै रंगा न डारौ श्यामा लला।

बरसाना में फाग मनायी जा रही है, श्रीकृष्णजी पिचकारी भरकर गोपिकाओं पर रंग डाल

रहे हैं। सखियाँ कहती हैं कि– हे घनश्याम! हम लोगों पर रंग मत डालो। राधाजी केसरिया रंग लिए हैं एवं कन्हैया पिचकारी भरकर रंग डालते हुए फाग मना रहे हैं।

फट जैंहैं चुनरिया न तानो, फट जैंहैं।
हम बेटी वृषभान रजा की, और गुजरिया न जानों। फट.....
इतै राज है कंस राजा कौ, गोकल नगरी में थानों। फट....
हमरे कुल की यही रीत है, दूध दही कौ है खानों। फट.....
उरझो न श्याम कही मानो, फट जैंहैं चुनरिया न तानो।

गोपिकाएँ कन्हैयाजी से कह रही हैं कि– भाई! हमसे मत उलझो, हमारी चुनरी फट जायेगी। हम लोग वृषभान राजा की बेटी हैं। कोई साधारण गुजरिया न समझना! यहाँ पर राजा कंस का राज्य है, साथ ही गोकुल में थाना है। यदि शिकायत हो जायेगी, तो तुम बंद हो जाओगे। हम लोगों का यहाँ आना–जाना लगा ही रहता है, क्योंकि हम लोग दूध दही बेचकर ही अपना परिवार चलाते हैं। इसलिए हमसे मत उलझा करो।

दिन गिन रई बेला गोने के, दिन गिन रई।
कौना ने लै दए छला फूंदना, कौआ ने ककना सोने के। दिन.....
प्रीतम ने लै दए छला फूंदना, देवरा ने ककना सोने के।
दिन गिन रई बेला गौने के।

एक महिला अपने गौने के समय का इन्तजार कर रही है। उसकी सहेली पूछ रही है कि तुम्हें छला फूँदना एवं कंगना किसने खरीद दिए हैं? वह जवाब देती है कि मेरे प्रियतम ने छला फूँदना एवं देवर ने सोने के कंगन खरीद दिए हैं। इसी खुशी में समय का इन्तजार कर रही हूँ कि वे मेरा गौना कराने कब आ रहे हैं।

दोहा : *जब से हरि द्वारका गए, तज के हमसे हेत।*
तब से देखौ बदन में, मदन मरोरा लेत॥
टेक : *दै रऔ मदन मरोरा भारी, आए न गिरधारी।*
छन्द : *आए गिरधारी न आली, उन बिन सेज डरी है खाली,*
विरह बान जेठ में घाली, मुझ पै आकै।
अपनों जौ दुख कीसें कावै, सवरी राते जागत जावें,
बैरन छिन भर नींद न आवै, गई मुरझाकें।
उड़ान: *मुरझानी अति माननी, तन की दशा विसारी।*
जौ लौ असाढ़ वा सजनी, उठी घटा नभ कारी॥
टेक : *सावन में मन भावन मोपै, ऐसी बिछरन डारी।*
छन्द : *मोरी जा है वारी वैस, जावै कैसें सहो कलेश,*

आपुन छाए सौत के देश, न खबर लई।
भादों जल बरसे गंभीर, मोरे उठत करेजे पीर,
थर-थर कांपै मोर शरीर, सुध भूल गई।

उड़ानः *सुध बुध भूली है सखी, विरहा वान सौ मारी।*
क्वांर अवाई जान श्याम की, रस्ता भौत निहारी॥

टेक : *कातिक में सब ग्वाल वाल जुर, घर-घर नचत दिवारी।*

छन्द : *घर-घर नाचे ब्रज के वासी, बाजें ढोल ढाल चौरासी,*
मोरे मन में छाई उदासी, न कछू भाए।
ऐसो लागत आँगन ऐरी, तन में हूंक उठत है मेरी,
मैं हों बिना श्याम की चेरी, हरि न आए।

उड़ानः *हरि न आए है सखी, कोटि जतन कर हारी।*
किए पठावों को जाय द्वारका, पूस भवो अनजारी॥

टेक : *जो कोऊ लाल माव में हमखां, देतो आय मिलारी।*

छन्द : *अपनो दुख-सुख उनसे काती, अपने मन की तपन बुझाती।*
जब कऊँ होरी फाग सुहाती, फागुन मइयां।
करती चित्त चैत में चैन, सजती सिंगारन से ऐन,
लेती पूज पुतरिया वैन, वरकी छइयां।

उड़ानः *वैसाखै मैं पूजती, सखी पुतरियां लारी।*
माधौ सिंह अक्ती खां पाकें, गावें बारामासी प्यारी॥

श्रीकृष्ण जी सब ग्वाल बालों को छोड़कर मथुरा से कूबरी के साथ द्वारका चले जाते हैं। उनकी याद में गोपिकाएँ व्याकुल हो रही हैं और कहती हैं- हे सखी! जब से कन्हैया चले गए हैं, उसी समय से हमें कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। हे सखी! हमारा शरीर मुरझा रहा है। उनके बिना ऐसा लग रहा है जैसे कोई हमें बाण मार रहा है। रात भर नींद नहीं आती है। अपनी यह पीड़ा किससे कहूँ? जेठ का महीना निकल चुका है, आषाढ़ लग गया है, बादल गरज रहे हैं, लेकिन मुरझा कर, तन की खबर भूलकर पड़ी रहती हूँ।

आप कूबरी के साथ चले गए, हमारी उम्र अभी लड़कपन की है, तुम्हारे बिना कैसे रहूँ? यह दुख सहन नहीं हो रहा है। सावन में आशा कर रही थी, लेकिन नहीं आए। भादों में पानी खूब गिर रहा है। मेरे ह्रदय में पीड़ा उठ रही है। मेरा बदन काँप रहा है। जवानी की मरोर मुझे परेशान कर रही है। ऐसा लगता है जैसे कोई तीर चला रहा हो, लेकिन मैंने तन की खबर ही भुला दी। मुझे मालूम हुआ कि शायद क्वाँर में घनश्याम आयेंगे। मैंने उनका काफी इन्तजार भी किया, लेकिन नहीं आए। कार्तिक में सारे ब्रज के ग्वाल बाल जुरकर घर-घर दिवारी नृत्य करते हैं, लेकिन मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। मेरा मन काफी उदास है। मेरा आँगन श्याम के बिना सूना सा लग रहा है। मैं श्याम के बिना एक चेरी जैसी हालत में पड़ी हूँ। परन्तु कन्हैया ने

मेरी कोई खबर नहीं ली है। मैंने कई उपाय कि कि कन्हैया वापिस आकर हमें दर्शन दे दें, लेकिन मैं असफल रही। पूस का महीना लग गया है। ऐसा कोई नहीं है, जिसे मैं पत्र लिखकर द्वारका भेज सकूँ, ऐसा कोई जो हमारी मदद कर दे, जो हमें हरि से मिला दे। यदि श्याम आ जाते तो अपने मन की बात दिल खोलकर उनसे कहती। तभी हमें होरी फाग अच्छी लगती। मैं अपने सारे सिंगार कर पुतरियाँ पूजती और श्याम के साथ खूब आनन्द मनाती। सभी सखियाँ सज-धजकर वर की छाया में जाकर पुतरियाँ पूजती हैं, लेकिन मैं श्याम के बिना उदास बैठी हूँ। मैं भी बैशाख का महीना खुशी से मनाती। इस प्रकार माधौसिंह कवि ने श्याम बिछरन सम्बन्धी बारामासी फाग की कथा बखान की है।

दोहा : *सबसे अव्वल अजब है, असल गुड़ानो देश।*
कौन काम कौ मालवा, हमखां लगत विदेश॥
बिटिया बोली बाप से, भलो आपनो, चाव।
देश गुड़ाने में पिता, फरियों मौरौ व्याव।

टेक : *बिटिया दइयो देश गुड़ानें, जहाँ मजा मनमाने।*

छन्द : *बाबुल ऊतौ बड़ौ रमीलौ देश, जां पर नइयां कोई कलेश,*
भारी प्रेमी है ऊ देश, भारी प्रेम को।
आदर आव भाव पैचानें, इज्जतदार की इज्जत जाने,
कइयक एक से स्यानें, भारी धरम करें।

उड़ान: *विन्ध्याचल से नामी तीरथ, भीमकुन्ड जग जाने।*
जाहर नाम जटाशंकर कौ, पन्ना रतन खदानें॥

दोहा : *खीर खांड खाई जवै, निखर भैंस के दूध।*
भूल गई मोय हे पिता, माई वाय की सूध॥

टेक : *परसे भार धरे आंगन में, परमेश्वर लुभयानें।*

छन्द : *फुदवा समां वसारा राली, कीनी कुटकी ने चटक निराली,*
मौरौ कुदई बिना मन खाली, मैं भई लरम।
एकबार गईती मम्मन कें, सब चीजें देखी नैनन कें।
विसरत नइयां रात औ दिनकें, जामें मरम।

उड़ान: *बेई गोंऊं उन्नत ललन खां, बेई तिहाई के लानें।*
जो कुछ बचे खरच से बाहर, धरे बीज के लाने॥

दोहा : *देश गुड़ाने में पिता पैदा होत अचार।*
येई मालवा देश के, मांगत हांथ पसार॥

टेक : *का का चीजें घर में धरहौं, का का जायं बखानें।*

छन्द : *लकड़ी सागौना और बांस, जाबै देशन देशन खास।*
जिनकी तुमई करत तलाश पइसा दैकें।

जुन्डी चना इतै नित खानें, कटिया करत करत दिन जानें,
आंसू पोंछत शरीर ससानें, कपड़ा लैकें।

उड़ान: *बिटिया बोली बाय से, करियौ नही बहानें।*
हमें मालवा छोड़कें, भेजौ देश गुड़ाने॥

दोहा : *देश गुड़ाने में पिता, है सुवदा की वात।*
महुवा चरवा और गुली में, सबरु खरच समात॥

टेक : *आवत खवर नजर में झूलत, हूलत तीर कमानें।*

छन्द : *सबसे देश गुड़ानो नामी, मौखाँ मइके ढूंढौ स्वामी,*
जासे तुमें होय आरामी, चाहे जैसी।
जो उस देश सासरौ पांव, फिर मैं लौट मायके आंव,
तुमखां चीजें कछू लियांव, ऐसी-ऐसी।

उड़ान: *देश गुड़ाने कौ पिता, मैं ये ही प्रन ठानें।*
भुजबल सिंह मालवा तजकें, रइयो देश गुड़ाने॥

यह फाग छतरपुर जिले से खास सम्बन्ध रखती है, जिसे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में गुड़ाना के नाम से जानते हैं। यहाँ की क्या विशेषता है- एक लड़की अपने पिता से बखान करती हुई कहती है कि मुझे गुड़ाना मालवा की अपेक्षा ज्यादा पसन्द है। यहाँ के बारे में लड़की ने जो कुछ जाना-समझा, वह इस प्रकार है-

वह कहती है कि- हे पिताजी! सभी क्षेत्र से अच्छा एवं अजूबा तथा असली गुड़ाना देश है। इसके सामने मालवा किसी काम का नहीं है। इसलिए हे पिताजी! आप भलाई चाहते हैं तो मेरी शादी गुड़ाना में ही करना। वहाँ अनेक प्रकार की अच्छाई है। वह कहती है कि- हे पिता! वहाँ पर बहुत अच्छा लगता है। वहाँ किसी प्रकार की परेशानी नहीं है। साथ ही वहाँ के निवासी लोग बड़ा प्रेम करते हैं। लोगों का सम्मान करते हैं। वहाँ पर कई समझदार लोग हैं एवं धर्मात्मा भी हैं। उस क्षेत्र में विन्ध्याचल सा महान पर्वत भीमकुण्ड, जिसे बहुत दूर तक लोग जानते हैं। भीमकुण्ड को पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास के समय प्यास लगने पर भीम ने अपना गदा पटक कर एक कुण्ड बना डाला था। साथ ही अर्जुन ने अपने बाणों से अन्दर जाने के लिए रास्ता बनाया था एवं सभी ने अपनी प्यास शान्त की।

लड़की कहती है कि- हे पिताजी! एक बार मैंने शुद्ध भैंस का दूध पीया एवं उससे बनी खीर खाई। उस समय तो मैं माँ-बाप की खबर ही भूल गयी थी। यहाँ पर कई प्रकार की धानें, कई चीजों से बने व्यंजन देखकर भगवान भी मोहित हो जाते हैं। मैं एक बार अपने मामा के यहाँ गई, तब देखा यहाँ की मुख्य फसल कोदों, समा, बसारा, राली एवं कुदई - ये सब चीजे मैंने खाईं, तब से मैं रात-दिन नहीं भूल पा रही हूँ। मैं वहाँ जितने दिन रही, मेरा स्वास्थ्य काफी अच्छा हो गया था। जब से अपने घर वापिस आ गई तो कमजोर हो गई हूँ।

मालवा में एक ही फसल गेहूँ है, जिससे कपड़ा-लत्ता, खेती-बाड़ी का खर्चा, खाना-पीना आदि चलता है, जो बचते हैं तो बीज के लिए रखना पड़ता है। इसके अलावा और दूसरी कोई फसल नहीं है।

हे पिताजी! गुड़ाना में अचार पैदा होता है, जिससे चिरौंजी निकलती है, जो काफी महँगी होती है। काफी दूर-दूर तक के लोग खरीदकर ले जाते हैं। और भी कई चीजें हैं। मैं जहाँ तक कहूँ, सब थोड़ा है।

हे पिताजी! गुड़ाना में इमारती लकड़ी सागौन भी होता है, जो काफी महँगा होता है। इसके कई प्रकार के फर्नीचर बनते हैं। बाँस भी यहाँ पर होता है, जो काफी दूर-दूर तक बिकने के लिए जाता है। लोग पैसा देकर खरीदते हैं। मालवा में ज्वार एवं चना की रोटी खाने को मिलती है। उसी को खाकर जानवरों के लिए कटिया काटा जाता है। आँख में तिनका लग जाने से दिन भर आँसू पोंछते रहते हैं, जबकि गुड़ाना में काफी मैदान एवं जंगल है, जहाँ जानवर स्वच्छन्द रूप से दिन भर चरते रहते हैं। शाम घर आकर बाँध देते हैं। वहाँ पर कोई कटिया वगैरह नहीं किया जाता है।

लड़की कहती है कि- हे पिता! आप कोई बहानाबाजी न करना, मुझे तो मालवा छोड़कर गुड़ाना ही भेजना, क्योंकि गुड़ाना में कई सुविधाएँ हैं। जैसे- महुआ, अचार, गुली आदि फसलें हैं, जिनके कारण पूरे साल भर का खर्च निकल जाता है। गल्ला बेचने का मौका कम ही आता है। मुझे वहाँ की याद दिन-रात आती रहती है। इसलिए हे पिताजी! देश गुड़ाना ही सबसे अच्छा है, मेरी शादी वहीं पर करना, जिससे तुम्हें भी काफी फायदा होगा। अगर मेरी शादी गुड़ाना में होती है तो जब मैं लौटकर अपने मायके आऊँगी, तब तुम्हारे लिए कई प्रकार की चीजे वहाँ से लाऊँगी।

भुजबल सिंह कहते हैं कि- मालवा छोड़कर गुड़ाना में रहना ही उचित है।

दोहा : *काया वोली हंस से, सुनों कंथ मम वैन।*
तुमने मोरे संग में, भौत करें सुख चैन॥
टेक : *हंसा कात वचन सुन प्यारी, बीती अवध हमारी।*
छन्द : *अक्षर वैमाता ने डार, जो कुछ लिख दीनों लैलार,*
पूरन हो गवो आज हमार, हमने जानी।
प्यादे आ गए जमराजा के, नइयां दया करेजे ताके हमखां जैहें संग लिवाके, बोलो वानी।
उडान: *यकर वकर के मोखां मारत जैसे खड़ग कटारी।*
अव वस रैवै कौ है नइयां बीती अवध हमारी॥
दोहा : *संइयां ऐसी न करौ, मोरे संग गोंघात।*
मोय विहूनों छोड़कें, आय कहां को जात॥

टेक : *तुम सम पुरुष मिलें न मोखां, तुम्हें न मो सम नारी॥*

छन्द : *अब तौ बात रही न वस की, मोहलत लै लइयो दिन दसकी,*
बातें कर लइयो रंग रस की, इतने दिन में।
करनी कर लइयो सुख देंनी, जामें मिलने सरग नसेनी,
गंगा जमना और त्रिवेनी, मोरे संग में।

उडान: *मोरे संग में रम कें जीवें, जैसी धूनी टारीं।*
नरक सुरग मो संग मिले, नील चक्र पग धारी॥

दोहा : *प्यारी तेरे प्रेम में भूलो सब संसार।*
लेकिन अवध दीनानाथ की, सको न पलभर टार॥

टेक : *सको न टार करम की रेखा, जो विधि अक्षर डारी।*

छन्द : *सिर में जो विधि अक्षर डारी, संगत पूरी करी तुमारी,*
पंछी जैसी गुजारी, अब उड़ जानें।
रुदी घटरुदा ने सांस छोड़ौ अब मिलने की आश,
सुनकें काया भई निराश, लगी पसतानें।

उडान: *पत्त विना तरुवर लगे, चांद बिना निशि कारी।*
तैसई हंस बिना जा देइया, लगत भयानक भारी॥

दोहा : *सर सूनो जल बिन लगे, नृप बिन सूनी सेन।*
जल सूनो थारो लगे जहां न होय पुरैन॥

टेक : *घर सूनों दीपक बिन लागे, फूल बिना फुलवारी॥*

छन्द : *दीनों जव धरनी में धरकें, हंसा चले कमाई करकें,*
अपने पिरमत के दिन भरकें, गए भग अपने।
धरनी मिट्टी पड़ी अकेली, छोड़े संग के सखा सहेली,
तज दमे कंचन महल हवेली, हो गए सपनें।

उडान: *चार दिना की चांदनी, फिर रंजनी अधियारी।*
चमक जात बिजली सी ईश्वर, विधि की गति है न्यारी॥
हंसा कात वचन सुन प्यारी, बीती अवध हमारी।

अन्तिम समय में जब जीव शरीर से निकलकर जाने लगता है, तब काया बोलती है कि प्रिय तुमने संग में रहकर बहुत सुख का उपभोग किया है। अब कहाँ जा रहे हो? हंसा कहता है कि अब मेरे जाने का समय आ गया है। जो कुछ मेरे भाग्य में विधाता ने लिखा था, वह पूरा हो गया है। अब यमपुरी से यमराज आ गए हैं, वे मुझे अपने संग लिवाके जायेंगे। वे जरा भी देर नहीं करेंगे। वे मुझे पकड़-पकड़ मार रहे हैं एवं साथ चलने के लिए मजबूर कर रहे हैं। इसलिए अब रुकने का कोई समय नहीं है। मुझे जाना ही पड़ेगा।

काया कहती है कि ऐसा विश्वासघात मत करो। मुझे अकेला छोड़कर कहाँ जा रहे हो। तुम्हारे बिना मैं कैसे रहूँगी? हे मेरे पिया! तुम्हारे समान पति मुझे कहाँ मिलेगा और मेरे समान पत्नी भी तुमको नहीं मिल सकती है। काया कहती है कि अभी कुछ समय की मोहलत ले लो। इसी समय में कुछ रंग-रस की बातें हो जायेंगी। लेकिन हंस कहता है कि- हे सुखदैनी! अच्छा कर्म करो, जिससे स्वर्ग मिल जायेगा और त्रिवेणी में तर कर तुम्हारा उद्धार हो जायेगा। मेरे साथ रहकर जिसने जैसा कर्म किया है, उसी प्रकार का फल प्राप्त होता है। हे प्रिय! तुम्हारे इस मायाजाल में सारा संसार भूला हुआ है, लेकिन जब विधाता के यहाँ जाने का समय आ जाता है तो उसे कोई नहीं टाल पाता है।

हंस कहता है कि- हे प्रिय! अब मुझसे मिलने की आशा छोड़ दो, क्योंकि मेरा गला बंद हो रहा है, मेरे मुँह से आवाज नहीं निकल पा रही है। इतना सुनकर काया हताश हो जाती है। हंस कहता है कि मैंने तुम्हारे साथ रहकर सारे सुखों का उपभोग किया। एक पक्षी जैसा बसेरा तुम्हारे साथ किया, लेकिन अब आखिरी समय आ गया है। अब उड़ जाने दो। मुझे मत रोको।

जिस प्रकार पत्ते के बिना पेड़, चन्द्रमा के बिना रात्रि अच्छी नहीं लगती, उसी प्रकार जीव के बिना यह शरीर भी भयानक लगने लगता है। तालाब पानी बिना, राणा बिना सेना, पुरैन के बिना पानी अच्छा नहीं लगता है। जिस घर में रोशनी न हो वह घर वीरान-सा लगने लगता है, इसी प्रकार जिस बगीचे में फुलवारी हो लेकिन फूल न हो, तो वह बगीचा बिना फूलों के सूना (फीका) लगने लगता है। ठीक उसी प्रकार जब इस शरीर में प्राण न रह जाये तो यह भी बेकार लगने लगता है। एक घण्टा भी इसके पास बैठना पसन्द नहीं किया जाता है। जीव जब धरती पर आया, उस समय से अपने समय में अच्छा-बुरा सब कुछ किया, वही कमाई करके यह प्राणी अपना समय पूरा करके चला जाता है। अपने साथ कुछ भी नहीं ले जाता है। सारा का सारा महल, धन-दौलत अपने सखा-सहेली सब छोड़कर जैसा अकेला आया वैसा अकेला चला भी जाता है। कुछ भी साथ नहीं ले जाता है।

ईश्वरी जी कहते हैं कि- जैसे चाँदनी रात समय रहते रहती है फिर अँधियारी छा जाती है, इसी प्रकार यह जीव भी अपने सीमित समय के लिए इस पृथ्वी पर जन्म लेता है और विधाता के नियम अनुसार अपना समय पूरा करके चला जाता है। इसलिए समय रहते बन सके, तो अच्छा काम कर लेना चाहिए, ताकि दुनिया से जाने के बाद भी नाम बना रहे।

अब का होत सुधारे से मोहन बिगर गए वारे सें।
थोड़े से दूध दही के कारण, घर-घर फिरत सकारे सें॥ मोहन...........
भरी मटकिया दई की फोरी, कंकड़ मारे इशारे सें॥ मोहन...........
चंचल लोग चतुर ब्रज वासी, धीरे चलत किनारे सें॥ मोहन...........
चंदसखी भज बाल कृष्ण छवि वरनो जसोदा लारे सें॥ मोहन...........
अब का होत सुधारे सें मोहन बिगर गए वारे सें॥

ग्वालिनि यशोदा माता के पास जाकर कन्हैया की शिकायत करती हैं कि- हे मैया! तुम्हारा कन्हैया बहुत बिगड़ गया है। वह सुधर नहीं सकता है, क्योंकि बचपन से ही आदत खराब हो गई है।

वे तो बड़े सवेरे से, जैसे ही हम लोग दिखते हैं, तो दूध-दही माँगने लगते हैं। घर-घर जाकर चोरी भी करते हैं। हमारी दूध-दही की मटकी कंकड़ मारकर फोड़ देते हैं। हम लोग बड़े परेशान हैं आपके कन्हैया से। इस प्रकार शिकायत करके ब्रज के ग्वाल बाल धीरे से निकल जाते हैं। चन्द्रसखी कहती हैं कि- कन्हैया की लीला का वर्णन कहाँ तक करूँ।

बिलवारी

रथ ठाढ़े करौ भगवान तुम्हारे संगै चलो वंदोवासा खां,
ऐ अरी हां हो सखी री काहे के रथला बने,
अरे काहे कौ जड़ो है जड़ाव, तुमारे संगे चलों रे वंदोवासा खां।
ऐ अरी हां हो सखी री, चन्दन के रथला बने,
अरे सोने कौ जड़ो है जड़ाव, तुमारे संगे चलो रे वंदोवासा खां।
ऐ अरी हां हो सखी री, कौना रथ पै बैठियौ,
अरे कौना है हांकन हार, तुमारे संगे चलों रे वंदोवासा खां।
ऐ अरी हां हो सखी री, रामा रथ पै बैठियौ,
अरे लक्षमन हांकन हार, तुमारे संगे चलों रे वंदोवासा खां।
रथ ठांढे करौ भगवान तुमारे संगै चलो रे वंदोवासा खां।

भगवान राम जब वनवास के लिए जाने लगे ,तब सीताजी भी साथ जाने को तैयार हो गई एवं कहने लगीं कि- हे स्वामी! अपना रथ खड़ा कर लीजिए, मैं भी आपके साथ वनवास को चलूँगी। आपस में सीताजी की सहेली पूछने लगीं कि भगवान का रथ तो बड़ा सुन्दर है। यह काहे का बना है? दूसरी सखी बोलती है कि चन्दन का रथ बना है एवं सोने की उसमें सजावट की गयी है। इस पर भगवान राम बैठेंगे एवं लक्ष्मणजी रथ को चलायेंगे। इस प्रकार सीताजी कहती हैं कि- हे स्वामी! मैं आपके बिना अयोध्या में अकेली नहीं रह सकती हूँ, मुझे भी अपने साथ ले चलो।

बिलवारी

मोय धोखो सो हो गव आज परोसन, उड़ जव सुवनां पिंजरा में सें।
ऐ अरी हां हो परोसन कैसे सुवनां उड़ गए,
कीनें डारी किवरिया खोल, परोसन उड़ गव सुवनां पिंजरा में सें।
ऐ अरी हां हो परोसन दूध भात भोजन लियाई,
मैंने डारी किवरियां खोल परोसन, उड़ गव सुवनां पिंजरा में सें।

ऐ अरी हां हो परोसन जब से सुवनां उड़ गए,
मोरे जिया में नइयां चैन परोसन उड़ गव सुवांनां पिंजरा में सें।

जब शरीर से जीव निकल जाता है तो इस देह को बड़ा कष्ट होने लगता है। अपने पड़ोसी से कहती है कि मुझे पता नहीं चला कि प्राणी कब निकल गया। एक प्रकार का धोखा सा हो गया है। पड़ोसन कहती है कि जीव कैसे निकल गया? किवाड़ कैसे खुल गए? जिससे सुआ उड़ गया। तो उसने कहा कि मैं तो दूध-भात का भोजन लेकर गयी थी। जैसे ही मैंने किवाड़ खोला कि सुआ उड़ गया। मुझे पता ही नहीं चल पाया। हे पड़ोसन! जब से सुआ उड़ गया है, तब से मैं बहुत बेचैन हूँ। क्या करूँ? कुछ समझ में नहीं आता है।

बिलवारी

अन बोलें रहो न जाय, सास मोरी लड़का तुमारो अनबोलना।
ऐ अरी हां हो बहू मोरी, रुच-रुच पुड़ी पकाइयो,
फिर रैता में दइयो मिलाय, सास मोरी लड़का तुमारो अनबोलना।
ऐ अरी हां हो सास मोरी, मैंने थार लगा दयते,
वे तौ मोगे से जे गए, सास मोरी लड़का तुमारो अनबोलना।
ये अरी हां हो वहू मोरी, रुच-रुच बीड़ा लगाइयो,
चूना दइयो मिलाय, सास मोरी लड़का तुमारो अनबोलना।
ऐ अरी हां हो सास मोरी मैंने बीड़ा लगायेते,
वे तौ मोगे से रच गए सास मोरी लड़का तुमारो अनबोलना।

बहू अपनी सास से कहती है कि- माँ! तुम्हारा लड़का तो मुझसे बात ही नहीं करता है। क्या बात है? सास ने जवाब दिया कि- बेटा! तुम अच्छे तरीके से बढ़िया पूड़ी बनाना एवं रायते में मिलाकर उसे खाने को देना। शायद हो सकता है तुम से कुछ बात करे। बहू ने अच्छे तरीके से खाना बनाकर थाली में परोसा और अपने पतिदेव के सामने थाली रख दी। पतिदेव चुपचाप खाना खाकर चले गए, लेकिन पत्नी से कुछ बात ही नहीं की।

बहू ने दुबारा सास से कहा कि वे तो चुपचाप खाकर चले गए। माँ! कुछ बात ही नहीं की। मैं तो बड़ी परेशान हूँ। सास ने कहा- अच्छा! तुम बीड़ा (पान) लगाकर देना। शायद तुमसे कुछ बात करे। बहू ने पान लगाकर दिया। सारा मसाला बगैरह उसमें मिलाया। लेकिन फिर भी नहीं बोले। बहू ने कहा- माँ जी! वे तो चुपचाप पान खाकर चले गए। कुछ भी बात नही की। बाद में बहू को समझ में आया कि मेरे पतिदेव तो गूंगे हो सकते हैं। इसलिए वे बात कैसे करें।

अक्ती गीत

अक्ती कैसें पूजन जांवरी, वरी तरें मेले लिवौआ।
पैले लिवौआ मोरे ससुरा जी आए, ससुरा के संगै न जांवरी, वरी तरें मेले लिवौआ।

दूजे लिवौआ मोरे जेठा जी आए, उनईं के संगै कैसे जांवरी, वरी तरें मेले लिवौआ।
तीजे लिवौआ मोरे नंदोई आए, उनके न संगै जांवरी, वरी तरें मेले लिवौआ।
चौथे लिवौआ मोरे संइयां जी आए, डोली में बैठ चली जांवरी, वरी तरें मेले लिवौआ।

चैत के बाद बैसाख आता है। बैसाख में अक्ती का त्योहार आता है। लड़कियाँ एवं महिलाएँ वटवृक्ष के नीचे बैठकर पुतरियाँ ले जाकर अक्ती का त्योहार मनाती हैं। गुड्डा-गुड़ियों की शादी भी रचाती हैं। उसी दौरान एक सहेली को लिवाने के लिए पाहुने आकर वटवृक्ष के नीचे बैठ जाते हैं, तो वह सहेली अपनी सहेलियों से कहती है कि मैं आज अक्ती पूजने नहीं जाऊँगी, क्योंकि वह के नीचे मुझे लिवाने वाले बैठे हैं। लेकिन मैं उनके साथ नहीं जाना चाहती हूँ। पहली बार मेरे ससुरजी आए, लेकिन मैं उनके साथ कैसे जा सकती हूँ। दूसरी बार मेरे जेठजी आए, उनके साथ भी जाना ठीक नहीं है। तीसरी बार मेरे ननद के पतिदेव आए, उनके साथ भी मेरा जाना ठीक नहीं है। चौथी बार जब मेरे पतिदेव आयेंगे तो मैं उनके साथ हँसी-खुशी से जा सकती हूँ। क्योंकि पतिदेव के साथ जाने में ठीक रहेगा।

राठौरी गीत

तारौ मौरौ जनम सुधारौ राम, मोय तारौ।
गर्व करो वन की गुन्चू ने, लाल वदन मुंह कारो राम, मोय तारौ।
गर्व करौ तो उन समुदा ने, जल खारौ कर डारौ राम, मोय तारौ।
गर्व करो हिरना कुश राजा, ताको तुमने मारो राम, मोय तारौ।
गज औ ग्राह लरे जल भीतर, गज कौ फंद छुड़ायो राम, मोय तारौ।

एक भक्त भगवान से प्रार्थना करता है कि- हे प्रभु! मैं बहुत अधम हूँ, मुझे तार दो। आपने वन में पैदा होने वाल गुन्चू को तो तार दिया। समुद्र ने गर्व किया उसका पानी खारा हो गया था। हिरनाकुश राजा ने घमण्ड में आकर भक्त प्रहलाद को परेशान किया था, लेकिन आपने हिरनाकुश को मारकर उसका उद्धार कर दिया। हाथी और मगर का झगड़ा पानी में हुआ। हाथी को मगर ने पकड़ लिया, लेकिन जब हाथी ने आपको पुकारा तो आपने जाकर हाथी का फंदा छुड़ाया। इसलिए हे प्रभु! मुझ जैसे अधम पापी का भी उद्धार कर देना।

मोरी लरियौ न सास न्यारौ कर दो।
अटा अटारी सब तुम लै लो, टूटी टपरिया मोय दे दो। मोरी.......
सोनों चांदी सब तुम लै लो, छला फूदना मोय दे दो। मोरी.......
बर्तन भांडे तुम सब लै लो, टूटी कुपरिया मोय दे दो। मोरी.......
कपड़ा लत्ता तुम सव लै लो, छोटी चदरिया मोय दे दो। मोरी.......

आपस में सास-बहू की झंझट चलती रहती थी। सास से बहू ज्यादा परेशान रहती थी। बहू ने कहा- माँ! मुझसे लड़ाई-झगड़ा मत किया करो। इससे अच्छा है कि आप मुझे अलग कर

दो। मकान आप लोग ले लो, हमें केवल एक झोपड़ी दे दो। उसी में अपना गुजारा कर लेंगे। सोना, चाँदी, बर्तन, कपड़ा वगैरह आप लोग सब ले लो, हमें साधारण सी चीजें दे दो। हमें आपकी जायदाद नहीं चाहिए। हम तो केवल शान्ति से रहना चाहते हैं। इसलिए आप हमें लड़ाई की बजाय न्यारा (अलग) कर दो। वह हमें मंजूर है।

मोखां जाने दे परदेशै मोरी प्यारी धनियां।
तोरे माथे खां बिदिया ल्यावों प्यारी धनियां।
तोरी आखन खां कजला ल्यावों प्यारी धनियां।
तोरे कानन खां कुन्डल ल्यावों प्यारी धनियां।
तोरे ओंठन खां लाली ल्यावों प्यारी धनियां।
तोरी कम्मर खां करधनियां ल्यावों प्यारी धनियां।
तोरे पांवन खां पायल ल्यावो प्यारी धनियां।
मोखां जान दे परदेशै मोरी प्यारी धनियां।

एक महिला अपने पति से बहुत ज्यादा प्रेम करती थी। अपने पति को बाहर नहीं जाने देना चाहती थी। उसका कहना था कि मैं तुम्हारे बिना बिल्कुल भी नहीं रह सकती हूँ। पति ने कहा कि- भाई! मैं तेरे माथे के लिए बिन्दी, आँखों के लिए काजल, कानों के लिए कुण्डल, ओंठों के लिए लाली (लिपिस्टिक), कमर के लिए करधनी एवं पाँवों के लिए पायल - ये सारी चीजें लाऊँगा। लेकिन मुझे परदेस जाने की इजाजत दे दो।

गेंदई गीत

अरे सामन ऐसौ चाहिए, भैया नदी गोंदला होय।
परै दुहैली धार में सो लफ-लफ दूनर होय॥

सामन यानी समधी ऐसा चाहिए, जैसे नदी में गोदला नामक पौधा होता है। जो बहुत ही मुलायम होता है। कितना ही पानी का तेज बहाव हो, लेकिन वह टूटता नहीं है, लचक जायेगा। समधी की तुलना उस गोदला नामक पौधे से की गयी है कि समधी को इसी प्रकार का लचकदार होना चाहिए। गेंदई बुन्देलखण्ड में पूर्व में पिछड़ी हुई समाज में होती थी। आज गेंदई गाने की परम्परा कम हो गई है।

महुवा मेवा बेर कलेवा, गुलगट बड़ी मिठाई।
इतनी चीजें खान चाव तौ, घटिया खालें करौ सगाई॥

बुन्देलखण्ड के खासकर टीकमगढ़, छतरपुर एवं पन्ना जिलों में महुआ की फसल ज्यादा होती थी। आज भी होती है। उसकी विशेषता को बताते हुए वहाँ के लोग दूसरे क्षेत्र वालों से कहते हैं कि- भैया! आपको ये चीजें पसन्द हों, तो आप हमारे तरफ शादी करना।

अरे लागे चैत चरेरा आन, जौलौ डारे महुवा पान,
तब लग उठे खेल खलिहान, जल्दी आ गए महुवा ज्वांन,
कच्चे ल्यावे, पक्के खावें, लटा बांध हारै लै जावै,
डुवरी खा खा कें सुस्तानें, मुरका आन घरे, मरदानें,
महुवा टबक गुलैदौ लागो, गुली फोर तेलन कें डारी,
तेलन बिटिया घानी पेर, तेल वरै सव रात,
महुवा तो मै दो गुन हैं, एक रस के दियला जरै,
दूजें मतै गवां कौ लोग, मोरी नगर कोट वारी हां।

इसमें महुआ की विशेषता का वर्णन किया गया, क्योंकि पूर्व में गरीब तबके के लोगों का मुख्य भोजन महुआ ही रहता था। उनके अपने भोजन का अधिकांश हिस्सा महुआ ही रहता था। महुए की फसल चैत के महीने में आती है। महुआ को कच्चा भी खाते हैं। सुखाकर भून भी लेते हैं। महुआ भूनकर तिली में मिलाकर बरसात में उसके लटा बनाए जाते हैं, जो खाने में अच्छा लगता है। ठंड के समय में भुने हुए महुआ को कूटकर चूर्ण बनाया जाता है व तिली भी भूनकर उसमें मिलाई जाती है। दोनों का मिश्रण बनाकर किसी बर्तन में रख लिया जाता है, जिसे मुरका कहते हैं। लोग सुबह नाश्ता के रूप में इसी मुरके को खाया करते थे। गर्मी के समय में सूखे महुआ को पकाया जाता है। उसमें आटे के फरा बनाकर डाले जाते हैं, चना भी डाल देते हैं जिसे डुबरी कहते हैं। उसे ठंडा करके दही मिलाकर भी खाया जाता है, जो गर्मी में लू-लपट से भी बचाव करती है। महुआ टपक जाने के बाद उसमें गुलेंदों लगता है, जिसमें गुली बनती है। गुली को फोड़कर तेल घानी में पेरा जाता है, जिससे तेल निकलता है, जिसे खाने के उपयोग में लेते हैं। इस प्रकार महुआ में यह अलग से विशेषता जुड़ गयी कि एक तो उसी गुली से तेल निकलता है, जो खाने एवं रोशनी करने के काम आता है। दूसरा महुआ को सड़ाकर उससे शराब भी बनायी जाती है, जिसे लोग नशा करने के रूप में उपयोग करते हैं।

अरे साल करोंटा लै गई, और राम बांध गए टेक।
वेर मकोरा जा कहैं भैया मरन पावै एक॥

बुन्देलखण्ड में बेर एवं मकोरा की पैदावार भी होती है। इसकी फसल ठंड के समय कार्तिक अगहन के महीने में अपने आप आती है। इन्हें उगाना नहीं पड़ता है। मौसम आने पर अपने आप फसल आ जाती है, ग्रामीण लोग बड़े चाव से खाते हैं। ये बेर एवं मकोरा अच्छी भूख पड़ने पर काम आते हैं, ऐसा बुजुर्ग लोग बताया करते हैं। बेर मकोरा खाकर आदमी दिन भर मेहनत कर सकता है। थोड़ा-बहुत खाना मिल जाय, बाकी बेर मकोरा से काम चल सकता है। आदमी भूख के मारे मर नहीं सकता। आज भी जंगलों में रहने वाले आदिवासी अपना जीवनयापन इन्हीं चीजों को खाकर करते हैं। तंदुरुस्त भी रहते हैं तथा बहुत कम बीमार भी होते हैं।

कांडरा गीत

जो सुर भाषा कोयल दई, वन भौंरा दई गुन्जार।
घरियक भाखा मोखा मिलै, मैं गालों भरे दरवार॥

शादी–विवाह के समय कांडरा नृत्य की परम्परा बहुत पुरानी है। आज भी यह प्रथा है। इसमें एक नाच करता है, बाकी तीन लोग मृदंग, रमतूला एवं कसावरी बजाते हैं। रात्रि के समय कांडरा नृत्य बहुत अच्छा लगने लगता है। नाचने वाले को कांडरा कहा जाता है। वह अपनी सारंगी बजाकर गाता है कि जिस प्रकार कोयल की आवाज है, भौंरा की गुंजार है, यदि ऐसी स्वर भरी आवाज मुझे मिल जाय तो मैं भरे दरबार में गा सकता हूँ।

कौना ने गिन लई सरग तरइयां, कौना ने मूंड के वार।
कौना ने गिन लए वनस्पतुंऊवा, कौना भेजे इन्द्रासन खां वान॥

कांडरा गाता है कि आसमान के तारों की गिनती किसने की? सिर के बालों की गणना कौन कर सकता है? पेड़ों की पत्तियाँ कौन गिन सकता है? इन्द्रासन को बाण किसके द्वारा भेजा गया?

चंदा ने गिन लई सरग तरइयां, ककहयी ने मूंड के वार।
भौरा ने गिन लए वनस्पतउवा, अर्जुन भेजे इन्द्रासन को वान॥

चन्द्रमा के द्वारा आसमान के तारों की गिनती की गयी। कंघे द्वारा सिर के बाल गिने गये। भौंरे ने पेड़ों पर भ्रमण करते हुए पत्तों की गिनती की एवं अर्जुन के द्वारा इन्द्रासन को बाण भेजा गया। ऐसा कांडरा ने गाकर प्रश्न का जवाब दिया।

ढिमरयाई गीत

मायके–मायके में मचल रही वेला मायके।
जब आ जाने लिवौआ, तोरे तनक धीर न धरहें।
जाने परै सासुरे गुइयां, नइतर काम विगरहें, वेला मायके।
मायके में मचल रई वेला मायके।
जब आ जाय आखिरी मौका, परै जैहौ सन्नानी।
पकर हाथ डोली में धर लें, चली जैहौ मन्नानी, वेला मायके।
मायके में मचल रही वेला मायके।
करनी करौ करम फल पाहौ, करियो न नादानी।
ऊ मालिक को ध्यान करौ तुम, काहे खबर भुलानी, वेला मायके,
मायके में मचल रई वेला मायके।

इस ढिमरयाई गीत के माध्यम से बताया गया है कि प्राणी है जो शरीर को छोड़कर नहीं

जाना चाहता है। उसे यह शरीर छोड़ने में बड़ी तकलीफ होती है। लेकिन जब यमराज लिवाने के लिए आते हैं, तो जरा भी देर नहीं करते हैं। अन्त में जाना ही पड़ता है। आखिरी वक्त पर किसी से बोल भी नहीं पाता है। तत्काल पकड़कर ले जाते हैं। इसलिए जो जैसा कर्म करेगा, उसी प्रकार का फल पायेगा। जीते जी परमात्मा का ध्यान जरूर करना चाहिए। इसमें कभी भी गलती नहीं करना चाहिए।

भजन कछया

टेक: *दही बेचने जाबै ब्रजनार श्यामरे से उरझ रही रे,*
दही बेचने जावै ब्रजनार, श्यामरे से।

छन्द: *बरसाने सें चली गुजरिया, कर सोरु सिंगार।*
बीच कन्हैया धेनु चरावै, टोरो नौ लख हार, झटक लई नथ दुलरी रे।
दही वेचने जावै ब्रजनार, श्यामरे सें।

छन्द: *झींका झटकी मत करौ मोहन फटै हमारौ चीर।*
हम बेटी ब्रषभान रजा की तुम हौ जाति अहीर, हमारी तुमरी का विगरी रे।
दही बेचने जाबै ब्रजनार श्यामरे सें।

छन्द: *मारों लाठी फोरों मटकी दही मचादो कीच।*
लै जैहों मैं वृन्दावन में तट जमुना के बीच, लखादों तुम्हें ज्ञान गुदरी रे।
दही बेचने जावै ब्रजनार श्यामरे सें।

छन्द: *घाट औघटा सवरे बांधे जान कहां हो पाय।*
दही कौ दान दयें जा ग्वालन नित आवै नितजाय, ब्रज में लगै न एक दमरी रे।
दही बेचने जावै ब्रजनार श्यामरे सें।

छन्द: *मोर मुकुट अलगोजा वारौ, भली वनी चितसार।*
चन्दसखी भज राधा माधौ, रै गई कंठ लगाय, झपट वइयां पकरी रे।
दही बेचने जाबै ब्रजनार श्यामरे सें।

इस भजन में कन्हैया द्वारा गोपिकाओं से जबरन दही लेकर खाने का एवं गोपिकाओं को परेशान करने का वर्णन किया गया है। जब ग्वालिनें दही बेचने के लिए ब्रज में जाती हैं, तब कन्हैया बीच रास्ते में ग्वालिनों को मिल जाते हैं। रोक लेते हैं तथा दही माँगने की हठ करते हुए गोपिका का हार तोड़ देते हैं। ग्वालिन नाराज होकर कहती हैं कि आप हमारे साथ झूमा-झटकी मत करो। मैं वृषभान राजा की बेटी हूँ। तुम जाति के यादव हो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा, जो मुझे परेशान करते हो? इस पर कन्हैया कहते हैं कि यदि तुम आसानी से दही नहीं दोगी, तो हम लाठी से मटकी फोड़ देंगे और तुम्हारा दही फैला देंगे। मैं तुमको निश्चित वृन्दावन ले जाऊँगा, जहाँ पर तुमको सारी बात समझ में आ जायेगी।

कन्हैया ने यमुना नदी के सारे घाटों (रास्तों) पर अपने सखा लगा दिए, ताकि ग्वालिनें

निकल न पायें और कहते हैं कि गोपी! दही का दान तो तुम्हें देना ही पड़ेगा। बिना दही का दान दिए ब्रज में दही बेचने नहीं जा सकती हो। फिर आगे तुम्हें कोई कर नहीं लगेगा।

चन्द्रसखी कहती है कि- कन्हैया की इस प्रकार की लीला को गोपी समझ जाती है, प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण भगवान को गले से लगाते हुए उनका हाथ पकड़ लेती है। गोपी कहती है कि- हे प्रभु! अब मैं आपकी लीला समझ पाई हूँ। मैं आपको अब छोड़ना नहीं चाहती हूँ। मैं आपकी दासी बनकर ही रहूँगी।

कहारी

टेकः बसकारे के दिन आए जात ठिकानों नइयां बखरी में।
छन्दः एक तौ बनी-बखरी, ई में हैं दस द्वारे।
कच्ची भीत बनी माटी की, लागे नइयां किवारे, ऐसे में कैसे निवात।
ठिकानो नइयां बखरी में।
छन्दः घूमन लगे असड़वा सिर पै फिर आगे का करहै।
उतनों डर मोय उनकौ नइयां जो टपका कौ डर है,
कैसौ आलस में बैठो अलसियात, ठिकानों नइयां बखरी में।
छन्दः रिमझिम-रिमझिम मेहा वरसे पावन चले पुरवाई।
सारी रात खाट जा मैंने नायं मांय सरकाई,
एक तौ पर गई अंधेरी देखौ रात, ठिकानों नइयां वखरी में।
छन्दः घर के लोग बने न घर में, भारी है सकरोंदा।
कऊं कौ फूटो गई कौ खपरा कऊं कौ फूट गवो है ओंदा,
अब तौ काटी कटै न बैरन रात, ठिकानों नइयां बखरी में।
छन्दः भरतन बने तौ भर लेव भैया, भरौ धरम के भांड़े।
दुविधा में दोऊ खो न दइयो, हलुवा मिलें न माड़े,
अब करले ओ भैया उलात, ठिकानों नइयां बखरी में।
छन्दः दीनबन्धु दीनन के स्वामी सुनियों मुरलीवारे,
चतुरसिंह एक दीन पुकारै, करियो राम सहारे,
मोरी नइयां लगादो बेड़ा पार, ठिकानो नइयां बखरी में।

यह कहारी हमारे शरीर से सम्बन्धित है। कवि ने बताया है कि अन्तिम समय आने वाला है, इस मकान का कोई ठिकाना नहीं है, कब मिट जाय। हड्डी एवं मांस का बना यह शरीर ऊपर से चमड़ी द्वारा ढँका है। इस शरीर में दस इन्द्रियाँ बनायी गयी हैं। इसके द्वारों पर कोई किवाड़ नहीं लगे हैं। बुलावा आ रहा है। जो कुछ बन सके, भगवान का भजन या कोई अच्छा काम करते बने, तो समय रहते कर डालो। आगे फिर समय मिलने वाला नहीं है। यमराज के पास जाकर हमें अपने कर्मों का जायजा देना पड़ेगा। इसलिए आलसी बनकर मत बैठो।

धीरे-धीरे बुढ़ापा आने पर हमारी इन्द्रियाँ अपना काम करना कम कर देती हैं। आँखों से भी कम दिखने लगता है। हमारे मुँह में नीचे ऊपर दोनों तरफ बत्तीसों दाँत भरे हुए हैं, लेकिन बुढ़ापा आने पर धीरे-धीरे उनका टूटना चालू हो जाता है। इसी से हमें अनुमान लगा लेना चाहिए कि बुढ़ापा आ गया है।

कवि कहता है कि- भैया! माया मोह के जाल में फँसकर भगवान को नहीं भूल जाना। अपने दैनिक कार्य-कलापों के साथ-साथ प्रभु का भी ध्यान रखना। वरना अन्त में पछताना ही हाथ आयेगा। हे प्रभु! मेरी पुकार को सुनना एवं मुझे इस भवसागर से पार कर देना।

टेक : *भारी हो रए बड़न के सत्कार, को पूंछै यार गरीबन खां।*

छन्द : *कम्बल नइयां ख्वार पिछौरा, कात बीच में परनें।*
उनई की पल्ली ओढ लई है, मन दूनो सोऊ भरनें,
वे तौ सो गए है पांव पसार, को पूंछै यार गरीबन खां।

छन्द: *देख लेत है धन अब जीकौ, कै रए भैया भैया।*
मुंह देखी के दिखलो कइयक है तो मौत किवइया,
धन खाने उन्हें एक हजार, को पूंछै यार गरीबन खां।

छन्द : *हव में हव वे सबई मिलावें, जिनकौ चालै पौवा।*
घर के कुरवा जौन गिनत है ओइखां देत बुलौवा,
वे तो हेरत हैं नजर पसार, को पूंछै यार गरीबन खां।

छन्द: *भूख लगी जब दव न खैवे, अफरे पै खीर बतावें।*
गिरत देख लव जब न दौरे, उठे पै हांथ लगावें,
जौ देखौ दुनियां कौ लोकाचार, को पूंछै यार गरीबन खां।

छन्द: *होती में सब होत जात है होनो और अन होनों।*
को कावै बतकाव बड़न कौ खारौ होय चाय रोनों।
ऐसौ फैलो है भ्रष्टाचार, को पूंछै यार गरीबन खां।

छन्द: *दीन वन्धु दीनन के स्वामी सुनियों मुरलीवारे।*
चतुरसिंह एक दीन पुकारै, करियो राम सहारे,
मोरी नैया लगादो बेड़ापार, को पूंछै यार गरीबन खां।

समय के अनुसार गरीब की गिनती कम होती है। जो थोड़ा चालू होगा, उसका सम्मान स्वार्थवश हर जगह देखने को मिलेगा। बड़े आदमी के पास कुछ भी न हो, यदि रात हो जायेगी तो उनके सोने-ठहरने की सारी व्यवस्था बड़े आराम से हो जायेगी। यदि धोखे से कोई गरीब आ जाय तो उसे कोई नहीं पूछेगा। आजकल चापलूसों की भी कमी नहीं है। जिसके पास पैसा या बड़ा पद होगा, उसके इर्द-गिर्द चापलूस चक्कर लगाने लगेंगे। उसकी तारीफ खूब करेंगे, क्योंकि उससे अपना स्वार्थ पूरा करवाना है। मगर गरीब से क्या स्वार्थ पूरा होना है? गाँव हो या शहर, जिसका दबदबा होगा, वह कितनी भी झूठी-सच्ची कुछ भी कहेगा, सभी लोग उसकी हाँ-हाँ

मिलाकर उसकी बात का समर्थन कर देंगे। बड़ा आदमी कितना भी अत्याचारी क्यों न हो, लेकिन उसे हर जगह बुलाया जायेगा और सम्मान दिया जायेगा। आजकल ऐसे भी लोगों की कमी नहीं, जो ऊपरी मन से कुछ और भीतरी भावना कुछ और। कोई आदमी भूखा फिरता होगा, खाने को कोई नहीं पूछेगा। जब उसे कहीं खाना मिल जायेगा या उसका कोई जरूरी काम हो जायेगा, तब सहानुभूति दर्शाते हुए कई लोग बातें करने लगेंगे। परन्तु पहले कोई नहीं पूछेगा। बड़े आदमी के विरोध में कोई बोलना पसन्द नहीं करता, क्योंकि बुराई कौन मोल खरीदे? इस प्रकार मूकदर्शक बने रहने का नाजायज फायदा कई लोग उठाते रहते हैं अपनी धाक जमाए रहते हैं।

कवि कहता है कि- हे प्रभु! ऐसे लोगों से बचाते हुए मेरी पुकार को सुनना एवं इस स्वार्थी दुनिया से मुझे अलग रखते हुए भवसागर से पार कर देना।

चेतावनी

टेक: *राम कौ भजन करौ बोलौ नोंने, फिर मानुष न होने।*
छन्द: *देह मानुष की पाई, भज लइयो रघुराई, जामें होने है भलाई।*
लौट: *अरे भज लइयो ऐसे नोनें श्याम सलोनें। फिर मानुष.......*
छन्द: *येही बात है सासी, भज लेना अविनाशी, कोऊ होगा न साथी।*
लौट: *फेर न होने जे नजर मिलोंने। फिर मानुष.......*
छन्द: *भूल करियो न भाई, चलै एक न दवाई, बैठे रैहें लरका लुगाई।*
एक दिन जानें परै गौने। फिर मानुष.......
छन्द: *आंहे जम के वे दूत, परै एकऊ न कूत, लै जैहें सब लूट।*
लौट: *बुरा लगे चाहे नोंने। फिर मानुष.......*
राम कौ भजन करौ वोलो नोने, फिर मानुष न होने।

इस गारी में कवि ने कहा है कि नर तन पाकर जितना बन सके प्रभु का भजन कर लेना चाहिए। क्योंकि मालूम नहीं बाद में मनुष्य का जन्म मिलेगा या नहीं? नर तन पाकर भगवान का भजन करना बहुत जरूरी है। इसी में हमारा उद्धार होगा। यही सत्य है। परमात्मा के अलावा बाकी सांसारिक सुख-साधन क्षणिक एवं नाशवान हैं। ईश्वर के अलावा कोई काम आने वाला नहीं है। परमात्मा की शक्ति के सामने कोई काम आने वाला भी नहीं है। चाहे जितना परिवार हो, सब यहीं का यहीं रह जायेगा। कोई साथ देने वाला नहीं है। एक दिन निश्चित इस दुनिया से जाना ही पड़ेगा। जिस समय यमराज आयेंगे, अपने साथ लिवाकर ले जायेंगे। वे किसी की भी नहीं सुनेंगे। चाहे किसी को बुरा लगे या भला, परन्तु इस दुनिया में स्थायी किसी को नहीं रहना है, यह तय है।

वृन्दावनी

मै तो ठाड़ी निहारें रई ती, द्वारे हो निकर गए री पतरइयां नवाव,
देखन न पाई नजर भरकें, खोलें रई किवार बेदर्दी आए नइयां।

भौतऊ दिनन के बिछड़े री तलफी सारी रात।
अबकी मिलन कब हुइए, सांची बतादो वात, बेदर्दी आए नइयां
फींकी लगे कदम्ब की छइयां री बैठे दोई जोर।
सूनीं सेज पर नींद न आवै छाती में उठत हिलोर।
बेदर्दी आए नइयां।
सुनतन टेर मुरलिया की जुर आवें ग्वाल।
चंदसखी मोहन की लीला, छलिया नंद कौ लाल॥
बेदर्दी आए नइयां।

श्रीकृष्णजी सब ग्वालबालों को छोड़कर कूबरी के साथ द्वारका चले जाते हैं। सभी गोपी-ग्वाल अपने कन्हैया को न पाकर अत्यन्त दुखी होते हैं। राधिका जी कहती हैं कि मैं तो अपने दरवाजे पर उनका इन्तजार करती खड़ी रही कि शायद यहाँ से निकलेंगे, तो उन्हें रोक लूँगी। लेकिन पता ही नहीं चला किस रास्ते से निकल गए। मैं उन्हें देख ही नहीं पायी। कन्हैया को बहुत दिन हो गए, न तो वापिस आए और न किसी प्रकार का संदेशा ही भिजवाया है। हे सखी! कब आयेंगे, कोई भी सही खबर नहीं बता रहा है। कन्हैया तो बड़े बेपीर निकल गए।

सभी ग्वाल बाल कन्हैया के साथ कदम्ब के नीचे बैठकर उनकी बाँसुरी की धुन सुना करते थे। लेकिन वह कदम्ब की छाँव कन्हैया बिन फीकी लग रही है। रात में भी नींद नहीं आती है। केवल उन्हीं की याद में रात जागते-जागते निकल जाती है। कन्हैया की मुरली की धुन सुनकर सभी ग्वाल बाल अपना काम छोड़कर यमुना किनारे जुट जाते थे। लेकिन उन्होंने हमारे साथ बड़ा धोखा किया। हम लोगों को छोड़कर जाने कहाँ गए? ऐसे बेरहमी कृष्ण कन्हैया लौटकर नहीं आए।

वृन्दावनी

टेक: *सुनो जसोदा लाल तुमारो जौ कैसो ऊधम पारो।*
मइया मोरी श्यामलिया ने दिन दुपरै डाकौ डारौ॥
छन्द: *मैं जमना जल भरन गई ती, इतने में सूनों पाकें।*
ग्वाल बाल सब लए कन्हैया, घुसे किवारे हुमसाकें।
घर में पात लगाए बैठे, जब मैने देखो जाकें।
माखन मिसरी दूध मलाई, खा रए ते भर भर छांकें।
उड़ान: *ऐरो पाकें भागन लागे जब मैंने किबरा टारो। मैया.......*
छन्द: *खाल बाल सब भाग लागे मोहन घुस गए मोरे घर में।*
अंधियारे में मौका पाके, मों ढांकें पीताम्बर में।
जब पीछ से मैया चली गई मोहन पकर लए करमें।
उनने मोरी झींका-झटकी कर डारी आगन भर में।।

उड़ान: *झझकोरत-झझकोरत मइया छोर चुनरिया कौ फारो। मैया......*

छन्द: *दइया खाओ और मटकी फोरी, खोली झरय घूंघट पटकी।*
दोई हांथन के मारी मुरलिया, पकर-पकर चुटिया झटकी।
और बात तौ जैसी तैसी एक बात ज्यादा खटकी।
कैसें बतावों मइया मोरी, चोली फटा डारी तटकी॥

उड़ान: *कांत सुनत की मोय लाज लगत है जां-जां उनने मोय मारो। मइया मोरी......*

छन्द: *बड़े-बड़े जे कीमत घारे, गहने मोरे बिसकाए।*
सिंगल दानी टोर हमारी, डिबिया काजर की ल्याए।
जब मैं रोई टेर लगाकें, युरा परौसी जुर आए।
मन मोहन ने रस्ता नायी, न काहू ने लख पाए॥

उड़ान: *हाल है सवरु ब्रज कौ जानो नाम काहू ने न सारो। मैया......*

छन्द: *सुनो जसोदा लाल तुमारो, इनखां हलकौ न जानों।*
गैल चलत में सखियां छैकै, हो आओ भौतऊ स्यानो।
दइया खावै और मटकी फोरै, चोरी कौ बांधै बानों।
मोरी तुमखां लगनें लावरी, राधा ललिता कौ जानों॥

उड़ान: *प्रेमी कहत कृष्ण की लीला ब्रज भर में हल्ला पारो।*
मैया मोरी श्यामालिया ने, दिन दुपरै डांकौ डारो॥

उपरोक्त ख्याल में कवि ने श्रीकृष्णजी की बाल लीलाओं का वर्णन किया है। वे गोपी-ग्वालों के साथ किस प्रकार की लीलाएँ करते रहे, इसके बावजूद भी ब्रजवासियों का लगाव श्रीकृष्णजी से रहा है। ख्याल का मतलब किसी पुरानी बात को याद करना, खबर करना, ख्याल कहा गया है। गोपिकाएँ यशोदा मैया के पास जाकर शिकायत करती हैं कि- अरी मैया! तुम्हारा कन्हैया तो बड़ा नटखट है। हमारे घरों में दिन-दहाड़े चोरी करता है। एक गोपी कहती है- मैया! मैं जब तक यमुनाजी में पानी भरने गई, तब तक उन्होंने अपने बाल-सखाओं को साथ लेकर हमारे किवाड़ उखाड़ दिए। जब मैं पानी भरकर वापिस आई, तो देखा कि सब मिलकर हमारे घर का दूध-दही खा रहे थे। हमारे घर में बिल्कुल भी दूध-दही नहीं बचा। जैसे ही मेरे आने की आवाज मिली, तो सब के सब भाग गए।

ग्वाल बाल तो सब भाग गए, लेकिन कन्हैया मेरे घर में ही छिप गए और अँधेरे में पीताम्बर से अपना मुँह ढँक लिया। मैंने पीछे जाकर कन्हैया को जैसे ही पकड़ा, तो उन्होंने मेरे साथ आँगन भर में खूब झूमा-झटकी की एवं मेरी साड़ी भी फाड़ दी। दही तो उन्होंने खाया सो ठीक है, लेकिन मटकी भी फोड़ डाली तथा दोनों हाथों मुरली पकड़कर मुझे मारा भी है। साथ ही मेरी चोटी पकड़कर मुझे झटकार दिया। मैया! ये सब किया सो किया है, लेकिन साड़ी फाड़ने की घटना मुझे ज्यादा खटक रही है।

गले में जितने कीमती गहने थे, वे भी ले गए। हमारे शृँगार का सामान भी ले गए। जब मैं ज्यादा परेशान हो गयी, तो मैं रोने लगी। मेरे रोने की आवाज सुनकर तमाम पड़ोसी लोग आ गए। जैसे ही पड़ोसियों को आते देखा, तो कन्हैया धीरे से भाग गए। कोई देख भी नहीं पाया। यह सब हाल सारे ब्रज को मालूम है, लेकिन डर के मारे नाम कोई नहीं बताना चाहता।

मैया! आप इन्हें छोटा मत समझो, ये बहुत नटखट हैं। रास्ते चलते गोपियों के साथ आए दिन छेड़छाड़ करते ही रहते हैं। यदि आपको मेरी बात झूठी लग रही हो, तो राधा और ललिता से भी पूछ सकती हैं। इसलिए हे मैया! तुम्हारे कन्हैया से हम बहुत परेशान हैं। इनका बन्दोबस्त अवश्य कीजिए। इस प्रकार कवि प्रेमी ने कृष्ण की बाललीला का वर्णन किया है।

चेतावनी

टेक: *समर के हांकौ जीवन गाड़ी आन टेड़ वरका-वरका।*
काम है डरका भवसागर में लग न जाय कहीं ढरका॥
छन्द: *जा जीवन की काया गाड़ी द्वार तुमारे आई है।*
जतन-जतन से राखों ईखां बड़े भाग्य से पाई है।
कारीगर ने तुमसे ईकी, लई नही बनवाई है।
बिन पइसा की तुमखां मिल गई ऐसी चीज पराई है॥
उड़ान: *मंजिल अपनी पूरी करलो, धीरे सें टरका टरका।*
काम है डरका भवसागर में लग न जाय कही ढरका॥
छन्द: *माल कुमाल भरौ न ईमें हो जैहै वजनी भारी।*
सतभारा तुम भर न लइयौ, बनकें ऊंचे बैपारी।
ऐसी भरन भरौ न ईमें टैक्स लगै न सरकारी।
तुमरी माफ होबै न तनकऊ जांच करें जब अधिकारी॥
उड़ान: *गाड़ी ढील जयत कर लैवें परमिट तेरी उम्मर का।*
काम है डरका भवसागर में लग न जाय कहीं ढरका॥
छन्द: *जमराजा के आये सिपाही, तनक नहीं वे धीरे धरें।*
मार मुगरियन हंस निकारें, कोई नहीं पैगाम चलें।
जनम भरे के सबरे खुलहें करम तुमारे बुरे भले।
रो-रो करके आंसू डारौ जब कसकीली मार घले॥
उड़ान: *कोई जमानतदार न हुइए हमदर्दी तेरे घरका।*
काम है डरका भवसागर में लग न जाय कहीं ढरका॥
छन्द: *बड़े भाग्य से तुमखां मिल गई हिया सिया सी जा गाड़ी।*
टोर न डारौ खेल कूंद कें कागज कैसी फुलवाड़ी।
सोच समझ कें चलौ रस्ता में हो न जाय टेड़ी टाड़ी।

डरौ न मन में फिकर करौ न लम्बी चौड़ी है गाड़ी॥
उड़ान: *खेतसिंह कौ चेला प्रेमी सुमरन करले ईश्वर का।*
काम है डर का भवसागर में लग न जाय कहीं ढरका॥

इस ख्याल में मानव को चेताया गया है कि अपनी जीवन रूपी गाड़ी को बड़े सँभालकर चलाने की आवश्यकता है। जहाँ तक बन सके, गलत कामों से दूर रहकर अच्छे मार्ग पर चला जा सकता है। तभी भवसागर से यह जीवन रूपी नाव पार हो पायेगी। जीवन रूपी गाड़ी को बड़ी मुश्किल से पाया है। साथ ही इसके बनाने में हमारा कोई पैसा भी खर्च नहीं हुआ है। बनाने वाले कारीगर ने हमसे कोई राशि नहीं ली। बिना मोल के ही हमको मिल गयी है। इसलिए अपनी मंजिल को सोच-समझकर पूरा करना चाहिए।

यह जीवन रूपी गाड़ी हमें इसलिए नहीं मिली कि हम इसमें उल्टा-सीधा माल (गलत विचार, गलत कार्य) आदि भर लें। ऐसा करने से हमारे ऊपर पाप का ज्यादा बोझ पड़ जायेगा। उल्टी-सीधा माल भरने में भले ही कोई शासकीय टैक्स नहीं लगता है, लेकिन अन्तिम समय में जाँच पड़ताल होने पर बीच में ही गाड़ी रोकी जा सकती है। हमारे जीवन का परमिट समाप्त हो जायेगा।

जिस समय यमराज आयेंगे, वे जरा भी देर नहीं करेंगे एवं मार-मारकर जबरन जीव को ले जायेंगे। उस समय कोई उपाय नहीं चलेगा। यमराज की मार के कारण सारे जीवन के सही-गलत कामों का परिणाम सामने आ जायेगा। उस समय इस जीव को बचाने के लिए कोई परिवार का सगा-सम्बन्धी भी साथ नहीं देगा।

बड़ा अहोभाग्य है, जो कि हमें यह अनमोल गाड़ी परमात्मा ने दी है। इसको कागज की फुलवारी के समान खिलवाड़ करके नहीं तोड़ देना है। यह जीवन रूपी सफर लम्बा है। इसलिए बड़े सोच-विचारकर इस गाड़ी को चलाना जरूरी है कि यह गाड़ी कहीं गलत रास्ते पर न चली जाये। परमात्मा का ध्यान करते हुए इस गाड़ी को चलाने में कोई ज्यादा अड़चन भी नहीं आयेगी एवं इस भवसागर से आसानी से पार हो जायेंगे।

बिलवारी

उठी उठी रे घटा घनघोर बदरिया, पानी तौ झिला रे मिल हो रहे।
ऐ अरी हां हो सखी री, कौना दिशा से बदरा भए।
अरे कौना बरस गए मेह बदरिया, पानी तो झिला रे मिल हो रहे।
ऐ अरी हां हो सखी री, अग्गम दिशा से बदरा भए।
अरे पच्छम बरस गए मेह बदरिया पानी तौ झिला रे मिल हो रहे।

अन्त में इस बिलवारी के माध्यम से बताया गया है कि आषाढ़ का महीना लग गया है, जनमानस को गर्मी से राहत महसूस होने लगी है। सभी के दिलों में उमंग की लहर उठ रही है

कि अभी गर्मी के मौसम में पानी के लिए लोग त्राहि–त्राहि मचा रहे थे। आषाढ़ लगने से पानी बरसना शुरू हो गया है। पानी की समस्या अब उतनी नहीं रहेगी।

एक सखी दूसरी सहेली से कहती है कि– बहिन! यह बदरी कौन दिशा से उठ रही है एवं कौन तरफ बरस रही है? तो दूसरी सहेली जबाव देती है कि– बहिन पूरब की तरफ से बदली उठ रही है एवं पश्चिम की तरफ बरस रही है। अब पानी की समस्या हल हो जायेगी। अभी तक धूल उड़ रही थी, अब धूल की जगह हरियाली फैल जायेगी। सभी के चेहरे बहुत प्रसन्नचित्त नजर आने लगे हैं।